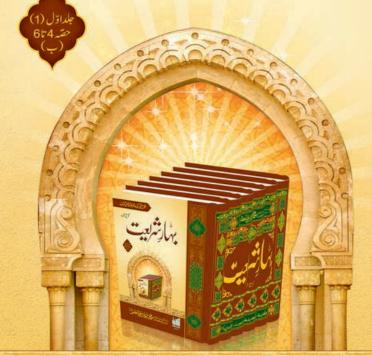
فقحیِنَفی کی عا<u>لم بینا ن</u>والی کتاب

الرَّ الرَّالِي الْمُحْمِدُهُ الْمُحْمِدُ الْمُعُمُ الْمُحْمِدُ الْمُحْمُ الْمُحْمِدُ الْمُحْمِدُ الْمُحْمِدُ الْمُحْمِدُ الْمُحْمِي الْمُحْمِدُ الْمُعِمُ الْمُحْمِدُ الْمُعُمُ الْمُعُمُ الْمُعُمُ الْمُعُمُ الْمُحْمُ



SASASASASAS







| صفحه | مضامين | صفحہ | مضامین |
|------|--|------|---------------------------------|
| 799 | كتاب الجنائز_ | | چوتھاحصە(بقيەمسائل نماز كابيان) |
| 806 | موت آنے کابیان۔ | 652 | و ترکابیان _ |
| 817 | کفن کا بیان | 658 | سنن ونو افل كابيان _ |
| 822 | جنازہ لے چلنے کا بیان۔ | 681 | نمازاستخاره_ |
| 842 | قبرودفن كابيان _ | 683 | صلاة الشيح _ |
| 852 | تعزيت كابيان | 685 | نماز حاجت_ |
| 857 | شهید کابیان | 687 | نماز توبه وصلاة الرغائب_ |
| 864 | کعبهٔ معظمه میں نماز پڑھنے کا بیان | 688 | ر اوق کا بیان۔ |
| | پانچوال حصه (ز کو ة اورروزه کابیان) | 699 | قضانماز کابیان ـ |
| | زكاةكابيان | 708 | سجدهٔ سهوکا بیان _ |
| 866 | زکاة کابیان۔ | 720 | نماز مریض کابیان_ |
| 892 | سائمه کی زکاة کابیان۔ | 726 | تجدهٔ تلاوت کا بیان۔ |
| 893 | اونٹ کی زکاۃ کابیان۔ | 739 | نمازمسافركابيان_ |
| 895 | گائے کی زکاۃ کابیان۔ | 752 | (جعد کا بیان۔ |
| 896 | بكريوں كى زكاۃ كابيان _ | 777 | عيد ين كابيان ـ |
| 901 | سونے چاندی اور مال تجارت کی زکاۃ کابیان۔ | 786 | گهن کی نماز کابیان _ |
| 909 | عاشر کابیان۔ | 790 | نماز استىقا كابيان_ |
| 912 | كان اور د فينه كابيان _ | 795 | نمازخوف کابیان۔ |

| إبجالي فهريست | } | (r | ىرىمارىشرنىعىت بىللۇل(1) ب |
|---------------|---|-----|-----------------------------------|
| | | | |

| 1067 | میقات کابیان _ | 914 | زراعت ادر بھلوں کی ز کا قایعنی عشر وخراج کا بیان ۔ |
|------|------------------------------|------|--|
| 1069 | احرام کابیان۔ | 934 | صدقهٔ فطرکابیان- |
| 1089 | طواف وسعی صفاوم روه وعمره به | 940 | سوال کسے حلال ہے اور کسے نہیں۔ |
| 1154 | قِر ان کابیان۔ | 946 | صدقات ففل کابیان۔ |
| 1157 | تتنع کابیان۔ | 957 | (روزه کابیان_ |
| 1161 | جرم اوران کے کفارے۔ | 973 | (حياندو <u>کھنے</u> کابيان۔ |
| 1194 | محصر کابیان۔ | 995 | (روز ہ کے مکر وہات کا بیان۔ |
| 1198 | ر حج فوت ہونے کا بیان۔ | 999 | سحری وافطار کا بیان ۔ |
| 1199 | مج بدل کابیان۔ | 1015 | منت كےروز بے كابيان |
| 1211 | ہری کا بیان ۔ | 1019 | اعتكاف كابيان |
| 1215 | مج کی منت کابیان۔ | | چھٹاحصہ(جج کابیان) |
| 1217 | فضائل مدینه طیبه- | 1030 | حج کابیان اور فضائل _ |



عصه ایمان کو خراب کرتا ہے

خاتَمُ الْمُوْسَلين، رَحمَةٌ لَلْعُلمين صلَّى الله تعالى عليه واله وسلّم كافر مانِ عبرت نشان ب: عصمه ايمان كواس طرح خراب كرتا به جس طرح أبلوا (ليني ايك كروي ورفت كاجها بوارس) شبدكو خراب كرويتا ب- (شعب الايمان لليهني ج٦٠ ص٢١٦ حديث ٢٩٤٤)

شُهاتَت کی تعریف

دوسرول كى تكليفول اورمصيبتول برخوشى كا ظهار كرنے كوشهاتت كہتے ہيں - (حديقه نديه شرح طريقه محديه ج ١٥١٥)

چفل خور جنّت میں نمیں جائیگا

مُضُورِ الكرم، نُورِ مُجَسَّم، شاوِين آوم، وسولِ مُحسَشَم، شافِعِ اُمَم صلَّى اللَّه تعالى عليه واله وسلَّم كافرمان عبرت نشان ب: پُعُل خورجَّت عين واخِل نهين بوگا - (صحيح البحارى ج ٤ ص ١٥ حديث ٢٠٥٦ دارالكتب العلمية بيروت)





| صفحہ | مضامین | صفحه | مضامین |
|------|---|---------|---|
| 676 | نما زسفر ونما زوالپی سفر کے مسائل وفضائل صلاۃ اللیل ونما زنتجد کےمسائل وفضائل۔ | | چوتفاحصه(بقیه مسائلِ نماز کابیان) |
| 680 | رات میں پڑھنے کی بعض دعا ئیں۔ | 652 | وتر کے فضائل۔ |
| 681 | نمازاستخاره | 653 | وتر کے مسائل اور دعائے قنوت۔ |
| 683 | صلاةالتسبيح | 658 | سنن ونوافل كابيان |
| 685 | نمازحاجت | 658 | نفل کی فضیلت _ |
| 686 | نمازغوثیه کی ترکیب۔ | 659 | سنن مؤ كده كاذكر ـ |
| 687 | نمازتوبه وصلاةالرغائب | 659 | سنت فجر کے فضائل۔ |
| 688 | تراویح کابیان | 660 | سنت ظهر کے فضائل ۔ |
| 695 | تنهانمازشروع کی اور جماعت قائم ہوئی ،اس کےمسائل۔ | 661 | سنت عصر کے فضائل ۔ |
| 697 | اذان کے بعدمسجد سے چلے جانے کی ممانعت۔ | 661 | سنت مغرب وصلاة الاوّابين كے فضائل۔ |
| 698 | امام کی مخالفت کرنے اور جماعت میں شامل ہونے کے مسائل۔ | 662 | سنت عشاء کا تأکد _ |
| 699 | قضانمازكابيان | 662 | سنن مؤكده ونوافل كے مسائل _ |
| 700 | نماز قضا کرنے کے عذر۔ | 668 | نفل نماز شروع کر کے توڑنے کے مسائل۔ |
| 701 | قضااوراعادہ کی تعریفیں اور قضا ہونے اوران کے پڑھنے کی صورتیں۔ | 670 | کھڑے ہوکر، میر شرکہ لیٹ کر، گاڑی ریفل نمازیڑھنے کے مسائل۔ |
| 703 | چند نمازین قضام و کیل و اُن میں ترتیب واجب ہے اورا سکے شرائط۔ | 672 | فرض دواجب نماز سواری یا گاڑی پر پڑھنے کے مسائل داعذار۔ |
| 706 | قضائے عمری کے مسائل۔ | | |
| 706 | قضاكے متفرق مسائل۔ | 673 | منت مان کرنماز پڑھنے کے مسائل۔ |
| 707 | فدية نماز كے مسائل _ | 674 | تحية المسجد كے مسائل وفضائل _ |
| 708 | سجدهٔ سعوکابیان | 675 | تحية الوضوونماز اشراق ونماز جإشت كے فضائل ومسائل۔ |

| 762 | جمعه پڑھنے کے نثرا نظ۔ | 720 | نمازمریض کابیان |
|--|--|---------------------------------|--|
| 762 | پہلی شرط مصرا دراُس کی تعریف داحکام۔ | 726 | سجدهٔ تااوت کابیان |
| 764 | دوسری شرط بادشاہ اسلام اوراس کے احکام۔ | 726 | آیات تجده۔ |
| 766 | تیسری شرط وقت ظہرا دراس سے مراد۔ | 732 | سجدهٔ تلاوت کی دعا ئیں۔ |
| 766 | چۇھىنىر طخطىبادراس كےشرائطادراس كىسنتىں ادرمسخبات_ | 733 | لنماز میں آیت تجدہ پڑھنے کے مسائل۔ |
| 769 | پانچویں شرط جماعت اوراُس کے مسائل۔ | 735 | ایک مجلس میں آیت مجدہ پڑھنے یا سننے کے مسائل اور مجلس |
| 770 | چىمى <i>نى شر</i> طاذن نام _ | | لد لنے اور نہ بدلنے کی صورتیں۔ |
| 770 | جمعہ داجب ہونے کے شرائط۔ | 738 | تجدهٔ شکر کے بعض مواقع۔ |
| 773 | شہر میں جمعہ کے دن ظہر پڑھنے کے مسائل۔ | 739 | نمازمسافركابيان |
| 774 | خطبہ کے بعض دیگر مسائل ۔ | 740 | مسافر کس کو کہتے ہیں۔ |
| 776 | روز جمعه وشب جمعه کے بعض اعمال ۔ | 743 | مافر کے احکام۔ |
| 777 | عيدين كابيان | 744 | نیتا قامت کےشرائط۔ |
| 779 | عيد كيدن مستحبات _ | 748 | مسافرنے مقیم کی اقتدا کی یا مقیم نے مسافر کی ،اس کے احکام۔ |
| [] | | [] | 1 |
| 781 | نمازعید کی ترکیب اور مسبوق ولاحق کے احکام۔ | 750 | وطن اصلی ووطن ا قامت کے مسائل۔ |
| 781 784 | نمازعید کی ترکیب اور مسبوق ولاحق کے احکام۔ تکبیر تشریق کے مسائل۔ | 750 752 | وطن اصلی ووطن اقامت کے مسائل۔ جمعہ کابیان |
| | —— | | |
| 784 | تكبيرتشريق كےمسائل_ | 752 | جمعه کابیان |
| 784 786 | تگیرتثرین کے مائل۔ گھن کی نمازکابیان | 752 752 | جمعه كابيان فضائل روز جمد- |
| 784 786 788 | تکبیرتشریق کے مسائل۔ گھن کی نماز کابیان بعض ایسے مواقع جن میں نماز پڑھنامستحب ہے۔ | 752 752 754 | جمعه كابيان فضاكل روز جمعه جمعه كدن ايك الياوت بكدأس مين دعا قبول بوتى ب |
| 784 786 788 789 | تکبیرتشریق کے مسائل۔ گھن کی نمازکابیان اجھن ایسے مواقع جن میں نماز پڑھنامتحب ہے۔ آندھی اور بادل کی گرج اور بکل کی کڑک کے وقت دعا کیں۔ | 752 752 754 755 | جمعه كابيان فضائل روزِ جمعه جمعه كدن ايك الياوتت كدأس مين دعا قبول بموتى بـــ جمعه كدن يارات مين مرنے كوفضائل ـــ |
| 784 786 788 789 790 | تکبیرتشریق کے مسائل۔ گھن کی نمازکابیان بعض ایسے مواقع جن میں نماز پڑھنامستحب ہے۔ آندھی اور بادل کی گرخ اور بکل کی کڑک کے وقت دعا کیں۔ نماز استسقاکابیان | 752 752 754 755 756 | جمعه کابیان فضائل روز جمعه جمعه کے دن ایک الیاوت ہے کدائس میں دعا قبول ہوتی ہے۔ جمعہ کے دن یارات میں مرنے کے فضائل۔ فضائل نماز جمعہ۔ |

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلامي)

| 866 | زكاةكابيان | 803 | عیادت کے فضائل۔ |
|-----|--|-----|--|
| 868 | ز کا قانددینے کی برائی اور دینے کے فضائل میں احادیث۔ | 806 | موت آنے کابیان |
| 874 | ز کا ق کی تعریف اورواجب ہونے کی شرطیں۔ | 810 | میت کے نہلانے کا بیان۔ |
| 887 | ز کا ق ^ی س طرح ادا ہوتی ہے اور کس طرح نہیں۔ | 817 | كفن كابيان |
| 892 | سائمه کی زکاۃ کابیان | 820 | کفن پہنانے کاطریقہ۔ |
| 893 | اونٹ کی زکاۃ کابیان | 821 | مسئله ضرورييه |
| 895 | گائے کی زکاۃ کابیان | 822 | جنازہ لے چلنے کابیان |
| 896 | بکریوں کی زکاۃ کابیان | 825 | لنماز جنازه کابیان _ |
| 897 | جانوروں کی زکا ۃ کے متفرق مسائل۔ | 825 | لنماز جنازه کےشرائط۔ |
| 901 | سونے چاندی اورمال تجارت کی زکاۃ کابیان | 829 | جنازه کی چوده دعا ئیں۔ |
| 909 | عاشركابيان | 836 | نماز جناز ہکون پڑھائے۔ |
| 912 | کان اوردفینه کابیان | 842 | قبرودفن كابيان |
| 914 | زراعت اورپھلوں کی زکاۃ یعنی عشروخراج کابیان | 848 | زيارت قبور _ |
| | عشروخراج كابيان | 850 | وفن کے بعد تلقین ۔ |
| 922 | مال زکاۃ کن لوگوں پرصرف کیاجائے۔ | 852 | تعزیعت کابیان |
| 934 | صدقهٔ فطرکابیان | 854 | سوگ اورنو حدکا بیان _ |
| 940 | سوال کسے طال ھے اورکسے نھیں | 857 | شهيدكابيان |
| 946 | صدقات نفل کابیان | 857 | _ جہاد میں مقتول ہونے کےعلاوہ جن کوثوابِشہادت ملتاہے۔ |
| 957 | روزه کابیان | 860 | شهید فقهی کی تعریف اوراحکام _ |
| 958 | ماه رمضان اورروزه کے فضائل ۔ | 864 | کعبۂ معظمہ میں نمازپڑھنے کابیان |
| 1 | " 9 () | | تقریفهٔ اعلیٰ حضرت،امام احمد رضاخان علیه رحمة الرحنٰ _ |
| 966 | روزه کی تعریف اوراُس کی شمیں۔ | 865 | سريطان مفرت، أمام المرتضاحان عليه رنمة الرف |

| 1035 | حج کےمسائل۔ | 972 | سیسونی شعبان کاروزه۔ سیسونی شعبان کاروزه۔ |
|---------------|--|------|--|
| 1036 | حج واجب ہونے کے شرائط۔ | 973 | چانددیکھنے کابیان |
| 1043 | وجوب ادائے شرا نکا۔ | 980 | کن چیز ول سے روز ہبیں جا تا۔ |
| 1046 | صحت ادا کے شرا کط۔ | 985 | روزہ کن چیزوں سےٹو شاہے۔ |
| 1047 | حجِ فرض ادا ہونے کے شرائط۔ | 989 | جن صورتوں میں صرف قضالا زم ہے۔ |
| 1047 | چے کے فرائض ووا جبات ₋ | 991 | اُن صورتوں کا بیان جن میں کفارہ بھی لازم ہے۔ |
| 1050 | حج کی سنتیں۔ | 994 | روزہ تو ڑنے کا کیا کفارہ ہے۔ |
| 1051 | آ داب سفر ومقد مات حج_ | 995 | روزہ کے مکروھات کابیان |
| 1067 | ميقات كابيان | 999 | سحری وافطارکابیان |
| 1069 | احرام كابيان | 1002 | ان وجوہ کا بیان جن سے روزہ ندر کھنے کی اجازت ہے۔ |
| 1071 | احرام کے احکام۔ | 1008 | روز ففل کے فضائل _ |
| 1078 | وه امور جواحرام میں حرام ہیں۔ | 1008 | عاشورا کے فضائل _ |
| 1079 | احرام کے مکروہات۔ | 1009 | عرفد کے دن روزہ کا ثواب۔ |
| 1080 | وه باتیں جواحرام میں جائز ہیں۔ | 1010 | ششعید کے روز وں کے فضائل۔ |
| 1083 | احرام میں مردوعورت کے فرق۔ | 1011 | پندر هویں شعبان کاروز ہ اوراً س کے فضائل۔ |
| 1083 | واخلى حرم محترم ومكه مكرمه ومسجدالحرام _ | 1012 | ایام بیش کے فضائل۔ |
| 1089 | طواف وسعى صفاومروه وعمره | 1013 | پیراور جمعرات کے روزے۔ |
| 1091 | طواف کے فضائل ۔ | 1013 | بعض اور د نو ل کےروز ہے۔ |
| 1092 | حجراسودکی بزرگی۔ | 1015 | منت کے روزے کابیان |
| 1093 | مىجدالحرام كانقشه وحدود _ | 1019 | اعتكاف كابيان |
| 1095 | طواف کاطریقه اوردعائیں۔ | | چھٹا حصہ (نج کابیان) |
| 1099 | طواف کے مسائل ۔ | 1030 | حج کابیان اورفضائل |
| $\overline{}$ | | | |

| | 1130 | مز دلفه کی روانگی اوراس کاوقوف۔ | 1102 | نماز طواف _ |
|----|----------|---------------------------------|------|--|
| | 1132 | مز دلفه میں نمازمغرب وعشا۔ | 1103 | لمتزم سے لیٹنا۔ |
| | 1133 | مز دلفه کا وقوف اور دعا ئیں ۔ | 1105 | (زمزم کی حاضری۔ |
| | 1135 | منځ کےاعمال۔ | 1105 | صفادمروه کی سعی۔ |
| | 1139 | جمرة العقبه كي رمي_ | 1106 | سعی کی دعائیں۔ |
| | 1139 | رمی کے مسائل۔ | 1109 | سعی کےمسائل۔ |
| | 1140 | آج ک <i>قر</i> بانی۔ | 1111 | سرمونڈانایابال کتروانے۔ |
| | 1142 | حلق وتقصير_ | 1112 | ایام ا قامت کے اعمال _ |
| | 1144 | طواف فرض۔ | 1112 | طواف میں سات یا تیں حرام ہیں۔ |
| | 1146 | باقی دنوں کاری۔ | 1113 | طواف میں بندرہ با تیں مکروہ ہیں۔ |
| | 1148 | ری میں بارہ چیزیں مکروہ ہیں۔ | 1114 | سات باتیں طواف وسعی میں جائز ہیں۔ |
| | 1149 | مكەم عظم كوردانگى _ | 1114 | وس با تیں سعی میں مکروہ ہیں۔ |
| | 1150 | مقامات متبر که کی زیارت به | 1115 | طواف وسعی میں مردوعورت کے فرق۔ |
| | 1150 | كعبه معظمه كي واخلي _ | 1115 | منے کی روانگی اور عرفات کا وقوف۔ |
| | 1151 | حرمین شریفین کے تمرکات۔ | 1123 | عرفات میں ظہر وعصر کی نماز۔ |
| | 1151 | طواف رخصت _ | 1123 | عرفات کا وقوف_ |
| | 1154 | قران کابیان | 1124 | وقوف کی سنتیں _ |
| | 1157 | تمتع كابيان | 1125 | وقوف کے آ داب۔ |
| | 1161 | جرم اوران کے کفار ہے | 1125 | وقوف کی دعا ئیں۔ |
| | 1163 | خوشبواورتيل لگانا_ | 1127 | وقوف کی دعائیں۔ وقوف کے مکر وہات۔ ضروری تصیحت۔ وقوف کے مسائل۔ |
| | 1167 | سلے کپڑے پہننا۔ | 1128 | ضروری نصیحت _ |
| | 1170 | بال دور کرنا۔ | 1128 | وقوف کے مسائل۔ |
| ۱. | <u> </u> | | | |

| (Ma) | | | |
|------|--|------|---|
| 1199 | حج بدل کابیان | 1172 | ناخن كترناب |
| 1201 | ج مج بدل کےشرائط۔ | 1172 | يوس و كنار و جماع_ |
| 1211 | هدی کابیان | 1175 | طواف میں غلطیاں۔ |
| 1215 | حج کی منت کابیان | 1177 | سعی ووقو ن عرفه ووقو ف مز دلفه اور رمی کی غلطیاں۔ |
| 1217 | فضائل مدينه طيبه | 1179 | قربانی اور حلق میں غلطی۔ |
| 1217 | مدینه طیبه میں اقامت۔ | 1179 | شکار کرنا |
| 1218 | مدینه طیبہ کے برکات۔ | 1186 | حرم کے جانورکوایڈا دینا۔ |
| 1219 | اہل مدینہ کے ساتھ برائی کرنے کے نتائج | 1189 | حرم کے پیڑوغیرہ کا ٹنا۔ |
| 1220 | حاضری سرکاراعظم - | 1190 | جوں مارنا۔ |
| 1228 | اہل یقیع کی زیارت _ | 1191 | بغیراحرام میقات ہے گزرنا۔ |
| 1230 | قبا کی زیارت _ | 1193 | احرام ہوتے ہوئے احرام ہاندھنا۔ |
| 1231 | احدوشہدائے احد کی زیارت۔ | 1194 | محصركابيان |
| 1233 | ج حج وعمرہ کے اعمال کا نقشہ ایک نظر میں | 1198 | حج فوت ھونے کابیان |

بنَّ إِلَّهُ النَّا النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ

نَحُمَدُهُ وَ نُصَلِّى عَلَى رَسُولِهِ الْكُرِيمِ ط

وتر کا بیان

خلینٹ کی ہے۔ نیز اُسی میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنبا سے مروی ، فرماتے ہیں سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم : رات کی نماز وں کے آخر میں وتر پڑھواور فرماتے ہیں :' دصبح سے پیشتر وتر پڑھو'' (3)

خلینت سی مسلم و ترندی وابن ماجه و غیر جم جابر رضی الله تعالی عندسے راوی ، فرماتے ہیں سلی الله تعالی علیہ و بیت ہو کہ بچھلی رات میں ندا تھے گاوہ اوّل میں پڑھ لے اور جسے امید ہو کہ بچھلے کوا تھے گاوہ بچھلی رات میں پڑھے کہ آخر شب کی نماز مشہود ہے (یعنی اُس میں ملککہ رحمت حاضر ہوتے ہیں) اور پیافضل ہے۔'' (4)

خلیث ہم تا استماری ورز فدی ونسائی وابن ماجہ مولی علی رض اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کدرسول الله صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فر مایا: اللہ وتر ہے وتر کومجوب رکھتا ہے ، البنداا ہے قر آن والو! وتر پڑھو۔ (⁵⁾ اوراسی کے مثل جابر وابو ہر برہ وضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ۔ خلیث کے تا السی اللہ تعالی علیہ وابن ماجہ خارجہ بن حذا فدرض اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کدفر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وہ مرک در اللہ تعالی نے ایک نماز سے تمہاری مدوفر مائی کہ وہ سمرخ اونٹوں سے بہتر ہے وہ وتر ہے ، اللہ تعالی نے اُسے عشا وطلوع فجر کے در میان میں رکھا ہے ۔ '' (⁶⁾ میر حدیث و میر اللہ بن عمر وابن عباس و عقبہ بن عامرجہنی وغیر ہم رضی اللہ تعالی عنہ ہے۔ علی مروی ہے ، مثلاً معاذ بن جبل و عبد اللہ بن عمر وابن عباس و عقبہ بن عامرجہنی وغیر ہم رضی اللہ تعالی عنہ ہے۔

- 1 پ٢٠ البقرة: ١٦٤. وصحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب اللعاء ... إلخ، الحديث: ١٩١ ـ (٧٦٣)، ص٣٨٧ .
 - **3**..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب صلاة الليل... إلخ، الحديث: ١٥١،٧٥٠ ـ (٧٥١)، ص٣٧٨.
 - ◘ "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب من خاف أن لايقوم من آخر الليل... إلخ، الحديث: ٥٥٧، ص٠٨٨.
 - 5 "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء أن الوتر ليس بحتم، الحديث: ٣ ٥٥، ج٢، ص٤.
 - 🥱 🔞 "سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب استحباب الوتر، الحديث: ١٤١٨، ج٢، ص٨٨.

تر مذی زید بن اسلم سے مرسلاً راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: ''جووتر سے سوجائے توضیح

خلین ساتا این ام احمانی بن کعب سے اور داری ابن عباس سے اور اود ور مذی ام المونین صدیقہ سے اور نسائی عبدالرحن بن ابزے رضی اللہ تعالی عنبم سے راوی ، ' رسول اللہ سلی اللہ تعالی علیہ وترکی پہلی رکعت میں سَبِیح اسْمَ سَ بِیِّكَ الْأَعْلَى

اوردوسرى مين قُلْ يَا يُهَا الْكُفِي وَنَ اورتيسرى مِن قُلْ هُوَاللَّهُ أَحَدٌ يرْضِي - ' (2)

خليئت 🗗 🥕 احمد وابو داو د و حاكم با فا د و تصحيح بريده رضى الله تعالى عنه سے را وى ، كه رسول الله صلى الله تعالى عليه وملم نے فر مايا: ''وترحق ہے جووتر نہ پڑھے وہ ہم میں سے نہیں، وترحق ہے جووتر نہ پڑھے وہ ہم میں سے نہیں، وترحق ہے جووتر نہ پڑھے وہ ہم میں سے بیں۔' ⁽³⁾

ابوداودوتر مذى وابن ماجه ابوسعيد خدرى رضى الله تعالى عند سے راوى ، كه حضور (صلى الله تعالى عليه ويلم) نے فرمايا: خليث ١٨ گيخ

"جوور سے سوجائے یا بھول جائے، توجب بیدار ہویایا دآئے پڑھ لے۔" (4)

خلینٹ (19 و ۲۰ 🌋 احمد ونسائی و دار قطنی بروایت عبدالرحمٰن بن ابزے عن ابیداورا بوداو دونسائی ابی بن کعب رضی الله تعالی عنبم سے راوی، که وحضورا قدس صلی الله تعالی عليه ولم جب وتر میس سلام چيمرتے، تين بار سُبُ حَانَ الْسَمَلِ كِ الْقُدُّوسِ كَهُ ورتيسرى مار بلندآ واز<u>سے کہتے۔'' ⁽⁵⁾</u>

مسائل فقهيه

وتر واجب ہے اگر سہوأیا قصداً نہ پڑھا تو قضا واجب ہے اور صاحبِ ترتیب کے لیے اگریدیا دیے کہنماز وترنہیں بڑھی ہے اور وفت میں گنجائش بھی ہے تو فجر کی نماز فاسد ہے،خواہ شروع سے پہلے یاد ہو یادرمیان میں یاد آ جائے۔⁽⁶⁾ (درمختار وغیرہ)

- ❶ "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في الرجل ينام عن الوتر أو ينساه، الحديث: ٥٦٥، ج٢، ص١٣١.
 - سنن النسائي"، كتاب قيام الليل ... إلخ، باب نوع آخر من القرأة في الوتر، الحديث: ١٧٣٢، ص٢٠٠٢. و "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في ما يقرأ به في الوتر، الحديث: ٤٦٢، ج٢، ص١٠.
 - 3 "سنن أبى داود"، كتاب الوتر، باب فيمن لم يوتر، الحديث: ١٤١٩، ج٢، ص٨٩.
 - ◘ "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في الرجل ينام عن الوتر أوينساه، الحديث: ٤٦٤، ج٢، ص١٢.
 - سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب في الدعاء بعد الوتر، الحديث: ١٤٣٠، ج٢، ص٩٣.
- و "سنن النسائي"، كتاب قيام الليل... إلخ، باب ذكر الاختلاف على شعبة فيه، الحديث: ١٧٣٣، ص٢٠٠٠.
 - 🦃 🚯 "الدرالمختار"معه"ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص ٢٩ ٥ _ ٥٣٢، وغيره .

ه مسئلهٔ () ورمخار میشه کریاسواری پر بغیرعذرنہیں ہوسکتی۔ ⁽¹⁾ (درمخار وغیرہ)

مسگان کی بندرود پڑھے نہ سلام پھیرے جیسے مغرب میں قعد ہ اُولی واجب ہے اور قعد ہ اُولی میں صرف التحیات پڑھ کر کھڑا ہوجائے ، نہ درود پڑھے نہ سلام پھیرے جیسے مغرب میں کرتے ہیں اُسی طرح کرے اورا گرقعد ہ اُولی بھول کر کھڑا ہو گیا تو لوٹنے کی اجازت نہیں بلکہ بحد ہ سہوکرے۔ (2) (درمختار، ردالحتار)

654

اَللَّهُ مَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ وَ نَسْتَغُفِرُكَ وَ نُوْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِي عَلَيْكَ الْخَيْرَ كُلَّهُ وَنَشُكُرُكَ وَنَوْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ الْخَيْرَ كُلَّهُ وَنَشُجُدُ وَلَكَ نُصَلِّيُ وَنَسُجُدُ وَلَكَ نَعُبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيُ وَنَسُجُدُ وَلَكَ نَعُبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيُ وَنَسُجُدُ وَاللَّهُ مَا يَعُدُمُ وَخُومُ وَحُمَتَكَ وَنَخُشَى عَذَابَكَ إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلُحِقٌ طَ . (3)

اور بہتر یہ ہے کہ اس دعا کے ساتھ وہ دعا بھی پڑھے جو حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے امام حسن رض اللہ تعالیٰ عنہ کو تعلیم فر مائی وہ یہ ہے۔

اَللَّهُ مَّ اهْدِنِي فِي مَنُ هَدَيْتَ وَعَافِنِي فِي مَنْ عَافَيْتَ وَ تَوَلَّنِي فِي مَنْ تَوَلَّيْتَ وَ بَارِكُ لِي فِي مَا اَعُطَيْتَ وَ تَوَلَّنِي فِي مَنْ تَوَلَّيْتَ وَ بَارِكُ لِي فِي مَا اَعُطَيْتَ وَقِينِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَإِنَّكَ تَقُضِي وَلَا يُقُضَى عَلَيْكَ إِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ

- 🚹 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٣٢، وغيره .
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٥٣٢،
 باب سجود السهو، ص٢٦٢.
- 3 ترجمہ: الی اہم بھے سے مدوطلب کرتے ہیں اور مغفرت جا ہتے ہیں اور بھے پیا اور بھے پیق کل کرتے ہیں اور ہر بھلائی کے ساتھ تیری ثنا کرتے ہیں اور ہم ہم بھرائی کے ساتھ تیری ثنا کرتے ہیں اور ہم تیرا شنا شکر کرتے ہیں باشکری نہیں کرتے اور ہم جدا ہوتے ہیں اور اس شخص کو چھوڑتے ہیں جو تیرا گناہ کرے۔

 اے اللہ (عزوجل)! ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور تیرے ہی لیے نماز پڑھتے ہیں اور تجدہ کرتے ہیں اور تیری ہی طرف دوڑتے اور سعی کرتے ہیں اور تیری رحمت کے امید وار ہیں۔ اور تیرے عذاب سے ڈرتے ہیں بے شک تیراعذاب کا فرول کو پہنچنے والا ہے۔ ۱۲

وَ تَعَالَيْتَ وَتَعَالَيْتَ سُبُحَانَكَ رَبَّ الْبَيْتِ وَ صَلَّى اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالِهِ. (1)

اورایک دُعاوہ ہے جومولی علی رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے ، کہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وہلم آخر وتر میں بڑھتے۔

ٱللَّهُمَّ اِنَّى اَعُودُ لُهِ مِرَضَاكَ مِنُ سَخَطِكَ وَمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُودُ بِكَ مِنْكَ لَا أُحْصِى

ثَنَآءً عَلَيُكَ اَنُتَ كَمَا اَثُنَيْتَ عَلَىٰ نَفُسِكَ. (2)

اورحضرت عمرض الله تعالى عنه عَذَابَكَ الْجِدَّ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ كَ بعديه برا حق تق

اَللّٰهُمَّ اغْفِرُلِیُ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِناتِ وَ الْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَ اَلْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْوَیْنَ یُکَذِّبُونَ رُسُلَکَ فَاتَ بَیْنَ کَلِمَتِهِمُ وَزَلْزِلُ اَقْدَامَهُمُ وَانْزِلُ عَلَیْهِمُ بَانُسَکَ الَّذِی لَمُ یُرَدَّ عَنِ اللّٰهُمَّ خَالِفُ بَیْنَ کَلِمَتِهِمُ وَزَلْزِلُ اَقْدَامَهُمُ وَانْزِلُ عَلَیْهِمُ بَانُسَکَ الَّذِی لَمُ یُرَدَّ عَنِ اللّٰهُمُ اللّٰمُ اللّٰهُمَّ خَالِفُ بَیْنَ کَلِمَتِهِمُ وَزَلْزِلُ اقْدَامَهُمُ وَانْزِلُ عَلَیْهِمُ بَانُسَکَ الّٰذِی لَمُ یُرَدًّ عَنِ اللّٰهُمُ اللّٰهُمُ مَا لَمُحْرِمِیْنَ . (3)

دُعائِ قنوت کے بعد دروو شریف پڑھنا بہتر ہے۔ (⁴⁾ (غنیہ وروالحتا روغیر ہما)

مَسِعَانَهُ ﴾ دعائے قنوت آہتہ پڑھے امام ہو یامنفرد یامقتدی،ادا ہو یا قضا،رمضان میں ہو یا اور دنوں میں۔ ⁽⁵⁾ (ردانجتار)

- ۔۔۔۔۔۔ ترجمہ:البی! تو بچھے ہدایت دے ان لوگول میں جن کوئو نے ہدایت دی اور عافیت دے ان کے زمرہ میں جن میں تو نے عافیت دی اور میرا ولی ہو۔ اُن میں جن کا تو ولی ہوا اور جو کچھ تو نے دیا اُس میں برکت دے اور جو کچھ تو نے فیصلہ کر دیا او سکے شرسے مجھے بچا بیشک تو عکم کرتا ہے اور تجھ پر تھم نہیں کیا جاتا، بیشک تیرا دوست ذلیل نہیں ہوتا اور تیرا دشمن عزت نہیں یا تا تُو برکت والا ہے تو پاک ہے، اے بیت (کعبہ) کے مالک اور اللہ (عزوجل) درود بھیج نی براوران کی آل بر۔ ۱۲
- ترجمہ: اے اللہ (عزوجل) میں تیری خوشنو دی کی پناہ ما تکتا ہوں تیری ناخوش سے اور تیری عافیت کی تیرے عذاب سے اور تیری ہی پناہ ما نگتا ہوں تیری غذاب سے اور تیری ہی پناہ ما نگتا ہوں تیجہ سے (تیرے عذاب سے) میں تیری پوری ثنانمیں کرسکتا ہوں جیسی تو نے اپنی ثنا کی ۔ ۱۲
- 3 ترجمہ:اے اللہ (عزوجل)! تو جمعے بخش دے اور مومنین ومومنات وسلمین ومسلمات کواوران کے دلوں میں اُلفت پیدا کردے اوران کے آئیس کی حالت درست کردے اوران کو اُو اپنے دشمن اور خودان کے دشمن پر مد دکر دے۔اے اللہ (عزوجل)! تو کفارا ہل کتاب پر لعنت کر جو تیرے رسولوں کی تکذیب کرتے ہیں اور تیرے دوستوں سے اُڑتے ہیں ،الہی تُو ان کی بات میں مخالفت ڈال دے اوران کے قدموں کو ہٹا دے اوران کے ورموں کو ہٹا دے اوران کے درموں کو ہٹا ہے واپن نہیں ہوتا۔ ۱۲
 - 4 "غنية المتملي"، صلاة الوتر، ص١٤١٨ ـ ٤١٨.

و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٤٣٥.

5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٥٣٦.

🏖 📶 😘 جود عائے قنوت نہ پڑھ سکے بیہ پڑھے۔

سَبَّنَا التَّافِي الدُّنْيَاحَسَنَةً وَفِ الْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَاعَنَ ابَ التَّاسِ كَهِ-(1) (عالمَّيري)

مَسْعَلَیْ اللّٰ اللّٰهِ الرّدعائے قنوت پڑھنا بھول گیااور رکوع میں چلا گیا تو نہ قیام کی طرف لوٹے نہ رکوع میں پڑھے اورا گر قیام کی طرف لوٹ آیااور قنوت پڑھا اور رکوع نہ کیا، تو نماز فاسد نہ ہوگی، مگر گنہگار ہوگااورا گرصرف الحمد پڑھ کررکوع میں چلا گیا تھا تو لوٹے اور سورت وقنوت پڑھے پھر رکوع کرے اور آخر میں سجد ہ سہوکرے۔ یو ہیں اگر الحمد بھول گیااور سورت پڑھ لی تھی تو لوٹے اور فاتحہ وسورت وقنوت بڑھ کر پھر رکوع کرے۔ (2) (عالمگیری)

مَسْنَانُ کُ کُ امام کورکوع میں یاد آیا کہ دعائے تنوت نہیں پڑھی تو قیام کی طرف عود نہ کرے (3) ، پھر بھی اگر کھڑا ہو گیااور دُعا پڑھی تورکوع کااعادہ نہ جاہیے (4) اورا گراعادہ کرلیااور مقتذیوں نے پہلے رکوع میں امام کاساتھ نہ دیااور دوسراامام کے ساتھ کیا ، یا پہلارکوع امام کے ساتھ کیا دوسرانہ کیا ، دونوں حال میں ان کی نماز بھی فاسد نہ ہوگی ۔ (5) (عالمگیری)

مسئالی کی ادام کا ساتھ دے اور اگرامام کی متابعت (6) کرے، اگر مقتدی قنوت سے فارغ نہ ہواتھا کہ امام رکوع میں چلا گیا تو مقتدی بھی امام کا ساتھ دے اوراگرامام نے بے قنوت پڑھے رکوع کر دیا اور مقتدی نے ابھی کچھ نہ پڑھا، تو مقتدی کواگر رکوع فوت ہونے کا اندیشہ ہو جب تو رکوع کر دے، ورنہ قنوت پڑھ کر رکوع میں جائے اور اُس خاص دعا کی حاجت نہیں جو دعائے قنوت کے نام سے مشہور ہے، بلکہ مطلقاً کوئی دُعاجے قنوت کہہ کمیس پڑھ لے۔ (7) (عالمگیری، ردالمختار)

- ۱۱ س... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.
 احرجارے پروردگار! تو ہم كود نيا ميں بھلائى دے (اور ہم كوآ خرت ميں بھلائى دے) اور ہم كوجہم كے عذاب ہے بچا۔ ١٢
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.
 - 🕙 یعنی واپس نه کو لے۔
 - ◄ يعنى ركوع نه لو ٹائے۔
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.
 - € پیروی۔
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.
 - و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: الاقتداء بالشافعي، ج٢، ص ٥٤٠.

👸 قنوت مڑھے۔⁽¹⁾ (درمختار، عالمگیری)

مسئلہ 🕩 🥕 بھول کر پہلی یادوسری میں دعائے قنوت پڑھ لی تو تیسری میں پھر پڑھے یہی راج ہے۔ (²⁾ (غنیہ ،حلیہ، بحر)

میں 📜 🔭 مسبوق امام کے ساتھ قنوت پڑھے بعد کونہ پڑھے اورا گرامام کے ساتھ تیسری رکعت کے رکوع میں ملاہے توبعد کوجو پڑھے گااس میں قنوت نہ پڑھے۔⁽³⁾ (عالمگیری)

مَستَالُهُ ۱۲﴾ وترکی نماز شافعی المذہب کے پیچھے پڑھ سکتا ہے، بشرطیکہ دوسری رکعت کے بعدسلام نہ پھیرے ورنہ سجے نہیں اور اس صورت میں قنوت امام کے ساتھ پڑھے یعنی تیسری رکعت کے رکوع سے کھڑے ہونے کے بعد جب وہ شافعی امام راهے۔(⁴⁾(عامهُ کت)

مَسِيًّا ﴾ ﴿ فَجِر مِينِ الرَشافعي المذهب كي اقتداكي اوراس نے اپنے مذہب کے موافق قنوت پڑھا تو بیہ نہ پڑھے، بلکہ ہاتھ لڑکائے ہوئے اتنی دریے پی کھڑار ہے۔⁽⁵⁾ (درمختار وغیرہ)

مَسِيَّالُهُ اللَّهِ اللَّهِ وَرَكِ سوااوركسي نماز مين قنوت نه يرُّ هے۔ ہاں اگر حادثۂ عظيمہ واقع ہوتو فجر ميں بھی يرُّ هسكتا ہے اور ظاہر ہیہ ہے کہ رکوع کے قبل قنوت پڑھے۔⁽⁶⁾ (درمختار وحموی ⁽⁷⁾)

مَسِيّاً لَمُ ١٥﴾ وتركى نماز قضا ہوگئ تو قضا پڑھنى واجب ہے اگر چەكتنا ہى زمانہ ہو گيا ہو، قصداً قضاكى ہويا بھولے سے قضا

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص ١٥٥.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاةالوتر، ج١، ص١١١.
- 2 "غنية المتملى"، صلاة الوتر، ص٢٢٦. و "البحرالرائق"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٧٣.
 - ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.
 - 4 البحر الرائق، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، ج٢، ص ٧٨،٧٠.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٣٨، وغيره .
- € "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٤١ه، و "الفتاوي الرضوية"، ج٧، ص٠٩٩.
- 🗗 بہارِشریعت میں اس جگہ درمختار وشرنبلا لی کا حوالہ کھا ہے، کیکن ہم نے صدرالشریعہ کے فرمان کےمطابق'' درمختار وحموی'' کر دیا۔ چنانچہ صدرالشريعه، بدرالطريقية حفزت علاّ مه مفتى **مجمدا مجدعلى اعظمي** عليه رحمة الله القوي**' فأوي امجديهُ'،** ج1،ص **٢٠**٧ كے حاشيه ميں لكھتے ہيں كه: فقیرنے بہارشر بیت میں بصورت نازلہ نماز فبح میں قنوت کا قبل رکوع ہوناتح برکیا مگراس میں حوالہ شرنبلا لی کا دیا۔اس مسللہ کی تحریر کے وقت پیمعلوم ہوا کہ شرنبلا لی بعدالرکوع کے قائل ہیں۔اصل مسودہ بہارشریعت کا نکلوا کردیکھا گیااس میں پہلے بیعبارت کابھی ہوئی تھی کہ قنوت نازلہ بعدالرکوع ہےاورشز نبلا کی کا حوالہ۔اعلی حصرت قدس ہم ہ نے بعدالرکوع قلم زدکرا دیااور بجائے اس کے قبل رکوع بنوایا مگر غلطی ہے۔ شرنبلا لی جوحوالتح پرتفاد ةلم زنہیں ہوا،''لہذالوگوں کوجاہیے کہ بہارشریعت میںشزنبلا لی کوللم زدکر کےاس کی جگہ برجموی ککھ لیں۔'' ۱۲ منہ

🧬 ہوگئی اور جب قضا پڑھے، تواس میں قنوت بھی پڑھے۔البتہ قضامیں تکبیر قنوت کے لیے ہاتھ نہاٹھائے جب کہ لوگوں کے سامنے یڑ ھتا ہو کہ لوگ اس کی تقصیر برمطلع ہوں گے۔⁽¹⁾ (عالمگیری، روالمختار)

 $(cosilon)^{(2)}$

مَسِعًا لَمُ كَالَبُ اللَّهِ عِيرَا خَرْسُبِ مِينِ جاكَنه پراعتاد ہوتو بہتریہ ہے کہ پچپلی رات میں وتر پڑھے، ورنہ بعدعشا پڑھ لے۔ (3) (مديث)

اوّل شب میں وتر پڑھ کرسور ہا، پھر پچھلے کو جاگا تو دوبارہ وتر پڑھنا جائز نہیں اور نوافل جتنے جاہے -8 1A 2 5.1. بر<u>طے۔ (4)</u> (غنیہ)

مَسِعَلَا اللهِ اللهِ وركعت نفل برُ هنا بهتر ہے،اس كى بہلى ركعت ميں إِذَارُ لَذِلَتُ ، دوسرى ميں قُلْ يَا يُها الْكُفِيُّ وْنَ بِرِهِ هِنا بِهِتر ہے۔حدیث میں ہے: که' اگررات میں نه اُٹھا تو بیتجد کے قائم مقام ہوجا کیں گی۔'' (5) پیمضامین احادیث سے ثابت ہیں۔

سنن و نوافل کا بیان

خلین اللہ تعالی علیہ وہلے میں ابو ہر برہ درضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ،حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وہلم فر ماتے ہیں : کہ الله تعالیٰ نے فرمایا: ''جومیر ہے کسی ولی سے دشتی کرے، اسے میں نے لڑائی کا اعلان دے دیااور میرابندہ کسی شے سے اُس قدر تقرب حاصل نہیں کرتا جتنا فرائض سے ہوتا ہے اور نوافل کے ذریعہ سے ہمیشہ قرب حاصل کرتا رہتا ہے، یہاں تک کہا ہے محبوب بنالیتا ہوں اورا گروہ مجھ سے سوال کرے، تواہے دوں گااور پناہ مانکے توپناہ دوں گا۔'' (6) (الحدیث)

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.
- و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٥٣٣.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٤٠٢.
- 3 انظر: "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب من خاف ان لا يقوم... إلخ، الحديث: ٧٥٥، ص ٣٨٠.
 - 4 "غنية المتملى "، صلاة الوتر، ص ٢٤.
 - 5 المرجع السابق.
 - 🥱 🚳 "صحيح البخاري"، كتاب الرقاق، باب التواضع، الحديث: ٢٥٠٢، ج٤، ص٢٤٨.

سننِ مؤكده كا ذكر

خلینٹ ۲۰ و ۳۳ 📡 مسلم وابوداود وتر مذی ونسائی ام المونین ام حبیب برض الله تعالی عنها سے راوی ،حضورا قدرس صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتے ہیں:''جومسلمان بندہ اللہ (عزوجل) کے لیے ہرروز فرض کے علاوہ تطوّع (نفل) کی بارہ رکعتیں پڑھے اللہ تعالیٰ اس کے لیے جنت میں ایک مکان بنائے گا، چارظہر سے پہلے اور دوظہر کے بعد اور دو بعد مغرب اور دو بعد عشا اور دوقبل نماز فجر۔''(1) اوررکعات کی تفصیل صرف تر مذی میں ہے۔تر مذی ونسائی وابن ماجہ کی روایت ام المومنین صدیقے درخی اللہ تعالی عنہا ہے یہ ہے کہ ''جو إن برمجا فظت كرےگا، جنت ميں داخل ہوگا۔'' (2)

خلایث 🗥 🎥 – تر مذی میں عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہا ہے مروی ، کیدرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا: ''ا دیار نجوم فجر کے پہلے کی دور کعتیں ہیں اوراد بار جود مغرب کے بعد کی دو۔'' (3)

سنتِ فجر کے فضائل

خلینٹ 🚳 🌯 💎 مسلم وتر مذی ام المومنین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے راوی ، فر ماتے ہیں سلی الله تعالی علیه وبلم: '' فخر کی دو

رکعتیں دنیاو مافیہا ہے بہتر ہیں۔'' (4)

خلایت 🔰 🚽 بخاری ومسلم وا بوداود ونسائی انھیں سے راوی ،کہتی ہیں:''حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) ان کی جتنی محافظت

فر ماتےکسی اورنفل نماز کی نہیں کرتے'' (5)

خلایث کی 🚄 🗕 طبرانی عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰءنہا ہے راوی ، کہ ایک صاحب نے عرض کی ، یارسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ عليه وملم)! کوئی ایساعمل ارشا دفر مایئے که الله تعالی مجھےاُ سے نفع دے؟ فرمایا:'' فجر کی دونوں رکعتوں کولازم کرلو،ان میں بڑی

- "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل السنن... إلخ، الحديث: ١٠٣ ـ (٧٢٨)، ص٣٦٧.
- و"جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء فيمن صلى في يوم و ليلة... إلخ، الحديث: ٥ ١ ٤، ج١، ص ٤ ٢ ٤.
- 2 "سنن النسائي"، كتاب قيام الليل... إلخ، باب ثواب من صلى في اليوم و الليلة... إلخ، الحديث: ١٧٩١، ص٣٠٧.
 - ③ "جامع الترمذي"، أبواب التفسير، باب و من سورة الطور، الحديث: ٣٢٨٦، ج٥، ص١٨٢.
- 4 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب ركعتي سنة الفجر... إلخ، الحديث: ٧٢٥، ص٥٦٥. 5 "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب تعاهد ركعتي الفجر... إلخ، الحديث: ١١٦٩، ج١، ص ٣٩٥.
 - 🦃 🙃 "الترغيب و الترهيب"، كتاب النوافل، الحديث: ٣، ج ١، ص٢٢٣.

💨 خلینے 🔨 🗕 ابویعلیٰ باسنادحسن انھیں سے راوی ، کہ فرماتے ہیں سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم: '' قُلُ هُوَاللّٰهُ اَحَدُّ تَبالَی قرآن

کی برابر ہے اور قُلْ لِیَا یُنها الْکُفِی وَ قَالَی قَر آن کی برابراوران دونوں کو فجر کی سنتوں میں پڑھتے اور بیفر ماتے کہان میں

زمانه کی غبتیں ہیں۔'' ⁽¹⁾ خلینٹ 🗨 🔑 ابوداودابو ہر برہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کرتے ہیں ، کہ فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم:'' فجر کی سنتیں نیہ

حیور و،اگر چتم پردشمنوں کے گھوڑ ہے آپڑیں۔'' (2)

سنتِ ظھر کے فضائل

خلیئٹ 🕩 🥕 🔻 احمد وا بو داو د وتر مذی ونسائی وابن ماجدام المومنین ام حبیبہ رضی اللہ تعالی عنہا ہے را وی ، کہ فر ماتے . ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم:'' جو تخص ظہر سے پہلے جاراور بعد میں جاررکعتوں پرمحافظت کرے، اللہ تعالی اس کوآگ پرحرام فر ما دے گا۔''⁽³⁾ تر مذی نے اس حدیث کوحسن صحیح غریب کہا۔

خلینٹ 🕕 🌯 ابوداودوابن ماجهابوایو ب انصاری رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که فر ماتے ہیں صلی الله تعالی علیه ہما!'' ظہر سے

پہلے چار رکعتیں جن کے درمیان میں سلام نہ پھیراجائے ،ان کے لیے آسان کے درواز کے کھولے جاتے ہیں۔' (4)

خلیث (۱۲) 💝 💎 احمد ونز مذی عبدالله بن سائب رض الله تعالی عندسے راوی ،حضورا قدس صلی الله تعالی علیه وسلم آفتاب ڈ ھلنے کے بعدنمازظہرے پہلے چار کعتیں پڑھتے اور فرماتے:'' بیالیی ساعت ہے کہاس میں آسان کے دروازے کھولے جاتے ہیں،لہذا

میں محبوب رکھتا ہوں کہ اس میں میرا کوئی عمل صالح بلند کیا جائے۔'' (5)

خلینے اس کی بند ارنے ثوبان رض اللہ تعالی عنہ ہے روایت کی کہ دو بہر کے بعد حیار رکعت پڑھنے کو حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) محبوب رکھتے ، ام الموننین صدیقہ رضی الله تعالی عنہا نے عرض کی ، پارسول الله (صلی الله تعالیٰ علیه وسلم)! میں دیکھتی ہوں کہ اس وقت میں ا حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم)نمازمجبوب رکھتے ہیں ،فر مایا: ''اس وقت آسان کے دروازے کھولے جاتے ہیں اورالله تیارک وتعالی

> 1 "الترغيب و الترهيب"، كتاب النوافل، الحديث: ٥، ج ١، ص ٢٢٤. و "المعجم الأوسط"، الحديث:١٨٦، ج١، ص٦٨.

- 2 "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب في تخفيفهما، الحديث: ١٢٥٨، ج٢، ص٣١.
- سنن النسائي"، كتاب قيام الليل... إلخ، باب الاختلاف على اسماعيل بن أبي خالد، الحديث: ١٨١٣، ص ٢٠٠.
 - سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب الأربع قبل الظهر و بعدها، الحديث: ١٢٧٠، ج٢، ص٣٥.
 - 🤿 🗗 "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في الصلاة عند الزوال، الحديث: ٤٧٧، ج٢، ص٢٠.

سنن ونوافل كابيان

🐉 مخلوق کی طرف نظر رحمت فرما تا ہے اوراس نماز پر آ وم ونوح وابرا ہیم ومویٰ وعیسیٰ علیم اصلا ۃ والسلام محافظت کرتے۔'' (1)

661

خل پیٹ ۱۴ و ۱۵ ﷺ طبرانی براء بن عازب رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم: ''جس نے ظہر کے پہلے جارر تعتیں پڑھیں، گویااس نے تہجر کی چارر کعتیں پڑھیں اور جس نے عشاکے بعد جار پڑھیں، تویہ شب قدر میں جار

کے مثل ہیں۔'' (2) عمر فاروق اعظم وبعض دیگر صحابہ کرام رض اللہ تعالیٰ عنہ ہے بھی اسی کی مثل مروی۔

سنتِ عصر کے فضائل

احمد وابوداود وترمذي بافا د و تحسين عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنها سے راوى ، فرماتے ہیں صلی الله تعالی علیه و بلم:

''الله تعالیٰ اس شخص بردهم کرے، جس نے عصر سے پہلے حیار رکعتیں بیٹھیں۔'' (3)

خلایث (۱۷) 💝 💎 تر مذی مولی علی رضی الله تعالی عنه 🚐 راوی ، که دخضور (صلی الله تعالی علیه دسم)عصر سے پہلے چار رکعتیں پڑھا

کرتے۔'' (⁴⁾ اور ابود اود کی روایت میں ہے کہ دو پڑھتے تھے۔ ⁽⁵⁾

خلایث ۱۸ و ۱۹ 🔑 طبرانی کبیر میں ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فر ماتے ہیں:'' جوعصر سے پہلے جارر کعتیں پڑھے،اللہ تعالیٰ اس کے بدن کوآ گ برحرام فر مادے گا۔'' ⁽⁶⁾ دوسری روایت طبرانی کی عمر و ین عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے ، کہ ^د حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے مجمع صحابیہ میں جس میں امیر المومنین عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی تھے،فر مایا:'' جوعصر سے پہلے جار رکعتیں پڑھے،اُ ہےآگ نہ چُھوئے گی۔'' (7)

سنتِ مغرب کے فضائل

خلید دو این نے مکول سے مُرسلاً روایت کی که فرماتے ہیں:'' جو مخص بعد مغرب کلام کرنے سے پہلے دور کعتیں پڑھے، اُس کی نماز علمین میں اٹھائی جاتی ہے۔''اور ایک روایت میں'' چار رکعت ہے۔'' نیز اُٹھیں کی روایت

- 1 "مسند البزار"، مسند ثوبان رضى الله تعالىٰ عنه، الحديث: ٢٦٦٤، ج ١٠٠ ص ١٠٢.
 - ٣٨٦ ٤، ص٣٨٦ ...
 ١١ المعجم الأوسط" للطبراني، باب الميم، الحديث: ٦٣٣٢، ج٤، ص٣٨٦ .
- 3 "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب الصلاة قبل العصر، الحديث: ١٢٧١، ج٢، ص٣٥.
- "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في الأربع قبل العصر، الحديث: ٢٩، ج١، ص٤٣٧.
 - سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب الصلاة قبل العصر، الحديث: ٢٧٢، ج٢، ص٣٥.
 - 6 "المعجم الكبير"، الحديث: ٦١١، ج ٢٣، ص ٢٨١.
 - 🦃 🗗 "المعجم الأوسط"، باب الألف، الحديث: ٥٨٠، ج ٢، ص٧٧.

🧬 حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے ہے، 'اس میں اتنی بات زیادہ ہے کہ فر ماتے تھے مغرب کے بعد کی دونوں رکعتیں جلد پڑھو کہ وہ فرض

کے ساتھ پیش ہوتی ہیں۔'' (1)

خلیث ۲۲ 💝 تر ندی وابن ماجه ابو ہر بر ہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ فر ماتے ہیں:'' جو شخص مغرب کے بعد چھر کعتیں

یڑھے اوران کے درمیان میں کوئی بُری بات نہ کیے ، تو بارہ برس کی عبادت کی برابر کی جائیں گا۔'' (²⁾

خلین ۲۳ 💝 طرانی کی روایت عمار بن پاسر رضی الله تعالی عنباسے ہے کہ فرماتے ہیں:'' جومغرب کے بعد چھر کعتیں

یڑھے،اس کے گناہ بخش دیے جا کیں گے،اگر چیسمندر کے جھاگ برابر ہوں۔''⁽³⁾

خلینٹ ۲۴ 💨 ترمذی کی روایت ام المونین صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا ہے ہے،'' جومغرب کے بعد ہیں رکعتیں پڑھے،

الله تعالیٰ اس کے لیے جنت میں ایک مکان بنائے گا۔'' (4)

خلین ۲۵ 💨 ابوداود کی روایت انھیں سے ہے، کہ فر ماتی ہیں: عشا کی نماز پڑھ کر نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم میرے مکان میں جب تشریف لاتے تو ''حاریا چھر کعتیں پڑھتے۔'' (5)

مسائل فقهيّه

سنتیں بعض مؤکدہ ہیں کہ شریعت میں اس برتا کید آئی۔ بلاعذرا یک باربھی ترک کرے تومستحق ملامت ہے اور ترک کی عادت کرے تو فاسق ،مردودالشہا دۃ مستحق نار ہے۔ ⁽⁶⁾اوربعض ائمہ نے فر مایا: که''وہ گمراہ گھیرایا جائے گااور گنہگار ہے،اگر چہ اس کا گناہ واجب کے ترک ہے کم ہے۔'' تلوج میں ہے، کہاس کا ترک قریب حرام کے ہے۔اس کا تارک مستحق ہے کہ ا معاذ الله! شفاعت سےمحروم ہوجائے کہ حضورا قدس صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فر مایا: ''جومیری سنت کوترک کرے گا ، اسے میری شفاعت نه ملے گی۔''سنت مؤ کدہ کوسنن الہدی بھی کہتے ہیں۔

دوسری فتم غیرمؤ کدہ ہے جس کوسنن الزوائد بھی کہتے ہیں۔اس پرشریعت میں تا کیدنہیں آئی، کبھی اس کومستحب اور

- ◘ "مشكاة المصابيح"، كتاب الصلاة، باب السنن و فضائلها، الحديث: ١١٨٥، ١١٨٥، ج ١، ص ٣٤٥.
- 2 "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في فضل التطوع... إلخ، الحديث: ٤٣٥، ج١، ص٤٣٩.
 - 3 "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٧٢٢٤٠ ج٥، ص٥٥٦.
- "---- "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في فضل التطوع... إلخ، الحديث ٤٣٥، ج١، ص٤٣٩.
 - "سنن أبى داود"، كتاب التطوع، باب الصلاة بعد العشاء، الحديث: ٣٠٣١، ج٢، ص٤٧.
 - 💨 🙃 یعنی اس کی گواہی قابل قبول نہیں اور جہنم کا حقدار ہے۔

بهرَادِشْريْعَتْ بْطَّىدِ جَمِّالُهُ (4) 💽 🌕 663 سنن ونوافل کا

مندوب بھی کہتے ہیں اورنفل عام ہے کہ سنت پر بھی اس کا اطلاق آیا ہے اور اس کے غیر کو بھی نفل کہتے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ فقہائے کرام باب النوافل میں سنن کا بھی ذکر کرتے ہیں کہ نفل ان کو بھی شامل ہے۔ (۱) (روالحتار) لہذانفل کے جینے احکام بیان ہوں گے وہ سنتوں کو بھی شامل ہوں گے ، البت اگر سنتوں کے لیے کوئی خاص بات ہوگی تو اس مطلق تھم سے اس کو الگ کیا جائے گا جہاں اسٹنا نہ ہو، اسی مطلق تھم فیل میں شامل مجمیں۔

مسئلة المستالة المستا

- (۱) دورکعت نماز فجر سے پہلے
 - (۲) چارظهر کے پہلے، دوبعد
 - (۳) دومغرب کے بعد
 - (۴) دوعشاکے بعداور
- (۵) چار جُمُعَہ سے پہلے، چار بعد یعنی جُمُعَہ کے دن جُمُعَہ بڑھنے والے پر چودہ رکعتیں ہیں اور علاوہ جُمُعَہ کے باقی دنوں میں ہرروز بارہ رکعتیں۔⁽²⁾(عامۂ کتب)
 - مَسَعَانُ کَ افْضَل میہے کہ جُمُعَہ کے بعد چار پڑھے، پھر دو کہ دونوں حدیثوں بڑمل ہوجائے۔⁽³⁾ (غنیہ)
- مسئان سے بڑھی جائیں گاروں پڑھکر چوتھی کے بعد سلام بھیریں اورا گرکسی نے ایسا کیا توسنتیں ادانہ ہوئیں۔ یو ہیں اگر چار دکھت کی اعد سلام بھیریں، یہنیں کہ دودور کھت پر سلام بھیریں اورا گرکسی نے ایسا کیا توسنتیں ادانہ ہوئیں۔ یو ہیں اگر چار رکعت کی منت مانی اور دو دور کھت کرکے چار پڑھیں تو منت پوری نہ ہوئی، بلکہ ضرور ہے کہ ایک سلام کے ساتھ چاروں پڑھے۔ (4) (درمختار وغیرہ)

سبسنائی میں سبسنتوں میں قوی ترسنت فجر ہے، یہاں تک کہ بعض اس کو داجب کہتے ہیں اور اس کی مشروعیت کا اگر کوئی ا نکار کرے تو اگر شبہةً یا براہ جہل ہوتو خوف گفر ہے اور اگر دانستہ بلاشبہہ ہوتو اس کی تکفیر کی جائے گی ولہذا بیسنتیں بلاعذر نہ بیٹھ کر ہوسکتی ہیں نہ سواری پرنہ چلتی گاڑی پر، ان کا حکم ان باتوں میں بالکل مثل وتر ہے۔ ان کے بعد پھر مغرب کی سنتیں پھر ظہر

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الطهارة، مطلب في السنة وتعاريفيها، ج١، ص ٢٣٠ ،وغيره .
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٥٥.
 - 3 "غنية المتملي"، فصل في النوافل، ص٣٨٩.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٥ ٥، وغيره .

الکی کے بعد کی پھرعشا کے بعد کی پھرظہر سے پہلے کی سنتیں اور اصح بیہ ہے کہ سنت فجر کے بعدظہر کی پہلی سنتوں کا مرتبہ ہے کہ حدیث

میں خاص ان کے بارے میں فرمایا: که''جوانھیں ترک کرےگا ،اُسے میری شفاعت نه پہنچےگا۔'' ⁽¹⁾ (روالحتار وغیرہ)

سَمَعَانُ ہُ ﴾ اگرکوئی عالم مرجع فتو کی ہو کہ فتو کی دینے میں اسے سنت پڑھنے کا موقع نہیں ملتا تو فجر کے علاوہ باقی سنتیں ترک کرسکتا ہے کہ اس وقت اگرموقع نہیں ہے تو موقو ف رکھے،اگر وقت کے اندرموقع ملے پڑھ لے ورنہ معاف ہیں اور فجر کی

رت و ساہے یہ ن دیسے ہو روٹ میں ہے و استیں اس جار در مختار ، روالمحتار) سنتیں اس حالت میں بھی ترکنہیں کرسکتا۔ ⁽²⁾ (در مختار ، ر دالمحتار)

<u> مَسَعَالُهُ لَ ﴾</u> فجر کی نماز قضا ہوگئی اور زوال سے پہلے پڑھ لی تو سنیں بھی پڑھے ور نہ نہیں علاوہ فجر کے اور سنیں قضا ہوگئیں توان کی قضانہیں۔⁽³⁾ (روالحتار)

مَسَنَانُ کی ہے۔ دور کعت نقل پڑھے اور بیر مگان تھا کہ فجر طلوع نہ ہوئی بعد کو معلوم ہوا کہ طلوع ہو چکی تھی تو بیر کعتیں سنت فجر کے قائم فجر کے قائم مقام ہوجائیں گی اور جار کعت کی نیت باندھی اور ان میں دو پچھلی طلوع فجر کے بعدوا قع ہوئیں تو بیسنت فجر کے قائم مقام نہ ہوں گی۔ (4) (ردالمختار)

سَسَعَلَهُ ﴾ طلوع فجر سے پہلے سنت فجر جائز نہیں اور طلوع میں شک ہو جب بھی ناجائز اور طلوع کے ساتھ ساتھ شروع کی توجائز ہے۔ (⁵⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُ وَ ﴾ ظہر یا جُحُدے پہلے کی سنت فوت ہوگئی اور فرض پڑھ لیے تو اگر وقت باقی ہے بعد فرض کے پڑھے اور افضل بیہے کہ بچپلی سنتیں پڑھ کران کو پڑھے۔⁽⁶⁾ (فتح القدیر)

سَمَعَانُ البته امام محمد رحمالله تعالى فرماتے ہیں: که طلوع آفتاب کی تضانہیں البته امام محمد رحمالله تعالی فرماتے ہیں: که طلوع آفتاب کے بعد پڑھ لے تو بہتر ہے۔ (1) (غنیہ) اور طلوع سے پیشتر (8) بالا تفاق ممنوع ہے۔ (9) (ردالمختار) آج کل

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٤٨ ٥ _ . ٥٥٠.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص ٩٤٥.
 - ③..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٠٥٥.
 - 4 المرجع السابق.
 - 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢.
 - 6 "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب ادراك الفريضة، ج١، ص١٤، و باب النوافل، ص٣٨٦.
 - 7 "غنية المتملى "، فصل في النوافل، ص٣٩٧.
 - 🛭 یعنی سُورج نکلنے سے پہلے۔
 - "درالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٠٥٥.

665

بِ الشرعوام بعد فرض فورأ پڑھ لیا کرتے ہیں بینا جائز ہے، پڑھنا ہو تو آفتاب بلند ہونے کے بعد زوال سے پہلے پڑھیں۔ سَسَالُ اللّٰ اللّٰ الله قبل طلوع آفتاب سنت فجر قضایرٌ صنے کے لیے بیرحیلہ کرنا کہ شروع کر کے توڑ دے پھرادا کرے بیاناجائز

ہے۔سنت فجریڑھ کی اور فرض قضا ہو گئے تو قضایڑھنے میں سنت کا اعادہ نہ کرے۔⁽¹⁾ (غنیہ)

ست فرض تنہا پڑھے جب بھی سنتوں کا ترک جائز نہیں ہے۔ (2) (عالمگیری) سنت فجر کی پہلی رکعت میں الحمد

کے بعد سور ہُ کا فرون اور دوسری میں قُلْ هُوَ اللّٰهُ پرُ هناسنت ہے۔ (3) (غنیہ وغیرہ)

مست المراس الله المرابع المراب کے بعد جماعت مل جائے گی ،اگرچہ قعدہ ہی میں شامل ہوگا تو سنت پڑھ لے مگرصف کے برابر پڑھنا جائز نہیں ، بلکہ اپنے گھر پڑھے یا بیرون مسجد کوئی جگہ قابل نماز ہوتو وہاں پڑھےاور میمکن نہ ہو تو اگرا ندر کے حصہ میں جماعت ہوتی ہو تو باہر کے حصہ میں پڑھھے، باہر کے حصہ میں ہو تو اندراورا گراس مسجد میں اندر باہر دو درجے نہ ہوں تو ستون یا پیڑ کی آ ڑ میں پڑھھے کہاس میں اور

صف میں حائل ہوجائے اورصف کے پیھیے پڑھنا بھی ممنوع ہے اگر چہصف میں پڑھنازیادہ مُراہے۔ آج کل اکثرعوام اس کا بالکل خیال نہیں کرتے اور اسی صف میں گھس کر شروع کر دیتے ہیں بینا جائز ہے اور اگر ہنوز

جماعت شروع نه ہوئی تو جہاں جا ہے سنتیں شروع کر بےخواہ کوئی سنت ہو۔ ⁽⁴⁾ (غنیہ)

گرجانتا ہوکہ جماعت جلد قائم ہونے والی ہےاور بیأس وقت تک سنتوں سے فارغ نہ ہوگا تو ایسی جگہ نہ پڑھے کہ اس كےسىپ صف قطع ہو۔

مستان اس کورکوع میں پایا اور پہیں معلوم کہ پہلی رکعت کا رکوع ہے یا دوسری کا تو سنت ترک کرے اورال حائے۔⁽⁵⁾(عالمگیری)

مَسِيًّا ﴾ اگرونت میں گنجائش ہواوراس وقت نوافل مکروہ نہ ہوں تو جتنے نوافل چاہے پڑھے اورا گرنماز فرض یا

جماعت جاتی رہے گی تو نوافل میں مشغول ہونا ناجائز ہے۔

- 1 "غنية المتملى "، فصل في النوافل، ٣٩٨.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١١.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢. و "غنية المتملى"، فصل في النوافل فروع لو ترك، ص٩٩٣.
 - ٣٩٦. "غنية المتملى"، فصل في النوافل، ٣٩٦.
- . 17 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في ادراك الفريضة، ج١، ص١٢٠.

و سنت وفرض کے درمیان کلام کرنے سے اصح یہ ہے کہ سنت باطل نہیں ہوتی البتہ ثواب کم ہوجا تا ہے۔ یمی تھم ہراُس کام کاہے جومنا فی تحریمہ ہے۔ (1) (تنویر)اگر زیج وشرا (2) یا کھانے میں مشغول ہوا تواعا دہ کرے، ہاں سنتِ بعد بید میں اگر کھانالا یا گیااور بدمزہ ہوجانے کااندیشہ ہے تو کھانا کھالے پھرسنت پڑھے مگر وفت جانے کااندیشہ ہو تو پڑھنے کے بعد کھائے اور بلاعذرسنتِ بعدید کی بھی تاخیر مکروہ ہے اگر چدادا ہوجائے گی۔(3) (روالحتار)

مستان کا 💨 عشاوعفر کے پہلے نیزعشا کے بعد چار چار کعتیں ایک سلام سے پڑھنامستحب ہے اور یہ بھی اختیار ہے

کہ عشاکے بعددوہی پڑھے مستحب ادا ہوجائے گا۔ یو ہیں ظہر کے بعد چار رکعت پڑھنامستحب ہے کہ حدیث میں فرمایا:

''جس نے ظہرے پہلے چاراور بعد میں چار پرمحافظت کی ،اللہ تعالیٰ اُس پرآ گ حرام فر مادے گا۔'' (4)

علامہ سید طحطا وی فرماتے ہیں کہ سرے ہے آگ میں داخل ہی نہ ہوگا اور اُس کے گناہ مٹادیے جا کیں گے اور جواس پر

مطالبات ہیں اللہ تعالیٰ اُس کے فریق کوراضی کردے گایا پیمطلب ہے کہ اسے ایسے کا موں کی توفیق دے گاجن پرسزانہ ہو۔ (5)

اورعلامہ شامی فرماتے ہیں کہ اُس کے لیے بشارت ہے: کہ''سعادت پراس کا خاتمہ ہوگا اور دوزخ میں نہ جائے گا۔'' (6)

مستان ۱۸ ﷺ سنت کی منت مانی اور پڑھی سنت ادا ہوگئی۔ یو ہیں اگر شروع کر کے تو ڑ دی پھر پڑھی جب بھی سنت ادا ہوگئی۔⁽⁷⁾ (درمختار، ردالحتار)

سَمَانُ 19 ﴾ نفل نمازمنت مان کر پڑھنا بغیرمنت کے پڑھنے سے بہتر ہے جب کہ منت کسی شرط کے ساتھ نہ ہو، مثلاً فلاں بیاضیح ہوجائے گا تواتی نماز پڑھوں گااور سنتوں میں منت نہ ماننا نصل ہے۔⁽⁸⁾ (روالحتار)

مَسِعًا ﴾ العدمغرب چورگعتیں مستحب ہیں ان کوصلا ۃ الا وّا بین کہتے ہیں، خواہ ایک سلام سے سب پڑھے یا دو ہے یا

- ❶ "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٥.
 - 2 لیعنی خرید و فروخت _
- ③ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسجد، ج٢، ص٩٥٥.
 - 4.... "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، الحديث: ٢٧٤، ج١، ص٤٣٥.
- المحطاوي على الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج١، ص١٠٨.
- شردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٤٧٥.
- 7 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث مهم: في الكلام على الضجعة بعد سنة الفجر، ج٢،
 - 🕒 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الكلام على حديث النهي عن النذر، ج٢، ص٦٢٥.

تین سے اور تین سلام ہے یعنی ہر دور کعت پر سلام پھیرنا فضل ہے۔ (1) (درمختار ، روالحتار)

سَسَالُ اللّٰ ﴾ ظہر ومغرب وعشا کے بعد جومشحب ہےاس میں سنت مؤکدہ داخل ہے،مثلاً ظہر کے بعد حیار پڑھیں تو مؤ كده ومستحب دونوں ادا ہوگئیں اور پول بھی ہوسکتا ہے كہ مؤ كدہ ومستحب دونوں كوايك سلام كے ساتھ ادا كرے يعني جارركعت (سلام پھیرے۔ $^{(2)}$ (فتح القدیر)

667

سَتَالُ ۲۲ ﴾ عشا کے بل کی سنتیں جاتی رہیں توان کی قضانہیں پھربھی اگر بعد میں پڑھے گا تونفل مستحب ہے، وہ سنت مستحبه جوفوت بهوئي ادانه بهوئي _(3) (درمختار، ردالمحتار)

سَسَعَالُ ٣ ﴾ دن کے نفل میں ایک سلام کے ساتھ چار رکعت سے زیادہ اور رات میں آٹھ رکعت سے زیادہ پڑھنا مکروہ ہےاورافضل یہ ہے کہ دن ہویارات ہوجا رجا ررکعت پرسلام پھیرے۔⁽⁴⁾ (درمختار)

مَسِعًا ﴾ ﴿ جوسنت مؤكده جار ركعتي ہے اس كے قعد ہ اولیٰ میں صرف التحیات پڑھے اگر بھول كر درود شريف پڑھ ليا تو سجد ہ سہوکرے اوران سنتوں میں جب تیسری رکعت کے لیے کھڑا ہوا تو سُبُ حنکَ اور اَعُوْذُ مجھی نہ پڑھے اوران کے علاوہ اور جار رکعت والے نوافل کے قعد ۂ اولی میں بھی درووشریف پڑھے اور تیسری رکعت میں سُبُ حندَک اور اَعُودُ مجھی پڑھے، بشرطیکہ دورکعت کے بعد قعدہ کیا ہوورنہ پہلا سُنے لحنک اورائع وُذُ کافی ہے، منت کی نماز کے بھی قعدہ اولی میں درود پڑھے اورتيسري ميں ثناوتعوذ _ ⁽⁵⁾ (درمختار)

سَسَانُ ٢٥﴾ ﴿ حيار ركعت نفل يرُ هے اور قعد ہُ اولی فوت ہو گيا بلکہ قصداً بھی ترک کر دیا تو نماز باطل نہ ہوئی اور بھول کر تیسری رکعت کے لیے کھڑا ہو گیا تو عود نہ کرےاور مجد ہُ سہوکر لے نماز کامل ادا ہو گی ،اگر تین رکعتیں پڑھیں اور دوسری پر نہ بیٹھا تو نماز فاسد ہوگی اورا گر دور کعت کی نیت باندھی تھی اور بغیر قعدہ کیے تیسری کے لیے کھڑا ہو گیا توعود کرے ورنہ فاسد ہوجائے گی۔⁽⁶⁾(عالمگیری)

مَسِعًا الله الله على قيام طويل بونا كثرت ركعات سے افضل ہے یعنی جب كدسى وقت معین تك نماز برا هناجا ہے

- ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٤٧ ه.
 - 2 "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب النوافل، ج١، ص٣٨٦.
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: هل الإساءة دون الكراهة... إلخ، ج٢، ص ٦٢١.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٠٥٥.
 - 5 المرجع السابق، ص٧٥٥.
 - 🧝 🌀 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١٠ ص١١١.

مثلًا دورکعت میں اتناوقت صرف کردینا چار رکعت پڑھنے سے افضل ہے۔ (1) (درمختار، ردامختار)

مَسِعًا لَهُ ٢٤﴾ فلل نماز گھر میں پڑھناافضل ہے۔مگر

- (۱) تراوت کو
- (٢) تحية المسجداور
- (m) والیسی سفر کے دو نقل کہان کو مسجد میں پڑھنا بہتر ہے اور
- (۴) احرام کی دورکعتیں کہ میقات کے نز دیک کوئی مسجد ہو تواس میں پڑھنا بہتر ہے اور
 - (۵) طواف کی دور کعتیں کہ مقام ابراہیم کے پاس پڑھیں اور
 - (۲) معتكف كےنوافل اور
 - (۷) سورج گهن کی نماز که سجد میں بڑھےاور
- (٨) اگرية خيال ہوكه گھر جاكر كاموں كى مشغولى كے سبب نوافل فوت ہوجائيں گے يا گھرييں جى ند كلے گااور خشوع

کم ہوجائے گا تو مسجد ہی میں پڑھے۔⁽²⁾ (روالحتار)

سَسَعَانُ وَ اللهِ عَلَى مَا زَقَصِداً شروع كرنے سے واجب ہوجاتی ہے كہ اگر توڑ دے گا قضا پڑھنی ہوگی اور اگر قصداً شروع نہ كئى مثلاً بيكان تھا كہ فرض پڑھنا ہے اور فرض كى نيت سے شروع كيا پھر ياد آيا كہ پڑھ چكا تھا تو اب يفل ہے اور توڑ دينے سے قضا واجب ہوگی۔(4)
سے قضا واجب نہيں بشرطيكہ ياد آتے ہى توڑ دے اور ياد آنے پراس نماز كو پڑھنا اختيار كيا تو توڑ دينے سے قضا واجب ہوگی۔(4)

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: قولهم كل شفع من النفل الصلاة ليس مطردا، ج٢، ص٤٥٥.
- 🗨 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: قولهم كل شفع من النفل الصلاة ليس مطردا، ج٢، ص٦٢ه.
 - €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٧٣٥.
- ◘..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٧٤٥-٥٧٦.
 - چ 🗗 🚐 تعنی نماز کے دوران۔

(درمختار، ر دالمحتار)

سنن ونوافل كابيان

🥌 قادر ہوا۔ یو ہیں نفل پڑھتے میں عورت کوحیض آگیا تو قضاوا جب ہوگئی بعد طہارت قضایر ﷺ 🕮 (در مختار ، ردا کمختار) .

مستانی (۳) ﴾ شروع کرنے کی دوصورتیں ہیں ایک یہ کرتج بمیہ یا ندھے دوسری یہ کہ تیسری رکعت کے لیے کھڑا ہوگیا بشرطیکہ شروع صحیح ہواورا گرشروع صحیح نہ ہومثلاً أتى یاعورت کے پیچھےاقتداکی بابے وضونایاک کپڑوں میں شروع کردی تو قضا واجب نه ہوگی ۔ (2) (ردانجتار، عالمگیری)

سَسَاكَ ٣٠ ﴾ فرض پڑھنے والے كے يتھے نفل كى نيت سے شروع كى پھرياد آيا كديہ فرض مجھے پڑھنا ہے اور تو ڑ کراسی فرض کی نیت سے اقتدا کی جووہ پڑھے رہاتھا یا توڑ کر دوسر نے فٹل کی نیت کر کے شامل ہوا تو اُس نفل کی قضا واجب نهیں _ ⁽³⁾ (درمختار)

قضایرٹے ھےاور دوسرے وفت مکروہ میں قضایرٹھی جب بھی ہوگئی مگر گناہ ہوا اور پوری کر لی تو ہوگئی مگر وفت مکر وہ میں پڑھنے کا گناہ ہوا، بلاوجہ شری نفل شروع کر کے توڑ دیناحرام ہے۔ (⁴⁾ (ردامحتاروغیرہ)

مست ان سروع کرنے والاقرار دیاجائے گا کہ ۔ نفل کا ہر شفع (یعنی دور کعت) علیحدہ علیحدہ نماز ہے۔ (⁵⁾ (عالمگیری)

سَنِينًا ﴾ ﴿ عَارِرَكُعتُ نَفْلَ كَي نبيت باندهي اور شفع اوّل يا ثاني مين توڙ دي تو دورکعت قضا واجب ہوگي مگر شفع ثاني

توڑنے سے دور کعت قضاوا جب ہونے کی بیشرط ہے کہ دوسری رکعت پر قعدہ کر چکا ہوور نہ جار قضا کرنی ہوں گی۔(6) (درمختار)

سنت مؤ کدہ اور منت کی نماز اگر چار رکعتی ہوتو توڑنے سے چار کی قضادے۔ یوہیں اگر چار رکعتی فرض پڑھنے والے کے بیچھے نفل کی نیت باندھی اور توڑ دی تو چار کی قضا واجب ہے۔ پہلے شفع میں توڑی یا دوسرے میں۔ (^) (درمختاروغيره)

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٧٧ه.
 - 2 المرجع السابق، ص٧٤ه، و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١٠ ص١١١.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٤٧٥.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٧٦، وغيره .
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٣.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٧٧ه.
 - 👣 المرجع السابق، ص٥٧٨، وغيره .

🗳 📶 🛂 🚽 🚽 چار رکعت کی نیت با ندهی اور جاروں میں قراءت نہ کی یا پہلی دو میں یا بچھلی دو میں نہ کی یا پہلی دومیں ہےاںک رکعت میں نہ کی ہانچیجلی دومیں ہےاںک رکعت میں نہ کی یا پہلی دونوں اور بچیلی میں ہےاںک میں قراءت جیموڑ دی توان

ج_ھصورتوں میں دورکعت قضا واجب ہے۔اورا گرپہلی دو میں سے ایک اور پیچیلی دو میں سے ایک یا پہلی دو میں سے ایک میں اور

تحچیلی کی دونوں میں قراءت حچوڑ دی توان صورتوں میں حیار رکعت قضاوا جب ہے۔ ⁽¹⁾ (عامۂ کتب)

مَسِعًا ﴾ 🗥 💨 اگردورکعت پر بقدرتشهد بیٹھا پھرتو ڑ دی تواس صورت میں بالکل قضانہیں بشرطیکہ تیسری کے لیے کھڑانہ

ہوا ہوا در پہلی دونوں میں قراءت کر چکا ہو۔⁽²⁾ (درمختار) مگر بوجہ ترک واجب اس کےاعاد ہ کا حکم دیا جائے گا۔

ہے یعن جتنی کی قضاامام پرواجب ہوگی مقتدی پر بھی واجب ۔(3) (درمخار)

سَتَانُ ۴ 🐣 کھڑے ہوکر پڑھنے کی قدرت ہو جب بھی بیٹھ کرنفل پڑھ سکتے ہیں (4) مگر کھڑے ہوکر پڑھنا افضل ہے کہ حدیث میں فرمایا:''بیٹھ کریڑھنے والے کی نماز کھڑے ہو کریڑھنے والے کی نصف ہے۔'' ⁽⁵⁾ اور عذر کی وجہ سے بیٹھ کر پڑھے تو تواب میں کی نہ ہوگی ۔ یہ جوآج کل عام رواج پڑ گیا ہے کہ فعل بیٹھ کر پڑھا کرتے ہیں بظاہر ریمعلوم ہوتا ہے کہ شاید بیٹھ کریڑھنے کوافضل سیجھتے ہیں ایسا ہے تو ان کا خیال غلط ہے۔ وتر کے بعد جود ورکعت نفل پڑھتے ہیں ان کا بھی یہی تکم ہے کہ کھڑے ہوکر بڑھاافضل ہےاوراس میں اُس حدیث سے دلیل لا نا کہ حضورا قدس سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے وہڑ کے بعد بیٹھ کرنفل بڑھے۔ (6) صحیح نہیں کہ رید حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) کے مخصوصات میں سے ہے۔

چنانچے کیے مسلم شریف کی حدیث عبداللہ بن عمر ورضی اللہ تعالی عنہا ہے ہے ، فر ماتے ہیں: مجھے خبر کینچی کہ حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ رسلم نے فر ماما ہے: کہ بیٹے کر بڑھنے والے کی نماز کھڑ ہے ہو کر بڑھنے والے کی نماز سے آ دھی ہے۔اس کے بعد میں ، حاضر خدمتِ اقدس ہوا تو حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کو بیٹھ کرنماز پڑھتے ہوئے پایا، سرِ اقدس پر میں نے ہاتھ رکھا (کہ بیار تو نہیں) ارشا دفر مایا: کیا ہےا ہےعبداللہ؟ عرض کی ، یا رسول الله (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم)! حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے تو ابیبا

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٧٩هـ ١٨٥.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٧٨٥، ٥٨٣.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٨٣.
 - 4..... "تنويرالأبصار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٤٨٥.
- "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب جواز النافلة قائما و قاعدا... إلخ، الحديث: ٧٣٥، ص ٣٧٠.
- 🔊 🙃 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب صلاة الليل... إلخ، الحديث: ٢٦١ ـ (٧٣٨)، ص٣٧٣.

🌯 فرمایا ہے اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) بیٹھ کرنماز پڑھتے ہیں ،فر مایا:'' ہا**ں ولیکن میں تم جبیہانہیں۔''** (1) امام ابراہیم حلبی وصاحب

ورمختار وصاحب ردالمحتار نے فرمایا: که پیچکم حضور (صلی الله تعالی علیه وکم) کے خصائص سے ہے اوراسی حدیث سے استنا دکیا۔ (2)

مَسَعَلَ الْمَارِنَ الْمُرْدُوعُ كَي حدتك جُهك كرنفل كاتح يمه بإندها تونمازنه هوگي _ (3) (روالمحتار)

مستان ۳۶ ﷺ لیٹ کرنفل نماز جائز نہیں جب کہ عذر نہ ہواور عذر کی وجہ ہے ہو تو جائز ہے۔ ⁽⁴⁾ (درمختار)

سین کی بھی پھر کھڑا ہو گیا دونوں صورتیں جائز ہیں، کسینٹ کی تھی پھر کھڑا ہو گیا دونوں صورتیں جائز ہیں،

خواہ ایک رکعت کھڑیے ہوکر پڑھی ایک بیٹھ کریا ایک ہی رکعت کے ایک حصہ کو کھڑے ہوکر پڑھااور کچھ حصہ بیٹھ کر۔ (⁵⁾ (درمختار ، ردالحتار) مگر دوسری صورت یعنی کھڑ ہے ہوکر شروع کی پھر بیٹھ گیااس میں اِختلاف ہے،الہٰذا بیخا اُولی۔

مَسِعًا ﴾ ﴿ كُورِ ہے ہوكرنفل پڑھتا تھا اور تھك گيا تھا تو عصا يا ديوار پر ٹيك لگا كر پڑھنے ميں حرج نہيں۔ (6) (عالمگیری)اوربغیر تھکے بھی اگراپیا کرے تو کراہت ہے نماز ہوجائے گی۔

ہاتھ باند ھےرہے جیسے قیام میں باندھتے ہیں۔⁽⁷⁾ (درمختار،ر دالمحتار)

رُخ کوجار ہی ہو إدھر ہی موزھ ہواورا گراُ دھرموزھ نہ ہو تو نماز جائز نہیں اور شروع کرتے وقت بھی قبلہ کی طرف موزھ ہونا شرطنہیں بلکہ سواری جدھر جارہی ہے اُس طرف ہواور رکوع و تبود اشارہ سے کرے اور تجدہ کا اشارہ بہنسبت رکوع کے پست ہو۔ (9) (درمختار،ردالحتار)

- ❶ "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب جواز النافلة قائما و قاعدا... إلخ، الحديث: ٧٣٥، ص ٣٧٠.
 - 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، مبحث المسائل ستة عشرية، ج٢، ص٥٨٥.
 - ③ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث المسائل الستة عشرية، ج٢، ص١٤٥.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٨٤.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث المسائل الستة عشرية، ج٢، ص٤٨٥.
 - 6 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١.
 - 7 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، مبحث المسائل ستة عشرية، ج٢، ص٥٨٧.
 - ییرون شہرے مرادوہ جگہ ہے جہال ہے مسافر پر قصر واجب ہوتا ہے۔(عالمگیری) ۲ امنہ حفظہ ربہ
 - 🗨 🗨 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الصلاة على الدابة، ج٢، ص٥٨٨.

💨 📶 🔧 🚽 سواری پرنفل پڑھنے ہیں اگر ہائکنے کی ضرورت ہواور عملِ قلیل سے ہا نکا مثلاً ایک یاؤں سے ایڑ لگائی یا

ہاتھ میں جا بک ہےاُس سے ڈرایا تو حرج نہیں اور بلاضرورت جائز نہیں۔⁽¹⁾ (ردالحتار)

سواری پرنمازشروع کی پھرعملِ قلیل کے ساتھ اتر آیا تواسی پر بنا کرسکتا ہے خواہ کھڑے ہوکر پڑھے یا بیٹھ

کرمگر قبله کومونه کرنا ضروری ہے اور زمین پرشروع کی تھی پھر سوار ہوا تو بنانہیں کرسکتا نماز جاتی رہی۔⁽²⁾ (درمختار)

مستان اس پر در سکتا ہے۔ (در الحتار) مستان کی اور مسکتا ہے۔ (در الحتار)

مستان ۵۰ الله بیرون شهرسواری پر شروع کی تھی پڑھتے پڑھتے شہر میں داخل ہو گیا تو جب تک گھر نہ پہنچا سواری پر پوری کرسکتاہے۔(4)(درمختار)

سن المراق المراد معلم اور سواری پرنفل نماز مطلقاً جائز ہے جبکہ تنہا پڑھے اورنفل نماز جماعت سے پڑھنا جاہے تواس کے لیے شرط ریہ ہے کہ امام ومقتدی الگ الگ سواریوں پر نہ ہوں ۔ ⁽⁵⁾ (درمختار)

سن الرق الرائد المراث ا

لگادیں کہ زمین برقائم ہوگیا توجائزہے۔⁽⁶⁾ (درمختار)

مستان کے اس کاٹری کا بُوا⁽⁷⁾ جانور پررکھا ہوگاڑی کھڑی ہویا چلتی اُس کا حکم وہی ہے جو جانور پرنماز پڑھنے کا ہے لیعنی فرض و واجب وسنت فجر بلاعذر جائز نہیں اورا گر جوا جانور پر نہ ہواور رُکی ہوئی ہو تو نماز جائز ہے۔⁽⁸⁾ (درمختار ، ردامحتار) میہ تحكم اس گاڑى كا ہے جس ميں دو پہتے ہوں چار پہتے والى جب رُكى ہو تو صرف جُواجانور پر ہوگا اور گاڑى زمين پرمتعقر ہوگى ، لہذا جب تھہری ہوئی ہواس پر نماز جائز ہوگی جیسے تخت پر۔

مَسِعَالِمُ ۵۳﴾ گاڑی اور سواری پرنماز پڑھنے کے لیے بیعذر ہیں۔(۱) مینھ برس رہاہے،(۲) اس قدر کیچڑہے کہ

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الصلاة على الدابة، ج٢، ص٥٨٩.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٩٨٩.
- ③ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الصلاة، على الدابة، ج٢، ص٨٨٥.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٩٨٥.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٩٥٥.
 - 6 المرجع السابق، ص ٩٠٥.
 - **ہ**..... یعنی وہ ککڑی جو گاڑی پاہل کے بیلوں کے کندھے پررکھی جاتی ہے۔
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص ٩٩٥.

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلامي) 🛒

آتر کر پڑھے گا تو موندہ دھنس جائے گا یا کیچڑ میں سن جائے گا یا جو کپڑا بچھا جائے گا وہ بالکل لتھڑ جائے گا اوراس صورت میں سواری نہ ہوتو کھڑ ہے کھڑ ہا اشار ہے سے پڑھے (٣) ساتھی چلے جائیں گے، (٣) یا سواری کا جانور شریہ ہے کہ سوار ہونے میں دشواری ہوگی مددگار کی ضرورت ہوگی اور مددگار موجود نہیں، (۵) یا وہ بوڑ ھا ہے کہ بغیر مددگار کے اُتر چڑھ نہ سکے گا اور مددگار موجود نہیں اور یہی عظم عورت کا ہے، (۲) یا مرض میں زیادتی ہوگی، (۷) جان (۸) یا مال، (۹) یا عورت کو آبرو کا اند نشہ ہو۔ (۱) درمختار، درامختار)

چلتی ریل گاڑی پر بھی فرض وواجب وسنت فجرنہیں ہوستی اوراس کو جہازاور کشتی کے تھم میں تصور کرنا خلطی ہے کہ کشتی اگر طلم رائی بھی جائے جب بھی زمین پر نہ طلم ہے گئی اور ریل گاڑی الی نہیں اور کشتی پر بھی اسی وقت نماز جائز ہے جب وہ پچ دریا میں ہو کنارہ پر ہواور خشکی پر آسکتا ہوتو اس پر بھی جائز نہیں ہے لہذا جب اسٹیشن پر گاڑی کھر ہے اُس وقت بینمازیں پڑھے اوراگر دیکھے کہ وقت جاتا ہے تو جس طرح بھی ممکن ہو پڑھ لے بھر جب موقع ملے اعادہ کرے کہ جہاں من جہۃ العباد (2) کوئی شرطیار کن مفقود ہو (3) اُس کا یہی تھم ہے۔

مسئان هم محمل کی ایک طرف خود سوار ہے دوسری طرف اس کی ماں یاز وجہ یا اور کوئی محارم میں ہے جوخود سوار نہیں ہوئتی اور بیخوداُ ترج شرکتا ہے محمل کی ایک طرف خود سوار ہے دوسری طرف اس کی ماں یاز وجہ یا اور کوئی محارم میں ہے جوخود سوار نہیں ہوئتی اور بیخوداُ ترج شرکتا ہے میں محمل کر جانے کا اندیشہ ہے، اسے بھی اُسی پر پڑھنے کا حکم ہے۔ (در محتار) مسئان کی گڑی پر اور اس گاڑی پر جس کا جواجانور پر ہو بلاعذر شرعی فرض وسنت فجر و تمام واجبات جسے وتر و نذر اور نفل جس کو توڑ دیا ہوا ور سجد ہ تلاوت جب کہ آیت سجدہ زمین پر تلاوت کی ہوادا نہیں کرسکتا اور اگر عذر کی وجہ سے ہوتو اُن سب میں شرط یہ ہے کہ اگر ممکن ہوتو قبلہ رُوکھڑ اگر کے اداکرے ور نہ جیسے بھی ممکن ہو۔ (5) (در محتار)

سن فراءت نه کرے گایا نگا پڑھے گایا ایک یا آدورکعتیں بغیرطہارت پڑھے گایا ان میں قراءت نه کرے گایا نگا پڑھے گایا ایک یا آدھی رکعت کی منت مانی توان سب صورتوں میں اُس پر دورکعت طہارت وقراءت وستر کے ساتھ واجب ہوگئیں اور تین کی مانی تو چار واجب ہوئیں۔ (6) (ورمختار، روالمحتار، عالمگیری)

- ❶ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر بقدرة غيره، ج٢، ص٩٢٥.
 - **2**..... کینی نه پایا گیا ہو۔ **3**..... کین نه پایا گیا ہو۔
 - ₫..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر بقدرة غيره، ج٢، ص٩٣٠.
 - **5**..... المرجع السابق، ص٩٤ o.
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر، بقدرة غيره، ج٢، ص٥٩٥.
 - و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ومم يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١١.

کی اور اور ای ہوگئی۔ منت مانی کہ فلاں مقام پر نماز پڑھے گا اور اس سے کم درجہ کے مقام پر ادا کی ہوگئی۔ مثلاً مسجد حرام میں پڑھنے کی منت مانی اور مسجدِ قدس یا گھرکی مسجد میں ادا کی ۔عورت نے منت مانی کہ کل نماز پڑھے گی یاروز ہ رکھے گی دوسرے دن

پ اے چیش آگیا تو قضا کرےاورا گریدمنت مانی کہ حالت حیض میں دور کعت پڑھے گی تو پچھنہیں۔⁽¹⁾ (درمختار)

سَمَعَانُ هِ هِ عَنْ اللّٰهِ كَا آج دوركعت پڑھے گا اور آج نہ پڑھی تو اس کی قضانہیں، بلکہ کفارہ دینا ہوگا۔ (²⁾ دیاگی پر پر

سَسَعَانُ اس پرواجب ہے سنت کی مثل نہیں مگروز و

مغرب کی جگہ جپار رکعت پڑھے یعنی ہرروز بائیس رکعتیں۔(3)(عالمگیری)

منتمبية نوافل توبهت كثيرين، اوقات منوعه كيسوا آدمي جتنے جائے برا سے مران ميں سے بعض جوحضور سيد المرسلين

صلى الله تعالى عليه وملم وائمه وين رض الله تعالى عنهم سيدمروى مين، بيان كيه جات مين-

تحية المسجد جوده مسجد مين آئے أسے دوركعت نماز برا هناسنت ب بلكه بهتر بيہ كه چار برا ھے۔(5)

بخاری ومسلم ابوقتا وه رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضورا قدس صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتنے ہیں: ' ^{د جو} حض مسجد میں داخل ہو ،

بیٹھنے سے پہلے دور کعت پڑھ لے۔ ' (6)

- ❶ "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر، بقدرة غيره، ج٢، ص٩٦. ٥.
- اسکا کفارہ وہ ی ہے، جو شم تو ڑنے کا ہے لین ایک غلام آزاد کرنایا دس مسکین کو دونوں وفت پیٹ بھر کر کھانا کھلانایا کپڑا وینایا تین روز ہے رکھنا۔ اسکا کفارہ وہ ی ہے، جو شم تو ڑنے کا ہے لین ایک غلام آزاد کرنایا دس مسکین کو دونوں وفت پیٹ بھر کر کھانا کھلانایا کپڑا وینایا تین روز ہے رکھنا۔ امنہ
 - ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١١.
 - ◘ المرجع السابق.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسجد، ج٢، ص٥٥٥.
 - المسجد فليركع ركعتين، الحديث: كتاب الصلاة، باب إذا دخل المسجد فليركع ركعتين، الحديث: ٤٤٤، ج١، ص١٧٠.
 - 🗨 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسجد، ج٢، ص٥٥٥.

كل مستان المسجد كي نيت نه كي نما زمسجد ميں پڑھ كي تحية المسجدادا ہوگئ اگرچة تحية المسجد كي نيت نه كي ہو۔اس نماز كاتحكم اس کے لیے ہے جو بنیت نمازنہ گیا بلکہ درس وذکر وغیرہ کے لیے گیا ہو۔اگر فرض یاا قتدا کی نیت ہے مسجد میں گیا تو یہی قائم مقام تحیة المسجد ہے بشرطیکہ داخل ہونے کے بعد ہی پڑھے اورا گرع صد کے بعد پڑھے گا تو تحیة المسجد پڑھے۔ (1) (ردالحتار)

سَسَالُ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْ مِن عَلِي عَلَيْ عَلِي الْمُسجِدِيرُ ه كِ اور بغيرِ برُّ هے بيٹھ گيا تو ساقط نہ ہوئی اب پڑھے۔ (2)

(درمختاروغيره)

مست کی سے ہرروزایک بارتحیۃ المسجد کافی ہے ہر بارضرورت نہیں اورا گر کوئی شخص بے وضومبحد میں گیایا اور کوئی وجہ ہے كرِّحية المسجنةيس يرُّ هسكا تو عاربارسُبُحانَ اللهِ وَالْحَمُدُلِلْهِ وَلَا اللهُ وَاللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ كِير

تحیی**ۃ الوضو** کہ وضو کے بعداعضا خشک ہونے سے پہلے دورکعت نمازیر ھنامستحب ہے۔ (⁴⁾

صحیح مسلم میں ہے، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا:'' جو محف وضو کر ہے اوراج چھا وضو کر ہے اور ظاہر و باطن کے ساتھ متوجیہ

ہوکر دورکعت پڑھے،اس کے لیے جنت واجب ہوجاتی ہے۔' ⁽⁵⁾

مستان کی این مقام تحیة الوضو کے بعد فرض وغیرہ پڑھے تو قائم مقام تحیة الوضو کے ہوجا ئیں گے۔⁽⁶⁾(ردالحتار)

نما نِها ش<mark>راق</mark> ترمذی انس رضی الله تعالی عنه ہے راوی ، کہ فر ماتے ہیں صلی الله تعالی علیہ وسلم : جو فجر کی نماز جماعت سے بیڑھ کر ذ كرخدا كرتار ما، يهال تك كه آفتاب بلند موكيا پهر دور كعتين پڙهين'' تو أے پورے فج اور عمره كاثواب ملے گا۔'' (7) نمازِ ح<mark>یا شت</mark>مستحب ہے، کم از کم دواورزیادہ سے زیادہ حیاشت کی بارہ رکعتیں ہیں ⁽⁸⁾ اورافضل بارہ ہیں کہ حدیث میں ہے، جس نے حاشت کی بارہ رکعتیں پڑھیں، ''اللہ تعالیٰ اس کے لیے جنت میں سونے کامحل

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسحد، ج٢، ص٥٥٥.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٧٥٥.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٣٥.
- المستحب عقب الوضوء، الحديث: ٢٣٤، ص٤٤.
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الصلوة، باب الوتر و النوافل، مطلب: سنة الوضوء، ج٢، ص٦٣٥.
- 🗗 "جامع الترمذي"، أبواب السفر، باب ما ذكر مما يستحب من الجلوس في المسجد... إلخ، الحديث ٥٨٦، ج٢، ص٠٠٠.
 - النوافل، ج١، ص١١٠.

🤻 بنائے گا۔'' (1) اس حدیث کو تر مذی وابن ماجہ نے انس رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کیا۔

صحیح المسلم شریف میں ابوذررض اللہ تعالی عند سے مروی ، کہ فرماتے ہیں سلی اللہ تعالی علیہ وہلم : آدمی پراس کے ہر جوڑ کے بدلے صدقہ ہے (اورکل تین سوسا مُصر جوڑ ہیں) ہر شیخ صدقہ ہے اور ہر حمصدقہ ہے اور کل اللّٰه کہنا صدقہ ہے اور اللّٰہ کہنا ہوں کے میں ہوں کی کھایت کرتی ہیں۔ (2)

تر از می ابودرداءوابوذرسے اورابوداودوداری نعیم بن ہمّا رسے اوراحدان سب سے راوی رضی اللہ تعالیٰ عنهم کے فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسط فرما تا ہے:'' اے ابن آوم! شروع دن میں میرے لیے چپار رکعتیں پڑھ لے، آخر دن تک میں تیری کفایت فرماؤں گا۔'' (3)

طبر آنی ابو در داء رض الله تعالی عند سے راوی ، که فرماتے ہیں صلی الله تعالی عایہ وسلم : ''جس نے دور کعتیں چاشت کی پڑھیں ،
عافلین میں نہیں لکھا جائے گا اور جو چار پڑھے عابدین میں لکھا جائے گا اور جو چھ پڑھے اس دن اُس کی کفایت کی گئی اور جو آٹھ
پڑھے الله تعالی اسے قانتین میں کھے گا اور جو بارہ پڑھے الله تعالی اُس کے لیے جنت میں ایک محل بنائے گا اور کوئی دن یا رات
نہیں جس میں اللہ تعالی بندوں پر احسان وصد قد نہ کرے اور اس بندہ سے بڑھ کر کسی پراحسان نہ کیا جے اپناؤ کر الہام کیا۔'' (4)

الحمد و تر مذی و ابن ما جہ ابو ہریرہ رضی الله تعالی عنہ سے راوی ، کہ فرماتے ہیں صلی الله تعالی علیہ وہلم: ''جو چاشت کی دور کعتوں پر

محافظت کرے،اس کے گناہ بخش دیے جائیں گےا گرچیسمندر کے جھاگ کے برابر ہوں۔'' ⁽⁵⁾

سَعَلَ النهار شرعی تک ہے اور بہتر یہ ہے کہ چوتھائی دن چار اس کا وقت آ فتاب بلند ہونے سے زوال یعنی نصف النهار شرعی تک ہے اور بہتر یہ ہے کہ چوتھائی دن چڑھے بڑھے۔(6)(عالمگیری،روالمختار)

نمازِسفر کہ سفر میں جاتے وقت دور کعتیں اپنے گھر پر پڑھ کر جائے۔(7) طبرانی کی حدیث میں ہے: کہ''کسی نے

- "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في صلاة الضخى، الحديث: ٤٧٢، ج٢، ص١٧.
- 2 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب صلاة الضخي... إلخ، الحديث: ٧٢٠، ص٣٦٣.
 - 3 "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في صلاة الضخى، الحديث: ٤٧٤، ج٢، ص١٩.
 - الترغيب والترهيب"، الترغيب في صلاة الضخى، الحديث: ١٤، ج١، ص٢٦٦.
 - 5 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند و أبي هريرة، الحديث: ١٠٤٨٥ ، ج٣، ص٦٢٥.
 - شافتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: سنة الوضوء، ج٢، ص٦٣٥.
 - 🧊 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.

سنن ونوافل كابيان ونوافل كابيان

🛍 اینے اہل کے پاس اُن دور کعتوں ہے بہتر نہ چھوڑا، جو بوقت اراد ہُ سفران کے پاس پڑھیں۔'' (1)

تمازوالیسی سفر کہ سفر سے واپس ہوکر دور کعتیں مبجد میں اداکرے۔ (2) صحیح مسلم میں کعب بن مالک رضی اللہ تعالی عند سے مروی، که'' رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم سفر سے دن میں جیاشت کے وقت تشریف لاتے اور ابتداءً مسجد میں جاتے اور دو رکعتیں اُس میں نماز پڑھتے پھرو ہیں مبجد میں تشریف رکھتے۔'' (3)

مَسِنَالُهُ اللّٰهِ مَسافر کو چاہیے کہ منزل میں بیٹھنے سے پہلے دور کعت نفل پڑھے جیسے حضور اقدس سلی اللہ تعالی علیہ وہ کہا کرتے تھے۔ (4) (ردالحتار)

صلاۃ اللیل ایک رات میں بعد نمازعشا جونوافل پڑھے جائیں ان کوصلاۃ اللیل کہتے ہیں اور رات کے نوافل دن کے نوافل سے افضل ہیں کہ۔

اور (⁵⁾ اور صحیح مسلم شریف میں مرفوعاً ہے فرضوں کے بعدافضل نمازرات کی نماز ہے۔ ⁽⁵⁾ اور

خلین کے طبرانی نے مرفوعاً روایت کی ہے کہ رات میں کچھ نماز ضروری ہےاگر چہ اتنی ہی دیر جتنی دیر میں بکری دَوہ

لیتے ہیں اور فرض عشا کے بعد جونماز پڑھی وہ صلاۃ اللیل ہے۔ (6)

نمازتهجد

<u> مسئانی ایک</u> اسی صلاۃ اللیل کی ایک قتم تہجد ہے کہ عشا کے بعدرات میں سوکراُٹھیں اور نوافل پڑھیں ،سونے سے قبل جو کچھ پڑھیں وہ تہجزئہیں۔⁽⁷⁾ (ردالحتار)

مسئانی کا پہرنفل کا نام ہے اگر کوئی عشائے بعد سور ہا پھراٹھ کر قضا پڑھی تو اُس کو تہجد نہ کہیں گے۔(8) (ردالمحتار)

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.
- ٣٦١، "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب ركعتين في المسجد... إلخ، الحديث: ٧١٦، ص٣٦١.
 - "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.
 - **5**..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم، الحديث: ١١٦٣، م ص٩٩٥.
 - 6 "المعجم الكبير"، باب الألف، الحديث: ٧٨٧، ج١، ص٢٧١.
 - 🕽 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الليل، ج٢، ص٦٦٥.
 - 🐒 😘 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الليل، ج٢، ص٦٧ ه.

🗳 مسئل 📆 🚣 کم ہے کم تہدکی دورکعتیں ہیں اور

خلیک 📆 🗕 حضورا قدس صلی الله تعالی علیه وسلم سے آٹھ تک ثابت۔

خلینٹ میں سی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا: ' دجو خص رات میں بیدار ہواورا پنے اہل کو جگائے بھر دونوں دودور کعت

بڑھیں تو کثرت سے یاد کرنے والوں میں لکھے جا کیں گے۔''اس حدیث کونسائی وابن ماجدا پنی سنن میں اور ابن حبان اپنی صحح میں اور حاکم نے متدرک میں روایت کیا اور منذری نے کہا بیرحدیث برشرط شخین صحح ہے۔ ⁽¹⁾ (ردالمختار)

میں اور حالم نے متدرک میں روایت کیا اور منذری نے کہا بی حدیث برشرط یحین سے ہے۔ ⁽¹⁾ (ردامختار) مسکانی کے جوشخص دو تہائی رات سونا چاہے اور ایک تہائی عبادت کرنا، اُسے افضل میہ ہے کہ پہلی اور بچھلی تہائی میں سوئے

خلینٹ کے پہنٹ کے بخاری ومسلم میں ابو ہر برہ درضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، حضور (سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) نے ارشاد فر مایا: کہ رب عزد جل ہر رات میں جب بچپلی تہائی باقی رہتی ہے آسان دنیا پرتجبّی خاص فر ما تا ہے اور فر ما تا ہے: '' ہے کوئی دُعا کرنے والا کہ

اں کی دُعا قبول کروں ، ہے کوئی مانگنے والا کہ اسے دوں ، ہے کوئی مغفرت چاہنے والا کہ اس کی بخشش کردوں۔'' (2) اورسب سے بڑھے کرتونماز داود ہے۔ کہ

خلین کی بختاری وسلم عبدانی آنه بن عَمُرُ و رضی الله تعالی عنها (3) سے راوی ، که حضور (سلی الله تعالی علیه وسلم) نے فرمایا: سب نماز وال میں الله عزوجل کوزیادہ مجبوب نماز واود ہے کہ آوھی رات سوتے اور تہائی رات عبادت کرتے پھر چھٹے بھتے میں سوتے ۔ (4) میں الله عزوج کے محتص تنہد کا عادی ہو بلاعذر اُسے چھوٹ نا مکروہ ہے ۔ کہ

ن میں ہے۔ <u>خلایٹ کی ہے ۔ صبح</u>ے بخاری ومسلم کی حدیث میں ہے حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے

ارشادفر مایا: ''اےعبداللہ! تو فلاں کی طرح نہ ہونا کہ رات میں اُٹھا کرتا تھا پھر چھوڑ دیا۔'' ⁽⁵⁾ نیز

بخاری ومسلم وغیرہما میں ہے فر مایا: که''اعمال میں زیادہ پسنداللّٰدعزوجل کو وہ ہے جو ہمیشہ ہو،

اگرچه تھوڑ اہو۔'' (6)

۱۹۲۳، "المستدرك" للحاكم، كتاب صلاة التطوع، باب توديع المنزل بركعتين، الحديث: ۱۲۳۰، ج۱، ص ٦٢٤.
 و"ردالمحتار"، كتاب الصلاة باب الوتر والنوافل، مطلب في صلاة الليل، ج٢، ص ٥٦٧.

2 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب الترغيب في الدعاء... إلخ، الحديث: ٧٥٨، ص ٣٨١.

بہارشرایعت کے بعض شخوں میں اس مقام پر "عبدالله بن عمورضی الله تعالیٰ عهدا" لکھا ہواہے، جو کتابت کی فلطی معلوم ہوتی ہے کیونکہ " بخاری شریف" اوردیگر کتبِ احادیث میں "عبدالله بن عَمُوورضی الله تعالیٰ عهدا" فرکورہے، ای وجہ ہے ہم نے متن میں تصبح کردی ہے۔... علمیده

البخاري"، كتاب احاديث الانبياء، باب احب الصلاة إلى الله صلاة داود... إلخ، الحديث: ٣٤٢، ٣٤٢، ص٤٤٨.

5 "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب ما يكره من ترك قيام الليل لمن كان يقومه، الحديث: ١١٥٦، ج١، ص ٣٩٠.

🥱 🌀 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب فضيلة العمل الدائم... إلخ، الحديث: ٢١٨ ـ (٧٨٣)، ص ٢٩٤.

💣 📶 📢 📢 🚽 عیدین اور پندرهویں شعبان کی را توں اور رمضان کی اخیر دس را توں اور ذی الحجہ کی پہلی دس را توں میں شب بیداری مستحب ہے اکثر حصد میں جا گنا بھی شب بیداری ہے۔ (1) (درمخار) عیدین کی راتوں میں شب بیداری رہیے کہ عشاومبح دونوں جماعت اولی سے ہوں۔ کہ

سیح حدیث میں فرمایا: ''جس نےعشا کی نماز جماعت سے پڑھی، اُس نے آ دھی رات عبادت کی اور جس نے نماز فجر جماعت سے پڑھی،اس نے ساری رات عبادت کی۔'' (2) اوران راتوں میں اگر جاگے گا تو نمازعید وقربانی وغیرہ میں دفت ہوگی ۔لہندااسی براکتفا کرےاورا گران کا موں میں فرق نہآئے تو جا گنا بہت بہتر _۔

مَسِعًا ﴾ کا ان را توں میں تنہانفل نماز پڑھنا اور تلاوت قر آن مجید اور حدیث پڑھنا اور سُننا اور ورووشریف پڑھنا شب بیداری ہے نہ کہ خالی جاگنا۔ (۵) (ردامختار) صلاۃ اللیل کے متعلق آٹھ حدیثیں ضمنًا ابھی مذکور ہوئیں اس کے فضائل کی بعض حدیثیں اور سنیے۔

خلایث و 🔑 🥒 تر مذی وابن ماجه و حاکم برشر طشیخین عبدالله بن سلام رضی الله تعالی عنه سے راوی ، کہتے ہیں:''رسول الله صلی الله تعالی علیہ وسلم جب مدینه میں تشریف لائے۔'' تو کثرت سے لوگ حاضر خدمت ہوئے ، میں بھی حاضر ہوا، جب میں نے حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) کے چبرہ کوغور سے دیکھا پہچان لیا کہ بیمونھ جھوٹوں کا مونھ نہیں۔ کہتے ہیں پہلی بات جو میں نے حضور (صلی الله تعالی علیه وملم) ہے۔ شنی سیر ہے فر مایا:''اےلوگو! سلام شائع کروا در کھانا کھلا ؤاور رشتہ داروں ہے نیک سلوک کرو اوررات میں نماز پڑھو جب لوگ سوتے ہوں ،سلامتی کے ساتھ جنت میں داخل ہوگے ۔'' ⁽⁴⁾

خلینٹ 🕦 🚽 حاکم نے بافا دوکھیجے روایت کی ، کہ ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ نے سوال کیا تھا کو کی الیبی چیز ارشاد ہو کہ اُس پر عمل کرون توجنت میں داخل ہوں؟ اُس پر بھی وہی جواب ارشاد ہوا۔ (⁵⁾

خلینٹ 🚺 و ۱۲ 🎢 طبرانی کبیر میں باسنادحسن وحا کم بافا د کھیجے برشر طبیخین عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے راوی ،حضور (صلى الله تعالى عليه وملم) فرماتے ہيں: ''جنت ميں ايك بالا خاند ہے كه باہر كا اندر سے دكھائى ديتا ہے اور اندر كا باہر سے۔'' ابو مالك

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٦٥.
- "صحيح مسلم"، كتاب المساحد و مواضع الصلاة، باب فضل الصلاة العشاء... إلخ، الحديث: ٦٥٦، ص٣٢٩.
 - € "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في إحياء ليالي العيدين... إلخ، ج٢، ص٦٩٥.
 - ◘ "المستدرك" للحاكم، كتاب البروالصلة، باب إرحموا أهل الارض... إلخ، الحديث: ٧٣٥٩، ج٥، ص٢٢١. و "الترغيب و الترهيب"، كتاب النوافل، الترغيب في قيام الليل، الحديث: ٤، ج١، ص٢٣٩.
 - 🚙 🗗 "المستدرك" للحاكم، كتاب البروالصلة، باب إرحموا أهل الارض... إلخ، الحديث: ٧٣٦٠، ج٥، ص٢٢١.

🦥 اشعری نے عرض کی، یارسول الله (صلی الله تعالی علیه و بلم)! وه کس کے لیے ہے؟ فرمایا: ''اُس کے لیے که اچھی بات کرے اور کھانا کھلائے اور رات میں قیام کرے جب لوگ سوتے ہوں۔ ' (1) اور اسی کے مثل ابو مالک اشعری رض اللہ تعالیٰ عند سے بھی مروی

خلین سا 🔑 🔻 بیہق کی ایک روایت اساء بنتِ یزیدرضی اللہ تعالی عنہا سے ہے کہ فرماتے ہیں: قیامت کے دن لوگ ایک

میدان میں جمع کیے جائیں گے، اس وقت منادی یکارے گا، کہاں ہیں وہ جن کی کروٹیں خواب گا ہوں سے جدا ہوتی تھیں؟ وہ لوگ کھڑ ہے ہوں گے اور تھوڑ ہے ہوں گے بیہ جنت میں بغیر حساب داخل ہوں گے پھراورلوگوں کے لیے حساب کا حکم ہوگا۔ ⁽²⁾

خلینٹ 👚 💝 مسلم میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) ارشاوفر ماتے ہیں:''رات میں

ا یک ایسی ساعت ہے کہمر دمسلمان اُس ساعت میں اللہ تعالیٰ سے دنیاوآ خرت کی جوبھلائی مائلگے ، وہ اسے دیے گا اور یہ ہررات

خلینے 🔞 و ۱۷ 🤻 تر مذی ابوا مامہ بابلی رض اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ فر ماتے ہیں:'' قیام اللیل کواینے اوپر لازم کرلو

کہ بیا گلے نیک لوگوں کا طریقہ ہے اور تمھارے رب (عزوجل) کی طرف قربت کا ذریعہ اور سیّات کا مٹانے والا اور گناہ سے رو کنے والا ۔'' (4) اور سلمان فارسی رضی اللہ تعالی عنہ کی روایت میں ریکھی ہے، کہ ' بدن سے بیاری دفع کرنے والا ہے۔'' (5)

خلینے 🗗 🦫 💛 صحیح بخاری میں عبادہ بن صامت رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم:'' جورات میں اُٹھےاور یہدُ عابرٌ ھے۔

لَا اللهَ الَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيْكَ لَـهُ لَـهُ الْمُلُكُ وَلَهُ الْحَمُدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئً قَدِيْرٌ وَ سُبُحٰنَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَلَا اِللَّهَ اِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ اَكُبَرُ وَلَا حَوُلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا باللَّهِ رَبِّ اغْفِرُ لِي . (6)

- ❶ "المستدرك" للحاكم، كتاب صلاة التطوع، باب صلاة الحاجة، الحديث: ١٢٤٠، ج١، ص ٦٣١، عن عبد الله بن عمرو.
 - 2 "شعب الإيمان"، باب في الصلوات، الحديث: ٢٤٤٤، ج٣، ص١٦٩.
 - 3 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب في الليل ساعة مستجاب فيها الدعاء، الحديث: ٧٥٧، ص ٣٨٠.
 - "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في دعاء النبي صلى الله عليه و سلم ، الحديث: ٥٦٠، ج٥، ص٣٢٢.
 - 5 "المعجم الكبير"، باب السين، الحديث: ١٥٤، ج٦، ص٢٥٨.
- ہ ترجمہ:اللہ(عزوجل) کےسوا کوئی معبوذ نہیں وہ تنہا ہےاُ س کا کوئی شریک نہیں اس کے لیے ملک ہےاوراس کے لیے حمہ ہے اوروہ ہرشے پر قادرہےاور یاک ہےاللہ(عزوجل)اورحمہ ہےاللہ(عزوجل) کے لیےاوراللہ(عزوجل) کےسواکوئی معبوذہبیںاوراللہ(عزوجل) بڑاہےاور نہیں ہے گناہ سے چرنااور نہ نیکی کی طاقت مگراللہ (عز وجل) کے ساتھ اے میرے بروردگار! ٹو مجھے بخش دے۔١٣

پھر جو دُعا کرے مقبول ہوگی اور اگروضوکر کے نمازیر ھے تواس کی نماز مقبول ہوگی۔' (1)

خلایش 🔼 💝 🚽 محیح بخاری وضیح مسلم میں عبداللہ بن عباس رض اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ہے ، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وکلم رات کو

تہجد کے لیےاٹھتے تو یہ دُعایر ہے۔

اَللَّهُ مَّ لَكَ الْحَمُدُ اَنْتَ قَيْمُ السَّمْوَاتِ وَالْاَرُضِ وَمَنُ فِيُهِنَّ وَلَكَ الْحَمُدُ انْتَ نُورُ السَّمْوَاتِ وَالْاَرُضِ وَمَنْ فِيُهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَ وَعُـٰدُكَ الْـَحَـٰقُ وَ لِقَاءُ كَ حَقٌّ وَّقُولُكَ حَقٌّ وَّالْجَنَّةُ حَقٌّ وَّالنَّارُ حَقٌّ وَّ النَّبيُّونَ حَقٌّ وَّمُحَمَّدٌ حَقٌ وَّالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللُّهُمَّ لَكَ اَسُلَمْتُ وَبِكَ الْمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَالَّيْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَالَّيْكَ حَاكَمْتُ . فَاغُفِرُ لِيُ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرُتُ وَمَا اَسُرَرُتُ وَمَا اَعُلَنْتُ وَمَا اَنْتَ اَعلَمُ به مِنِيّ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤخِّرُ لَا اللهَ الَّا أَنْتَ وَلَا اللهَ غَيْرُكَ . (2)

بیا یک دُعااور چندحدیثیں ذکر کر دی گئیں اوراُن کےعلاوہ اس نماز کےفضائل میں مکثر تاحادیث وارد ہیں، جسےاللہ عز دِجل تو فیق عطافر مائے اس کے لیے یہی بس ہیں۔

نماز استخاره

حدیث صحیح جس کومسلم کے سوا جماعت محدثین نے جابر بن عبداللّٰدرض الله تعالیّٰ عنها سے روایت کیا، فرماتے ہیں: کہ رسول الله صلى الله تعالى عليه وبلم بهم كوتمام امور مين استخاره كي تعليم فرماته ، جيسے قرآن كي سُورت تعليم فرماتے حيے، فرماتے ہيں:

- "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب فضل من تعار من الليل فصلى، الحديث: ١١٥٤، ج١، ص ٣٩١. و "مرقاة المفاتيح"، كتاب الصلواة، باب ما يقول إذا قام من الليل، تحت الحديث: ١٢١٣، ج٣، ص٢٨٨.
 - 2 "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب التهجد بالليل، الحديث: ١١٢٠، ج١، ص ٣٨١.
- ترجمہ:الٰبی! تیرے ہی لیے حمد ہے،آ سان وزمین اور جو کچھان میں ہےسب کا تو قائم رکھنے والا ہے اور تیرے ہی لیے حمد ہے آ سان وزمین اور جو پچھان میں ہےسب کا تو نور ہےاور تیرے ہی لیے حمد ہے آسان و زمین اور جو پچھان میں ہے تو سب کا بادشاہ ہےاور تیرے ہی لیے حمدے، تو حق ہےاور تیراوعدہ حق ہےاور تجھ سے ملنا(قیامت) حق ہےاور جنت حق ہےاور دوزخ حق ہےاورانبہا حق میں اورمجمہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)حق ہیں اور قیامت حق ہے۔اےاللہ (عزوجل) تیرے لیے میں اسلام لا ہااور تجھ پرایمان لا ہااور تجھی پرتو کل کیااور تیری ہی طرف رجوع کی اور تیری ہی مدد ہےخصومت کی اور تیری ہی طرف فیصلہ لایا پس تُو بخش دیے میرے لیے وہ گناہ جومیں نے پہلے کیااور چیھے کیااور چھیا کر کیااوراعلانیہ کیااور وہ گناہ جس کو تو مجھ ہے زیادہ جانتا ہے تُو ہی آگے بڑھانے والا ہےاور تو ہی چیھے ہٹانے والا ہے تیرے سوا کوئی معبود نہیں۔ ۱۲

🦥 ''جب کوئی کسی امر کا قصد کرے تو دور کعت نفل پڑھے پھر کہے۔

اَللَّهُ مَّ إِنِّى اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقُدِرُكَ بِقُدُرَتِكَ وَ اَسْأَ لُکَ مِنُ فَضُلِکَ الْعَظِيْمِ فَإِنَّکَ تَقُدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَ تَعْلَمُ اَنَّ عَلَمُ وَاَنْتَ عَلَّمُ الْغُيُوبِ اَللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هَٰذَا الْاَمُو حَيُرٌ لِّى فِي دِينِى تَقُلَمُ اَنَّ هَذَا الْاَمُو حَيُرٌ لِّى فِي دِينِى وَمَعَاشِى وَعَاقِبَةِ اَمُوى وَاجِلِهِ فَاقُدُرُهُ لِى وَيَسِّرُهُ لِى ثُمَّ بَارِكُ لِى فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ وَمَعَاشِى وَعَاقِبَةِ اَمُوى وَاجِلِهِ فَاقُدُرُهُ لِى وَيَسِّرُهُ لِى ثُمَّ بَارِكُ لِى فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَ هُلَا الْاَمُولِي وَاصُوفَيْ عَنْهُ هَلَا الْاَمُولِي وَاصُوفَيْ عَنْهُ هَا اللّهُ مَن وَاجِلِهِ فَاصُوفَهُ عَنِي وَاصُوفَيْ عَنْهُ وَاصُوفَيْ عَنْهُ وَالْعَرِفُونِي عَنْهُ وَالْعَرِقُ لَيْ اللّهُ عَنْ وَالْعَرِفُونِي عَنْهُ وَاللّهُ عَلَى اللّهُ عَنْ وَعَلَيْ اللّهُ عَنْ كَانَ ثُمَّ وَضِينِي بِهِ . (1)

اورا پی حاجت کاذکرکرے خواہ بجائے ھلڈا الاَمُو کے حاجت کانام لے یا اُس کے بعد۔ (2) (روالحتار) اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمُوِی میں اَوْ شکراوی ہے، فقہا فرماتے ہیں کہ جمع کرے یعنی یوں کھے۔

وَعَاقِبَةِ اَمُرِيُ وَعَاجِلِ اَمُرِيُ وَاجِلِهِ . ⁽³⁾ (غنيه)

سَسَعَانُ اللّٰہ ﴿ حَجَ اور جہاداور دیگر نیک کاموں میں نفس فعل کے لیے استخارہ نہیں ہوسکتا، ہاں عین وقت کے لیے کر سکتے میں۔(⁴⁾ (غنیہ)

سَسَنَاكُونَ اوردوسرى مِن قُلُهُ وَاللّهُ بِرُهِ اللّهِ اللّهِ اوردروشريف بِرُهِ اور بَبِلَى رَكعت مِن قُلُ يَا يُهَا اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الللللّهُ الللّهُ الللللّ

- سست ترجمہ: اے اللہ (عزوجل) میں تجھ سے استخارہ کرتا ہوں تیرے علم کے ساتھ اور تیری قدرت کے ساتھ طلب قدرت کرتا ہوں اور تجھ سے

 تیرے فضل عظیم کا سوال کرتا ہوں اس لیے کہ تو قادر ہے اور میں قاد رنہیں اور تو جا نتا ہے اور میں نہیں جا نتا اور توغیوں کا جانے والا ہے۔

 اے اللہ (عزوجل) اگر تیرے علم میں بیہ کہ ریکام میرے لیے بہتر ہے میرے دین و معیشت اور انجام کار میں یافر مایا اس وقت اور آئندہ

 میں تُو اس کومیرے لیے مقدر کردے اور آسان کر پھر میرے لیے اس میں برکت دے اور اگر تو جا نتا ہے کہ میرے لیے بیکام برا ہے میرے

 دین و معیشت اور انجام کار میں یا فر مایا اس وقت اور آئندہ میں تو اس کو جھ سے پھیر دے اور مجھ کو اس سے پھیر اور میرے لیے خیر کو مقرر فر ما جہاں بھی ہو پھر مجھے اوں سے راضی کر۔ ۱۲
 - ٣٩٣٠٠٠٠٠ "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب ماجاء في التطوع... إلخ، الحديث: ١١٦٢، ج١، ص٣٩٣.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتى الاستخارة، ج٢، ص٩٦٥.
 - 3 "غنية المتملي"، ركعتا الاستخارة، ص٤٣١.
 - 4 المرجع السابق.
 - 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي الاستخارة، ج٢، ص٥٧٠.

المسكالة المسكانة المستعان المستخاره كرك كدايك حديث ميس المعان المسالة على الما المسكرك المسكانة المسالة المستعان المستع تواییخے رب(عزوجل) ہےاس میں سات باراستخارہ کر پھرنظر کرتیرے دل میں کیا گذرا کہ بیٹک اُسی میں خیرہے۔'' ⁽¹⁾ اور بعض مشایخ سے منقول ہے کہ دُعائے مٰدکور پڑھ کر باطہارت قبلہ رُ وسور ہے اگر خواب میں سپیدی یا سبزی دیکھے تو وہ کام بہتر ہے اور سیاہی پاسُرخی دیکھے توبُر اہے اس سے بیچے۔(2) (ردالحمتار) استخارہ کا وقت اس وقت تک ہے کہ ایک طرف رائے پوری جم نہ چکی ہو۔

683

صلاة التسبيح

اس نماز میں بےانتہا ثواب ہے بعض محققین فر ماتے ہیں اس کی بزرگی سن کرترک نہ کرے گا مگر دین میں سُستی کرنے ، والا - نبی صلی الله تعالیٰ علیه وبلم نے حضرت عباس رضی الله تعالی عنہ سے فر مایا:''اے چیا! کیامیس تم کو عطا نہ کروں ، کیا میں تم کو مجشش نہ کروں، کیامیں تم کونہ دوں تمھارے ساتھ احسان نہ کروں، دی خصلتیں ہیں کہ جب تم کرو تو اللہ تعالی تمھارے گناہ بخش دے گا۔ ا گلا پچھلا پُرانا نیا جو بھول کر کیااور جو قصداً کیا جھوٹااور بڑا پوشیدہ اور ظاہر،اس کے بعد صلاۃ انسینے کی ترکیب تعلیم فرمائی بھر فرمایا: کہ اگرتم ہے ہوسکے کہ ہرروز ایک بارپڑھو تو کرواورا گرروز نہ کرو تو ہر مجُعُۃ میں ایک باراور پیجی نہ کرو تو ہرمہینہ میں ایک باراور یے بھی نہ کرو توسال میں ایک باراور ریجھی نہ کرو تو عمر میں ایک بار''اوراس کی ترکیب ہمارے طور پروہ ہے جوسنن ترفدی شریف میں بروایت عبداللہ بن مبارک رضی الله تعالی عند مذکور ہے، فرماتے میں: الله اکبر کہہ کر سُبُحانَکَ اللّٰهُمَّ وَبحَمُدِکَ وَتَبَارَکَ السُمُكَ وَتَعَالَىٰ جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيُرُكَ رِي عِصِيهِ بِيرِ هِ صُبُحَانَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ اَكُبَرُ يندره بارج مِراعُونُ أور بسُم الله اوراَلُحَمُد اورسورت يره كردس باريمي شيج يره هي ركوع كر اورركوع من دس باریر ھے پھررکوع سے سراٹھائے اور بعد سمیع وتخمیدوں بار کیے پھرسجدہ کوجائے اوراس میں دس بار کیے پھرسجدہ سے سراٹھا کر دس بار کہے پھر سجدہ کو جائے اور اس میں دس مرتبہ پڑھے۔ یو ہیں جارر کعت پڑھے ہر رکعت میں ۷۵ بارتسیج اور جاروں میں تین سو موئيں اور ركوع و بحودين سُبُحَانَ رَبّي الْعَظِيم، سبُحُانَ رَبّي الْاَعْلىٰ كَمْ لَى بعد تسبيحات برا ص_(3) (غنيه وغير ما)

مَستَ لَا اللَّهِ اللَّهِ عباس رضي الله تعالى عباس بوجها گيا كه آپ كومعلوم ہے اس نماز ميں كون سورت بريھي جائے ؟ فر مايا: سور هُ

^{1 &}quot;كنز العمال"، كتاب الصلاة، رقم: ٢١٥٣٥، ج٧، ص٣٣٦.

^{2 &}quot;ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي الاستخارة، ج٢، ص٠٧٥.

^{😘 😘 &}quot;غنية المتملى"، صلاة التسبيح، ص ٤٣١.

تکاثر والعصراور قُلُ لِیَا یُنْهَا الْکُفِی وُنَ اور قُلْ هُوَاللهٔ اور بعض نے کہاسورہ حدیداور حشر اور صف اور تغابن۔ ((ردالحتار) کاثر والعصراور قُلْ لِیَا یُنْهَا الْکُفِی وُنَ اور قُلْ هُوَاللهٔ اور بعض نے کہاسورہ حدیداور حشر اور صف اور تغابن۔ ((ردالحتار) کروں کروں کروں کا کہ اسے کم پڑھی ہیں تو دوسرا موقع شہرے کا آئے بارسے کم پڑھی ہیں تو دوسرا موقع شہرے کا آئے وہیں پڑھ لے دوسرا موقع شہرے کا آئے وہیں پڑھ لے مثلاً قومہ کی تجدہ میں کے اور رکوع میں بھولا تو اسے بھی تجدہ ہی میں کے نہ قومہ میں کہ قومہ کی مقدار تھوڑی ہوتی ہے

... مسئ ایک سیج انگلیوں پر نہ گئے بلکہ ہو سکے تو دل میں ثار کرے ور نہ انگلیاں د با کر۔⁽³⁾

اور پہلے بحدہ میں بھولا تو دوسرے میں کیے جلسہ میں نہیں۔(2) (ردالحتار)

مستان کی جروفت غیر مکروه میں بینماز بڑھ سکتا ہے اور بہتر بیک ظہرے پہلے بڑھے۔(4) (عالمگیری، روالحتار)

سَنَانَ ٥ ابن عباس رض الله تعالى عنها سے مروى ، كهاس نماز ميں سلام سے پہلے يدوُ عابر هے:

اَللَّهُمَّ إِنِّى اَسُأَ لُکَ تَوْفِيْقَ اَهُلِ الهُداى وَاَعْمَالَ اَهُلِ الْيَقِيْنِ وَمُنَاصَحَةَ اَهُلِ التَّوْبَةِ وَعَرُمَ اَهُلِ الصَّبُرِ وَجِدَّ اَهُلِ الْحَشْيَةِ وَطَلَبَ اَهُلِ الرَّغُبَةِ وَتَعَبُّدَ اَهُلِ الْوَرَعِ وَعِرُفَانَ اَهُلِ الْعِلْمِ حَتَّى اَخَافَکَ اَللَّهُمَّ اِنِّى الصَّبُرِ وَجِدً اَهُلِ الْحَلْمِ حَتَّى اَخَافَکَ اَللَّهُمَّ اِنِّى السَّا لَکَ مَخَافَةً تَحُجُزُنِي عَنْ مَعَاصِيُکَ حَتَّى اَعْمَلَ بِطَاعَتِکَ عَمَلاً اَسْتَحِقُ بِهِ رِضَاکَ وَحَتَّى اَسُأَ لُکَ مَخَافَةً تَحُجُزُنِي عَنْ مَعَاصِيُکَ حَتَّى اَعْمَلَ بِطَاعَتِکَ عَمَلاً اَسْتَحِقُ بِهِ رِضَاکَ وَحَتَّى اَسُأَ لُکَ مَخَافِقَ تَحُجُونُ اللَّهُ وَحَتَّى اللَّهُ وَحَتَّى اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَعَلَى عَلَيْکَ فِى الْالْمُورِ الْمَالَى اللَّهُ مَعَاصِيْکَ فَى اللَّهُ وَحَتَّى اَ تَوَكَّلَ عَلَيْکَ فِى الْالْمُورِ الْمَالَ اللَّهُ اللَّهُ وَحَتَّى اللَّهُ اللَّهُ وَحَتَّى اللَّهُ وَحَتَّى اللَّهُ وَحَتَّى اللَّهُ وَحَتَّى اللَّهُ وَلَالَ عَلَيْکَ فِى الْالْمُورِ عَلَى اللَّهُ وَعَلَى عَلَيْکَ فِى اللَّهُ وَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَمِنْ ظَنَّ اللَّهُ وَمَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَلِي اللَّهُ وَعَلَى اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَى اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَلَى اللَّهُ وَلَا اللَّهُ وَالْمَلَ الْعَلَى اللَّهُ وَاللَّهُ وَلَا الْمَالَى اللَّهُ وَالْمُلُولِ الْمَالَالَ اللَّهُ وَلَا الْمَلْكِ وَالْمَالَ اللَّهُ الْمُالَّ الْمَالَالَ الْمُولِى الْمُؤْمِلُولُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَلَا الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُولِ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِلُولِ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ اللْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُولُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِلُ الْمُؤْم

- "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبيح، ج٢، ص٧١ه.
 - 2 المرجع السابق.
- 3 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبيح، ج٢، ص٧٢٥.
- المحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبيح، ج٢، ص ٥٧١.
 و"الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص ١١٣.
- 5..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبيح، ج٢، ص٧٢٥.

ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! میں تجھے سے سوال کرتا ہوں ہدایت والوں کی توفیق اور یقین والوں کے اعمال اور اہل تو ہہ کی خیرخواہی اور اہل مسلم کی معرفت تا کہ میں تجھ سے ڈروں۔ صبر کا عزم اورخوف والوں کی کوشش اور رغبت والوں کی طلب اور پر ہیزگاروں کی عبادت اور اہل علم کی معرفت تا کہ میں تجھ سے ڈروں۔ اے اللہ (عزوجل)! میں تجھ سے ایباخوف ما مگتا ہوں جو مجھے تیری نافر مانیوں سے روئے، تاکہ میں تیری طاعت کے ساتھ ایبا عمل کروں جس کی وجہ سے تیری رضا کا مستحق ہوجاؤں، تاکہ تیرے خوف سے خالص تو بہ کروں اور تاکہ تیری محبت کی وجہ سے خیرخواہی کو تیرے لیے خالص کروں اور تاکہ تیری اگر نے والا ۱۲۔ ا

المراز حاجت

لَا اللهَ اللهَ اللهُ اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبُحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ٱلْحَمُدُلِلْهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَسْأَ لُکَ مُوجِبَاتِ رَحُمَتِکَ وَعَزَائِمَ مَعُفِرَتِکَ وَالْعَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلاَمَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمِ لَا تَدَعُ لِى ذَنْبًا اللهَ غَفَرْتَهُ مُوجِبَاتِ رَحُمَتِکَ وَعَزَائِمَ مَعُفِرَتِکَ وَالْعَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلاَمَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمِ لَا تَدَعُ لِى ذَنْبًا اللهَ غَفَرْتَهُ وَلا هَمَّا اللهَ فَرَّحَمَ الرَّاحِمِيْنَ . (2)

تر فدی با فادهٔ تحسین و تصحیح وابن ماجه وطبرانی وغیر جمعثان بن صنیف رض الله تعالی عند سے راوی ، که ایک صاحب نابینا حاضر خدمت اقد س ہوئے اور عرض کی ، الله (عزوجل) سے دُعا سیجے که مجھے عافیت دے ، ارشاد فر مایا:''اگر تو چاہے تو دُعا کروں اور چاہے صبر کراور بیہ تیرے لیے بہتر ہے۔''انھوں نے عرض کی ،حضور (صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم) دُعا کریں ، انھیں تکم فر مایا: که وضوکرو اورا چھاوضوکر واور دور کعت نماز پڑھ کرید دُعا پڑھو:

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسًا لَكَ وَا تَوَسَّلُ وَا تَوَجُّهُ اِلَيُكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحُمَةِ يَا رَسُولَ اللهِ (3) إنّي

❶ "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب وقت قيام النبي صلى الله عليه وسلم من الليل، الحديث: ١٣١٩، ج٢، ص٥٢.

^{2 &}quot;جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في صلاة الحاجة، الحديث: ٤٧٨، ج٢، ص ٢١.

ترجمہ:اللہ (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں جو علیم وکریم ہے، پاک ہے اللہ (عزوجل)، مالک ہے عرشِ عظیم کا،حمد ہے اللہ (عزوجل) کے لیے جورب ہے تمام جہاں کا، میں تجھ سے تیری رحمت کے اسباب مانگنا ہوں اور طلب کرتا ہوں تیری بخشش کے ذرایع اور ہرنیکی سے نئیمت اور ہر گناہ سے سلامتی کومیرے لیے کوئی گناہ بغیر مغفرت نہ جھوڑ اور ہرغم کو دورکر دے اور جو حاجت تیری رضا کے موافق ہے اسے یوراکر دے،اے سب مہربانوں سے زیادہ مہربان ۱۲

دیث میں اس جگہ یا محمد (صلی اللہ تعالی علیہ و سلی اللہ تعالی علیہ و اعظم ، اعلی حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمته الرحمٰن نے یا محمد (صلی اللہ تعالی علیہ و سلی اللہ تعالی علیہ و کی ہے۔ کہنے کے بجائے ، یارسول اللہ (صلی اللہ تعالی علیہ و سلی کہنے کی تعلیم دی ہے۔

وَ تَوَجَّهُتُ بِكَ اِلَى رَبِّي فِي حَاجَتِي هَاذِهِ لِتُقُضَى لِيُ اَللَّهُمَّ فَشَفِّعُهُ فِيَّ . (1)

عثان بن حنیف رض اللہ تعالی عنظر ماتے ہیں: ''خدا کی قتم! ہم اٹھنے بھی نہ پائے تھے، باتیں ہی کررہے تھے کہ وہ ہمارے پاس آئے، گو یا بھی اندھے تھے ہی نہیں۔'' (2) نیز قضائے حاجت کے لیے ایک مجرب نماز جوعلا ہمیشہ پڑھتے آئے ہیہ کہ امام اعظم رض اللہ تعالی عنہ کے مزارِ مبارک پر جا کر دورکعت نماز پڑھے اور امام کے وسیلہ سے اللہ عزوجل سے سوال کرے، امام شافعی رحت اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں: کہ میں ایسا کرتا ہوں تو بہت جلد میری حاجت پوری ہوجاتی ہے۔ (3) (خیرات الحسان)

686

صلاة الأسرار

نیزاس کے لیے ایک مجرب نماز صلاۃ الاسرارہ جوامام ابوالحسن نورالدین علی بن جریخی شطنوفی بہت الاسرار میں اور مُلّ علی قاری و شخ عبدالحق محدّث وہلوی رض اللہ تعالی عنم حضور سیدنا غوث اعظم رض اللہ تعالی عنہ سے روایت کرتے ہیں، اس کی ترکیب بیہ ہے کہ بعد نماز مغرب سنتیں پڑھ کر دور کعت نماز نقل پڑھے اور بہتر ہے ہے کہ المحمد کے بعد ہر رکعت میں گیارہ بارقُل مُحوّالله پڑھے سلام کے بعد اللہ عزوم کی حمد وثنا کر سے پھر نبی صلی اللہ تعالی علیہ بنام پر گیارہ بار دُرُ وو وسلام عرض کرے اور گیارہ بار ہے ہے:

یکر عراق کی جانب گیارہ قدم جلے، ہرقدم پر ہیہ ہے:

کھر عراق کی جانب گیارہ قدم جلے، ہرقدم پر ہیہ ہے:

- يَا غَوُتُ النَّفَ لَيُنِ وَ يَا كُرِيمَ الطَّرَفَيْنِ آغِثْنِي وَامْدُدُنِي فِي قَضَاءِ حَاجَتِي يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ. (5)
- ۔۔۔۔۔۔ ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! میں تجھے سے سوال کرتا ہوں اور توسل کرتا ہوں اور تیری طرف متوجہ ہوتا ہوں تیرے نبی محمر سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم کے ذریعہ سے جو نبی رحمت ہیں یارسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم)! میں حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) کے ذریعہ سے اپنے رب (عزوجل) کی طرف اس حاجت کے بارہ میں متوجہ ہوتا ہوں، تا کہ میری حاجت پوری ہو۔'' اللی!اون کی شفاعت میرے تن میں قبول فرما۔'' ۱۲
 - سنن ابن ماجه"، كتاب إقامة الصلوات والسنة فيها، باب ماجاء في صلاة الحاجة، الحديث: ١٣٨٥، ج٢، ص١٥٦.
 و "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٥٨٩، ج٥، ص٣٣٦.
 - و "المعجم الكبير"، الحديث: ١ ٨٣١١، ج٩، ص ٣٠. دون قوله (واتوسل).
 - ③ "الخيرات الحسان"، الفصل الخامس و الثلاثون... إلخ، ص ٢٣٠.
 - و " تاريخ بغداد "، باب ما ذكر في مقابر بغداد المخصوصة بالعلماء و الزهاد، ج١، ص١٣٥.
- ۔۔۔۔۔ ترجمہ:اےاللہ(عزوجل) کے رسول!اے اللہ (عزوجل) کے نبی! میری فریادکو پہنچنے اور میری مددیجیے، میری حاجت پوری ہونے میں، اےتمام حاجوں کے پوراکرنے والے ۱۲
- 5 ترجمہ: اُرے جن وانس کے فریا درس اور اے دونوں طرف (ماں باپ) سے بزرگ! میری فریاد کو پہنچنے اور میری مدد کیجیے، میری حاجت پوری ہونے میں، اے حاجتوں کے بورا کرنے والے ۱۲

پھر حضور کے توسل سے اللہ عز دجل سے دُ عاکر ہے۔ ⁽¹⁾

الماز توبه الماز توبه

ابوداود وتر مذی وابن ماجه اور ابن حبان اپنی صحیح میں ابو بکر صدیق رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وبلم) فرماتے ہیں:'' جب کوئی بندہ گناہ کرے چھر وضو کر کے نماز پڑھے پھر استغفار کرے، الله تعالیٰ اس کے گناہ بخش دےگا۔'' پھر میہ آیت پڑھی۔

﴿ وَالَّذِينَ اِذَافَعَلُوْافَاحِشَةً اَوْظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمُذَ كُرُوااللَّهَ فَالْسَتَغُفَرُوْ الِذُنُوبِ وَمَنْ يَغَفِرُ اللَّانُوبِ (2) وَاللَّذِي وَاعْلَى مَافَعَكُوْا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿ (2)

جنھوں نے بے حیائی کا کوئی کام کیا یا اپنی جانوں پرظلم کیا پھراللہ(عزد جل) کو یا د کیا اور اپنے گنا ہوں کی بخشش مانگی اور کون گناہ بخشے اللہ(عزد جل) کے سوااور اپنے کیے پر دانستہ ہٹ نہ کی حالانکہ وہ جانتے ہیں۔

سکان آن جاعت کے سلاۃ الرغائب کہ رجب کی پہلی شب جُحُداور شعبان کی پندر تقویں شب اور شب قدر میں جماعت کے ساتھ نفل نماز بعض جگدلوگ ادا کرتے ہیں، فقہا اسے ناجائز و مکروہ و بدعت کہتے ہیں اور لوگ اس بارے میں جو حدیث بیان کرتے ہیں محدثین اسے موضوع بتاتے ہیں۔ (3) لیکن اجلد کا ابراولیا سے باسانید صحیحہ مروی ہے، تو اس کے منع میں غلونہ چاہیے (4) اور اگر جماعت میں تین سے زائد مقتدی نہ ہوں جب تو اصلاً کوئی حرج نہیں۔

- 1 "بهجة الأسرار"، ذكر فضل أصحابه و بشراهم، ص١٩٧. بتصرف.
- ٢٠١٥ الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في الصلاة عند التوبة، الحديث: ٢٠٤، ج١، ص٤١٤.
 پ٤، ال عمران: ١٣٥.
- ③ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الرغائب، ج٢، ص٦٩ه، وغيره.
- سس مجد واعظم ، اعلی حضرت اما م احمد رضا خان علیه رحمة الرطن ' فقاو کل رضویه' ، جلد 7، صفحه 465 پر فرماتے ہیں : ' فضل غیرتر اوت کمیں امام کے سواتین آ دمیوں تک تو اجازت ہی ہے۔ چار کی نسبت کتبِ حنفیہ میں کراہت لکھتے ہیں لینی کراہت تنزیہ جس کا حاصل خلا ف اولی ہے نہ کہ گناہ وجرام سحم ابیناہ فی فت اوانا (جیسا کہ ہم نے اپنے فقاؤ کی میں اس کی تفصیل بیان کردی ہے۔ ت) مگر مسکم مختلف فیہ ہے اور بہت اکا بردین سے جماعت نوافل بالنہ داعی (تدائی کا لغوی معنی ہے' ایک دوسرے کو بلانا'۔ اور تدائی کے ساتھ جماعت کا مطلب ہے کہ ماز کم چارآ دی ایک امام کی اقتد اکریں۔ "الفتاوی الرضویة "، ج۷، ص ۶۳ کی ثابت ہے اور عوام فعل خیر سے منع فرمایا ہے۔' ("الفتاوی الرضویة"، ج۷، ص ۶۳ کی) ثابت ہے اور عوام فعل خیر سے منع فرمایا ہے۔' ("الفتاوی الرضویة"، ج۷، ص ۶۳ کی)

﴿ تراویح کا بیان ﴾

سَمَانُهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّلَّا اللَّهُ ال

اس پرخلفائے راشدین رضی اللہ تعالی عنهم نے مداومت فر مائی اور نبی صلی اللہ تعالی علیہ وہلم کا ارشاد ہے: که 'میری سنت اور سنت خلفائے راشدین کواپیخ او پرلاز مسمجھو'' ⁽²⁾ اورخود حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے بھی تر اوت کے پڑھی اور اسے بہت پیند فر مایا۔

صحیح مسلم میں ابو ہر رہ ورض اللہ تعالی عنہ سے مروی ، ارشاد فر ماتے ہیں: ''جورمضان میں قیام کرے ایمان کی وجہ سے اور تواب طلب کرنے کے لیے، اس کے اگلے سب گناہ بخش و بے جائیں گے (3) یعنی صغائر۔' بھر اس اندیشہ سے کہ امت پر فرض نہ ہوجائے ترک فر مائی بھر فاروق اعظم رض اللہ تعالی عنہ رمضان میں ایک رات مسجد کوتشریف لے گئے اور لوگوں کو متفرق طور پر نماز پڑھتے پایا کوئی تنہا پڑھ رہا ہے ، کسی کے ساتھ بچھلوگ پڑھ رہے ہیں، فر مایا: میں مناسب جانتا ہوں کہ ان سب کو ایک امام کے ساتھ جمع کر دوں تو بہتر ہو، سب کو ایک امام ابی بن کعب رضی اللہ تعالی عنہ کے ساتھ اکٹھا کر دیا پھر دوسرے دن تشریف لے گئے ملاحظہ فر مایا کہ لوگ اپنے امام کے بیچھے نماز پڑھتے ہیں فر مایا نیعُمَتِ الْبِدُعَةُ هاذِ ہم بیا تھی بدعت ہے۔ (4) دول است سن سناتھ کہ جمہور کا مذہب یہ ہے کہ تر اور کی ہیں رکعتیں ہیں (5) اور بہی احادیث سے ثابت، بیہ تی نے اسند صحیح سائب بن پڑیدرضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی کہ لوگ فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے زمانہ ہیں بڑھا کرتے تھے۔ (6)

سائب بن پزیدرضی الله تعالی عنبا سے روایت کی کہ لوگ فاروقِ اعظم رضی الله تعالی عنہ کے زمانہ میں بیس ربعتیں پڑھا کرتے تھے۔ (6) اور عثمان وعلی رضی الله تعالی عنبا کے عہد میں بھی یو بیس تھا۔ ⁽⁷⁾ اور موطا میں بزید بن رومان سے روایت ہے، کہ عمر رضی الله تعالی عنہ کہ اس میں تین رکعتیں وترکی ہیں۔ ⁽⁹⁾ اور مولی علی رضی الله تعالی عنہ زمانہ میں لوگ رمضان میں تیکس رکعتیں پڑھتے۔ ⁽⁸⁾ بیہ بھی نے کہا اس میں تین رکعتیں وترکی ہیں۔ ⁽⁹⁾ اور مولی علی رضی الله تعالی عنہ

- 🕕 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٩٦ ٥، وغيره .
- ٣٠٠٨ عامع الترمذي"، أبواب العلم، باب ماجاء في الأخذ بالسنة... إلخ، الحديث: ٢٦٨٥، ج٤، ص٨٠٣.
- 3 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب الترغيب في قيام رمضان وهو التراويح، الحديث: ٥٥٩، ص٣٨٢.
 - "صحيح البخاري"، كتاب صلاة التروايح، باب فضل من قام رمضان، الحديث: ٢٠١٠، ج١، ص٦٥٨.

و "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الصلاة في رمضان، باب ماجاء في قيام رمضان، رقم ٥٥، ٦٠، ج١، ص١٢٠.

- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٩٩٥.
 - شمعرفة السنن و الآثار" للبيهقي، كتاب الصلاة، باب قيام رمضان، رقم ١٣٦٥، ج٢، ص٥٠٣.
 - € "فتح باب العناية شرح النقاية"، كتاب الصلاة، فصل في صلاة التراويح، ج١، ص٢٤٣.
- الموطأ" لإمام مالك، كتاب الصلاة في رمضان، باب ماجاء في قيام رمضان، رقم ٢٥٧، ج١، ص ١٢٠.
- 🧣 💿 "السنن الكبرى"، كتاب الصلاة، باب ما روى في عدد ركعات القيام في شهر رمضان، الحديث: ٢٦١٨، ج٢، ص٩٩٠.

کابیان کی کابیان

نیز اس کے بیس رکعت ہونے میں اوگوں کو بین کر کعتیں پڑھائے۔ (1) نیز اس کے بیس رکعت ہونے میں بیر حکمت ہے کہ فرائض وواجبات کی اس سے تکمیل ہوتی ہے اور کل فرائض وواجب کی ہرروز بین کر کعتیں ہیں، البذا مناسب کہ یہ بھی ہیں ہول کہ مکمیا سکتا ہوتی ہے۔ کو مکمیا سکتا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا سکتا ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہے۔ کہ مکمیا ہیں ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ مکمیا ہوتی ہے۔ کہ ہوتی ہوتی ہے۔ کہ ہوتی ہے۔ کہ

سکانی اس کی باقی رہ گئیں کہ امام و تر کو کھڑا ہو گیا تو امام کے ساتھ و تر پڑھ لے پھر باقی ادا کرلے جب کہ فرض جماعت سے رکعتیں اس کی باقی رہ گئیں کہ امام و تر کو کھڑا ہو گیا تو امام کے ساتھ و تر پڑھ لے پھر باقی ادا کرلے جب کہ فرض جماعت سے پڑھے ہوں اور یہ افغنل ہے اورا گر تر اور کے و تر تنہا پڑھے تو بھی جائز ہے اورا گر بعد میں معلوم ہوا کہ نماز عشا بغیر طہارت پڑھی تھی اور تر اور کھتار، ردا کمتار، مالمگیری) طہارت پڑھی تھی اور تر اور کو و تر طہارت کے ساتھ تو عشاوتر اور کی پڑھے و تر ہو گیا۔ (در مختار، ردا کمتار، مالمگیری) مستحب سے کہ تہائی رات تک تا خیر کریں اور آ دھی رات کے بعد پڑھیں تو بھی کراہت نہیں۔ (3)

سَسَعَلَهُ ﴾ اگرفوت ہوجا ئیں توان کی قضانہیں اوراگر قضاتنہا پڑھ لی تو تراوی نہیں بلکیفل مستحب ہیں، جیسے مغرب و عشا کی سنتیں۔(4)(درمختار، ردالمحتار)

سَسَعَانُ لَ ﴾ تراوح کی بین رکعتیں دل سلام سے پڑھے یعنی ہر دور کعت پر سلام پھیرے اور اگر کسی نے بیسول پڑھ کر آخر میں سلام پھیرا تو اگر ہر دور کعت پر قعدہ کرتار ہاتو ہوجائے گی مگر کراہت کے ساتھ اور اگر قعدہ نہ کیا تھاتو دور کعت کے قائم مقام ہوئیں۔(5) (ورمختار)

سَسَعَانُ کی ہے۔ احتیاط بیہے کہ جب دودورکعت پرسلام پھیرے تو ہر دورکعت پرالگ الگ نیت کرے اور اگر ایک ساتھ بیسول رکعت کی نیت کر لی تو بھی جائز ہے۔ (6) (روالمحتار)

مَسْنَاكُونُ ﴾ تراوح میں ایک بارقر آن مجید ختم کرناسنت مؤکدہ ہے اور دومرتبہ فضیلت اور تین مرتبہ افضل لوگوں کی

- 1990.... "السنن الكبرى"، كتاب الصلاة، باب ما روى في عدد ركعات القيام في شهر رمضان، الحديث: ٢٦١، ٢٠٠ ص ٩٩٥.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٩٧٥.
 الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٥.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٩٨٥.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٩٨.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٩٩٥.
 - 🚄 🌀 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٩٧٥.

🐉 سستی کی وجہ ہے ختم کوترک نہ کرے۔ ⁽¹⁾ (درمختار)

مَسِعًا ﴾ امام ومقتذى ہردوركعت پر ثناية هيں اور بعد تشهد دُ عالمجى، ماں اگر مقتد بوں برگرانی ہو تو تشهد كے بعد اللّٰهُمَّ

صَلّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَالِهِ بِراكتفاكر__(2) (ورمخار،روالحار)

تراوی آ خررمضان تک برابر بڑھتے رہیں کہنت مؤکدہ ہیں۔⁽³⁾(عالمگیری)

سَسَعَانُ اللَّهِ الْصَلْ يدیبے که تمام شفعوں میں قراءت برابر ہواورا گرابیانہ کیاجب بھی حرج نہیں۔ یوہیں ہر شفع کی پہلی

ر کعت اور دوسری کی قراءت مساوی ہودوسری کی قراءت پہلی سے زیادہ نہ ہوناچا ہیے۔ (4) (عالمگیری)

<u> سبعال کا ہے۔</u> قراءت اورار کان کی اوا میں جلدی کرنا مکروہ ہےاور جتنی ترتیل زیادہ ہو⁽⁵⁾ بہتر ہے۔ یوہیں تعوذ وتسمیہ و طمانينت وسيج كاجهور دينابهي مروهبي (6) (عالمكيري، درمخار)

سرچاررکعت پراتنی دیرتک بیٹھنامستحب ہے جتنی دیرییں چاررکعتیں پڑھیں، یانچویں تر ویجہ اور وتر کے درمیان اگربیٹھنالوگوں برگرال ہو تو نہ بیٹھے۔⁽⁷⁾(عالمگیری وغیرہ)

مسئ 😘 🗥 🦫 اس بیٹھنے میں اسے اختیار ہے کہ چیکا ہیٹھار ہے یا کلمہ پڑھے یا تلاوت کرے یا درودشریف پڑھے یا جار رکعتیں تنہائفل پڑھے جماعت ہے مکروہ ہے یا پشیجے پڑھے:

سُبُحَانَ ذِي الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبُحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْكِبُرِيَآءِ وَالْجَبَرُوْتِ. سُبُحَانَ الْـمَـلِكِ الْـحَـيّ الَّذِي لَا يَنَامُ وَلَا يَمُونُ ثُ سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَّبُنَا وَرَّبُّ الْمَلْئِكَةِ وَالرُّوْحِ لَآ اِللهَ اللهُ نَسْتَغُفِرُ

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص ٢٠١.
 - و "الفتاوى الرضوية"، ج٧، ص ٥٨.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٢٠.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٨.
 - 4 المرجع السابق، ص١١٧.
 - **ہ..... یعنی جس قدر حروف کوا چھی طرح ا دا کر ہے۔**
 - الفتاوى الهندية "، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١٠ ص١١٧. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٠٣.
 - ◘ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١٥، ١، وغيره.

الله نَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعُونُ ذُبِكَ مِنَ النَّارِ _(1) (غنيه ،روالحمَّاروغيرها)

سر دورکعت کے بعد بیٹھنا بھی مکروہ ہے۔ یو ہیں دی کھت کے بعد بیٹھنا بھی مکروہ۔ (2) (درمختار، عالمگیری)

مسئ ایک نے گھر میں تنہا پڑھ لی تو گئہ گارنہیں مگر جو خض مقتدا ہو کہ اس کے ہونے سے جماعت بڑی ہوتی ہے اور چھوڑ دے گا تو

لوگ کم ہوجا ئیں گےاہے بلاعذر جماعت چھوڑنے کی اجازت نہیں۔⁽³⁾(عالمگیری)

سَسَعَانُ 1 ﴾ تراوت مسجد میں باجماعت پڑھنا نضل ہے اگر گھر میں جماعت سے پڑھی تو جماعت کے ترک کا گناہ نہ ہوا مگروہ تواب نہ ملے گا جومسجد میں پڑھنے کا تھا۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُ 10 ﴾ اگرعالم حافظ بھی ہوتو افضل ہیہ کہ خود پڑھے دوسرے کی اقتد اندکرے اور اگرامام غلط پڑھتا ہو تو مسجد محلّہ چھوڑ کر دوسری مسجد میں جانے میں حرج نہیں۔ یو ہیں اگر دوسری جگہ کا امام خوش آواز ہو یا ہلکی قراءت پڑھتا ہو یا مسجد محلّہ میں ختم نہ ہوگا تو دوسری مسجد میں جانا جائز ہے۔ (5) (عالمگیری)

سَسَنَا اللهُ اللهِ عَنْ خُونُ خُوان کوامام بنانا نه چاہیے بلکہ درست خوان کو بنا ئیں۔ (6) (عالمگیری) افسوس صدافسوس کہ اس زمانہ میں حفاظ کی حالت نہایت نا گفتہ بہ ہے، اکثر تو ایبا پڑھتے ہیں کہ یَـ عُلَمُونُ نَ تَعُلَمُونُ کَـ سوا کچھ پینہیں چاتا الفاظ وحروف کھاجایا کرتے ہیں جواچھا پڑھنے والے کہے جاتے ہیں اُٹھیں دیکھیے تو حروف سیح نہیں اداکرتے ہمزہ الف، میں اور ذ، ز، ظاور

- 1 "غنية المتملي"، تراويح، ص٤٠٤.
- و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص ٦٠٠ وغيرهما.

ترجمہ: پاک ہے ملک دملکوت والا ، پاک ہے عزت ویزرگی اور بڑائی اور جبروت والا ، پاک ہے باوشاہ جوزندہ ہے ، جونہ سوتا ہے نہ مرتا ہے ، پاک مقدس ہے فرشتوں اور روح کا مالک ، اللہ (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں ، اللہ (عزوجل) سے ہم مغفرت چاہتے ہیں ، تجھ سے جنت کا سوال کرتے ہیں اور جہنم سے تیری بناہ ما تکتے ہیں ۔ ۱۲

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص ٢٠١.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١٠ ص١١٠.
 - 4 المرجع السابق.
 - 5 المرجع السابق.
 - 🦔 🌀 …… المرجع السابق.

🗳 ث،س،ص،ت، ط وغیر ہاحروف میں تفرقہ (۱) نہیں کرتے جس سے قطعاً نماز ہی نہیں ہوتی فقیر کوانھیں مصیبتوں کی وجہ سے

تین سال ختم قرآن مجید سننانه ملامولاعز وجل مسلمان بھائیوں کوتو فیق دے کہ مَا اَنْزَلَ اللّٰهُ بِرِّ ہے کی کوشش کریں۔

مسئلہُ ایک ہے۔ آج کل اکثر رواج ہوگیا ہے کہ حافظ کو اُجرت دے کرتر اوت کی پڑھواتے ہیں بینا جائز ہے۔ دینے والا اور

ہے، اگر چداس سے طےنہ ہوا ہو یہ بھی ناجائز ہے کہ اُلْمَعُرُونُ کَالْمَشُرُونُ طِ ہاں اگر کہددے کہ پھینیں دول گایا نہیں اُوں گا پھر پڑھے اور حافظ کی خدمت کریں تواس میں حرج نہیں کہ اَلصَّرِیْحُ یُفَوِّقُ اللَّالَالَةَ (2).

<u>کسٹان (۱) ہے۔</u> ایک امام دومسجدوں میں تراوت کرچھا تا ہے اگر دونوں میں پوری پوری پڑھائے تو ناجا کز ہے اور مقتدی نے دومسجدوں میں پوری پوری پڑھی تو حرج نہیں مگر دوسری میں وتر پڑھنا جا ئز نہیں جب کہ پہلی میں پڑھ چکا اور اگر گھر میں تراوت کیڑھ کرمسجد میں آیا اور امامت کی تو مکر دو ہے۔ (3) (عالمگیری)

سَسَعَانُ ۲۳﴾ لوگوں نے تراوت کے پڑھ لی اب دوبارہ پڑھنا چاہتے ہیں تو تنہا تنہا پڑھ سکتے ہیں جماعت کی اجازت نہیں۔(4)(عالمگیری)

سَمَالُهُ اللهِ عَلَى يَحِيدِ بِالغَينِ كَى تراوتَ مَه مُوكًى يَمِي شَجِيحِ ہے۔ (⁶⁾ (عالمگیری)

مسئلہ 10 ہے۔ رمضان شریف میں وز جماعت کے ساتھ پڑھناافضل ہے خواہ اُسی امام کے پیچھے جس کے پیچھے عشاو

تراوح پڑھی یادوسرے کے پیچھے۔⁽⁷⁾ (عالمگیری، درمختار)

سیعان کی ایک ایک شخص عشاو وتر پڑھائے دوسراتراوت کے۔جبیبا کہ حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنہ عشاو وترکی

• سیا لیمن فرق ۔ عنی صراحت کو دلالت پر فوقیت ہے۔

الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١٠ ص١٦٠.

4 المرجع السابق.

5 المرجع السابق.

6 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس، الفصل الثالث، ج١، ص ٨٥.

◘ المرجع السابق، ص١٦٦، و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في كراهة

الاقتداء في النفل على سبيل التداعي... إلخ، ج٢، ص٦٠٦.

بی امامت کرتے تھے اور الی بن کعب رضی الله تعالی عنه تر اور کی کی۔(1) (عالمگیری)

سینان ۲۷﴾ اگرسب لوگوں نے عشا کی جماعت ترک کردی تو تراوت کم بھی جماعت سے نہ پڑھیں ، ہاں عشاجماعت

ہوئی اور بعض کو جماعت نہ ملی ۔ توبیہ جماعت تر اوت کے میں شریک ہوں۔⁽²⁾ (درمختار)

مَسْتَانَ ٢٨﴾ اگرعشا جماعت ہے پڑھی اور تر اور کی تنہا تو وتر کی جماعت میں شریک ہوسکتا ہے اور اگرعشا تنہا پڑھ کی

مسئانی ۲۹ 💨 عشا کی سنتوں کا سلام نہ پھیرااسی میں تراوی ملا کرشروع کی تو تراوی نہیں ہوئی۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

سَسَعَالُ اللهِ معتدى كويه جائز نہيں كه بليٹا رہے جب امام ركوع كرنے كو ہوتو كھڑا ہو جائے كه بير منافقين سے

مشابہت ہے۔

الله عزوجل ارشادفرما تاہے:

﴿ إِذَا قَامُوا إِلَى الصَّالُوةِ قَامُوا كُسَالً اللهِ ﴾

منافق جب نماز کو کھڑ ہے ہوتے ہیں تو تھکے جی سے۔⁽⁶⁾ (غنیہ وغیر ہا)

مَسِعَالُ ٣٢﴾ امام ہے غلطی ہوئی کوئی سورت یا آیت جھوٹ گئی تو مستحب سیر ہے کہاہے پہلے پڑھ کر پھرآ گے رو ھے_⁽⁷⁾(عالمگیری)

مَسِعًا لَهُ ٣٣﴾ وورکعت پربیٹھنا بھول گیا کھڑا ہوگیا توجب تک تبسری کاسجدہ نہ کیا ہو پیٹھ جائے اور سجدہ کرلیا ہو تو جار

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٠٣.
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٦٠٣.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٧.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٠٣.
 - شنية المتملى شرح منية المصلى"، تراويح، فروع، ص ١٠٤.
 - و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٦٠٣.
 - ب٥، النسآء: ١٤٢.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١١٨٠.

مسکان ان کے بدلے کی دورکعت پڑھ کرسلام پھیرا، اگر دوسری پر ببیٹھا نہ تھا تو نہ ہوئیں ان کے بدلے کی دورکعت پھر

پڑھے۔⁽²⁾(عالمگیری)

مَسْعَانُهُ اللهِ عَلَى مَقْتَدَى سُولِياامام سلام پھير كراور دوركعت پڑھ كرقعدہ ميں آيا اب بيه بيدار ہوا تو اگر معلوم ہو گيا

تو سلام پھیر کرشامل ہوجائے اور امام کے سلام پھیرنے کے بعد جلد بوری کر کے امام کے ساتھ ہوجائے۔⁽³⁾ (عالمگیری)

<u> مسئالہُ اس کے جارہ کے بعدلوگوں کو یاد آیا کہ دور کعتیں رہ گئیں تو جماعت سے پڑھ لیں اور آج یاد آیا کہ کل دو</u> رکعتیں رہ گئ تھیں تو جماعت سے پڑھنا مکروہ ہے۔⁽⁴⁾ (عالمگیری)

<u> سیان سیان سیام ہے ہے ہے بعد کوئی کہتا ہے دوہوئیں کوئی کہتا ہے تین توامام کے علم میں جوہواُس کا اعتبار ہے اور</u> امام کوکسی بات کا یقین نہ ہو تو جس کوسچا جانتا ہواُس کا قول اعتبار کرے۔اگر اس میں لوگوں کوشک ہو کہ بیس ہوئیں یا اٹھارہ تو دو رکعت تنہا تنہا بڑھیں۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

مسئان سکار کی وجہ ہے نماز تراوح فاسد ہوجائے توجتنا قرآن مجیدان رکعتوں میں پڑھا ہے اعادہ کریں تا کہ ختم میں نقصان ندر ہے۔ (6) (عالمگیری)

سَسَعَانُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ شریف جهر (⁸⁾ سے پڑھناسنت ہے اور ہرسورت کی ابتدامیں آہستہ پڑھنامستحب اور بیہ جو آج کل بعض جہال نے نکالا ہے کہ ایک سوچودہ باربسم اللّہ جهر سے پڑھی جائے ور نہ ختم نہ ہوگا، مذہب حنفی میں بے اصل ہے۔

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ١١٨.
 - 2 المرجع السابق.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١.
- ₫ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٧.
 - 🗗 المرجع السابق.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٨.
 - 7 المرجع السابق.
 - 😮 يعنی اُو نجی آواز 🗝

🥞 مَسِيَّاكُمْ اللَّهِ 🔫 متاخرين نے ختم تر اور کے ميں تين بارقُلُ هُوَاللّٰهُ پڑھنامستحب کہااور بہتريہ ہے کہ ختم کے دن تجیبلی رکعت میں المرسے المُفلِحُونَ تك يرسے

سَسَعَالُهُ 🗥 🐣 شبینه که ایک رات کی تراوح میں پورا قرآن پڑھاجا تا ہے، جس طرح آج کل رواج ہے کہ کوئی بیٹیا باتیں کرر ہاہے، کچھلوگ لیٹے ہیں، کچھلوگ جائے پینے میں مشغول ہیں، کچھلوگ مسجد کے باہر حقانوشی کررہے ہیں اور جب جی میں آیا ایک آ دھ رکعت میں شامل بھی ہو گئے بینا جائز ہے۔

فا كده: جهار سے امام اعظم رضی الله تعالی عندرمضان شریف میں اکسٹھ ختم كيا كرتے تھے تيس ون میں اورتمیں رات میں اورایک تراوت کمیں اور پینتالیس برس عشا کے وضو سے نماز فجر پڑھی ہے۔

منفرد کا فرضوں کی جماعت پانا

خلیئٹ 🚺 و ۲ 🌋 امام مالک ونسائی روایت کرتے ہیں که ایک صحابی محجن نامی رضی اللہ تعالی عنه حضورا قدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم

کے ساتھ ایک مجلس میں حاضر تتھے اذان ہوئی ،حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وئم) کھڑے ہوئے اور نماز پڑھی وہ بیٹھےرہ گئے ،ارشا وفر مایا: ''جماعت کے ساتھ نماز پڑھنے سے کیا چیز مانع ہوئی کیاتم مسلمان نہیں ہو۔''عرض کی ، یارسول الله (صلی الله تعالی علیه وہم)! ہوں تو گرمیں نے گھریڑھ کی تھی،ارشادفر مایا:'' جبنمازیڑھ کرمسجد میں آؤاورنماز قائم کی جائے تو لوگوں کے ساتھ پڑھ لوا گرچہ پڑھ <u> بچکے ہو۔'' (1) اسی کے مثل یزید بن عامر ضیاللہ تعالی عند کا واقعہ ہے جوابوداود میں مروی۔</u>

خلیئٹ 👚 🔭 امام ما لک نے روایت کی کہ عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا فرماتے ہیں:'' جومغرب یاضیح کی پڑھ چکا ہے

پیرجب امام کے ساتھ یائے اعادہ نہ کرے۔'' (²)

مَسِعًا ﴾ تنها فرض نماز شروع ہی کی تھی یعنی ابھی پہلی رکعت کاسجدہ نہ کیا تھا کہ جماعت قائم ہوئی تو تو ڈکر جماعت میں شامل ہوجائے۔⁽³⁾ (درمختار)

مَسِعًا اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ الله ہوجائے اگر چہدوسری رکعت پڑھر ہاہو،البیتہ دوسری رکعت کاسجدہ کرلیا تواب ان دونماز وں میں توڑنے کی اجازت نہیں اورنماز

- "الموطأ" لإمام مالك، كتاب صلاة الجماعة، باب إعادة الصلاة مع الإمام، الحديث: ٣٠٢، ج١، ص١٣٥. و "مشكاة المصابيح"، كتاب الصلاة، باب من صلى صلاة مرتين، الحديث: ٥٣ ١١، ج١، ص٣٣٨.
- 2 "الموطأ" لإمام مالك، كتاب صلاة الجماعة، باب إعادة الصلاة مع الإمام، الحديث: ٣٠٦، ج١، ص١٣٦.
 - 🗣 🔞 "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٢٠٦ ـ ٦١٠.

پوری کرنے کے بعد بہ نیت نفل بھی ان میں شریکے نہیں ہوسکتا کہ فجر کے بعدنفل جائز نہیں اور مغرب میں اس وجہ سے کہ تین ا

ر کعتیں نفل کی نہیں اور مغرب میں اگر شامل ہو گیا تو برا کیا، امام کے سلام چھیرنے کے بعد ایک رکعت اور ملا کر جار کر لے اور

اگرامام کے ساتھ سلام چھیردیا تو نماز فاسد ہوگئ جاررکعت قضا کرے۔(1) (عالمگیری وغیرہ)

مسئل سی کی سی مغرب بڑھنے والے کے بیچھےنفل کی نیت سے شامل ہو گیا۔امام نے چوتھی رکعت کو تیسری گمان کیااور کھڑا ا

ہو گیااس مقتدی نے اُس کا اتباع کیا،اس کی نماز فاسد ہوگئی، تیسری پرامام نے قعدہ کیا ہویانہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

مَسْعًا ﴾ ﷺ چاررکعت والی نماز شروع کر کے ایک رکعت پڑھ لی لینی پہلی رکعت کاسجدہ کرلیا تو واجب ہے کہ ایک اور یڑھ کرتو ڑ دے کہ بیددور کعتیں نفل ہو جائیں اور دویڑھ لی ہیں تو ابھی تو ڑ دے لعنی تشہدیڑھ کرسلام پھیر دےاور تین پڑھ لی ہیں ۔ تو واجب ہے کہ نہ توڑے، توڑے گا تو گنہگار ہوگا بلکہ حکم یہ ہے کہ پوری کر کے فٹل کی نیت سے جماعت میں شامل ہو جماعت کا تُوابِ یا لےگا،مگرعصر میں شامل نہیں ہوسکتا کہ عصر کے بعد نفل جائز نہیں۔⁽³⁾ (درمختار ، ردالحتار)

مَسْعَانُهُ ۞ ﴾ جماعت قائم ہونے ہے مؤذن کا تکبیر کہنا مرادنہیں بلکہ جماعت شروع ہوجانامُر اد ہے،مؤذن کے تکبیر

کہنے سے قطع نہ کرے گا اگر چہ بہلی رکعت کا ہنوز (⁴⁾ سجدہ نہ کیا ہو۔ ⁽⁵⁾ (ردالحتار)

سَسَعَالُهُ اللَّهِ ﴿ جَمَاعت قَائَمُ مُونِے سے نماز قطع کرنااس وفت ہے کہ جس مقام پریینماز پڑھتا ہوو ہیں جماعت قائمُ ہو، اگریدگھر میں نماز پڑھتا ہے اورمسجد میں جماعت قائم ہوئی یا ایک مسجد میں یہ پڑھتا ہے دوسری مسجد میں جماعت قائم ہوئی تو توڑنے کا حکم نہیں اگر چہ پہلی کا سجدہ نہ کیا ہو۔ (6) (روالحتار)

سَسَاكُ كُ ﴾ نفل شروع كيے تھاور جماعت قائم ہوئى توقطع نەكرے بلكە دوركعت پورى كرلے،اگرچە پېلى كاسجده بھى

نہ کیا ہواور تیسری پڑھتا ہو تو چار پوری کرلے۔⁽⁷⁾ (درمختار،ردالحتار) مَسِعًا ﴾ ﴾ جُمُعَة اورظهر كي سنتين پڙھنے ميں خطبه يا جماعت شروع ہوئي تو چار پوري كر لے۔(8) (ورمختار)

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١١، وغيره.
 - 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١١٩.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: صلاة ركعة واحدة باطلة... إلخ، ج٢، ص٠٦٦.
 - 4 ابھی تک۔
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٨.
 - 6 المرجع السابق.
- 🗨 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: صلاة ركعة واحدة... إلخ، ج٢، ص ٦١١.
 - 🔊 🔞 "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص١٦١.

کی اور جماعت قائم کی اور جماعت قائم ہوئی تو پوری کر کے شامل ہو ہاں جو قضا شروع کی اگر بعینہ اُسی

قضاکے لیے جماعت قائم ہوئی تو تو اُکر شامل ہوجائے۔(1) (ردالحتار)

مست المرات الله من المرات المنظم المراب الم

مستحب اور جان بیانے کے لیے ہو تو واجب ⁽³⁾ (ردالحمار) مستان ال ﷺ نماز توڑنے کے لیے بیٹھنے کی حاجت نہیں کھڑا اکٹر اایک طرف سلام پھیر کرتوڑ دے۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

مستان ۱۳ 💨 جس شخص نے نماز نہ پڑھی ہواہے مسجد سے اذان کے بعد نکلنا مکر ووقح کمی ہے۔ ابن ماجہ عثمان رضی اللہ تعالی عند سے راوی، کہ حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فر مایا: ''اوان کے بعد جومسجد سے چلا گیا اور کسی حاجت کے لیے نہیں گیا اور نہ واپس

ہونے کا ارادہ ہے وہ منافق ہے۔'' (5) امام بخاری کے علاوہ جماعت محدثین نے روایت کی کہ ابوالشعثا کہتے ہیں: ہم ابو ہر ریرہ ر منی الله تعالی عنہ کے ساتھ مسجد میں تھے جب مؤذن نے عصر کی اذان کہی ، اُس وفت ایک شخص چلا گیا اس پر فر مایا: که ''اس نے **ابوالقاسم** صلى الله تعالى عليه وسلم كى نا فرمانى كى -'' ⁽⁶⁾ (درمختار ، ر دالمحتار) .

مَسِعًا ﴾ اذان ہے مرادوفت نماز ہوجانا ہے،خواہ ابھی اذان ہوئی ہویانہیں۔⁽⁷⁾ (درمختار)

مستان ۱۳ 💨 جو شخص کسی دوسری مسجد کی جماعت کامنتظم ہو، مثلاً امام یا مؤذن ہو کہ اُس کے ہونے سے لوگ ہوتے ہیں ورنہ متفرق ہوجاتے ہیں ایسے شخص کواجازت ہے کہ یہاں سے اپنی مسجد کو چلا جائے اگر چہ یہاں اقامت بھی شروع ہوگئی ہو گرجس مسجد کامنتظم ہے اگر وہاں جماعت ہو چکی تواب بیہاں سے جانے کی اجازت نہیں۔⁽⁸⁾ (درمختار ،ر دالمحتار)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٦.
 - 🕰 لعنی ضائع ہونے۔
- "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: قطع الصلاة يكون حراما و مباحا... إلخ، ج٢، ص ٢٠.
 - 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١١٩.
- 5 ····· "سنن ابن ماجه"، أبواب الأذان... إلخ، باب إذا أذن وأنت في المسجد فلا تخرج، الحديث: ٧٣٤، ج١، ص٤٠٤.
- السنن ابن ماجه"، أبواب الأذان... إلخ، باب إذا أذن وأنت في المسجد فلا تخرج، الحديث: ٧٣٣، ج١، ص٤٠٤. "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب في كراهة الخروج من المسجد بعد الأذان،
 - 7 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص١٢.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب في كراهة الخروج من المسجد بعد الأذان، ج۲، ص۲۱۳.

698

ہوتو بھی جانے کی اجازت ہے، جبکہ ظن عالب ہو کہ جماعت سے پہلے واپس آ جائے گا۔ (1) (درمخار)

مستانی 👣 🦫 جس نے ظہریا عشا کی نماز تنہایڑھ لی ہو،اسے مسجد سے چلے جانے کی ممانعت اُس وقت ہے کہا قامت

شروع ہوگئ اقامت سے پہلے جاسکتا ہے اور جب اقامت شروع ہوگئ تو تھم ہے کہ جماعت میں بہنیت نفل شریک ہوجائے اور

مغرب وفجر وعصر میں اُسے حکم ہے کہ سجد سے باہر چلا جائے جب کہ پڑھ کی ہو۔ (2) (درمختار)

مَسِعَالُهُ كِالْبُ اللَّهِ مَقْتَدَى نِهِ وَرُجِد بِ كِيهِ اوراما م الجمي يهلِّهِ بن مين تفاتو دوسراسجده نه بهوا - (3) (در مختار)

مَسِيًّا ﴾ ﴿ عَارِرَكِعِتِ والى نماز جِيهِ ايك ركعتِ امام كے ساتھ ملی تو اُس نے جماعت نہ یائی ، ہاں جماعت كا ثواب ملے گا اگر چەقعد هٔ اخیره میں شامل ہوا ہو بلکہ جسے تین رکعتیں ملیں اس نے بھی جماعت نہ یائی جماعت کا ثواب ملے گا ، مگرجس کی کوئی رکعت جاتی رہی اُسے اتنا تواب نہ ملے گا جتنا اوّل سے شریک ہونے والے کو ہے۔اس مسکلہ کامحصل (4) پیہے کہ کسی نے قتم کھائی فلاں نماز جماعت سے پڑھے گا اور کوئی رکعت جاتی رہی تو قتم ٹوٹ گئی کفارہ دینا ہوگا تین اور دور کعت والی نماز میں بھی ایک رکعت نہ ملی تو جماعت نہ ملی اور لاحق کا حکم پوری جماعت پانے والے کا ہے۔⁽⁵⁾ (درمختار ، راکحتار)

سَبِيّا اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّالَةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّالِي اللَّهُ اللَّالَةُ اللَّهُ ا لہذاامام کے فارغ ہونے کے بعداس رکعت کو پڑھ لے اور اگرامام کو قیام میں پایا اور اس کے ساتھ رکوع میں شریک نہ ہوا تو پہلے رکوع کرلے پھراورافعال امام کے ساتھ کرے اورا گریہلے رکوع نہ کیا بلکہ امام کے ساتھ ہولیا پھرامام کے فارغ ہونے کے بعد ركوع كيا تو بهي موجائے گي مگر بوجيزك واجب كنه كار موا-(6) (درمخار)

نہیں جبیبالبعض جاہل کرتے ہیں بلکہ اس برواجب ہے کہ سجدہ میں امام کی متابعت کرےا گرچہ رپیجدے رکعت میں شار نہ ہوں

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص١٢.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 المرجع السابق، ص٥٦٥.
 - 4.... يعنى خلاصه
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: هل الإساءة دون الكراهة أو أفحش، ج۲، ص۲۲۱.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦٢٣.

گے۔ یو ہیں اگر سجدہ میں ملا جب بھی ساتھ دے پھر بھی اگر سجدے نہ کیے تو نماز فاسد نہ ہوگی یہاں تک کہ اگرامام کے سلام کے اعداس نے اپنی رکعت بڑھ کی نماز ہوگئی مگر ترک واجب کا گناہ ہوا۔ (1) (درمختار)

مستان اس خیر اور کیا ہوکہ امام سے پہلے رکوع کیا مگراس کے سرا ٹھانے سے پہلے امام نے بھی رکوع کیا تو رکوع ہوگیا بشرطیکہ اس نے اس وقت رکوع کیا ہوکہ امام بقدر فرض قراءت کر چکا ہوور نہ رکوع نہ ہوا اور اس صورت میں امام کے ساتھ یا بعدا گر دوبارہ رکوع کر کے گاہوجائے گی ور نہ نماز جاتی رہی اور امام سے پہلے رکوع خواہ کوئی رکن اوا کرنے میں گنہ گار بہر حال ہوگا۔ (درمختار) مستان کی استان کی اس مشارکت (3) ہوگی اگر چہ المستان کی اس کے ساتھ اور یہ تکبیر کہہ کر جھکا تھا کہ امام کھڑا ہوگیا تو اگر حدرکوع میں مشارکت (3) ہوگئی اگر چہ قلیل تو رکعت بل گئی۔ (4) (عالمگیری)

ست بیلے کیا توسلام کے بعد ضروری ہے کہ ایک رکوع و جود امام سے پہلے کیا توسلام کے بعد ضروری ہے کہ ایک رکعت بغیر قراءت پڑھے نہ پڑھی تو نماز نہ ہوئی اوراگرامام کے بعد رکوع و جود کیا تو نماز ہوگئی اوراگر رکوع پہلے کیا اور سجدہ ساتھ تو چاروں رکعتیں بغیر قراءت پڑھے اوراگر رکوع ساتھ کیا اور سجدہ پہلے تو دور کعت بعد میں پڑھے۔ (5) (عالمگیری)

قضا نماز کا بیان

خلینٹ آگے۔ غزوۂ خندق میں حضورا قدس سلی اللہ تعالی علیہ بہم کی چارنمازیں مشرکین کی وجہ سے جاتی رہیں یہاں تک کہ رات کا پچھ حصہ چلاگیا، بلال رضی اللہ تعالی عنہ کو حکم فر مایا: انہوں نے اذان واقامت کہی ،حضور (صلی اللہ تعالی علیہ بہم) نے ظہر کی نماز پڑھی، پھراقامت کہی تو عصر کی پڑھی، پھراقامت کہی تو مغرب کی پڑھی، پھراقامت کہی تو عشاکی پڑھی۔(6)

خلین استان الم احمد نے ابی جُمعُة حبیب بن سباع سے روایت کی ، که غز وهٔ احزاب میں مغرب کی نماز پڑھ کر فارغ موئ نو کا مناز کر ھار فارغ موئ نو کا مناز کر ہوگر فارغ موئ نو کا مناز کر ہوئے تو فر مایا: اُس نے اقامت کہی ،حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے عصر کی پڑھی پھر مغرب کا اعاد ہ کہا۔ (7)

- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: هل الإساءة دون الكراهة أو أفحش،
 ج٢، ص٢٤.

 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١٢٠.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١٠ ص ١٢٠.
 - السنن الكبرى" للبيهقى، كتاب الصلاة، باب الأذان والإقامة للفائتة، الحديث: ١٨٩٢، ج١ص٩٢٥.
 - 🧣 🕡 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي جمعه حبيب بن سباع، الحديث: ١٦٩٧٢، ج ٦، ص٤٢.

💨 📥 پیٹ 👚 🚽 طبرانی و پیہقی ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے راوی ، فر مایا: '' جو شخص کسی نماز کو بھول جائے اور یا داُس وقت

آئے کہ امام کے ساتھ ہوتو پوری کرلے پھر بھولی ہوئی پڑھے پھراُسے پڑھے جس کوامام کے ساتھ پڑھا۔''(1)

خلینٹ 🕜 💝 سیجے بخاری و مسلم میں ہے کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم:'' جونماز سے سوجائے یا بھول جائے توجب

یادآئے پڑھ لے کہ وہی اُس کا وقت ہے۔" (2)

خلینے 🚳 🐣 صحیح مسلم کی روایت میں یہ بھی ہے کہ سوتے میں (اگرنماز جاتی رہی) تو قصور نہیں ،قصور تو بیداری میں

قضانماز كابيان

مسئ كالكريك بلاعذر شرعى نماز قضا كردينا بهت يخت كناه ب،أس پر فرض ب كدأس كى قضا پڑھے اور سے دل سے توبہ كرے، توبه ياجج مقبول سے گناو تاخير معاف ہوجائے گا۔ (4) (درمختار)

سَسَالُ کی جائے، یہ تو بہ جب ہی صحیح ہے کہ قضایرُ ھے۔اُس کو تو ادانہ کرے، تو بہ کیے جائے، یہ تو بنہیں کہ وہ نماز جواس کے ذ متھی اس کا نہ بڑھنا تواب بھی باقی ہے اور جب گناہ سے باز نہ آیا، توبہ کہاں ہوئی۔⁽⁵⁾ (ردالمحتار) حدیث میں فرمایا:'' گناہ پرقائم رہ کراستغفار کرنے والااس کے مثل ہے جواینے رب(عزوجل) سے صلحا⁽⁶⁾ کرتاہے۔''⁽⁷⁾

مَستَانُ ٣﴾ تثمن کاخوف نماز قضا کردیئے کے لیےعذر ہے، مثلاً مسافر کو چوراورڈ اکوؤں کاصحیح اندیشہ ہے تواس کی وجہ ہے وقتی نماز قضا کرسکتا ہے بشرطیکہ کسی طرح نماز بڑھنے برقادر نہ ہواور اگر سوارے اور سواری بربڑھ سکتا ہے اگر چہ چلنے ہی کی عالت میں یا بیٹھ کر بڑھ سکتا ہے تو عذر نہ ہوا۔ یو ہیں اگر قبلہ کومونھ کرتا ہے تو دشمن کا سامنا ہوتا ہے تو جس رُخ بن بڑے بڑھ لے ہوجائے گی ورنه نماز قضا کرنے کا گناہ ہوا۔⁽⁸⁾ (ردالحتار)

مستانی این این اوا نماز پڑھے گی تو بچہ کے مرجانے کا اندیشہ ہے نماز قضا کرنے کے لیے بیعذر ہے۔ بچہ کا سرباہر

- المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ١٣٢٥، ج٤، ص٣٨.
- 2 "صحيح مسلم"، كتاب المساحد... إلخ، باب قضاء الصلاة الفائتة... إلخ، الحديث: ٥ ٣١-(٦٨٤)، ص ٣٤٦.
 - 3 "صحيح مسلم"، كتاب المساجد... إلخ، باب قضاء الصلاة الفائتة... إلخ، الحديث: ٦٨١، ص٣٤٣.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٢٢٦.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧.
 - **ھ**..... يعنى نداق۔
 - ◘ "شعب الإيمان"، باب في معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث: ٧١٧٨، ج٥، ص٤٣٦.
 - 8 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧.
 - 🚙 📵 یعنی دائی۔ بچہ جنانے والی۔

آ گیااور نفاس سے پیشتر وفت ختم ہوجائے گا تواس حالت میں بھی اس کی ماں پرنماز پڑھنافرض ہے نہ پڑھے گی گنہگار ہوگی، کسی برتن میں بچے کا سرر کھ کرجس سے اس کوصد مہ نہ پہنچے نماز پڑھے مگر اس ترکیب سے پڑھنے میں بھی بچے کے مرجانے کا اندیشہ ہو تو

تاخیر معاف ہے بعد نفاس اس نماز کی قضاریہ ھے۔⁽¹⁾ (روالحتار)

مسئل کے جس چیز کابندوں پر حکم ہےاسے وقت میں بجالانے کوادا کہتے ہیں اور وقت کے بعد ممل میں لانا قضاہے میں گار میں کا میں اور وقت کے بعد ممل میں لانا قضاہے میں گار میں کا میں اور میں کا میں میں کا میں اور میں کا میں کی میں اور میں کا میں کی اور میں کی اور میں کا میں کی کا میں اور میں کی کی میں کا میں کی کا میں کی کرچند کی گئی میں کا میں کی گئی کے اور میں کی جو میں کی کرچند کی میں کا میں کی کرچند کی کرچند کی گئی کے اسے وقت میں بھل کی کرچند کی گئی کرچند کی کرچند کی گئی کرچند کی کرچند کی کرچند کی کرچند کی کرچند کی کرچند کی کرچند کرچند کی کرچند کی کرچند کرچند کی کرچند کرچند کی کرچند کرچ

اورا گراس علم کے بجالانے میں کوئی خرابی پیدا ہوجائے تو دوبارہ وہ خرابی دفعہ کرنے کے لیے کرنااعادہ ہے۔ (2) (درمختار) سیکنانی ایک اوقت میں اگر تحریمہ باندھ لیا تو نماز قضانہ ہوئی بلکہ ادا ہے۔ (3) (درمختار) مگرنماز فجر وجعہ وعیدین کہ ان

میں سلام سے پہلے بھی اگر وقت نکل گیا نماز جاتی رہی۔

سوتے میں یا بھولے سے نماز قضا ہوگئی تو اس کی قضا پڑھنی فرض ہے، البتہ قضا کا گناہ اس پڑئییں مگر بیدار ہونے اور یاد آنے پراگر وقت مکروہ نہ ہو تو اُسی وقت پڑھ لے تاخیر مکروہ ہے، کہ حدیث میں ارشاد فر مایا:''جونماز سے بھول جائے یا سوجائے تو یاد آنے پر پڑھ لے کہ وہی اس کا وقت ہے۔''(1) (عالمگیری وغیرہ) مگر دخول وقت کے بعد سوگیا پھر وقت نکل گیا تو قطعاً گنہ کا رہوا جب کہ جاگئے برجیح اعماد یا جگانے والا موجود نہ ہو بلکہ فخر میں وخول وقت سے پہلے بھی سونے کی اجازت نہیں ہو سکتی جب کہ اکثر حصد رات کا جاگئے میں گزراا ورظن ہے کہ اب سوگیا تو وقت میں آئکھ نہ کھلے گی۔

سَعَانَ کُ کُنی سور ہاہے یا نماز پڑھنا بھول گیا تو جے معلوم ہواس پر واجب ہے کہ سوتے کو جگا دے اور بُھو لے ہوئے کو یادولا دے۔ (5) (روالمختار)

سَسَعَانُ 9 ﴾ جب بیاندیشه ہو کہ تنج کی نماز جاتی رہے گی تو بلاضرورت شرعیہ اُسے رات میں دیر تک جاگناممنوع ہے۔ (6) (ردامختار)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧ ـ ٦٣٢.
 - 3 المرجع السابق، ص٦٢٨.
- ♦ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص ١٢١، وغيره.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: يكره السهر اذا خاف فوت الصبح، ج٣،ص ٢٠٠٠.
 - شمس من مغربها، ج٢، ص٣٣.

امیرابلسنت، بانی دعوت اسلامی حضرت علامه مولانا ابوبلال محمد المیاس عطار قادری رضوی دامت برکاتهم العالیه " نماز کے اُحکام" صفیہ 329 پر فرماتے ہیں: میلیصے میلیصے اسلامی بھائیو! نعت خوانیوں ، ذِکر وَفکر کی محفِلوں نیز سنّوں بھرے اجتماعات وغیرہ میں رات دیر تک جاگئے کے بعد سونے کے سبب اگر نماز فجر قصا ہونے کا اندیشہ ہوتو بہ نیت اعتکاف مسجد میں قیام کریں یاوباں سوئیں جہاں کوئی قابل اعتاد اسلامی =

🥌 مَسْتَالُهُ 🔰 ﴾ فرض کی قضافرض ہےاورواجب کی قضاواجباورسنت کی قضاسنت کینی و منتیں جن کی قضا ہے مثلاً فجر کی

سنتیں جبکه فرض بھی فوت ہو گیا ہوا ورظہر کی پہلی سنتیں جب کہ ظہر کا وقت باقی ہو۔⁽¹⁾ (درمختار ، روالحتار)

سَسَعًا الله الله على الله وقت معين نہيں عمر ميں جب پڑھے گا بري الذّ مه ہوجائے گا مگر طلوع وغروب اور زوال

کے وفت کہان وقتوں میں نماز جائز نہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

سَسَالُ ۱۱﴾ مجنون کی حالت جنون جونمازیں فوت ہوئیں اچھے ہونے کے بعدان کی قضا واجب نہیں جبکہ جنون نماز

کے چھوفت کامل تک برابرر ماہو۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سَسَانُ الله جونی معاذ الله مرتکه ہوگیا پھراسلام لایا تو زمانهُ ارتدادی نمازوں کی قضانہیں اور مرتد ہونے سے پہلے زمانهُ اسلام میں جونمازیں جاتی رہی تھیں ان کی قضاواجب ہے۔(4) (ردا کھتار)

سَسَعًا ﴾ الله المحرب مين كوئي شخص مسلمان ہوا اور احكام شرعيه، نماز ، روز ہ ، ز كو ۃ وغير ہا كى اس كواطلاع نه ہوئى تو جب تک وہاں رہاان دِنوں کی قضااس پر واجب نہیں اور جب دارالاسلام میں آگیا تواب جونماز قضا ہوگی اسے پڑ ھنا فرض ہے کہ دارالاسلام میں احکام کانہ جانناعذر نہیں اورکسی ایک شخص نے بھی اسے نماز فرض ہونے کی اطلاع دے دی اگر چہ فاسق یا بچہ یا عورت پاغلام نے تواب جنتی نہ پڑھے گاان کی قضاوا جب ہے، دارالاسلام میں مُسلمان ہوا تو جونماز فوت ہوئی اس کی قضاوا جب ہےاگر چہ کیے کہ مجھےاس کاعلم نہ تھا۔⁽⁵⁾ (ردالحتار)

سَسَعًا ﴾ ایبامریض که اشاره سے بھی نمازنہیں پڑھ سکتا اگر بیحالت پورے چیوونت تک رہی تواس حالت میں جو نمازیں فوت ہوئیں ان کی قضاواجب نہیں ۔ (⁶⁾ (عالمگیری)

بھائی جگانے والاموجود ہو یا اِلارم والی گھڑی ہوجس ہے آنکھ کھل جاتی ہو گھرا یک عدد گھڑی پر بھروسہ نہ کیا جائے کہ نیند میں ہاتھ لگ جانے سے یا یوں بی خراب بوکر بند ہوجانے کا امکان رہتا ہے، دویا حسبِ ضَر ورت زائد گھڑیاں ہوں تو بہتر ہے۔ فقہائے کرام رَحِمَهُمُ اللهُ تعالىٰ فرماتے ہیں،''جب بیاندیشہ ہو کہ منبح کی نماز جاتی رہے گی توبلا ضرورت ثِشر عِیّه اُسے رات دیرتک جا گناممنوع ہے۔''

- ❶ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص٦٣٣.
 - 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الأول في المواقيت وما يتصل بها، الفصل الثالث، ج١، ص٢٥. طلوع وغروب وزوال ہے کیا مراد ہے،اس کا بیان بابالا وقات میں کزرا۔۱۲منہ
 - ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج ١، ص ١٢١.
 - 4..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في بطلان بالختمات و التهاليل، ج٢، ص٧٦.
 - **5** المرجع السابق.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١٠ ص ١٢١.

ﷺ مَسَعَانُ اللهِ ﴿ جَوْمُمَارَجِيسَ فُوتِ ہُونَى اس كى قضاد ليى ہى ريڑھى جائے گى ،مثلاً سفر ميں نماز قضا ہوئى تو چارر كعت والى دو

ہی پڑھی جائے گی اگر چدا قامت کی حالت میں پڑھے اور حالت اقامت میں فوت ہوئی تو حیار رکعت والی کی قضا حیار رکعت ہے

703

اگرچہ سفر میں پڑھے۔البنۃ قضا پڑھنے کے وقت کوئی عذر ہے تو اس کا اعتبار کیا جائے گا،مثلاً جس وقت فوت ہوئی تھی اس وقت کھڑا ہوکر پڑھ سکتا تھااوراب قیام نہیں کرسکتا تو بیٹھ کر پڑھے یااس وقت اشارہ ہی سے پڑھ سکتا ہے تواشارے سے پڑھےاور

صحت کے بعداس کا اعاد نہیں۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار)

سَتَ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ مَازعشا بِإِهِ كَرِيا بِيرٌ هِي مِنْ آنكُهُ كُلِّي تُومعلوم ہوا كه پہلاجيض آيا تواس بروہ عشا فرض نہيں اور اگرا حتلام سے بالغ ہوئی تواس کا تھم وہ ہے جولڑ کے کا ہے، پُو تھٹنے (2) سے پہلے آئکھ کھی تو اُس وقت کی نماز فرض ہے اگر چہ پڑھ

کرسوئی اور پو تھٹنے کے بعد آنکھ کھلی توعشا کااعادہ کرےاور عمرے بالغ ہوئی یعنی اس کی عمریورے پیدرہ سال کی ہوگئ توجس

وقت بورے پندرہ سال کی ہوئی اس وقت کی نماز اس پرفرض ہےا گرچہ پہلے پڑھے چکی ہو۔⁽³⁾ (عالمگیری وغیرہ)

پھروتر پڑھے،خواہ پیسب قضاہوں یابعض ادابعض قضا، مثلاً ظہر کی قضاہو گئی تو فرض ہے کہا سے پڑھ کرعصر پڑھے یاوتر قضاہو گیا

تو أسے پڑھ کر فجر پڑھے اگر یاد ہوتے ہوئے عصر یا وترکی پڑھ لی تو ناجائز ہے۔(4) (عالمگیری وغیرہ)

سَسَعَانُ 19 ﴾ اگرونت میں اتن گنجائش نہیں کہ وقتی اور قضا ئیں سب پڑھ لے تو وقتی اور قضا نمازوں میں جس کی گنجائش ہو پڑھے باتی میں ترتیب ساقط ہے، مثلاً نماز عشا و وتر قضا ہو گئے اور فجر کے وقت میں یانچ رکعت کی گنجائش ہے تو وتر و فجر

یڑھےاور چور کعت کی وسعت ہے تو عشاو فجر پڑھے۔⁽⁵⁾ (شرح وقامیہ)

سَسَالُ 👣 ﴾ ترتیب کے لیے مطلق وقت کا اعتبار ہے ،مستحب وقت ہونے کی ضرورت نہیں توجس کی ظہر کی نماز قضا ہوگئ اورآ فتاب زرد ہونے سے پہلے ظہر سے فارغ نہیں ہوسکتا مگر آ فتاب ڈو بنے سے پہلے دونوں پڑھ سکتا ہے تو ظہر پڑھے

- "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢١. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٠٥٦.
 - 🕰 یعنی منبع صادق ہونے۔
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص ١٢١، وغيره.
- ₫..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص ١٦١، وغيره.
 - 5 "شرح الوقاية"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج١٠ ص٧١٧.
 - 🦽 🍪 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص٦٣٤.

🐉 📶 📢 💎 اگروفت میں اتنی گنجائش ہے کہ مختصر طور پر پڑھے تو دونوں پڑھ سکتا ہے اور عمدہ طریقہ ہے پڑھے تو دونوں نمازوں کی گنجائش نہیں تواس صورت میں بھی ترتیب فرض ہےاور بقدر جواز جہاں تک اختصار کرسکتا ہے کرے۔ (1) (عالمگیری)

مَسِنَاكُ ۲۲﴾ ونت كى تنگى سے ترتیب ساقط ہونااس ونت ہے كہ شروع كرتے ونت ونت ننگ ہو،ا گر شروع كرتے ا وقت گنجائش تھی اور بہ یا دتھا کہاس وقت سے پیشتر کی نماز قضا ہوگئ ہے اور نماز میں طول دیا کہاب وقت تنگ ہو گیا تو بہنماز نہ ہوگی ۔

ہاںا گرتو ڑ کر پھر سے پڑھے تو ہو جائے گی اورا گرقضانمازیاد نتھی اور وقتی نماز میں طول دیا کہ وفت ننگ ہو گیااب یادآئی تو ہوگئی ۔ قطع نہ کر ہے۔<mark>(2)</mark> (عالمگیری)

مَسِيَّالُ ٣ ﴾ وقت تنگ ہونے نہ ہونے میں اس کے گمان کا اعتبار نہیں بلکہ بیددیکھا جائے گا کہ حقیقتاً وقت تنگ تھایا نہیں مثلاً جس کی نمازعشا قضا ہوگئی اور نجر کا وقت تنگ ہونا گمان کر کے فجر کی پڑھ لی پھرییم علوم ہوا کہ وقت تنگ نہ تھا تو نماز فجر نہ ہوئی اب اگر دونوں کی گنجائش ہوتو عشا پڑھ کر پھر فجر پڑھے، ورنہ فجر پڑھ لے اگر دوبارہ پھر خلطی معلوم ہوئی تو وہی تکم ہے یعنی دونوں پڑھ سکتا ہے تو دونوں پڑھے ور نہ صرف فجر پھر پڑھے اورا گر فجر کا اعادہ نہ کیا،عشایڑھنے لگا اور بقدرتشہد بیٹھنے نہ یایا تھا کہ آ فتاب نکل آیا تو فجر کی نماز جو پڑھی تھی ہوگئی۔ یو ہیں اگر فجر کی نماز قضا ہوگئی اور ظہر کے وقت میں دونوں نماز وں کی گنجائش اس کے گمان میں نہیں ہےاورظہریڑھ کی پھرمعلوم ہوا کہ گنجائش ہے تو ظہر نہ ہوئی ، فجریڑھ کرظہریڑھے یہاں تک کہا گرفجریڑھ کرظہر کی ایک رکعت پڑھ سکتا ہے تو فجر پڑھ کرظہر شروع کر ہے۔(3) (عالمگیری)

مَسَعًا ﴾ مُحتَه کے دن فجر کی نماز قضا ہوگئی اگر فجر پڑھ کر جُمُعَة میں شریک ہوسکتا ہے تو فرض ہے کہ پہلے فجر پڑھے اگرچہ خطبہ ہوتا ہواورا گر جُنُعَه نه ملے گا مگرظہر کا وقت باقی رہے گا جب بھی فجریڑھ کرظہریڑھےاورا گراپیا ہے کہ فجریڑھنے میں جُمُعَہ بھی جاتار ہے گااور جُمُعَہ کے ساتھ وقت بھی ختم ہوجائے گاتو جُمُعَہ بڑھ لے پھر فجر پڑھے اس صورت میں ترتیب ساقط ے۔⁽⁴⁾(عالمگیری)

سَسَعَانُهُ ٢٥﴾ اگروفت کی تنگی کے سبب ترتیب ساقط ہوگئ اور وقتی نماز پڑھ رہاتھا کہ اثنائے نماز میں وفت ختم ہوگیا تو تر تیب عود نہ کرے گی یعنی قتی نماز ہوگئی۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری) مگر فجر و جُمُعَہ میں کہ وقت نکل جانے سے یہ خود ہی نہیں ہو ئیں۔

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢٢.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 المرجع السابق.
 - 🤿 🗗 المرجع السابق، ص١٢٣.

ا مسئور المسلم المسلم

مسکان ۲۷ اسپنے کو باوضو گمان کر کے ظہر پڑھی پھر وضو کر کے عصر پڑھی پھر معلوم ہوا کہ ظہر میں وضونہ تھا تو عصر کی ہوگئی صرف ظہر کا اعادہ کرے۔(2)(عالمگیری)

سَسَعَانُ ٢٨ ﴾ فجر کی نماز قضا ہوگئ اور یاد ہوتے ہوئے ظہر کی پڑھ لی پھر فجر کی پڑھی تو ظہر کی نہ ہوئی ،عصر پڑھتے وقت ظہر کی یادتھی مگراپنے گمان میں ظہر کو جائز سمجھا تھا تو عصر کی ہوگئ غرض میہ ہے کہ فرضیّت ترتیب سے جو ناواقف ہے اس کا تھم بھولنے والے کی مثل ہے کہ اس کی نماز ہوجائے گی۔(3) (درمختار)

مسئ الموردوت كى المسئ المورد المورد

مسئل سے اگر بعض پڑھ لی کہ چھ سے کم رہ گئیں تو اور ہوئی تو ان میں سے اگر بعض پڑھ لی کہ چھ سے کم رہ گئیں تو وہ ترتیب عود نہ کر کے لیعنی ان میں سے اگر دوباقی ہوں تو باوجود یاد کے وقتی نماز ہوجائے گی البتہ اگر سب قضائیں پڑھ لیں تو اب پھر صاحب ترتیب ہوگیا کہ اب اگر کوئی نماز قضا ہوگی تو بشرا نظر سابق اسے پڑھ کر وقتی پڑھے ور نہ نہ ہوگی۔ (5) (درمختار، ردامختار)

مَسِعَانُدُ اللهِ عَلَى مِنْ الرَّمِولِنِ ياتنگى وقت كے سبب ترتیب ساقط ہوگئ تو وہ بھی عود نہ کرے گی مثلاً بھول کرنماز پڑھ لی اب یاوآ یا تونماز کا اعادہ نہیں اگر چہوفت میں بہت کچھ گنجائش ہو۔ ⁽⁶⁾ (درمختار)

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي عشر في قضاء الفوائت، ج١٠ ص١٢٢.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٣٩.
- ₫..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص٦٣٧.
 - **5**..... المرجع السابق، ص ٦٤٠.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص ٦٤٠.

🦥 📶 🔭 🐂 اوجود یا داور گنجائش وقت کے وقتی نماز کی نسبت جو کہا گیا کہ نبہ ہوگی اس سے مرادیہ ہے کہ وہ نماز موقو ف ہےاگر وقتی پڑھتا گیااور قضار ہنے دی تو جب دونوں مل کر چھ ہوجا ئیں گی یعنی چھٹی کا وقت ختم ہوجائے گا تو سب صحیح ہوگئیں اور

اگراس درمیان میں قضایڑھ لی تو سب گئیں یعنی فٹل ہو گئیں سب کو پھر سے بڑھے۔⁽¹⁾ (درمختار)

مسئل المستال المستال المستحد وقت قضاياد تقى اوربعض ميں ياد ندر ہى توجن ميں قضاياد ہےان ميں يانچويں كاوفت

ختم ہوجائے لیعنی قضاسمیت چھٹی کا وقت ہوجائے تو اب سب ہو گئیں اور جن کے اداکر تے وقت قضا کی یاد نہ تھی ان کا اعتبار نېي<u>ں _ ((ردالح</u>يار)

سَسَعًا ﴾ عورت کی ایک نماز قضا ہوئی اس کے بعد حیض آگیا تو حیض سے پاک ہوکر پہلے قضا پڑھ لے پھروقتی یڑھے،اگر قضایاد ہوتے ہوئے وقتی پڑھے گی نہ ہو گی جب کہونت میں گنجائش ہو۔⁽³⁾(عالمگیری)

مَسِيَّانُ هَيْ ﷺ جس كے ذمه قضانمازيں ہوں اگر چدان كاپڑھنا جلد سے جلد واجب ہے مگر بال بچوں كى خور دونوش اور ا پنی ضروریات کی فراہمی کے سبب تاخیر جائز ہے تو کاروبار بھی کرے اور جووفت فرصت کا ملے اس میں قضاریہ هتارہے یہاں تک که پوری ہوجا کیں۔(4) (درمختار)

یڑھے کہ بری الذمہ ہوجائے البتہ تراوح اور پارہ رکعتیں سنت مؤکدہ کی نہ چھوڑے۔⁽⁵⁾ (رواکحتار)

سنت کی نماز میں کسی خاص وقت یا دن کی قید لگائی تواسی وقت یا دن میں پڑھنی واجب ہے ورنہ قضا 🛫 🛣 🕳 منت کی نماز میں کسی خاص وقت یا دن کی تبدر گائی تواسی وقت یا دن میں پڑھنی واجب ہے ورنہ قضا ہوجائے گی اورا گرونت یا دن معین نہیں تو گنجائش ہے۔⁽⁶⁾ (درمختار)

مَسِنَا لَهُ ٣٨﴾ ﴿ لَمُ كَانِي ثِمَا زَقْضَا مُوكَّىٰ اوريه يادنبيس كەكۈسى نمازتقى توايك دن كى نمازىي بىر ھے۔ يو ہیں اگر

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص ٦٤١.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص ٦٤٢.
 - 3 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي عشر في قضاء الفوائت، ج١٠ ص ١٢٤.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٢٤٦.
- 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في بطلان الوصية بالختمات و التهاليل، ج٢، ص٦٤٦. تخليل ملّت حضرت علامه مولا نامفتي محمّ خليل خان قادري بركاتي عليه رحمة الرحلن ومُثنى بهتتي **زيور''،**صفحه 240 ير فرماتي بين: 'اوركو لگائ رکھے کہ مولا عز وجل اپنے کرم خاص ہے قضا نماز وں کے شمن میں ان نوافل کا ثواب بھی اپنے خزائن غیب سے عطا فرمادے، جن کے

اوقات میں پیوفضانمازیں پڑھی کئیں۔واللّٰہ ذوالفضل العظیم۔ (''سُنّی بہتی زیور''نُش نمازوں کابیان ہیں۔۲۲۰)

6 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في بطلان الوصية... إلخ، ج٢، ص٦٤٦.

۔ کا ایک دونمازیں دو دن میں قضا ہوئیں تو دونوں دنوں کی سب نمازیں پڑھے۔ یو ہیں تین دن کی تین نمازیں اور پانچ دن کی پانچ

نمازیں۔⁽¹⁾(عالمگیری)

ایک دن عصر کی اورایک دن ظهر کی قضا ہوگئی اور بیا ذہیں کہ پہلے دن کی کون نماز ہے تو جدھر طبیعت جے اسے بہلی قرار دے اور کسی طرف دل نہیں جمتا تو جو چاہے پہلے پڑھے مگر دوسری پڑھنے کے بعد جو پہلے پڑھی ہے بھیرے اور بہتر

اسے پہل اردے اور ی سرک دن بین بمها تو بو چاہتے چہتے پر سے سردوسری پر سے جدد بوچہتے پر کی ہے پیرے اور بہر سیے کہ پہلے ظہر پڑھے پھرعصر پھر ظہر کا اعاد ہ اورا گر پہلے عصر پڑھی پھر ظہر پھرعصر کا اعاد ہ کیا تو بھی حرج نہیں۔(2) سیسٹان سیسٹان کے سیسے عصر کی نماز پڑھنے میں یاد آیا کہ نماز کا ایک سجدہ رہ گیا مگریہ یا دنہیں کہ اسی نماز کارہ گیا یا ظہر کا تو جدهر دل

جےاں پڑمل کرےاورکسی طرف نہ جے تو عصر پوری کر کے آخر میں ایک عجدہ کر لے پھرظہر کا اعادہ کرے پھرعصر کا اوراعادہ نہ کیا تو بھی حرج نہیں ۔⁽³⁾ (عالمگیری)

جس کی نمازیں قضا ہو گئیا تو ارانقال ہو گیا تو اگر وصیّت کر گیا اور مال بھی چھوڑا تو اس کی تہائی سے ہر فرض و و تر کے بدلے نصف صاع گیہوں یا ایک صاع بو تصدق کریں اور مال نہ چھوڑا اور و رافا فدید دینا چاہیں تو کچھ مال اپنی بیاس سے یا قرض لے کرمسکین پر نصدق کر کے اس کے قبضہ میں دیں اور مسکین اپنی طرف سے اسے ہبد کر دے (⁴⁾ اوریہ قبضہ بھی کرلے پھریہ مسکین کو دے ، یو ہیں لوٹ پھیر کرتے رہیں یہاں تک کہ سب کا فدید ادا ہو جائے ۔ اور اگر مال چھوڑا مگر وہ ناکا فی ہے جب بھی یہی کریں اور اگر وصیّت نہ کی اور ولی اپنی طرف سے بطورا حسان فدید دینا چاہے تو دے اور اگر مال کی تہائی بقدر کا فی ہے اور وصیّت بیرکی کہ اس میں سے تھوڑا لے کر لوٹ پھیر کر کے فدید پورا کرلیں اور باقی کو ور ثایا اور کوئی لے لے تو گئرگار ہوا۔ (⁵⁾ (ورمختار ، رومختار ، رومختار ، رومختار ، رومختار ، سے سے سے سورا کر اس میں سے تھوڑا ہے کر لوٹ بھیر کر کے فدید پورا کر لیں اور باقی کو ور ثایا اور کوئی لے لے تو کہ تارہ ہوا۔ (⁵⁾ (ورمختار ، رومختار ، ورمختار ، سال میں سے تھوڑا ہے کر اور کوئی سے بھی کر کے دور اور کوئی سے سے تھوڑا ہے کر اور کھیا ہوں کہ اس میں سے تھوڑا ہے کر اور کیا ہوا۔ (⁵⁾ (ورمختار ، رومختار ، ورمختار)

مَسْعَانُهُ الله من نے ولی کواپنے بدلے نماز پڑھنے کی وصیّت کی اور ولی نے پڑھ بھی لی توبینا کافی ہے۔ یو ہیں اگر مرض کی حالت میں نماز کافدید دیا توادانہ ہوا۔ (⁶⁾ (درمختار)

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي عشر في قضاء الفوائت، ج١٠ ص١٢٢.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 المرجع السابق.
 - 🗗 کیعنی تحفه میں دیدے۔
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في إسقاط الصلاة عن الميت، ج٢،
 عن الميت، ج٢،
 - 6 "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٥٦٠.

🥌 🔜 🚅 💨 بعض ناواقف یوں فدیہ دیتے ہیں کہنماز وں کے فدیہ کی قیمت لگا کرسب کے بدلے میں قر آن مجید

دیتے ہیں اس طرح کل فدیدادانہیں ہوتا پیچش بےاصل بات ہے بلکہ صرف اتناہی ادا ہوگا جس قیت کامصحف شریف ہے۔

مَسِعًا لَهُ ٢٣٥﴾ شافعی المذہب کی نماز قضاہوئی اس کے بعد خفی ہو گیا تو حفیوں کے طور پر قضایر ہے۔(1) (عالمگیری)

سنت المحريج جس کی نمازوں میں نقصان وکراہت ہووہ تمام عمر کی نمازیں پھیرے تواجھی بات ہےاورکوئی خرابی نہ ہو

تو نہ چاہیےاور کرے تو فجر وعصر کے بعد نہ پڑھےاور تمام رکعتیں بھری پڑھےاور وتر میں قنوت پڑھ کرتیسری کے بعد قعدہ کریے پھرایک اورملائے کہ حیار ہوجا [']ئیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

مستان اور سیجھتے ہیں کہ عربی کہ شب قدر یا اخیر جمعہ رمضان میں جماعت سے پڑھتے ہیں اور سیجھتے ہیں کہ عمر بھر کی قضائیں اسی ایک نماز سے اداہو گئیں، یہ باطل محض ہے۔

سجدهٔ سهو کا بیان

خلینٹ 🕽 🦫 حدیث میں ہے:''ایک بارحضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلی کے دور کعت پڑھ کر کھڑے ہو گئے بلیھے نہیں پھر سلام

کے بعد سجد وُسہوکیا۔'' ⁽³⁾اس حدیث کوتر مذی نے مغیرہ بن شعبہ رضی الله تعالیٰ عنہ سے روایت کیا اور فرمایا کہ بیرحدیث حسن صحیح ہے۔

میں آئے آگے واجبات نماز میں جب کوئی واجب بھولے ہے رہ جائے تو اس کی تلافی کے لیے بحد ہُ سہوواجب ہے اس کا طریقہ یہ ہے کہالتحات کے بعد دہنی طرف سلام پھیر کر دوسجدے کرے پھرتشہدوغیرہ پڑھے کرسلام پھیرے۔⁽⁴⁾ (عامهُ کتب)

مستان کا کا استان کا این ہے۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری، درمخار)

سَسَانُ الله اعاده واجب ترک کیا تو سجد هٔ سهوسے وہ نقصان وفع نہ ہوگا بلکہ اعادہ واجب ہے۔ یو ہیں اگر سہواً واجب

ترک ہوااور سجد ہُسہونہ کیا جب بھی اعادہ واجب ہے۔ ⁽⁶⁾ (درمختار وغیرہ) [۔]

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي عشر في قضاء الفوائت، ج١٠ ص١٢٤.
 - 2 المرجع السابق.
- 3 "سنن الترمذي"، ابواب الصلاة، باب ما جاء في الامام ينهض في الركعتين ناسيا، الحديث ٥ ٣٦، ج ١ ص ٠ ٣٨.
 - 4.... "شرح الوقاية"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج١، ص ٢٢٠.
 - و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥١، ٢٥٥.
 - 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سحود السهو، ج١٠ ص ١٢٠. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٥.
 - 🕏 🚯 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٥، وغيره.

🥌 مَسْعَالُةُ 🕜 🌪 كوئي ايباواجب ترك ہوا جو واجباتِ نماز سے نہیں بلکہاس کا دجوب امر خارج سے ہو تو سجدہُ سہو واجب نہیں مثلاً خلاف ِتر تیب قر آن مجید پڑھنا ترک واجب ہے گرموافق ترتیب پڑھناوا جباتِ تلاوت سے ہے واجباتِ نماز سے نهيںلږداسجد هٔ سهونبيل په ⁽¹⁾ (ردامجتار)

مَسَعًا ﴾ ﴿ فَرَضِ مَرَكَ ہوجانے سے نماز جاتی رہتی ہے سجد ہُ سہو سے اس کی تلافی نہیں ہوسکتی للبذا پھر بڑھے اور

سنن ومستحبات مثلاً تعوذ ،تسمیه، ثنا، آمین ،تکبیرات انقالات،تسبیحات کے ترک سے بھی سجد ہ سہونہیں بلکہ نماز ہوگئی۔ (2) (ردالحتار،غنیه) مگراعاده مستحب ہے سہوأ ترک کیا ہویا قصداً۔

سبان کی 💨 سجدہ سہواس وقت واجب ہے کہ وقت میں گنجائش ہوا ورا گرنہ ہومثلاً نماز فجر میں سہووا قع ہوااور پہلاسلام پھیرااور بحدہ ابھی نہ کیا کہ آفتاب طلوع کر آیا تو تجدۂ سہوسا قط ہو گیا۔ یو ہیں اگر قضایۂ ھتا تھااور بحدہ سے پہلے قرص آفتاب زر د ہو گیا سجدہ ساقط ہو گیا۔ جُمُعَہ یا عید کا وقت جاتارہے گاجب بھی یبی حکم ہے۔ (3) (عالمگیری،ردالحتار)

مستان کے بعد یانی گئی تواب ہجدہ سرخبیں ہوسکتا۔ (4) (عالمگیری،ردالحتار)

مَسِعًا لَكُوكِ ﴾ سجدة سهوكا ساقط ہوناا گراس كے فعل ہے ہے تواعادہ واجب ہےور ننہيں۔ (5) (رواكحتار)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجو د السهو، ج٢، ص٥٥٦.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٥٦.
 - و "غنية المتملي"، فصل في سجود السهو، ص٥٥٥.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١٠ ص ١٢٥. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٥.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص٥١٠. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٤٥٦.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٤٥٦.

پیعلامہ شامی کی بحث ہےاوراعلیٰ حضرت قبلہ مرظلہم الاقدس نے حاشیۂ ردالمختار میں بیثابت کیا کہ بہرحال اعادہ ہے۔ "و ہذا نہصہ و النذي يظهر لبي لزوم الاعادة مطلقا لان الصلوة وقعت ناقصة وقد وجب عليه اكمالها وكانت اليه سبيلان متصل بالسجود و متراخ بالاعادة فان عجز عن احدهما ولو بلا صنعه فلم يعجز عن الاخرى و سيأثر العلامة المحشى عن النهر ان المقتدى اذا سهاد ون امامه فانه لايسجد ومقتضى كلا مهم ان يعيد لتمكن الكراهة مع تعذر الجابر ا∞ فان هذا التعذر ايضاً بغير صنعه وقداقره المحشى وهو وان كان ثمه سهوا من النهر والمحشى كما سياتي هنا لكن لاشك انه مقتضى كلامهم هنا." ١٢

رہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ علم ہے یعنی نوافل میں بھی واجب ترک ہونے سے بحدہ سہوواجب ہے۔ (1) (عالمگیری)

مسئل و برنا کر کے دور کعتیں اور ان میں سہو ہوا پھراسی پر بنا کر کے دور کعتیں اور پڑھیں تو سجد ہ سہو کر ہے اور فرض میں سہو ہوا تھا اور اس فرض کے ساتھ سہواً نفل اور فرض میں سہو ہوا تھا اور اس فرض کے ساتھ سہواً نفل ملایا ہو مثلاً چارر کعت پر قعدہ کر کے کھڑ اہو گیا اور پانچویں کا سجدہ کر لیا تو ایک رکعت اور ملائے کہ بید دونفل ہو جا کیں اور ان میں سحدہ سہوکر ہے۔ (درالمختار)

سین از ایک سیدهٔ سہو کے بعد بھی التحیات پڑھنا واجب ہے التحیات پڑھ کر سلام پھیرے اور بہتر یہ ہے کہ دونوں قعدوں میں درود شریف بھی پڑھے۔ (3) (عالمگیری) اور یہ بھی اختیار ہے کہ پہلے قعدہ میں التحیات ودرود پڑھے اور دوسرے میں صرف التحیات۔

سیمتان ۱۱ گیستان ۱۱ گی سیده سیوسے وہ پہلا قعدہ باطل نہ ہوا مگر پھر قعدہ کرنا واجب ہے اور اگر نماز کا کوئی سیدہ باقی رہ گیا تھا قعدہ کے بعداس کو کیا یا سیدہ تلاوت کیا تو وہ قعدہ جاتا رہا۔ اب پھر قعدہ فرض ہے کہ بغیر قعدہ نماز ختم کردی تو نہ ہوئی اور پہلی صورت میں ہوجائے گی مگر واجب الاعادہ۔ (۵) (درمختار وغیرہ)

ن بن بن بن بن بن بن بن بندواجب ترک موئے تو وہی دوسجد سب کے لیے کافی ہیں۔ (⁵⁾ (ردالمختار وغیرہ)

واجبات ِنماز کامفصّل بیان پیشتر ہو چکاہے، مُرتفصیل احکام کے لیےاعادہ بہتر، واجب کی تاخیرر کن کی تقدیم یا تاخیریا اس کومکرر کرنایا واجب میں تغییر یہ سب بھی ترک واجب ہیں۔

مسئ ان المحمد کی ایک آیت بھی رہ کئی یا سورت سے پیش دورکعتوں میں اورنفل و وترکی کسی رکعت میں سورۂ الحمد کی ایک آیت بھی رہ گئی یا سورت سے پیشتر دو بار الحمد پڑھی یا سورت ملانا بھول گیا یا سورت کوفاتحہ پر مقدم کیا یا الحمد کے بعد ایک یا دوچھوٹی آیتیں پڑھ کررکوع میں چلا گیا بھریاد آیا اورلوٹا اور تین آیتیں پڑھ کررکوع کیا تو ان سب صورتوں میں مجد ہ سہوواجب ہے۔ (6) (درمختار، عالمگیری)

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٦.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٢٥٤.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سحود السهو، ج١، ص١٢٥.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٥، وغيره.
 - آردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٥٥، وغيرد.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٦.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص٢٦.

گ 🚅 👔 🕒 – الحمد کے بعد سورت مڑھی اس کے بعد پھرالحمد مڑھی تو سحد ہسہووا جب نہیں ۔ یو ہیں فرض کی بچپلی رکعتوں

میں فاتھے کی تکرار سے مطلقاً سجدۂ سہوواجب نہیں اوراگر پہلی رکعتوں میں الحمد کا زیادہ حصہ پڑھ لیا تھا۔ پھراعادہ کیا تو سجدۂ سہو

واجب ہے۔ (1) (عالمگیری)

سَسَانُ 👣 🐣 الحمد پڑھنا بھول گیااور سورت شروع کر دی اور بقدرایک آیت کے پڑھ لی اب یاد آیا توالحمد پڑھ کر سورت پڑھےاور سجدہ واجب ہے۔ یو ہیںا گرسورت کے پڑھنے کے بعد ہارکوع میں پارکوع سے کھڑے ہونے کے بعد یا دآیا تو پھرالحمد

بڑھ کرسورت بڑھے اور رکوع کا اعادہ کرے اور سحد ہسہو کرے ۔⁽²⁾ (عالمگیری)

مَسِيًّا ﴾ فرض کی تجیبلی رکعتوں میں سورت ملائی تو سجد هُ سهونہیں اور قصداً ملائی جب بھی حرج نہیں مگرا مام کو نہ جا ہیے۔ یو ہیں اگر بچیلی میں الحمد نه پڑھی جب بھی سجد ہ سہونہیں اور رکوع و بچود و قعدہ میں قر آن پڑھا تو سجدہ واجب ہے۔ ⁽³⁾ (عالمگیری)

سَتَانُ 19 ﴾ جوفعل نماز میں مکرر ہیں ان میں ترتیب واجب ہے لہذا خلاف ترتیب فعل واقع ہوتو سجد ہ سہو کرے مثلاً قراءت سے پہلے رکوع کر دیااور رکوع کے بعد قراءت نہ کی تو نماز فاسد ہوگئی کہ فرض ترک ہوگیااورا گررکوع کے بعد قراءت تو کی گر پھررکوع نہ کیا تو فاسد ہوگئی کہ قراءت کی وجہ ہے رکوع جا تار ہااورا گر بقدر فرض قراءت کر کے رکوع کیا مگر واجب قراءت

ادا نہ ہوا مثلاً الممدنہ پڑھی یا سورت نہ ملائی تو تھم یہی ہے کہ لوٹے اور الحمد وسورت پڑھ کر رکوع کرے اور بحدہ سہوکرے اور اگر دوباره رکوع نه کیا تونماز جاتی رہی که پیهلار کوع جاتار ہاتھا۔⁽⁵⁾ (ردامحتار)

میں ایک 🔫 🐣 کسی رکعت کا کوئی سحدہ رہ گیا آخر میں یاد آیا تو سحدہ کرلے پھرالتحات پڑھ کرسحدۂ سہوکرےاور سحدہ کے پہلے جوافعال نماز ادا کیے باطل نہ ہوں گے، ہاں اگر قعد ہ کے بعد وہ نماز والاسحدہ کیا تو صرف وہ قعدہ جاتا رہا۔ (⁶⁾ (عالمگیری، درمختار)

مَسِعًا لَمُ اللهِ تعديل اركان (⁷⁾ بحول گياسجدهٔ سهوواجب ہے۔ ⁽⁸⁾ (عالمگيري)

€ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١٠ ص٢٦.

🕄 المرجع السابق. 2 المرجع السابق.

4 المرجع السابق.

5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٥٦.

الدرالمختار"، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١٠ ص١٢٧.

يعنى ركوع " تجود ، قومها ورجلسه مين ثم ازئم ايك بار ' نسين خن الله' كينے كي مقد ارتظيم نا۔

🔊 🔞 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٧.

🥌 📖 ۴ ۲۲ 🎥 فرض میں قعد ۂ اولی بھول گیا توجب تک سیدھا کھڑ انہ ہوا،لوٹ آئے اور سجد ہُ سہزنہیں اورا گرسیدھا کھڑا ا

ہو گیا تو نہلوٹے اور آخر میں بحدہ سہوکرے اور اگر سیدھا کھڑا ہوکر لوٹا تو سجدہ سہوکرے اور سیح مذہب میں نماز ہوجائے گی مگر کنہ کار موالہذا تھم ہے کہ اگرلوٹے تو فوراً کھڑا ہوجائے۔⁽¹⁾ (درمختار،غنیہ)

اگرمقتذی بھول کر کھڑا ہوگیا تو ضرورہے کہ لوٹ کہ آوے، تا کہ امام کی مخالفت نہ ہو۔⁽²⁾ (ورمختار) سَسَالُ ٢٥٠ ﴾ قعد هٔ اخيره بھول گيا توجب تک اس رکعت کاسجدہ نہ کيا ہولوٹ آئے اور سجدهٔ سہوکرے اور اگر قعد هُ اخيره ميں

بیٹھاتھا،مگر بقدرتشہدنہ ہواتھا کہ کھڑا ہوگیا تولوٹ آئے اوروہ جو پہلے کچھ دیرتک بیٹھاتھامحسوب ہوگا یعنی لوٹنے کے بعد جتنی دیرتک بینها بیاور پہلے کا قعدہ دونوں مل کرا گر بقذرتشہد ہو گئے فرض ادا ہو گیا مگر بجدۂ سہواس صورت میں بھی واجب ہےاورا گراس رکعت کا سجدہ کرلیا توسجدہ سے سراٹھاتے ہی وہ فرض نفل ہو گیالہذاا گر چاہے تو علاوہ مغرب کے اورنماز وں میں ایک رکعت اور ملالے کہ شفع پوراہوجائے اورطاق رکعت ندرہےاگر چہوہ نماز فجریاعصر ہومغرب میں اور نہ ملائے کہ جار یوری ہوگئیں۔⁽³⁾ (درمختار ، روالمحتار) سَسَعًا ﴾ کفل کا ہر قعدہ قعدہ اخیرہ ہے لینی فرض ہے اگر قعدہ نہ کیا اور بھول کر کھڑا ہو گیا تو جب تک اس رکعت کا

سجدہ نہ کر لےلوٹ آئے اور سجد ہ سہوکر ہے اور واجب نماز مثلًا وتر فرض کے حکم میں ہے،الہٰذا وتر کا قعد ہُ اولی بھول جائے تو وہی ۔

تھم ہے جوفرض کے قعد ہُ اولی بھول جانے کا ہے۔⁽⁴⁾ (درمختار)

مَسِيًّا اللَّهُ ٢٦﴾ اگر بقذرتشهد قعد هٔ اخیره کرچکا ہے اور کھڑا ہو گیا تو جب تک اس رکعت کاسجدہ نہ کیا ہولوٹ آئے اور سجد ہ سہوکر کے سلام پھیرد ہے اورا گرقیام ہی کی حالت میں سلام پھیردیا تو بھی نماز ہوجائے گی مگرسنت ترک ہوئی اوراس صورت میں اگرامام کھڑا ہوگیا تو مقتدی اس کا ساتھ نہ دیں بلکہ بیٹھے ہوئے انتظار کریں اگرلوٹ آیا ساتھ ہولیں اور نہلوٹا اور سجدہ کرلیا تو مقتذى سلام چھيرديں اورامام ايک رکعت اور ملائے که بيدوففل ہوجا ئيں اور تجد هُ سہوکر کےسلام چھيرے اور بيدور کعتيں سنت ظہر یا عشا کے قائم مقام نہ ہوں گی اوراگران دورکعتوں میں کسی نے امام کی اقتدا کی بعنی اب شامل ہوا تو یہ مقتدی بھی چھ پڑھے اور اگراس نے توڑ دی تو دورکعت کی قضایڑ ھے اوراگرامام چوتھی پر نہ بیٹھا تھا تو یہ مقتذی چھرکعت کی قضایڑ ھے۔اوراگرامام نے ان ر کعتوں کو فاسد کر دیا تو اس پرمطلقاً قضانہیں _⁽⁵⁾ (درمختار ، ردالمحتار)

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص ٦٦١.
 - 2 "الدرالمختار"، المرجع السابق، ص٦٦٣.
- 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج١، ص٦٦٤.
 - 4 "الدرالمختار"، المرجع السابق، ص ٦٦١.
- 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٦٩، ٦٦٩.

🕵 مسئلہ 🕰 🚽 چقی پر قعدہ کر کے کھڑا ہو گیا اور کسی فرض پڑھنے والے نے اس کی اقتدا کی تو اقتد اسیح نہیں اگر چہلوٹ

آیااور قعدہ نہ کیا تھا توجب تک پانچویں کا سجدہ نہ کیاا قتد اکر سکتاہے کہ ابھی تک فرض ہی میں ہے۔ ⁽¹⁾ (ردالمختار)

مسئ الکروہ ۔ تحریمی سر (2) درمیتاں)

تحریمی ہے۔⁽²⁾(درمختار) مسئ <mark>ان ۲۹ ﷺ سمافر نے سجد ۂ سہو کے بعدا قامت کی نیت کی تو جار پڑھنا فرض ہے اور آخر میں سجد ۂ سہو کا اعاد ہ</mark>

 $(0.05^{(3)}(0.05^{(3)})$

تعدهٔ اولی میں تشہد کے بعدا تناپڑھا اَللّه مَّم صَلِّ عَلَی مُحَمَّدٍ تو سجدهٔ سہوواجب ہاس وجہ سے نہیں کہ درودشریف پڑھا بلکہ اس وجہ سے کہ تیسری کے قیام میں تاخیر ہوئی تو اگراتی دیر تک سکوت کیا جب بھی سجدہ سہوواجب ہے جیسے قعدہ ورکوع و سجود میں قرآن پڑھنے سے سجدہ سہوواجب ہے ، حالا تکہ وہ کلام الہی ہے۔ امام اعظم منی الله تعالی عنہ نے بی صلی الله تعالی علیہ وہ بلم کوخواب میں ویکھا ، حضور (صلی الله تعالی علیہ بلم) نے ارشاد فرمایا: '' درود پڑھنے والے پرتم نے کیوں سجدہ واجب بتایا؟''عرض کی ، اس لیے کہ اس نے بھول کر پڑھا ، حضور (صلی الله تعالی علیہ بلم) نے تحسین فرمائی۔ (1) (درمختار ، ردالمحتار وغیر ہما)

سَمَعَالُهُ اللهِ مَنْ تَعْدِه مِينِ الرَّتشهد مِينِ سے پچھرہ گيا، تجدهُ سهوواجب ہے، نمازنقل ہو يافرض - (5) (عالمگيري) سَمَعَالُهُ اللهِ عَنْ دور کعتوں کے قيام ميں الحمد کے بعد تشہد پڑھا سجدہُ سہو واجب ہے اور الحمد سے پہلے بڑھا تو

نہیں۔⁽⁶⁾(عالمگیری)

مستان سی پیلی رکعتوں کے قیام میں تشہد پڑھا تو تجدہ واجب نہ ہوااورا گر قعدہُ اولیٰ میں چند بارتشہد پڑھا تجدہ واجب ہوگیا۔⁽⁷⁾(عالمگیری)

مَسِعًا اللهُ ٣٢ ﴾ تشهد پڑھنا بھول گيا اورسلام پھير ديا پھرياد آيا تو لوٺ آئے تشهد پڑھے اور بجد ہُ سہو کرے۔ يو ہيں اگر

- "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٩٦٩.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص ٦٧٠.
 - 3 المرجع السابق.
- 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٧، وغيرهما.
 - 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٧.
 - 6 المرجع السابق.
 - 🥱 🗗 المرجع السابق.

تشهدی جگه الحمد پاهی تجده واجب هو گیا۔⁽¹⁾ (عالمگیری)

کومقدم یا مؤخر کیا توان سب صورتوں میں تجدہ سہوداجب ہے۔(²⁾ (عالمگیری)

مسئ الآس و تنوت یا تکبیر قنوت لیمنی قراءت کے بعد قنوت کے لیے جوتکبیر کہی جاتی ہے بھول گیا سجد کا سہوکرے۔ (3) (عالمگیری)

مسئان سکار میں کہ سب تکبیری یا بعض بھول گیا یا زائد کہیں یا غیر کل میں کہیں ان سب صورتوں میں سجد ہ سہو واجب ہے۔(4) (عالمگیری)

مسئان سروق رکوع میں شامل ہوا تو رکوع میں چلا گیا تو لوٹ آئے اور مسبوق رکوع میں شامل ہوا تو رکوع میں شامل ہوا تو رکوع ہیں تاہم ہوا تو رکوع ہیں تاہم ہوا تو رکوع ہول گیا تو سجد ہُ سہووا جب ہے اور پہلی رکعت کی تکبیر رکوع بھول گیا تو سجد ہُ سہووا جب ہے اور پہلی رکعت کی تکبیر رکوع بھول گیا تو سجد ہُ سہووا جب ہے اور پہلی رکعت کی تکبیر رکوع بھول اون نہیں۔ (6) (عالمگیری)

مستان وس گھی وعیدین میں سہووا قع ہوااور جماعت کثیر ہوتو بہتریہ ہے کہ بحد ہ سہونہ کرے۔ (۲) (عالمگیری، ردالحتار) مسیعان وس کے جہری نماز میں بفذر جوازنماز یعنی ایک آیت آہت ہوشی باسری میں جبرے تو سحدہ سہوواجب

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١٠ ص١٢٧.
 - 2 المرجع السابق.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١٠ ص١٢٨.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١٠ ص١٢٨.
 - 5 المرجع السابق.
 - 6..... المرجع السابق.
- 7 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سحود السهو، ج١، ص١٢٨. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود السهو، ج٢، ص٢٧٥.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سحود السهو، ج١٠ ص١٢٨.
 و"الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود السهو، ج٢، ص٢٥٦.
 - 🧝 🤨 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٢٥٧.

ازردالحتار) المسئالة (سيسم المستارة) وازيع بره ها تو خلاف سنت بهوا مگرسجدهٔ سهوواجب نهيس (⁽¹⁾ (روالحتار)

سَسَعَالُهُ ٢٣﴾ ﴿ قراءت وغيره کسي موقع پرسو چنے لگا كه بقدرايك ركن يعني تين بارسجان الله كہنے كے وقفه ہواسجد هُ سہو

واجب ہے۔(2)(ردالحتار)

سیکان کی سے امام ہے سہو ہوا اور سجد ہ سہو کیا تو مقتدی پر بھی سجدہ واجب ہے اگر چہ مقتدی سہو واقع ہونے کے بعد جماعت میں شامل ہوا اور اگرامام سے سجدہ ساقط ہوگیا تو مقتدی ہے بھی ساقط پھراگرامام سے ساقط ہونااس کے سی فعل کے سبب

ہو تو مقتدی پر بھی نماز کا اعادہ واجب ورینہ معاف_⁽³⁾ (روالمحتار)

مسئل کا سام کا سے بحالت ِاقتراسہووا قع ہوا تو سجدہ سہووا جب نہیں۔ (⁴⁾ (عامهٔ کتب)

مسئل اور مابقی پڑھنے کھڑا ہوگیا تو آخر میں سجدہ سہوکرے اگر چہاس کے شریک ہونے سے پہلے سہو ہوا ہواورا گرامام کے ساتھ سجدہ نہ کیااور مابقی پڑھنے کھڑا ہوگیا تو آخر میں سجدہ سہوکرے اورا گراس مسبوق سے اپنی نماز میں بھی سہو ہوا تو آخر کے

یمی تجدے اس سہوامام کے لیے بھی کافی ہیں۔⁽⁵⁾(عالمگیری،ردالحتار)

سیک کی جانتا ہے کہ اگر سیرق نے اپنی نماز بچانے کے لیے امام کے ساتھ سجدہ سہونہ کیا یعنی جانتا ہے کہ اگر سجدہ کرے گا تو نماز جاتی مثل نماز فجر میں آفتاب طلوع ہوجائے گا یا مجمعے میں وقت عصر آ جائے گا یا معذور ہے اور وقت ختم ہوجائے گا یا موزہ پر مسلح کی مدّت گذر جائے گی تو ان صور توں میں امام کے ساتھ سجدہ نہ کرنے میں کراہت نہیں۔ بلکہ بفتر رتشہد بیٹھنے کے بعد کھڑا ہوجائے۔ (6) (غند)

مسئان ۱۸۸۶ - مسبوق نے امام کے سہومیں امام کے ساتھ سجد ہ سہوکیا پھر جب اپنی پڑھنے کھڑا ہوااوراس میں بھی سہوہوا تواس میں بھی محد ہ سہوکر ہے۔⁽⁷⁾ (درمختار وغیرہ)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٨.
 - 2 المرجع السابق، ص٦٧٧.
 - 3 المرجع السابق، ص١٥٨.
- ۲۰۰۰ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ۲۰، ص ۲۰.
 اوراعاده هي اس كزمنيس كما حققناه في فتاو نا ١٢منه
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سحود السهو، ج١، ص١٢٨.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود السهو، ج٢، ص٩٥٦.
 - 6 "غنية المتملى"، فصل في سجود السهو، ص٢٦٦.
 - 🧳 🗗 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٩٥٦، وغيره .

ميثن شن: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) 🚅

🕏 📶 ۴ مسئل 👣 🐣 مسبوق کوامام کے ساتھ سلام چھیرنا جائز نہیں اگر قصداً چھیرے گا نماز جاتی رہے گی اورا گرسہواً پچھیرااور سلام امام کے ساتھ معاً بلا وقفہ تھا تو اس پر سجدہ سہونہیں اور اگر سلام امام کے بچھ بھی بعد پھیرا تو کھڑا ہو جائے اپنی نماز پوری کرکے تحد ہسپوکر ہے۔ ⁽¹⁾ (درمختاروغیرہ)

مسئلہ 🐠 🚽 امام کے ایک مجدہ کرنے کے بعد شریک ہوا تو دوسرا مجدہ امام کے ساتھ کرے اور پہلے کی قضانہیں اورا گر دونوں سجدوں کے بعد شریک ہوا توامام کے سہوکااس کے ذمہ کوئی سجدہ نہیں۔(2) (روالحتار)

نے اس رکعت کا تجدہ نہ کیا ہولوٹ آئے اور امام کے ساتھ تجدہ کرے جب امام سلام پھیرے تواب اپنی پڑھے اور پہلے جو قیام و قراءت ورکوع کر چکاہےاس کا شارنہ ہوگا بلکہ اب پھر سے وہ افعال کرے اورا گرنہ لوٹا اورایٹی پڑھ لی تو آخر میں بجدہ سہوکرے اورا گراس رکعت کاسحدہ کر جاکا ہے تو نہ کو ٹے ، کو ٹے گا تو نماز فاسد ہوجائے گی۔⁽³⁾ (عالمگیری)

ست کی آخرنماز میں سجدہ سہوکرے گا اورامام کے سہو ہے لائل پر بھی سجدہ سہو واجب ہے مگر لائل اپنی آخرنماز میں سجدہ سہو کرے گا اورامام کے ساتھوا گرسحدہ کیا تو آخر میں اعادہ کریے۔ ⁽⁴⁾(درمختار)

مَسِيعًا لَيُ الْكِسْمِينِ ﴿ الْمُرتِينِ رَكِعتِ مِينِ مسبوقِ موااورا بك ركعتِ مِين لاحق تو ايك ركعت بلاقر اءت برُّ ه كربيتُ اورتشهد برُّ ه کر تجدہ سہوکر ہے پھرایک رکعت بھری پڑھ کر بیٹھے کہ بیاس کی دوسری رکعت ہے پھرایک بھری اورایک خالی پڑھ کرسلام پھیرد ہے اورا گرایک میںمسبوق ہےاور تین میں لاحق تو تین بڑھ کر تحد ہ سہوکر ہے پھرایک بھری بڑھ کرسلام پھیرد ہے۔ ⁽⁵⁾(ردالمحتار)

سن کے ساتھ کو کرے پھرا بنی دو پڑھے اور اہام ہے سہو ہوا تو اہام کے ساتھ محبدۂ سہوکرے پھرا بنی دو پڑھے اور ان میں بھی سہو ہوا تو آخر میں بھر سحدہ کرے ۔ ⁽⁶⁾ (ردالحتار)

مَسِيعًا الله الله الله الخوف ميں (جس كابيان اور طريقه ان شاء الله تعالى فدكور ہوگا) سہو ہوا تو امام كے ساتھ

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٩٥٦، وغيره. و "الفتاوي الرضوية"، ج٧، ص٢٣٨.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود السهو، ج٢، ص٥٩.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سحود السهو، ج١٠ ص١٢٨.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص ٦٦٠.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص ٦٦٠.
 - 6 المرجع السابق.

وسرا گروه مجدهٔ سهوکرے اور بہلا گروه اسوقت کرے جب این نمازختم کر چکے۔(1) (عالمگیری)

سنا الم کوحدث ہوااور پیشتر سہوبھی واقع ہو چکا ہےاوراس نے خلیفہ بنایا تو خلیفہ سہوکرےاورا گرخلیفہ کو بھی حالت خلافت میں سہوہوا تو وہی سجد ہے افی ہیں اور اگرامام سے تو سہونہ ہوا مگر خلیفہ سے اس حالت میں سہوہوا تو امام ربھی سجدهٔ سہوواجب ہے اورا گرخلیفہ کاسہوخلافت سے پہلے ہوتو سجدہ واجب نہیں نداس پر ندامام پر۔(2) (عالمگیری)

مَسِيَّانُ 💪 🐣 جس برسجدہ سہوواجب ہےا گرسہوہونا یاد نہ تھا اور بہ نیت قطع سلام پھیر دیا تو ابھی نماز سے باہر نہ ہوا بشرطيكة عدة سهوكر لے، البذاجب تك كلام ياحدث عد، يامسجد سےخروج يا اوركوئي فعل منافى نماز ندكيا مواسے تكم ہے كہ تجده كر لے اورا گرسلام کے بعد سجد ہ سہونہ کیا تو سلام پھیرنے کے وقت سے نماز سے باہر ہو گیا، لہٰذا سلام پھیرنے کے بعدا گرکس نے اقتدا کی اورامام نے سجدۂ سہوکرلیا تو اقتراضیح ہے اور سجدہ نہ کیا توضیح نہیں اورا گریادتھا کہ سہوہوا ہے اور بہنیت قطع سلام پھیردیا توسلام پھیرتے ہی نماز سے باہر گیا اور سجدۂ سہونہیں کرسکتا، اعادہ کرےاورا گراس نے غلطی سے سجدہ کیا اوراس میں کوئی شریک ہوتو اقتداحيخنهين_(3) (درمختار،ردامختار)

مسئل ۵۸ ﴾ سجدہ تلاوت باقی تھا یا قعدۂ اخیرہ میں تشہد نہ پڑھا تھا مگر بقدر تشہد بیٹھ چکا تھا اور یہ یاد ہے کہ مجدۂ تلاوت یاتشہد باقی ہے گرفصداً سلام پھیردیا تو سجدہ ساقط ہو گیا اور نماز سے باہر ہو گیا،نماز فاسد نہ ہوئی کہ تمام ارکان ادا کر چکا ہے مگر بوجہ ترک واجب مکروہ تحریمی ہوئی۔ یو ہیں اگراس کے ذمہ بحدہ سہو و بحدہ تلاوت ہیں اور دونوں یاد ہیں یا صرف بحدہ تلاوت یاد ہےاورقصداً سلام پھیردیا تو دونوں ساقط ہو گئے اگر سجد ہُ نماز وسجد ہُ سہود ونوں باقی تھے یا صرف سجد ہُ نماز رہ گیا تھااور سجدهٔ نمازیاد ہوتے ہوئے سلام پھیردیا تو نماز فاسد ہوگئی اورا گرسجدۂ نماز وسجدۂ تلاوت باقی تتھاور سلام پھیرتے وقت دونوں یا د تھیاایک جب بھی نماز فاسد ہوگئی۔⁽⁴⁾ (ردالحتار)

مَسِيَّاكُ ٩٥﴾ ﴿ صحيدهٔ نماز پاسجدهٔ تلاوت باقی تھا پاسجدهٔ سهوکرنا تھا اور بھول کرسلام پھیرا تو جب تک مسجد سے باہر نہ ہوا کر لےاورمیدان میں ہو تو جب تک صفوں سے متحاوز نہ ہوایا آ گے کوسحدہ کی جگہ سے نہ گز را کر لے۔ ⁽⁵⁾ (درمختار ، ردامختار)

مَسِنَاكُ ١٠﴾ ﴿ ركوع ميں ياد آيا كەنماز كاكوئى سجدہ رہ گيا ہےاور و ہيں ہے سجدہ كو چلا گيايا سجدہ ميں ياد آيا اورسرا ٹھا كروہ

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١٠ ص١٢٨.
 - 2 المرجع السابق، ص ١٣٠.
 - ③ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٣.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجو د السهو، ج٢، ص ٦٧٣.
 - 🚙 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٤.

🥞 سجدہ کرلیا تو بہتریہ ہے کہاس رکوع وجود کا اعادہ کرےاورسجدۂ سہوکرےاورا گراس وفت نہ کیا بلکہ آخرنماز میں کیا تواس رکوع و 🍣

سجود کااعا ده نهین سحد هٔ سهوکرنا هوگا به ⁽¹⁾ (درمختار)

سنتان 🔰 💨 ظہری نماز پڑھتا تھااور بیخیال کر کے کہ چار پوری ہوگئیں دور کعت پرسلام پھیردیا تو چار پوری کر لےاور

سجدهٔ سہوکرے اور اگریپر کمان کیا کہ مجھ پر دو ہی رکعتیں ہیں ، مثلاً اپنے کومسافر تصور کیا یا پیر کمان ہوا کہ نماز جعہ ہے یا نیامسلمان ہے سمجھا کہ ظہر کے فرض ووہی ہیں یا نمازعشا کوتراویج تصور کیا تو نماز جاتی رہی۔ یو ہیں اگر کوئی رکن فوت ہو گیا اور یاد ہوتے ہوئے سلام پھیر دیا، تو نماز گئی۔⁽²⁾ (درمختار)

سن المرابع الله الله المرابعة ميں شک ہو، مثلاً تين ہوئيں يا حيار اور بلوغ کے بعديد پہلا واقعہ ہے تو سلام پھير كريا کوئی عمل منافی نماز کر کے توڑ دے یاغالب گمان کے ہموجب یڑھ لے مگر بہرصورت اس نمازکوسرے سے بیڑھے مض توڑ نے کی نیت کافی نہیں اورا گرییشک پہلی بارنہیں بلکہ پیشتر بھی ہو چکاہے تواگر غالب گمان کسی طرف ہو تواس برعمل کرے ورنہ کم کی جانب کواختیار کرے یعنی تین اور حیار میں شک ہو تو تین قرار دے، دواور تین میں شک ہو تو دو، وعلیٰ هذ االقیاس اور تیسری چوتھی دونوں میں قعدہ کرے کہ تیسری رکعت کا چوتھی ہونامحتل ہے اور چوتھی میں قعدہ کے بعد سجدہ سہوکر کے سلام پھیرے اور گمان غالب کی صورت میں سجرہ سہز بیں مگر جبکہ سوینے میں بقدرایک رکن کے وقفہ کیا ہو تو سجدہ سہووا جب ہوگیا۔ (3) (مدایہ وغیر ہا)

🛁 🐉 🤏 نماز بوری کرنے کے بعد شک ہوا تواس کا کچھاعتیار نہیں اورا گرنماز کے بعد یقین ہے کہ کوئی فرض رہ گیا مگراس میں شک ہے کہ وہ کیا ہے تو پھر سے پڑھنافرض ہے۔⁽⁴⁾ (فتح ،ردالحتار)

سَنَا اللَّهُ ١٣٧﴾ ظہریر ہے کے بعدایک عادل شخص نے خبر دی کہ تین رکھتیں پڑھیں تواعادہ کرےاگر جداس کے خیال میں پیجبرغلط ہواورا گر کہنے والاعادل نہ ہو تو اس کی خبر کا اعتبار نہیں اورا گرمصلّی کوشک ہواور دوعادل نے خبر دی تو ان کی خبر برعمل کرناضروری ہے۔ ⁽⁵⁾(عالمگیری وغیرہ)

مستان 10 ﴾ اگر تعدا در کعات میں شک نہ ہوا مگر خوداس نماز کی نسبت شک ہے مثلاً ظہر کی دوسری رکعت میں شک ہوا

- 1 "الدرالمختار و رد المحتار"، كتاب الصلاة، المسائل الاثنا عشرية، ج٢، ص٤٤٤.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٤.
 - 3 "الهداية"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج١، ص٧٦، وغيرها.
 - 4 "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج١، ص٥٥.
- و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٥٧٥. "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٣١، وغيره.

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلامي) 🛒

کے بیعصر کی نماز پڑھتا ہوں اور تیسری میں نفل کا شبہ ہوااور چوتھی میں ظہر کا تو ظہر ہی ہے۔⁽¹⁾ (روالمختار)

مسئل السرائي الله تشہد کے بعد بیشک ہوا کہ تین ہوئیں یا جاراورا یک رکن کی قدر خاموش رہااور سوچتارہا، پھریفین ہوا کہ

جار ہوگئیں توسجدۂ سہوداجب ہےاورا گرایک طرف سلام پھیرنے کے بعداییا ہوا تو پچھنہیں اورا گراہے حدث ہواوروضو کرنے میں میں میں ت

گیاتھا کہ شک واقع ہوااور سوچنے میں وضو ہے کچھ دیر تک رُک رہا تو سجدہ سہودا جب ہے۔ (2) (عالمگیری) مسئ ان کا ہے۔ پیشک واقع ہوا کہ اس وقت کی نماز پڑھی یانہیں، اگر وقت باقی ہے اعادہ کرے ورنہ نہیں۔ (3)

مَسِنَا لَهُ 10 ﴾ شک کی سب صورتوں میں سجد ہُ سہو واجب ہے اور غلبہ ُ ظن میں نہیں مگر جب کہ سوچنے میں ایک رُکن کا وقفہ ہو گیا تو واجب ہو گیا۔ ⁽⁴⁾ (درمختار)

سَسَعَانُ 19 ﴾ بے وضوہونے یامسے نہ کرنے کا یقین ہوااوراسی حالت میں ایک رُکن ادا کرلیا تو سرے سے نماز پڑھے اگرچہ پھریفین ہوا کہ دینے میں ایک رُکن ادا کرلیا تو سرے سے نماز پڑھے اگرچہ پھریفین ہوا کہ وضوفھا اور سے کیا تھا۔ (5) (عالمگیری)

ا حرچہ پڑیاں اور موسا ورس میں طاحت کر مالی میں ہے۔ مسئ انگوٹ کی جسے نماز میں شک ہوا کہ قیم ہے یا مسافر تو جار پڑھے اور دوسری کے بعد قعدہ ضروری ہے۔ (⁶⁾ (عالمگیری)

مستان (۲) هم اور تیسری میں شک ہوا کہ پہلی ہے یا دوسری یا چوتھی اور تیسری میں شک ہوا اور میں شک ہوا اور میں شک ہوا اور میں شک ہوا اور مقتدیوں کی طرف نظر کی کہوہ کھڑے ہول تو کھڑا ہوجاؤں بیٹھیں تو بیٹھ جاؤں تو اس میں حرج نہیں اور سجد ہُ سہو واجب نہ ہوا۔(8) (عالمگیری)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٦.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨.
- الفتاوى الهندية "، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٣٠.
 - ۱۲۷۸ سجود السهو، ج۲، ص۸۲۸.
- 5..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٣١.
 - 6 المرجع السابق.
 - 7 المرجع السابق، وغيره.
 - 🦔 🔞 المرجع السابق.

نماز مریض کا بیان

کریٹ ایک میں سوال کیا، فرمایا: '' کھڑے ہوکر پڑھو، اگر استطاعت نہ ہوتو بیٹے کر اور اس کی بھی استطاعت نہ ہوتو لیٹ کر، اللہ تعالی اللہ تعالی کی میں سوال کیا، فرمایا: '' کھڑے ہوکر پڑھو، اگر استطاعت نہ ہوتو بیٹے کر اور اس کی بھی استطاعت نہ ہوتو لیٹ کر، اللہ تعالی کسی نفس کو تکلیف نہیں دیتا مگر اتی کہ اس کی وسعت ہو۔'' (1) اس حدیث کو سلم کے سواجماعت محدثین نے روایت کیا۔

کو تشریف لے گئے، دیکھا کہ تکیہ پرنماز پڑھتا ہے لیمن جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی، کہ نبی سلی اللہ تعالی علہ وسلم ایک مریض کی عیادت کو تشریف لے گئے، دیکھا کہ تکیہ پرنماز پڑھتا ہے لیمن تجرہ کرتا ہے اسے بھینک دیا، اس نے ایک کلڑی لی کہ اس پرنماز پڑھے، اگر استطاعت ہو، ور نہ اشارہ کرے اور سجدہ کورکوع سے بست کرے۔ (2) اسے بھی لے کر بھینک دیا اور فرمایا: زبین پرنماز پڑھے اگر استطاعت ہو، ور نہ اشارہ کرے اور سجدہ کورکوع سے بست کرے۔ (2) ہوتا ہا کہ تا ہوگا یا مرض برٹھ جائے گا یا در بیس اچھا ہوگا یا چگر آتا ہے یا کھڑے ہوکر پڑھنے سے قطرہ آئے گا یا بہت شدید در دنا قابل بر داشت پیدا ہوجائے گا یا در بیس اچھا ہوگا یا چگر آتا ہے یا کھڑے ہوکر پڑھے سے قطرہ آئے گا یا بہت شدید در دنا قابل بر داشت پیدا ہوجائے گا تو ان سب صورتوں بیس بیٹھ کررکوع و تجود کے ساتھ نماز پڑھے۔ (3) (درمخار) اس کے متعلق بہت سے مسائل فرائض ہوجائے گا تو ان سب صورتوں بیس بیٹھ کررکوع و تجود کے ساتھ نماز پڑھے۔ (3) (درمخار) اس کے متعلق بہت سے مسائل فرائض

سَسَعَالُهُ اللّٰهِ الرّابِنِيةِ آپ بیرهٔ بھی نہیں سکتا مگراڑ کا یاغلام یا خادم یا کوئی اجنبی شخص وہاں ہے کہ بٹھادے گا تو بیٹھ کر پڑھنا ضروری ہے اورا گربیٹھانہیں رہ سکتا تو تکیہ یا دیواریا کسی شخص پڑ ٹیک لگا کر پڑھے بہ بھی نہ ہو سکے تولیٹ کر پڑھے اور بیٹھ کر پڑھنا ممکن ہو تولیٹ کرنماز نہ ہوگی۔(4) (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

مسئان سے بیٹھ کر پڑھنے میں کسی خاص طور پر بیٹھنا ضروری نہیں بلکہ مریض پر جس طرح آسانی ہواس طرح بیٹھ۔ ہاں دوز انو بیٹھنا آسان ہویا دوسری طرح بیٹھنے کے برابر ہوتو دوز انو بہتر ہے ورنہ جوآسان ہوا ختیار کرے۔ (⁵⁾ (عالمگیری وغیرہ) مسئان کا بیٹھ کر پڑھنے میں اور میں تھک گیا تو دیواریا عصابہ ٹیک لگانے میں حرج نہیں ورنہ مکروہ ہے اور بیٹھ کر پڑھنے میں

- 1 "نصب الراية" للزيلعي، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص١٧٧ ـ ١٧٨.
- المعرفة السنن والآثار" للبيهقي، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، الحديث: ١٠٨٣، ج٢، ص١٤٠.
 - 3 "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص ٦٨١.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦.
 و"الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٢٨٢.
 - 🤿 🗗 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦، وغيره.

نماز میں مٰدکورہوئے۔

کی کھ جرج نہیں۔⁽¹⁾ (درمختار)

سکان کے جاررکعت والی نماز بیٹھ کر پڑھی، قعد ہُ اخیرہ کے موقع پرتشہد پڑھنے سے پہلے قراءت شروع کر دی اور رکوع بھی کیا تو اس کا وہی تھم ہے کہ کھڑا ہو کر پڑھنے والا چوتھی کے بعد کھڑا ہوجا تا، لہٰذا اس نے جب تک پانچویں کاسجدہ نہ کیا ہوتشہد

پڑھے اور سجدہ سہوکرے اور پانچویں کا سجدہ کرلیا تو نماز جاتی رہی۔(2)(عالمگیری) مسئل کی ایستان کی سیٹھ کر پڑھنے والا دوسری کے سجدہ سے اٹھا اور قیام کی نیت کی مگر قراءت سے پہلے یاد آگیا تو تشہد پڑھے اور

مریض نے بیٹھ کرنماز پڑھی چوتھی کے سجدہ سے اٹھا تو پیگان کر کے کہ تیسری ہے قراءت کی اوراشارہ سے رکوع و جود کیا نماز جاتی رہی اور دوسری کے سجدہ کے بعد بیگان کر کے کہ دوسری ہے قراءت شروع کی پھریاوآیا تو تشہد کی طرف عود نہ کرے بلکہ یوری کرے اور آخر میں سجدہ سہوکرے۔ (4) (عالمگیری)

کوئے کے لیے اشارہ کے میڑا ہوسکتا ہے مگررکوع و جو دنہیں کرسکتا یاصرف سجدہ نہیں کرسکتا مثلاً علق وغیرہ میں پھوڑا ہے کہ سجدہ کرنے سے بہے گا تو بھی بیٹھ کراشارہ سے بڑھ سکتا ہے بلکہ یہی بہتر ہے اور اس صورت میں یہ بھی کرسکتا ہے کہ کھڑے ہوگر بڑھے اور رکوع کے لیے اشارہ کرے۔ (5) (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

سَسَعَانُ وَ ﴾ اشارہ کی صورت میں سجدہ کا اشارہ رکوع سے بست ہونا ضروری ہے مگر بیضرور نہیں کہ سرکو بالکل زمین سے قریب کردے سجدہ کے لیے تکیہ وغیرہ کوئی چیز بیشانی کے قریب اٹھا کراس پر سجدہ کرنا مکر و قِتح کی ہے،خواہ خوداس نے وہ چیز اٹھائی ہویا دوسرے نے۔(6) (در مختار وغیرہ)

سَسَعَانُ وَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ ال اللَّهُ الدّر المجدد كے ليے زيادہ سرنہ جھاليا تو ہواہی نہيں۔⁽⁷⁾ (در مختار، عالمگيری)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص ٩٠.
- 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.
 - 🚯 المرجع السابق.
 - 4 المرجع السابق.
- € المرجع السابق، ص١٣٦، و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٤.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٥٦٨. وغيره
 - 7 المرجع السابق، و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦.

جِبِهَارِ شَرِيْعَتُ بِثِقَدِيمُهِ بِهِ الْمُ (4) 🗨 🗨 مَا زَمِ يَعْنَ كابيان

د بانے سے نہ د بے اور اس کی اونچائی بارہ اُنگل سے زیادہ نہ ہو۔ ان شرائط کے پائے جانے کے بعد هیفة رکوع و بجود پائے گئے، اشارہ سے پڑھنے والااسے نہ کہیں گے اور کھڑا ہو کر پڑھنے والا اس کی اقتد اکر سکتا ہے اور پیٹھن جب اس طرح رکوع و بجود کر سکتا

اسارہ سے پرسے والا اسے نہ یں کے اور ھرا ہو ریز سے والا اسی احدا برسا ہے اور یہ ب اب اس مرس روں و بود رسما ہے اور قیام پر قادر ہو گیا تو جو باتی ہے اسے کھڑے ہو کر پڑھنا فرض ہے البذا جو شخص زمین پر تھدہ نہیں کرسکتا مگر شرا لط مذکورہ کے ساتھ کوئی چیز زمین پر رکھ کر سجدہ کرسکتا ہے، اس پر فرض ہے کہ اسی طرح

سجدہ کرےاشارہ جائز نہیں اوراگروہ چیز جس پرسجدہ کیاالین نہیں تو هیقة سجود نہ پایا گیا بلکہ بحدہ کے لیےاشارہ ہوالہذا کھڑا ہونے والااس کی اقتد انہیں کرسکتا اوراگر شخص اثنائے نماز میں قیام پر قادر ہوا تو سرے سے پڑھے۔(1) (ردالمحتار)

سَسَعَانُ ۱۱﴾ پیشانی میں زخم ہے کہ تجدہ کے لیے ماتھانہیں لگاسکتا تو ناک پر تجدہ کرےاوراییا نہ کیا بلکہاشارہ کیا تو نماز نہوئی۔⁽²⁾(عالمگیری)

مسئان 10 گئی۔ مریض اگر قبلہ کی طرف ندا ہے آپ موٹھ کرسکتا ہے نددوسرے کے ذریعہ سے تو ویسے ہی پڑھ لے اور صحت کے بعداس نماز کا اعادہ نہیں اور اگر کوئی شخص موجود ہے کہ اس کے کہنے سے قبلہ رُ وکردے گا مگر اس نے اس سے نہ کہا تو نہ ہوئی، اشارہ سے جونمازیں پڑھی ہیں صحت کے بعدان کا بھی اعادہ نہیں۔ یو ہیں اگر زبان بند ہوگئی اور گونگے کی طرح نماز پڑھی

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص١٨٥، ٦٨٦.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦.
 - ③ "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٦. وغيره
 - 4 "الدرالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٧، وغيره.

يثرٌش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلامی) €

همرز بان گھل گئی توان نماز وں کااعادہ نہیں ۔⁽¹⁾ (ورمختار،ردالحتار)

<u> مسئالهٔ (۱) ﴾</u> مریض اس حالت کو پینچ گیا که رکوع و جود کی تعدادیا نہیں رکھ سکتا تو اس پرادا ضروری نہیں۔⁽²⁾ (درمختار)

مَسْعَكُ كُلُ ﴾ تندرست شخص نماز پڑھ رہا تھا، اثنائے نماز میں ایسامرض پیدا ہو گیا کہ ارکان کی ادا پر قدرت نہ رہی تو

جس طرح ممکن ہوبیٹھ کرلیٹ کرنمازیوری کرلے، سرے سے پڑھنے کی حاجت نہیں۔⁽³⁾ (درمختار، عالمگیری)

سَسَالُهُ ١٨٤ ﴾ بيٹھ کررکوع و تجود سے نماز پڑھ رہاتھا، اُنائے نماز میں قیام پر قادر ہو گیا تو جو باقی ہے کھڑا ہو کر پڑھے اور

اشارہ سے پڑھتا تھااور نماز ہی میں رکوع و تجود پر قادر ہو گیا توسرے سے پڑھے۔(4) (عالمگیری، درمختار)

سَسَعَانُ 19 ﴾ رکوع و بچود پر قادر نہ تھا کھڑے یا بیٹھے نماز شروع کی رکوع و بچود کے اشارہ کی نوبت نہ آئی تھی کہ اچھا ہو گیا تو اسی نماز کو پورا کرے سرے سے پڑھنے کی حاجت نہیں اورا گرلیٹ کر نماز شروع کی تھی اورا شارہ سے پہلے کھڑے یا بیٹھ کررکوع و میجود پر قادر ہو گیا تو سرے سے پڑھے۔ (5) (ردالمختار)

سکان کی جاجت نہیں اور کنارے پر بندھی ہواور اتر سکتا ہوتو اتر کرخشی میں پڑھ سکے اور زمین پر بیٹھ گی ہوتو اتر نے کی جاجت نہیں اور کنارے پر بندھی ہواور اتر سکتا ہوتو اتر کرخشی میں پڑھے ورنہ شتی ہی میں کھڑے ہوکر اور نے دریا میں لگر ڈالے ہوئے ہے تو بیٹھ کر پڑھ سکتے ہیں ،اگر ہوائے تیز جھو نکے لگتے ہوں کہ کھڑے ہونے میں چگر کا غالب کمان ہواور اگر ہوا سے زیادہ حرکت نہ ہوتو بیٹھ کر نہیں پڑھ سکتے اور شتی پر نماز پڑھنے میں قبلہ رُوہونا لازم ہے اور جب شتی گھوم جائے تو نمازی بھی گھوم کر قبلہ کومونھ کر لے اور اگر آئی تیز گردش ہوکہ قبلہ کومونھ کرنے سے عاجز ہے تو اس وقت ملتوی رکھے ہاں اگروقت جاتا وکھے تو پڑھ لے۔ (6) (غذیہ ، درمختار ، ردامختار)

سَسَتَانُ (۲) ﴾ جنون یا ہے ہوتی اگر پورے چھ وقت کو گھیر لے تو ان نماز وں کی قضا بھی نہیں ، اگر چہ ہے ہوتی آ دمی یا درندے کے خوف سے ہواوراس سے کم ہو تو قضاوا جب ہے۔ (⁷⁾ (درمختار)

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٨.
 - 2 "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٨.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.
 و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٨٦٩.
 - 4 المرجع السابق.
 - 5..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٩٨٩.
- €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، مطلب في الصلاة في السفينة، ج٢، ص ٦٩٠.
 - 🥏 🧗 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٩٢.

نمازمريض كابيان 🦥 📶 ۴ اگر کسی کسی وقت ہوش ہو جاتا ہے تو اس کا وقت مقرر ہے یانہیں اگر وقت مقرر ہے اور اس سے پہلے

یورے چھوفت نہ گزرے تو قضاوا جب اوروفت مقرر نہ ہو بلکہ دفعتۂ ہوش ہوجا تاہے پھروہی حالت پیدا ہوجاتی ہے تواس اِ فاقیہ

کا عتبارنہیں بعنی سب بے ہوشیاں متصل سمجھی جائیں گی۔⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار)

سَسَعًا ﴾ شراب ما بنگ بی اگر چه دوا کی غرض سے اور عقل جاتی رہی تو قضا واجب ہے اگر چہ بے عقلی کتنے ہی زیادہ

ز مانیۃ تک ہو۔ یو ہیںا گردوسرے نے مجبور کر کے شراب پلا دی جب بھی قضامطلقاً واجب ہے۔ (2) (عالمگیری، درمختار)

مستان ۲۳ ﷺ سوتار ہاجس کی وجہ سے نماز جاتی رہی تو قضافرض ہے اگر چہ نیند پورے چھوونت کو گھیر لے۔⁽³⁾ (درمخار)

مَسِعًا ﴾ اگریدحالت ہو کہ روزہ رکھتا ہے تو کھڑے ہو کرنما زنہیں پڑھ سکتا اور نہ رکھے تو کھڑے ہو کر پڑھ سکے گا تو روز ہ رکھے اور نماز بیٹھ کریڑھے۔⁽⁴⁾(عالمگیری)

مسئ 🖰 🔭 - مریض نے وقت سے پہلے نماز پڑھ لی اس خیال سے کہ وقت میں نہ پڑھ سکے گا تو نماز نہ ہوئی اور بغیر قراءت بھی نہ ہوگی مگر جبکہ قراءت سے عاجز ہو تو ہوجائے گی۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

مَسَعًا ﴾ کا ﷺ عورت بیار ہو تو شو ہر برفرض نہیں کہاہے وضو کرا دےاور غلام بیار ہو تو وضو کرا دینا مولی کے ذمّہ ے۔⁽⁶⁾(عالمگیری)

مستان (۲۸) 💨 جھوٹے سے خیمہ میں ہے کہ کھڑانہیں ہوسکتا اور باہر نکلتا ہے تو مینھ ⁽⁷⁾ اور کیچڑ ہے تو بیٹھ کر پڑھے۔

یو ہیں کھڑے ہونے میں تثمن کا خوف ہے تو بیٹھ کریڑ ھ سکتا ہے۔⁽⁸⁾ (عالمگیری)

اس طرح نہیں پڑھسکتا جیسے بیاری میں پڑھتا مثلاً ہیٹھ کریااشارہ سے اگراسی طرح پڑھیں تو نہ ہوئیں اور صحت کی حالت میں

1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٢٩٢. و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.

- 2 المرجع السابق.
- 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٢٩٢.
- ₫..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١٠ ص١٣٨.
 - 5 المرجع السابق.
 - 6 المرجع السابق.
 - 🗗 يعني مارش ـ
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١٠ ص١٣٨.

قضا ہوئیں بیاری میں نھیں پڑھنا جا ہتا ہے تو جس طرح پڑھ سکتا ہے پڑھے ہوجا ئیں گی محت کی می پڑھنا اس وقت واجب نہیں ۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

725

سَسَعَانُ الله على على الله ع

ردونقار، ردا محتار) اورطبیب حاذق مسلمان مستورنے لیٹے رہنے کا حکم دیا تولیٹ کراشارے سے پڑھے۔ (3) (درمختار، ردامختار)

سَسَعَانُ اللهِ مَرِيضَ کے ينچِ جُس بَجِمُونا بِجِها ہے اور حالت يہ ہو کہ بدلا بھی جائے تو نماز پڑھتے پڑھتے بقدر مانع ناپاک ہوجائے تواسی پرنماز پڑھے۔ یو ہیں اگر بدلا جائے تواس قدر جلد نجس نہ ہوگا مگر بدلنے میں اسے شدید تکلیف ہوگی تواسی نجس ہی پر پڑھ لے۔(4) (عالمگیری، در مختار، ردالمحتار)

مسلمان اس باب کے مسائل کو دیکھیں تو آخیں بخو بی معلوم ہوجائے گا کہ شرع مطہرہ نے کسی حالت میں بھی سوابعض نا درصورتوں کے نما زمعاف نہیں کی بلکہ یہ تھکم دیا کہ جس طرح ممکن ہو پڑھے۔ آج کل جو بڑے نمازی کہلاتے ہیں ان کی بیحالت دیکھی جارہی ہے کہ بخار آیا فہ راشدت ہوئی نمازچھوڑ دی شدت کا در دہوا نمازچھوڑ دی نمازچھوڑ دی کو کہ جب تک کوئی پھڑیا نکل آئی نمازچھوڑ دی، یہاں تک نوبت پہنچ گئی ہے کہ در دِسر و زکام میں نمازچھوڑ ہیٹھتے ہیں حالانکہ جب تک اشارے سے بھی پڑھ سکتا ہواور نہ پڑھے تو آخیں وعیدوں کا مستحق ہے جو شروع کتاب میں تارک الصلاق کے لیے احادیث سے بیان ہوئیں، والعیاذ باللہ تعالیٰ۔

اَللَّهُمَّ اجُعَلْنَا مِنُ مُقِيمِي الصَّلَوةِ وَمِنُ صَالِحِي اَهُلِهَا اَحْيَآءً وَّ اَمُوَاتًا وَّ ارُزُقُنَا اتِّبَاعَ شَرِيُعَةِ حَبِيبِكَ الْكَرِيْمِ عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلَوةِ وَالتَّسُلِيُمِ امِين . (5)

(صلی الله تعالی علیه وسلم) کی شریعت کی پیروی اور روزی کر، ان پر بهتر درودوسلام، امین _

^{1 &}quot;الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٨.

^{2 &}quot;الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، مطلب في الصلاة في السفينة، ج٢، ص٦٩٣.

^{3} المرجع السابق.

^{4} المرجع السابق، و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.

^{5} اے اللہ (عزوجل)! تو ہم کونماز قائم کرنے والوں میں اور زندگی اور مرنے کے بعد اچھے نماز والوں میں کر اور اپنے حبیب کریم

سجدهٔ تلاوت کا بیان

صحیح مسلم شریف میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عند سے مروی ،حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علید دملم ارشا دفر ماتے ہیں:'' جب ابن آدم آیت سجدہ پڑھ کرسجدہ کرتا ہے،شیطان ہٹ جاتا ہےاورروکر کہتا ہے، ہائے بربادی میری!این آ دم کوسجدہ کاحکم ہوا،اس نے سجدہ

کیا،اس کے لیے جنت ہےاور مجھے حکم ہوامیں نے انکار کیا،میرے لیے دوزخ ہے۔' (1)

مسئلاً المجسجده کی چوده آیتیں ہیں وہ بہ ہیں:

- (۱) سورهٔ اعراف کی آخرآیت
- ﴿ إِنَّا لَّذِينَ عِنْدَكَ مَ إِنَّ لَا يَسْتَكُمُ لِرُونَ عَنْ عِبَا دَتِهِ وَيُسَبِّحُونَةُ وَلَهُ يَسُجُدُونَ أَنَّ ﴾ (2)
 - (۲) سورهٔ رعد میں به آیت
- ﴿ وَيِتِّهِ يَسْجُكُ مَنْ فِي السَّلَوْتِ وَالْاَنْمِ ضَلُّوعًا وَّكُنْ هَا وَّظِلْلُهُمْ بِالْغُكُ وِّ وَالْأَصَالِ أَنَّ ﴾ (3)
 - (۳) سور پخل میں بهآیت
- ﴿ وَ لِلَّهِ يَسُجُّدُ مَا فِي السَّلَوٰتِ وَمَا فِي الْاَئُ مِضِ مِنْ دَآبَةٍ وَّالْمِلْكَةُ وَهُمُ لا يَسْتَكُبِرُونَ ۞ ﴿ (^(4)
 - (۴) سورهٔ بنی اسرائیل میں بیآیت
- ﴿ إِنَّا لَّذِينَ ٱوْتُواالْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَ إِذَا يُتُلِّ عَلَيْهِمْ يَخِزُّونَ لِلْاَ ذَقَانِ سُجَّمًا ۞ قَيَقُولُونَ سُبْحُنَ مَابِّكًا
 - اِنْكَانَ وَعُكْرَ بِبِنَالَمَفْعُولًا ۞ وَيَخِرُّ وْنَلِلا ذَقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيْدُهُمُخْشُوْعًا ﴿ (5)
 - (۵) سورهٔ مریم میں بهآیت
 - ﴿ إِذَا تُتُلَّى عَلَيْهِمُ التَّالرَّ حُلِن خَرُّ وَاسُجَّرًا وَّ بُكِيًّا أَنَّ ﴾ (6)
 - (۲) سورۂ حج میں پہلی جگہ جہاں سجدہ کا ذکر ہے یعنی پیآیت
 - "صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، باب بيان اطلاق اسم الكفر على من ترك الصلاة، الحديث: ٨١، ص٥٥.
 - 2 پ٩، الاعراف: ٢٠٦.
 - 3 پ۱۶ الرعد: ۱۵.
 - 4 : ١٤٠١ النحل: ٤٩.
 - 5 په ۱، بنتي اسرآء يل: ۱۰۷ ـ ۱۰۹
 - 究 🕝 پ۱۱، مریم: ۵۸.

﴿ اَلَمْ تَرَاتَ اللّٰهَ يَسْجُدُلَهُ مَنْ فِي السَّلُوتِ وَمَنْ فِي الْآرَاثُ مِنْ وَالشَّبُسُ وَالْقَبَرُ وَالنَّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَ السَّبَهُ وَاللَّهُ مَن اللّٰهُ فَمَالَةُ مِن اللَّهُ مَا لَكُومِ لَا إِنَّاللّٰهَ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاللّٰهُ وَمَن يُهِن اللّٰهُ فَمَالَةُ مِن اللّٰهُ فَاللّٰمِ اللّٰهُ فَمَالَةُ مِن اللّٰهُ فَاللّٰمِ اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَن اللّٰهُ اللّٰهُ مِن اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَا اللّٰهُ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَاللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَن اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰهُ مَا اللّٰمُ اللّٰهُ مَا اللّٰمُ اللّٰهُ مَا اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ ا

والشجرواندوا بودىدىروم يَفْعَلُمَايَشَآءُ ﷺ

- رے) سورۂ فرقان میں برآیت ا
- ﴿ وَ إِذَا قِيْلَ لَهُمُ السَّجُ وُ اللَّهَ حُلِن قَالُوْ اوَ مَا الرَّحْلِنُ ۖ ٱلسَّجُ وُلِمَ اتَّا مُرْنَا وَزَادَهُمْ نُفُوِّمًا ﴿ (2)
 - (۸) سورهٔ نمل میں بیآیت
- ﴿ اَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي كُيُخْرِجُ الْخَبْءَ فِالسَّلَواتِ وَالْآسُ ضِ وَيَعْلَمُ مَا أَخُفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿ اللَّهُ لَآ اِللَّهُ
 - اِلَّاهُوَى اللَّهُ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿ ﴿ ﴿ (3)
 - (٩) سورة الم تنزيل مين بيآيت
 - ﴿ إِنَّمَالِيُومِنُ بِالْيِتِنَا الَّذِينَ إِذَاذُ كِرُوابِهَا خَنُّواسُجَّمًا وَّسَبَّحُوابِحَمْدِ مَ يَبِهِمُ وَهُمُ لا يَسْتَكُورُونَ ۞ ﴿ النَّمَالِيُومِنُ بِالْنِتِنَا الَّذِينَ اذَاذُ كِرُوابِهَا خَنُّواسُجَّمًا وَّسَبَّحُوابِحَمْدِ مَ يَبِهِمُ وَهُمُ لا يَسْتَكُمُ بِرُونَ ۞ ﴿ (4)
 - (١٠) سورهٔ ص میں بيآيت
 - ﴿ فَاسْتَغْفَرَ مَا بَعُ وَخَرَّ مَا كِمَّا وَ اَنَابَ ﴿ فَغَفَرْ تَالَدُ ذَٰلِكَ * وَإِنَّ لَدُعِنْدَ نَالَزُ نَفَى وَحُسْنَ مَا إِي ﴿ فَاسْتَغْفَرَ مَا يَعُا وَانْ لَدُولِكَ * وَإِنَّ لَدُعِنْدَ نَالَزُ نَفَى وَحُسْنَ مَا إِي ﴾ (6)
 - (۱۱) سورهٔ حم السجدة مين آيت
- ﴿ وَمِنْ الْبِيَالِيَّا النَّهَا اللَّهَا اللَّهَا اللَّهَا اللَّهَا اللَّهَا اللَّهَا اللَّهَا اللَّهُ اللَّلِمُ الللْمُلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللْمُلْمُ الللْمُلِمُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللْمُلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّ
 - (۱۲) سورهٔ نجم میں
 - ﴿ فَاسْجُنُ وَاللَّهِ وَاعْبُنُ وَاشَّ ﴾ (7)
 - 🗗 پ۱۷، الحج: ۱۸.
 - 2 پ ۱۹، الفرقان: ۲۰.
 - 3 پ٩١، النمل: ٢٥ ـ ٢٦.
 - 4 پ ۲۱، السجدة: ۱٥.
 - **5** پ۲۲، صَ: ۲۶ _ ۲۵.
 - 6 پ ۲ ۲ ، خمّ السجدة: ۳۷ _ ۳۸ .

 - 🕡 پ۲۷، النجم: ۲۲.
 - پيژكش: مجلس المدينة العلمية (دعوت اسلام) €

(۱۳) سور هٔ انشقاق میں آیت

﴿ فَمَالَهُمُ لا يُؤُمِنُونَ أَن وَ إِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرُانُ لا يَسْجُدُونَ أَنَّ ﴾ (1)

(١٨) سورة اقراء ميل آيت ﴿ وَاسْجُنُ وَاقْتَرِبُ ﴿ فَا اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ الللَّالِي اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الل

مستان کی است سجدہ پڑھنے یا سننے سے سجدہ واجب ہوجا تا ہے پڑھنے میں بیشرط ہے کہ اتنی آواز سے ہو کہ اگر کوئی

عذر نہ ہو تو خودسُن سکے، سننے والے کے لیے بیضرور نہیں کہ بالقصد سی ہو بلا قصد سُننے سے بھی سجدہ واجب ہوجا تا ہے۔ (3) (ہدا ہے، درمختار وغیر ہما)

مسئان سیدہ واجب ہونے کے لیے پوری آیت پڑھنا ضروری نہیں بلکہ وہ لفظ جس میں سجدہ کا مادہ پایا جاتا ہے اور اس کے ساتھ قبل یا بعد کا کوئی لفظ ملا کر پڑھنا کافی ہے۔ (۱۰ (روالحتار)

سَسَعَالُهُ ﴾ اگراتنی آواز ہے آیت پڑھی کہ ن سکتا تھا مگر شور وغل یا بہرے ہونے کی وجہ سے نہ بنی تو سجدہ واجب ہو گیا اورا گرمخض ہونٹ ملے آواز پیدانہ ہوئی تو واجب نہ ہوا۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری وغیرہ)

مسئ کے آیت پڑھی تو مقتذیوں پر واجب ہوگیا، اگر چہنسنی ہو بلکہ اگر چہاس میں ہواس پر سجدہ واجب نہ ہوا، البتہ نماز میں امام نے آیت پڑھی تو مقتذیوں پر واجب ہوگیا، اگر چہنسنی ہو بلکہ اگر چہآیت پڑھتے وقت وہ موجود بھی نہ تھا، بعد پڑھنے کے سجدہ سے پیشتر شامل ہوا اور اگرامام سے آیت سی مگرامام کے سجدہ کرنے کے بعد اسی رکعت میں شامل ہوا تو امام کا سجدہ اس کے لیے بھی ہے اور دوسری رکعت میں شامل ہوا تو نماز کے بعد سجدہ کرے۔ یو بیں اگر شامل ہی نہ ہوا جب بھی سجدہ کرے۔ (6) (عالمگیری، درمخار، ردالمحار)

1 پ ، ۳ ، الانشقاق: ۲۰ _ ۲۱ . و پ ، ۳ ، العلق: ۹ .

"الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٢.

③ "الهداية"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج١، ص٧٨.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٤٩، وغيرهما.

4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص ٢٩٤.

اعلیٰ حضرت،امام ِ احمد رضاخان علیہ رحمۃ الرحن فرماتے ہیں : سجدہ واجِب ہونے کے لئے پوری آیت پڑھناخر وری ہے کیکن بعض عکُما نے مُتَا تَّرِین کے نزدیک وہ لفظ جس میں سجدہ کاما تہ ہایا جاتا ہے اس کے ساتھ قبل یا بعد کا کوئی لفظ ملا کر پڑھا تو سجد ہ تلاوت واجِب ہوجاتا ہے لہذا اِحتیاط رہی ہے کہ دونوں صورَ توں میں سجدہ تلاوت کیا جائے۔ (فناوی رضویہ :ج۸،ص،۲۲۳ مُلَحَّصاً).

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١٠ ص١٣٢.
- € المرجع السابق، ص١٣٣. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود التلاوة، ج٢، ص٦٩٦.

🚨 مَسْعَالُهُ 🔰 🚽 سورہُ جج کی آخر آیت جس میں سجدہ کا ذکر ہے اس کے پڑھنے یا سننے سے مجدہ واجب نہیں کہ اس میں سجدے سے مرادنماز کا سجدہ ہے، البنة اگر شافعی المذہب امام کی اقتداکی اوراس نے اس موقع پر سجدہ کیا تواس کی متابعت میں

مقتدی ربھی واجب ہے۔ (1) (ردالحتار)

مسئ كا كام نه كركا، اگرچه آيت

مسئ ٨ الله مقتدى نے آیت سجده پڑھى تو نەخوداس پر سجده واجب ہے ندامام پر نداور مقتد يوں پر ندنماز ميں نه بعد ميں، البتة اگردوسرے نمازی نے کہ اس کے ساتھ نماز میں شریک نہ تھا آیت سُنی خواہ وہ منفر د ہویا دوسرے امام کا مقتدی یا دوسر اامام ان پر بعدنماز بحبدہ واجب ہے۔ یو ہیں اس پر واجب ہے جونماز میں نہ ہو۔ (3) (عالمگیری، در مختار، ردا کتار)

مَسْعَالُهُ ﴿ ﴾ جَوْخُصْ نماز میں نہیں اورآ بیت سجدہ بڑھی اورنمازی نے شنی تو بعدنماز سجدہ کرے نماز میں نہ کرے اورنماز ہی میں کرلیاتو کافی نہ ہوگا،بعدنماز پھرکرنا ہوگا مگرنماز فاسد نہ ہوگی ہاں اگر تلاوت کرنے والے کے ساتھ سجدہ کیااورا تباع کا قصد بھی ۔ کیاتونماز جاتی رہی۔ ⁽⁴⁾ (غنیہ ، عالمگیری)

مَسِينَا اللَّهِ السَّالِحِ رَكُوع بالتجود مين آيت سجده برُهي تو سجده واجب ہو گيااوراسي رکوع بالتجود ہے ادابھي ہو گيااورتشہد ميں برُهي توسجدہ واجب ہوگیالہذاسجدہ کرے۔⁽⁶⁾(ردالحتار)

تھم ہو،لہٰداا گر کا فریا مجنون یا نابالغ یا حیض ونفاس والی عورت نے آیت پڑھی تو ان پرسجدہ واجب نہیں اورمسلمان عاقل بالغ

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود التلاوة، ج٢، ص ٩٥ ٦٩٧. ٦
 - 2 "غنية المتملى"، سجدة التلاوة، ص ٥٠٠٥.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١، ص١٣٣. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٧.
 - 4 "غنية المتملى "، سجدة التلاوة، ص٠٠٥.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٢٣.

- 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٨.
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود التلاوة، ج٢، ص٩٨.

730

مَسِعَانُ اللهِ عورت نے نماز میں آیت سجدہ پڑھی اور سجدہ نہ کیا یہاں تک کہ حیض آگیا تو سجدہ ساقط ہوگیا۔ (²⁾ (عالمگیری)

<u> مَسعًا لَهُ ۱۳ ﴾</u> نفل پڑھنے والے نے آیت پڑھی اور بجدہ بھی کرلیا پھر نماز فاسد ہوگئی تو اس کی قضا میں بجدہ کا اعادہ نہیں اور نہ کیا تھا تو بیرونِ نماز کرے۔(3) (عالمگیری، درمختار)

مسئل 10 و اجب ہوگیا، سننے والے نے سے معرف اور زبان میں آیت کا ترجمہ پڑھا تو پڑھنے والے اور سننے والے پر سجدہ واجب ہوگیا، سننے والے نے سے مجھا ہو یانہیں کہ آیت سجدہ کا ترجمہ ہے، البتہ بیضرور ہے کہ اسے نامعلوم ہو تو بتا دیا گیا ہو کہ بیآ یت سجدہ کا ترجمہ تھا اور آیت پڑھی گئی ہو تو اس کی ضرورت نہیں کہ سننے والے کو آیت سجدہ ہونا بتایا گیا ہو۔ (4) (عالمگیری)

سَمَعَالُمُ اللَّهِ چَنرُ تَحْصُول نے ایک ایک حرف پڑھا کہ سب کا مجموعہ آیت بجدہ ہوگیا تو کسی پر بجدہ واجب نہ ہوا۔ یو ہیں آئیت کے ہجے کرنے یا ہجے سننے سے بھی واجب نہ ہوگا۔ یو ہیں پر ندسے آیت بحدہ سُنی یا جنگل اور پہاڑ وغیرہ میں آ واز گونجی اور بجنسہ آیت کی آ واز کان میں آئی تو سجدہ واجب نہیں۔ (5) (عالمگیری، درمخار)

مَسِعَلَا كَا ﴾ آیت تجده براهنے کے بعد معاذ الله مرتد ہوگیا پھر مسلمان ہوا تووہ تجدہ داجب نہ رہا۔ (6) (عالمگیری)

- ١٣٢٠... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١، ص١٣٢.
 و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠ ٧٠٢.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١، ص١٣٢.
- الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص ٢٠٦.
 و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص ١٣٢.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
- آلفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٢، ١٣٣.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٢٠٧.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.

المستال 10 المستال 10 المستحده لكهنه يااس كي طرف ديكهنه سيسجده واجب نهيں - (1) (عالمگيري، غنيه)

نیت، وفت اس معنی پر که آ گے آتا ہے ستر عورت، لہذا اگریانی پر قادرہے تیم مرکے سجدہ کرنا جائز نہیں۔⁽²⁾ (درمختار وغیرہ)

- مسئل 😘 🔭 اس کی نیت میں بیشرط نہیں کہ فلاں آیت کا سجدہ ہے بلکہ مطلقاً سجدہ تلاوت کی نیت کافی ہے۔ 😘 (درمختار،ردالمحتار)
- جو چیزیں نماز کو فاسد کرتی ہیں ان سے تجدہ بھی فاسد ہو جائے گا مثلاً حدث عمد وکلام وقبقیہ۔ ⁽⁴⁾ - FI HE FULL (درمختاروغيره)

مَسْتَالُهُ ٢٦﴾ سجدہ کامسنون طریقہ پیہے کہ کھڑا ہوکر اَللّٰہُ اَنْحُبَوُ کہتا ہوا سجدہ میں جائے اور کم سے کم تین بار سُبُطنَ رَبّعيَ الْأَعْلَىٰ كَهِ، بَهِم اَللَّهُ اَكُبَرُ كَهِتَا هِوا كَفرُ اهِوجائے، يبلغ بيجھے دونوں باراللّهٔ اَكُبَرُ كَهنا سنت ہے اور كفر ہے ہوكر سجدہ ميں جانااور سجدہ کے بعد کھڑا ہونا بیدونوں قیام مستحب ⁽⁵⁾ (عالمگیری، درمختار وغیرہا)

مسئل 😙 🤻 مستحب رہے ہے کہ تلاوت کرنے والا آ گے اور سننے والے اس کے پیچھے صف باندھ کر سجدہ کریں اور رہیہ بھی مستحب ہے کہ سامعین اس سے پہلے سرنہ اوٹھا ئیں اورا گراس کے خلاف کیا مثلاً اپنی اپنی جگہ پرسجدہ کیا اگر چہ تلاوت کرنے والے کے آگے یااس سے پہلے ہدہ کیا یاسراٹھالیایا تلاوت کرنے والے نے اس وقت سجدہ نہ کیا اور سامعین نے کرلیا تو حرج نہیں اور تلاوت کرنے والے کا سجدہ فاسد ہو جائے تو ان کے سجدول پراس کا کچھا اثر نہیں کہ بیر هیقة اقتد انہیں، لہذاعورت نے اگر تلاوت کی تو مردوں کی امام یعنی سجدہ میں آ گے ہوسکتی ہے اورعورت مرد کے محاذی ہو جائے تو فاسد نہ ہوگا۔ (6) (غنیه ،عالمگیری)

مَسْتَانُ ٢٣٠ ﴾ اگرىجدە سے پہلے يابعد ميں كھڑانہ ہوا يا الله اكبَرُ نه كها يا سُبْحُنَ نه برُها تو ہوجائے گا مركبير جھوڑنا

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١، ص١٣٣. و "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٠٠٠.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٩٩. وغيره
 - ③ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٩٩.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سحود التلاوة، ج٢، ص٩٩٦.
- المرجع السابق، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٥.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١٠ ص١٣٤.
 - و "غنية المتملى"، سجدة التلاوة، ص ١ .٥٠.

نہ چاہیے کہ سلف کے خلاف ہے۔ (1) (عالمگیری، روالمحتار)

ساتھ ہوں تومستحب میہ ہے کہ اتنی آواز ہے کہے کہ دوسر ہے بھی سنیں۔⁽²⁾ (ردالحتار)

سَسَعَكُ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّى اللَّهُ عَلَى اللّ

تو چاہے یہ پڑھے یا اور دُ عا کیں جواحادیث میں وار دہیں وہ پڑھے۔مثلًا

سَجَدَ وَجُهِىَ لِلَّذِى خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَشَقَّ سَمُعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ فَتَبَارَكَ اللَّهُ اَحُسَنُ لُخَالِقِيْنَ. (3) يا

اَللَّهُ مَّ اكْتُبُ لِى عِنْدَكَ بِهَا اَجُرًا وَّ ضَعُ عني بِهَا وِزُرًا وَّاجُعَلُهَا لِى عِنْدَكَ زُحُرًا وَ تَقَبَّلُهَا مِنِّى كَمَا تَقَبَّلُتَهَا مِنْ عَبُدِكَ دَاوُدَ . (4) يايركه _

سُبُحٰنَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ وَعُدُ رَبِّنَا لَمَفُعُولًا ﴿ (5)

اورا گربیرون نماز ہو تو حیاہے یہ پڑھے یا صحابہ و تابعین سے جوآ ثار مروی ہیں وہ پڑھے،مثلاً ابن عمر رضی اللہ تعالی عنها سے مروی ہے، وہ کہتے تھے:

اَللَّهُمَّ لَکَ سَجَدَ سَوَادِیُ رَبِّکَ اَمَنَ فُوَّادِیُ اَللَّهُمَّ ارُزُقْنِی عِلْمًا یَّنْفَعْنِی وَعَمَلًا یَرُفَعْنِی . (6) (غنی، روالحتار)

الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١، ص١٣٥.

و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٠.

2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٠.

ترجمہ: میرے چہرے نے سجدہ کیا اوس کے لیے جس نے اسے بیدا کیا اوراس کی صورت بنائی اورا پنی طاقت وقوت سے کان اور آئھ کی گھا۔
 جگہ بھاڑی برکت والا ہے الله (عزوجل)! جواچھا پیدا کرنے والا ہے ۔۱۲

۔۔۔۔۔ ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)!اس تجدہ کی وجہ سے تو میرے لیےا پنے نزدیک ثواب لکھاوراس کی وجہ سے مجھ سے گناہ کو دورکراوراسے تو میرے لیےا پنے پاس ذخیرہ بنااوراس کو تو مجھ سے قبول کر جیسا تونے اپنے بندے داود علیہ السلام سے قبول کیا۔ ۱۲

ترجمہ: پاک ہے ہمارارب، بےشک ہمارے پروردگار کا وعدہ ہوکر رہے گا۔ ۱۲۔

شعنية المتملي "، سجدة التلاوة، ص٢٠٥، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٠٠٠.

ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)!میرےجہم نے تجھے تجدہ کیااورمیرادل تجھ پرائیان لایا۔اےاللہ! تو مجھوکھم نافع اورقمل رافع روزی کر۔١٣

گ 🔂 🔂 🔫 تعدهٔ تلاوت کے لیے اَلٹُ ہُ اَکْبَوْ کہتے وقت نہ ہاتھ اٹھانا ہے اور نہاس میں تشہد ہے نہ سلام۔ 🗥 🤇

(تنوبرالابصار)

مَسِيَّالُهُ ٢٨﴾ ﴿ آیت مجده بیرون نماز پڑھی تو فوراً محبدہ کر لیناواجب نہیں ہاں بہتر ہے کہ فوراً کر لےاور وضو ہو تو تاخیر

مکروہ تنزیہی ۔⁽²⁾ (درمختار) سینانہ ۲۹ ﷺ اُس وقت اگر کسی وجہ ہے بحدہ نہ کر سکے تو تلاوت کرنے والے اور سامع کو یہ کہہ لینامستحب ہے

سَمِعْنَاوَا طَعْنَا فَعُفُرانَكَ مَ سَنَاوَ إِلَيْكَ الْبَصِيدُ. (3) (ردالحتار)

مست ان سی اور تا ہول گیا تو جب تک اور ایس فوراً کرنا واجب ہے تا خیر کرے گا گنهگار ہوگا اور سجدہ کرنا بھول گیا تو جب تک حرمت نماز (4) میں ہے کرلے، اگر چیسلام پھیر چکا ہواور سجدہ سہوکرے۔ (5) (درمختار، روالحتار) تاخیرے مراد تین آیت ہے زیادہ پڑھ لینا ہے کم میں تاخیز نہیں مگر آخر سورت میں اگر سجدہ واقع ہے، مثلاً اِنْشَقَتْ تو سورت یوری کر کے سجدہ کرے گاجب بھی حرج نہیں _⁽⁶⁾ (ردالحتار)

مسئل اس ﴾ نماز میں آیت بحدہ بڑھی تواس کا مجدہ نماز ہی میں واجب ہے بیرون نماز نہیں ہوسکتا۔اورقصداً نہ کیا تو گنهگار ہوا تو بدلازم ہے بشرطیکہ آیت سجدہ کے بعد فوراً رکوع وجود نہ کیا ہو، نماز میں آیت سجدہ پڑھی اور سجدہ نہ کیا پھروہ نماز فاسد ہوگئ یا قصداً فاسد کی توبیرون نماز تجدہ کر لےاور تجدہ کرلیا تھا تو حاجت نہیں۔⁽⁷⁾ (درمختار)

سَسَعَانُ اللّٰہِ الْرَآیت بڑھنے کے بعد فوراُنماز کاسجدہ کرلیا یعنی آیت سجدہ کے بعد تین آیت ہے زیادہ نہ بڑھااور رکوع

كرك يجده كيا تواكر چيجدهٔ تلاوت كي نيت نه بهوادا به وجائے گا۔(8) (عالمگيري، درمختار)

- 1 "تنوير الأبصار"، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٠.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٣.
- 3 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٣.

ترجمہ: ہم نے سنااور علم مانا، تیری مغفرت کاسوال کرتے ہیں،اے پرورد گار!اور تیری،ی طرف پھرناہے۔۱۲

- 🗗 یعنی کوئی ایسا کام نه کیا ہوجومنافی نماز ہے۔ ۱۲
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سحود التلاوة، ج٢، ص٤٠٧.
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٧.٧.
 - **1**..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٥٠٧.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٨٠٧.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣، ١٣٤.

🐔 📶 👚 🔻 نماز کا سجد ہ تلاوت سجدہ سے بھی ادا ہوجا تا ہے اور رکوع سے بھی ، مگر رکوع سے جب ادا ہوگا کہ فوراً کرےفوراً نہ کیا تو سجدہ کرنا ضروری ہےاور جس رکوع ہےسجد ہُ تلاوت اوا کیا خواہ وہ رکوع رکوع نماز ہو ہااس کےعلاوہ۔اگر

رکوع نماز ہے تواس میں اوائے سجدہ کی نیت کرلے اور اگر خاص سجدہ ہی کے لیے بدرکوع کیا تو اس رکوع سے اٹھنے کے بعد

مستحب بیہ ہے کہ دونین آیتیں یا زیادہ پڑھ کررکوع نماز کرے فوراً نہ کرے۔اورا گرآیت سجدہ پرسورت ختم ہےاور سجدہ کے لیے رکوع کیا تو دوسری سورت کی آیتیں بڑھ کررکوع کرے۔(1)(غذیہ ،عالمگیری، درمختار)

سناہ ۳۵ ﴾ آیت بجدہ نے سورت میں ہے تو افضل پیہے کہاہے پڑھ کر بجدہ کرے پھر کچھاورآ بیتیں پڑھ کررکوع کرےادرا گرسجدہ نہ کیاادررکوع کرلیاادراس رکوع میں ادائے سجدہ کی بھی نیت کر لی تو کافی ہےادرا گرنہ سجدہ کیا نہ رکوع کیا بلکہ سورت ختم کر کے رکوع کیا تواگر چہنیت کرے، نا کافی ہے اور جب تک نماز میں ہے بحدہ کی قضا کرسکتا ہے۔⁽²⁾ (عالمگیری) مستان سی سی سورت ختم ہےاورآیت محدہ کیا ہو کر سجدہ کیا تو مجدہ سے اٹھنے کے بعد دوسری سورت کی کچھآ بیتیں ا یڑھ کررکوع کرے اور بغیر بڑھے رکوع کر دیا تو بھی جائز ہے۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سَسَالُ 📆 ﴾ اگرآیت بجدہ کے بعد ختم سورت میں دو تین آیتیں باقی ہیں تو جائے فوراً رکوع کر دیے یا سورت ختم کرنے کے بعد یا فوراً سجدہ کرلے پھر باقی آیتیں پڑھ کررکوع میں جائے یا سورت ختم کر کے سجدہ میں جائے سب طرح اختیار

ہے گراس صورت اخیرہ میں سجدہ سے اٹھ کر بچھ آبیتیں دوسری سورت کی پڑھ کررکوع کرے۔(⁴⁾ (غنیہ ، عالمگیری) <u>سکا کی ۳۷ کی ۔ رکوع حاتے وقت سحدہ کی نیت نہیں کی بلکہ رکوع میں یا اٹھنے کے بعد کی تو یہ نیت کافی نہیں۔ (5) </u> (عالمگيري)

جب سلام پھیرے تو مقتدی مجدہ کر کے قعدہ کریں اور سلام پھیریں اور اس قعدہ میں تشہدوا جب ہے اگر قعدہ نہ کیا تو نماز فاسد ہوگئی کہ قعدہ جاتار ہاہ چکم جہری نماز کا ہے، سری میں چونکہ مقتدی کو کم نہیں لہٰذا معذور ہے اورا گرامام نے رکوع سے سحبرہُ تلاوت کی نیت نه کی تواس سجدهٔ نماز سے مقتدیوں کا بھی سجدہُ تلاوت ادا ہو گیاا گرچہ نیت نه ہو،الہٰ ذا امام کو جاہیے که رکوع میں سجدہ کی نیت

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٦.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
 - 3 المرجع السابق.
 - 5 المرجع السابق. 4 المرجع السابق.

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلامي) 🛒

🥏 نہ کرے کہ مقتدیوں نے اگرنیت نہ کی تو ان کاسجدہ ادا نہ ہوگا اور رکوع کے بعد جب امام سجدہ کرے گا تو اس سے سجد ہ تلاوت

بہر حال ادا ہوجائے گانیت کرے بانہ کرے پھرنیت کی کیا حاجت۔ (1) (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

مست 🛪 🤫 🦂 جہری نماز میں امام نے آیت سجدہ پڑھی تو سجدہ کرنااولی ہے اور سری میں رکوع کرنا کہ مقتدیوں کو دھوکا ((15/1))(2) i

سَسَعَانُ 🔧 🐉 امام نے سجدۂ تلاوت کیا مقتدیوں کورکوع کا گمان ہوااور رکوع میں گئے تو رکوع تو ڑ کرسجدہ کریں اور جس

نے رکوع اورایک بحدہ کیا جب بھی ہو گیااورا گررکوع کر کے دوسجد ہے کر لیے تواس کی نماز گئی۔ ⁽³⁾ (درمختار)

سنتان اس 💨 🚽 مصلّی سجدهٔ تلاوت بھول گیارکوع پاسجده یا قعده میں یادآ یا تواسی وقت سجده کرلے پھرجس رکن میں تھااس کی طرفعود کریے یعنی رکوع میں تھا تو سحدہ کر کے رکوع میں واپس ہو وعلی بذالقیاس اورا گراس رکن کا اعادہ نہ کہا جب بھی نماز ہوگئے۔(4)(عالمگیری) مگر قعد ۂ اخیرہ کا اعادہ فرض ہے کہ تجدہ سے قعدہ باطل ہوجا تا ہے۔

سَسَعَالُ اللهِ ال

سناہو۔ یو ہیں اگرآیت پڑھی اور وہی آیت دوسرے سے تن بھی جب بھی ایک ہی سجدہ واجب ہوگا۔ ⁽⁵⁾ (درمختار ، ردا کختار)

مَسِيًّا ﴾ ﴿ يرْ صنح والے نے کئی مجلسوں میں ایک آیت بار بار پڑھی اور سننے والے کی مجلس نہ بدلی تو پڑھنے والاجتنی مجلسوں میں بڑھے گااس پراتنے ہی سجدے واجب ہوں گے اور سننے والے برایک اوراگراس کاعکس ہے یعنی پڑھنے والا ایک مجلس میں بار بار پڑھتار ہااور سننے والے کی مجلس بدلتی رہی تو پڑھنے والے پرایک سجدہ واجب ہوگا اور سننے والے براتنے جتنی مجلسون میں سُنا۔ (6) (عالمگیری)

مَسِيَّالُهُ ٢٣٠﴾ مجلس ميں آيت پڑھي ياسُني اور بجدہ کرليا پھراسي مجلس ميں وہي آيت پڑھي ياسُني تو وہي پہلا سجدہ کافي

ہے۔⁽⁷⁾(ورمختار)

1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٧.

2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٨.

3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٩٠٧.

الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٤.

الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٢١٢.

6 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٤.

🕡 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٢١٢.

ﷺ ایک مجلس میں چند بارآیت بڑھی یاسُنی اورآخر میں اتنی ہی بارسجدہ کرنا چاہے تویہ بھی خلاف مستحب ہے بلکہ ایک ہی بار کرے، بخلاف وُرودشریف کے کہ نام اقدس لیا یا سنا تو ایک بار وُرودشریف واجب اور ہر بارمستحب۔ (1) (رواکختار)

مَسْعَالُ 🔭 🐣 دوایک لقمه کھانے ، دوایک گھونٹ پینے ، کھڑے ہوجانے ، دوایک قدم چلنے،سلام کا جواب دینے ، دو ایک بات کرنے، مکان کے ایک گوشہ سے دوسرے کی طرف چلے جانے ہے مجلس نہ بدلے گی ، ہاں اگر مکان بڑا ہے جیسے شاہی محل توایسے مکان میں ایک گوشہ سے دوسرے میں جانے سے مجلس بدل جائے گی۔کشتی میں ہے اورکشتی چل رہی ہے مجلس نہ بدلے گی۔ریل کا بھی یہی تھم ہونا چاہیے، جانوریرسوار ہےاوروہ چل رہاہے تو مجلس بدل رہی ہے ہاں اگرسواری پرنمازیڑھ رہا ہے تو نہ بدلے گی ، تین لقمے کھانے ، تین گھونٹ پینے ، تین کلمے بولنے ، تین قدم میدان میں چلنے ، نکاح یاخرید وفروخت کرنے ، لیٹ کر سوجانے سےمجلس بدل جائے گی۔⁽²⁾(عالمگیری،غنیہ ، درمختار وغیر ہا) ،

سواری پرنماز بیر هتاہے اورکوئی شخص ساتھ چل رہاہے یا وہ بھی سوار ہے مگرنماز میں نہیں ،الیی حالت میں اگرآیت باربار پڑھی تواس پرایک تحدہ واجب ہے اور ساتھ والے پراتنے جتنی بارسُنا۔⁽³⁾ (درمختار، رواکختار)

کے پیچیے پھرنا،عورت کا بچیکوؤودھ پلانا،ان سب صورتوں میں مجلس بدل جاتی ہے جتنی باریڑھے گایائنے گا اتنے سجدے واجب ہوں گے۔⁽⁴⁾ (غنیہ ، درمختار وغیر ہما) یہی تھم کولو کے بیل کے پیچھے چلنے کا ہونا حیا ہے۔

کہ بیمل کثیرہے۔ (⁵⁾ (ردالحتار)

سب 😘 💨 💎 کسی مجلس میں دیر تک بیٹھنا قراءت، نتیجے تہلیل، درس وعظ میں مشغول ہونامجلس کونہیں بدلے گا اورا گر

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٢١٧، ٧١٧.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٤.

و "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٣٠٥.

و "الدرالمختار" كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٢ _ ٧١٦.

- ③ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٢١٦.
 - 4 المرجع السابق، ص١٧١.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص١٦.

🦥 دونوں باریڑھنے کے درمیان کوئی دنیا کا کام کیا مثلاً کپڑ اسیناوغیرہ تومجلس بدل گئی۔ (1) (روالحتار)

سن المراق المراق المراقب المرا کے لیے دوبارہ سجدہ کرے اور اگر پہلے نہ کیا تھا تو یہی اس کے بھی قائم مقام ہوگیا بشرطیکہ آیت پڑھنے اورنماز کے درمیان کوئی

اجنبی فعل فاصل نه ہواورا گرنه پہلے ہجدہ کیا نه نماز میں تو دونوں ساقط ہو گئے اور گنہگار ہوا تو بہکرے۔ (2) (درمختار ، ردالحتار) مسئ کی ۲۰ ایک رکعت میں بار باروہی آیت پڑھی توایک ہی تجدہ کافی ہے،خواہ چند بار پڑھ کر سجدہ کیایا ایک بار پڑھ

کر سجدہ کیا پھر دوبارہ سہ بارہ آیت پڑھی۔ یو ہیں اگرا یک نماز کی سب رکعتوں میں یا دونتین میں وہی آیت پڑھی توسب کے لیے ایک سجدہ کافی ہے۔(3)(عالمگیری)

مسئ المناسم کے بعداسی مجلس میں آیت تحدہ پڑھی اور تجدہ کرلیا پھرسلام کے بعداسی مجلس میں وہی آیت پڑھی تواگر کلام نہ کیا تھا تو وہی نماز والاسجدہ اس کے قائم مقام بھی ہے اور کلام کرلیا تھا تو دوبارہ سجدہ کرے اورا گرنماز میں سجدہ نہ کیا تھا پھر سلام پھیرنے کے بعدو ہی آیت پڑھی توایک سجدہ کرے بنماز والاساقط ہو گیا۔ (⁴⁾ (خانیہ ،غنیہ ، عالمگیری ،ردالحتار)

مستان کی پھروہی آیت سجدہ پڑھی اور سجدہ کیا پھر بے وضو ہوا اور وضو کر کے بنا کی پھروہی آیت پڑھی تو دوسرا سجدہ واجب نہ ہوا اور اگر بنا کے بعد دوسرے سے وہی آیت سنی تو دوسرا واجب ہے اور بیددوسراسجدہ نماز کے بعد کرے۔ (5) (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ ایک مجلس میں سجدہ کی چندآ بیتیں پڑھیں تواتنے ہی سجدے کرےایک کافی نہیں۔(6) (عامهٔ کتب)

سَسَعَالُ ۵۲﴾ پوری سورت پڑھنااورآیت تجدہ چھوڑ دینا مکرو وقح کمی ہے اورصرف آیت تحدہ کے پڑھنے میں کراہت

نہیں، مگر بہتریہ ہے کہ دوا یک آیت پہلے یابعد کی ملالے۔⁽⁷⁾ (درمختار وغیرہ)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٦.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص ٧١١.
- 3 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص٥٥١.
 - 4 المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص١٧١.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص٥٦١.
 - 6 "شرح الوقاية"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج١، ص٢٣٢.
 - 🤿 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٧، وغيره.

🔌 سامعین کا حال معلوم نه بوکه آماده ہیں یانہیں جب بھی آ ہستہ پڑھنا بہتر ہونا چاہیے۔ ⁽¹⁾ (ردالحتار)

مستان ۵۸ ﷺ آیت مجدہ پڑھی گئی مگر کام میں مشغولی کے سبب نہ سنی تواضح ہیے ہے کہ مجدہ واجب نہیں ، مگر بہت سے علما

كتبع بين كها كرچه نه شنى سجده واجب موكيا_(2) (درمخار، ردالحتار) فائله هُ المهم: جسم مقصد کے لیے ایک مجلس میں سجدہ کی سب آیتیں پڑھ کرسجدے کرے اللہ عزوجل اس کا مقصد پورا

فرمادے گا۔خواہ ایک ایک آیت پڑھ کراس کا سجدہ کرتا جائے یا سب کو پڑھ کر آخر میں چودہ سجدے کرلے۔⁽³⁾ (غنیہ ، درمختار

وغيرهما)

مَسَعَانُهُ ٥٩﴾ زمین پرآیت سجده پڑھی تو بہ سجدہ سواری پرنہیں کرسکتا مگرخوف کی حالت ہوتو ہوسکتا ہے اور سواری پر آیت برهی توسفری حالت میں سواری پر بجدہ کرسکتا ہے۔(4) (عالمگیری)

مسئانی 💎 مرض کی حالت میں اشارہ سے بھی سجدہ ادا ہوجائے گا۔ یو ہیں سفر میں سواری پراشارہ سے ہوجائے گا۔ (⁵⁾

(عالمگيري وغيره)

مَسْعًا ﴾ الله الله المحتمد من اور برس مي نمازول ميں اورجس نماز ميں جماعت عظيم ہوآيت بحدہ امام کو پڑھنا مکروہ ہے۔ ہاں اگر آیت کے بعد فور اُرکوع و بجو دکر دے اور رکوع میں نیت نہ کرے تو کراہت نہیں۔ ⁽⁶⁾ (غنیہ ، درمختار ، رداکختار)

مسئل ۱۳ 💨 منبر پر آیت تحدہ پڑھی تو خوداُس پر اور سننے والوں پر تبحدہ واجب ہے اور جھوں نے نہ سنی ان پر

نہیں ۔ ⁽⁷⁾ (درمختار ، ر دالحتار)

مَسِيَّاكُ اللهِ صَلَّا اللهِ اللهِ

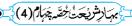
- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص١١٨.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص١١٨.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص١٩٠.

و "غنية المتملى"، سجدة التلاوة، ص٧٠٥. وغيرهما

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سحود التلاوة، ج١، ص١٣٥.
 - 5 المرجع السابق.
 - 6 "غنية المتملى"، سجدة التلاوة، ص٧٠٥.

و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجدة الشكر، ج٢، ص٧٢٠.

7 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجدة الشكر، ج٢، ص٧٢٠.



نمازمسافركابيان

فعت پرسجدہ کرنامستحب ہے اور اس کاطریقہ وہی ہے جوسجدہ تلاوت کا ہے۔ (1) (عالمگیری،روالحتار) ستان استان استان استان المراده و المستان المراده المستان المراده و المستان المراده و المسترى المستان المستان

نمازِ مسافر کا بیان

اللهوزوجل فرما تاہے:

﴿ وَإِذَا ضَرَبْتُمُ فِي الْآرُ مِن فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحُ أَنْ تَقْصُرُ وَامِنَ الصَّلَو قِ أَن خِفْتُمُ أَن يَقْتِنَكُمُ الَّذِينَ

جبتم زمین میں سفر کرو تو تم پراس کا گناہ نہیں کہ نماز میں قصر کر واگرخوف ہو کہ کا فرشھیں فتنہ میں ڈالیس گے۔

خلینٹ 🕽 🔑 مسلم شریف میں ہے، یعلی بن امپیرض اللہ تعالی عنہ کہتے ہیں: امپر المؤمنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہ ہے میں نے عرض کی ، کہاللّٰدعز وجل نے تو یہ فر مایا:

﴿ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَوةِ ۚ إِنْ خِفْتُمُ أَنْ يَقْتِكُمُ الَّذِيثِ كَفَرُوا ۗ (4)

اوراب تولوگ امن میں ہیں (یعنی امن کی حالت میں قصر نہ ہونا چاہیے) فر مایا: اس کا مجھے بھی تعجب ہوا تھا میں نے

رسول الله صلى الله تعالى عليه بلم سے سوال كيا ارشاوفر مايا: بيرا يك صدقه ہے كه الله تعالىٰ نے تم برتصد ق فر مايا اس كا صدقه قبول كرو۔ (⁵⁾

خلینٹ 🕇 🥕 صحیح بخاری وصححمسلم میں مروی ، که حارثه بن وہب خزاعی رضی اللہ تعالی عنہ کہتے ہیں:'' رسول اللہ

صلى الله تعالى عليه وسلم نے منى ميں دور كعت نماز بيرُ هائى حالا نكه نه جارى اتنى زياد ه تعدا دبھى تھى نهاس قدرامن -'' (6)

خلینٹ 👚 🐣 صحیحین میں انس رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ ' رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مدینہ میں ظہر کی حیار

ر گغتیں پڑھیں اور ذی الحلیفه (7) میں عصر کی دور گغتیں ۔'' (8)

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٦. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجدة الشكر، ج٢، ص ٧٢٠.
 - 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٦.
 - 3 پ٥، النسآء: ١٠١.
- شصحیح مسلم"، كتاب صلاة المسافرین و قصرها، باب صلاة المسافرین و قصرها، الحدیث: ٦٨٦، ص٣٤٧.
 - 6 "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب الصلاة بمِنى، الحديث: ١٦٥٦، ج١، ص٥٥٥.
 - 🗗 مدینه منوره سے تین میل کے فاصلہ پرایک مقام کانام ہے، یہی اصح ہے۔ (مرقاۃ) ۲امنہ
 - 🧣 🚯 "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب من بات بذي الحليفة حتى أصبح، الحديث: ١٥٤٧، ج١، ص٥٢٥.

🕏 🚽 پیٹ 🕜 🋫 تر مذی شریف میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، کہتے ہیں : میں نے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے ساتھ حضر وسفر دونوں میں نمازیں پڑھیں،حضر میں حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے ساتھ ظہر کی جیار رکعتیں پڑھیں اوراس کے بعد دو رکعت اور سفر میں ظہر کی دواوراس کے بعد دور کعت اور عصر کی دو۔اوراس کے بعد پچھٹہیں اور مغرب کی حصر وسفر میں برابرتین

ر کعتیں ،سفر وحضر کسی کی نمازِ مغرب میں قصر نہ فر ماتے اوراس کے بعد دور کعت۔ (1)

خلایث ۵ ﴾ - صحیحین میں ام المؤمنین صدیقه رضی الله تعالی عنها ہے مروی ، فر ماتی ہیں:''نماز دور کعت فرض کی گئی پھر

جب حضور (صلی الله تعالی علیه ولم) نے ججرت فر مائی تو حیار فرض کر دی گئی اور سفر کی نماز اسی پہلے فرض پر چھوڑی گئی۔'' (2)

خلینے کی ایک کی جمسلم شریف میں عبداللہ بن عباس رض اللہ تعالی عنها سے مروی ، کہتے ہیں: کہ ' اللہ عزوجل نے نبی

صلى الله تعالى عليه وملم كي زباني حضر مين حيار ركعتيس فرض كيس اورسفر مين دواورخوف مين ايك (3) لعيني امام كيساتهه_' (4) خل پیٹ ک 🔑 🚽 ابن ماجہ نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہا ہے روابیت کی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے نما زِسفر کی دو

ر گعتیں مقرر فر مائیں اور یہ پوری ہے کمنہیں یعنی اگر چہ بظاہر دور گعتیں کم ہو گئیں گر ثواب میں بیدوہی جار کی برابر ہیں۔ (5)

مسائل فقهيّه

شرعاً مسافروہ مخص ہے جوتین دن کی راہ تک جانے کے ارادہ سے بتی سے باہر ہوا۔ (6) (متون)

مَسِعًا ﴾ [الله حن سےمرادسال کاسب میں چھوٹا دن اور تین دن کی راہ سے بیمرادنہیں کہ منبح سے شام تک چلے کہ کھانے ینے ،نماز اور دیگر ضروریات کے لیے گھمرنا تو ضرور ہی ہے، بلکہ مراد دن کا اکثر حصہ ہے مثلًا شروع صبح صادق سے دوپہر ڈھلنے تک چلا پھرٹھبر گیا پھردوسرےاور تیسرے دن یو ہیں کیا تواتنی دورتک کی راہ کومسافت سفرکہیں گے دو پہر کے بعد تک چلنے میں بھی برابر چلنا مراونہیں بلکہ عادةً جتنا آرام لینا چاہے اس قدراس درمیان میں ظہرتا بھی جائے اور چلنے سے مرادمعتدل حال ہے کہ نہ تیز ہونہ سُست ، خشکی میں آ دمی اور اونٹ کی درمیانی حیال کا اعتبار ہے اور پہاڑی راستہ میں اسی حساب سے جواس کے لیے

- "جامع الترمذي"، أبواب السفر، باب ماجاء في التطوع في السفر، الحديث: ٥٥٧، ج٢، ص٧٧.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب مناقب الأنصار، باب التاريخ... إلخ، الحديث: ٣٩٣٥، ج٢، ص ٢٠٤.
- ٣٤٧٠٠٠ "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب صلاة المسافرين و قصرها، الحديث: ٦٨٧، ص٣٤٧.
 - عنی امام کے ساتھ صرف ایک رکعت بڑھے گا اور ایک رکعت اسلیے۔
- سنن ابن ماحه"، أبواب إقامة الصلوات و السنة فيها، باب ماحاء في الوتر في السفر، الحديث: ١٩٤، ٢٠ ج٢، ص٤٥.
 - 🐾 🙃 "الفتاوي الرضوية"، ج٨، ص٢٤٣.

نظر المعلم المستحدد المان المستحدد المستحدد المستحدد المستحد المستحدد المس

سبال کا چھوٹا دن اس جگہ کا معتبر ہے جہاں دن رات معتدل ہوں یعنی چھوٹے دن کے اکثر حصہ میں منزل طے کر سکتے ہوں الہذا جن شہروں میں بہت چھوٹا دن ہوتا ہے جیسے بلغار کہ وہاں بہت چھوٹا دن ہوتا ہے،الہذا وہاں کے دن کا اعتبار نہیں۔(2) (ردالمحتار)

 $^{(3)}$ کے حساب سے اس کی مقدار $^{(4)}$ میل ہے۔

سَسَعَانُ کی جگہ جانے کے دوراستے ہیں ایک سے مسافت سفر ہے دوسرے سے نہیں توجس راستہ سے بیجائے گا اس کا اعتبار ہے، نزدیک والے راستے سے گیا تو مسافر نہیں اور دور والے سے گیا تو ہے، اگر چیاس راستہ کے اختیار کرنے میں

- € "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص ٢٢٤.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص ٥٧٠. .
- سبر ارشریعت کے مطبوعہ نسخوں میں فتاوی رضویہ کے حوالے سے ۵۵ میں مرقوم ہے، یہ کتابت کی فلطی معلوم ہوتی ہے اس لیے کہ میں میں فتاوی رضویہ '(فیدیم)، ج۳، ص ۲۲۹، میں مجد دِاعظم اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان میں مجد دِاعظم اعلیٰ حضرت امام احمد اعلیٰ حضرت اعلیٰ حضرت امام احمد اعلیٰ حضرت اعلیٰ حض

فقیه اعظم ہندعلام مفتی محمر شریف الحق امجدی علیہ رحمۃ اللہ القوی ''نزھۃ القاری''، جلد 2 ، صفحہ 655 پر فرماتے ہیں:''مجد واعظم اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحلٰ نے ظاہر مذہب کو اختیار فرما کرتین منزل کی بید مسافت (ساڑھے ستاون میل) بیان فرمائی ہے۔ ''حدالمتار''میں لکھتے ہیں:

والمعتاد المعهود في بلادنا أن كل مرحلة ١٢ كوس، وقد جربت مرارا كثيرة بمواضع شهيرة أن الميل الرائج في بلادنا خمسة أثمان كوس المعتبر ههنا، فاذا ضربت الاكواس في ٨، وقسم الحاصل على ٥ كانت أميال رحلة واحدة ١٩٥٥، وأميال مسيرة ثلاثة أيام ٧٥-٥٧، أعنى ٢-٥٧.

("جدالممتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج١، ص٩٥٥.)

ہمارے بلاد میں معناد ومعہودیہ ہے کہ ہرمنزل بارہ کوئ کی ہوتی ہے میں نے بار بار بکٹرت مشہور جگہوں میں آنر مایا ہے کہ آئ وقت ہمارے بلاد میں جومیل رائج ہے۔وہ $\frac{\Delta}{\Lambda}$ کوئ جب کوسوں کو ۸ میں ضرب دیں اور حاصل ضرب کو ۵ پرتقسیم کریں تو حاصل قسمت میں ہوگا، اب ایک منزل 19 میں کی ہوئی اور تین دن کی مسافت 20 میں ہے۔ میں یعنی 20-۲ میں۔''

("نزهة القارى شرح صحيح البخارى"، ابواب تقصير الصلوة، ج٢، ص٥٦٦.)

اس کی کوئی غرض صحیح نه ہو۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

سَسَعَانُ کُ اَن میں ایک دودن کا ہے دوراتے ہیں ،ایک دریا کا دوسراخشکی کاان میں ایک دودن کا ہے دوسرا تین دن کا ، تین

دن والے سے جائے تومسافر ہے در ننہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُ اللّٰ ہے۔ تین دن کی راہ کو تیز سواری پر دودن یا کم میں طے کرے تو مسافر ہی ہے اور تین دن ہے کم کے راستہ کو

زیاده دنوں میں طے کیا تو مسافرنہیں ۔⁽³⁾ (درمختار ، عالمگیری)

مسئان کے بین دن کی راہ کوکسی ولی نے اپنی کرامت سے بہت تھوڑے زمانہ میں طے کیا تو ظاہر یہی ہے کہ مسافر کے احکام اس کے لیے ثابت ہوں مگرامام ابن ہمام نے اس کا مسافر ہونامستبعد فرمایا۔ (۱) (روالمحتار)

مسئل کی آبادی ہے باہر ہوجائے شہر میں مسئل کی آبادی ہے باہر ہوجائے شہر میں ہے تو شہر سے ،گاؤں میں ہے تو گاؤں سے اور شہروالے کے لیے یہ بھی ضرور ہے کہ شہر کے آس پاس جوآبادی شہر سے متصل ہے اس ہوجائے۔ (درمختار، ردالمختار)

مسئل الم المربوجانا ضرور نہیں۔ یو ہیں شہر کے لیے اس گاؤں سے باہر ہوجانا ضرور نہیں۔ یو ہیں شہر کے متصل باغ ہوں اگر چہان کے نگہبان اور کام کرنے والے ان میں رہتے ہوں ان باغوں سے نکل جانا ضروری نہیں۔ (6) (رداختار)

مستان ان علی این از میدان ، کوڑا بھینکنے کی موں کے لیے ہومثلاً قبرستان ، گھوڑ دوڑ کا میدان ، کوڑا بھینکنے کی جگہا گریشہرے متصل ہو تو اس سے باہر ہوجا ناضروری ہے۔اورا گرشہروفنا کے درمیان فاصلہ ہو تو نہیں۔⁽⁷⁾ (ردامختار)

- ۱۳۸۰ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨.
 و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٢٢٦.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج ١، ص ١٣٩.
 و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص ٢٢٦.
 - 4. "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٢٢٧.
 - 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٢.
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٢.
 - 🦝 🗗 المرجع السابق.

بازمسافر كابيان

ﷺ مسئل<u>اً اللہ</u> آبادی سے باہر ہونے سے مرادیہ ہے کہ جدھر جار ہاہے اس طرف آبادی ختم ہو جائے اگر چہاس کی

محاذات میں دوسری طرف ختم نه ہوئی ہو۔ (1) (غنیه)

مسئ ان استان السبال کے کوئی محلّہ پہلے شہر سے ملا ہوا تھا مگر اب جدا ہو گیا تو اس سے باہر ہونا بھی ضروری ہے اور جومحلّہ ویران ہو گیا استعمال کے اور جومحلّہ ویران ہو گیا استعمال کی استحمال کی استحما

خواہ شہر سے پہلے مصل تھایا اب بھی متصل ہے اس سے باہر ہونا شرط نہیں۔(2) (غنیہ ،ردالحتار)

مَسَعَلَهُ اللهِ اللهِ

راده بو۔

مسئال ال کودو پڑھے اس کے حق میں دوہی کے مناز میں قصر کر سے یعنی چار رکعت والے فرض کودو پڑھے اس کے حق میں دوہی رکعتیں پوری نماز ہے اور قصداً چار پڑھیں اور دو پر قعدہ کیا تو فرض ادا ہو گئے اور پچپلی دور کعتیں نفل ہو ئیں مگر گئرگار وستی نار ہوا کہ واجب ترک کیا لہذا تو بہ کر سے اور دور کعت پر تعدہ نہ کیا تو فرض ادا نہ ہوئے اور وہ نماز نفل ہوگئی ہاں اگر تیسری رکعت کا سجدہ کرنے سے پیشتر اقامت کی نیت کر لی تو فرض باطل نہ ہوں گے مگر قیام ورکوع کا اعادہ کرنا ہوگا اور اگر تیسری کے سجدہ میں نیت کی تو اب فرض جاتے رہے، یو ہیں اگر پہلی دونوں یا ایک میں قراءت نہ کی نماز فاسد ہوگئی۔ (مرابی، عالمگیری، در مختار وغیر ہا)

- 1 "غنية المتملي"، فصل في صلاة المسافر، ص٥٣٦.
- المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٣.
 - 3 "غنية المتملي"، فصل في صلاة المسافر، ص٥٣٧.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٤، ٧٢٤.

- ۲۷۰ س. "الفتاوى الرضوية"، ج٨، ص ٢٧٠.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص٩٦٠.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٣.
 - و "الهداية"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج١، ص٠٨.

يثرُش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلام)

مسافر کے احکام اس کے لیے ثابت ہوں گے۔ ⁽¹⁾ (عامۂ کتب)

<u> مسئالہ ۱۸ ﴾</u> کافرتین دن کی راہ کے ارادہ سے نکلا دودن کے بعد مسلمان ہوگیا تو اس کے لیے قصر ہے اور نابالغ تین

دن کی راہ کے قصد سے نکلا اور راستہ میں بالغ ہوگیا، اب سے جہاں جانا ہے تین دن کی راہ نہ ہو تو پوری پڑھے چیض والی پاک بری رہے ہوں کی راہ نے قطد سے نکلا اور راستہ میں بالغ ہوگیا، اب سے جہاں جانا ہے تین دن کی راہ نہ ہو تو پوری پڑھے

ہو کی اور اب سے تین دن کی راہ نہ ہو تو پوری پڑھے۔⁽²⁾ (درمخار)

<u> سستانہ 19 ہے۔</u> بادشاہ نے رعایا کی تغییش حال کے لیے مُلک میں سفر کیا تو قصر نہ کر ہے جبکہ پہلاارادہ متصل تین منزل کا نہ

ہوااورا گرکسی اورغرض کے لیے ہواورمسافت ِسفر ہو تو قصر کرے۔⁽³⁾ (درمختار ،ردالمختار) مسئل ایک سنتوں میں قصر نہیں بلکہ پوری پڑھی جائیں گی البتہ خوف اور روار وی⁽⁴⁾ کی حالت میں معاف ہیں اور

امن کی حالت میں بڑھی جائیں۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

سَسَعَالُ ٢٦ ﴾ نيتِ اقامت صحيح بونے کے ليے چوشرطيس ہيں:

- (۱) چاناترک کرےاگر چلنے کی حالت میں اقامت کی نیت کی تو مقیم نہیں۔
- (٢) وهجكما قامت كى صلاحيت ركفتى موجنگل يادريا غير آباد ٹاپُو ميں اقامت كى نيت كى مقيم نه موا۔
 - (٣) پندره دن همرنے کی نیت ہواس سے کم تھر نے کی نیت سے مقیم نہ ہوگا۔
- (۴) یہ نیت ایک ہی جگہ تھہرنے کی ہواگر دوموضعوں میں پندرہ دن تھہرنے کا ارادہ ہو، مثلاً ایک میں دس دن دوسرے میں یانج دن کا تومقیم نہ ہوگا۔
 - 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص ٢٤٧.
- ③ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٥٧٤.
 - €..... یعنی جلدی۔
 - الفتاوى الهندية "، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج ١، ص ١٣٩.
 - 6 المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٨.

(۵) اینااراده مستقل رکھتا یعنی کسی کا تابع نہ ہو۔

(۲) اس کی حالت اس کے ارادہ کے منافی ندہو۔ (1) (عالمگیری، روالحتار)

<u> مسئالہ ۲۳ گ</u> مسافر جار ہا ہے اور ابھی شہریا گاؤں میں پہنچانہیں اور نیت اقامت کرلی تو مقیم نہ ہوا اور پہنچنے کے بعد نیت کی تو ہو گیا اگر چہ ابھی مکان وغیرہ کی تلاش میں پھررہا ہو۔⁽²⁾ (عالمگیری)

مسکان کی نیت مسلمانوں کا کشکر کسی جنگل میں پڑاؤ ڈال دےاور ڈیرہ خیمہ نصب کر کے بیندرہ دن گھہرنے کی نیت کرلے تو مقیم نہ ہوااور جولوگ جنگل میں خیموں میں رہتے ہیں وہ اگر جنگل میں خیمہ ڈال کر بیندرہ دن کی نیت سے گھہریں مقیم ہوجا کیں گے، بشرطیکہ وہاں یانی اور گھاس وغیرہ دستیاب ہوں کہ ان کے لیے جنگل ویبا ہی ہے جیسے ہمارے لیے شہراور

گاؤں۔⁽³⁾(درمختار)

سَعَالَ الله على الله الماره دن طهر نے کی نبیت کی اور دونوں مستقل ہوں جیسے ملّہ ومنی تو مقیم نہ ہوااور ایک دوسرے کی تابع ہو جیسے شہراوراس کی فنا تو مقیم ہوگیا۔ (4) (عالمگیری، درمختار)

اگر پہلے وہاں گیا جہاں دن میں گھرنے کا ارادہ ہے تو مقیم نہ ہوا اور اگر پہلے وہاں گیا جہاں رات میں رہنے کا قصد ہے تو مقیم ہوگیا، پھر یہاں سے دوسری بستی میں گیا جہاں ہوا۔ وہاں گیا جہاں رات میں رہنے کا قصد ہے تو مقیم ہوگیا، پھر یہاں سے دوسری بستی میں گیا جب بھی مقیم ہے۔ (⁵⁾ (عالمگیری، ردالحتار)

مسئا 100 سافراگراپنا اراده مین مستقل نه به و تو پندره دن کی نیت سے مقیم نه به وگا، مثلاً عورت جس کامهر معجّل شوہر کے ذمتہ باقی نه به وکه شوہر کی تابع ہے اس کی اپنی نیت بیکار ہے اور غلام غیر مکاتب کداپنے مالک کا تابع ہے اور تشکری جس کو بیت المال یا بادشاہ کی طرف سے خوراک ملتی ہے کہ یہ اپنے سردار کا تابع ہے اور نوکر کہ بیا پنے آتا کا تابع ہے اور قیدی کہ یہ قید کرنے

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٣.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج ١، ص ١٣٩.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج ٢، ص ٧٣٢.
- 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج ١، ص ١٤٠. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج ٢، ص ٢٢٩.
- آلفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج ١، ص ١٤٠.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج ٢، ص ٧٣٠.

🤏 والے کا تابع ہےاور جس مالدار پر تاوان لازم آیا اور شاگر دجس کواستاذ کے یہاں سے کھا ناماتا ہے کہ بیا بیغ استاذ کا تابع ہےاور نیک بیٹا اینے باپ کا تابع ہے ان سب کی اپنی نیت بے کار ہے بلکہ جن کے تابع ہیں ان کی نیتوں کا اعتبار ہے ان کی نیت ا قامت کی ہے تو تابع بھی مقیم میں ان کی نیت ا قامت کی نہیں تو ریبھی مسافر ہیں۔ (1) (درمخار، ردامحتار، عالمگیری)

سَسَالُ ٢٨﴾ ﴿ عورت كا مهرمجلُّ باتى ہے تو اسے اختیار ہے كہ اپنے نفس كوروك لے للبذا اس وقت تالع نہيں۔ يو ہیں ا م کا تب غلام کوبغیر ما لک کی اجازت کے سفر کا اختیار ہے لہذا تا بعنہیں اور جوسیاہی یاوشاہ یا بیت المال سے خوراک نہیں لیتاوہ تابع نہیں اورا جیر جو ماہانہ یابرس پرنو کرنہیں بلکہ روزانہاس کا مقرر ہے وہ دن بھر کام کرنے کے بعداجارہ فتخ کرسکتا ہے لہٰذا تابع نہیں اور جس مسلمان کورشن نے قید کیا اگر معلوم ہے کہ تین دن کی راہ کو لے جائے گا تو قصر کرے اور معلوم نہ ہو تو اس سے دریافت کرے، جو ہتائے اس کےموافق عمل کرےاور نہ ہتایا تو اگر معلوم ہے کہ وہ دشمن مقیم ہے تو پوری پڑھے اور مسافر ہے تو قصر کرے اور بیکھی معلوم نہ ہو سکے تو جب تک تین دن کی راہ طے نہ کر لے، پوری پڑھے اور جس پر تاوان لا زم آیا وہ سفر میں تھا اور بکڑا گیاا گرنادار ہے تو قصر کرےاور مالدار ہےاور پندرہ دن کےاندردینے کاارادہ ہے یا پچھارادہ نہیں جب بھی قصر کرے اوریدارادہ ہے کنہیں دے گا تو پوری پڑھے۔(2) (ردالحتار وغیرہ)

مستان اس کے بموجب عمل کرے اورا گراس نے متبوع (3) سے سوال کرے وہ جو کیے اس کے بموجب عمل کرے اورا گراس نے کچھ نہ بتایا تو دیکھے کہ قیم ہے یا مسافرا گرمقیم ہے تواپیخ کومقیم شمجھے اور مسافر ہے تو مسافر اور بیکھی نہ معلوم ، تو تین دن کی راہ طے کرنے کے بعد قصر کرےاس سے پہلے پوری پڑھے۔اورا گرسوال نہ کرے تو وہی تھکم ہے کہ سوال کیا اور پچھ جواب نه ملا ه ⁽⁴⁾ (ردالحتار)

ست اندھے کے ساتھ کوئی پکڑ کرلے جانے والا ہے اگریداس کا نوکر ہے تو نابینا کی اپنی نیت کا اعتبار ہے اور اگرمحض احسان کے طور براس کے ساتھ ہے تواس کی نیت کا اعتبار ہے۔ (5) (ردالحتار)

مَسِيَّاكُ اللَّهِ ﴿ جَوْسِيابِي سردار كا تابع تھااورلشكر كوشكست ہوئي اورسب متفرق ہوگئے تواب تابع نہيں بلكہا قامت وسفر

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص ١٤١.
- و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص ١ ٧٤٤_٤٠.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٤٧، وغيره.
 - **3** یعنی جس کے تابع ہے۔
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي ... إلخ، ج٢، ص٧٤٣.
 - 🧝 🗗 المرجع السابق.

پین میں خوداس کی اپنی نیت کالحاظ ہے۔⁽¹⁾ (ردالمحتار)

علام اپنے مالک کے ساتھ سفر میں تھا۔ مالک نے کسی مقیم کے ہاتھ اسے نیج ڈالا اگر نماز میں اسے اس کاعلم

تھا اور دو پڑھیں تو پھر پڑھے۔ یو ہیں اگر غلام نماز میں تھا اور ما لک نے اقامت کی نیت کر لی، اگر جان کر دو پڑھیں تو پھر مڑھے۔⁽²⁾(ردالحتار)

تراکراس غلام سے خدمت لینے میں باری مقرر ہے تو مقیم کی باری کے دن چار بڑھے اور مسافر کی باری کے دن دو۔اور باری مقرر نہ ہو تو ہر وزچار بڑھے اور مسافر کی باری کے دن دو۔اور باری مقرر نہ ہو تو ہر روز چار بڑھے اور دورکعت برقعدہ فرض ہے۔ (3) (عالمگیری)

سَمَعُ الله کیساتھ جانے کا ارادہ ہے اور یہ معلوم ہے کہ اور دین کی اور یہ معلوم ہے کہ قافلہ کیساتھ جانے کا ارادہ ہے اور یہ معلوم ہے کہ قافلہ پندرہ دن کے بعد جائے گا تووہ قیم ہے اگر چاقامت کی نیت نہیں۔(5) (درمخار)

سستان السلامی مسافر کسی کام کے لیے پاساتھیوں کے انتظار میں دو چارروزیا تیرہ چودہ دن کی نیت سے طلم رایا بیارادہ ہے کہ کام ہوجائے گا تو چلاجائے گا اور دونوں صورتوں میں اگر آجکل آجکل کرتے برسیں گزرجا کیں جب مسافر ہی ہے، نماز قصر پڑھے۔ (6) (عالمگیری وغیرہ)

مَسِيَّالُةُ ٢٤٧﴾ مسلمانوں كالشكر دارالحرب كو گيايا دارالحرب ميں كسى قلعه كامحاصر ه كيا تومسافر ہى ہےا گرچہ بپندره دن كى

- المحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٤٧٤.
 - 2 المرجع السابق.
 - ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١٠ ص ١٤١.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص ١٤.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص ٢٢.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٩.
- 🧟 🗗 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩، وغيره .

نیت کرلی ہوا گرچہ ظاہر غلبہ ہو۔ یو ہیں اگر دارالاسلام میں باغیوں کا محاصرہ کیا ہو تو مقیم نہیں اور جو محض دارالحرب میں امان لے

کر گیااور پندره دن کی اقامت کی نیت کی تو چار پڑھے۔(1) (غنیہ ، در مختار)

پوری کریں اور اگر وہاں رہنے کا اراوہ نہیں بلکہ صرف ایک آ دھ مہینا رہ کر دارالاسلام کو چلے جائیں گے تو قصر کریں۔ ⁽²⁾ (عالمگیری)

سَمَعَانُ وَ ﴾ مسلمانوں کا لشکر دارالحرب میں گیااور غالب آیااوراس شہرکودارالاسلام بنایا تو قصر نہ کریں اورا گرمخض دو ایک ماہ رہنے کاارادہ ہے تو قصر کریں۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سین کوری پڑھے اور اگریہ صورت ہوئی کہ ایک رکعت کی نیت کی تو یہ نماز بھی پوری پڑھے اور اگریہ صورت ہوئی کہ ایک رکعت پڑھی تھی کہ وقت ختم ہوگیا اور دوسری میں اقامت کی نیت کی تو یہ نماز دوہی رکعت پڑھے اس کے بعد کی چار پڑھے ۔ یو ہیں اگر مسافر لاحق تھا اور امام بھی مسافر تھا امام کے سلام کے بعد نیتِ اقامت کی تو دوہی پڑھے اور امام بھی مسافر تھا امام کے سلام کے بعد نیتِ اقامت کی تو دوہی پڑھے اور امام کے سلام سے پیشتر نیت کی تو چار بڑھے ۔ (4) (در مختار ، ردالحتار)

سَسَعَانُهُ اللهِ اداوقضادونوں میں مقیم مسافر کی اقتدا کرسکتا ہے اور امام کے سلام کے بعدا پنی باقی دور کعتیں پڑھ لے اور ان رکعتوں میں قراءت بالکل نہ کرے بلکہ بفدر فاتحہ دیپ کھڑار ہے۔ (⁵⁾ (در مختار وغیرہ)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص ٧٣١.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص٠٤٠.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٨.
 - 🧟 🗗 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٥، وغيره .

ام مسافر ہے اور مقتری مقیم، امام کے سلام سے پہلے مقتری کھڑا ہوگیا اور سلام سے پہلے امام نے اقامت کی نیت کرلی تواگر مقتری نے تیسری کا سجدہ نہ کیا ہوتو امام کے ساتھ ہوئے، ورنہ نماز جاتی رہی اور تیسری کے سجدہ کے ساتھ ہوئے۔

بعدامام نے اقامت کی نیت کی تو متابعت نہ کرے، متابعت کرے گا تو نماز جاتی رہے گی۔(1) (ردالحتار)

سین ان مسال میں ہونا معلوم ہو چاہے کہ حکم صحت اقتدا کے لیے شرط ہے کہ امام کامقیم یا مسافر ہونا معلوم ہوخواہ نماز شروع کرتے وقت معلوم ہوا ہو یا بعد میں ،لہذا امام کو چاہیے کہ شروع کرتے وقت اپنامسافر ہونا ظاہر کردے اور شروع میں نہ کہا تو بعد نماز کہد دے کہ ابنی نماز س بوری کرلومیں مسافر ہوں۔ (2) (درمختار) اور شروع میں کہد دیا ہے جب بھی بعد میں کہد دے کہ جو

بعد مار به رسط معربی مارین پرس معلوم بوجائے۔ لوگ اس دفت موجود نہ تھانھیں بھی معلوم ہوجائے۔

سَسَعَالُ الله وقت فتم ہونے کے بعد مسافر مقیم کی اقتد انہیں کرسکتا وقت میں کرسکتا ہے اور اس صورت میں مسافر کے فرض بھی چار ہوگئے بیچکم چار رکعتی نماز کا ہے اور جن نماز ول میں قصر نہیں ان میں وقت و بعد وقت دونوں صورتوں میں اقتدا کرسکتا ہے وقت میں اقتدا اس میں اقتدا کی تھی نماز پوری کرنے سے پہلے وقت ختم ہوگیا جب بھی اقتدا صحح ہے۔ (3) (درمخار، ردالحمار)

ر ما ہے رہ میں مدون ما در ہوں رہ میں استرائی اور امام کے مذہب کے موافق وہ نماز قضاہے اور مقتذی کے مذہب براوا، مثلاً ارام شافعی لازیں میں موقت کی خفی ان کا مثل کی اور امام کے مذہب کے موافق وہ نماز قضاہے اور مقتذی کے مذہب براوا، مثلاً

امام شافعی المذہب ہے مقتدی حنفی اورا یک مثل کے بعد ظہر کی نمازاس نے اس کے پیچھے پڑھی تواقتہ الکیجے ہے۔ (۱۰ (ردامختار) مسئل کی سے مقتدی حنفیم کے پیچھے شروع کر کے فاسد کر دی تواب دوہی پڑھے گا یعنی جبکہ تنہا پڑھے یا کسی مسافر کی

اقتدا کرےاورا گر پیرمقیم کی اقتدا کی تو چار پڑھے۔⁽⁵⁾ (ردالمحتار)

مسئان <u>المسئان کی جمیم کی افتدا کی تومقتدی پربھی</u> قعدہ اولی واجب ہوگیا فرض ندر ہا تواگرامام نے قعدہ نہ کیانماز

فاسد نه ہوئی اور مقیم نے مسافر کی اقتدا کی تو مقتدی پر بھی قعد ۂ اولی فرض ہوگیا۔ ⁽⁶⁾ (درمختار ، ردامختار)

مسئلة ۴۸ اور پورې پڙھنے ميں آخروقت کا اعتبار ہے جبکہ پڑھ نہ چکا ہو، فرض کروکسی نے نماز نہ پڑھی تھی اور

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٥.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٥ _ ٧٣٦.
- 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٦.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٦.
 - **1** المرجع السابق.
- 6 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٦.

وقت اتناباتی ره گیاہے کہ اللہ اکبر کہہ لے اب مسافر ہو گیا تو قصر کرے اور مسافر تھا اسوفت اقامت کی نیت کی تو چار پڑھے۔ (1) 🌏

(درمختار)

سَعَالَ ٢٩٥٤ عن ظهرى نماز وقت ميں پڑھنے كے بعد سفر كيا اور عصرى دو پڑھيں پھر کسى ضرورت ہے مكان پرواپس آيا اور انھى عصر كاوقت باقى ہے، اب معلوم ہوا كەدونو ل نمازيں بے دضو ہوئيں تو ظهركى دو پڑھے اور عصر كى چار اورا گر ظهروع صركى پڑھ

ہ میں سر مورت ہوں ہے ہیں ہوا ہوا معدودوں ماریں ہوا کہ دونوں نمازیں بے وضو پڑھی تھیں تو ظہر کی چار پڑھے اور عصر کی دو۔ (2) کرآ فتاب ڈو بنے سے پہلے سفر کیا اور معلوم ہوا کہ دونوں نمازیں بے وضو پڑھی تھیں تو ظہر کی چار پڑھے اور عصر کی دو۔ (2) (عالمگیری، دوالمحتار)

سَمَانُ ٤٥٠ مافركوسهو بوااور دوركعت برسلام پھيرنے كے بعد نيتِ اقامت كى اس نماز كے ق ميں مقيم نه ہوااور سجد هُ

سہوساقط ہوگیا اور سجدہ کرنے کے بعد نیت کی توضیح ہے اور جار رکعت پڑھنا فرض ، اگر چدایک ہی سجدہ کے بعد نیت کی۔ (3) (عالمگیری)

مسئل الم بے وضو ہوا اور کسی مسافر وں کی امامت کی ، اثنائے نماز (4) میں امام بے وضو ہوا اور کسی مسافر کو خلیفہ کیا ، خلیفہ نے اقامت کی نیت کی تو اس کے پیچھے جو مسافر ہیں ان کی نمازیں دو ہی رکعت رہیں گی۔ یو ہیں اگر مقیم کو خلیفہ کیا جب بھی مقتدی مسافر دو ہی پڑھیں اور اگر امام نے حدث کے بعد مسجد سے نکلنے سے پہلے اقامت کی نیت کی تو چار پڑھیں۔ (5) (عالمگیری)

مسئل ۵۲ کے وطن دوسم ہے۔

- (۱) وطن اصلی ـ
- (۲) وطن ا قامت_

وطن اصلی: وہ جلہ ہے جہاں اس کی پیدائش ہے یا اس کے گھر کے لوگ وہاں رہتے ہیں یا وہاں سکونت کر لی اور بیہ

ارادہ ہے کہ یہاں سے نہ جائے گا۔

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٨.
- "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤١.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٨.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص ١٤٢-١٤٢.
 - **4**..... یعنی نماز کے دوران۔
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١٠ ص١٤٢.

وطن اقامت: وه جله ب كه مسافر نے بندره دن ياس سے زياده مشہر نے كاوبال اراده كيا ہو۔(1) (عالمكيرى)

<u>مَسَعَانَةُ هَا ﴾</u> مسافر نے کہیں شادی کرلی اگر چہ وہاں پندرہ دن گھہر نے کاارادہ نہ ہو، تقیم ہو گیااور دوشہروں میں اس کی

دوعورتیں رہتی ہوں تو دونوں جگہ پہنچتے ہی مقیم ہوجائے گا۔⁽²⁾ (ردالحتار)

دونوں اصلی ہیں درنہ پہلااصلی ندر ہا،خواہ ان دونوں جگہوں کے درمیان مسافت سفر ہویا نہ ہو۔⁽³⁾ (درمختار وغیرہ)

مسئل ۱۵۵ کے ارادہ سے طرح اقامت دوسر ہے وطن اقامت کو باطل کر دیتا ہے لینی ایک جگہ بندر دن کے ارادہ سے طرح اپھر دوسری جگہا تنے ہی دن کے ارادہ سے طرح اتو بہلی جگہاب وطن نہ رہی ، دونوں کے درمیان مسافت سفر ہویا نہ ہو۔ یو ہیں وطن اقامت وطن اصلی وسفر سے باطل ہوجا تا ہے۔ (4) (درمخاروغیرہ)

مسئان ۵۷ ﴾ اگراپنے گھر کے لوگوں کو لے کر دوسری جگہ چلا گیا اور پہلی جگہ مکان واسباب وغیرہ ہاقی ہیں تو وہ بھی وطن اصلی ہے۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری)

مسئل <u>هم کی ۔</u> وطنِ اقامت کے لیے بیضرورنہیں کہ تین دن کے سفر کے بعد وہاں اقامت کی ہوبلکہ اگر مدت ِ سفر طے کرنے سے پیشتر اقامت کرلی وطن اقامت ہوگیا۔ ⁽⁶⁾ (عالمگیری، درمختار)

سین کری ہے ۔ بالغ کے والدین کسی شہر میں رہتے ہیں اور وہ شہراس کی جائے ولا دین نہیں نہاس کے اہل وہاں ہوں تو وہ حکماس کے لیے وطن نہیں ۔ ⁽⁷⁾ (ردالحتار)

مَسْتَالُهُ 69﴾ مسافر جب وطن اصلی میں پہنچ گیا، سفرختم ہوگیا اگر چدا قامت کی نیت نہ کی ہو۔ (8) (عالمگیری) مَسْتَالُهُ 10﴾ عورت بیاہ کرسُسر ال گئی اور یہیں رہنے سہنے لگے تو میکا اس کے لیے وطنِ اصلی نہ رہایعنی اگرسُسر ال

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٢.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي ... إلخ، ج٢، ص٧٣٩.
- €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي و وطن الاقامة، ج٢، ص٩٣٩.
 - 4 المرجع السابق.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٢.
 - 6 المرجع السابق.
 - ◘ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٣٩.
 - 🤿 🔞 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج ١، ص ١٤٢.

تین منزل پر ہے وہاں سے میکے آئی اور پندرہ دن گلمبرنے کی نیت نہ کی تو قصر پڑھے اور اگر میکے رہنانہیں چھوڑا بلکہ سُسر ال

عارضی طور پرگئی تو میکے آتے ہی سفرختم ہو گیا نماز پوری پڑھے۔

سَسَالُ اللَّ ﴾ عورت کو بغیرمحرم کے تین دن یا زیادہ کی راہ جانا ناجائز ہے بلکہ ایک دن کی راہ جانا بھی۔ نابالغ بچہ یا

مُعتُّوه کے ساتھ بھی سفرنہیں کرسکتی ،ہمراہی میں بالغ محرم یا شوہر کا ہونا ضروری ہے۔ (1) (عالمگیری وغیرہ) محرم کے لیے ضرور ہے کہ بخت فاسق نے ماک غیر مامون نہ ہو۔

جمعه کا بیان کی

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ يَا يُهَا لَّذِينُ امَنُوَ الدَّانُودِي لِلصَّلُوةِ مِن يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَى ذِكْمِ النَّهِ وَذَمُ والنَّبَيْعُ لَا ذُكُمُ خَيْرٌ لَّكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ فَيْرُ لَكُمْ وَالْبَيْعُ لَا ذُكُمْ اللَّهِ وَذَمُ والنَّبَيْعُ لَا ذُكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ فَيْرُ لَكُمْ فَيْرُونَ فَي اللَّهِ وَهِ فَي اللَّهِ فَي اللَّهِ فَي اللَّهِ فَي اللَّهُ فَا لَهُ فَاللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فِي الللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ فَي اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْنُ وَلِي الللِّهُ فَي اللَّهُ لِي اللَّهُ لِللللْلِي فَي الللِّهُ لِلللْلِي فَي الللِّهُ فَي اللَّهُ لِللللْلِي فَي الللِّهُ لِلللْلِهُ فَي اللْلِهُ لِلللْلِي فَي اللَّهُ لِلْلِلْلِي فَي اللللْلِي فَي الللِّهُ لِللْلِلْلِي فِي اللللْلِي فَي اللَّهُ لِللْلِلْلِي فَلْ اللْلِي فَي اللَّهُ لَا لِلْلِي فَاللَّهُ لِلْمُ لِلْلِي فَلِي الللْلِي فَي الللْلِي فَاللَّهُ فِي الللْلِي فَلْ اللْلِي فَي الللْلِي فَاللَّهُ لِلْلِي فَلْ الللْلِي فَلْ الللْلِي فَاللَّهُ لِلْمُ لِلْلِي فَاللَّهُ لِلْلِي لَلْلِي فَاللَّهُ لِلْلِلْلِي فَالْمُواللِي فَاللَّ

اے ایمان والو! جب نماز کے لیے جُمُعَہ کے دن اذان دی جائے ، تو ذکر خدا کی طرف دوڑ واورخرید وفر وخت چھوڑ دو، یتمھارے لیے بہتر ہےا گرتم جانتے ہو۔

فضائل روز جمعه 🦹

خلین او عین دنیا میں آنے کے لحاظ سے اور قیامت کے دن پہلے سوااس کے کہ انھیں ہم سے پہلے کتاب ملی اور ہمیں ان کے بعد یہی ہیں یعنی دنیا میں آنے کے لحاظ سے اور قیامت کے دن پہلے سوااس کے کہ انھیں ہم سے پہلے کتاب ملی اور ہمیں ان کے بعد یہی مجتوب وہ دن ہے کہ ان پر فرض کیا گیا یعنی مید کہ اس کے فقی مریں وہ اس سے خلاف ہو گئے اور ہم کو اللہ تعالی نے بتادیا دوسر لوگ ہمارے تابع ہیں، یہود نے دوسرے دن کو وہ دن مقرر کیا یعنی ہفتہ کو اور نصار کی نے تیسرے دن کو یعنی اتو ارکو ''(3) اور مسلم کی دوسری روایت انھیں سے اور حذیفہ دخی اللہ تعالی عنہ سے بہ فرماتے ہیں: ''ہم اہل دنیا سے پیچھے ہیں اور قیامت کے دن پہلے کہ دوسری روایت انھیں سے اور حذیفہ دخی اللہ تعالی عنہ سے بہ فرماتے ہیں: ''ہم اہل دنیا سے پیچھے ہیں اور قیامت کے دن پہلے کہ

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٢.
 - و "الفتاوي الرضوية"، ج١٠ ص٢٥٧.
 - 2 پ ۲۸، الجمعة: ٩.
- 😵 🚱 "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب فرض الجمعة... إلخ، الحديث: ٨٧٦، ج١، ص٣٠٣.

🐉 تمام مخلوق سے پہلے ہمارے لیے فیصلہ ہوجائے گا۔'' 🕦

🕹 یئٹ 🍟 🐣 مسلم وابو داو دوتر مذی ونسائی ابو ہر رہی دخی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ،فر ماتنے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وَہم :''بہتر دن کہ آ فتاب نے اس برطلوع کیا، جمعہ کا دن ہے، اسی میں آ دم علیہ الصّلاۃ والسلام پیدا کیے گئے اور اسی میں جنت میں واخل کیے گئے اور

اس میں جنت سے اتر نے کا انھیں تھم ہوا۔اور قیامت جعد ہی کے دن قائم ہوگی۔' (2)

خل پیٹ 😙 و 🗨 🎇 ابوداود ونسائی وابن ماجہ وہیمجق اُوس بن اُوس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم: '''تمھارے افضل دنوں سے جمعہ کا دن ہے، اسی میں آ دم علیہ السلام پیدا کیے گئے اور اسی میں انتقال کیا اور اسی میں فٹحہ ہے۔ (دوسری بارصور پھونکا جانا)اوراس میں صعقہ ہے (پہلی بارصور پھونکا جانا) ،اس دن میں مجھ پر وُرود کی کثر ت کرو کہ تمہارا وُرود مجھ پر پیش کیا جاتا ہے''لوگوں نے عرض کی ، یارسول الله (صلی الله تعالی علیہ وکم)!اس وفت حضور (صلی الله تعالی علیه وکم) پر جمارا دُرود کیونکر پیش کیا جائے گا، جبحضور (صلی الله تعالی علیه وملم) انتقال فر ما چکے ہوں گے؟ فرمایا: کہ الله تعالیٰ نے زمین پر انبیا کے جسم کھانا حرام کردیا ہے۔'' ⁽³⁾اورابن ماجہ کی روایت میں ہے، کہ فرماتے ہیں:''جمعہ کے دن مجھ پر دُرود کی کثرت کرو کہ بیدن مشہود ہے،اس میں فرشتے حاضر ہوتے ہیں اور مجھ پر جو دُرود پڑھے گا پیش کیا جائے گا۔ابودرداء رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں: میں نے عرض کی اورموت کے بعد؟ فرمایا: بےشک!اللّٰد(عزوجل) نے زمین پرانبیا کے جسم کھانا حرام کر دیا ہے،اللّٰد کا نبی زندہ ہے،

خلیئٹ ۲ و ۷ 🌯 ابن ماجه ابولبا به بن عبدالمنذ را وراحمد سعد بن معا ذرضی الله تعالیٰ عنها سے را وی ، که فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم : ' مجعد کا دن تمام دنوں کا سر دار ہے اور اللہ کے نز دیک سب سے بڑا ہے اور وہ اللہ کے نز دیک عیداضحیٰ و عیدالفطرسے بڑاہے،اس میں یانچ حصاتیں ہیں۔

- (۱) الله تعالى نے اسى ميں آ دم عليه السلام كو بيدا كيا۔
 - (۲) اوراسی میں زمین برانھیں اتارا۔
 - (۳) اوراسی میں انھیں وفات دی۔
- 1 "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب هداية هذه الأمة ليوم الجمعة، الحديث: ٥٥٦، ص ٤٢٦.
 - 2 "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب فضل يوم الجمعة، الحديث: ١٨ ـ (٤٥٨)، ص ٤٠٥.
- € "سنن النسائي"، كتاب الجمعة، باب اكثار الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم يوم الجمعة، الحديث: ١٣٧١،
- ◘ "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ذكر وفاته و دفنه صلى الله عليه وسلم الحديث: ١٦٣٧، ج٢، ص٢٩١.

روزی دیاجا تاہے۔'' (4)

(۴) اوراس میںابک ساعت ایسی ہے کہ بندہ اس وقت جس چز کا سوال کرےوہ اسے دے گا، جب تک حرام کا 🔞

سوال نەكر يە

(۵) اوراسی دن میں قیامت قائم ہوگی ،کوئی فرشتهُ مقرب وآ سان وز مین اور ہوااور بہاڑ اور دریااییانہیں کہ مجمّعه ،

کے دن سے ڈرتانہ ہو۔'' ⁽¹⁾

جمعہ کے دن ایک ایسا وقت ھے کہ اُس میں دعا قبول

خلینٹ \Lambda تا 🕩 🤻 بخاری ومسلم ابو ہر ریہ دخی اللہ تعالیٰ عنہ ہے راوی ، فر ماتے ہیں سلی اللہ تعالیٰ علیہ دکم جمعُت میں ایک ایسی ساعت ہے کہمسلمان بندہ اگراہے یا لےاوراس وقت اللّٰد تعالیٰ سے بھلائی کا سوال کرے تو وہ اسے دے گا۔''اورمسلم کی ۔ روایت میں بہجی ہے کہ' وہ وقت بہت تھوڑ اہے۔'' (2) رہا یہ کہ وہ کون ساوقت ہےاس میں روایتیں بہت ہیں ان میں دوقوی ہیں ایک بیرکہ امام کے خطبہ کے لیے بیٹھنے سے ختم نماز تک ہے۔ ⁽³⁾ اس حدیث کومسلم ابو بردہ بن ابی موی سے وہ اپنے والد سے وہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ دملم سے روایت کرتے ہیں ۔اور دوسری میہ که'' وہ مُجُمّعہ کی مجیجیلی سماعت ہے۔'' امام ما لک وابو داور و تر مذی ونسائی واحمدابو ہر رہ درض اللہ تعالیٰ عنہ ہے راوی ، وہ کہتے ہیں: میں کو وطور کی طرف گیااورکعب احبار سے ملاان کے باس بیٹھا ، انہوں نے مجھے تورات کی روایتیں سنا کیں اور میں نے ان سے رسول الله صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم کی حدیثیں بیان کیس،ان میں ایک حدیث بر بھی تھی کہرسول الله سلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: ' بہتر دن که آفتاب نے اس پرطلوع کیا جُمعَه کا دن ہے، اسی میں آدم على السلام پيدا كيے گئے اوراسي ميں انھيں اتر نے كا حكم ہوا اوراسي ميں ان كى توبەقبول ہوئى اوراسي ميں ان كا انتقال ہوا اوراسي ميں قیامت قائم ہوگی اور کوئی جانوراییانہیں کہ جُمعَہ کے دن صبح کے وقت آفتاب نکلنے تک قیامت کے ڈریے چیختا نہ ہو ہوا آ دمی اور جن کے اور اس میں ایک ایپیا وقت ہے کہ مسلمان بندہ نماز پڑھنے میں اسے یا لے تو اللہ تعالیٰ ہے جس شے کا سوال کرے وہ اسے دے گا۔ کعب نے کہاسال میں ایباایک دن ہے؟ میں نے کہا بلکہ ہر جُمُعَہ میں ہے، کعب نے تورات پڑھ کرکہارسول اللہ صلی الله تعالی علیه وسلم نے سیج فرمایا ۔ ابو ہر مریرہ رضی اللہ تعالی عنہ کہتے ہیں چھر میں عبد الله بن سلام رضی اللہ تعالی عنہ سے ملا اور کعب احبار کی مجلس

- ❶ "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات والسنة فيها، باب في فضل الجمعة، الحديث: ١٠٨٤، ج٢، ص٨.
 - 2 "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ١٥ ـ (٨٥٢)، ص ٢٤٤. و "مرقاة المفاتيح"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، تحت الحديث: ١٣٥٧، ج٣، ص٥٤٥.
 - 🧣 🔞 "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ٨٥٣، ص٤٢٤.

اور جُنُعَہ کے بارے میں جوحدیث بیان کی تھی اس کا ذکر کیا اور یہ کہ کعب نے کہا تھا، یہ ہرسال میں ایک ون ہے، عبداللہ بن سلام
نے کہا کعب نے غلط کہا، میں نے کہا پھر کعب نے تورات پڑھ کر کہا بلکہ وہ ساعت ہر جُنُعَہ میں ہے، کہا کعب نے تی کہا، پھر
عبداللہ بن سلام نے کہا شخصیں معلوم ہے یہ کون می ساعت ہے؟ میں نے کہا مجھے بتاؤ اور بُخل نہ کرو، کہا جُنُعَہ کے دن کی سجیلی ساعت ہے۔ میں اسے ساعت ہے، میں نے کہا بچھی ساعت کیسے ہوسکتی ہے حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے تو فر مایا ہے مسلمان بندہ نماز پڑھتے میں اسے پائے اور وہ نماز کا وقت نہیں، عبداللہ بن سلام نے کہا، کیا حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے بینیوں فر مایا ہے کہ جوکسی مجلس میں انتظار اور دو نماز کا وقت نہیں، عبداللہ بن سلام نے کہا، کیا حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے دو نہیں دو معرف نے کہا، کیا حضور (علی اللہ تعالی علیہ وسلم نے کہا کیا۔ دو معرف نے دو معرف نہیں دو معرف نے دو

نماز میں بیٹے وہ نماز میں ہے میں نے کہاہاں،فر مایا تو ہے کہا تو وہ یہی ہے یعنی نماز پڑھنے سے نماز کا انتظار مراد ہے۔ ⁽¹⁾ خارینٹ (1) ﷺ تر مذی انس رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وَللم:''مجُمّعَۃ کے دن جس ساعت کی

خواہش کی جاتی ہے،اسے عصر کے بعد سے غروب آفتاب تک تلاش کرو۔ ' (2)

خليث الله تعالى عنه سير من الله تعالى عليه وسلم: والله تعالى عنه سيراوى ، كه فرمات بين صلى الله تعالى عليه وسلم:

''الله تبارك وتعالیٰ کسی مسلمان کو جُمُعہ کے دن بِمغفرت کیے نہ چھوڑے گا۔'' ③

ابویعلیٰ انھیں سے راوی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فر ماتے ہیں:'' کجُمُعَہ کے دن اور رات میں چوہیں اللہ تعالیٰ علیہ وہیں

گھنٹے ہیں، کوئی گھنٹا ایسانہیں جس میں اللہ تعالی جہنم سے چھالا کھآ زادنہ کرتا ہوجن پر جہنم واجب ہو گیا تھا۔'' (⁴⁾

جمعہ کے دن یا رات میں مرنے کے فضائل

احمد ونز مذی عبدالله بن عمرورض الله تعالی عنها سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه دسلم) فر ماتے ہیں: ''جو

مسلمان جُمَّعَہ کے دن یا جُمِّعَہ کی رات میں مرے گا ،الله تعالی اے فتنہ قبر سے بچالے گا۔" (5)

خلین 10 ابولیم نے جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) فرماتے ہیں:''جو جُمُعُمَہ کے دن اس طرح آئے گا کہ اس پر شہیدوں کی مُہر

روگی ^{''} (6)

❶ "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الجمعة، باب ماجاء في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ٢٤٦، ج١، ص١١٠.

2 "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في الساعة... إلخ، الحديث: ٤٨٩، ج٢، ص٣٠.

3 "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ٤٨١٧، ج٣، ص٥٥.

٢٣٥ . ٢١٩ مسند أبي يعلى"، مسند انس بن مالك، الحديث: ٣٤٢١ ، ٣٤٢١، ج٣، ص ٢١٩ ، ٢٣٥.

المحامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء فيمن يموت يوم الجمعة، الحديث: ١٠٧٦، ج٢، ص٣٣٩.

🐒 🚳 "حلية الأولياء"، رقم: ٣٦٢٩، ج٣، ص١٨١.

مجمئعة كابيان

🐉 😸 🛬 🕦 🖛 حمید نے ترغیب میں اماس بن بکیر سے روایت کی ، کہ فرماتے ہیں:'' جو جُمُعَہ کے دن مرے گا ،اس کے

ليشهيد كا جركها جائے گا ورفتنه قبرسے بياليا جائے گا۔ ' (1)

خلایت (۱۷) 💝 💎 عطاسے مروی، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) فر ماتے ہیں: '' جومسلمان مر دیامسلمان عورت مجمّعَه کے

دن یا جُمُعَه کی رات میں مرے، عذاب قبراور فتنهٔ قبرہے بچالیا جائے گا اور خدا سے اس حال میں ملے گا کہ اس پر بچھ حساب نہ ہوگا

اوراس کے ساتھ گواہ ہوں گے کہاس کے لیے گواہی دیں گے ہائم ہوگی۔'' (2)

خلایث 🚺 💝 سبیمقی کی روایت انس رضی اللہ تعالی عنہ سے ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) فر ماتے ہیں:'' مجُمُعَہ کی رات

روشن رات ہے اور جُمُعَه کا دن چیکدار دن۔" (3)

﴿ ٱلْيَوْمَا كُمُلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَٱتْسَنَّ عَلَيْكُمْ نِعْبَى وَيَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسُلامَ دِيْنًا " (4)

ہ ج میں نے تمہارادین کامل کر دیااورتم پراپنی نعمت تمام کر دی اور تحھارے لیے اسلام کو دین پیند فر مایا۔

ان کی خدمت میں ایک یہودی حاضرتھا،اس نے کہا یہ آیت ہم پر نازل ہوتی تو ہم اس دن کوعید بناتے ،ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہانے فر مایا: بیرآیت دوعبیدوں کے دن اُٹر می مجُعّہ اورعرفہ کے دن یعنی ہمیں اس دن کوعبیر بنانے کی ضرورت نہیں کہ اللَّدعز دَجل نے جس دن بہآ بت ا تاری اس دن دوہری عیزتھی کہ جُعُقه وعرفیہ بدونوں دن مسلمانوں کےعید کے ہیں اوراس دن بہ دونوں جمع تھے کہ جُمُعَہ کا دن تھااورنو س ذی الحجہ۔ ⁽⁵⁾

فضائل نماز جمعه

خلینٹ 💎 🥕 مسلم وابوداود وتر مذی وابن ماجدا بو ہر ریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ،حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وَلم فر ماتے ۔ ہیں: 'جس نے اچھی طرح وضو کیا پھر مجُعَدُوآ یا اور (خطبه) سنا اور جیب رہان کے لیے مغفرت ہوجائے گی ان گناہوں کی جواس مجُمَّة اور دوسرے مُجُمَّة کے درمیان ہیں اور تین دن اور۔اور جس نے کنگری چھوئی اس نے لغوکیا لیتنی خطبہ سننے کی حالت میں اتنا

- "شرح الصدور"، للسيوطي، باب من لا يسئل في القبر، ص١٥١.
- 2 "شرح الصدور"، للسيوطي، باب من لا يسئل في القبر، ص١٥١.
- 3 "مشكاة المصابيح"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، الحديث: ١٣٦٩، ج١، ص٣٩٣.
 - 4 ب ٦، المآئدة: ٣.
- 🧣 🗗 "جامع الترمذي"، أبواب تفيسر القرآن، باب ومن سورة المائدة، الحديث: ٥٠ ٣٠، ج٥، ص٣٣.

کام بھی لغویس داخل ہے کہ کنگری بڑی ہواسے ہٹادے۔' (1)

اللہ اللہ تعالیٰ علہ وہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ تعالیٰ عنہ سے سے کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علہ وہلم) فر ماتے ہیں:

'' مُجُعُهَ کفّارہ ہےان گنا ہوں کے لیے جواس مُحُعَداوراس کے بعد والے مُجُعُه کے درمیان ہیں اور تین دن زیادہ اور بیاس وجہ سے

کہ اللہ عزوجل فرما تاہے: ''جوایک نیکی کرے،اس کے لیے دس مثل ہے۔'' (2)

خلیث ۲۲ 💨 ابن حبان اپنی صحیح میں ابوسعیدرضی الله تعالی عنہ سے راوی ، کہ فرماتے میں سلی الله تعالی علیہ وسلم :'' پانچ چیزیں جو

ایک دن میں کرے گا ،اللہ تعالیٰ اس کوجنتی لکھ دے گا۔

- (۱) جومریض کو پوچھنے جائے اور
 - (۲) جنازے میں حاضر ہواور
 - (۳) روزه ریکھاور
 - (۴) جُمُعَهَ كُوجِائے اور
 - (۵) غلام آزاد کرے۔'' (³⁾

خریف ۳۳ کی بافاد و تحمین راوی، که بزید بن ابی مریم کہتے ہیں: میں جُمُعَد کو جاتا تھا،عبایہ بن رفاعہ بن رافع ملے، انہوں نے کہا: تمصیں بشارت ہو کہ تمھارے یہ قدم اللہ کی راہ میں ہیں، میں نے ابوعبس کو کہتے سُنا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا: ''جس کے قدم اللہ (عزد جس) کی راہ میں گردآ لود ہوں وہ آگ پرحرام ہیں۔'' (4) اور بخاری کی روایت میں بول ہے، کہ عبایہ کہتے ہیں: میں جُمُعَہ کو جار ہا تھا، ابوعبس رض اللہ تعالی عنہ ملے اور حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہم) کا ارشاد سایا۔ (5)

جمعہ چھوڑنے پروعیدیں

خلیث ۲۲۰ تا ۲۷ سی اللہ تعالی علیہ و ہم اللہ ہم رہے و ابن عمر سے اور نسائی و ابن ماجہ ابن عباس و ابن عمر رضی اللہ تعالی علیہ مہر کر دے گا بھر حضور اقدس صلی اللہ تعالی ائے دلوں پر مہر کر دے گا بھر

- ❶ "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب فضل من استمع و أنصت في الخطبة، الحديث: ٢٧ ـ (٨٥٧)، ص٢٧ ٤ .
 - 2 "المعجم الكبير"، الحديث: ٢٥٨، ٣٤، ص٢٩٨.
 - € "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجمعة، الحديث: ٢٧٦٠، ج٤، ص١٦١.
- 4 "جامع الترمذي"، أبواب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل من اغبرت قدماد... إلخ، الحديث: ١٦٣٨، ج٣، ص٢٣٥.
 - 🕏 😘 "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب المشي إلى الجمعة، الحديث: ٩٠٧، ج١، ص٣١٣.

🗟 غافلین میں ہوجا ئیں گے۔'' (1)

خلیث ۲۷ تا ۳۱ 💨 🚽 فرماتے ہیں:''جوتین جمعے سستی کی وجہ ہے جمہوڑ بے اللہ تعالیٰ اس کے دل پرمُبر کرد ہے

گا۔'' (2) اس کوابوداود وتر مذی ونسائی وابن ماجه و دارمی وابن خزیمه وابن حبان وحاکم ابوالجعد ضمری سے اورامام مالک نے

صفوان بن سلیم ہے اورامام احمد نے ابوقیاد ہ رضی اللہ تعالی عنہم سے روایت کیا تر مذی نے کہا بیحدیث حسن ہے اور حاکم نے کہا میح برشرط مسلم ہے اور ابن خزیمہ وحبان کی ایک روایت میں ہے،''جوتین جمعے بلا عذر چھوڑے، وہ منافق ہے۔'' (3) اور رزین كى روايت ميں ہے، ' وہ الله (عزوجل) سے بے علاقہ ہے۔ ' (4) اور طبرانی كی روایت اسامه رضی الله تعالی عنہ سے ہے، ' وہ منافقین میں لکھ دیا گیا۔''⁽⁵⁾اورامام شافعی رضی اللہ تعالی عنہ کی روایت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے ہے، وہ منافق لکھ دیا گیااس کتاب میں جونہ محوجونہ بدلی جائے ، ⁽⁶⁾ اورایک روایت میں ہے،'' جوتین جمع بے دریے چھوڑے اس نے اسلام کو

بیٹھ کے پیچھے پھینک دیا۔'' ⁽⁷⁾اس کوابویعلیٰ نے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے بسند سیح روایت کیا۔ خلینث ۳۲ 💨 💎 احمد وا بو داو د وابن ما جهسمره بن جندب رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وَتلم) فر ماتے

بین: 'جوبغیرعذر بُمُعَة چھوڑے،ایک دینارصدقہ دےادراگرنہ یائے تو آ دھادیناراور بید ینارتصدق کرناشایداس لیے ہوکہ قبول

توبے لیے معین ہوورنہ هقیقةً تو توبرکرنافرض ہے۔" (8)

خلینٹ سس کی مسلم شریف میں این مسعود رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، فرماتے ہیں سلی اللہ تعالی علیہ وہلم: ''میں نے

قصد کیا کہ ایک شخص کونمازیر هانے کاحکم دوں اور جولوگ جُنُحَہ ہے بیچیےرہ گئے ،ان کے گھروں کوجلا دوں۔'' (9)

ابن ماجہ نے جاہر رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے خطبہ فر مایا اور خُلِيثُ ٣٣ ﴾ فرمایا: 'اے لوگو! مرنے سے پہلے اللہ (عزوجل) کی طرف توبہ کرواور مشغول ہونے سے پہلے نیک کاموں کی طرف سبقت کرو

- "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب التغليظ في ترك الجمعة، الحديث: ٨٦٥، ص ٤٣٠.
- 2 "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في ترك الجمعة... إلخ، الحديث: ٥٠٠ ج٢، ص٣٨.
- "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الإيمان، باب ماجاء في الشرك والنفاق، الحديث: ٨٥١، ج١،ص٢٣٧.
 - 4..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الجمعة، الترهيب من ترك الجمعة بغير عذر، الحديث: ٣، ج١، ص ٢٩٥.
 - المعجم الكبير"، باب الألف، الحديث: ٢٢٤، ج١، ص ١٧٠.
 - 6 "المسند" لإمام الشافعي، ومن كتاب إيجاب الجمعة، ص ٧٠.
 - "مسند أبي يعلى"، مسند ابن عباس، الحديث: ٢٧٠٤، ج٢، ص٥٥٥.
 - 8 "سنن أبى داود"، كتاب الصلاة، باب كفارة من تركها، الحديث: ٥٣ ١٠ ٢٩ ص٣٩٣.
 - "صحيح مسلم"، كتاب المساجد... إلخ، باب فضل صلاة الجمعة... إلخ، الحديث: ٢٥٢، ص٣٢٧.

خلینٹ 🗝 🥕 داقطنی انھیں سے راوی، کہ فر ماتے ہیں سلی اللہ تعالی علیہ بہم:'' جواللہ (عز بس) اور پچھلے دن پر ایمان لاتا ہےاس پر جُمُعَہ کے دن (نماز) جُمُعَه فرض ہے مگر مریض یا مسافر یاعورت یا بچہ یاغلام پراور جو محض کھیل یا تجارت میں مشغول رہا تو الله (عزوجل) اس سے بے برواہ ہے اور الله (عزوجل) غنی حمید ہے۔ ' (2)

جمعہ کے دن نھانے اور خوشبو لگانے کا بیان

خل پئٹ 📆 تا 📆 🥏 حجے بخاری میں سلمان فارسی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وکلم : '' جو شخص جُمُعَہ کے دن نہائے اور جس طہارت کی استطاعت ہو کرے اور تیل لگائے اور گھر میں جوخوشبو ہو مَلے پھرنماز کو نکلے اور دو شخصوں میں جدائی نہ کرے یعنی دو تحض بیٹھ ہوئے ہوں انھیں ہٹا کر بچ میں نہ بیٹھ اور جونمازاس کے لیاکھی گئی ہے بڑھے اورامام جب خطبہ ریڑھے تو حیب رہے،اس کے لیےان گناہوں کی جواس جُنعۃ اور دوسرے جُنعۃ کے درمیان ہیں مغفرت ہو جائے گی۔'' (3) اوراس کے قریب قریب ابوسعید خدری وابو ہر رہ وض اللہ تعالی عنہا ہے بھی متعدد طرق ہے روایتی آئیں۔ خل پیٹ ۳۹ و ۴۰ 💨 🚽 احمد ابوداود وتر مذی با فاد هٔ تحسین ونسائی وابن ماجه وابن خزیمه وابن حبان وحا کم با فاد هُ تحیج اَوس

بن اُوس اورطبرانی اوسط میں ابن عباس رضی الله تعالیٰ عنهم سے راوی ، کہ فر ماتنے ہیں صلی الله تعالیٰ علیه وسلم :'' جونهلائے اور نہائے اور اوّل وفت آئے اور شروع خطبہ میں شریک ہواور چل کرآئے سواری پر نہآئے اورا مام سے قریب ہواور کان لگا کر خطبہ سُنے اور لغوکام نہ کرے،اس کے لیے ہر قدم کے بدلےسال بھر کاعمل ہے،ایک سال کے دنوں کے روز ہےاور را توں کے قیام کا اس

- ❶ "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات و السنة فيها، باب في فرض الجمعة، الحديث: ١٠٨١، ج٢، ص٥.
 - 2 "سنن الدار قطني"، كتاب الجمعة، باب من تجب عليه الجمعة، الحديث: ٥٦٠، ج٢، ص٣.
 - 🗣 🔞 "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب الدهن للجمعة، الحديث: ٨٨٣، ج١، ص٣٠٦.

🦓 کے لیےا جرہے۔'' (1) اوراسی کے مثل دیگر صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم ہے بھی روایتیں ہیں۔

خلینٹ 🙌 💝 بخاری ومسلم ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ان برسات دن

میں ایک دن عنسل ہے کہ اس دن میں سردھو کے اور بدن ۔ ' (2)

خلیئٹ ۴۲ 💸 💎 احمد وابوداو دوتر مذی ونسائی و دارمی سمر ہ بن جندب رضی الله تعالی عنہ سے راوی ، کہ فر ماتے ہیں :'' جس نے

جُمُعَہ کے دن وضو کیا، فبہاا وراحیھا ہےا ورجس نے شل کیا توغنسل افضل ہے۔' (3)

خلیئٹ 🔫 🐣 ابوداودعکر مہے راوی، کہ عراق سے کچھلوگ آئے،انہوں نے ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہا ہے سوال کیا

کہ جُٹھ کے دن آ پے مسل واجب جانتے ہیں؟ فرمایا نہ، ہاں بیزیادہ طہارت ہے اور جونہائے اس کے لیے بہتر ہے اور جو مسل نہ کرے تواس پرواجب نہیں۔' (4)

خلیئٹ 🙌 💨 💎 این ماجہ بسندحسن این عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فر ماتے ہیں: ''اس دن کواللہ (عزوجل) نے مسلمانوں کے لیے عید کیا تو جو جُمُعَہ کوآئے وہ نہائے اورا گرخوشبوہو تو لگائے۔'' (5)

خلیث 🙌 🎥 💎 احمد وتر مذی بسندحسن براء رضی الله تعالی عنه سے راوی، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) فرماتے ہیں:

''مسلمان پرحق ہے کہ جُمُعَہ کے دن نہائے اور گھر میں جوخوشبو ہولگائے اورخوشبو نہ یائے تو پانی ⁽⁶⁾ یعنی نہانا بجائے خوشبو ہے۔''

خلینٹ ۴۶ و۲۴ ج 🚽 طبرانی کبیرواوسط میں صدیق اکبروعمران بن همین رضی الله تعالیٰ عنہاراوی ، که فرماتے ہیں : '' جو جُمُعَہ کے دن نہائے اس کے گناہ اور خطائیں مٹا دی جاتی ہیں اور جب چلنا شروع کیا تو ہر قدم پر ہیں نیکیاں کھی جاتی ہیں۔'' (7) اور دوسری روایت میں ہے،'' ہرقدم پر بیس سال کاعمل ککھاجا تا ہےاور جب نماز سے فارغ ہوتو اسے دوسوبرس

کے کمل کا اجرماتا ہے۔'' ⁽⁸⁾

❶ "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أوس بن أبي أوس الثقفي، الحديث: ١٦١٧٣، ج٥، ص٥٦٥.

2 "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب هل على من لم يشهد الجمعة غسل... إلخ، الحديث: ٨٩٧، ج١، ص ٣١٠.

3..... "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في الوضوء يوم الجمعة، الحديث: ٤٩٧، ج٢، ص٣٦.

سنن أبي داود"، كتاب الطهارة، باب الرخصة في ترك الغسل يوم الجمعة، الحديث: ٣٥٣، ج١، ص١٦٠.

5 "سنن ابن ماجه"، أبواب اقامة الصلوات ... إلخ، باب ماجاء في الزينة يوم الجمعة، الحديث: ١٩٨، ٢٠، ج٢، ص١٦.

⑥ "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في السواك... إلخ، الحديث: ٢٨٥، ج٢، ص٥٥.

7 "المعجم الكبير"، الحديث: ٢٩٢، ج١٨، ص٩٣١.

٣١٥.... "المعجم الأوسط"، باب الحيم، الحديث: ٣٣٩٧، ج٢، ص١٤.

🕏 😹 🚕 الحریث ۴۸ 💨 🔻 طبرانی کبیر میں بروایت ثقاث ابوا مامه رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے راوی ، کہ فر ماتے ہیں:'' مجمعَة کاعسل بال کی

جروں سے خطائیں کھینچ لیتا ہے۔'' ⁽¹⁾

جمعہ کے لیے اوّل جانے کا ثواب اور گردن پھلانگنے کی

خلینٹ 🔫 🤲 بخاری ومسلم وابوداودوتر مذی و مالک ونسائی وابن ماجدابو ہریرہ رضی ملاتعالی عنہ سے راوی ، فر ماتے ہیں صلى الله تعالى عليه وسلم: ' جو خص مجمّعَة كے دن عسل كرے، جيسے جنابت كاغسل ہے پھر پہلى ساعت ميں جائے تو گويااس نے اونٹ کی قربانی کی اور جو دوسری ساعت میں گیااس نے گائے کی قربانی کی اور جو تیسری ساعت میں گیااس نے سینگ والے مینڈھے کی قربانی کی اور جو چوتھی ساعت میں گیا گویااس نے مرغی نیک کام میں خرچ کی اور جویانچویں ساعت میں گیا گویا اندُاخرج كيا، پهر جب امام خطبه و ذكل ملنكه ذكر سننه حاضر موجات بين " (2)

خلینٹ کہ تا ۵۲ 💨 بخاری ومسلم وابن ماجہ کی دوسری روایت آخییں سے ہے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فرماتے ہیں:

''جب جُمُعَه كا دن ہوتا ہے فرشتے مسجد كے درواز ه ير كھڑ ہے ہوتے ہيں اور حاضر ہونے والے كو لكھتے ہيں سب ميں پہلا پھراس کے بعد والا ، (اس کے بعد وہی تواب جواویر کی روایت میں مذکور ہوئے ذکر کیے) پھرامام جب خطبہ کو نکلافر شتے اپنے وفتر کیپیٹ لیتے ہیں اور ذکر سنتے ہیں۔''⁽³⁾ اسی کے مثل سمرہ بن جندب وابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے بھی روایت ہے۔

امام احمد وطبرانی کی روایت ابوامامه رضی الله تعالی عنہ سے ہے، 'جب امام خطبہ کو نکاتا ہے تو فرشتے دفتر خليث ۵۳ ي طے کر لیتے ہیں، کسی نے ان سے کہا، تو جو تحض امام کے نکلنے کے بعد آئے اس کا جُمُعَہ نہ ہوا؟ کہا، ہاں ہوا تو کیکن وہ دفتر میں نہیں لكها كياـ" (4)

''جس نے جُمُعَہ کے دن لوگوں کی گر دنیں بھلانگیں اس نے جہنم کی طرف بُل بنایا۔'' ⁽⁵⁾ اس حدیث

- 1 "المعجم الكبير"، الحديث: ٧٩٩٦، ج٨، ص٥٥٦.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب فضل الجمعة، الحديث: ١٨٨١، ج١، ص٥٠٣. و "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الجمعة، باب العمل في غسل يوم الجمعة، الحديث: ٢٣٠، ج١٠ ص١٠٩.
- 3 "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب الاستماع إلى الخطبة يوم الجمعة، الحديث: ٩٢٩، ج١٠ ص ٩١٩.
 - 4 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي امامة الباهلي، الحديث: ٢٢٣٦، ج٨، ص٢٩٧.
- "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في كراهية التخطى يوم الجمعة، الحديث: ١٥١٣، ج٢، ص٤٨.
- حديث مين لفظ اتُّخذَ جسُوًا وافع هوا سےاس كومعروف ومجهول دونوں طرح يڑھتے ہيں ادربير جمه معروف كا ہے اور مجهول يڑھيں تو=

کوتر ندی وابن ماجہ معاذبین انس جہنی ہے وہ اپنے والد سے روایت کرتے ہیں اور تر ندی نے کہا بیر حدیث غریب ہے اور تمام اہل علا سے رب سے میا

علم کے نز دیک اسی پڑمل ہے۔ <u>خلایئٹ ۵۵ پ</u> احمد وابو داود و نسائی عبداللہ بن بسر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ ایک شخص لوگوں کی گرونی*ن بھلا*نگتے

ہوئے آئے اور حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) خطبہ فر مارہے تتھار شاوفر مایا: ''بیٹھ جا! تونے ایذا پہنچائی۔'' ⁽¹⁾

خلینٹ ۵۲ ﷺ ابوداودعمرو بن عاص رضی اللہ تعالی عنہ ہے راوی ، کہ فر ماتے ہیں: ' دمجُنّے میں تین قسم کے لوگ حاضر ہوتے

ہیں۔ایک وہ کہ لغو کے ساتھ حاضر ہوا (لیعنی کوئی ایسا کام کیا جس سے ثواب جاتا رہے مثلاً خطبہ کے وقت کلام کیا یا گنگریاں چھو ئیں) تواس کا حصّہ جُمُعَہ سے وہی لغو ہے اورایک وہ خص کہ اللہ سے دُعالی تُو اگر چاہے دے اور چاہے نہ دے اورایک وہ کہ سکوت وانصات کے ساتھ حاضر ہوااور کسی مسلمان کی نہ گردن پھلائگی نہ کسی کوایڈ اوری تو جُمُعَۃ اس کے لیے کفارہ ہے، آئندہ جُمُعَۃ اور تین دن زیادہ تک۔'' (2)

مسائلِ فقهيّه

جُمُعَة فرض مین ہے اور اس کی فرضیّت ظہر سے زیادہ مؤکد ہے اور اس کا منکر کا فر ہے۔(3) (در مختار وغیرہ) مستان کا کہ جُمُعَة پڑھنے کے لیے چھ شرطیس ہیں کہ ان میں سے ایک شرط بھی مفقو دہوتو ہوگا ہی نہیں۔

(۱) مصریا فنائے مصر

مصروہ جگہ ہے جس میں متعدد گو ہے اور بازار ہوں اور وہ ضلع یا پرگنہ (4) ہو کہ اس کے متعلق ویبات گئے جاتے ہوں اور وہ بال کوئی حاکم ہو کہ اپنے دید بہو سَطوَت کے سبب مظلوم کا انصاف ظالم سے لے سکے یعنی انصاف پر قدرت کافی ہے ،اگر چہ ناانصافی کرتا اور بدلہ نہ لیتا ہوا ورمصر کے آس پاس کی جگہ جومصر کی مصلحتوں کے لیے ہواہ ''فنائے مصر'' کہتے ہیں۔ جیسے قبرستان ،گھوڑ دوڑ کا میدان ،فوج کے رہنے کی جگہ ، کچھریاں ،اسٹیشن کہ یہ چیزیں شہرسے باہر ہوں تو فنائے مصر میں

= مطلب یہ ہوگا کہ خود پل بنادیا جائے گالیعن جس طرح لوگوں کی گردنیں اس نے بھلائلی ہیں ،اس کو قیامت کے دن جہنم میں جانے کا پُل بنایا جائے گا کہ اس کے اوپر چڑھ کرلوگ جائیں گے۔ ۱۲

- ❶ "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب تخطي رقاب الناس يوم الجمعة، الحديث: ١١١٨، ج١، ص٤١٣.
 - سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب الكلام والإمام يخطب، الحديث: ١١١٣، ج١، ص ٤١١.
 - **3** الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٥. لا المختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٥.

﴾ ان كا شار ہےاور وہاں جُمُعَہ جائز۔ ⁽¹⁾ (غنیہ وغیر ہا) لہٰذا جُمُعَہ یا شہر میں پڑھا جائے یا قصبہ میں یاان کی فنا میں اور گاؤں میں 🕏

جائزنہیں۔⁽²⁾ (غنیہ)

مَسْنَاكُ کَ ﴾ جسشهر برکفار کا تسلط ہوگیا وہا^{ں بھ}ی جُئحَہ جائز ہے، جب تک دارالاسلام رہے۔⁽³⁾ (ردامختار)

<u>مسگانگ استانگ</u> مصرے لیے حاکم کاوباں رہنا ضرور ہے،اگر بطور دورہ وہاں آگیا تو وہ جگہ مصر نہ ہوگی، نہ وہاں جُمُعَہ قائم کیا

جائے گا۔⁽⁴⁾ (ردالختار)

مسئان کے درمیان کھیت وغیرہ فاصل ہو تو وہاں گئے۔ جو جگہ شہر سے قریب ہے مگر شہر کی ضرورتوں کے لیے نہ ہواوراس کے اور شہر کے درمیان کھیت وغیرہ فاصل ہو تو وہاں جُمعُتہ جائز نہیں اگر چداذان جُمعُتہ کی آواز وہاں تک پہنچی ہو۔ (5) (عالمگیری) مگرا کثر آئم کہ کہتے ہیں کہ اگراذان کی آواز پہنچی ہوتوان لوگوں پر جُمعُتہ پڑھنافرض ہے بلکہ بعض نے تو بیفر مایا کہ اگر شہر سے دور جگہ ہومگر بلا تکلیف واپس باہر جاسکتا ہو تو جُمعُتہ پڑھا فرض ہے۔ (6) (درمختار) لہذا جولوگ شہر کے قریب گاؤں میں رہتے ہیں انھیں چاہیے کہ شہر میں آکر جُمعُتہ پڑھ جائیں۔

مست کی کا کا کار ہے والے شہر میں آیا اور جُمُعَہ کے دن یہیں رہنے کا ارادہ ہے تو جُمُعَهٔ فرض ہے اوراس دن واپسی کا ارادہ ہو، زوال سے پہلے یابعد تو فرض نہیں، مگر پڑھے تومستی ثواب ہے۔ یو ہیں مسافر شہر میں آیا اور نیت اقامت نہ کی تو جُمُعَهُ فرض نہیں، گاؤں والا جُمُعَہ کے لیے شہر کو آیا اور کوئی دوسرا کا م بھی مقصود ہے تواس معی (یعنی جُمُعَہ کے لیے آنے) کا بھی ثواب پائے گا اور جُمُعَہ پڑھا تو جُمُعَہ کا بھی۔ (7) (عالمگیری، در مختار، ردالحتار)

سَمَعَانُ اللّٰ حَجْ کے دنوں میں منی میں جُمُعَہ پڑھا جائے گا جبکہ خلیفہ یا امیر تجازیعنی شریف ملّہ وہاں موجود ہواورا میر موسم یعنی وہ کہ حاجیوں کے لیے حاکم بنایا گیا ہے جُمُعَهٔ نہیں قائم کرسکتا۔ جج کے علاوہ اور دنوں میں منیٰ میں جُمُعَهٔ نہیں ہوسکتا اور عرفات

- €.... "غنية المتملى "، فصل في صلاة الجمعة، ص٤٩ م ٥١ ، ٥٥١ وغيرها.
 - 2 "غنية المتملي "، فصل في صلاة الجمعة، ص ٢٩٥.
- ③ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في جواز استنابة الخطيب، ج٣، ص١٦.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٧.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص٥١٠.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٠٣.
 - 7 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص٤٥١.

و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في حكم المرقى بين يدى الخطيب، ج٣، ص٤٤.

میں مطلقاً نہیں ہوسکتا، نہ جج کے زمانہ میں ، نہ اور دنوں میں۔(1) (عالمگیری)

سَمَعَالُهُ كَا ﴾ شهر میں متعدد حبکہ جُمُعَہ ہوسکتا ہے،خواہ وہ شہر چھوٹا ہویا بڑا اور جُمُعَہ دومسجدوں میں ہویا زیادہ۔ (²⁾

(در مختار وغیرہ) گر بلاضرورت بہت ی جگہ بھئے قائم نہ کیا جائے کہ جُمعَۃ شعائر اسلام سے ہاور جامع جماعات ہاور بہت ی مسجدوں میں ہونے سے وہ شوکت اسلامی باقی نہیں رہتی جواجتاع میں ہوتی، نیز دفع حرج کے لیے تعدد جائز رکھا گیا ہے تو خواہ مخواہ جماعت پراگندہ کرنا اور محلّہ محکّہ جُمعۃ قائم کرنا نہ چاہیے۔ نیز ایک بہت ضروری امر جس کی طرف عوام کو بالکل توجہ نہیں، یہ ہے کہ جُمعۃ کو اور نمازوں کی طرح سمجھ رکھا ہے کہ جس نے چاہا نیا جُمعۃ قائم کر لیا اور جس نے چاہا پڑھادیا بینا جائز ہے، اس لیے کہ جُمعۃ قائم کرنا باوشاہِ اسلام یا اس کے نائب کا کام ہے، اس کا بیان آگے آتا ہے اور جہاں اسلامی سلطنت نہ ہو وہاں جوسب سے بڑا فقیہ شی صحیح العقیدہ ہو، احکام شرعیہ جاری کرنے میں سُلطان اسلام کے قائم مقام ہے، الہٰذاوہی جُمعۃ قائم کر بے بغیراس کی اجازت کے نہیں ہوسکتا اور یہ بھی نہ ہوتو عام لوگ جس کو امام بنائیں، عالم کے ہوتے ہوئے وام بطور خود کسی کو امام نہیں بنا سکتے نہ یہ ہوسکتا ہے کہ دوچا شخص کسی کو امام مقرر کرلیں ایسا جُمعہ کہیں سے ثابت نہیں۔

مسئا کہ کہ خمیراحتیاطی (کہ جُمُعَہ کے بعد چار رکعت نماز اس نیت سے کہ سب میں بچھلی ظہر جس کا وقت پایا اور نہ پڑھی) خاص لوگوں کے لیے ہے جن کوفرض جُمُعَہ ادا ہونے میں شک نہ ہواورعوام کہ اگر ظہراحتیاطی پڑھیں تو جُمُعَہ کے ادا ہونے میں آخیں شک ہوگا وہ نہ پڑھیں اور اس کی چاروں رکعتیں بجری پڑھی جا ئیں اور بہتریہ ہے کہ جُمُعَہ کی پچھلی چارسنتیں پڑھ کر ظہر احتیاطی پڑھیں بجردوسنتیں اور اس کی چاروں رکعتیں بجری پڑھی جا کیں۔ (3) (عالمگیری جمغیری، ردا کمتار وغیر ہا)

(۲) سلطان اسلام یا اس کا نائب جسے جمعہ قائم کرنے کاحکم دیا (⁴⁾

مَسِيَّاكُ ٩ ﴾ سُلطان عادل ہو یا ظالم جُمُّعَہ قائم كرسكتا ہے۔ یو ہیں اگرز بردستی بادشاہ بن بیٹے ایعنی شرعاً اس کوحق امامت نہ

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص٥٥١.
- "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الحمعة، ج٣، ص١٨، و "الفتاوى الرضوية"، ج٨، ص٢١٦.
 - (3) "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص٥٥١.

و "صغيري"، فصل في صلاة الجمعة، ص٢٧٨، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في نية آخر ظهر بعد

صلاة الجمعة، ج٣، ص ٢١، و "الفتاوي الرضوية"، ج٨، ص٢٩٣.

🧣 🐠 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٥.

🥍 ہو،مثلاً قرشی نہ ہو یا اور کوئی شرط مفقو د ہو تو یہ بھی مجمعَۃ قائم کرسکتا ہے۔ یو ہیں اگر عورت بادشاہ بن بیٹھی تو اس کے حکم سے مجمعَۃ قائم

ہوگا، پینوزنہیں قائم کرسکتی۔⁽¹⁾ (درمختار،ردالحتاروغیرہا)

مَسَعَانُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ مُعْمَدَكُ المام مقرر كردياوه دوسرے سے بھی پڑھواسكتا ہے اگر چہاہے اس كااختيار نہ ديا ہوكہ دوسرے سے پڑھوادے۔(2) (درمختار)

مستانی ال استانی الم جُمعَه کی بلااجازت کسی نے جُمعَه بڑھایاا گرامام یاو ڈخص جس کے حکم سے جُمعَة قائم ہوتا ہے شریک ہوگیا

تو ہوجائے گا ورنہ ہیں۔⁽³⁾ (درمختار،ردالحتار)

کیاجائزے۔⁽⁴⁾(درمختاروغیرہ)

مَسِيَّالُ اللّٰ ﷺ مسی شہر میں بادشاہ اسلام وغیرہ جس کے حکم سے جُمُعۃ قائم ہوتا ہے نہ ہو تو عام لوگ جسے حیاہیں امام بناویں۔ یو ہیں اگر بادشاہ سے اجازت نہ لے سکتے ہوں جب بھی کسی کومقرر کر سکتے ہیں۔⁽⁵⁾(عالمگیری، درمختار)

سَسَالُهُ ١٦٠﴾ حاكم شهرنابالغ يا كافر ہے اوراب وہ نابالغ بالغ ہوا يا كافرمسلمان ہوا تواب بھی جُمُعُة قائم كرنے كاان كوحق نہیں،البتۃاگرجدیدحکم ان کے لیے آیا یا اوشاہ نے کہہ دیا تھا کہ بالغ ہونے یا اسلام لانے کے بعد جُمُعَۃ قائم کرنا تو قائم کرسکتا

ہے۔⁽⁶⁾(عالمگیری) مَسِعًا الله الله عليه والمازت مُجمَّعَه كي اجازت ہے اور مُجمَّعَه كي اجازت خطبه كي اجازت ہے اگرچه كہد ديا موكه خطبه پڑھنا اور جُمُّعَه نه قائم کرنا۔ ⁽⁷⁾ (عالمگیری)

مَسِعًا اللهُ اللهِ المِلْمُ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المِلمُلِي المُلْمُلِي اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المُل باطل کر دی تو لوگوں کواب جُمُعَه پڑھنے کا اختیار نہیں۔⁽⁸⁾ (ردالمختار) ہیاس وقت ہے کہ باوشاہِ اسلام نے شہریت باطل کی ہواور

- ❶ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في صحة الجمعة ... إلخ، ج٣، ص٩، وغيرهما.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص١٠.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في جواز استنابة الخطيب، ج٣، ص١٤.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص١٤.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦.
 - 7 المرجع السابق. 6 المرجع السابق.
 - المحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في جواز استنابة الخطيب، ج٣، ص١٦.

کافرنے باطل کی توریا ھیں۔

مَسِيَّالُهُ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ كُو بادشاہ نے معزول كرديا توجب تك معزولى كاپرواند ندآ ئے يا خود بادشاہ ندآ ئے معزول ند

ہوگا۔⁽¹⁾(عالمگیری)

مَسِعًا اللهُ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى عَلْ عَلَى عَلَى

(٣) وقت ظهر

766

لیعنی وفت ظہر میں نماز پوری ہوجائے تواگرا ثنائے نماز میں اگر چہتشہد کے بعدعصر کا وفت آگیا جُمُعَہ باطل ہوگیا ظہر کی قضایۂ صیس ۔⁽³⁾ (عامهٔ کتب)

سَمَانُ الله مقدی نماز میں سوگیا تھا آنگھاں وقت کھلی کہ امام سلام پھیر چکا ہے تو اگر وقت باتی ہے جُمُعَہ پورا کر لے ورنہ ظہر کی قضا پڑھے یعنی نئے تحریمہ سے۔ (4) (عالمگیری وغیرہ) یو ہیں اگر اتنی بھیڑتھی کہ رکوع و تبود نہ کر سکا یہاں تک کہ امام نے سلام پھیر دیا تواس میں بھی وہی صورتیں ہیں۔ (5) (در مختار)

(٤) خطبه

مَسَعَلَهُ ٢٠ ﴿ خطبه جُمُعَه مِين شرط بيب، كه:

- (۱) وفت میں ہواور
- (۲) نمازے پہلےاور
- (٣) اليي جماعت كسامنه وجو جُعُد كے ليے شرط ہے يعنى كم سے كم خطيب كے سواتين مرداور
- (۴) اتنی آواز سے ہوکہ پاس والے سُن سکیں اگر کوئی امر مانع نہ ہو تو اگر زوال سے پیشتر خطبہ پڑھ لیایا نماز کے بعد

پڑھایا تنہا پڑھایاعورتوں بچوں کےسامنے پڑھا توان سب صورتوں میں جُئحَہ نہ ہوااورا گربہروں یاسونے والوں کےسامنے پڑھا یاحاضرین دور ہیں کہ سنتے نہیں یامسافریا بیاروں کےسامنے پڑھاجوعاقل بالغ مرد ہیں تو ہوجائے گا۔⁽⁶⁾(درمختار ،ردالحتار)

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الحمعة، ج١، ص١٤٦.
 - 2 المرجع السابق. 3 المرجع السابق.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢١.
- 🥞 🙃 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في نية آخر ظهر بعد صلاة الجمعة، ج٣، ص٢١.

جُمُعَة كابيان 🚡

سے فرض ادا ہو گیا مگرا ہے ہی پراکتفا کرنا مکروہ ہے۔ ⁽¹⁾ (درمختار وغیرہ)

مَسِيَّاكُ ٢٦ ﴾ جيمينك آئى اوراس پر اَلْتَحَمُدُ لِلله كها ياتعجب كے طور پر سُبُّ حن الله يا لا إلله إلَّا الله كها تو فرض اوا

نه ہوا۔⁽²⁾(عالمگیری)

مسئانی سار علی و میاز میں اگر زیادہ فاصلہ ہوجائے تووہ خطبہ کافی نہیں۔⁽³⁾ (درمختار)

سنت یہ ہے کہ دو خطبے پڑھے جائیں اور بڑے بڑے نہ ہوں اگر دونوں مل کر طوال مفصّل سے بڑھ

جائيں نو مکروہ ہےخصوصاً جاڑول ⁽⁴⁾ میں ۔⁽⁵⁾ (درمختار،غنیہ)

مسئلهٔ ۲۵ 🔑 خطبه مین به چیزین سنت بین:

(۱) خطیب کا پاک ہونا۔

(٢) كطرابونا_

(۳) خطبہ سے پہلے خطیب کا بیٹھنا۔

(۴) خطیب کا منبر بر ہونا۔ اور

(۵) سامعین کی طرف مونھ۔ اور

(۲) قبلہ کو پیٹھ کرنااور بہتریہ ہے کہ منبر محراب کی بائیں جانب ہو۔

(٤) حاضرين كامتوجه بإمام مونا ـ

(٨) خطبه سے پہلے آعُوندُ باللَّهِ آسته يرُّ هنا۔

(9) اتنی بلندآ واز سے خطبہ پڑھنا کہلوگ سنیں۔

(۱۰) الحمدیے شروع کرنا۔

(۱۱) الله عزوجل كي ثنا كرنا_

1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٢، وغيره .

2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الحمعة، ج١، ص١٤٦.

3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٧.

€..... لیعنی سر د بول۔ 4.....

5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٣.

- (۱۲) الله عزوجل كي وحدانيت اوررسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم كي رسالت كي شهاوت وينابه
 - (۱۳) حضور (صلى الله تعالى عليه وسلم) بر درود بهيجنا ـ
 - (۱۴) کم سے کم ایک آیت کی تلاوت کرنا۔
 - (١٥) يهلي خطبه مين وعظ ونصيحت بهونا ـ
 - (۱۲) دوسرے میں حمدوثناوشہادت ودرود کااعادہ کرنا۔
 - (۱۷) دوسرے میں مسلمانوں کے لیے دُعاکرنا۔
 - (۱۸) دونول خطبے ملکے ہونا۔
- (19) دونوں کے درمیان بقدر نتین آیت پڑھنے کے بیٹھنا۔ مستحب بیہے کہ دوسرے خطبہ میں آواز بہنست پہلے کے پیٹھنا۔ مستحب بیہے کہ دوسر نظبہ اس سے پہلے کے پیٹ ہوا ہو جمنین مکر مین حضرت جمزہ و حضرت عباس رضی اللہ تعالی عنبم کا ذکر ہو بہتر یہ ہے کہ دوسرا خطبہ اس سے شروع کریں:

اَلْحَمُدُ لِلَّهِ نَحُمَدُهُ وَنَسْتَعِيْنُهُ وَنَسْتَغُفِرُهُ وَنُوْمِنُ بِهِ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُودُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ اَنْفُسِنَا وَمِنُ سَيَّاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهُدِى اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَـهُ وَمَنْ يُضُلِلُهُ فَلَا هَادِى لَـهُ . (1)

- (۲۰) مرداگرامام کےسامنے ہوتوامام کی طرف موزھ کرے اور دہنے بائیں ہوتوامام کی طرف مڑجائے۔ اور
- (۲۱) امام سے قریب ہونا افضل ہے مگر بیجائز نہیں کہ امام سے قریب ہونے کے لیے لوگوں کی گردنیں پھلانگے ، البتہ اگرامام ابھی خطبہ کو نہیں گیا ہے اور آگے جگہ باقی ہے تو آگے جاسکتا ہے اور خطبہ شروع ہونے کے بعد مسجد میں آیا تو مسجد کے

کنارے ہی بیٹھ جائے۔

- (۲۲) خطبه سننے کی حالت میں دوزانو بیٹھے جیسے نماز میں بیٹھتے ہیں۔(2) (عالمگیری، درمختار، عنیه وغیر ہا)
- مَسَعَانُهُ 👣 🐣 بادشاہ اسلام کی الیی تعریف جواس میں نہ ہوحرام ہے، مثلاً ما لک رقاب الامم کہ میمحض جھوٹ اور
-حد ہے اللہ (عزوجل) کے لیے، ہم اس کی حمد کرتے ہیں اور اس سے مدد طلب کرتے ہیں اور مغفرت چاہتے ہیں اور اس پر ایمان لاتے ہیں اور اس پر ایمان لاتے ہیں اور اس پر توکل کرتے ہیں اور اللہ (عزوجل) کی پناہ مانگتے ہیں اپنے نفوں کی برائی سے اور اپنے اعمال کی بدی ہے جسکواللہ (عزوجل) ہمایت کرے اسے کوئی گمراہ کرنے والانہیں اور جس کو گمراہ کرے اسے مہدایت کرنے والاکوئی نہیں۔ ۱۲
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص٦٤١، ٧٤١.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٣ _ ٢٦.

 $(0,1)^{(1)}$ رام ہے۔ $(0,1)^{(1)}$

مسئل کے جس خطبہ میں آیت نہ پڑھنا یا دونوں خطبوں کے درمیان جلسہ نہ کرنا یا اثنائے خطبہ میں کلام کرنا مکروہ ہے،

البتة اگرخطیب نے نیک بات کا حکم کیایار کی بات سے منع کیا تواسے اس کی ممانعت نہیں۔(2) (عالمگیری)

سَسَعَالُہُ ٢٨﴾ ﴿ غير عربي ميں خطبه پڑھنا يا عربي كے ساتھ دوسرى زبان خطبه ميں خلط كرنا خلاف سنت متوارثہ ہے۔ يو ہيں خطبه ميں اشعار پڑھنا بھى نہ چاہيے اگر چەعربي ہى كے ہوں، ہاں دوايک شعر پندونصائح كے اگر بھى پڑھ لے تو حرج نہيں۔

(۵) جماعت یعنی امام کے علاوہ کم سے کم تین مرد

سَسَنَاكُونِ اللَّهِ الرَّمْيِن غلام يامسافريا بياريا گونگے يا اُن پڙھ مقتدي ہوں تو جُمُعَہ ہوجائے گا اور صرف عورتيں يا بچے ہوں تونہيں _⁽³⁾ (عالمگيري، ردالمختار)

مسئل و تنین خوان کے ساتھ امام جُمعت بھاگ گئے اور دوسرے تین خوس آگئے تو ان کے ساتھ امام جُمعت پڑھے بعنی جُمعت کے لیے انھیں لوگوں کا ہونا ضروری نہیں جو خطبہ کے وقت حاضر تھے بلکہ ان کے غیر سے بھی ہوجائے گا۔(4)(درمختار)

سین رکعت کا سجدہ کرنے سے پیشتر سب مقتدی بھاگ گئے یا صرف دورہ گئے تو جُمُعَہ باطل ہو گیا سرے سے ظہر کی نیت باند ھے اورا گرسب بھاگ گئے مگر تین مرد باقی ہیں یا سجدہ کے بعد بھاگ گئے تھے گر پہلے رکوع میں آکر شامل ہو گئے یا خطبہ کے بعد بھاگ گئے اور امام نے دوسرے تین مردوں کے ساتھ جُمُعَہ پڑھا تو ان سب صور توں میں جُمُعُہ بڑھا تو ان سب صور توں میں جُمُعُہ جائز ہے۔ (5) (درمختار، ردالمحتار)

مسئانی اس نے جباً للّٰهُ اکْجَبَر کہااس وقت مقتدی باوضو تھے مگرانہوں نے نیت نہ باندھی پھر یہ سب بے وضو ہو گئے اور دوسر بے لوگ آ گئے تو ہو گیا اور اگر تحریمہ ہی کے وقت سب مقتدی بے وضو تھے پھر اور لوگ آ گئے تو امام

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٠.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٨.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٧.

4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٧.

🥱 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في قول الخطيب... إلخ، ج٣، ص٢٧.

مجمئحة كابيان

ش مرے سے تح یمہ باندھے۔⁽¹⁾ (خانیہ)

(٦) اذن عام

یعنی مسجد کا درواز ہ کھول ویا جائے کہ جس مسلمان کا جی چاہے آئے کسی کی روک ٹوک نہ ہو، اگر جامع مسجد میں جب

لوگ جمع ہو گئے دروازہ بند کر کے جُمُعَہ پڑھانہ ہوا۔⁽²⁾(عالمگیری)

مَسِيَّانُ ٣٣٠﴾ بادشاہ نے اپنے مکان میں جُمُعۃ پڑھااور دروازہ کھول دیالوگوں کوآنے کی عام اجازت ہے تو ہوگیالوگ آئیں بانہ آئیں اور درواز ہبند کر کے بیٹھایا در بانوں کو ہٹھا دیا کہ لوگوں کو آنے نہ دیں تو مجمعَة بنہ ہوا۔⁽³⁾ (عالمگیری)

مسئ المرسيد عام عورتوں کواگرمسجد جامع سے روکا جائے تو اون عام کے خلاف نہ ہوگا کہ ان کے آنے میں خوف فتنه ہے۔ (۱۷ (روالمختار)

جُمُعَہ واجب ہونے کے لیے گیارہ شرطیں ہیں۔ان میں سے ایک بھی معدوم ہو تو فرض نہیں پھر بھی اگر بڑھے گا تو ہوجائے گا بلکہ مردعاقل بالغ کے لیے جُمُعَہ پڑھناافضل ہےاورعورت کے لیےظہرافضل، ہاںعورت کا مکان اگرمسجد سے بالکل متصل ہے کہ گھر میں امام مسجد کی اقتدا کر سکے تواس کے لیے بھی جُمُعَه افضل ہے اور نابالغ نے جُمُعَہ بڑھا تونفل ہے کہاس پرنماز فرض ہی نہیں ۔ ⁽⁵⁾ (درمختار، ردامختار)

- (۱) شهرمیں مقیم ہونا
- (٢) صحت يعنى مريض پر جُمعة فرض نہيں مريض سے مرادوہ ہے كہ مجد جُمعة تك نه جاسكتا ہو يا چلا تو جائے كامكر مرض

بڑھ جائے گایا دیریمیں اچھا ہوگا۔ ⁽⁶⁾ (غنیہ) شیخ فانی مریض کے حکم میں ہے۔ ⁽⁷⁾ (درمختار)

مَسِعًا ﴾ ﴿ ﴿ وَقَوْلٍ مِينَ كَا يَهُارِدار ہو، جانتا ہے كہ جُمُعُهُ وَجائے گا تو مریض دِ قتوں میں پڑ جائے گا اوراس كا كوئي ىرسان حال نەموگا تواس تياردارىر جُمُعَهٔ فرضْ نہيں ـ ⁽⁸⁾ (درمختار دغير ہ) [.]

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص٨٤١.
 - 3 المرجع السابق. 2 المرجع السابق.
- 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في قول الخطيب... إلخ، ج٣، ص٢٩.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٠.
 - 6 "غنية المتملى "، فصل في صلاة الجمعة، ص٤٨ ٥.
 - 7 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٣١.
 - 🔏 🔞 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣١، وغيره .

(س) آزاد ہونا۔ غلام پر جُمعَة فرض نہیں اور اس کا آقامنع کرسکتا ہے۔ (1) (عالمگیری)

سک (دہو چاہو ہاتی کے لیے سعایت کرتا ہو لیعنی اقرآزاد ہو نرز کر لیکا کر ایس تاکو متاہدا ہے ہی ڈئٹر فرض میر (2) مالمگیری دو متال

یعنی بقیہ آزاد ہونے کے لیے کما کراپنے آقا کو دیتا ہواس پر بھی جُمُعَهٔ فرض ہے۔ ⁽²⁾(عالمگیری، درمختار)

مسکان ۳۸ ﴾ مالک اپنے غلام کوساتھ لے کر مسجد جامع کو گیا اور غلام کو درواز ہ پر چھوڑا کہ سواری کی حفاظت کرے تو

اگر جانور کی حفاظت میں خلل نہ آئے پڑھ لے۔(⁴⁾ (عالمگیری)

مَسَنَا اللهُ اللهِ اللهِ عَلَام كُوجُهُ مَعَ بِرُ صِنَى اجازت دے دی جب بھی واجب نہ ہوااور بلاا جازت ما لک اگر جُمُعَہ یا عید کو گیاا گرجانتا ہے کہ مالک ناراض نہ ہوگا تو جائز ہے ور نہیں۔(5) (ردالحتار)

سن کا کست اور اور مز دور کو مجمع پڑھنے سے نہیں روک سکتا ، البتۃ اگر مسجد جامع دور ہے تو جتنا حرج ہوا ہے اس کی پر ملک کی ہے۔

مزدوری میں کم کرسکتا ہے اور مزدوراس کا مطالبہ بھی نہیں کرسکتا۔ (6) (عالمگیری)

(۴) مردہونا

(۵) بالغ ہونا

(٢) عاقل ہونا۔ یددونوں شرطیس خاص جُمُعَہ کے لیے نہیں بلکہ ہرعبادت کے وجوب میں عقل وبلوغ شرط ہے۔

(2) انگھاراہونا۔⁽⁷⁾

مَسِيَّلِيُّ <mark>اس</mark> کِي چشم اور جس کی نگاہ کمز ور ہواس پر مجمعة فرض ہے۔ یو ہیں جواند ھامسجد میں اذ ان کے وفت باوضو ہو

- € "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص ١٤٤.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج ١، ص ١٤٤.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٣١.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص٤٤١.
 - 4 المرجع السابق.
- 5..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.
 - 6 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٤.
- 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.

5t. E=

اس پر جُمُعَة فرض ہےاوروہ نابینا جوخود مبجد جُمُعَة تک بلات کلّف نه جاسکتا ہوا گر چەمبجد تک کوئی لے جانے والا ہو،اُ جرتِ مِثْل پر لے

جائے یابلااُ جرت اس پر جُنعَه فرض نہیں۔ (1) (در مختار، ردالحتار)

سکانہ کس ابیابلاتکلّف بغیر کسی کی مدد کے بازاروں راستوں میں چلتے پھرتے ہیں اور جس مسجد میں چاہیں بلا

پُو چھے جاسکتے ہیںان پر جُمُعَهٔ فرض ہے۔⁽²⁾ (ردالحتار)

(۸) چلنے پر قادر ہونا۔

مَسِعَلَةُ ٢٣٥﴾ ایا جي پر جُهُعة فرض نہيں،اگرچه کوئی ايباہو کہاہے اٹھا کر مسجد ميں رکھ آئے گا۔(3) (ردالمحتار)

مَسِعَالُهُ ۲۴ ﴾ جس کاایک پاؤں کٹ گیا ہویا فالج ہے برکار ہوگیا ہو،اگرمسجد تک جاسکتا ہو تواس پر جُمُعة فرض ہے ور نہ

نهیں_⁽⁴⁾(درمختاروغیرہ)

(9) قید میں نہ ہونا، مگر جب کہ کسی دَین کی وجہ سے قید کیا گیا اور مالدار ہے یعنی اداکرنے پر قادر ہے تو اس پر فرض ہے۔ (5) (روالحتار)

(١٠) بادشاه يا چوروغيره كسى ظالم كاخوف نه بهونا مفلس قر ضدار كواگر قيد كاانديشه بهو تواس برفرض نهيس _ (6) (ردالحتار)

(۱۱) مینه یا آندهی یااولے یاسردی کانه ہونا یعنی اسقدر کهان سے نقصان کاخوف صحیح ہو۔ (۲۰)

مسئ الم الم الم الم الم المت الم مرد كرسكتا ہے جواور نمازوں ميں امام ہوسكتا ہوا گر چداس پر جُمُعَة فرض نہ ہوجيسے مريض مسافر غلام ۔ (8) (در فقار) يعنى جبكه سلطان اسلام يا اس كانائب يا جس كواس نے اجازت دى بيار ہو يا مسافر تو بيسب نماز جُمُعَة پڑھا سكتے ہيں يا انہوں نے كسى مريض يا مسافريا غلام ياكسى لائق امامت كواجازت دى ہو يا بضر ورت عام لوگوں نے كسى ايسے كو امام مقرر كيا ہوجوامامت كرسكتا ہو، ينہيں كه بطور خود جس كا جى چاہے جُمُعة پڑھاوے كه يوں جُمُعَة نہ ہوگا۔

- "اللرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٢، وغيره.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط و جوب الجمعة، ج٣، ص٣٣.
 - 6 المرجع السابق.
- ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٣.
 - 8 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٣.

ميثن شن: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) 🚅

" 🔂 💨 جس پر مجمّعة فرض ہےاسے شہر میں مجمّعۃ ہوجانے سے پہلے ظہر پڑھنا مکروہ تحریمی ہے، بلکہ امام ابن ہمام

رضی اللہ تعالیٰ عند نے فرمایا: حرام ہے اور پڑھ لیا جب بھی جُمُعَہ کے لیے جانا فرض ہے اور جُمُعَہ ہو جانے کے بعد ظہر پڑھنے میں کراہت نہیں، بلکہاب تو ظہر ہی پڑھنافرض ہے،اگر جُمُعَہ دوسری جگہ نہ ان سکے مگر جُمُعَہ ترک کرنے کا گناہ اس کے سرر ہا۔ (1)

سیتان 🗥 💨 شخص که مجمعة ہونے سے پہلے ظہر بڑھ چکا تھانادم ہوکر گھر سے مجمعة کی نیت سے ذکلاا گراس وقت امام نماز

میں ہو تو نماز ظہر جاتی رہی ، جُئعَال جائے تو پڑھ لے ورنہ ظہر کی نماز پھر پڑھے اگر چے معجد دور ہونے کے سبب جُئعَہ نہ ملا ہو۔ (²⁾ (درمختار)

سن المستعلی اللہ میں میں میر میں میر میں میر میں ہے جس نے ظہر کی نماز پڑھ کی ہے اور جس جگہ نماز پڑھی وہیں بیٹھا ہے تو جب تک جُمُعَة شروع نہ کرے ظہرِ باطل نہیں اورا گر بقصد جُمُعَه وہاں سے ہٹا توباطل ہوگئی۔⁽³⁾ (درمختار، ردالحتار)

سنتان کی 🔫 🚽 ٹیخض اگر مکان سے نکلا ہی نہیں یا کسی اور ضرورت سے نکلا یا امام کے فارغ ہونے کے وقت یا فارغ ہونے کے بعد نکلایا اس دن جُمُعَہ پڑھاہی نہ گیایا لوگوں نے جُمُعَہ پڑھنا تو شروع کیا تھا مگر کسی حادثہ کے سبب پورانہ کیا توان سب صورتوں میں ظہر ماطل نہیں ۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری وغیرہ)

مَسَعَالُهُ ٥٠﴾ جن صورتوں میں ظهر باطل ہونا کہا گیا اس سے مراد فرض جاتا رہنا ہے کہ بینماز ابنفل ہوگئی۔ (5) (درمختاروغيره)

مستان ۵۱ 💨 جس پر جُعُدَفرض تقااس نے ظہری نماز میں امامت کی پھر جُعُدَ کو نکلا تو اس کی ظہر باطل ہے مگر مقتدیوں میں جو جُمُعَہ کونہ ڈکلااس کے فرض باطل نہ ہوئے۔⁽⁶⁾ (درمختار)

مَسَعًا ﴾ جس پرکسی عذر کے سبب مجمّعة فرض نہ ہووہ اگر ظہر پڑھ کر مجمّعۃ کے لیے ذکلا تواس کی نماز بھی جاتی رہی ،ان شرائط کے ساتھ جواو ہر مذکور ہوئیں۔ ⁽⁷⁾ (درمخار)

- ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٣.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٣٤.
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٤.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص ١٤٩.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٥٥.
 - 🤿 🕝 المرجع السابق. 7 المرجع السابق.

ے اور ہے۔ گئے است کا کا مسئل کا کہ سے مریض یامسافریا قیدی یا کوئی اور جس پر مجمعَة فرض نہیں ان لوگوں کو بھی مجمعَۃ کے دن شہر میں جماعت کے

ا قامت ظہر کی نماز تنہا تنہار پڑھیں، جماعت ان کے لیے بھی ممنوع ہے۔ (1) (در مختار)

مَسَعَالَةُ ١٥٥ ﴾ علما فرماتے ہیں جن مسجدوں میں جُمعَة نہیں ہوتا، انھیں جُمعَۃ کے دن ظہر کے وقت بندر کھیں۔(2) (درمختار)

مَسِعًا مُهُونِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَا عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَ

مسكالهٔ (۵) الله عندورا كر جُمُعَة ك دن ظهر ربر سُص تو مستحب بير ب كه نماز جُمُعَة موجانے كے بعد ربر هے اور تاخير نه كى تو

مکروہ ہے۔(4)(درمختار)

مسئلہ <u>۵۷ گیا۔ لہزاا بی</u> دوہی رکعتیں پوری کے بعد شریک ہوااسے جُمُعَہُ لگیا۔لہذاا بی دوہی رکعتیں پوری کرے۔(⁵⁾(عالمگیری وغیرہ)

سَسَعَالُہ ۵۹ ﷺ جب امام خطبہ کے لیے کھڑا ہوااس وفت سے ختم نماز تک نماز واذ کاراور ہرفتم کا کلام منع ہے، البتہ صاحب ترتیب اپنی قضانماز بڑھ لے۔ یو ہیں جو شخص سنت یانفل پڑھر ہاہے جلد جلد یوری کر لے۔ (7) (درمختار)

مسئل المام وغیرہ میسب خطبہ کی حالت میں مثلاً کھانا پینا،سلام وجواب سلام وغیرہ میسب خطبہ کی حالت میں بھی حرام میں ہے کہ میں اللہ نہ میں اللہ نہ کہ میں اللہ نہ کہ کا میں میں اللہ نہ کہ کا میں مناز میں مناز میں مناز میں من

ہیں یہاں تک کہامر بالمعروف، ہاں خطیب امر بالمعروف کرسکتا ہے، جب خطبہ پڑھے تو تمام حاضرین پرسننااور چپ رہنافرض ہے، جولوگ امام سے دور ہوں کہ خطبہ کی آواز ان تک نہیں پہنچتی انھیں بھی چپ رہنا واجب ہے، اگر کسی کو بری بات کرتے

- الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٦.
 - 2 المرجع السابق.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١٠ ص ٩٠٠.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٦.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١٠ ص ٩٠٠.
 - المرجع السابق. و "غنية المتملى"، فصل في صلاة الجمعة، ص٥٥٥.
 - 7 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٨.
 - و"جدالممتار" على "ردالمحتار"كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج١،ص٣٧٨.

ویکھیں توہاتھ یاسرکے اشارے ہے منع کر سکتے ہیں زبان سے ناجائز ہے۔ (1) (درمختار)

مسئان ال الله خطبہ سننے کی حالت میں دیکھا کہ اندھا کوئیں میں گرا جا ہتا ہے پاکسی کو بچھو وغیرہ کا ٹنا جا ہتا ہے، تو میں میں کی دید میں گری ہوں اس نہ میں میں کہ بیادہ میں میں میں کی دور میں میں کہ بیادہ میں اسکوری دور میں اسکور

زبان سے کہہ سکتے ہیں،اگراشارہ یا دبانے سے بتاسکیں تواس صورت میں بھی زبان سے کہنے کی اجازت نہیں۔⁽²⁾ (درمختار، ردامختار)

خطیب نے مسلمانوں کے لیے دُما کی تو سامعین کو ہاتھ اٹھانایا آمین کہنامنع ہے، کریں گے گنہگار ہوں

گے۔خطبہ میں وُرُ ودشریف پڑھتے وقت خطیب کا واہنے بائیں مونھ کرنا بدعت ہے۔ (3) (ردالحتار) سنتان سن کو کہ دشریف پڑھیں ،زبان کا نام یاک خطیب نے لیا تو حاضرین دل میں وُرُ ودشریف پڑھیں ،زبان

سے پڑھنے کی اسوفت اجازت نہیں۔ (4) یو ہیں صحابۂ کرام کے ذکر پراس وقت رضی اللہ تعالیٰ عنہم زبان سے کہنے کی اجازت نہیں۔ (درمختار وغیرہ)

سَسَعَالُهُ ١٦﴾ خطبهُ مُجُعَه کے علاوہ اورخطبول کا سننا بھی واجب ہے، مثلاً خطبہ عیدین ونکاح وغیر ہما۔ (5) (درمختار) سَسَعَالُهُ ١٥﴾ ﴾ پہلی اذان کے ہوتے ہی سعی واجب ہے اور بیجے وغیرہ ان چیزوں کا جوسعی کے منافی ہوں چھوڑ دینا

واجب بہاں تک کدراستہ چلتے ہوئے اگر خرید و فروخت کی تو یہ بھی ناجائز اور مسجد میں خرید و فروخت تو سخت گناہ ہے اور کھانا کھار ہاتھا کہاذان جُئحَہ کی آ واز آئی اگریہاندیشہ ہو کہ کھائے گا تو جُئحۂ فوت ہوجائے گا تو کھانا چھوڑ دے اور جُئحۂ کوجائے ، جُئحَہ کے

۔ لیے اطمینان ووقار کے ساتھ جائے۔ ⁽⁶⁾ (عالمگیری، درمختار) مسئل ۱۷ ﷺ خطیب جب منبر پر بیٹھے تو اس کے سامنے دوبارہ اذان دی جائے۔ ⁽⁷⁾ (متون) یہ ہم او پر بیان کر آئے

کہ سامنے سے میرا ذہیں کہ مسجد کے اندر منبر سے متصل ہو کہ مسجد کے اندراذ ان کہنے کوفقہائے کرام مکروہ فر ماتے ہیں۔

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٩.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٩.
- 3 "ردال محتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط و جوب الجمعة، ج٣، ص٣٨، و مطلب في قول
 الخطيب... إلخ، ص٢٢.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٤٠.
 - 5 المرجع السابق.
 - 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص ٢٤. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٢٤.
 - 🕡 ---- "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٤.

اکثر جگہ دیکھا گیا کہ اذان ٹانی پیت آ واز سے کہتے ہیں، بینہ چاہیے بلکہ اسے بھی بلندآ واز سے کہیں کہ استعمال کے استحمال کے استعمال کے استعمال کے استعمال کے استحمال ک

اس سے بھی اعلان مقصود ہےاور جس نے پہلی نشنی اسے سن کر حاضر ہو۔ ⁽¹⁾ (بحروغیرہ)

مسئل 10 ﷺ خطبختم ہوجائے تو فوراً قامت کہی جائے ،خطبہ وا قامت کے درمیان دنیا کی بات کرنا مکروہ ہے۔ (2)

(درمختار)

<u> مسئانہ 19 ﷺ جس نے خطبہ پڑھا وہی نماز پڑھائے ، دوسرا نہ پڑھائے اور اگر دوسرے نے پڑھا دی جب بھی ہو</u>

جائے گی جبکہ وہ ماڈون ⁽³⁾ ہو۔ یو ہیں اگر نابالغ نے بادشاہ کے حکم سے خطبہ پڑھا اور بالغ نے نماز پڑھائی جائز ہے۔ ⁽⁴⁾ (درمختار،ردامختار)

<u>مَسْعَالُهُ کَ ﴾</u> نماز جمعہ میں بہتر بیہ ہے کہ پہلی رکعت میں سور ہُ جمعہ اور دوسری میں سور ہُ منافقون یا بہلی میں سبتیج اسم اور دوسری میں هَلُ اَ تُنْكَ بِرُّ هے، مَّر بمیشہ اُنھیں کونہ بڑھے بھی بھی اور سورتیں بھی بڑھے۔ (⁵⁾ (ردالمختار)

مسئ کا کی ہے۔ ہورہ کی اور زوال سے پہلے آبادی شہر سے باہر ہوگیا تو حرج نہیں ورنہ ممنوع ہے۔ (6) (درمختار وغیرہ)

مستان کرک ہے۔ جامت بنوانا اور ناخن ترشوا ناجمعہ کے بعد ⁽⁷⁾افضل ہے۔ ⁽⁸⁾ (درمختار)

<u> مسئل کی ج</u> سوال کرنے والا اگر نمازیوں کے آگے سے گزرتا ہو یا گردنیں پھلانگتا ہو یا بلاضرورت مانگتا ہو تو سوال ترکیب کرنے کا اس کرنے کے والا اگر نمازیوں کے آگے سے گزرتا ہو یا گردنیں پھلانگتا ہو یا بلاضرورت مانگتا ہو تو سوال

بھی ناجائز ہےاورایسےسائل کودینا بھی ناجائز۔⁽⁹⁾ (ردامختار) بلکہ سجد میں اپنے لیے مطلقاً سوال کی اجازت نہیں۔

سَسَنَا کَوْمِ کِی ہے۔ جمعہ کے دن یارات میں سور ہ کہف کی تلاوت افضل ہے اور زیادہ بزرگی رات میں پڑھنے کی ہے نسائی بہتی بسند سیح ابوسعید خدری دخی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ فرماتے ہیں: ''جو شخص سور ہ کہف جمعہ کے دن پڑھے ،اس کے لیے دونوں

- 1 "البحر الرائق"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٧٣. وغيره
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٣.
 - -3 لعنی جس کواحازت دی گئی۔
- - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: أمر الخليفة... إلخٌ، ج٣، ص ٢٤.
 - و "البحر الرائق"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجمعة، ج٢، ص٢٧٥.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٤٤.
- البین جعد سے پہلے اور بعد میں ناخن وغیر و ترشوا نا جائز ہے البین حدیث میں جعد سے پہلے کا ذکر آیا ہے جبیبا کہ صدر الشريعة نے بہاشريعت حصد ۱۱ میں بیصدیث رفم فرمائی ہے کہ حضر سے ابو ہر برہ وَجَى الله عنه سے مروی ہے کہ حضورا قدس صلّی الله تعالیٰ علیٰہ وَالله وَسَلَم جعد کے دن نماز کے لیے جانے سے پہلے موجھیں کتر واتے اور ناخن ترشواتے تھے۔ (شعب الایمان، باب العشرون من شعب لایمان…الخ، فضل الوضو، ج۲، ص۲۶)۔...علمیه
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٤٦.
 - 9 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في الصدقة على سؤال المسجد، ج٣، ص٤٧.

🗞 مُعوں کے درمیان نورروشن ہوگا۔'' (1)

اوردارمی کی روایت میں ہے، ''جوشب جُمُعَہ میں سورہ کہف پڑھے اس کے لیے وہاں سے کعبہ تک نورروشن ہوگا۔'' (2)

اور ابو بکر ابن مردویہ کی روایت ابن عمرضی اللہ تعالیٰ عہما سے ہے کہ فرماتے ہیں: ''جو جُمُعَہ کے دن سورہ کہف پڑھے اس
کے قدم سے آسان تک نور بلند ہوگا جو قیامت کو اس کے لیے روشن ہوگا اور دو جُمعوں کے درمیان جو گناہ ہوئے ہیں بخش دیے
جائیں گے۔'' (3) اس حدیث کی اسناد میں کوئی حرج نہیں ۔ حم اللہ خان پڑھنے کی بھی فضیلت آئی ہے۔

طبرانی نے ابوا مامہ رض اللہ تعالی عنہ سے روایت کی کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے فر مایا: '' جُو محض جُمُعَۃ کے دن یارات میں حم اللہ خان پڑھے، اس کے لیے اللہ تعالی جنت میں ایک گھر بنائے گا۔'' (4) اور ابو ہر پر ورضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ '' اس کی مغفرت ہوجائے گی۔'' (5) اور ایک روایت میں ہے،'' جو کسی رات میں حسم اللہ خان پڑھے، اس کے لیے ستر ہزار فرشتے استغفار کریں گے۔'' (6) جُمُعَۃ کے دن یارات میں جوسور ہُ یکس پڑھے، اس کی مغفرت ہوجائے۔'' (7)

فائده: جُمُعَه كه دن روعيل جمع بوتى بين، لهذااس مين زيارت قبور كرنى جابيه اوراس روزجهم نهيس بحر كاياجا تا-(8)

(درمختار)

عيدين كابيان

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ وَلِتُكُمِ لُواالِّعِلَّةَ وَلِتُكَبِّرُواالله عَلَى مَاهَل كُمْ ﴾ (9) روزوں كى تنتى بورى كرواور الله كى برائى بولوكداس في محيس مدايت فرمائى۔

- 1 "السنن الصغرى" للبيهقي، كتاب الصلاة، باب فضل الجمعة، الحديث: ٢٠٨، ج١، ص٢٠٠.
- 2 "سنن الدارمي"، كتاب فضائل القرآن، باب في فضل سورة الكهف، الحديث: ٧٠ ٣٤، ج٢، ص٤٦ ٥.
- 3 "الترغيب و الترهيب"، كتاب الجمعة، الترغيب في قرأة سورة الكهف... إلخ، الحديث: ٢، ج١، ص٢٩٨.
 - 4 "المعجم الكبير"، الحديث: ٢٦٠، ج٨، ص٢٦٤.
- 5..... "جامع الترمذي"، أبواب فضائل القرآن، باب ماجاء في فضل حمّ الدخان، الحديث: ٢٨٩٨، ج٤، ص٧٠٤.
- "جامع الترمذي"، أبواب فضائل القرآن، باب ماجاء في فضل حم الدخان، الحديث:٩٧، ٢٨٩٠، ج٤، ص٤٠٦.
- الترغيب و الترهيب"، كتاب الجمعة، الترغيب في قرأة سورة الكهف... إلخ، الحديث: ٤، ج١، ص٢٩٨.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص ٤٩.
 - 🐒 😏 ۱۸۰. پ۲، البقرة: ۱۸۵.

اورفر ما تاہے:

﴿ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ أَنَّ ﴾ (1)

اینے رب (عزوجل) کے لیے نماز پڑھاور قربانی کر۔

پ خلینٹ 🕽 🚽 ابن ماجہ ابوا مامہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتے ہیں:'' جوعیدین کی را توں

میں قیام کرے،اس کا دل نہ مرے گا جس دن لوگوں کے دل مریں گے۔'' (2)

خلیک اصبهانی معاذبن جبل رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که فرماتے ہیں:''جویا پنچ راتوں میں شب بیداری کرے

سرے لیے جنت واجب ہے، ذی الحجہ کی آٹھویں ، نویں ، دسویں را تیں اورعیدالفطر کی رات اور شعبان کی پندر ھویں رات (3) یعنی شب براءت''

خلین سی الل مدینه میں اوداودانس رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضورا قدس صلی الله تعالی علیه و بلم جب مدینه میں تشریف لائے ،

اس زمانه میں اہل مدینه سال میں وودن خوشی کرتے تھے (مہر گان و نیروز) ، فرمایا: یہ کیاون میں؟ لوگوں نے عرض کی ، جاہلیت میں ہم ان دنوں میں خوشی کرتے تھے ، فرمایا: ''الله تعالی نے ان کے بدلے میں ان سے بہتر دو دن شہمیں دیے ، عیداشی وعیدالفطر کے دن ۔' (4)

خلیث الله تعالی عدید مردی و این ماجه و داری بریده رضی الله تعالی عند سے راوی ، که ' حضور اقد س سلی الله تعالی علیه و بلا می برافطر کے دن کی کھو کھا کر نماز نے لیے تشریف لیے اور عید آخی کو نہ کھاتے ، جب تک نماز نه پڑھ لیتے '' (5) اور بخاری کی روایت انس رضی الله تعالی عند سے ہے ، که 'عید الفطر کے دن تشریف نه لے جاتے ، جب تک چند کھجوریں نه تناول فر مالیتے اور طاق ہوتیں ۔' (6) خلایث کی میں کہ نہ عید کو ایک راستہ سے تشریف لے جاتے کہ ابو ہریرہ رضی الله تعالی عند سے روایت کی ، که ' عید کو ایک راستہ سے تشریف لے جاتے کے جاتے کہ بات

اور دوسرے سے واپس ہوتے ۔'' ⁽⁷⁾

- 🗗 پ ، ٣، الكوثر: ٢.
- 2 "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب فيمن قام ليلتي العيدين، الحديث: ١٧٨٢، ج٢، ص٥٦٥.
- الترغيب و الترهيب"، كتاب العيدين والأضحية، الترغيب في إحياء ليلتى العيدين، الحديث: ٢، ج٢، ص٩٨.
 - سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب صلاة العيدين، الحديث: ١١٣٤، ج١، ص١١٨.
- الترمذي"، أبواب العيدين، باب ماجاء في الأكل يوم الفطر قبل الخروج، الحديث: ٢٤٥، ج٢، ص ٧٠.
 - ٣٢٨.... "صحيح البخاري"، كتاب العيدين، باب الأكل يوم الفطر قبل الخروج، الحديث: ٩٥٣، ج١، ص٣٢٨.
- 7 "جامع الترمذي"، أبواب العيدين، باب ماجاء في خروج النبي صلى الله عليه وسلم إلى العيد... إلخ، الحديث: ٤١ ٥، ج٢، ص٦٩.

ابوداود وابن ماجه کی روایت آتھیں سے ہے، کہ 'ایک مرتبہ عید کے دن بارش ہوئی تو مسجد میں حضور

(صلى الله تعالى عليه وسلم) نے عبيد كى نماز برهمى - ' (1)

خليك 🔨 🚽 صحيحيين ميں ابن عماس رضي الله تعالىء نہا سے مر وي ، كه 'دحضور (صلى الله تعالى عليه دسلم) نے عبيد كي نماز دوركعت

ک کیک کا کیا ہے۔ کا خاریث کا کیا۔

یرهی، نهاس کے بل نمازیرهی نه بعدی^{، (2)} خلینٹ 👂 💝 🕒 صحیح مسلم شریف میں ہے جاہر بن سمرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں: میں نے حضور (سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) کے

ساتھ عید کی نمازیرهی ایک دومرتبنییں (بلکہ بار ہا)، نداذ ان ہوئی ندا قامت ۔ ⁽³⁾

مسائل فقهيّه

عیدین کی نماز واجب ہے مگرسب برنہیں بلکہ انھیں برجن پر جُنحة واجب ہے اوراس کی ادا کی وہی شرطیں ہیں جو جُنحة ، کے لیے ہیں صرف اتنا فرق ہے کہ مجمعُۃ میں خطبہ شرط ہے اور عیدین میں سنت ، اگر مجمّعۃ میں خطبہ نہ پڑھا تو مجمّعۃ نہ ہوااوراس میں نه پڑھا تو نماز ہوگئ گر بُرا کیا۔ دوسرافرق بیہے کہ جُمُعَہ کا خطبہ قبل نماز ہےاورعیدین کابعد نماز ،اگریہلے پڑھ لیا تو بُرا کیا،مگرنماز ہوگئی لوٹائی نہیں جائے گی اورخطبہ کا بھی اعادہ نہیں اورعیدین میں نہاذان ہے نہا قامت،صرف دوبارا تنا کہنے کی اجازت ہے۔

مَسِعَالُهُ () ﴾ گاؤں میں عیدین کی نمازیڑ ھنا مکر ووتحریمی ہے۔ ⁽⁶⁾ (درمختار)

روزعید کے مستحبات

(۱) محامت بنوانا۔

- "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب يصلي بالناس العيد في المسجد إذا كان يوم مطر، الحديث: ١١٦٠، ج١، ص٥٢٥.
 - 2 "صحيح البخاري"، كتاب العيدين، باب الخطبة بعد العيد، الحديث: ٩٦٤، ج١، ص ٣٣١.
 - 3 "صحيح مسلم"، كتاب صلاة العيدين، باب كتاب صلاة العيدين، الحديث: ٨٨٧، ص ٤٣٩.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص٠٥١. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص١٥، وغيرهما .
 - النيرة النيرة "، كتاب الصلاة، باب العيدين، ص ١١٩.
 - 🐒 🌀 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٦.

جِبهَادِشْرِيْعَتْ خِصَّه چَهَامُ (4)

(۲) ناخن تر شوانا ـ

(۳) غسل کرنا۔

(۱۶) مسواک کرنا _د (۱)

(۵) اچھے کیڑے پہننا، نیا ہو تو نیاور نہ ڈھلا۔

(۲) انگوشی پہننا۔

(۷) خوشبولگانا۔

(٨) صبح كى نماز مسجد محلّه ميں بره صناب

(٩) عيرگاه جلد چلاجانا۔

(١٠) نمازے پہلے صدقہ فطرادا کرنا۔

(۱۱) عيرگاه کو پيدل جانا۔

(۱۲) دوسر براسته سے والیس آنا۔

(۱۳) نماز کو جانے ہے پیشتر چند تھجوریں کھالینا۔ تین، پانچ، سات یا کم وہیش مگر طاق ہوں، تھجوریں نہ ہوں تو کوئی

میشی چیز کھالے، نماز سے پہلے کچھ نہ کھایا تو گنهگار نہ ہوا مگر عشا تک نہ کھایا تو عتاب ⁽³⁾ کیا جائے گا۔ ⁽⁴⁾ کتب کثیرہ)

مسائل سواری پر جانے میں بھی حرج نہیں مگر جس کو پیدل جانے پر قدرت ہواس کے لیے پیدل جانا فضل ہے اور

ں ۔۔۔۔۔ بیاس کے علاوہ ہے جووضو میں کی جاتی ہے کہ وضو میں سنت مو کدہ ہے اور عید کی اس میں خصوصیت نہیں ، بلکہ وہ تو ہروضو کے لئے ہے۔ (ردالحتار) ۲امنہ حفظہ ربہ

اس کی تفصیلی معلومات کیلئے بہارشر بعت حصہ ۱۶ میں "انگوشی اور زیورکا بیان" ملاحظ فرما کیں۔

امیر اہلسنت، بانی وعوتِ اسلامی حضرت علامہ مولانا ابو بلال محمہ الیاس عطار قادری رضوی دامت برکاتیم العالیہ ' نماز کے اُحکام' میں فرماتے ہیں: جب بھی انگوشی پہنئے تو اِس بات کا خاص خیال رکھئے کہ صِرف ساڑھے چار ماشہ سے کم وَ زن چاندی کی ایک ہی انگوشی فرماتے ہیں: جب بھی انگوشی میں بھی مگینے ایک ہی انگوشی میں بھی میں بھی مگینے ایک ہی ہو، ایک سے زیادہ میکنیے نہ ہوں، بغیر میکنے کی بھی مت پہنئے ۔ لیک سے زیادہ نہ پہنئے اور اُس ایک انگوشی میں بھی مگینے ایک ہی مواند کی بھی مت پہنئے ۔ کلینے نہ ہوں، بغیر میکنے کی بھی مت پہنئے ۔ کلینے کے وَ زن کی کوئی قید نہیں، چاندی کا چھلٹہ مردنہیں بہن سکتا۔ کے وَ زن کی کوئی قید نہیں، چاندی کا چھلٹہ مردنہیں بہن سکتا۔ (''نمازے اُدکام' ،جسم مہمم ہے موادد کی ایک کی دورات کی انہوں کی دورات کی کوئی قید نہیں کی دورات کی دورات کی کوئی قید نہیں کی دورات کی

🗗 يعنى سرزنش_

₫ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١٠ ص٢١.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٤٥، وغيرهما.

والیسی میں سواری پرآنے میں حرج نہیں۔(1) (جو ہرہ، عالمگیری)

سین کی جوان ہے ہے جاناسنت ہے اگر چیر مسجد میں گنجائش ہواورعیدگاہ میں منبر بنانے یامنبر لے جانے میں

حرج نہیں۔⁽²⁾ (ردالحتاروغیرہ)

مَسِعَكُمْ ٥ ﴾ (١٥٧) خوشي ظاهر كرنا

- (۱۵) کثرت سے صدقہ دینا
- (١٦) عيدگاه کواطمينان ووقاراورنيچي نگاه کيے جانا
- (۱۷) آپس میں مبارک دینامتحب ہے اور راستہ میں بلند آواز سے تکبیر نہ کیے۔ (3) (ورمختار، روالحتار)

سَسَعَانُ اللّٰ بعدی نمازعید ہے قبل نفل نماز مطلقاً مکروہ ہے، عیدگاہ میں ہویا گھر میں اس پرعید کی نماز واجب ہویا نہیں، یہاں تک کہ عورت اگر چاشت کی نماز گھر میں پڑھنا چاہے تو نماز ہوجانے کے بعد پڑھے اور نماز عید کے بعد عیدگاہ میں نفل پڑھیں اگر چہ نمازعید مکروہ ہے، گھر میں پڑھ سکتا ہے بلکہ مستحب ہے کہ چار کعتیں پڑھے۔ بیا حکام خواص کے ہیں، عوام اگرنفل پڑھیں اگر چہ نمازعید سے پہلے اگر چہ عیدگاہ میں انھیں منع نہ کیا جائے۔ (در مختار، روالحتار)

مَسِنَا لَهُ کِی اَنْ اَنْ کَا وَقَت بِقِدْرایک نیزه آفتاب بلند ہونے سے ضحوہ کبری لیعنی نصف النہار شرعی تک ہے، مگر عیدالفطر میں دیر کرنا اور عیداضی میں جلد پڑھ لینامستحب ہے اور سلام پھیرنے کے پہلے زوال ہو گیا ہوتو نماز جاتی رہی۔ (5) (درمختار وغیرہ) زوال سے مراد نصف النہار شرعی ہے، جس کابیان باب الاوقات میں گزرا۔

نماز عید کا طریقه

نمازعید کاطریقہ بیہ ہے کہ دورکعت واجب عیدالفطر یا عیدافنی کی نیت کر کے کا نوں تک ہاتھ اٹھائے اوراللہ اکبر کہہ کر ہاتھ باندھ لے پھر ثنا پڑھے پھر کا نوں تک ہاتھ اٹھائے اور اللہ اکبر کہنا ہوا ہاتھ چھوڑ دے پھر ہاتھ اٹھائے اور اللہ اکبر کہہ کر ہاتھ

- 1 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ص١١٩.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص ٩٤٠.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٥. وغيره
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٦.
 - 4 المرجع السابق، ص٥٧ _ ٦٠ .
 - 🥱 🗗 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص ٦٠، وغيره .

900 (C)

چھوڑ دے پھر ہاتھ اٹھائے اور اللہ اکبر کہہ کر ہاتھ باندھ لے یعنی پہلی تکبیر میں ہاتھ باندھے، اس کے بعد دو تکبیروں میں ہاتھ لٹکائے پھر چوتھی تکبیر میں باندھ لے جائیں اور کھے کہ جہاں تکبیر کے بعد پچھ پڑھنا ہے وہاں ہاتھ باندھ لیے جائیں اور جہاں پڑھنا ہے وہاں ہاتھ چھوڑ دیے جائیں، پھر امام اعوذ اور بسم اللہ آہتہ پڑھ کر جہر کے ساتھ الجمد اور سورت پڑھے پھر رکوع وسجدہ کرے، دوسری رکعت میں پہلے الجمد وسورت پڑھے پھر تین بارکان تک ہاتھ لے جاکراللہ اکبر کہا ور ہاتھ نہ باندھے اور چوتھی بار بغیر ہاتھ اٹھائے اللہ اکبر کہتا ہوار کوع میں جائے، اس سے معلوم ہوگیا کہ عیدین میں ذائد تکبیریں چھ ہوئیں، تین پہلی میں قراءت سے پہلے اور تکبیری جمعوؤں تکبیروں میں قراءت سے بعلے اور ان چھوو ک تکبیروں

یں فراءت سے پہلے اور مبیر خریمہ کے بعد اور بین دوسری میں فراءت کے بعد ، اور مبیر ربوغ سے پہلے اوران چیووں مبیروں میں ہاتھ اٹھائے جائمیں گے اور ہر دوتکبیروں کے درمیان تین شبیج کی قد رسکته کرے اور عیدین میں مستحب بیہے کہ پہلی میں سور ہ میں مرد میں میں نتیجہ میں مہار دوسری مہار دوسری مہار دوسری میں میں دوسری ہوئے کا در میں دیاں کے جست مہار دوسری

سیان و تین کبیرین کہدے اگر چامام نے تین سے زیادہ کہی ہوں اورا گراس نے تبیرین کہد لے اگر چامام نے قراءت شروع کر دی ہواور تین ہی کہا م کے ماتھ رکوع میں جائے اور رکوع میں کبیر کہد لے اورا گراس نے تکبیرین نہ کہیں کہا امام رکوع میں پایا اور غالب چلا گیا تو کھڑے کھڑے کھڑے اور رکوع میں تابیر کہد لے اور اگرامام کورکوع میں پایا اور غالب گمان ہے کہ تکبیرین کہد کر راوع میں بایا اور غالب گمان ہے کہ تکبیرین کہد کر راوع میں کہد کر راوع میں بایا کی تو کھڑے کہ سے کہ پھر رکوع میں جائے ور نہ اللہ اکبر کہد کر رکوع میں جائے اور رکوع میں تبیرین کی تھیں کہ امام نے سراٹھالیا تو باقی ساقط ہوگئیں اور اگرامام کے رکوع سے اٹھے کے بعد شامل ہوا تو اب تکبیرین نہ کہے بلکہ جب اپنی پڑھے اس وقت کہے اور رکوع میں جہاں تکبیر کہنا بتایا گیا، اس میں ہاتھ نہ اٹھائے اور اگر دوسری رکعت میں شامل ہوا تو کہنی رکعت کی تبیرین اب نہ کہے بلکہ جب اپنی فوت کہا ور دوسری رکعت میں شامل ہوا تو کہنی رکعت کی تبیرین اس میں بھی وہی تفصیل ہے جو شدہ پڑے اور وہوئی۔ (3) (عالمگیری، در مختار وغیر ہما)

- 🕒 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص ٢١، وغيره .
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: أمر الخليفة... إلخ، ج٣، ص٦٣.
- € "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٥١.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦٤ _ ٦٦، وغيرهما .

نهيي<u> (2) (روالحتار)</u>

فَ مَسِيًّا فَهُ اللَّهِ عَلَيْهِ مِن اللَّهِ عَلَيْهِ مِن اللَّهِ عَلَيْهِ مِن اللَّهِ عَلَيْهِ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ مِن اللَّهِ عَلَيْهِ مِن اللَّهُ عَلَيْهُ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ مِن اللَّهُ عَلَيْهُ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ مِن اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَيْهِ عَلَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَ

نے کہیں،اگر چداس کے فدہب میں اتنی نہ تھیں۔⁽¹⁾ (عالمگیری)

سَعَلَیْ اللہ امام تکبیر کہنا بھول گیااور رکوع میں چلا گیا تو قیام کی طرف نہ لوٹے نہ رکوع میں تکبیر کہے۔(2) (ردالمحتار) مستعلیٰ اللہ کہ بہلی رکعت میں امام تکبیریں بھول گیا اور قراءت شروع کر دی تو قراءت کے بعد کہہ لے یارکوع میں اور

قراءت کااعادہ نہ کرے۔⁽³⁾ (غنیہ ، عالمگیری)

سَسَعَالُهُ اللهِ اللهِ

مستان ۱۳ مناز کے بعد امام دوخطبے پڑھے اور خطبہ مجھٹے میں جو چیزیں سنت ہیں اس میں بھی سنت ہیں اور جو وہاں مکروہ یہاں بھی مگروہ صرف دو ہاتوں میں فرق ہے ایک یہ کہ مجھٹے کے پہلے خطبہ سے پیشتر خطیب کا بیٹھنا سنت تھا اور اس میں نہ بیٹھنا سنت ہے دوسر سے یہ کہ اس میں پہلے خطبہ سے پیشتر نو بار اور دوسر سے کے پہلے سات بار اور منبر سے اتر نے کے پہلے چودہ باراللہ اکبر کہنا سنت ہے اور مجمعے میں نہیں۔ (5) (عالمگیری درمختار وغیر ہما)

سَنَاكُ ١٥﴾ عيدالفطر كے خطبہ ميں صدقهُ فطر كے احكام كي تعليم كرے، وہ پانچ باتيں ہيں:

(۱) کس پرواجب ہے؟ (۲) اورکس کے لیے؟ (۳) اورکب؟ (۴) اورکتنا؟ (۵) اورکس چیز ہے؟۔

بلکہ مناسب میہ ہے کہ عید سے پہلے جو جُمُعَہ پڑھے اس میں بھی میا دکام بتا دیے جائیں کہ پیشتر سے لوگ واقف ہو .

جائیں اورعیداغنی کے خطبہ میں قربانی کے احکام اور تکبیرات تشریق کی تعلیم کی جائے۔⁽⁶⁾ (درمختار، عالمگیری)

<u> مَسعَالَهُ اللَّهِ</u> امام نے نماز پڑھ لی اور کوئی شخص باقی رہ گیا خواہ وہ شامل ہی نہ ہوا تھایا شامل تو ہوا مگراس کی نماز فاسد ہوگئ تواگر دوسری جگمل جائے پڑھ لے ورنہ نہیں پڑھ سکتا، ہاں بہتریہ ہے کہ پیشخص چار رکعت چاشت کی نماز پڑھے۔⁽⁷⁾ (درمختار)

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١٠ ص١٥١.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: أمر الخليفة... إلخ، ج٣، ص٥٦.
- 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١٠ ص١٥١.
 - 4 المرجع السابق.
- 5..... المرجع السابق، ص٠٥٠، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧٧، وغيرهما .
 - 6 المرجع السابق.
 - 🕡 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦٧.

觉 📶 🗘 🗥 کسی عذر کے سبب عید کے دن نماز نہ ہوسکی (مثلاً سخت بارش ہوئی یا ابر کے سبب جاندنہیں ویکھا گیا اورگواہی ایسے وقت گزری کہ نماز نہ ہوسکی یا ابرتھا اور نماز ایسے وقت ختم ہوئی کہزوال ہو چکاتھا) تو دوسرے دن پڑھی جائے اور دوسر بے دن بھی نہ ہوئی تو عیدالفطر کی نماز تیسر بے دن نہیں ہوسکتی اور دوسر بے دن بھی نماز کا وہی وفت ہے جو پہلے دن تھا یعنی ایک نیزہ آفتاب بلند ہونے سے نصف النہار شرعی تک اور بلا عذر عیدالفطر کی نمازیہلے دن نہ پڑھی تو دوسرے دن نہیں یژه سکتے ۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار وغیر ہما)

مَسَعًا الله الله عبد الفرح ميں عيد الفطر كي طرح ہے صرف بعض باتوں ميں فرق ہے، اس ميں مستحب بيہ ہے كه نماز سے پہلے بچھ نہ کھائے اگر چہ قربانی نہ کرے اور کھالیا تو کراہت نہیں اور راستہ میں بلندآ واز سے تکبیر کہتا جائے اور عیداضیٰ کی نماز عذر کی وجہ سے بار ہویں تک بلا کراہت مؤخر کر سکتے ہیں، بار ہویں کے بعد پھرنہیں ہوسکتی اور بلاعذر دسویں کے بعد مکروہ ہے۔⁽²⁾(عالمگیری وغیرہ)

مسئان الحجامت بنوائے رنی ہو تومستحب میہ ہے کہ پہلی سے دسویں ذی الحجة تک نہ مجامت بنوائے ، نہ ناخن تر شوائے ۔ ⁽³⁾ (ردامختار)

مَسِيَّاكُمْ ٢٠﴾ عرفہ کے دن یعنی نویں ذی الحجہ کولوگوں کا کسی جگہ جمع ہوکر چاجیوں کی طرح وقوف کرنا اور ذکر و دُعامیں مشغول رہناصیحے ہیہے کہ پچھ مضایقہ نہیں جبکہ لازم وواجب نہ جانے اورا گرکسی دوسری غرض ہے جمع ہوئے ،مثلاً نماز استسقایر هنی ہے، جب توبلاا ختلاف جائز ہے اصلاً حرج نہیں۔ ⁽⁴⁾ (درمختار وغیرہ)

مَسِيَّالُ 1) ﴾ ۔ بعدنما زعیدمصافحہ (⁵⁾ ومعانقہ کرنا ⁽⁶⁾ جبیباعمو ماً مسلمانوں میں رائج ہے بہتر ہے کہاس میں اظہار مسرّ ت ہے۔⁽⁷⁾ (وشاح الجد)

مَسِيّاً اللهُ ٢٢﴾ نوین ذی الحجه کی فجر سے تیر ہویں کی عصر تک ہر نماز فرض پنجگا نہ کے بعد جو جماعت مستحبہ کے ساتھ ادا کی

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٥٢،١٥١. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦٨، وغيرهما .
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص٢٥، وغيره.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين مطلب في إزالة الشعر... إلخ، ج٣، ص٧٧.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص ٧٠، وغيره .
 - 🗗 يعنى ہاتھ ملانا۔ 6..... تعنی گلے ملنا۔
 - 🗨 🗗 انظر: "الفتاوى الرضوية"، ج٨، ص٢٠١.

الكابر الكبير بلندآ واز سے كہناواجب ہےاورتين بارافضل اسے كبيرتشريق كہتے ہيں، وہ يہ:

اَللَّهُ اَكْبَرُ اللَّهُ اَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ اَكْبَرُ اللَّهُ اَكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحَمُدُ ط (1) (تنويرالابصاروغيره)

785

<u> مسئالہ کی ایانعل نہ کیا ہو کہ اس نماز پر</u> سالم بھیرنے کے بعد فوراً واجب ہے یعنی جب تک کوئی ایسانعل نہ کیا ہو کہ اس نماز پر

بنا نہ کر سکے، اگر مسجد سے باہر ہو گیا یا قصداً وضوتوڑ دیا یا کلام کیا اگر چہ سہواً تو تکبیر ساقط ہوگئی اور بلاقصد وضوٹوٹ گیا تو

کہدلے_⁽²⁾(درمختار،ردالمختار)

سَعَالَا اورا گراس کی اقتدانہ کریں توان پر واجب ہے جوشہر میں مقیم ہویا جس نے اس کی اقتدا کی اگر چہ عورت یا مسافریا گاؤں کا رہنے والا اورا گراس کی اقتدانہ کریں توان پر واجب نہیں۔⁽³⁾ (درمختار)

سَمَعَانُ ٢٥ ﴾ نفل پڑھنے والے نے فرض والے کی اقتدا کی تو امام کی پیروی میں اس مقتدی پر بھی واجب ہے اگر چدامام پر واجب نہیں۔(4) اگر چدامام کے ساتھ اس نے فرض نہ پڑھے اور مقیم نے مسافر کی اقتدا کی تو مقیم پر واجب ہے اگر چدامام پر واجب نہیں۔(4) (درمختار، روالحتار)

سکان (ایستان کا) علام پرتگبیر تشریق واجب ہے اور عور توں پر واجب نہیں اگر چہ جماعت سے نماز پڑھی، ہاں اگر مرد کے پیچھے عورت نے پڑھی اور امام نے اس کے امام ہونے کی نیت کی تو عورت پر بھی واجب ہے مگر آ ہستہ کھے۔ یو ہیں جن لوگوں نے بر ہمند نماز پڑھی ان پر بھی واجب نہیں ،اگر چہ جماعت کریں کہ ان کی جماعت جماعت مستحبہ نہیں۔ (5) (در مختار، جو ہرہ وغیر ہما) بر ہمند نماز پڑھی ان پر بھی واجب نہیں ،اگر چہ جماعت کریں کہ ان کی جماعت مستحبہ نہیں ۔ (5) در مختار، جو ہرہ وغیر ہما کہ بعد بھی کہہ بھی کہد

کے۔⁽⁶⁾(درمختار)

سَسَعَالُهُ ٢٨﴾ مسبوق ولاحق پرتگبیر واجب ہے، مگر جب خودسلام پھیریں اس وقت کہیں اورامام کے ساتھ کہہ لی تو نماز فاسد نہ ہوئی اورنمازختم کرنے کے بعد تکبیر کااعادہ بھی نہیں۔⁽⁷⁾ (روالحتار)

- ❶ "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧١، ٧٤، وغيره .
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٧٣.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧٤.
- ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٧٤.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧٤.
 - و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة العيدين، ص٢٢١، وغيرهما .
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٧٣.
 - 🦼 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: كلمة لابأس قدتستعمل في المندوب، ج٣، ص٧٦.

ور دِنوں میں نماز قضا ہوگئ تھی ایا م تشریق میں اس کی قضا پڑھی تو تکبیر واجب نہیں۔ یو ہیں ان دنوں کی نمازیں اور دنوں میں پڑھیں جب بھی واجب نہیں۔ یو ہیں سال گذشتہ کے ایا م تشریق کی قضا نمازیں اس سال کے ایا م تشریق کم قضا نمازیں اس سال کے ایا م تشریق میں پڑھے جب بھی واجب نہیں، ہاں اگر اس سال کے ایا م تشریق کی قضا نمازیں اس سال کے انھیں دنوں میں جماعت سے میں پڑھے جب بھی واجب ہے۔ (۱) (رواحجار)

786

منفرد⁽²⁾ پرتکبیرواجب نبیں۔⁽³⁾ (جوہرہ نیرہ) مگرمنفرد بھی کہہلے کہ صاحبین ⁽⁴⁾ کے نز دیک اس پر

بھی واجب ہے۔

سن المربی اللہ اللہ ہے۔ امام نے تکبیر نہ کہی جب بھی مقتدی پر کہنا واجب ہے اگر چیہ مقتدی مسافریا دیہاتی یا عورت ہو۔ (⁵⁾ (در مختار،ردالمختار)

مَسِعًا اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ ال

کی نمازکا بیان کی نمازکا بیان

خلین اللہ تعالیٰ علیہ وہموی اشعری رضی اللہ تعالیٰ عند سے مروی ، کہ حضور اقد س سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم کے عہد کریم میں ایک مرتبہ آفتاب میں گہن لگا ، مسجد میں تشریف لائے اور بہت طویل قیام ورکوع و جود کے ساتھ نماز پڑھی کہ میں نے بھی ایسا کرتے نہ ویکھا اور یہ فرمایا: کہ '' اللہ عزوجل کسی کی موت و حیات کے سبب اپنی بینشانیاں ظاہر نہیں فرماتا ، ولیکن ان سے اپنے بندوں کوڈراتا ہے ، لہذا جب ان میں سے بچھ دیکھو تو ذکر و دُعا واستغفار کی طرف گھبرا کراٹھو'' (7)

خلین کی میں این عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی، کہ لوگوں نے عرض کی ، یار سول اللہ! ہم نے حضور (صلی اللہ تعالی علیہ بیاری میں این عباس رضی اللہ تعالی علیہ بیٹے دیکھا، فرمایا:''میں نے جنت کودیکھا اور اس سے ایک خوشہ لینا چاہا اور اگر لے لیتا تو جب تک دنیا باقی رہتی تم اس سے کھاتے اور دوزخ کودیکھا اور آج کے مثل کوئی خوفناک منظر

- "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٤٧.
 - 🗨 یعنی تنها نماز پڑھنے والے۔
 - ③ "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة العيدين، ص١٢٢.
 - فقه حنفی میں امام ابو بوسف اور امام محمد رحمته اللہ تعالیٰ علیہا کو صاحبین کہتے ہیں۔
- €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: كلمة لابأس قدتستعمل في المندوب، ج٣، ص٧٦.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧٥.
 - 🥱 🗗 "صحيح البخاري"، كتاب الكسوف، باب الذكر في الكسوف، الحديث: ٩ ٥ ٠ ١ ، ج ١ ، ص٣٦٣.

ترکتری نه دیکھااور میں نے دیکھا کہ اکثر دوزخی عور تیں ہیں،عرض کی، کیوں یارسول اللہ (صلی اللہ تعالی علیہ بہلم)؟ فرمایا: که کفر کرتی ہیں،عرض کی گئی،اللہ (عزوجل) کے ساتھ کفر کرتی ہیں؟ فرمایا:''شوہر کی ناشکری کرتی ہیں اوراحسان کا کفران کرتی ہیں،اگر تُو اس کے ساتھ عمر بھراحسان کرے پھرکوئی بات بھی (خلاف مزاج) دیکھے، کہے گی، میں نے بھی کوئی بھلائی تم ہے دیکھی ہی نہیں '' (1)

787

<u> خاریث سی</u> بخاری شریف میں حضرت اسا بنت صدیق رض الله تعالی عنها ہے مروی، فرماتی ہیں:''حضور

(صلى الله تعالى عليه وسلم) نے آفتاب گہنے میں غلام آزاد کرنے کا حکم فرمایا۔'' (2)

خُلِیْث می الله تعالی علیه و بن جندب رضی الله تعالی عنه سے مروی ، کہتے ہیں: '' حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے گہن کی نماز پڑھائی اور ہم حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) کی آواز نہیں سنتے تھے۔'' (3) یعنی قراءت آہستہ کی۔

مسائل فقهيّه

سورج گہن کی نماز سنت مؤکدہ ہے اور چاندگہن کی مستحب سورج گہن کی نماز جماعت سے پڑھنی مستحب ہے اور تنہا تنہا بھی ہوسکتی ہے اور جماعت سے پڑھی جائے تو خطبہ کے سواتمام شرائط جمعہ اس کے لیے شرط ہیں، وہی شخص اس کی جماعت قائم کرسکتا ہے جو جمعہ کی کرسکتا ہے، وہ نہ ہوتو تنہا تنہا پڑھیں،گھر میں یا مسجد میں ۔ (4) (درمختار، ردالمحتار)

مَسِعَانُ اللّٰ ﴾ گہن کی نماز اسی وفت پڑھیں جب آفتاب گہنا ہو، گہن جیبوٹنے کے بعد نہیں اور گہن جیبوٹنا شروع ہو گیا مگر

ابھی باقی ہےاس وقت بھی شروع کر سکتے ہیں اور گہن کی حالت میں اس پر ابر آ جائے جب بھی نماز پڑھیں۔⁽⁵⁾ (جو ہر ہُنیرہ)

سینان کی ایسے وقت گہن لگا کہاں وقت نمازممنوع ہے تو نماز نہ پڑھیں، بلکہ دُعامیں مشغول رہیں اوراسی حالت میں ا

ڈوب جائے تو دُعاختم کردیں اور مغرب کی نماز پڑھیں۔⁽⁶⁾ (جو ہرہ،ردالمحتار)

مَسْتَالُهُ اللهِ مِينَاز اورنوافل کی طرح دور کعت پڑھیں یعنی ہر رکعت میں ایک رکوع اور دوسجدے کریں نہاس میں اذ ان

- 1 "صحيح البخاري"، كتاب الكسوف، باب صلاة الكسوف جماعة، الحديث: ٢٥٠١، ج١، ص٣٦٠.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الكسوف، باب من أحب العتاقة في كسوف الشمس، الحديث: ١٠٥٤، ج١، ص٣٦٢.
 - € "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات والسنة فيها، باب ماجاء في صلاة الكسوف، الحديث: ٢٦٤، ج٢، ص٩٣.
 - 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٧ ـ ٨٠.
 - 5 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الكسوف، ص١٢٤.
 - 🐒 🌀 المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٧.

ہے، نہا قامت، نہ بلندآ واز سے قراءت اور نماز کے بعد دُعا کریں یہاں تک کہ آفتاب کھل جائے اور دورکعت سے زیادہ بھی ا

788

پڑھ سکتے ہیں،خواہ دو دورکعت پرسلام پھیریں یا جار پر۔⁽¹⁾ (درمختار،ر دالمختار)

سَمَالُهُ ﴾ اگرلوگ جمع نه ہوئے توان لفظوں سے بِکاریں، اَلصَّلوةُ جَامِعَةٌ۔⁽²⁾ (درمختار)

مَسَعَالُهُ ﴾ افضل میہ ہے کہ عیدگاہ یا جامع مسجد میں اس کی جماعت قائم کی جائے اورا گردوسری جگہ قائم کریں جب بھی

حرج نہیں۔⁽³⁾(عالمگیری)

سکان کی اور کو میں جو دورہ ہوتو سورہ بقرہ اور آل عمران کی مثل بڑی بڑی سورتیں پڑھیں اور رکوع و جود میں بھی طول دیں اور بعد نماز دُعامیں مشغول رہیں یہاں تک کہ بورا آفتاب کھل جائے اور بیجی جائز ہے کہ نماز میں تخفیف کریں اور دُعامیں طول ،خواہ امام قبلہ رُودُعا کرے یا مقتد یوں کی طرف مونھ کر کے کھڑا ہواور یہ بہتر ہے اور سب مقتدی آمین کہیں ،اگر دُعا کے وقت عصایا کمان پڑیک لگا کر کھڑا ہوتو یہ بھی اچھا ہے ، دُعا کے لیے منبر پر نہ جائے۔ (در مختار وغیرہ)

سَمَعَالَهُ كَيْ ﴿ سورجَ لَهُن اور جنازه كااجتماع موتو پہلے جنازه پڑھے۔⁽⁵⁾ (جوہرہ)

سَيِّنَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ مِن جَمَاعَت نَهِيلِ، امام موجود ہویا نہ ہو بہر حال تنہا تنہا پڑھیں۔ (6) (درمخار وغیرہ)

امام کےعلاوہ دوتین آ دمی جماعت کر سکتے ہیں۔

مسئلی و پی تیز آندهی آئے یا دن میں سخت تاریکی چھا جائے یارات میں خوفناک روشنی ہویالگا تارکٹرت سے مینھ برسے یا بکثرت اولے پڑیں یا آسان سُرخ ہو جائے یا بجلیاں گریں یا بکثرت تارے ٹوٹیس یا طاعون وغیرہ وہا تھیلے یا زلز لے آئیس یا دشمن کا خوف ہویا اور کوئی دہشت ناک امر پایا جائے ان سب کے لیے دور کعت نما زمستحب ہے۔ (7) (عالمگیری ، درمختار وغیر ہما)

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٨.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٩.
- 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن عشر في صلاة الكسوف، ج١، ص٥٥.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٩. وغيره
 - 5 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الكسوف، ص ٢٤.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن عشر في صلاة الكسوف، ج١، ص٥٥٠.
 و"الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٨٠، وغيره.
- € "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن عشر في صلاة الكسوف، ج١، ص٥٥.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٨٠، وغيرهما .

چند حدیثیں جن میں آندھی وغیرہ کا ذکر ہے،اس موقع پر بیان کر دینا مناسب معلوم ہوتا ہے کہ سلمان ان پڑمل کریں (وباللّٰدالتوفیق)۔

خليت 🕕 🕒 ام المونين صديقه رضى الله تعالى عنها سے صحیح بخارى وضیح مسلم وغير جها ميں مروى ، فرما تی ہیں: جب تیز ہوا چلتی

توحضور (صلى الله تعالى عليه وسلم) بيدرُ عا برا حقة:

اَللَّهُ مَّ اِنِّى اَسُئَلُکَ خَيْرَهَا وَخَيْرَهَا فِيهَا وَخَيْرَهَا اُرُسِلَتُ بِهِ وَاَعُوْ ذُبِکَ مِنُ شَرِّهَا وَشَرِّمَا فِيهَا وَشَرِّمَا اُرُسِلَتُ بِهِ وَاَعُوْ ذُبِکَ مِنُ شَرِّهَا وَشَرِّمَا فِيهَا وَشَرِّمَا اُرُسِلَتُ بِهِ . (1)

خریث کی مرتب امام شافعی دابوداودوابن ماجه و بیبهتی نے دعوات کبیر میں روایت کی ، که فرماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم: ' فہوا اللہ تعالیٰ کی رحمت سے ہے، رحمت وعذاب لاتی ہے، اسے بُرانہ کہواوراللہ (عزوجل) سے اس کے خیر کا سوال کرواوراس کے شر سے بناہ مانگو۔'' (2)

خریث سر ندی میں عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنبا سے مروی ، کہ ایک شخص نے حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کے سامنے ہوا پر لعنت بھیجی فرمایا: '' ہوا پر لعنت نہ بھیجو کہ وہ ما مور ہے اور جو شخص کسی شے پر لعنت بھیجے اور وہ لعنت کی مستحق نہ ہو تو وہ لعنت اسی بھیجنے والے پر لوٹ آتی ہے۔'' (3)

خلینت میں ابدوداودونسائی وابن ماجہوا مام شافعی نے ام المونین صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا سے روایت کی ،کہتی ہیں: جب آسمان برابرآتا تو حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کلام ترک فرمادیتے اوراس کی طرف متوجہ ہوکرید دُعایر ہے :

اَللَّهُمَّ إِنِّي اَعُودُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيُهِ . (4)

ا گر کھل جا تاحمد کرتے اور برستا تو بیوُ عاپڑھتے: اَللّٰهُمَّ سَقُیاً نَّافعًا طِ (5)

- 2 "مسند" الإمام الشافعي، كتاب العيدين، ص ١ ٨.
- 3 "جامع الترمذي"، أبواب البر والصلة، باب ماجاء في اللعنة، الحديث: ١٩٨٥، ج٣، ص٩٤٣.
 - ۱۲۔... ترجمہ: اے اللہ (عز وجل)! میں تیری پناہ ما نگتا ہوں اس چیز کے شرسے جواس میں ہے۔ ۱۲
 - الإمام الشافعي، كتاب العيدين، ص ١٨.
 ترجمة: الماللة (عزوجل)! الياياني برساجونفع بينيائے ١٣۔

4(*.

امام احمد وترندی نے عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہا سے روایت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) جب باول کی گرج اور بجلی کی کڑک سنتے تو یہ کہتے :

اللَّهُمَّ لَا تَقْتُلُنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكُنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبُلَ ذَٰلِكَ . (1)

خلینت کی کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ و کا اللہ بن زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کی کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ و کم م) جب باول کی

آ وزسنتے تو كلام ترك فرماديتے اور كہتے:

سُبُحْنَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعُدُ بَحَمُدِهِ وَالْمَلْئِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ (2) إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيَّ قَدِيْرٌ ط(3)

<u> خلابٹ کی ہے۔</u> فرماتے ہیں:''جب بادل کی گرج سُنو تواللہ(عزوجل) کی شبیج کرو، تکبیر نہ کہو۔'' (4)

فاز استسقا کا بیان

اللُّدعزوجل فرما تاہے:

﴿ وَمَا اَصَابُكُمْ مِّن مُّصِيبَةٍ فَهِما كَسَبَتَ آيْنِيكُمْ وَيَعْفُواْ عَنْ كَثِيدٍ ﴿ 5)

ستحصیں جومصیبت بہنچتی ہے، وہتمھارے ہاتھوں کے کرتوت سے ہےاور بہت معاف فرمادیتا ہے۔ مید قحط بھی ہمارے ہی معاصی کے سبب ہے، لہذاالیں حالت میں کثر سے استغفار کی بہت ضرورت ہے اور یہ بھی اس کا فضل ہے کہ بہت سے معاف فرمادیتا ہے، ورندا گرسب باتوں پرمؤاخذہ کرے تو کہاں ٹھکانہ۔

فرما تاہے:

﴿ لَوْنُيُوا خِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَمُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ ﴾ (6)

اگرلوگوں کوان کے فعلوں پر پکڑتا تو زمین پر کوئی چلنے والا نہ چھوڑتا۔

1 "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما يقول إذا سمع الرعد، الحديث: ٣٤٦١، ج٥، ص ٢٨٠.

ترجمه:اےالله(عزوجل)!اپنے غضب سے تو ہم کو آل نه کراوراپنے عذاب سے ہم کو ہلاک نه کراوراس سے قبل ہم کوعا فیت میں رکھ۔ ۱۲

الموطأ" لإمام مالك، كتاب الكلام، باب القول إذا سمعت الرعد، الحديث: ١٩٢٠، ج٢، ص٤٧٠.

الله (عزوجل) ہر چیز پرقاور ہے۔ ۱۲۔ میں اس کی تیج کرتا ہے اور فرشتے اس کے خوف ہے، بے شک الله (عزوجل) ہر چیز پرقاور ہے۔ ۱۲

4 "مراسيل أبي داود" مع "سنن أبي داود"، باب ماجاء في المطر، ص ٢٠.

5 په ۲، الشورای: ۳۰.

🐾 🙃 پ۲۲، فاطر: ۵۵.

اورفرما تاہے:

﴿ اِسْتَغْفِرُ وَا مَا بُّكُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ عَقَامًا أَنْ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِنْ مُرَامًا أَنْ قَيْدِ دُكُمْ إِنَّهُ كَانَ عَقَامًا أَنْ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِنْ مُرَامًا أَنْ قَيْدِ دُكُمْ إِنَّهُ كَانَ عَقَامًا أَنْ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِنْ مُرَامًا أَنْ قَيْدُ وَكُمْ إِنَّ مُوالِ وَبَذِيْنَ وَيَجْعَلُ تَكُمُ جَنَّتٍ وَّيَجْعَلَ تَكُمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ (1)

ا پنے رب (عزوجل) سے استعفار کرو، بے شک وہ ہڑا بخشنے والا ہے، مُوسلا دھاریانی تم پر بھیجے گا اور مالوں اور بیٹوں سے تمھاری مدد کرے گا اور شخصیں باغ دے گا اور شخصیں نہریں دے گا۔

خلینٹ 🕽 🐣 ابن ماجہ کی روایت ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہا ہے ہے ، کہ فر ماتے ہیں سلی اللہ تعالی علیہ وسلم:'' جولوگ ناپ اور تول میں کمی کرتے ہیں، وہ قحط اور شدت موت میں اور ظلم بادشاہ میں گرفتار ہوتے ہیں، اگر چوپائے نہ ہوتے تو ان پر بارش

ځ 🔑 🖰 💝 مسلم شریف میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ،حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:'' قحط اسى كانام نبيس كه بارش نه بو، برا اقط توبيه به كه بارش مواورز مين يجهنه أ كائه- ' (3)

خلینٹ 👚 🐣 صحیحین میں ہے،انس رضی اللہ تعالی عنہ کہتے ہیں،'' حضور اقد س صلی اللہ تعالیٰ علیہ دِہلم کسی وُ عامیں اس قدر ہاتھ

نها ٹھاتے جتنااستیقامیں اٹھاتے ، یہاں تک بلندفر ماتے کہ بغلوں کی سیبدی ظاہر ہوتی۔'' (4)

خلینٹ 🕜 💝 🗝 صحیح مسلم شریف میں انہیں سے مروی، که''حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ دِہلم) نے بارش کے لیے دُعا کی اور پشتِ دست ہے آسان کی طرف اشارہ کیا۔'' (5) (یعنی اور دعاؤں میں تو قاعدہ یہ ہے کہ تھیلی آسان کی طرف ہو،اوراس میں ہاتھ لوٹ دیں کہ حال بدلنے کی فال ہو)۔

خلیئے 🚳 🐣 سنن اربعہ میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ، کہتے ہیں: '' رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم پرانے کیڑے بہن کراستیقا کے لیےتشریف لے گئے تواضع وخشوع وتضرع کےساتھ ہے'' (6)

- 🗗 پ۲۹، نوح: ۱۰ _ ۱۲.
- 2 "سنن ابن ماجه"، أبواب الفتن، باب العقوبات، الحديث: ١٩ ، ٤٠١٩، ج٤، ص٣٦٧.
- ③ "صحيح مسلم"، كتاب الفتن وأشراط الساعة، باب في سكني المدينة... إلخ، الحديث: ٢٩٠٤، ص٥٥٥.
- 4 "صحيح البخاري"، كتاب الاستسقاء، باب رفع الإمام يده في الإستسقاء، الحديث: ١٠٣١، ج١، ص٥٥.
- "صحيح مسلم"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين بالدعاء في الاستسقاء، الحديث: ٩٦ ٨، ص٤٤٤.
 - "جامع الترمذي"، أبواب السفر، باب ماجاء في صلاة الاستسقاء، الحديث: ٥٥٨، ج٢، ص ٨٠.
 - و "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلاة... إلخ، باب ماجاء في صلاة الاستسقاء، الحديث: ١٢٦٦، ج٢، ص٩٤.

🛬 👈 یئٹ 🔰 🦰 ابوداود نے ام المونین صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا سے روایت کی ، کہتی ہیں: لوگوں نے حضور (سلی اللہ تعالی علیہ وسلم) کی خدمت میں قحط باراں کی شکایت بیش کی ،حضور (صلی الله تعالی علیہ وہلم) نے منبر کے لیے تکم فر مایا ،عیدگاہ میں رکھا گیااورلوگوں سے ایک دن کا وعدہ فرمایا کہاس روزسب لوگ چلیں، جبآ فتاب کا کنارہ جیکا،اس وفت حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) تشریف لے گئے اور منبر رپر بیٹھے، تکبیر کہی اور حمد الہی بجالائے، پھر فر مایا: ' تم لوگوں نے اپنے ملک کے قحط کی شکایت کی اور بیر کہ مینھا پنے وقت سے مؤخر ہوگیا اور اللہ عزوجل نے مصین تھم دیا ہے کہ اس ہے دُعا کرواور اس نے وعدہ کرلیا ہے کہ تمھاری دُعا قبول فرمائے گا۔''اس کے بعد فرمایا:

ٱلْحَمَٰدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ مَالِكِ يَوُمِ الدِّينِ لَا الله الله يَفْعَلُ مَا يُريُدُ اَللَّهُمَّ اَنْتَ اللَّهُ لَا اِللَّهَ الَّا اَنْتَ الْغَنِيُّ وَنَحُنُ الْفُقَرَاءُ اَنْزِلُ عَلَيْنَا الْغَيْثَ وَاجْعَلُ مَا اَنْزَلْتَ قُوَّةً وَّ بَلَاغًا اللَّه كِيْنِ ٥ (1)

پھر ہاتھ بلندفر مایا یہاں تک کہ بغل کی سپیدی ظاہر ہوئی پھرلوگوں کی طرف پشت کی اور ردائے مبارک لوٹ دی پھر لوگوں کی طرف متوجہ ہوئے اورمنبر سے اوتر کر دورکعت نماز پڑھی ، اللہ تعالیٰ نے اسی وقت ابر پیدا کیا، وہ گر جااور چیکا اور برسا۔

اور حضور (صلی الله تعالی علیه و کم) ابھی مسجد کو تشریف بھی نہلائے تھے کہ نالے بہد گئے۔(2)

امام ما لک وابوداو دبروایت عمروین شعیب عن ابیعن جده راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه دسلم) استشقا کی خُلِيثُ 2 عُلِيثُ

ۇعامىي پەكىتے:

ٱللَّهُمَّ اسُقِ عِبَادَكَ وَ بَهِيُمَتَكَ وَانْشُرُ رَحْمَتَكَ وَٱحْى بَلَدَكَ الْمَيَّتَ . (3)

خلینے 🔨 🐣 سنن ابوداود میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے مروی ، کہتے ہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وملم کو دیکھا کہ



ماتھاڻھا کر پہدُ عا کی:

ٱللُّهُمَّ اسْقِنَا غَيْنًا مُّغِينًا مُّعِينًا مَّرِيًّا مَّرِيُعاً نَّافِعاً غَيْرَ ضَارِّ عَاجِلاً غَيْرَ اجِلٍ . (4)

ں ترجمہ:حمر ہےاللہ(عزوجل) کے لیے جورب ہےسارے جہان کارخمٰن ورحیم ہے قیامت کے دن کا مالک ہےاللہ(عزوجل) کےسواکوئی معبودنہیں وہ جو چاہتا ہے کرتا ہے یااللہ(عزوجل)! تو ہی معبود ہے تیرے سوا کوئی معبودنہیں توغنی ہےاورہم محتاج ہیں ہم پر مینھاو تاراور جو کچھ تواونارے،او سے ہمارے لیےقوت اورا یک وقت تک پہنچنے کاسبب کردے۔۱۲

- 2 "سنن أبي داود"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين في الاستسقاء، الحديث: ١١٧٣، ج١، ص ٤٣١.
- € "سنن أبي داود"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين في الاستسقاء، الحديث: ١١٧٦، ج١، ص٤٣٢. ترجمه:اےاللّٰد(عزوجل)! تواہیۓ بندوں اور چو پالیوں کوسیراب کراورا پنی رحمت کو پھیلا اوراہیۓ شہر مردہ کوزندہ کر۔١٣
- ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! ہم کوسیراب کر پوری بارش ہے، جوخوشگوارتاز کی لانے والی ہو، نافع ہو، ضررنہ کرے، جلد ہو، دریمیں نہ ہو۔١٢

حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے بیدؤ عابر الله علی که آسمان گھر آیا۔ (1)

خاریث و 🔑 – صحیح بخاری شریف میں انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، کہتے ہیں: لوگ جب قبط میں مبتلا ہوتے تو امیر المومنين فاروقِ اعظم حضرت عباس رضي الله تعالىءنه کے توشل سے طلب باراں کرتے ،عرض کرتے ،اےاللہ (عز وجل)! تیری طرف ہم اینے نبی کا وسیلہ کیا کرتے تھے اور تو برساتا تھا، اب ہم تیری طرف نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے عم مکرم کو وسیلہ کرتے ہیں تو بارش بھیج ۔ انس رضی اللہ تعالی عنہ کہتے ہیں: جب بول کرتے تو بارش ہوتی ⁽²⁾ بعنی حضورا قدس صلی اللہ تعالی علیہ وہلم کی حیاتِ طاہری میں حضور (صلی الله تعالی علیه دملم) آ گے ہوتے اور ہم حضور (صلی الله تعالی علیه دملم) کے پیچھے فیس باند دھ کر دُعا کرتے ۔اب کہ بیمیتسر نہیں حضور (صلیاللہ تعالی علیہ وسلم) کے چیا کوآ گے کر کے دُعا کرتے ہیں ہم بھی توسّل حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) سے ہے صورۃً میسز ہمیں تومعنیًا۔

مسائل فقهيّه

استسقا دُعا واستغفار کا نام ہے۔استسقا کی نماز جماعت سے جائز ہے، مگر جماعت اس کے لیے سنت نہیں، چاہیں جماعت سے پڑھیں یا تنہا تنہا دونوں طرح اختیار ہے۔⁽³⁾ (درمختار وغیرہ)

مسئل کی استیقا کے لیے برانے یا پیوند لگے کپڑے بہن کر تذلّل وخشوع وخضوع وتواضع کے ساتھ مر برہنہ پیدل جائیں اور پابر ہنہ ہوں تو بہتر اور جانے سے پیشتر خیرات کریں۔ کفّار کواینے ساتھ نہ لے جائیں کہ جاتے ہیں رحمت کے لیے اور کا فریرلعنت اترتی ہے۔ تین دن پیشتر سے روز ہے رکھیں اور تو بہ واستغفار کریں پھر میدان میں جا کیں اور وہاں تو بہ کریں اور زبانی توبہ کافی نہیں بلکہ دل ہے کریں اور جن کے حقوق اس کے ذمہ ہیں سب ادا کرے یامعاف کرائے ، کمزوروں ، بُوڑھوں ، رُوھیوں بچوں کے توسّل سے دُعا کرے اور سب آمین کہیں۔ کھنچے بخاری شریف میں ہے،حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ دہلم نے ارشاد فرمایا: دشمصیں روزی اور مدد کمزورول کے ذریعہ سے ملتی ہے۔ '' (4) اور ایک روایت میں ہے، ''اگر جوان خشوع کرنے والے اور چویائے چرنے والے اور بوڑھے رکوع کرنے والے اور بیجے دودھ پینے والے نہ ہوتے توتم پرشد ت سے عذاب کی بارش ہوتی۔'' (5) اس وقت بچے اپنی ماؤل سے جدار کھے جائیں اور مولیثی بھی ساتھ لے جائیں غرض پیر کہ توجہ رحمت کے

❶ "سنن أبي داود"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين في الاستسقاء، الحديث: ١٦٦٩، ج١، ص٠٤٣.

^{2 &}quot;صحيح البخاري"، أبواب الاستسقاء، باب سؤال الناس الإمام الاستسقاء إذا قحطوا، الحديث: ١٠١٠ ج١، ص ٣٤٦.

^{3 &}quot;الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الاستسقاء، ج٣، ص ٨١ ـ ٨٣.

^{4 &}quot;صحيح البخاري"، كتاب الجهاد، باب من استعان بالضعفاء... إلخ، الحديث: ٢٨٩٦، ج٢، ص ٢٨٠.

^{🤿 🗗 &}quot;السنن الكبرى"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب استحباب الخروج بالضعفاء... إلخ، الحديث: ٣٩٥، ٦٣٩، ج٣، ص ٤٨١.

اورا ثنائے خطبہ میں چا درلوٹ دیے بعنی اوپر کا کنارہ نیچے اور نیچے کا اوپر کر دے کہ حال بدلنے کی فال ہو، خطبہ سے فارغ ہو کر لوگوں کی طرف پیٹھاور قبلہ کومونھ کر کے دُعا کرے۔ بہتر وہ دُعا ئیں ہیں جواجا دیث میں وارد ہیں اور دُعامیں ہاتھوں کوخوب بلند

کرے اور پشتِ دست جانب آسمان ⁽¹⁾ر کھے۔ ⁽²⁾ (عالمگیری، غنیہ ، درمختار، جو ہرہ وغیر ہا)

مسئل کی جالائیں اور مینھ کے وقت حدیث میں جب بھی جائیں اورشکرالٰہی بجالائیں اور مینھ کے وقت حدیث میں جو وُعا ارشاد ہوئی پڑھے اور بادل کرجے تو اس کی وُعا پڑھے اور بارش میں کچھ دیریٹھبرے کہ بدن پر پانی پنچے۔ (3) (درمختار، ردامختار)

مسئل الله کثرت ہے بارش ہو کہ نقصان کرنے والی معلوم ہو تو اس کے روکنے کی دُعا کر سکتے ہیں اوراس کی دُعا

حدیث میں سے:

اَللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اَللَّهُمَّ عَلَى الْاَكَامِ وَالظِّرَابِ وَبُطُونِ الْاَوُدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ . (4) اللهُمَّ حَوالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اللَّهُمَّ عَلَى اللَّاكَامِ وَالظِّرَابِ وَبُطُونِ الْاَوُدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ . اللهَّ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ

- لعنی اور دعاؤل میں تو قاعدہ یہ ہے کہ شیلی آسان کی طرف ہو، اوراس میں ہاتھ لوٹ دیں کہ حال بدلنے کی فال ہو۔
 - 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع عشر في الاستسقاء، ج١، ص٥٦ ١٥٤.
 - و "غنية المتملى"، صلاة الاستسقاء، ٢٧ ع _ ٤٣٠.
 - و "الدرالمختار" ، كتاب الصلاة، باب الاستسقاء، ج٣، ص٨٣ _ ٨٥.
 - و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الاستسقاء، ص١٢٤ _ ١٢٥.
 - 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الاستسقاء، ج٣، ص٥٨.
- 4.... "صحيح البخاري"، كتاب الاستسقاء، باب الاستسقاء في المساجد الجامع، الحديث: ١٠١٣، ج١، ص٣٤٧.
 - و "صحيح مسلم"، كتاب صلاة الاستسقاء، الحديث: ٨ ـ (٨٩٧)، ٩ ـ (٨٩٧)، ص ٤٤٥، ٤٤.
- ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! ہمارے آس پاس برسا، ہمارے اوپر نہ برسا۔اے اللہ (عزوجل)! بارش کرٹیلوں اور پہاڑیوں پر اور نالوں میں اور جہاں درخت او گئے ہیں۔۱۲



اللَّدعز وجل فرما تاہے:

﴿ فَانْ خِفْتُمْ فَرِجَالَا اَوْمُ كُبَانًا ۚ فَإِذَ آ اَمِنْتُمُ فَاذْ كُرُوااللّٰهَ كَمَاعَلَّمَكُمْ مَّالَمُ تَكُونُوْاتَعْلَمُوْنَ ﴿ ﴾ (1) اگر تنصین خوف ہو تو پیدل یا سواری پرنماز پڑھو پھر جب خوف جا تارہے تو اللّٰد (عزدجل) کواس طرح یا دکر وجیسا اُس نے سکھاباوہ کہتم نہیں جانتے تھے۔

اورفرما تاہے:

اور جبتم ان میں ہواور نماز قائم کرو تو ان میں کا ایک گروہ تمھارے ساتھ کھڑا ہواور آنھیں چاہیے کہ اپنے ہتھیار لیے ہوں پھر جب ایک رکعت کا سجدہ کرلیں تو وہ تمھارے بیچے ہوں اور اب دوسرا گروہ آئے ، جس نے تمھارے ساتھ نہ پڑھی تھی ، وہ تمھارے ساتھ نہ پڑھی تھی ، فہ معارے ساتھ ہوا بی بناہ اور اپنے ہتھیاروں اور اپنے اسباب سے غافل ہوجا و ، تو ایک ساتھ تم پر جھک پڑیں اور تم پر کچھ گناہ نہیں ، اگر تمھیں مینے سے تکلیف ہویا بیمار ہوکہ اپنے ہتھیا رر کھ دو ، مگر پناہ کی چیز لیے رہو، بینک اللہ (عزوجل) نے کا فرول کے لیے ذکت کا عذاب طیار کر رکھا ہے ، پھر جب نماز پوری کر چکو تو اللہ (عزوجل) کو یا دکر وہ کھڑے اور کروٹوں پر لیٹے ، پھر جب اطمینان سے ہوجا و تو نماز حسب دستور قائم کر و ، بینک نماز مسلمانوں بروقت باندھا ہوافرض ہے۔

خلایث 🔰 🧸 تر مذی و نسانی میں بروایت ابو ہر برہ دضی اللہ تعالی عندمروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم عسفان وضجنان

🥞 💇 سپه، النسآء: ۱۰۲ ـ ۱۰۳.

^{1} پ٢، البقرة: ٢٣٩.

📽 کے درمیان انزے،مشرکین نے کہاان کے لیےا بک نماز ہے جو باپ اور بیٹوں سے بھی زیادہ پیاری ہے اور وہ نمازعصر ہے، للبذا سب كام ٹھيك ركھو، جب نماز كو كھڑے ہول ايك دم حمله كرو، جبريل عليه الصلوۃ والسلام نبي صلى الله تعالىٰ عليه وسلم كى خدمت ميں حاضر ہوئے اور عرض کی کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) اپنے اصحاب کے دو جھے کریں ایک گروہ کے ساتھ نماز پڑھیں اور دوسرا گروہ ان کے چیچیے سپر اوراسلحہ لیے کھڑار ہے تو ان کی ایک ایک رکعت ہوگی (یعنی حضور (سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) کے ساتھ) اور رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم كي د وركعتيس _ (1)

خلین کے جہاری صحیح بخاری صحیح مسلم میں جا بررضی اللہ تعالی عند ہے مروی ، کہتے ہیں ہم رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم کے ساتھ گئے جب ذات الرقاع میں بہنچے،ایک سابہ دار درخت حضور (صلی الله تعالی علیہ وسلم) کے لیے جیموڑ دیا ،اس پرحضور (صلی الله تعالی علیہ وسلم) نے اپنی تلواراٹکا دی تھی ،ایک مشرک آیا اورتلوار لے لی اور تھنچ کر کہنے لگا ، آپ مجھ سے ڈرتے ہیں فرمایا:'' نه''،اس نے کہا تو آپ کوکون مجھ سے بچائے گا،فر مایا: "الله (عزوس)"، صحابة كرام نے جب ديكھا تواسے ڈرايا،اس نے ميان ميں تلوارر كوكراككا دی،اس کے بعداذان ہوئی،حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وملم) نے ایک گروہ کے ساتھ دورکعت نماز پڑھی پھریہ بیچھے ہٹااور دوسرے گروہ کے ساتھ دورکعت پڑھی تو حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) کی جیار ہو کئیں اور لوگوں کی دودوبیعنی حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) کے ساتھ ہے۔ (2)

مسائل فقهيّه

نما زِخوف جائز ہے،جبکہ دشمنوں کا قریب میں ہونالیقین کےساتھ معلوم ہواورا گریپیگمان تھا کہ دشمن قریب میں ہیں اور نمازخوف پڑھی، بعدکو گمان کی غلطی ظاہر ہوئی تو مقتدی نماز کااعادہ کریں۔ یو ہیں اگر دشمن دور ہوں تو پینماز جائزنہیں یعنی مقتدی کی نہ ہوگی اور امام کی ہوجائے گی۔

نمازِ خوف کا طریقہ بیہ ہے کہ جب دشمن سامنے ہوں اور بیا ندیشہ ہو کہ سب ایک ساتھ نماز پڑھیں گے تو حملہ کر دیں ، گے،ایسے وقت امام جماعت کے دوجھے کرے،اگر کوئی اس پر راضی ہو کہ ہم بعد کو پڑھ لیں گے تواسے دشمن کے مقابل کرے اور دوسرے گروہ کے ساتھ پوری نماز پڑھ لے، پھر جس گروہ نے نماز نہیں پڑھی اس میں کوئی امام ہوجائے اور بیلوگ اس کے ساتھ باجماعت پڑھ لیں اورا گر دونوں میں سے بعد کو پڑھنے پر کوئی راضی نہ ہو تو امام ایک گروہ کو پٹمن کے مقابل کرےاور دوسراا مام کے پیچھے نماز پڑھے، جب امام اس گروہ کے ساتھ ایک رکعت پڑھ چکے یعنی پہلی رکعت کے دوسر سے بجدے سے سراوٹھائے توبیہ

^{● &}quot;جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب ومن سورة النساء، الحديث: ٣٠٤٦، ج٥، ص٧٧.

^{🦃 💋 &}quot;صحيح مسلم"، كتاب فضائل القرآن و ما يتعلق به، باب صلاة الخوف، الحديث: ٩٤٣، ص ٢٠٤.

لوگ دشن کے مقابل چلے جائیں اور جولوگ وہاں تھے وہ چلے آئیں اب ان کے ساتھ امام ایک رکعت پڑھ اور دولوگ سلام پھیرد ہے، مگر مقتدی سلام پھیرد ہے، مگر مقتدی سلام نہ پھیریں بلکہ بیلوگ دشمن کے مقابل چلے جائیں یا بہیں اپنی نماز پوری کر کے جائیں اور دولوگ آئیں اور ایک رکعت بغیر قراءت بڑھ کر تشہد کے بعد سلام پھیریں اور بیٹھی ہوسکتا ہے کہ بیگر دو میہاں نہ آئے بلکہ وہیں اپنی نماز پوری کر لے اور دوسرا گروہ اگر نماز پوری کر چاہے، فیہا، ورنہ اب پوری کرے، خواہ وہیں یا یہاں آکر اور بیلوگ قراءت کے ساتھ اپنی ایک رکعت بڑھیں اور تشہد کے بعد سلام پھیریں۔ بیطریقہ دور کعت والی نماز کا ہے خواہ نماز ہی دور کعت کی ہو، جیسے فیجر ساتھ اپنی ایک رکعت بڑھی اور دوسرے کی ہو، جیسے فیجر وعید و بھی گروہ کے ساتھ امام دود دور کعت پڑھے اور مغرب میں پہلے گروہ کے ساتھ دواور دوسرے گروہ کے ساتھ دواور دوسرے کے ساتھ دو تو نماز جاتی بہلے گروہ کے ساتھ دواور دوسرے کے ساتھ دو تو نماز جاتی رہی ۔ (در مختار، عالمگیری وغیر ہما)

مسئل السب مسافریاامام می بین جب امام و مقتدی سب میں بول باسب مسافریاامام قیم ہے اور مقتدی مسئل السب مسافریا امام قیم ہے اور مقتدی مسافر اور اگرامام مسافر ہواور مقتدی مقیم تھی ہول باسب مسافر ہواور مقتدی مقیم تو امام ایک گروہ کے ساتھ ایک رکعت پڑھے اور دے ، پھر پہلا گروہ آئے اور تین پڑھے، پہلی میں فاتحہ وسورت پڑھے اور اگراہ م مسافر ہے اور مقتدی بعض مقیم بین بعض مسافر تو مقیم قیم کے طریقہ پڑمل کریں اور مسافر کے ۔ (2) (عالمگیری وغیرہ) اگراہام مسافر ہے اور مقتدی بعض مقیم کے طریقہ پڑمل کریں اور مسافر مسافر کے ۔ (3) (عالمگیری وغیرہ) کی سافر کے ایک رکعت کے بعد دشن کے مقابل جانے سے مراد پیدل جانا ہے، سواری پر جائیں گے تو نماز جاتی رہے گی ۔ (3) (ردالحتار)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٦ ـ ٨٨.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة النحوف، ج١، ص٥٥ ١٥.٥ وغيرهما.
 - 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة الخوف، ج١، ص٥٥، وغيره .
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٧.
 - 4 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ص١٣٠.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.

🦥 📶 📆 🤲 نمازخوف میں صرف دشمن کے مقابل جانا اور وہاں ہے امام کے پاس صف میں آنا یا وضوجا تار ہاتو وضو کے 🛚 لیے چلنامعاف ہے،اس کےعلاوہ چلنانماز کو فاسد کر دےگا،اگر دشمن نے اسے دوڑ ایایا اس نے دشمن کو بھاگایا تو نماز جاتی رہی، البته پہل صورت میں اگر سواری پر ہوتو معاف ہے۔ (1) (درمختار ، ر دالمحتار)

سواری پزہیں تھا اثنائے نماز میں سوار ہو گیا نماز جاتی رہی ،خواہ کسی غرض سے سوار ہوا ہواورلڑ نا بھی نماز کو

فاسد کردیتا ہے، مگرایک تیر چینکنے کی اجازت ہے۔ (2) (در مختار) یو ہیں آج کل بندوق کا ایک فیر کرنے کی اجازت ہے۔

مَسْكَانُهُ لَا ﴾ دریامیں تیرنے والا اگر یکھ در بغیراعضا کوحرکت دیے رہ سکے تو اشارہ سے نماز پڑھے، ور نہ نماز نہ هوگی ـ ⁽³⁾ (درمختار)

مَسَعَلَىٰ كَ ﴾ جنگ میں مشغول ہے، مثلاً تلوار چلار ہاہے اور وقت نماز ختم ہونا چا ہتا ہے تو نماز كومؤخر كرے، لڑائى سے فارغ ہوکرنمازیڑھے۔(4)(ردالحتار)

سَعَالَهُ ﴾ باغیوں اوراس شخص کے لیے جس کا سفرکسی معصیت کے لیے ہوصلا ۃ الخوف جائز نہیں۔(5) (درمختار)

سَمَانُ ٩ ﴾ نمازخوف ہور ہی تھی ،ا ثنائے نماز میں خوف جاتار ہایعنی دشمن چلے گئے تو جو باقی ہے وہ امن کی سی پڑھیں ، اب خوف کی پڑھنا جائز نہیں۔⁽⁶⁾(عالمگیری)

مسکان از اقی رہی۔ (شمنوں کے چلے جانے کے بعد کسی نے قبلہ سے سینہ پھیرا، نماز جاتی رہی۔ (۲) (عالمگیری)

باقی محض خوف ہے نماز میں قصر نہ ہوگا۔ (⁸⁾ (عالمگیری، درمختار)

<u>مسگانۂ ۱۲ ﴾</u> نمازخوف جس طرح دیمن سے ڈر کے دفت جائز ہے۔ یو ہیں درندہ اور بڑے سانپ وغیرہ سے خوف ہو جب بھی جائز ہے۔⁽⁹⁾ (درمختار)

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.
- المرجع السابق، ص ٨٩.
 المحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص ٨٩.
 - أ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٩٨.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة الحوف، ج١٠ ص٥٦.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة الخوف، ج١٠ ص٥٦.
 - المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.
 - 🗨 🗨 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٦.



بیماری کا بیان

بیاری بھی ایک بہت بڑی نعمت ہے اس کے منافع بے ثمار ہیں ، اگر چہ آ دمی کو بظاہر اس سے تکلیف پہنچی ہے مگر حقیقہ راحت و آ رام کا ایک بہت بڑا ذخیرہ ہاتھ آ تا ہے۔ بہ ظاہری بیاری جس کو آ دمی بیاری شجھتا ہے ، حقیقت میں روحانی بیاری بیاری کا ایک بڑا زبر دست علاج ہے حقیقی بیاری امراض روحانیہ ہیں کہ بیالبتہ بہت خوف کی چیز ہے اور اس کو مرض مہلک شجھنا چا ہیے۔ بہت موٹی می بات ہے جو ہر مخص جانتا ہے کہ کوئی کتنا ہی عافل ہو گر جب مرض میں مبتلا ہوتا ہے تو کس قد رخدا کو یاد کرتا اور تو بہو استغفار کرتا ہے اور یہ تو بین جیسے راحت کا۔

ع انچه از دوست میر سد نیکوست (1)

مگرہم جیسے کم سے کم اتنا تو کریں کہ صبر واستقلال سے کام لیں اور جزع وفزع کر کے آتے ہوئے ثواب کو ہاتھ سے نہ دیں اور اتنا تو ہر خض جانتا ہے کہ بے صبری سے آئی ہوئی مصیبت جاتی نہ رہے گی چراس بڑے ثواب سے محرومی دوہری مصیبت ہے۔ بہت سے نادان بیاری میں نہایت بے جا کلے بول اٹھتے ہیں بلکہ بعض کفرتک پہنچ جاتے ہیں معاذ اللہ اللہ وہ برکی طرف ظلم کی نسبت کر دیتے ہیں، یہ تو بالکل ہی خسر السُّ نُبِیا وَ اللہ خور تَقَ کے مصداق (2) بن جاتے ہیں، اب ہم اس کے بعض فوائد جواحادیث میں وارد ہیں بیان کرتے ہیں کہ مسلمان اپنے بیارے اور برگزیدہ رسول کے ارشادات بگوش دل سنیں اور ان پڑمل کریں، اللہ عزوج ان قرق عطافر مائے۔

خلینٹ اوس کی مسلم میں ابو ہریرہ وابوسعیدرض اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ،حضورا قدس سلی اللہ تعالیٰ علیہ ملم فرماتے ہیں: ''مسلمان کو جو تکلیف وہم وحزن واذیت وغم پہنچے، یہاں تک کہ کانٹا جواس کے پجھے ،اللہ تعالیٰ ان کے سبب اس کے گناہ مٹادیتا ہے۔'' (3)

خلینت سی میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) فر ماتے ہیں : ''مسلمان کو جواذیت پینچتی ہے مرض ہویا اس کے سوا کچھاور ، اللہ تعالی اس کے سیّآت کوگرادیتا ہے ، جیسے درخت سے پیت

- لعنی وہ چیز جودوست کی طرف سے پہنچتی ہے، اچھی ہوتی ہے۔
 - یعنی د نیاو آخرت میں نقصان اٹھانے والوں کی طرح۔
- 🧣 🔞 "صحيح البخاري"، كتاب المرضى، باب ماجاء في كفارة المرض... إلخ، الحديث ٦٤١ ٥، ج٤، ص٣.

🐔 جھڑتے ہیں۔'' (1)

اس آثرین اگریک می و می مسلم شریف میں جابر رضی الله تعالی عنه سے مروی ،حضورا قدس صلی الله تعالی علیه وسلم ام السائب کے

پاس تشریف لے گئے، فرمایا: '' تجھے کیا ہوا ہے جو کانپ رہی ہے؟ عرض کی ، بخار ہے، خدا اس میں برکت نہ کرے، فرمایا: '' بخارکو برانہ کہہ کہ وہ آ دمی کی خطاؤں کواس طرح دور کرتا ہے جیسے بھٹی لو ہے کے میل کو۔'' (2) اس کے مثل سنن ابن ماجہ میں ابو ہر برہ درخی اللہ تعالیٰ عنہ ہے بھی مروی۔

الله عند الله الله الله الله الله الله الله عند الله عند

فرما تاہے: ''جب اینے بندہ کی آئیسیں لے لوں پھروہ صبر کرے، تو آئیسوں کے بدلے اسے جنت دوں گا۔'' (3)

خلین کی است کی است من من الله میں ہے، امیہ نے صدیقہ رضی الله تعالی عنہا سے ان دوآیتوں کا مطلب دریافت کیا:

﴿ إِنْ تُبُوا مَا فِي ٓ النَّهُ مُ اللَّهُ مُ اللَّهُ اللّ

جوتھار نے فنس میں ہے اسے ظاہر کرویا چھیاؤ۔اللہ تم سے اس کا حساب لے گا۔اور

﴿ مَنْ يَعْمَلُ سُوْعً النَّجْزَيِهِ لا ﴾ (5)

جو سی قتم کی برائی کرے گااس کابدلہ دیاجائے گا۔

(کہ جب ہر برائی کی جزا ہے اور جوخطرہ ول میں گزرے اس کا بھی حساب ہے تو بڑی مشکل ہے کہ اس سے کون بچے گا۔)

صدیقہ نے فرمایا: جب سے میں نے اس کا سوال حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہلم) سے کیا کسی نے بھی مجھ سے نہ یو چھا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہلم) سے کیا کسی نے بھی مجھ سے نہ یو چھا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہلم) نے فرمایا: ''اس سے مرادعتا ہے کہ اللہ تعالیٰ بندوں پر کرتا ہے کہ اسے بخار اور تکلیف پہنچا تا ہے، یہاں تک کہ مال جو گرتے کی آستین میں ہواور گم جائے اور اس کی وجہ سے گھبرا جائے ، ان اُمور کی وجہ سے گنا ہوں سے ایسا یک کہ مال جو بھی سے بھٹی سے سونا مکیل جاتا ہے جیسے بھٹی سے سونا مکیل جاتا ہے جیسے بھٹی سے سرخ سونا نکلتا ہے۔'' (6) (یعنی گنا ہوں سے ایسا یا کے صاف ہو جاتا ہے جیسا بھٹی سے سونا مکیل

- € "صحيح البخاري"، كتاب المرضى، باب وضع اليد على المريض، الحديث: ٥٦٦٠، ج٤، ص٩.
- ◘ "صحيح مسلم"، كتاب البر... إلخ، باب ثواب المؤمن فيما يصيبه من مرض... إلخ، الحديث: ٢٥٧٥، ص١٣٩٢.
 - 3 "صحيح البخاري"، كتاب المرضى، باب فضل من ذهب بصره، الحديث: ٥٦٥٣، ج٤، ص٦.
 - 4 پ٣، البقرة: ٢٨٤.
 - 5 يه، النسآء: ١٢٣.
 - 6 "جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب ومن سورة البقرة، الحديث: ٣٠٠٢، ج٤، ص٥٦٥.

🍣 ہے ماک ہوکرنگلتاہے)۔

خلینٹ 🔨 🎤 💎 تر مذی میں ابوموئی رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم:'' بندہ کوکوئی تکلیف

کم وہیش نہیں پہنچتی مگر گناہ کے سبب اور جواللہ تعالیٰ معاف فر مادیتا ہےوہ بہت زیادہ ہے'' اور بیآبیۃ پڑھی:

﴿ وَمَا اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتُ اَيْنِيكُمْ وَيَعْفُوْ اعَنْ كَثِيْرٍ ﴿ ﴿ (1)

جوشمصیں مصیبت بینچی، وہ اس کا بدلدہے جوتمھارے ہاتھوں نے کیااور بہت سی معاف فرمادیتا ہے۔

خلینت 9 و ۱۰ 🌋 شرح سنت میس عبدالله بن عمر ورضی الله تعالی عنها سے مروی ، که فر ماتے بین صلی الله تعالی علیه و کلم: '' بند ہ جب

عبادت کے اچھے طریقہ رہو پھر بیار ہوجائے تو جوفرشتہ اس پرمؤکل ہے، اس سے فرمایا جاتا ہے: اس کے لیے ویسے ہی اعمال کھ جب مرض میں مبتلا نہ تھا، یہاں تک کہ میں اسے مرض سے رہا کروں یا اپنی طرف بلالوں (2) یعنی موت دوں ۔'' اورانس رضی اللہ تعالی عنہ کی روایت میں ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) فر ماتے ہیں :''جب مسلمان کسی بلائے بدن میں مبتلا ہوتا ہے ، فرشتہ کو تھم ہوتا ہے، لکھ جونیک کام پہلے کیا کرتا تھا، تو اگر شفادیتا ہے تو دھودیتا اور پاک کردیتا ہے اور موت دیتا ہے تو بخش دیتا ہے اور

خلینٹ 🕕 🥕 تر مذی بافاد ہ تھیجے شخصین وابن ماجہ و دارمی سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ،حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ دسلم) سے سوال ہوا،کس پر بلازیادہ سخت ہوتی ہے؟ فرمایا:'' انبیا پر پھر جوبہتر ہیں پھر جوبہتر ہیں آ دمی میں جتنادین ہوتا ہے اس کے اندازہ

سے بلامیں مبتلا کیاجا تا ہے،اگر دین میں قوی ہے بلابھی اس برسخت ہوگی اور دین میں ضعیف ہے تواس پرآ سانی کی جاتی ہے تو ہمیشہ بلامیں مبتلا کیا جاتا ہے یہاں تک کرزمین پریوں چاتا ہے کہاس پرکوئی گناہ ندر ہا۔' (4)

خلایث 🗥 🦫 تر مذی وابن ماجدانس رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) فر ماتے ہیں : ' وجنتنی بلا زیاد ہ

ا تناہی ثواب زیادہ اوراللہ عزوجل جب کسی قوم کومحبوب رکھتا ہے تواسے بلامیں ڈالتا ہے، جوراضی ہوااس کے لیے رضا ہے اور جو ناراض ہوااس کے لیے ناخوثی '' (5) اور دوسری روایت تر مذی کی انھیں سے بول ہے، کے فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہملم:''جب

- ❶ "جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب ومن سورة الشوراي... إلخ، الحديث: ٣٢٦٣، ج٥، ص١٦٩. پ ۲۰ الشورای: ۳۰.
 - س. "شرح السنة"، كتاب الحنائز، باب المريض يكتب له مثل عمله، الحديث: ٢٣٤١، ج٣، ص١٨٦.
 - 3 "شرح السنة"، كتاب الجنائز، باب المريض يكتب له مثل عمله، الحديث: ٢٤٢، ج٣، ص١٨٧.
 - 4.... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر على البلاء، الحديث: ٢٤٠٦، ج٤، ص١٧٩. و "سنن الدرامي"، كتاب الرقائق، باب في أشد الناس بلاء، الحديث: ٢٧٨٣، ج٢، ص٢١٢.
 - 🔊 🗗 "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر... إلخ، الحديث: ٢٤٠٤، ج٢، ص١٧٨.

🥞 الله تعالیٰ اپنے بندہ کےساتھ خیر کاارادہ رکھتا ہے تو اُسے دنیاہی میں سزادیدیتا ہےاور جب شرکاارادہ فر ما تاہے تواسے گناہ کابدلہ

نہیں دیتااور قیامت کے دن اسے پورابدلہ دےگا۔ '(1)

خلیئٹ 🗥 🥕 امام مالک وتر مذی ابو ہر برہ درخی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم: ''مسلمان مرد و

عورت کے جان و مال واولا دمیں ہمیشہ بلارہتی ہے، یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ سے اس حال میں ماتا ہے کہ اس پرخطا کچھنہیں۔'' (2)

خلیئٹ 🗥 🤏 احمد وابو داو دبر وایت محمد بن خالدعن ابیعن جدہ راوی ، که فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وتلم: ''بندہ کے لیے

علم الہی میں کوئی مرتبہ مقرر ہوتا ہے اور وہ اعمال کے سبب اس رتبہ کونہ پہنچا توبدن یا مال یا اولا دمیں اس کا ابتلا فرما تا ہے پھرا سے صبر دیتا ہے، یہاں تک کراسے اس مرتبہ کو پہنچا دیتا ہے جواس کے لیے علم اللی میں ہے۔' (3)

خلیئٹ 10 💨 🔻 ترمذی نے جاہر رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فرماتے ہیں:'' جب قیامت

کے دن اہل بلاکوثواب دیا جائے گا تو عافیت والے تمنا کریں گے، کاش دنیا میں قینچیوں سےان کی کھالیس کا ٹی جاتیں۔'' (4)

خلیئٹ 👣 🥕 ابوداود و عامرالرام رض اللہ تعالی عنہ ہے راوی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے بیماریوں کا ذکر فر ما یا اور فرمایا: که دمومن جب بیار ہو پھراچھا ہوجائے ،اس کی بیاری گناہوں سے کفارہ ہوجاتی ہے اورآئندہ کے لیے نصیحت اور منافق جب بیار ہوا پھراحیحا ہوا،اوس کی مثال اونٹ کی ہے کہ ما لک نے اسے با ندھا پھر کھول دیا تو نداسے بیمعلوم کہ کیوں با ندھا، نہ بیر کہ کیوں کھولا؟ ایک شخص نے عرض کی ، یارسول الله (صلی الله تعالی علیه دسلم)! بیماری کیاچیز ہے، میں تو مجھی بیمار نہ ہوا؟ فرمایا: ہمارے

ماس سے اٹھ جا کہ تو ہم میں سے ہیں۔' ⁽⁵⁾

خ 🛂 🔑 💎 امام احمد شدا دین اُوس رضی الله تعالی عند سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) فرمات نے ہیں ، الله عز وجل فرما تا ہے: ''جب میں اینے مومن بندہ کو بکا میں ڈالوں اور وہ اس ابتلا پر میری حمد کرے، تو وہ اپنی خواب گاہ سے گناہوں سے ایسا یا ک ہوکرا مٹھ گا جیسے اس دن کہائی مال سے پیدا ہوا۔' اور رب تبارک وتعالیٰ فرما تاہے:''میں نے اپنے ہندہ کو مقیداور مبتلا کیا، اس کے لیے عمل دیساہی جاری رکھوجیساصحت میں تھا۔'' (6)

- € "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر... إلخ، الحديث: ٢٤٠٤، ح٤٠ ص١٧٨.
- 2 "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر... إلخ، الحديث: ٢٠٤٧، ج٤، ص١٧٩.
- € "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الأمراض المكفرة للذنوب، الحديث: ٩٠٩٠، ج٣، ص٢٤٦. و "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث رجل، الحديث: ٢٢٤٠١، ج٨، ص١٣١.
 - 4.... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، ٩٥ باب، الحديث: ١٤١٠ ج٤، ص١٨٠.
- سنن أبي داود"، كتاب الحنائز، باب الأمراض المكفرة للذنوب، الحديث: ٣٠٨٩، ج٣، ص٥٢٤.
 - 🚙 🌀 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث شداد بن أوس، الحديث: ١٧١١٨، ج٦، ص٧٧.

مریض کی عیادت کوجاناسنت ہے۔احادیث میں اس کی بہت فضیلت آئی ہے۔

عیادت کے فضائل

خلائث 📗 🐣 بخاری ومسلم وابو داود وابن ماجها بو ہر رہے رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ،حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے ۔



ہیں:مسلمان پرمسلمان کے یا کچے حق ہیں:

- (۱) سلام کاجواب دینا
- (۲) مریض کے پوچھنے کوجانا
- (m) جنازے کے ساتھ حانا
 - (۴) دعوت قبول کرنا
- (۵) حِصِنَكَ والعَاجواب دينا (⁽¹⁾ (جب ٱلْحَمُدُ للله كهي)

خلیٹ 🔰 🥕 صحیحین میں ہے براُبن عازب رضی اللہ تعالی عنہ کہتے میں، ہمیں سات با نوں کا حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم)

نے تکم فرمایا، (بیریانچ باتیں ذکر کر کے فرمایا)، (۱) قتم کھانے والے کہ قتم پوری کرنا، (۷) مظلوم کی مدد کرنا۔(²⁾

خلینٹ 👚 💝 بخاری ومسلم ثوبان رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ،حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے ہیں :'' مسلمان جب

اینے مسلمان بھائی کی عیادت کو گیا تو واپس ہونے تک ہمیشہ جنت کے پھل چننے میں رہا۔'' (3)

خلینے 👚 💝 صحیح مسلم شریف میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتے ہیں : الله عز وجل روزِ قیامت فرمائے گا: ''اے ابن آ دم! میں بیار ہوا تُو نے میری عیادت نہ کی ،عرض کرے گا، تیری عیادت کیسے کرنا تُو رب العالمین ہے (یعنی خدا کیسے بیار ہوسکتا ہے کہاس کی عیادت کی جائے) فرمائے گا: کیا مخصے نہیں معلوم کہ میرا فلاں بندہ بیار ہوااوراس کی تُو نے عیادت نہ کی ، کیا تُونہیں جانتا کہا گراس کی عیادت کو جاتا تو مجھےاس کے پاس یا تااور فرمائے گا:اے ابن آ دم! میں نے تجھ سے کھانا طلب کیا تُو نے نہ دیاع ض کرے گا تجھے کس طرح کھانا دیتا تُو تورب العالمین ہے فر مائے گا: کیا تجھے نہیں معلوم کہ میرے فلاں بندہ نے تجھ سے کھانا ما نگا اور تونے نہ دیا کیا تجھے نہیں معلوم کہ اگر تُونے دیا ہوتا تواس کو (یعنی اس کے ثواب کو) میرے پاس یا تا،فر مائے گا:اے ابن آ دم! میں نے تجھ سے یا ٹی طلب کیا تُو نے نہ دیا،

- 1 "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب الأمر باتباع الجنائز، الحديث: ١٢٤٠، ج١، ص ٤٢١.
 - 2 "صحيح البخاري"، كتاب اللباس، باب خواتيم الذهب، الحديث: ٥٨٦٣، ج٤، ص٦٧.
- 🦃 🔞 "صحيح مسلم"، كتاب البر... إلخ، باب فضل عيادة المريض، الحديث: ٤١ _ (٢٥٦٨)، ص١٣٨٩.

🍣 عرض کرے گا، کچھے کیسے پانی دیتا تُو تو رب العالمین ہے فر مائے گا:''میرے فلاں بندہ نے تجھ سے پانی ما نگا تُو نے اسے نہ

بلایا،اگریلایا ہوتا تومیرے یہاں پاتا۔''⁽¹⁾

خلین ۵ 💝 🗝 محیح بخاری شریف میں ابن عباس رض الله تعالی عنها سے مروی ،حضورا قدس صلی الله تعالی علیه و کم ایک اعرابی کی

عیادت کوتشریف لے گئے اور عادت کریمہ پھی کہ جب کسی مریض کی عیادت کوتشریف لے جاتے تو پیفر ماتے:

لَا بَأْسَ طُهُورٌ إِنْشَآءَ اللَّهُ تَعَالَىٰ .

''دیعنی کوئی حرج کی بات نہیں ان شاءاللہ تعالی بیمرض گنا ہوں سے یا ک کرنے والا ہے۔''

اس اعرابی ہے جھی یہی فر مایا:

لَا بَأْسَ طُهُورٌ إِنَّشَآءَ اللَّهُ تَعَالَىٰ . (2)

خلینٹ 🔰 🥕 ابوداود وتر مذی امیر المومنین مولاعلی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کدرسول اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتے ہیں :

''جومسلمان کسی مسلمان کی عیادت کے لیے شبح کو جائے تو شام تک اس کے لیے ستر ہزار فرشتے استغفار کرتے ہیں اور شام کو

جائے تو صبح تک ستر ہزارفر شتے استعفار کرتے ہیں اوراس کے لیے جنت میں ایک باغ ہوگا۔''⁽³⁾

خلینٹ 🗸 🧨 🕒 ابو داو د نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روابیت کی حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) فر ماتے ہیں:'' جواحیھی طرح

وضوکر کے بغرض ثواب اینے مسلمان بھائی کی عیادت کو جائے جہنم سے ساٹھ برس کی راہ دورکر دیا گیا۔'' (4)

خلینٹ 🔨 🐣 ترمذی بافا دؤ تحسین وابن ماجدابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) فرماتے

ہیں:'' جو شخص مریض کی عیادت کو جاتا ہے آسمان سے منادی ندا کرتا ہے، تُو اچھا ہےاور تیرا چلناا چھااور جنت کی ایک منزل کو تُو

نےٹھکا نابناہا۔'' (5)

خلیث و 🔑 💎 ابن ماجه امیر المونین فاروق اعظم رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے فر مایا:

'' جب تُو مریض کے پاس جائے تواس سے کہہ کہ تیرے لیے دُعا کرے کہ اس کی دُعا دُعائے ملئکہ کی ما نندہے۔'' (6)

● "صحيح مسلم"، كتاب البر... إلخ، باب فضل عيادة المريض، الحديث: ٦٩ ٥ ٢ ، ص ١٣٨٩.

2 "صحيح البخاري"، كتاب المناقب، باب علامات النبوة في الإسلام، الحديث؛ ٣٦١٦، ج٢، ص٥٠٥.

3 "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء في عيادة المريض، الحديث: ٩٧١، ج٢، ص ٢٩٠.

سنن أبي داود"، كتاب الحنائز، باب في فضل العيادة على وضوء، الحديث: ٣٠٩٧، ج٣، ص٢٤٨.

سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في ثواب من عاد مريضا، الحديث: ١٤٤٣، ج٢، ص١٩٢.

🚙 🙃 "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في عيادة المريض، الحديث: ١٤٤١، ج٢، ص١٩١.

.

ﷺ <u>خاریک و این ہے ۔ بیب</u>ق نے سعید بن المسیب سے مرسلا روایت کی کہ فرماتے ہیں:''دافضل عیادت ریہ ہے کہ جلدا ٹھ

آئے۔'' (1) اوراس کی مثل انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بھی مروی۔

خلیف 🕕 🚓 تر مذی وابن ماجها بوسعید خدری رض الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) فر ماتے ہیں : جب

خلیث (۱۲) ابن حبان اپنی صحیح میں نھیں سے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فر ماتے ہیں: '' پانچ چیزیں جوایک

دن میں کرے گا،اللہ تعالیٰ اس کوجنتیوں میں لکھ دیگا۔

- (۱) مریض کی عیادت کرے
 - (۲) جنازه میں حاضر ہو
 - (۳) روز ه رکھے
 - (۴) جُمُعَهُ كُوحائِ
- (۵) غلام آزاد کرے۔" (3)

خلین سا و ۱۳ گیا او ۱۳ گی احمد وطبر انی وابویعلی و ابن خزیمه و ابن حبان معافر بن جبل اور ابوداود ابوا مامه رضی الله تعالی عبها سے راوی، که حضور (سلی الله تعالی علیه و باین عبی کی جنوان میں سے ایک بھی کرے، الله عزوجل کے صفان میں آجائے گا۔ آجائے گا۔

- (۱) مریض کی عیادت کرے
- (۲) باجنازہ کے ساتھ جائے
 - (٣) ماغزوه كوحائ
- (4) یاامام کے پاس اس کی تعظیم و تو قیر کے ارادہ سے جائے
- (۵) یااینے گھر میں بیٹھارہے کہ لوگ اس سے سلامت رہیں اور وہ لوگوں سے ۔'' (4)

. خارین ۱۵ ﷺ ابن خزیمه این صحیح میں ابو ہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ حضور اقد س صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فر مایا:

- € "شعب الإيمان"، باب في عيادة المريض، فصل في آداب العيادة، الحديث: ٩٢٢١، ج٦، ص٤٥٥.
 - 2 "جامع الترمذي"، أبواب الطب، ٣٥ باب، الحديث: ٢٠٩٤، ج٤، ص٥٦.
- 3 "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجمعة، الحديث: ٢٧٦٠، ج٤، ص ١٩١.
 - 🧝 4..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث معاذ بن جبل رضي الله عنه، الحديث: ١٥٥٧، ج٨، ص٥٥٥.

🦥 '' آج تم میں کون روز ہ دارہے؟ ابو بکر رضی الد تعالی عنہ نے عرض کی میں ،فر مایا: آج تم میں کس نے مسکین کوکھا نا کھلا یا؟ عرض کی میں 🕷 نے، فرمایا: کون آج جنازہ کےساتھ گیا؟ عرض کی میں، فرمایا: کس نے آج مریض کی عیادت کی؟ عرض کی میں نے ، فرمایا: بیہ خصلتیں کسی میں بھی جمع نہ ہول گی مگر جنت میں داخل ہوگا۔' (1)

خلایث 👣 🐣 ابوداود وتر مذی عبدالله بن عباس رضی الله تعالی عنباسے راوی ، که فر ماتنے ہیں صلی الله تعالی علیہ وہلم:'' جب کوئی

مسلمان سی مسلمان کی عیادت کوجائے توسات بار بہ دُ عامیر ھے:

اَستَالُ اللَّهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرُشِ الْكَرِيْمِ اَنُ يَّشُفِيْكَ . (2) اگرموت نہیں آئی ہے تو اُسے شفا ہوجائے گی۔'' (3)

موت آنے کا بیان

دنیا گزشتنی وگزاشتنی (4) ہے،آخرایک دن موت آنی ہے جب یہاں سے کوچ کرنا ہی ہے تو وہاں کی طیاری جا ہے جہاں ہمیشہر ہنا ہےاوراس ونت کو ہرونت پیش نظرر کھنا جا ہے۔

حضورا قدس صلى الله تعالى عليه وسلم نے عبدالله بن عمر رضي الله تعالى عنه سے فر مايا: '' و نيا ميں ايسے رہو جيسے مسافر بلكه را ہ چلتا۔''⁽⁵⁾ نو مسافر جس طرح ایک اجنبی تخص ہوتا ہے اور راہ گیر راستہ کے کھیل تماشوں میں نہیں لگتا کہ راہ کھوٹی ہوگی اور منزل مقصودتك يبنيخ ميں ناكامي ہوگي ،اسي طرح مسلمان كو جاہيے كه دنيا ميں نه تھنسے اور نه ايسے تعلقات پيدا كرے كەمقصو د اصلی کے حاصل کرنے میں آٹرے آئیں اور موت کو کثرت سے یا دکرے کہ اس کی یاد دنیوی تعلقات کی بیخ کئی کرتی ہے۔ (6) حدیث میں ارشا دفر مایا:

- 1 ⋯⋯ "الترغيب و الترهيب"، كتاب الجنائز، الترغيب في عيادة المرضى... إلخ، الحديث: ٧، ج٤، ص٦٦٣.
 - ترجمہ: التعظیم سے سوال کرتا ہوں، جوعرش کریم کا مالک ہے اس کا کہ تحقیے شفادے۔ ۱۲۔
 - **3** "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الدعاء للمريض، الحديث: ٣١٠٦، ج٣، ص ٢٥١.
 - و "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبدالله بن العباس، الحديث: ٢١٨٢، ج١، ص٢٥٥.
 - لین د نباختم ہونے والی اور چھوٹنے والی۔
- 5..... "صحيح البحاري"، كتاب الرقائق، باب قول النبي صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ((كن في الدنيا كأنك غريب أو عابر سبيل))، الحديث: ٦٤١٦، ج٤، ص٢٢٣.
 - 🧟 🚳 کینی جڑ کا ٹتی ہے۔

اَكُثِرُواْ ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّـذَّاتِ (1) الْمَوْتِ . (2)

807

گرکسی مصیبت پرموت کی آرزونه کرے که اس کی ممانعت آئی ہے اور ناچار کرنی ہی ہے تو یوں کے ، الّی مجھے زندہ رکھ جب تک زندگی میرے لیے بہتر ہو۔ (3) کیما ھو فی حدیث الصحیحین عن انس رضی الله تعالیٰ عنه (4) اور مسلمان کوچا ہے کہ الله عزوج سے نیک گمان رکھے ، اس کی رحمت کا امیر وارر ہے۔ حدیث میں فرمایا: کوئی نہ مرے ، گمراس حال میں کہ الله عزوج سے نیک گمان رکھتا ہو۔' (5) کہ ارشاد آئی ہے:

اَنَا عِنُدَ ظَنِّ عَبُدِي بِي .

"میرابنده مجھ سے جبیا گمان رکھتا ہے میں اس طرح اس کے ساتھ پیش آتا ہوں۔"

ایک جوان کے پاس تشریف لے گئے اور وہ قریب الموت تھے، فرمایا: تو اپنے کو کس حال میں پاتا ہے عوض کی،

یارسول اللہ (صلی اللہ تعالی علیہ کم کے) اللہ (عزد جل) سے امید ہے اور اپنے گنا ہوں سے ڈر، فرمایا: ''مید دونوں خوف ورجا، اس موقع پر
جس بندہ کے دل میں ہوں گے، اللہ اسے وہ وے گا جس کی امید رکھتا ہے اور اس سے امن میں رکھے گا جس سے خوف کرتا
ہے۔'' (7) رُوح قبض ہونے کا وقت بہت بخت وقت ہے کہ اسی پرسارے مل کا مدار ہے، بلکہ ایمان کے تمام نتائج اُخروی اسی
پر مرتب کہ اعتبار خاتمہ ہی کا ہے اور شیطان لعین ایمان لینے کی فکر میں ہے، جس کو اللہ تعالی اس کے مرسے بچائے اور ایمان پر
غاتمہ نصیب فرمائے وہ مرا دکو پہنچا۔ اِنَّمَا الْعِبْرَةُ بِالْحَوَاتِيْمِ . ''اعتبار خاتمہ ہی کا ہے۔'' اَللَّهُمَّ ارْزُقْنَا حُسُنَ الْحَاتِمَةِ .

ارشاد فرمائے وہ مرا دکو پہنچا۔ اِنَّمَا الْعِبْرَةُ بِالْحَوَاتِيْمِ . ''اعتبار خاتمہ ہی کا ہے۔'' اَللَّهُمَّ ارْزُقْنَا حُسُنَ الْحَاتِمَةِ .

ارشاد فرمائے وہ مرا دکو پہنچا۔ اِنَّمَا الْعِبْرَةُ بِالْحَوَاتِيْمِ . ''اعتبار خاتمہ ہوا یعنی کلہ طیبہ وہ جنت میں داخل ہوا۔ (8)

مسائل فقهيه

جب موت کا وفت قریب آئے اور علامتیں پائی جائیں توسنت بیہے کہ دہنی کروٹ پرلٹا کر قبلہ کی طرف موتھ کردیں

- "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في ذكر الموت، الحديث: ٢٣١٤، ج٤، ص١٣٨.
 - الدتول كى توردين والى موت كوكشرت سے يادكرو ١٢٠
- ③ "صحيح البخاري"، كتاب المرضى، باب تمنى المريض الموت، الحديث: ٦٧١ه، ج٤، ص١٣٠.
 - لین اس حدیث کو بخاری و مسلم نے حضرت سید ناائس رضی الله تعالی عند سے روایت کیا۔
- "صحيح مسلم"، كتاب الجنة... إلخ، باب الأمر بحسن الظن بالله تعالىٰ عند الموت، الحديث: ٨٠ (٢٨٧٧)، ص١٥٣٨.
- شحيح البخاري"، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالىٰ، ﴿ وَيُحَلِّمُ أَكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ﴾... إلخ، الحديث: ٧٤٠٥ ج٤، ص ١٥٥.
 - 7 "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، ١١_باب،الحديث: ٩٨٥، ج٢، ص٢٩٦.
 - 🥱 🔞 "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب في التلقين، الحديث: ١٦١٣، ج٣، ص٥٥٦.

ر هیں اور قبلہ کومونھ کرنا دشوار ہو کہ اس کو تکلیف ہوتی ہوتو جس حالت پر ہے جیموڑ دیں۔⁽¹⁾ (درمختار وغیرہ)

<u> مسئل کی جان کنی کی حالت میں جب تک روح گلے کونہ آئی است</u>لقین کریں یعنی اس کے پاس بلند آواز سے پڑھیں

اَشُهَدُ اَنُ لَا إِلَهُ اللَّهُ وَاَشُهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللهِ محرات اللهِ عَرات اللهِ اللهُ عَمَا اللهُ عَمَا اللهِ عَمامَ كتب

مَسَعَلُونَ ﴾ جب اس نے کلمہ پڑھ لیا تو تلقین موقوف کر دیں ، ہاں اگر کلمہ پڑھنے کے بعداس نے کوئی بات کی تو پھر التی میں میں میں میں میں اس کے کام کی اس کے اس کے اس کا میں میں کا اس کے ایک کی کا بات کی تو پھر

نیک اور پر بیز گارلوگول کا بهونا بهت انجیلی بات ہے اور اس وقت وہاں سور ہو گئی سے سے میں تلاوت اور خوشبو ہونا مستحب، مثلاً لوبان یا اگر کی بتیاں سُلگا دیں۔ (4) (عالمگیری)

مسئل المرابعی موت کے وقت حیض و نفاس والی عور تیں اس کے پاس حاضر ہو سکتی ہیں۔ (5) (عالمگیری) مگر جس کا حیض و نفاس منقطع ہو گیا اور ابھی عنسل نہیں کیا اے اور جنب کوآنا نہ چاہیے۔ اور کوشش کرے کہ مکان میں کوئی تصویر یا گتا نہ ہو، اگر یہ چیزیں ہوں تو فوراً نکال دی جا کیں کہ جہاں یہ ہوتی ہیں ملککہ رحمت نہیں آتے، اس کی نزع کے وقت اپنے اور اس کے لیے وُعائے خیر کرتے رہیں، کوئی بُر اکلمہ زبان سے نہ نکالیں کہ اس وقت جو پچھ کہا جاتا ہے ملائکہ اس پر آمین کہتے ہیں، نزع میں شختی و کیکھیں تو سور کی پیس وسور کی دعد مرسمیں۔

سَسَعَانُ ہُ ہِ جب روح نکل جائے تو ایک چوڑی پٹی جبڑے کے بنچے سے سر پر لے جاکرگرہ دے دیں کہ مونھ کھلانہ رہاور آئکھیں بند کر دی جائیں اور انگلیاں اور ہاتھ پاؤں سیدھے کر دیے جائیں، بیکام اس کے گھر والوں میں جوزیادہ زی کے ساتھ کرسکتا ہوباپ یابیٹاوہ کرے۔(6) (جو ہرہ نیرہ)

مسكان الله من المحيل بندكرت وفت بيدُ عابر هے:

- 🚺 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص ٩١، وغيره .
 - 2 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الحنائز، ص ١٣٠.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧.
 - 4 المرجع السابق.
 - 5 المرجع السابق.
 - 6 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣١.

بِسُمِ اللَّهِ وَعَلَىٰ مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ اَللَّهُمَّ يَسِّرُ عَلَيْهِ اَمُوهُ وَسَهِّلُ عَلَيْهِ مَا بَعُدَهُ وَاسُعِدُهُ بِلِقَائِكَ وَاجْعَلُ مَا خَرَجَ اللَّهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنُهُ . (1)(درمِثار)

809

مَسِعَانَهُ كَا ﴾ اس كے پيٹ برلو ہايا گيلي مٹی يا اور كوئی بھاری چيز ركھ دیں كہ پیٹ پھول نہ جائے۔ ⁽²⁾ (عالمگيری)

گرضرورت سے زیادہ وزنی نہ ہو کہ باعثِ تکلیف ہے۔⁽³⁾ (درمختار)

سَسَعَالُهُ ﴾ میت کے سارے بدن کوئسی کپڑے سے چھپادیں اوراس کو چار پائی یا تخت وغیرہ کسی اونجی چیز پررکھیں کہ زمین کی سال نہ پہنچے۔ (4) (عالمگیری)

سَسَعَانُ وَ الله مَرتِ وقت معاذ الله اس كى زبان سے كلمه كفر نكل تو كفر كا حكم ندديں كے كمكن ہموت كى تحق ميں عقل جاتى رہى ہواور بے ہوشى ميں يہ كلمه نكل گيا۔ (5) (در مختار) اور بہت ممكن ہے كه اس كى بات بورى سمجھ ميں نه آئى كه اليى شدت كى حالت ميں آدمى بورى بات صاف طور پرادا كر لے دشوار ہوتا ہے۔

دَين مين مقيد ہے۔" (7) ايك روايت مين ہے،"اس كى روح معلق رہتى ہے جب تك دَين ندادا كياجائے۔" (8)

<u> مسئان ال</u> ہے۔ میت کے پاس تلاوت قرآن مجید جائز ہے جبکہ اسکاتمام بدن کپڑے سے چھپا ہواور تعیج و دیگراذ کارمیں مطلقاً حرج نہیں۔⁽⁹⁾ (ردالحتاروغیرہ)

مسکان ال اسکان ال کفن و دفن میں جلدی چاہیے کہ حدیث میں اس کی بہت تا کید آئی ہے۔ (10) (جوہرہ)

۱۳۰۰ "الدرالمنحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المحنازة، ج٣، ص٩٧.
 ترجمہ:الله(عزوجل) كنام كے ساتھ اور رسول الله كى ملّت پر،ا ك الله (عزوجل) تواس كے كام كواس پر آسان كراوراس كے ما بعد كواس

. پر نہل کراورا پنی ملاقات ہے تُو اسے نیک بخت کراور جس کی طرف نکلا (آخرت)اسے اس سے بہتڑ کر ، جس سے نکلا (دنیا)۔1۲

- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص٧٥١.
 - 3 "سنن الدار قطني"، كتاب البيوع، الحديث ٦٩٦٥، ج٣، ص٥٨.
- ♦ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص٧٥١.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٩٦.
 - الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الحنائز، ص ١٣١.
- 3 "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء عن النبي انه قال ... الخ، الحديث: ١٠٨١، ج٢، ص ٣٤١.
- "دالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في القراءة عند الميت، ج٣، ص٩٨٠ ـ ١٠٠ وغيره .
 - 🙀 🕡 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣١.

💨 📶 📜 🚽 پروسیوں اور اس کے دوست احباب کواطلاع کر دیں کہ نمازیوں کی کثرت ہوگی اور اس کے لیے وُعا

کریں گے کہان پرخق ہے کہاس کی نماز پڑھیں اور دُعا کریں۔(1) (عالمگیری وغیرہ)

سَسَعًا ﴾ بازاروشارع عام پراس کی موت کی خبروینے کے لیے بلندآ واز سے یکارنا بعض نے مکروہ بتایا، مگراضح میہ

ہے کہ اس میں حرج نہیں مگر حسب عادت جاہلیت بڑے بڑے الفاظ سے ندہو۔ (2) (جوہرہ نیرہ،ردا کتار)

مَسِعًا ﴾ نا گہانی موت ہے مرا توجب تک موت کا یقین نہ ہو، جبینر قتلفین ملتوی رکھیں۔ (3) (عالمگیری)

سَسَعَانُ 🕦 ﴾ عورت مرگنی اوراس کے بیٹ میں بھے حرکت کررہاہے تو بائیں جانب سے بیٹ جاک کر کے بچہ نکالا

جائے اورا گرعورت زندہ ہےاوراس کے پیٹ میں بچے مرگیا اورعورت کی جان پر بنی ہوتو بچے کاٹ کر نکالا جائے اور بچے بھی زندہ ہو توکیسی ہی تکلیف ہو، بچه کاٹ کر نکالناجائز نہیں ۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری، درمختار)

سَسَعَالُهُ كال الله الراس نے قصداً كسى كا مال نگل ليا اور مركّبيا تو اگرا تنا مال چھوڑا ہے كہ تا وان دے ديا جائے تو تر كہ ہے

تاوان ادا کریں، ورنہ پیٹ چیر کر مال نکالا جائے گا اور بلاقصدہے تو چیرانہ جائے۔⁽⁵⁾ (درمختار ، ردا کختار)

سَسَاكُ ١٨ ﴾ حامله عورت مركنی اور دفن كردی گئ كسی نے خواب میں دیکھا كداوس كے بچه بیدا ہوا تومحض اس خواب كی بنارقبرکھودنی جائزنہیں۔⁽⁶⁾(عالمگیری)

د میت کے نھلانے کا بیان

<u> مستان ال</u> ہے۔میت کونہلا نافرض کفالیہ ہے بعض لوگوں نے عسل دے دیا تو سب سے ساقط ہو گیا۔ ⁽⁷⁾ (عالمگیری) سَسَعَالُهُ ٢﴾ نہلانے کاطریقہ یہ ہے کہ جس جاریائی یاتخت یا تختہ پر نہلانے کا ارادہ ہواُس کوتین یا یائج یاسات بار دھونی ویں بعنی جس چیز میں وہ خوشبوسکتی ہوا ہے اتنی بار حیاریائی وغیرہ کے گرد پھرائیں اوراُس پرمیّت کولٹا کرناف سے گھٹوں تک کسی

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧.
 - 2 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الحنائز، ص ١٣١. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في أطفال المشركين، ج٣، ص٩٧.
- € "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧.
 - 4 المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص ١٧١.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٧٢.
 - "الفتاوى الهندية"، كتاب الكراهية، الباب السادس عشر في زيارة القبور... إلخ، ج٥، ص ١ ٣٥.
 - 🤿 🗗 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١٠ ص١٥٨.

💥 کپڑے ہے چھپادیں، پھرنہلانے والااینے ہاتھ پر کپڑالپیٹ کر پہلے استنجا کرائے پھرنماز کا ساوضو کرائے لیعنی موزھ پھر کہنیوں سمیت ہاتھ دھوئیں پھرسر کامسح کریں پھریاؤں دھوئیں مگرمیّت کے وضومیں گٹوں تک پہلے ہاتھ دھونااور کلی کرنااور ناک میں یانی ڈ النانہیں ہے ہاں کوئی کپڑ ایاروئی کی پھر رہی بھگو کر دانتوں اورمسوڑ وں اور ہونٹوں اور نتھنوں پر پھیردیں پھرسراور داڑھی کے بال ہوں تو گل خیرو سے دھوئیں میہنہ ہو تو یا ک صابون اسلامی کارخانہ کا بنا ہوایا بیسن یاکسی اور چیز سے ورنہ خالی یانی بھی کافی ہے، پھر ہائیں کروٹ پرلٹا کرسر سے باؤں تک ہیری کا پانی بہائیں کہ تختہ تک پہنچ جائے پھر داہنی کروٹ پرلٹا کر بوہیں کر ساور ہیری کے پتے جوش دیا ہوایانی نہ ہو تو خالص یانی نیم گرم کافی ہے پھرٹیک لگا کر بٹھا ئیں اور نرمی کے ساتھ نیچے کو پیٹ پر ہاتھ پھیریں اگر کچھ نکلے دھوڈالیں وضو وغسل کا اعادہ نہ کریں پھرآ خرمیں سرے یاؤں تک کا فور کا پانی بہائیں پھراُس کے بدن کوسی پاک کیڑے سے آہشہ یونچھ دیں۔(1)

کہ سوانہلانے والوں اور مددگاروں کے دوسرانہ دیکھے، نہلاتے وفت خواہ اس طرح لٹائیں جیسے قبر میں رکھتے ہیں یا قبلہ کی طرف یاؤں کرکے ماجوآ سان ہوکریں۔⁽²⁾(عالمگیری)

مَسَعًا ﴾ ﴿ ﴿ نَهلانے والا باطہارت ہو، جنب یاحیض والیعورت نے عسل دیا تو کراہت ہے مگرعسل ہوجائے گا اور بے وضو نے نہلا یا تو کراہت بھی نہیں ، بہتر یہ ہے کہ نہلا نے والامیّت کاسب سے زیادہ قریبی رشتہ دارہو، وہ نہ ہویا نہلا نانہ جانتا ہو تو کوئی اور شخص جوامانت دارو بر ہیز گار ہو۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سَسَالُ ۵ ﴾ نہلانے والامعتمد شخص ہو کہ بوری طرح غسل دےاور جواچھی بات دیکھے،مثلاً چیرہ چیک اٹھایا میت کے بدن سے خوشبوآئی تواسے لوگوں کے سامنے بیان کرےاورکوئی بُری بات دیکھی ،مثلاً چیرے کارنگ سیاہ ہوگیا یابد بوآئی یاصورت یا اعضا میں تغیرآیا تواہے کسی سے نہ کھےاورالیی بات کہنا جائز بھی نہیں، کہ حدیث میں ارشاد ہوا:''اینے مُر دوں کی خوبیاں ذکر کرواوراُس کی برائیوں سے بازرہو۔'' ⁽⁴⁾ (جوہرہ نیرہ)

❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص٥٨، ١، وغيره.

^{2 &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١٠ ص١٥٨.

^{€ &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص٩٥.

^{4 &}quot;الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣١.

[&]quot;سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في النهي عن سب الموتى، الحديث: ٩٠٠، ج٤، ص ٣٦٠.

بَيْنَ اللَّهُ اللّ

سے لوگوں کوعبرت ونصیحت ہوگی۔⁽¹⁾ (عالمگیری)

گھبرائے گا، نیزاُسے چاہیے کہ بفتر رضرورت اعضائے میّت کی طرف نظر کرے بلاضرورت کسی عضو کی طرف نہ و کیھے کیمکن ہے

اُس کے بدن میں کوئی عیب ہو جسے وہ چھیا تاتھا۔⁽²⁾ (جو ہرہ)

سَسَاكُ ٨ ﴾ اگروہاں اس كے سوااور بھى نہلانے والے ہوں تو نہلانے يراجرت لے سكتا ہے مگرافضل يہ ہے كہ نہ لے اورا گرکوئی دوسرانہلانے والانہ ہو تو أجرت لينا جائز نہيں۔(3) (عالمگيري، درمختار)

مستان و جنب یاحیض ونفاس والی عورت کا انتقال ہوا تو ایک ہی عنسل کافی ہے کیشسل واجب ہونے کے کتنے ہی اسباب ہوں،سب ایک عسل سے ادا ہوجاتے ہیں۔(4) (در مختار)

مَسْعَالُهُ اللَّهِ مردکومردنہلائے اورعورت کوعورت،میّت جھوٹالڑ کا ہے تواسے عورت بھی نہلاسکتی ہے اور چھوٹی لڑکی کومرد

بھی، چھوٹے سے بیمراد کہ حدشہوت کونہ پہنچے ہوں۔ (⁵⁾ (عالمگیری)

مسئلہ اللہ جسمرد کاعضو تناسل یا نثیبن کاٹ لیے گئے ہوں وہ مردبی ہے یعنی مردبی اُسے شسل دے سکتا ہے یا اُس کی عورت به (6) (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ الله عورت اپنے شو ہر کونسل دے سکتی ہے جب کہ موت سے پہلے یابعد کوئی ایساامر نہ واقع ہوا ہوجس سے اس کے نکاح سے نکل جائے ،مثلاً شوہر کے لڑ کے مابا پ کوشہوت سے چھوا یا بوسہ لیا یا معاذ اللہ مرتد ہوگئی ،اگر چینسل سے پہلے ہی پھر مسلمان ہوگئی کہان وجوہ سے نکاح جا تار ہااوراجنبیہ ہوگئی لہذاغسل نہیں دے سکتی۔⁽⁷⁾ (عالمگیری)

- ❶..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١٠ ص٩٥٠.
 - الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣١.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص٩٥ ـ ١٦٠١. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٢.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١٠ ص ١٦٠.
 - 6 المرجع السابق.
 - 🕡 المرجع السابق.

💨 📶 🔭 عورت کوطلاق رجعی دی ہنوز عدت میں تھی کہ شو ہر کا انتقال ہو گیا تو غسل دیسکتی ہے اور بائن طلاق دی

ہے تواگر چەعدت میں ہے عسل نہیں دے کتی۔ (1) (عالمگیری، درمختار)

سَسَعَالُهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ على اللهُ ا

كىملك سے خارج موكنيں _ يوبي اگريدمرجائيں تو آقانبين نهلاسكتا _ (در مختار وغيره)

مَسِعًا لَهُ ١٥ ﴾ عورت مرجائے تو شوہرندائے نہاسکتا ہے نہ چھوسکتا ہے اور دیکھنے کی ممانعت نہیں۔(6) (درمختار)

عوام میں جو پیششہور ہے کہ شو ہرعورت کے جنازہ کونہ کندھاد ہے سکتا ہے نہ قبر میں اتار سکتا ہے نہ موزھ دیکھ سکتا ہے، یہ مخض غلط ہےصرف نہلا نے اورا سکے بدن کو بلا حائل ہاتھ لگانے کی ممانعت ہے۔

سَسَعَانُ 🕦 ﴾ عورت کا انقال ہوااور و ہاں کوئی عورت نہیں کہ نہلا دینو تیم کر ایا جائے پھرتیم کرنے والامحرم ہو تو ہاتھ سے تیمؓ کرائے اوراجنبی ہوا گرچہ شوہر تو ہاتھ پر کپڑا لیسٹ کرجنس زمین پر ہاتھ مارے اور تیمؓ کرائے اور شوہر کے سوا کوئی اوراجنبی ہوتو کلائیوں کی طرف نظر نہ کر ہے اورشو ہر کواس کی حاجت نہیں اور اس مسئلہ میں جوان اور بڑھیا دونوں کا

ایک حکم ہے۔ (7) (درمختار، عالمگیری وغیرہا)

سَسَعَانُهُ كَالَيْ ﴿ مِرْدِكَا انْقَالَ ہوا اور وہاں نہ كوئى مرد ہے نہ اُس كى بى بى ، تو جو عورت وہاں ہے اُسے تیم كرائے پھراگر عورت محرم ہے یا اُس کی باندی تو تیم میں ہاتھ پر کیڑا لیٹنے کی حاجت نہیں اور اجنبی ہو تو کیڑا لیپٹ کرتیم کرائے۔ (8) (عالمگیری)

مستانہ 🗥 🦫 مرد کا سفر میں انتقال ہوااوراس کے ساتھ عورتیں ہیں اور کا فرمر دمگرمسلمان مر دکوئی نہیں تو عورتیں اس کا فر

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧.
 - یعن وہ لونڈ ی جس کے بچہ پیدا ہوا اور مولی نے اقر ارکیا کہ بیمیر ابجہ ہے۔
 - ایعنی وہ اونڈی جس کی نسبت مولی نے کہا کہ تو میرے مرنے کے بعد آزاد ہے۔
- یعنی آ قااین لونڈی ہے مال کی ایک مقدار مقرر کر کے رہے کہ دے کہ اتناادا کردے تو آ زادہ اورلونڈی اس کو قبول بھی کرلے۔ نوے: گفصیلی معلومات کے لئے بہارشریعت حصہ**9 میں م**دیّر ،مکا تب اورام ولد کا بیان ملاحظہ فرما ^میں ۔
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٦. وغيره
- **6**..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٥. المرجع السابق، ص١١٠. و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠ وغيرهما.
 - 🚙 🔞 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠.

کونہلانے کاطریقہ بتادیں کہ وہ نہلا دےاورا گرمرد کوئی نہیں اور چھوٹی لڑکی ہمراہ ہے کہ نہلانے کی طافت رکھتی ہے توبیعورتیں اُسے سکھادیں کہ وہ نہلائے۔ یو ہیں اگرعورت کا انتقال ہوااور کوئی مسلمان عورت نہیں اور کا فرہ عورت موجود ہے تو مرداُس کا فرہ کونسل کی تعلیم کرےاوراُس سے نہلوائے یا چھوٹالڑ کا اس قابل ہو کہ نہلا سکے تو اُسے بتائے اور وہ نہلائے۔ (عالمگیری)

814

سَمَانُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ إلى وہان نہیں ماتا تو تیم کرائیں اور نماز پڑھیں اور نماز کے بعدا گرقبل فن پانی مل است میں اور نماز کے بعدا گرقبل فن پانی مل

جائے تو نہلا کرنماز کا اعادہ کریں۔⁽²⁾ (عالمگیری، در مختار)

مَسَعَلَیُ الله عَمْمُ کَرایا جائے اور تیم کرانے والا اجتنابی مشکل (3) کا انتقال ہوا تو اسے نہ مردنہلا سکتا ہے نہ عورت بلکہ تیم کرایا جائے اور تیم کرانے والا اجنبی ہوتو ہاتھ پر کیڑا لیسٹ لے اور کلائیوں پر نظر نہ کرے۔ یو ہیں خنثی مشکل کسی مردیا عورت کو خسل نہیں دے سکتا۔ (4) عالمگیری) خنثی مشکل جھوٹا بچہ ہوتو اُسے مرد بھی نہلا سکتے ہیں اورعورت بھی یو ہیں عکس۔

کافرمسلمان ہوااوراُس کی عورت کافرہ ہے تو اگر کتا ہیہ ہے تہلا سکتی ہے گر بلاضرورت اُس ہے نہلوا نابہت بُر اہے اورا گر مجوسیہ یا کافرمسلمان ہوا اوراُس کی عورت کافرہ ہے تو اگر کتا ہیہ ہے نہلا سکتی ہے گر بلاضرورت اُس ہے نہلوا نابہت بُر اہے اورا گر مجوسیہ یا بت پرست ہے اوراُس کے مرنے کے بعد مسلمان ہوگی تو نہلا سکتی ہے بشر طیکہ ذکاح میں باقی ہو ورنہ ہیں اور ذکاح میں باقی رہنے کی صورت یہ ہے کہ اگر سلطنتِ اسلامی میں ہے تو حاکم اسلام شوہر کے مسلمان ہونے کے بعد عورت پر اسلام پیش کرے، اگر مان لیا فیبها ورنہ فوراُ ذکاح سے نکل جائے گی اور اگر سلطنتِ اسلامی میں نہیں تو اسلام شوہر کے بعد عورت کو تین حیض آنے کا انتظار کیا جائے گا اور دونوں صورتوں میں پھراگر چہ مسلمان ہوجائے شیل حائے گی اور دونوں صورتوں میں پھراگر چہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی اور دونوں صورتوں میں پھراگر چہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی اور دونوں صورتوں میں پھراگر چہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی درجائے گی در دونوں صورتوں میں پھراگر چہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی در دونوں صورتوں میں پھراگر چہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی در دونوں صورتوں میں پھراگر چہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی در دونوں صورتوں میں پھراگر جہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی در دونوں صورتوں میں پھراگر جہ مسلمان ہوجائے شیل درجائے گی در دونوں صورتوں میں پھراگر جہ مسلمان ہوجائے شیل در سے سکتی۔ (5) (درمخارو غیرہ)

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠.
 - 2 المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١١.
 - ایسی لیخن جس میں مردوعورت دونوں کی علامتیں پائی جائیں اور بیٹا بت نہ ہو کہ مرد ہے یا عورت۔
- 4.... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦.
 - 🤿 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧، وغيره .

🥍 تواب نہ ملے گا۔مثلاً کسی کوسکھانے کی نبیت سے میت کونسل دیا واجب ساقط ہوگیا،مگرغسل میت کا ثواب نہ ملے گا، نیزغسل ہوجانے کے لیے بیبھیضرورنہیں کہ نہلانے والامکلّف یا اہل نیت ہو،الہذا نامالغ یا کافر نے نہلا دیاغشل ادا ہوگیا۔ یوہن اگر عورت اجنبیه نے مردکو یا مرد نے عورت کونسل دیاغنسل ادا ہو گیاا گرچهان کونہلا ناجائز نہ تھا۔⁽¹⁾ (درمختار ، ردامختار)

815

سیتان 🔭 🐣 کسی مسلمان کا آ د ھے سے زیادہ دھڑ ملا توغنسل وکفن دیں گےاور جنازہ کی نماز پڑھیں گےاور نماز کے

بعدوہ باقی ٹکڑا بھی ملا تواس پر دوبارہ نماز نہ پڑھیں گےاورآ دھادھڑ ملا تواگراس میں سربھی ہے جب بھی یہی تھم ہےاورا گرسر نہ ہو باطول میں سرسے باؤں تک دہنا ہایاں ایک جانب کا حصہ ملا توان دونوں صورتوں میں ننجسل ہے، نہ گفن، نہ نماز بلکہ ایک کیڑے میں لیٹ کرفن کردیں۔(2)(عالمگیری، درمختار وغیرہا)

ہو،جس سےمسلمان ہونا ثابت ہوتا ہے بامسلمانوں کےمحلّہ میں ملا توغسل دیںاورنماز پڑھیں ورنہ ہیں۔⁽³⁾(عالمگیری)

🚚 الله 룩 🔑 مسلمان مُر دے کا فرمُر دوں میں مل گئے تو اگرختنہ وغیر ہسی علامت سے شناخت کرسکیں تو مسلمانوں کو ځد ا کر کے نسل وکفن د س اورنماز پرهیں اورامتیاز نه ہوتا ہو توغیسل دیں اورنماز میں خاص مسلمانوں کے لیے دُعا کی نبیت کریں · اوراُن میںا گرمسلمان کی تعدادزیادہ ہوتومسلمانوں کےمقبرہ میں فن کریں ورنہ علیحدہ۔(4) (ردالحتار)

مستان کان کے سکا فرمُر دے کے لیے خسل وکفن و ذمن نہیں بلکہ ایک چیتھڑے میں لپیٹ کر تنگ گڑھے میں داب دیں، سیہ بھی جب کریں کہاُس کا کوئی ہم مذہب نہ ہویا اُسے لے نہ جائے ، ورنہ مسلمان ہاتھ نہ لگائے نہاس کے جنازے میں شرکت کرےاوراگر بوجہ قرابت قریبہ شریک ہو تو دُوردُ وررہےاوراگرمسلمان ہی اُس کارشتہ دار ہےاوراس کا ہم مذہب کوئی نہ ہویا لے بیں اور بلحاظ قرابت غسل وکفن فن کرے تو جائز ہے، مگر کسی امر میں سنت کا طریقہ نہ برتے بلکہ نجاست دھونے کی طرح اُس یریانی بہائے اور چیتھڑے میں لپیٹ کر تنگ گڑھے میں دبا دے، پیتھم کا فراصلی کا ہے اور مرتد کا تھم یہ ہے کہ مطلقاً نہ اُسے غسل

- ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في حديث ((كل سبب و نسب منقطع إلاسببي و نسبی))، ج۳، ص۱۰۸.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص٥٩، ١، وغيرهما .

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١٠ ص٩٥.
- ◘ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الحنازة، مطلب في حديث ((كل سبب و نسب منقطع إلاسببي و نسبي))،

ج۳، ص۹۰۹.

تسکان کی جارت نے علی ہور میں کا ممل تھا وہ مرگی اگر بچہ میں جان پڑگئ تھی تو اُسے مسلمانوں کے قبرستان سے علیحدہ وفن کریں اوراس کی پیٹے قبلہ کو کور دیں کہ بچہ کا موضو قبلہ کو ہو،اس لیے کہ بچہ جب پیٹ میں ہوتا ہے تو اُس کا موضو ماں کی پیٹے کی طرف ہوتا ہے۔ (درمختار)

مَسَعَانُهُ ٢٨﴾ ميّت كابدن اگراييا ہوگيا كہ ہاتھ لگانے سے كھال أدهر مے گی، توہاتھ ندلگائيں صرف پانی بہاديں۔(3) (عالمگيری)

سَسَعَانُ 19 ﴾ نہلانے کے بعدا گرنا کان مونھ اور دیگر سورا خوں میں روئی رکھ دیں تو حرج نہیں مگر بہتریہ ہے کہ نہ رکھیں۔(4)(عالمگیری، درمختار وغیر ہما)

سَسَعَانُهُ الله مستَّدَی واڑھی یا سر کے بال میں کتکھا کرنا یا ناخن تراشنا یا کسی جگہ کے بال مونڈنا یا کترنا یا اُ کھاڑنا، ناجائز ومکروہ وتحریمی ہے بلکھ تھم یہ ہے کہ جس حالت پر ہےاُسی حالت میں فن کردیں، ہاں اگر ناخن ٹوٹا ہو تو لے سکتے ہیں اورا گر ناخن یابال تراش لیے تو کفن میں رکھ دیں۔(5) (درمختار، عالمگیری، روالمحتار)

سَسَعَالُهُ اللهِ مِیْت کے دونوں ہاتھ کروٹوں میں رکھیں سینہ پر نہر کھیں کہ یہ کفار کا طریقہ ہے۔ (6) (درمخار) بعض جگہ ناف کے نیچے اُس طرح رکھتے ہیں جیسے نماز کے قیام میں یہ بھی نہ کریں۔

سَسَعَانُ الله بعض جگد دستور ہے کہ عموماً میّت کے نسل کے لیے کورے گھڑے بدھنے (⁷⁾ لاتے ہیں اس کی کچھ ضرورت نہیں، گھر کے استعالی گھڑ ہے لوٹے ہے بھی غسل دے سکتے ہیں اور بعض یہ جہالت کرتے ہیں کغسل کے بعد تو ڈ ڈ التے ہیں، یہ ناجائز دحرام ہے کہ مال ضائع کرنا ہے اور اگر یہ خیال ہو کہ نجس ہو گئے تو یہ بھی فضول بات ہے کہ اولاً تو اُس پر چھینٹیں

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال ان شتمت، ج٣، ص١٥٨.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٠.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٨.
 - 4 المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٤ _ ١٠٥، وغيرهما .
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في القراءة عند الميت، ج٣، ص١٠٤.
 و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٨.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٥.
 - کے نئے مٹکے، لوٹے۔ پھ

نہیں پڑتیں اور پڑیں بھی توراخ ہیہے کہ میت کاغنس نجاست حکمیہ دُورکر نے کے لیے ہے تو مستعمل پانی کی چھینٹیں پڑیں اور مستعمل پانی کی چھینٹیں پڑیں اور مستعمل پانی نجس نہیں، جس طرح زندوں کے وضوو غنسل کا پانی اورا گرفرض کیا جائے کہ نجس پانی کی چھینٹیں پڑیں تو دھوڈ الیں، دھونے سے پاک ہوجا ئیں گے اورا کثر جگہ وہ گھڑے بدھنے مسجدوں میں رکھ دیتے ہیں اگر نیت یہ ہو کہ نمازیوں کو آرام پہنچے گا اورا س کائم دے کو ثواب تو یہ انجھی نیت ہے اور رکھنا بہتر اورا گریہ خیال ہو کہ گھر میں رکھنا نحوست ہے تو یہ زی حماقت اور بعض لوگ گھڑے کا مانی بھنک دیتے ہیں یہ بھی حرام ہے۔

کفن کا بیان کا

مسئلة المستحصيت كوكفن دينا فرض كفاسيه، كفن كے تين درج ہيں۔

(۱) ضرورت (۲) كفايت (۳) سنت

مرد کے لیےسنت تین کیڑے ہیں۔

(۱) لفافه (۲) إزار (۳) قيص

اورعورت کے لیے پانچے۔

تين بياور

(۴) اوڑ هنی (۵) سینه بند

کفن کفایت مرد کے لیے دو کیڑے ہیں۔

(۱) لفافه (۲) إزار

اورعورت کے لیے تین۔

(۱) لفافه (۲) إزار (۳) اورهنی ما

(۱) لفافه (۲) قمیص (۳) اور هنی به

كفن

ضرورت دونوں کے لیے بیر کہ جومتیسرآئے اور کم از کم اتنا تو ہو کہ سارابدن ڈھک جائے۔⁽¹⁾ (درمختار، عالمگیری وغیر ہما)

1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٢_ ١١٦.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦، وغيرهما.

اورآستینیں اس میں نہ ہوں۔مرداورعورت کی کفنی میں فرق ہے،مرد کی کفنی مونڈ ہے پرچیریں اورعورت کے لیے سینہ کی طرف، اوڑھنی تین ہاتھ کی ہونی جا ہیے یعنی ڈیڑھ گز، سینہ بند ببتان سے ناف تک اور بہتر سے ہے کہ ران تک ہو۔ (1) (عالمگیری،ردالحتاروغیرہما)

مسئل سی اور مینار) بعض محتاج کفن ضرورت پر قادر مین ناجائز و مکروہ ہے۔ (2) (درمختار) بعض محتاج کفن ضرورت پر قادر ہوتے ہیں گرکفن مسنون میسر نہیں، وہ کفن مسنون کے لیے لوگوں سے سوال کرتے ہیں بینا جائز ہے کہ سوال بلاضرورت جائز نہیں اور یہاں ضرورت نہیں، البت اگر کفن ضرورت پر بھی قادر نہ ہوں تو بقد رضرورت سوال کریں زیادہ نہیں، ہاں اگر بغیر مانگے مسلمان خود کفن مسنون پورا کردیں تو ان شاء اللہ تعالی پورا ثواب یا کیں گے۔ (3) (فناوی رضویہ)

المستان المحروبي المستان من اختلاف ہوا، كوئى دوكيرُ ول كے ليے كہتا ہے كوئى تين كے ليے تو تين كيرُ ہے ديے جائيں كہ بيد سنت ہے يا يوں كيا جائے كہ اگر مال زيادہ ہے اور وارث كم تو كفنِ سنت ديں اور مال كم ہے وارث زيادہ تو كفنِ كفايت _(4) (جوہرہ وغير ہا)

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص ١٦٠.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص ١١٢، وغيرهما .
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٥.
 - الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٠١٠.
 - ١٣٥ س. "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٥.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٢.
 - و "غنية المتملى"، فصل في الجنائز، ص ٥٨١ _ ٥٨٢.

"جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء ما يستحب من الأكفان، الحديث: ٩٩٦، ج٢، ص٧٠١.

🐉 📶 🕻 کسم یا زعفران کا رنگا ہوا یارٹیم کا کفن مر دکوممنوع ہے اورعورت کے لیے جائز بعنی جو کپڑ ازندگی میں پہن

سكتا ہے،أس كاكفن دياجاسكتا ہےاور جوزندگى ميں ناجائز،أس كاكفن بھى ناجائز۔(1)(عالمگيرى)

ست کے کا دیکا ہوااور رہیمی کفن اسے ناجائز ہے۔(2)(عالمگیری)

ہے۔ ''رعا' یری') مسئلہ کہ ''کسی نے وصیت کی کہ گفن میں اُسے دو کیڑے دیے جائیں تو یہ وصیت جاری نہ کی جائے ، تین کیڑے

دیے جائیں اورا گریہ وصیت کی کہ ہزاررو پے کا گفن دیا جائے تو یہ بھی نافذ نہ ہوگی متوسط درجہ کا دیا جائے۔⁽³⁾ (ردالحتار)

مسئل و کفن میں جتنے کیڑے دیے جاتے ہیں اسٹان و کا بیٹنے گیا وہ بالغ کے تکم میں ہے یعنی بالغ کوگفن میں جتنے کیڑے دیے جاتے ہیں اسے بھی دیے جائیں اور اس سے جھوٹے لڑکے کو ایک کیڑا اور جھوٹی لڑکی کو دو کیڑے دے سکتے ہیں اور لڑکے کو بھی دو کیڑے دیے جائیں تواجھا ہے اور بہتر میہ ہے کہ دونوں کو پوراکفن دیں اگر چہا لیک دن کا بچتے ہو۔ (5) (ردالمختار وغیرہ)

مستان (۱) ہے۔ میت نے اگر کچھ مال جھوڑا تو کفن ای کے مال سے ہونا چاہیے اور مدیون (⁷⁾ ہے تو قرضخو او (⁸⁾ کفن کفایت سے زیادہ کومنع کرسکتا ہے اور منع نہ کیا تو اجازت سمجھی جائے گی۔ (⁹⁾ (ردالمحتار) مگر قرض خواہ کوممانعت کا اس وقت حق

ہے، جب وہ تمام مال دَین میں مستغرق ⁽¹⁰⁾ ہو۔ م<mark>ست کا گا</mark> اس کے دَین ووصیّت ومیراث،ان سب پر کفن مقدم ہے اور دَین وصیت پر اور وصیت میراث پر۔⁽¹¹⁾ (جو ہرہ)

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦١.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٢.
- ۔۔۔۔۔ حد شہوت لڑکوں میں بیر کہ اس کا دلعورتوں کی طرف رغبت کرے اورلڑ کی میں بیر کہ اسے دیکھ کرم ردکواس کی طرف میلان پیدا ہواوراس کاانداز ولڑکوں میں بارہ سال اورلڑ کیوں میں نوبرس ہے۔۲امنہ
 - "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٧، وغيره .
 - 6 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، الجزء الأول، ص١٣٥.
 - **1**..... لعنى مقروض ____ والا__
 - € "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٤، وغيره.
 - 🕡 یعنی قرض میں گھر اہوا۔
 - 🕕 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الحنائز، ص١٣٤.

کی مسئ ایک است کے مال نہ چھوڑا تو کفن اس کے ذمہ ہے جس کے ذمہ زندگی میں نفقہ تھااورا گرکوئی ایسانہیں جس پر نفقه واجب ہوتا یا ہے مگر نادار ہے تو بیت المال سے دیا جائے اور بیت المال بھی وہاں نہ ہو، جیسے یہاں ہندوستان میں تو وہاں کے مسلمانوں برکفن دینا فرض ہے،اگرمعلوم تھااور نہ دیا تو سب گنہگار ہوں گےا گران لوگوں کے بیاس بھی نہیں تو ایک کیڑے کی قدراورلوگول <u>سے</u>سوال کرلیں۔⁽¹⁾ (جوہرہ،درمختار)

مَسْعَلُ اللّٰ ﴾ عورت نے اگر چہ مال چھوڑا اُس کا کفن شوہر کے ذمہ ہے بشرطیکہ موت کے وقت کوئی ایسی بات نہ یائی گئی جس سےعورت کا نفقہ شوہر پر سے ساقط ہو جاتا، اگر شوہر مرا اور اس کی عورت مالدار ہے، جب بھی عورت پر گفن واجب نہیں ۔⁽²⁾(عالمگیری، درمختار وغیر ہما)

سَسَالُهُ ١٥ ﴾ يه جو كها گيا كه فلال پركفن واجب ہے اس سے مراد كفنِ شرى ہے۔ يو ہيں باقی سامانِ جمهيز مثلاً خوشبو اورغسال اور لے جانے والوں کی اُجرت اور دفن کےمصارف،سب میں شرعی مقدار مراد ہے۔ باقی اور باتیں اگر میّت کے مال سے کی گئیں اور ورثہ بالغ ہوں اور سب وارثوں نے اجازت بھی دے دی ہوتو جائز ہے، ورنہ خرچ کرنے والے کے ذمہ ہے۔ ((روالحمار)

سَتَانُ اللَّهِ ﴿ كُفْنَ كَهِ لِيهِ وَالْ كُرلائِ اللَّهِ مِينَ سَهِ بَجُهِنَ كُرِ مِا تُواكُّر معلوم ہے كہ بيفلاں نے دیا ہے تو أسے واپس کردیں، ورنہ دوسرے محتاج کے گفن میں صرف کردیں، یہ بھی نہ ہو تو تصدق کردیں۔(4) (درمختار)

<u> مسئالہ کا ﷺ</u> میت ایس جگہ ہے کہ وہاں صرف ایک شخص ہے اوراُس کے پاس صرف ایک ہی کیڑا ہے تو اُس پر بیہ ضرور نہیں کہاہیے کیڑے کا کفن کردے۔(5) (درمختار)

سَسَانُ ١٨﴾ ﴿ كُفْنِ بِهِنَا نِهَ كَاطِرِيقِه بِيبَ كَهُميّت كُونْسل دينے كے بعد بدن كسى ياك كپڑے ہے آ ہتہ يونچھ ليس كه کفن تر نه ہواور کفن کوایک یا تین یا یا پنچ یاسات بار دھونی دے لیں اس ہے زیادہ نہیں ، پھر کفن بوں بچھائیں کہ پہلے بڑی جا در پھر

- 1 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٤.
- و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٨. ١٢٠.١.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦١. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كفن الزوجة على الزوج، ج٣، ص١١٩.
 - ③ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كفن الزوجة على الزوج، ج٣، ص١١٩.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٠.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الحنازة، ج٣، ص ١٢٠.

تہبند پھر کفنی پھرمیّت کواس پرلٹا کیں اور کفنی پہنا کیں اور داڑھی اور تمام بدن پرخوشبوملیں اور مواضع ہودیعنی ماتھے، ناک، ہاتھو، گھٹے، قدم پرکافورلگا کیں پھر ازار یعنی تہبند پیٹر پہلے با کیں جانب سے پھر دہنی طرف سے پھر لفافہ لیپیٹیں پہلے با کیں طرف سے پھر دہنی طرف سے پھر دہنی طرف سے بھر لفافہ لیپیٹیں پہلے با کیں طرف سے پھر دہنی طرف سے تاکہ دہنااو پر ہے اور سراور پاؤں کی طرف باندھ دیں کہ اُڑنے کا اندیشہ ندر ہے، عورت کو کفنی پہنا کر اُس کے بال کے دو ھے کر کے گفنی کے اوپر سینہ پر ڈالدیں اور اوڑھنی نصف پشت کے بنچے سے بچھا کر سر پر لا کر موقھ پر مثل نقاب ڈال دیں کہ سینہ پر رہے کہ اُس کا طول نصف پشت سے سینہ تک ہے اور عرض ایک کان کی کو سے دوسر سے کان کی کو تک ہے اور یہ جولوگ کیا کرتے ہیں کہ درندگی کی طرح اُر ٹھاتے ہیں میمض بچا وخلاف سِنت ہے پھر بدستور از ار ولفا فہ لیٹیٹیں پھر سب کے اُوپر سینہ بند بالائے بیتان سے ران تک لاکر باندھیں۔ (1) (عالمگیری، درمختار وغیر ہما)

مرد کے بدن پرالی خوشبولگا ناجا ئرنہیں جس میں زعفران کی آمیزش ہوعورت کے لیے جائز ہے، جس نے احرام باندھاہے اُس کے بدن پر بھی خوشبولگا کیں اوراُس کا مونھ اور سر گفن سے چھپایا جائے۔(2) (عالمگیری وغیرہ)

ست کی اور تقسیم ہوگیا تو ور شد کے ذمہ کفن چوری گیا اور لاش ابھی تازہ ہے تو پھر کفن دیا جائے اگر میت کا مال بدستور ہے تو اس سے اور تقسیم ہوگیا تو ور شد کے ذمہ کفن دینا ہے، وصیت یا قرض میں دیا گیا تو ان لوگوں پڑ ہیں اور اگر گل تر کہ دَین میں مستخرق ہے اور قرض خوا ہوں نے اب تک قبضہ نہ کیا ہو تو اسی مال سے دیں اور قبضہ کر لیا تو اُن سے واپس نہ لیس گے، بلکہ گفن اُس کے ذمہ ہے کہ مال نہ ہونے کی صورت میں جس کے ذمہ ہوتا ہے اور اگر صورت فیکورہ میں لاش پھٹ گئ تو کفن مسنون کی حاجت نہیں ایک کیڑا کا فی ہے۔ (3) (عالمگیری، در مختار)

مسئل السندرار نے تو دینے والا مالک ہے جوچا ہے کرے۔ (۱) (عالمگیری)

مسئلہ ضرور ہیں: ہندوستان میں عام رواج ہے کہ گفنِ مسنون کے علاوہ او پرسے ایک چاوراُڑھاتے ہیں وہ تکیہ داریا کسی مسکین پرتصدق کرتے ہیں اور ایک جانماز ہوتی ہے جس پر امام جنازہ کی نماز پڑھا تا ہے وہ بھی تصدق کر دیتے ہیں،اگر بیہ چاور وجانمازمیّت کے مال سے نہ ہوں بلکہ کسی نے اپنی طرف سے دیا ہے (اور عادةً وہی دیتا ہے جس نے کفن دیا بلکہ کفن کے

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائر، الفصل الثالث، ج١، ص ١٦١.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٦، وغيرهما.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦١.
 - 3 المرجع السابق.
- 4..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١٠ص٢٦.

لیے جو کیڑ الایا جاتا ہے وہ ای انداز سے لایا جاتا ہے جس میں بیدونوں بھی ہوجائیں) جب تو ظاہر ہے کہ اس کی اجازت ہو اور اس میں کوئی حرج نہیں اور اگرمیت کے مال ہے ہے تو دوصور تیں ہیں، ایک ہی کہ ورشب بالغ ہوں اور سب کی اجازت ہو، جب بھی جائز ہے اور اگر اجازت نہ دی تو جس نے میت کے مال سے مذکا یا اور اتصدق کیا اس کے ذمہ یہ دونوں چزیں میں بعنی ان میں جو قیمت صرف ہوئی ترکہ میں شار کی جائے گی اور وہ قیمت خرچ کرنے والا اپنے پاس سے دےگا، دوسری صورت ہی کہ دوشری کی ایا بعض نابالغ ہیں تو اب وہ دونوں چزیں ترکہ سے ہرگز نہیں دی جاسکتیں، اگر چاس نابالغ نے اجازت بھی دیدی ہوکہ نابالغ کے مال کوصرف کر لینا حرام ہے۔ لوٹے گھڑے ہوتے ہوئے خاص میت کے نہلا نے کے ال خرید کو تو اس میں بہی تفصیل ہے کہ اپنے مال خرید کو تو اس میں بہی تفصیل ہے کہ اپنے مال خرید کو تو اس میں بہی تفصیل ہے کہ اپنے مال سے جو چا ہے خرج کرے اور میت کو تو اب پہنچا کے اور میت کے مال سے یہ مصارف میں بھی بہی تفصیل ہے کہ اپنے مال میں اور سب کی اجازت ہو ور ذہیں میں دھیت کے رسکتا ہے۔ ایک صورت اور بھی ہے کہ میت نے وصیت کی ہوتو کہ موال اگر نے کے بعد جو بچے اس کی تہائی میں دھیت جاری ہوگی۔ اکثر لوگ اس سے عافل ہیں یا ناواقف کہ اس تھم کے تمام مصارف کر لینے کے بعد اب جو باتی رہتا ہے اس کی تہائی میں دھیت جاری ہوگی۔ اکثر لوگ اس سے عافل ہیں یا ناواقف کہ اس تھم کے تمام مصارف کر لینے کے بعد اب جو باتی رہتا ہے اس کے تو کی بینہ تھے کہ تیجہ وغیرہ وکرے کیا جاتا ہے کہ یہ تو ایومال تو اب ہت میں اور شرح کرے گا جو ناب میں صرف کیا جاتا ہے کہ یہ تو ایومال تو اب سے کوئی اپنے مال سے کہ کی جو تو کہ کی جو وہ بابی ہو بلکہ ناجائز طور پر جو ان میں صرف کیا جاتا ہے کہ یہ تو ایومال تو اس سے کوئی اپنے مال سے کہ کیا جاتا ہے کہ یہ تو ایومال تو اس سے کوئی اپنے اس کی بو کہ اس سے کوئی اپنے تا ہے۔ اس کے کی بیا جاتا ہے کہ یہ تو ایومال تو اس سے کوئی اپنے اس کے کی بیا جاتا ہے۔ کوئی اپنے اس کے کی بیا جاتا ہے۔ کوئی اپنے کا سے کی کیا جاتا ہے۔ کوئی اپنے کیا کہ کوئی اپنے کہ کیا ہو کہ کیا جو کیا کیا کہ کیا ہو کہ کیا کوئی اپنے کہ کیا ہو کہ کیا جو کیا کہ کیا کہ کوئی اپنے کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کوئی اندے نہیں۔

822

چنازہ لے چلنے کابیان

مسئان الله تعالى على در المرسلين عبادت ہے، ہر خص کو جا ہیے کہ عبادت میں کوتا ہی نہ کرے اور حضور سید المرسلین صلی الله تعالى عنہ عنہ معاذر ضی الله تعالى عنہ کا جناز واٹھا ہا۔ (1) (جو ہر ہ)

سَسَعَانُ کُونِ اللّٰهِ سنّت یہ ہے کہ چار شخص جنازہ اٹھا ئیں ، ایک ایک پایہ ایک شخص لے اور اگر صرف دو شخصوں نے جنازہ اٹھایا ،ایک سر ہانے اور ایک پائنتی تو بلاضرورت مکروہ ہے اور ضرورت سے ہومثلاً جگہ تنگ ہے تو حرج نہیں۔(²⁾ (عالمگیری)

مستان سنت بہتے کہ یکے بعد دیگر ہے جاروں پایوں کو کندھادے اور ہر باردس دیں قدم چلے اور پوری سنت بیر کہ پہلے دہنے سر ہانے کندھادے پھر دہنی پائنتی پھر بائیں سر ہانے پھر بائیں پائنتی اور دس دس قدم چلے تو گل چالیس قدم ہوئے کہ

- 1 "الجو هرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣٩.
- 🧣 👂 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١٠ ص١٦٢.

🤏 حدیث میں ہے،''جو**چالیس قد**م جنازہ لے چلے اس کے حالیس کبیرہ گناہ مٹادیے جائیں گے۔'' نیز حدیث میں ہے،''جو

جنازہ کے چاروں یا بول کو کندھادے،اللہ تعالیٰ اس کی حتمی مغفرت فر مادےگا۔'' (1) (جوہرہ،عالمگیری، درمختار)

مستان کی جنازہ لے چلنے میں جاریائی کو ہاتھ سے پکڑ کرمونڈ ھے پرر کھے،اسباب کی طرح گردن یا پیٹھ برلا دنا مکروہ

ہے، چویا پیر جنازہ لا دنابھی مکروہ ہے۔ ⁽²⁾ (عالمگیری، غنیہ ، درمختار) ٹھیلے پر لا دنے کا بھی یہی تھم ہے۔

سَسَانُ ۵ ﴾ جھوٹا بیشرخواریا ابھی دُود ھے جھوڑا ہویااس سے کچھ بڑا،اس کواگرایک شخص ہاتھ براٹھا کر لے چلے تو

حرج نہیں اور کیے بعد دیگر بےلوگ ہاتھوں ہاتھ لیتے رہیں اورا گرکوئی شخص سواری پر ہواورا سے جھوٹے جنازہ کو ہاتھ پر لیے ہو،

جب بھی حرج نہیں اوراس سے بڑا مردہ ہو تو چاریائی پر لے جائیں۔(3) (غنیہ ،عالمگیری وغیر ہما)

سَسَالُ اللَّهِ جَنَازُهُ معتدل تیزی ہے لے جائیں مگر نہاس طرح کہ میّت کو جھٹکا لگے اور ساتھ جانے والوں کے لیے انضل ہیہے کہ جنازہ سے بیچھے چلیں، دہنے بائیں نہ چلیں اورا گرکوئی آ گے چلے تواسے چاہیے کہاتی دوررہے کہ ساتھیوں میں نہ شار کیا جائے اور سب کے سب آ گے ہول تو مکروہ ہے۔ (4) (عالمگیری وغیرہ)

سَسَانُ کی ہے۔ جنازہ کے ساتھ پیدل چلنا افضل ہے اور سواری پر ہوتو آگے چلنا مکروہ اور آگے ہوتو جنازہ ہے دور ہو۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری،صغیری)

سَسَعًا الله الله عورتوں کو جنازہ کے ساتھ جانا ناجائز وممنوع ہے اور نوحہ کرنے والی ساتھ میں ہو تو اسے تختی سے منع کیا جائے ،اگر نہ مانے تواس کی وجہ سے جناز ہ کے ساتھ جانا نہ جیموڑا جائے کہاس کے ناجائز فعل سے یہ کیوں سُنت ترک کرے، بلکہ دل سےاسے بُراجانے اورشر یک ہو۔⁽⁶⁾(درمختار صغیری) [•]

- 1 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣٩.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الحنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٥٨ _ ١٥٩.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٩٥.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١٠ ص١٦٢. و "غنية المتملي، فصل في الجنائز، ص٩٢٥. وغيرهما
- ◘..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢، وغيره .
 - 5 المرجع السابق، و "صغيرى"، فصل في الحنائز، ص٢٩٢.
 - 6 "صغيرى "، فصل في الجنائز، ص٢٩٣.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٦٦١.

بَيْنَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَازِے کے پیچھے ہوں اور مردکو بیاندیشہ ہو کہ پیچھے چلنے میں عورتوں سے اختلاط ہوگا یاان میں

کوئی نو حد کرنے والی ہو تو ان صور توں میں مردکو آگے چینا بہتر ہے۔(1) (درمختار ، ردامختار)

مسئلہ 🕩 🐣 جنازہ لے چلنے میں سر ہانا آ گے ہونا چاہیے اور جنازہ کے ساتھ آ گ لے جانے کی ممانعت ہے۔ (²⁾ (عالمگیری)

مستان ال ج جنازہ کے ساتھ چلنے والوں کوسکوت کی حالت میں ہونا چاہیے۔موت اورا حوال واہوال قبر کو پیش نظر رکھیں ، ونيا كي باتين نه كرين نهنسين، حضرت عبدالله بن مسعود رضي الله تعالى عنه نه اليصخص كو جناز ه كے ساتھ مبنتے و يكھا ، فر مايا: ' ثو جناز ه میں ہنستا ہے، تجھ ہے بھی کلام نہ کروں گا۔''اور ذکر کرنا چاہیں تو دل میں کریں اور بلحاظ حال زمانہ اب علمانے ذکر جبر کی بھی اجازت دی ہے۔⁽³⁾ (صغیری، درمختار وغیر ہما)

سَسَعَانُ اللَّهِ جَنَازُه جَبِ تَكَ رَكُها نه جائے بیٹھنا مکروہ ہے اور رکھنے کے بعد بےضرورت کھڑا نہ رہے اورا گرلوگ بیٹھے ہوں اور نماز کے لیے وہاں جناز ولا یا گیا تو جب تک رکھانہ جائے کھڑے نہ ہوں۔ یو ہیں اگر کسی جگہ بیٹھے ہوں اور وہاں سے جناز ہ گزرا تو کھڑا ہونا ضرورنہیں ، ہاں جو تخص ساتھ جانا جا ہتا ہے وہ اٹھے اور جائے ، جب جناز ہ رکھا جائے تو یوں نہر تھیں کہ

قبلہ کو یا وَل ہوں یاسر بلکہ آٹر ارکھیں کہ دہنی کروٹ قبلہ کوہو۔ (⁴⁾ (عالمگیری ، درمختار)

مگر جوثواب جنازہ لے جلنے پرحدیث میں بیان ہوا،اسے نہ ملے گا کہاس نے توبدلہ لےلیا۔

سیتان ۱۳ 💨 میّت اگر بڑوی یارشتہ داریا کوئی نیک شخص ہو تو اس کے جنازہ کے ساتھ جانانفل نماز بڑھنے سے افضل

 $(3)^{(6)}(3)^{(6)}$

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، في حمل الميت، ج٣، ص١٦٢.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.
 - 3 "صغيرى "، فصل في الجنائز، ص ٢٩٢.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٣.

- و "الفتاوي الرضوية"، ج٩، ص١٤٠.
- ◘..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١٠ ص١٦٢. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص ١٦٠.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.
 - 🕳 🕳 المرجع السابق.

اجازت لے کروایس ہوسکتا ہےاور ڈن کے بعداولیا ہے اجازت کی ضرورت نہیں۔(1)(عالمگیری)

نماز جنازه کا بیان

مَسِيَّا لَهُ السُّهُ مَمازِ جناز ہ فرض کفایہ ہے کہ ایک نے بھی پڑھ لی تو سب بری الذ مہ ہو گئے ، ور نہ جس جس کوخر بینچی تھی اور نہ

یڑھی گئچگار ہوا۔⁽²⁾ (عامهٔ کتب) سکی فرضیت کا جوا نکار کرے کا فرہے۔

مسئالی کا اس کے لیے جماعت شرطنہیں ،ایک شخص بھی پڑھ لے فرض ادا ہو گیا۔⁽³⁾ (عالمگیری)

مسیقانی سے نماز جنازہ واجب ہونے کے لیے وہی شرائط ہیں جواورنماز وں کے لیے ہیں یعنی

- (۱) قادر
- (٢) بالغ
- (۳) عاقل
- (۲) مسلمان ہونا، ایک بات اس میں زیادہ ہے یعنی اس کی موت کی خبر ہونا۔ (۱) (ردالحتار)

مَستَلاَ اللَّهِ ﴾ نما نے جنازہ میں دوطرح کی شرطیں ہیں،ایک مصتّی کے متعلق دوسری میّت کے متعلق مصتّی کے لحاظ سے تو وہی شرطیں ہیں جومطلق نماز کی ہیں یعنی

- (۱) مصلّی کانجاست حکمیه وهیقیه سے پاک ہونا، نیزاس کے کیڑے اور جگد کا یاک ہونا
 - (۲) سترعورت
 - (٣) قىلەكومونىي ہونا
- (4) نیت،اس میں وقت شرطنہیں اور تکبیرتح بمدر کن ہے شرطنہیں جیسا پہلے ذکر ہوا۔ (5) (ردالمختار وغیرہ)
 - ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٥.
 - 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٠.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٢.

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١٠ ص١٦٢.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص ١٢١.
 - 🤿 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص ١٢١، وغيره .

بعض لوگ جوتا پہنے اور بہت لوگ جوتے پر کھڑے ہو کرنماز جنازہ پڑھتے ہیں، اگر جوتا پہنے پڑھی تو جوتا اوراس کے نیچے کی زمین دونوں کا پاک ہونا ضروری ہے، بقدر مانع نجاست ہوگی تو اس کی نماز نہ ہوگی اور جوتے پر کھڑے ہو کر پڑھی تو

یپ و رین روروں ، پر سے ارب روروں جوتے کا یاک ہونا ⁽¹⁾ ضروری ہے۔

مَسِعَلَا ﴾ جنازہ طیار نے جانتا ہے کہ وضویاغسل کرے گا تو نماز ہوجائے گی تیم کر کے پڑھے۔اس کی تفصیل باب

نیم میں مذکور ہو گی۔⁽²⁾

سَسَعَانُ اللّهِ المام طاہر نہ تھا تو نماز پھر پڑھیں،اگر چہ مقتدی طاہر ہوں کہ جب امام کی نہ ہوئی کسی کی نہ ہوئی اوراگرامام طاہر تھا اور مقتدی بلا طہارت تو اعادہ نہ کی جائے کہ اگر چہ مقتدیوں کی نہ ہوئی گرامام کی تو ہوگئ۔ یو ہیں اگر عورت نے نماز پڑھائی اور مردوں نے اس کی اقتدا کی تو لوٹائی نہ جائے کہ اگر چہ مردوں کی اقتدا کی تحروت کی نماز تو ہوگئ، وہی کافی ہے اور نماز جازہ کی تکرار جائز نہیں۔(3) (درمختار)

سَسَعَانُهُ کی ﴾ نماز جنازه سواری پر پڑھی تو نہ ہوئی۔امام کا بالغ ہونا شرط ہے خواہ امام مرد ہو یاعورت، نابالغ نے نماز پڑھائی تو نہ ہوئی۔⁽⁴⁾(درمختار،عالمگیری)

نماز جناز ہ میں میت ہے تعلق رکھنےوالی چند شرطیں ہیں۔

(۱) ميّت كامسلمان بونا ـ ⁽⁵⁾

سَمَعُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَمِرادوه ہے جوزندہ پیدا ہوا پھر مرگیا، تو اگر مردہ پیدا ہوا بلکہ اگر نصف ہے کم باہر نکلا اس وقت زندہ تھااورا کثر باہر نکلنے سے پیشتر مرگیا تو اُس کی بھی نمازنہ پڑھی جائے اور تفصیل آتی ہے۔

<u>مسئانہ ہے۔</u> جھوٹے بچے کے ماں باپ دونوں مسلمان ہوں یا ایک تو وہ مسلمان ہے، اُس کی نماز پڑھی جائے اور دونوں کا فرییں تونہیں۔⁽⁶⁾(درمختاروغیرہ)

مستانی و اسکان کودارالحرب میں جھوٹا بچہ تنہا ملا اور اُس نے اُٹھالیا پھرمسلمان کے بیہاں مرا، تو اُس کی نماز بڑھی

ں امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن فرماتے میں:احتیاط یمی ہے کہ جوتاا تارکراس پر پاؤں رکھ کرنماز پڑھی جائے کہ زمین یا تلاا گرنا پاک ہوتو نماز میں خلل ندآئے۔(فاوی رضوبیہ 9ص ۱۸۸)۔..علمیہ

المساوية و المستار"، كتاب الطهارة، باب التيمم، ج ١، ص ٣٩٤)....علميه الدين الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص ٢٢٢.

..... المرجع السابق، و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٤.

الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢١.

يَثِي شُ: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلام)) €

عالمُكيري) جائے۔⁽¹⁾(عالمُكيري)

مسئان النجاس برمسلمان کی نماز پڑھی جائے اگر چیوہ کیساہی گنہگارومر تلب کبائر ہومگر چندنتم کےلوگ ہیں کہ اُن کی نماز نہیں۔

- (۱) باغی جوامام برحق پرناحق خروج کرے اور اُسی بغاوت میں مارا جائے۔
- (٢) و اكوكدو اكديس مارا كياندأن كونسل دياجائے ندأن كى نماز پڑھى جائے ، مگر جبكه بادشاد اسلام نے أن برقابو پايا

اور آل کیا تو نماز ونسل ہے یاوہ نہ پکڑے گئے نہ مارے گئے بلکہ ویسے ہی مرے تو بھی غسل ونماز ہے۔

(m) جولوگ ناحق پاسداری ہے لڑیں بلکہ جواُن کا تماشہ و کیھر ہے تھے اور پھر آ کر لگا اور مر گئے تو ان کی بھی نماز

نہیں، ہاں اُ نکے متفرق ہونے کے بعد مرے تو نماز ہے۔

- (۴) جس نے کئ شخص گلا گھونٹ کر مار ڈالے۔
- (۵) شہر میں رات کوہتھیار لے کرلوٹ مار کریں وہ بھی ڈاکو ہیں ،اس حالت میں مارے جائیں تو اُن کی بھی نماز نہ پڑھی جائے۔
 - (۲) جس نے اپنی مال پایا ہے کو مار ڈالا ، اُس کی بھی نماز نہیں۔
 - (۷) جوکسی کامال چیین ربا تضااوراس حالت میں مارا گیا، اُس کی بھی نماز نہیں ۔ (2) (عالمگیری، درمختار وغیر ہما)

سَسَعُ الله کی نماز پڑھی جائے گی حالانکہ یہ بہت بڑا گناہ ہے، مگر اُس کے جنازہ کی نماز پڑھی جائے گی اگر چہ قصداً خودکشی کی ہو، جو شخص رجم کیا گیایا قصاص میں مارا گیا، اُسے نسل دیں گےاورنماز پڑھیں گے۔⁽³⁾ (عالمگیری، درمختار وغیر ہما)

(۲) میت کے بدن وکفن کا پاک ہونا۔ (⁴⁾

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٢٥، ١٢٨.
 و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣، وغيرهما.
 - €..... "الفتاوي الهندية"، المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٧، وغيرهما.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٢.
 - 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٢.

نازه کابیان کوستان

کی است کی است کی است کی این از پڑھی گئی نہ ہوئی ، اُسے عنسل دے کر پھر پڑھیں اورا گرقبر میں رکھ بچے ، مگرمٹی ابھی نہیں ڈالی گئ تو قبر سے نکالیں اور عنسل دے کرنماز پڑھیں اور مٹی دے بچے تو اب نہیں نکال سکتے ، لہذااب اُس کی قبر پرنماز پڑھیں کہ پہلی نماز

نه ہوئی تھی کہ بغیر عُسل ہوئی تھی اوراب چونکہ عُسل ناممکن ہے لہندااب ہوجائے گی۔⁽¹⁾ (ردامختاروغیرہ)

- (۳) جنازه کا و ہاں موجود ہونا لینی گل یا اکثر یا نصف مع سر کے موجود ہونا، لہذا غائب کی نماز نہیں ہوسکتی۔⁽²⁾
 - (٣) جنازه زمين بررگھا ہونايا ہاتھ بر ہو گر قريب ہو، اگر جانوروغيره برلدا ہونماز نہ ہوگی۔(3)
 - (۵) جنازه مصلّی کے آ گِ قبلہ کو ہونا، اگر مصلّی کے پیچیے ہوگا نماز سیح نہ ہوگی۔ (⁽⁴⁾

مَسِعًا ﴾ اگر جنازہ الثار کھا یعنی امام کے وہنے میت کا قدم ہوتو نماز ہوجائے گی ، مگر قصداً ایبا کیا تو گنہگار ہوئے۔(⁵⁾ (درمختار)

- (٢) ميت كاوه حصهُ بدن جس كاچهانا فرض ہے يُھيا ہونا۔(٦)
- (2) میّت امام کے محاذی ہولیعنی اگرایک میّت ہے تو اُس کا کوئی هسهُ بدن امام کے محاذی ہواور چند ہوں تو کسی ایک کاھسۂ بدن امام کے محاذی ہونا کافی ہے۔ (8) (ردا کمتار)

مَسْعَلِيُّهُ كِلْ ﴾ نماز جنازه مين دوركن بين:

- (۱) جارباراللدا كبركهنا
 - (۲) قیام
- "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص ١٢١، وغيره.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض الكفاية بفعل الصبي،

ج۳، ص۱۲۳.

- 3 المرجع السابق.
- ∙ المرجع السابق.
- 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٤.
 - 6 المرجع السابق.
- ١٢١. "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢١.
- 🚙 🔞 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الحنازة، مطلب: هل يسقط فرض الكفاية بفعل الصبي، ج٣، ص١٢٣.

بغیر عذر بیٹھ کریاسواری پرنماز جنازہ پڑھی، نہ ہوئی اور اگر ولی یا امام بیار تھااس نے بیٹھ کر پڑھائی اور مقتدیوں نے کھڑے ہوکر پڑھی ہوگئی۔⁽¹⁾ (درمختار، ردالحتار)

مَسِعَلَةُ ١٨﴾ نماز جنازه مين تين چيزين سنت مؤكده ہيں:

(۱) الله عزوجل کی حمد و شا۔ (۲) نبی صلی الله تعالی علیه وسلم پر درود۔ (۳) میت کے لیے دُعا۔

نماز جنازہ کا طریقہ یہ ہے کہ کان تک ہاتھا گھا کراللہ اکبر کہتا ہوا ہاتھ نیچ لائے اور ناف کے نیچ حسب وستور باندھ لے اور ثنا پڑھے، یعنی سُبُ طِنک اللّٰہ مَّ وَبِحَ مُدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَتَعَالَیٰ جَدُّکَ وَجَلَّ وَسَور باندھ لے اور ثنا پڑھے، یعنی سُبُ طِنک اللّٰہ عَنُوکُ کَ ۔ پھر بغیر ہاتھا تھائے اللہ اکبر کہا ور در ووشریف پڑھے بہتر وہ دُرود ہے جونماز میں پڑھا جا تا ہے اور کوئی دوسرا پڑھا جب بھی حرج نہیں ، پھر اللہ اکبر کہہ کراپنے اور میت اور تمام مونین ومومنات کے لیے دُعاکرے اور بہتر یہ کہ وہ دُعا پڑھے جواحادیث میں وارد ہیں اور ما ثور دُعاکیں اگراچھی طرح نہ پڑھ سکے توجو دُعا چاہے پڑھے، مگروہ دُعا ایسی ہوکہ اُمور آخرت سے متعلق ہو۔ (2) (جو ہرہ نیرہ ، عالمگیری ، در مختار وغیر ہا)

بعض ما توردُ عائيس پيرېين:

(۱) اَللَّهُ مَّ اغْفِرُلِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيُرِنَا وَذَكَرِنَا وَانْثَانَا اَللَّهُمَّ مَنُ اَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَتَوَقَّهُ عَلَى الْإِيُمَانِ اللَّهُمَّ لَا تَحُرِمُنَا اَجُرَهُ (ها) (3) وَلا اللَّهُمَّ لَا تَحُرِمُنَا اَجُرَهُ (ها) (3) وَلا تَفُيْنَا بَعُدَهُ (ها) . (4)

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الحنازة، مطلب: هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٢٤.
 - 2 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٧.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص ٢٤، ١٢٨.

🕄 ان دعاؤں میں عورتوں کیلئے جہاں صینے کا اختلاف ہے اسے ہلال کے اوپر کھودیا ہے۔ ۱۲منہ 😸 جبکہ ہم نے اسے ہلال میں سامنے کھودیا ہے۔ م

واد احمد وابو داود و الترمذي والنسائي وابن حبان والحاكم عن ابي هريرة و احمد وابو يعلى والبيهقي وسعيد بن
 منصور في سننه عن ابي قتادة رضى الله تعالىٰ عنهما. ١٢منه

"المستدرك" للحاكم، كتاب الجنائز، باب أدعية صلاة الجنازة، الحديث: ١٣٦٦، ج١، ص ٦٨٤.

و "عمل اليوم و الليلة" مع "السنن الكبرى" للنسائي، الحديث: ٩١٩، ١٠٩٠، ج٦، ص٢٦٦.

ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! تو بخش دے ہمارے زندہ اور مردہ اور ہمارے حاضر وغائب کواور ہمارے چھوٹے اور ہمارے بڑے کواور ہمارے مرداور عورت کو،اےاللہ(عزوجل)! ہم میں سے تُو جسے زندہ رکھے، اُسے اسلام پر زندہ رکھاور ہم میں سے تُو جس کو وفات دے اُسے ایمان یروفات دے۔اےاللہ (عزوجل)! تو ہمیں اس کے اجرسے محروم ندر کھاور اس کے بعد ہمیں فتنہ میں نیڈال۔۱۲ (٢) اَللَّهُمَّ اغْفِرُلَهُ (لَهَا) وَارُحَمُهُ (هَا) وَعَافِهِ (ها) وَاعْفُ عَنْهُ (هَا) وَاكْرِمُ نُزُلَهُ (هَا) وَوَسِّعُ مُدُخَلَهُ (هَا) وَاغْفُ عَنْهُ (هَا) وَاكْرِمُ نُزُلَهُ (هَا) وَوَالْخُلِمُ (هَا) وَاغْفُ عَنْهُ (هَا) وَاكْرِمُ نُزُلَهُ (هَا) وَالْخُلِمِ وَالْبَرِلُهُ (هَا) وَالْمُلْحِ وَالْبَرَدِوَنَقِّهِ (هَا) مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَصَ مِنَ الدَّنَسِ وَابُدِلْهُ (هَا) وَاغْدُلُهُ (هَا) وَاهُلاَّ خَيْرًا مِّنُ اَهْلِهِ (هَا) وَزَوُجًا خَيْرًا مِّنُ زَوُجِهِ (1) وَادُخِلُهُ (هَا) الْجَنَّةُ وَاعْدُو (هَا) مِنْ عَذَابِ الْقَبُرِ وَمِنْ فِينَةِ الْقَبُرِ وَعَذَابِ النَّارِ. (2)

(٣) ٱللَّهُمَّ عَبُدُكَ (اَمَتَكَ) وَابُنُ (بِنْتُ) اَمَتِكَ يَشُهَدُ (تَشُهَدُ) اَنْ لَّا اِلهُ اللَّا اَنتَ وَحُدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ يَشُهَدُ (تَشُهَدُ) اَنْ لَّا اِلهُ وَابُنُ (بِنْتُ) اَمْتِكَ وَرَسُولُكَ اَصُبَحَ فَقِيْرًا (اَصُبَحَتُ فَقِيْرَةً) اللَّي شَرِيْكَ لَكَ وَ يَشُهَدُ (تَشُهَدُ (تَشُهَدُ) اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُكَ وَرَسُولُكَ اَصُبَحَ فَقِيْرًا (اَصُبَحَتُ فَقِيْرَةً) اللَّي اَلِي اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ

(٣) اَللَّهُمَّ هَـذَا (هـٰـذِه) عَبُـدُکَ ابُـنُ (اَمَتُکَ بِـنْتُ) عَبُدِکَ ابُنُ (بِنْتُ) اَمَتِکَ مَاضٍ فِيُهِ (هَا) حُکُمُکَ خَلَقُتَهُ (هَا) وَلَمُ يَکُ (تَکُ هِیَ) شَيْئًا مَذُکُورًا ﴿ نَزَلَ (نَزَلَتُ) بِکَ وَاَنْتَ خَيْرُ مَنْزُولٍ بَهِ اَللَّهُمَّ كُمُکَ خَلَقُتَهُ (هَا) وَلَمُ يَکُ (تَکُ هِیَ) شَيْئًا مَذُکُورًا ﴿ نَزَلَ (نَزَلَتُ) بِکَ وَاَنْتَ خَيْرُ مَنْزُولٍ بَهِ اَللَّهُمَّ كُومُکَ خَلَقُتهُ (هَا) وَلَمُ يَکُ (تَکُ هِیَ) مُحَمَّدٍ صَلیَّ اللَّهُ تَعَالیٰ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ﴿ وَثَبِّتُهُ (هَا) بِالْقَوْلِ التَّابِتِ لَقَوْدُ التَّابِتِ

^{🗗} یعنی بیالفاظ عورت کے جناز ہرِنہ پڑھے جائیں۔ ۲امنہ

الله تعالىٰ عنه ١٢منه والترمذي والنسائي و ابن ماجه و ابوبكر بن ابي شيبة عن عوف بن مالك الاشجعي رضي الله تعالىٰ عنه ١٢٠منه
 "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب الدعاء للميت في الصلاة، الحديث: ٩٦٣، ص٩٤٦.

ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! اُس کو پخش و ہے اور رحم کر اور عافیت دے اور معاف کر اور عزت کی مہمانی کر اور اس کی جگہ کو کشادہ کر اور اس کو جگہ کو کشادہ کر اور اس کو جگہ کو کشادہ کر اور اس کو گھر کے بدلے میں بہتر گھر پانی اور برف اور اولے ہے دھووے اور اس کو خطاہے پاک کر جہیہا کہ تو نے سفید کپڑے کو میل سے کیا اور اس کو گھر کے بدلے میں بہتر ٹی بی اور اس کو جنت میں داخل کر اور عذاب قبر وفت تیر وعذاب جہم سے محفوظ رکھ ہے 11

③ رواه الحاكم عن ابن عباس رضى الله تعالىٰ عنهما. ٢ امنه

[&]quot;المستدرك" للحاكم، كتاب الجنائز، باب أدعية صلاة الجنازة، الحديث: ١٣٦٩، ج١، ص ٦٨٥.

ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! یہ تیرابندہ ہےاور تیری با ندی کا بیٹا ہے گواہی دیتا ہے کہ تیرے سواکوئی معبود نہیں تو تنہا ہے تیراکوئی شریک نہیں گواہی دیتا ہے کہ تیرے سالہ تعالیٰ علیہ وہلم) تیرے بندے اور سول میں یہ تیری رحمت کا مختاج ہےاور تو اسکے عذا ب سے غنی ہے دنیا اور دنیا والوں سے جُدا ہوا،اگریہ پاک ہے تو تُو اسے پاک وصاف کراوراگر خطاکار ہے تو بخش دے۔اےاللہ (عزوجل)! اس کے اجر سے ہمیں محروم ندر کھاوراس کے بعد ہمیں گراہ ندر کے ا

(۵) اَللَّهُمَّ عَبُدُكَ (اَمَتُكَ) وَابْنُ (بنُتُ) اَمَتِكَ اِحْتَاجَ (جَتُ) اِليٰ رَحُمَتِكَ وَانْتَ غَنِيٌّ عَنُ عَـذَابِهِ (هَـا) إِنْ كَـانَ (كَـانَتُ) مُحُسِنًا (مُحُسِنَةً) فَزِدُ فِي إِحْسَانِهِ (هَا) وَإِنْ كَانَ (كَانَتُ) مُسِيئًا (مُسِيئَةً) $\frac{(2)}{\hat{b}$ رَّهُ عَنُهُ هَا) . \hat{b}

(٢) اَللَّهُمَّ عَبُدُكَ (اَمَتُكَ) وَابْنُ (بنُتُ) عَبُدِكَ كَانَ (كَانَتُ) يَشُهَدُ (تَشُهَدُ) اَنُ لَّا اِللَّهُ اللَّهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُكَ وَرَسُولُكَ صَلَى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طُواَنْتَ اَعْلَمُ به (هَا) مِنَّا إِنْ كَانَ (كَانَتُ) مُحُسِنًا (مُحُسِنَةً) فَزِدُ فِي اِحُسَانِهِ (هَا) وَإِنْ كَانَ (كَانَتُ) مُسِيِّئًا (مُسِيِّئَةً) فَاغُفِرُ لَـهُ (هَا) وَلا تَحُرمُنَا ٱجُرَهُ (هَا) وَ لَا تَفُتِنَّا بَعُدَهُ (هَا) . ⁽³⁾

اس... رواه عن امير المومنين على كرم الله تعالى وجهه. ١٢منه.

"كنز العمال"، كتاب الموت، صلاة الجنائز، الحديث: ٤٢٨٥٧، ج١٥ ص ٢٠٠٤.

ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! بیر تیرابندہ ہے اور تیرے بندہ اور تیری باندی کا بیٹا ہے، اس کے متعلق تیراتھکم نافذ ہے تُو نے اسے پیدا کیا حالانکہ بیقابل ذکر شے ندتھا۔ تیرے یاس آیا توان سب سے بہتر ہے جن کے یاس اوتر اجائے۔اے اللہ حجت کی تواس کو تلقین کراور اس کواس کے نبی محمصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ ملا دےاورقول ثابت پراسے ثابت رکھاس لیے کہ یہ تیری طرف محتاج ہےاورتواس سے عنی ہے بیشہادت دیتاتھا کہاللہ (عزوجل) کے سواکوئی معبودنہیں، پس اسے بخش دیےاور رحم کراوراس کے اجرہے ہم کومحروم نہ کراوراس کے بعد ہمیں فتنہ میں نہ ڈال ۔اےاللہ (عزوجل)!اگریہ یاک ہے تو یاک کراور بدکار ہے تو بخش دے۔۱۲

2 رواه الحاكم عن يزيد بن ركانة رضى الله تعالىٰ عنهما.٢ امنه

"المستدرك" للحاكم، كتاب الجنائز، باب أدعية صلاة الجنازة، الحديث: ١٣٦٨، ج١، ص٥٨٥.

ترجمہ: اے الله (عزومل)! به تیرابندہ ہے اور تیری باندی کا بیٹا ہے، تیری رحمت کا محتاج ہے اور تو اسکے عذاب سے غنی ہے اگر نیکو کارہے تو اس کی خوبی میں زیادہ کراورا گر گنهگار ہے تو درگذرفر ما ۱۲

است رواه ابن حبان عن ابي هريرة رضى الله تعالىٰ عنه. ١٢منه

"الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الجنائز، فصل في الصلاة على الجنازة، الحديث: ٣٠٠٦، ج٥، ص٣٠٠. ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! یہ تیرا بندہ ہے اور تیرے بندہ کا بیٹا ہے، گواہی دیتا تھا کہ اللہ (عزوجل) کے سوا کوئی معبود نہیں اور محرصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تیرے بندہ اور تیرے رسول ہیں اور تُو ہم سے زیادہ اسے جانتا ہے،اگر نیکو کار ہے تو نیکی میں زیادہ کر اوراگر گئنجگار ہے تواہے بخش دے اوراس کے اجرے ہمیں محروم نہ کر اوراس کے بعد فتنہ میں نہ ڈال۔ ۱۲

(٤) اَصُبَحَ (اَصُبَحَتُ) عَبُدُكَ (اَمَتُكَ) هَذَا (هَذِهِ) قَدُ تَخَلَّى (تَخَلَّتُ) عَن الدُّنْيَا وَتَرَكَهَا (تَرَكَتُهَا) لِأَهْلِهَا وَافْتَقَرَ (افْتَقَرَ (افْتَقَرَ (أُلْكَ وَاسْتَغْنَيْتَ عَنْهُ (هَا) وَقَد كَانَ (كَانَتُ) يَشُهَدُ (تَشُهَدُ) اَنُ لَّا اللهَ إِلَّا اللَّهُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُكَ وَرَسُولُكَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ۖ اللَّهُمَّ اغْفِرُلَهُ (هَا) وَتَجَاوَزُ عَنْهُ (هَا) وَٱلۡحِقُهُ (هَا) بِنَبِيّهِ (هَا) صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمُ . ⁽¹⁾

832

(٨) اَللَّهُـمَّ انْـتَ رَبُّهَا وَانْتَ خَلَقْتَهَا وَانْتَ هَدَيْتَهَا لِلْإِسْلامِ ۚ وَانْتَ قَبَضُتَ رُوْحَهَا وَانْتَ اعْلَمُ بسِرَّهَا وَعَلا نِيَّتِهَا جِئْنَا شُفَعَاءَ فَاغُفِرُلَهَا . (2)

(٩) اَللَّهُمَّ اغُفِرُ لِإِخُوانِنَا وَاَخَوَاتِنَا وَاصلِحُ ذَاتَ بَيْنِنَا وَالِّفُ بَيْنَ قُلُوبِنَا اَللَّهُمَّ هَذَا (هَذِهِ) عَبُدُكَ (اَمَتُكَ) فُكَانُ بُنُ فُكَان وَلَا نَعْلَمُ إِلَّا خَيْرًا وَّانُتَ اَعْلَمُ بِهِ (بِهَا) مِنَّا فَاغْفِرُلْنَا وَلَهُ (لَهَا) . (3) (١٠) اَللَّهُ مَّ إِنَّ فُكَانَ بُنَ فُكَان (فُكَانَهُ بِنُتَ فُكَان) فِي ذِمَّتِكَ وَحَبُلٍ جَوَارِكَ فَقِهِ (هَا) مِنُ

❶ رواه ابو يعلى بسند صحيح عن سعيد بن المسيب عن امير المومنين عمر رضي الله تعاليٰ عنه من قوله الحقنا بما قبله من المرفوعات للمناسبته. ١٢ منه

"كنز العمال"، كتاب الموت، صلاة الجنائز، الحديث: ٢٨١٧، ج٥١، ص٩٩.

ترجمہ: آج تیرابیبندہ دنیاسے نکلااور دنیا کواہل دنیا کے لیے چھوڑا۔ تیری طرف محتاج ہےاورتواس سے غنی گواہی دیتا تھا کہاللہ (عزوجل) کے سوا کوئی معبوذ نہیں اور محمصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تیرے بندہ اور رسول ہیں اے اللہ (عزوجل)! تُو اس کو بخش دے اور اس سے درگز رفر مااور اس کواس کے نبی محرصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ لاحق کر دیے۔ ۱۳

2 رواه ابو داود والنسائي والبيهقي عن ابي هريرة رضي الله تعاليٰ عنه.٢٢منه

"سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الدعاء للميت، الحديث: ٣٢٠٠ ج٣، ص٢٨٣.

و "السنن الكبري" للبيهقي، كتاب الجنائز، باب الدعاء في صلاة الجنازة، الحديث: ٦٩٧٦، ج٤، ص٦٨.

ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! تُو اس کارب ہےاورتُو نے اس کو پیدا کیااورتُو نے اس کواسلام کی طرف ہدایت کی اورتُو نے اس کی رُوح کو قبض کیا تُواس کے پوشیدہ اور ظاہر کو جانتا ہے ہم سفارش کے لیے جاضر ہوئے اسیے بخش دے۔

"كنز العمال"، كتاب الموت، صلاة الجنائز، الحديث: ٢٨٣٧، ج١٥، ص ٣٠١.

تر جمہ:اےاللہ(عز وجل)! ہمارے بھائیوں اور بہنوں کو ٹو بخش دےاور ہمارے آپس کی حالت درست کراور ہمارے دلوں میں اُلفت پیدا کردے۔اےاللہ(عزوجل)! یہ تیرابندہ فلاں بن فلاں ہے ہم اس کے متعلق خیر کے سوا کچھنہیں جانتے اور تُو اس کوہم سے زیادہ حانتاہے، تُو ہم کواوراُس کو بخش دے۔ ۱۲ وَّ فِتْنَةِ الْقَبُرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَانُتَ اَهلُ الْوَفَاءِ وَالْحَمُدِ ﴿ اَللَّهُمَّ اغْفِرُلَهُ (هَا) وَارْحَمُهُ (هَا) اِنَّكَ اَنْتَ الْعَفُورُ الرَّحِيْمُ ﴿ . (1)

(١١) اَللَّهُمَّ اَجِرُهَا مِنَ الشَّيُطَانِ وَعَذَابِ الْقَبُرِ ﴿ اَللَّهُمَّ جَافِ الْأَرْضَ عَنُ جَنْبَيْهَا وَصَعِّدُ رُوحُهَا وَلَقَهُم مِنْكَ رَضُوانًا ﴿ . (2)

- (١٢) ٱللَّهُمَّ إِنَّكَ خَلَقُتَنَا وَنَحْنُ عِبَادُكَ ۖ أَنْتَ رَبُّنَا وَ إِلَيْكَ مَعَادُنَا . (١٣)
- (١٣) اَللَّهُمَّ اغْفِرُ لِاَوَّلِنَا والْحِرِنَا وَحَيِّنَا وَهَيِّتِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا وَصَغِيُرِنَا وَكَبِيُرِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا اللَّهُمَّ لَا تَحُرِمُنَا اَجْرَهُ (هَا) وَلَا تَفُتِنَّا بَعُدَهُ (هَا) . (4)

(١٣) اَللَّهُمَّ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيُنَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِينَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ يَا بَدِيْعَ

🕕 رواه ابو داود و ابن ماجه عن واثله بن الاسقع رضي الله تعالىٰ عنه.٢٢منم

"سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الدعاء للميت، الحديث: ٣٢٠٢، ج٣، ص٢٨٣.

ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! فلاں بن فلاں تیرے ذمہ اور تیری حفاظت میں ہے، اس کوفتۂ قبر اور عذاب جہنم سے بچا، تُو و فااور حمد کا اہل ہے اے اللہ (عزوجل)! اس کو بخش اور رحم کر بے شک تو بخشنے والامہر بان ہے۔ ۱۲

است. رواه ابن ماجه عن ابن عمر رضى الله تعالىٰ عنهما. ١٢منه

"سنن ابن ماجه"، كتاب الجنائز، باب ماجاء في إدخال الميت القبر، الحديث: ١٥٥٣، ج٢، ص٢٤٣.

ترجمہ:اےاللہ (عزوجل)!اس کوشیطان سے اور عذا ہے تجبا ہے اللہ زمین کواس کی دونوں کروٹوں سے کشادہ کر دے اوراُس کی رُوح کو بلند کراورا بنی خوشنودی دے۔۱۲

الله تعالى عنه ١٠٠٠ والديلمي في مسند الفردوس عن ابي حاضر رضى الله تعالى عنه ١٠٠٠ممه
 "كنز العمال"، كتاب الموت، صلاة الجنائز، الحديث: ٢٨٤٤، ج١٥، ص ٣٠٢.

ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! تُونے ہم کو پیدا کیااورہم تیرے بندے ہیں، تُو ہمارارب ہےاور تیری ہی طرف ہم کولوشاہے۔١٣

نوٹ: بہارِشر بیت کےمطبوعشنوں میں عن اہی عامو جبدِ فتاو کی رضو بیقدیم وجد بیدونوں میں عن اہی حاصو ہے۔ہم نے بہارِشر بیت میں اسے عن اہی حاضر لکھ دیاہے،کیونکہ بیدونوں کتابت کی غلطیاں معلوم ہوتی ہیں۔

و كيكة: "مسند الفردوس"، الحديث: ٢٠٢٦، ج١، ص٤٩٧. "الاصابة في تمييز الصحابة" للعسقلاني، رقم: ٩٧٤١، ج٧، ص٧٠.

◘..... رواه البغوي عن ابراهيم الاسهلي عن ابيه رضي الله تعالىٰ عنه.١٢منه

"كنز العمال"، كتاب الموت، في الصلاة على الميت، الحديث: ٢٩٢، ج٥١، ص٢٤٨.

ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! بخش دے ہمارےا گلے اور پچھلے کواور ہمارے زندہ ومردہ کواور ہمارے مردہ عورت کواور ہمارے چھوٹے اور بڑے کواور ہمارے حاضروغائب کو۔اےاللہ (عزوجل)!اس کےاجرہے ہمیں محروم نہ کراوراس کے بعد ہمیں فتنہ میں نہ ڈال۔۱۲ السَّموٰتِ وَالْارْضِ يَا ذَاالْجَلالِ وَالْإِكُوامِ إِنِّى اَسْنَالُكَ بِانِّى اَشُهَدُ اَنَّكَ اَنْتَ اللَّهُ الْاَ حَدُ الصَّمَدُ الَّذِى لَمُ يَلِدُ وَلَمْ يُولَدُ وَلَمْ يَكُنُ لَّهُ كُفُوًا اَحَدٌ ٥ اَللَّهُ مَّ إِنِّى اَسْنَلُكَ وَاتَوَجَّهُ اللَّهُ اللْلَهُ اللَّهُ الللللَّهُ اللَّهُ اللللْولِي الللللللللَّ الللْمُ اللَّهُ الللَّا اللللَّه

فاكرہ: نویں دسویں دعاؤں میں اگرمیت كے باپ كانام معلوم نہ ہوتو اُس كى جگہ آدم عليالصاد ة والسلام كے كہوہ سب آدميوں كے باپ بيں اور اگرخودميّت كانام بھى معلوم نہ ہوتو نویں دُعاميں ھلذا عَبُدُكَ يا ھلذِهٖ اَمَتُكَ پرقناعت كرے فلاں بن فلال بایت كوچھوڑ دے اور دسویں میں اُس كى جگہ عَبُدُكَ ھلذَا ياعورت ہوتو اَمَتُكَ ھلذِہٖ كے۔

فَاكده: ميّت كافسق وفجور معلوم ہوتونويں دُعاميں لَا نَعُلَمُ إلَّا خَيْرًا كى جَلَه قَـدُ عَلِمُنَا هِنَهُ خَيُرًا كَهِ كه اسلام ہر خير سے بہتر خير ہے۔

1 زاده مجدد المأته الحاضرة .١٢ منه

ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! اے ارتم الراحمین، اے ارتم الراحمین، اے ارتم الراحمین، اے زندہ، اے قیوم، اے آسان وزمین کے پیدا کرنے والے، اے عظمت و ہزرگی والے، میں تجھ سے سوال کرتا ہوں اس وجہ سے کہ میں شہادت دیتا ہوں کہ تو اللہ (عزوجل) یکتا ہے، بے نیاز ہے، جو نہ دوسرے کو جنا، نہ دوسرے سے جنا اور اُس کا مقابل کوئی نہیں۔ اے اللہ میں سوال کرتا ہوں اور تیری طرف نبی محمصلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے ذریع سے متوجہ ہوتا ہوں۔ اے اللہ کریم! جب سوال کا تھم دیتا ہے تو واپس بھی نہیں کرتا اور تو نہیں تھم دیا ہم فی من اور تو سے متوجہ ہوتا ہوں۔ اے اللہ کریم وں سے زیادہ کریم ہے، ہماری سفارش اس کے بارہ میں قبول کراور اس کی تنبائی میں تُو اس پر رحم کر اور اس کی وحشت میں تُو رحم کر اور اس کی غربت میں تُو رحم کراس کی بے چینی میں تُو رحم کر اور اس کے اجر کو قطیم کر اور اس کی قبر کومنور کر اور اس کی وحشت میں تُو رحم کر اور اس کی غربت میں تُو رحم کر اور اس کی منزل کو معطر کر اور اس کی مہانی کا سامان اچھا کر۔ اے بہتر اوتار نے والے اور اے بہتر جم کر فواب گاہ کو شخشا کر اور اس کی منزل کو معطر کر اور اس کی مہانی کا سامان اچھا کر۔ اے بہتر اوتار نے والے اور اے بہتر جم کر اور اس کی آل واصحاب سب پر ۔ تمام تعریفیں اللہ (عزوجل) کے لیے، جو رب ہے تمام کرنے والوں کے سردار محمد (سلی اللہ تعالی علیہ تبلم) اور اُن کی آل واصحاب سب پر ۔ تمام تعریفیں اللہ (عزوجل) کے لیے، جو رب ہے تمام کرنے والوں کے سردار محمد (سلی اللہ تعالی علیہ تبلم) اور اُن کی آل واصحاب سب پر ۔ تمام تعریفیں اللہ (عزوجل) کے لیے، جو رب ہے تمام جہان کا ۔ ۱۱

[&]quot;الفتاوي الرضوية"، ج٩، ص٢١٧.

آمین آمین کہتارہے۔

فا کدہ: ان دُعاوَں میں بعض مضامین مکرر ہیں اور دُعامیں تکرار ستحسن اگرسب دُعا کیں یاد ہوں اور وقت میں گنجائش ہو تو سب کا پڑھنا اُولی، ورنہ جو چاہے پڑھے اور امام جتنی دیر میں بید دُعا کیں پڑھے اگر مقتدی کو یاد نہ ہوں تو کہلی دُعا کے بعد

مَسِيَّالَةُ الْبُهِ مِيت مِجنون يا نابالغ ہو تو تيسري تکبير کے بعد بيدُ عاريْ هے:

اللَّهُمَّ اجُعَلُهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجُعَلُهُ لَنَا ذُخُرًا وَّاجُعَلُهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا . (1)

اورار كى موتو اجْعَلُهَا اور شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً كَهِـ (2) (جوهره)

مجنون سے مرادوہ مجنون ہے کہ بالغ ہونے سے پہلے مجنون ہوا کہ وہ بھی مکلّف ہی نہ ہوااور اگر جنون عارضی ہے تو اس کی مغفرت کی دُعا کی جائے ، جیسے اوروں کے لیے کی جاتی ہے کہ جنوں سے پہلے تو وہ مکلّف تھا اور جنون کے بیشتر کے گناہ جنوں سے جاتے ندر ہے۔ (3) (غنیہ)

835

مَسِعَانَ اللهِ عَلَيْهِ وَسِلام کوامام جهر کے ساتھ کہے، باقی تمام دُعا نمیں آ ہت ہر پڑھی جا نمیں اور صرف پہلی مرتبہ اللہ اکبر کہنے کے وقت باتھ اٹھائے پھر باتھ اٹھانانہیں۔⁽⁶⁾ (جو ہرہ، درمختار)

مسئلاً من نماز جنازہ میں قرآن برنیت قرآن یا تشہد پڑھنامنع ہے اور برنیت وُعا وثنا الحمد وغیرہ آیات دعائیہ وثنائیہ پڑھناجائز ہے۔(⁷⁾ (درمختار)

سَعَالُ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى مَازَ جِنَازُه مِينَ تَينَ صَفِيلَ كُرِينَ كَهُ حَدِيثُ مِينَ ہِے: ''جس كى نماز تين صفول نے بڑھى،

ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! تو اس کو بھارے لیے پیش رو کر اور اسکو بھارے لیے ذخیرہ کر اور اسکو بھاری شفاعت کر نیوالا اور مقبول الشفاعة کرد ہے۔

- 2 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٨. ٥ "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٥٨٧.
 - اس كى وضاحت قراوئ رضور يجلد 9 صفحه 194 پرملاحظه فرما ليج ـ
- 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٣٠، وغيرهما.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٨ ـ ١٣٠.
 - 7 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٠.

نماز جنازه كابيان

آس کی مغفرت ہو جائے گی۔''اورا گرگل سات ہی شخص ہوں تو ایک امام ہواور نتین پہلی صف میں اور دو دوسری میں اور ایک تیسری میں ۔ ⁽¹⁾ (غنیہ)

سنان اله عن بچیلی صف کوتمام صفوں پر فضیات ہے۔ (۵) (درمختار)

نمازِ جنازہ کون پڑھائے

مسكان كا بناز جنازه ميں امامت كاحق بادشاه اسلام كو ہے، پھر قاضى، پھرامام جُمُعَه، پھرامام مُلّه، پھرولى كو،امام مُلّه كا

ولی پر تقدم بطوراسخباب ہے اور یہ بھی اُس وقت کے ولی ہے افضل ہوور نہ ولی بہتر ہے۔⁽³⁾ (غنیہ ، درمختار)

مسئلہ کی ہیں تیب ہے جونکاح میں ہے، صرف فرق اتنا ہے کہ نماز جنازہ میں میت کے باپ کو بیٹے پر تقدم ہے اور نکاح میں بیٹے کو باپ پر، البتۃ اگر باپ عالم نہیں اور بیٹا عالم ہے تو نماز جنازہ میں بھی بیٹا مقدم ہے، اگر عصب نہ ہوں تو ذوی الارجام غیروں پر مقدم ہیں۔(4) (در مختار، ردالحتار)

سَسَعَانَ ٩ ﴿ مِيَّتَ كَاوِلَى اقْرِبِ (سب ہے زیادہ نزدیک کارشتہ دار) غائب ہے اور ولی ابعد (دُور کارشتہ والا) حاضر

ہے تو یہی ابعد نماز پڑھائے، غائب ہونے سے مرادیہ ہے کہ اتنی دُور ہے کہ اُس کے آنے کے انتظار میں حرج ہو۔ ⁽⁵⁾ (ردالحجار)

<u>مسئان ک</u> عورت کا کوئی ولی نه ہو تو شو ہرنماز پڑھائے ، وہ بھی نه ہو تو پڑوی ۔ یو ہیں مرد کا ولی نه ہو تو پروی اوروں پر

مقدم ہے۔ (6) (درمختار)

سَسَعَانُ الله عند علام مركبا تواس كا آقابية اورباپ پرمقدم ب، اگرچه بيدونول آزاد مول اور آزاد شده غلام ميں باپ اور بينے اور ديگرور شرق قاپر مقدم ہيں۔ (⁷⁾ (درمختار، ردالحتار)

- 1 "غنية المتملي"، قصل في الجنائز، ص٨٨٥.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣١.
 - 3 "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص١٨٥.
- و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٩ _ ١٤١.
- ◘..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص ١٤١.
 - 5..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واحب، ج٣، ص ١٤١.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٢، ص١٤٣.
- 🧣 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤٣.

مِهَارِشْرِيْعَتْ رُصَّه جَبَارُم (4)

🥌 📶 📢 💨 مکاتب کابیٹا یاغلام مرگیا تونماز پڑھانے کاحق مکاتب کوہے، مگراُس کامولیٰ اگرموجود ہوتو اُسے جاہیے کہ مولی ہے پڑھوائے اوراگرمکا تب مرگیااورا تنامال چھوڑا کہ بدل کتابت ادا ہوجائے اوروہ مال وہاں موجود ہے تو اُس کا بیٹا نماز

یڑھائے اور مال غائب ہے تو مولی ۔ ⁽¹⁾ (جوہرہ)

مَسَعَلَيْنِ اللهِ عَورتوں اور بِچوں کونماز جنازہ کی ولایت نہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

منت ایک اور بادشاہ اسلام کواختیار ہے کہ کسی اور کونماز جنازہ پڑھانے کی اجازت دے دے۔⁽³⁾ (درمختار)

سَسَعَانُ اللهِ اللهِ ﴿ مَيِّت كِ وَلِي اقْرِبِ اورولِي البعد دونوں موجود ہیں تو ولی اقرب کواختیار ہے کہ ابعد کے سوانسی اور ہے یڑھوا دے ابعد کومنع کرنے کا اختیار نہیں اور اگرولی اقرب عائب ہے اور اتنی دُور ہے کہ اُس کے آنے کا انتظار نہ کیا جاسکے اور کسی

تحریر کے ذریعہ سے ابعد کے سوانسی اور سے پڑھوا ناچا ہے تو ابعد کواختیار ہے کہ اُسے روک دے اورا گر و لی اقر ب موجود ہے گر

بیارہے توجس سے حاہے پڑھوا دےابعد کونغ کا اختیار نہیں۔⁽⁴⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُ 🕦 ﴾ عورت مرگئ شو ہراور جوان بیٹا جھوڑا تو ولایت بیٹے کو ہے شو ہر کونہیں ،البنۃ اگریلڑ کا اُسی شوہر سے ہے تو باپ پرپیش قدمی مکروہ ہے،اسے چاہیے کہ باپ سے پڑھوائے اوراگردوسرے شوہرسے ہے تو سوتیل باپ پرتقدم کرسکتا ہے کوئی حرج نہیں اور بیٹابالغ نہ ہوتو عورت کے جواورولی ہوں اُن کاحق ہے شوہر کانہیں۔(5) (جوہرہ، عالمگیری)

دوسرے ولی کے سواکسی اور سے بغیراُس کی اجازت کے پڑھوا دے اورا گراپیا کیالیعنی خود نہ پڑھائی اورکسی اور کوا جازت دے ۔ دی تو دوسرے ولی کومنع کا اختیار ہے،اگر چہ بیدوسراولی عمر میں چھوٹا ہواورا گرایک ولی نے ایک شخص کواجازت دی، دوسرے نے

دوسرے کو توجس کو پڑے نے اجازت دی وہ اولیٰ ہے۔ (6) (عالمگیری وغیرہ) مَسْتَاكُ ١٨﴾ ميت نے وصيت کی تھی کہ ميری نماز فلال پڑھائے يا مجھے فلال شخص عنسل دے توبيوصيت باطل ہے بعنی

اس وصیت سے ولی کاحق جاتا ندر ہے گا، ہاں ولی کواختیار ہے کہ خود ند را مطابح اُس سے بر معوادے۔(7) (عالمگیری وغیرہ)

- 1 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، الجزء الأول، ص ١٣٦.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص٦٦.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم... إلخ، ج٣، ص ١٤١ ـ ١٤٤.
 - 4..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص٦٦.
 - 6 المرجع السابق. **6** المرجع السابق.
- 🕡 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص٦٣، وغيره.

کی 📆 💨 ولی کے سواکسی ایسے نے نماز پڑھائی جوولی پر مقدم نہ ہواور ولی نے اُسے اجازت بھی نہ دی تھی تو اگر ولی نماز میں شریک نہ ہوا تو نماز کا اعادہ کرسکتا ہے اور اگر مردہ فن ہو گیا ہے تو قبر پرنماز پڑھ سکتا ہے اور اگروہ ولی پرمقدم ہے جیسے بادشاہ و قاضی وامام محلّہ کہ ولی ہے افضل ہو تو اب ولی نماز کا اعادہ نہیں کرسکتا اور اگرایک ولی نے نماز پڑھا دی تو دوسرے اولیا اعادہ نہیں کر سکتے اور ہرصورت اعادہ میں جو شخص پہلی نماز میں شریک نہ تھاوہ ولی کے ساتھ پڑھ سکتا ہے اور جو شخص شریک تھاوہ ولی

کے ساتھ نہیں پڑھ سکتا ہے کہ جنازہ کی دومرتبہ نماز ناجائز ہے سوااس صورت کے کہ غیر ولی نے بغیراؤن ولی پڑھائی۔ (1) (عالمگیری، درمختاروغیر بها)

838

سَسَعَالُهُ ٢٠﴾ جن چيزوں سے تمام نمازيں فاسد ہوتی ہيں نماز جنازہ بھی اُن سے فاسد ہوجاتی ہے سواايک بات کے که عورت مرد کے محاذی ہوجائے تو نماز جنازہ فاسدنہ ہوگی۔⁽²⁾ (عالمگیری)

مَسِعَانُ (۲) ﷺ مستحب بیہ ہے کہ میت کے سینہ کے سامنے امام کھڑ اہوا ورمیّت سے دُ ور نہ ہومیّت خواہ مر دہو یاعورت بالغ ہو یا نابالغ بیاُس وفت ہے کہا کیے ہی میّت کی نماز بڑھانی ہواورا گر چند ہوں توالیک کے سینہ کے مقابل اورقریب کھڑا ہو۔⁽³⁾ (درمختار، ردامجتار)

مَسِنَا ﴾ امام نے یا نج تکبیریں کہیں تو یا نچویں تکبیر میں مقتدی امام کی متابعت نہ کرے بلکہ پُپ کھڑارہے جب امام سلام چھیرے تواس کے ساتھ سلام چھیردے۔(4) (درمختار)

مَسِيَّاكُ ٢٣﴾ ﴿ لِبِعض تكبيرين فوت ہوگئيں يعني اُس وفت آيا كه بعض تكبيريں ہوچكي ہيں تو فوراً شامل نه ہواس وفت ہو جب امام تکبیر کیے اور اگرا نظار نہ کیا بلکہ فوراً شامل ہو گیا توامام کے تکبیر کہنے سے پہلے جو کچھادا کیا اُس کا اعتبار نہیں ،اگر وہیں موجود تھامگر تکبیرتحریمہ کے دفت امام کے ساتھ اللہ اکبرنہ کہا،خواہ غفلت کی وجہ سے دیر ہوئی یا ہنوز نیت ہی کرتارہ گیا تو پیخض اس کا نتظار نہ کرے کہ امام دوسری تکبیر کہے تو اُس کے ساتھ شامل ہوبلکہ فوراً ہی شامل ہوجائے۔(5) (درمختار،غنیہ)

مستان ۲۳ ﴾ مسبوق یعنی جس کی بعض تکبیرین فوت ہوگئیں وہ اپنی باقی تکبیریں امام کے سلام چھیرنے کے بعد کہے اور

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٤٤، وغيرهما.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٤.
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٣٤.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص ١٣١.
 - 5 "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٥٨٧.

اگریداندیشہ ہوکہ دُعائیں پڑھے گاتو پوری کرنے سے پہلے لوگ میّت کو کندھے تک اٹھالیں گے تو صرف تکبیریں کہدلے دُعائیں چھوڑ دے۔(1) (درمخیار)

یت ا سیکان ۲۵ گئیں مثلاً بہا تاہیں جو شروع میں شامل ہوا مگر کسی وجہ سے درمیان کی بعض تکبیریں رہ گئیں مثلاً بہا تکبیرا مام کے

ساتھ کہی، مگر دوسری اور تیسری جاتی رہیں توامام کی چوتھی تکبیر سے پیشتر بیتکبیریں کہدلے۔⁽²⁾ (ردالحتار) مسئل کی ایک جوتھی تکبیر کے بعد جوتھ میں آیا تو جب تک امام نے سلام نہ چھیراشامل ہوجائے اورامام کے سلام کے بعد

<u>ھنسٹانٹ (۲) ہے۔</u> چوسی مبیر کے بعد جو نص ایا تو جب تک امام سے سلام نہ چیراشا ک ہوجائے اورامام لے سلام نے بعد تین ماراللہ اکبر کھی لے۔⁽³⁾ (درمختار)

سَسَعَانُ کِ کُ جَنَازِ ہِ جُمْع ہوں تو ایک ساتھ سب کی نماز پڑھ سکتا ہے بعنی ایک ہی نماز میں سب کی نتیت کر لے اور افضل میہ ہے کہ سب کی علیحدہ پڑھے اور اس صورت میں یعنی جب علیحدہ پڑھے تو اُن میں جوافضل ہے اس کی پہلے پڑھے پھراس کی جواُس کے بعد سب میں افضل ہے وعلی ھذا القیاس۔(4) (درمختار)

سَسَعَانُ ٢٨﴾ چنر جنازے کی ایک ساتھ پڑھائی تواختیار ہے کہ سب کوآ گے پیچھے رکھیں یعنی سب کا سینہ امام کے مقابل ہو یا برابر برابر رکھیں یعنی ایک کی پائتی یا سر ہانے دوسرے کواوراس دوسرے کی پائتی یا سر ہانے تیسرے کو وعلی ھذاالقیاس۔اگر آگے پیچھے رکھے توامام کے قریب اس کا جنازہ ہو جوسب میں افضل ہو پھراُس کے بعد جوافضل ہو وعلی ھذاالقیاس۔

اورا گرفتیات میں برابر ہوں تو جس کی عمر زیادہ ہوا سے امام کے قریب رکھیں یہ اس وقت ہے کہ سب ایک جنس کے ہوں اورا گرفتاف جنس کے ہوں تو امام کے قریب مرد ہواس کے بعد لڑکا پھر خنثی پھر عورت پھر مراہقہ لیعنی نماز میں جس طرح مقتہ یوں کی صف میں ترتیب ہے، اس کا عکس یہاں ہے اورا گرآزاد وغلام کے جناز ہوں تو آزاد کو امام سے قریب رکھیں گے اگر چہ نابالغ ہو، اُس کے بعد غلام کو اور کسی ضرورت سے ایک ہی قبر میں چند مُر دے فن کریں تو ترتیب عکس کریں لیعنی قبلہ کو اُسے رکھیں جو افضل ہے جب کہ سب مردیا سب عورتیں ہوں، ورنہ قبلہ کی جانب مردکورکھیں پھر لڑکے پھر خنتی پھر عورت پھر مرابقہ کو۔ (5) (عالمگیری، در مختار)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٦.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض الكفاية بفعل الصبي، ج٣، ص١٣٦.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٦.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٨.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١٠ ص ١٦٥.
 - و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٩.

کے ایک جازہ کی نماز شروع کی تھی کہ دوسرا آگیا تو پہلے کی پوری کر لے اورا گر دوسری تکبیر میں دونوں کی بنیت کر لی، جب بھی پہلے ہی کہ ہوگر اورا گر صرف دوسرے کی نتیت کر لی، جب بھی پہلے ہی کہ ہوگر اورا گر صرف دوسرے کی نتیت کی تو دوسرے کی ہوگی اس سے فارغ ہو کر پہلے کی پھر سرھے۔ (1) (عالمگیری)

سَمَانِ اللهِ عَلَيْهِ عَلَى اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلِي عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَل

سَمَعَالُهُ ۳۶ ﴾ کوئیں میں گر کر مرگیا یا اوس کے اوپر مکان گر پڑا اور مردہ نکالا نہ جاسکا تو اُسی جگہ اُس کی نماز پڑھیں اور دریامیں ڈوب گیا اور نکالا نہ جاسکا تو اس کی نماز نہیں ہو سکتی کہ میت کامصنّی کے آگے ہونامعلوم نہیں۔(4) (ردالحتار)

اور دریا یک دوب نیا اور نالا نیجاسا او این مماریک ہوتی کہ میت کا سب کے اسے ہونا مسلوم ہیں۔ مسار رواحیار) مسک اندر ہویا باہر،سب نماز جناز ہ مطلقاً مگر و ترح کی ہے،خواہ میت مسجد کے اندر ہویا باہر،سب نمازی مسجد میں ہوں یا

بعض، کہ حدیث میں نماز جنازہ مسجد میں پڑھنے کی ممانعت آئی۔ ⁽⁵⁾ (درمختار) شارع عام اور دوسرے کی زمین پرنماز جنازہ پڑھنامنع ہے۔ ⁽⁶⁾ (ردالمحتار) یعنی جب کہ مالک زمین منع کرتا ہو۔

<u> سَمَالُهُ اللهِ</u> عَمْدَ کَهِ دِن کَسی کا انتقال ہوا تو اگر جُمُعَہ سے پہلے تجہیز وَ اَکفین ہو سکے تو پہلے ہی کرلیں،اس خیال سے روک رکھنا کہ جُمُعَہ کے بعد جُمع زیادہ ہوگا مکروہ ہے۔⁽⁷⁾ (ردالحتار وغیرہ)

کستان سی سی اورفرض نماز مخرب کے وقت جنازہ آیا تو فرض اور سنتیں پڑھ کرنماز جنازہ پڑھیں ۔ یو ہیں کسی اور فرض نماز کے وقت جنازہ آئے اور جماعت طیار ہو تو فرض وسنت پڑھ کرنماز جنازہ پڑھیں ، بشر طیکہ نماز جنازہ کی تاخیر میں جسم خراب

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٥.
 - 2 المرجع السابق.
- €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الحنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤٦.
 - إدالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤٧.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٤٨.
 - المحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كراهة صلاة الجنازة في المسجد، ج٣، ص١٤٨.
 - . 🕡 المرجع السابق، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٧٣، و "الفتاوي الرضوية"، ج٩، ص ٣١٠.

هونے کااندیشہ نہ ہو۔⁽¹⁾ (ردالحتار)

سن کازعید کے وقت جنازہ آیا تو پہلے عید کی نماز پڑھیں پھر جنازہ پھر خطبہاور گہن کی نماز کے وقت آئے تو

سلے جنازہ پھرگہن کی۔⁽²⁾ (درمختار، جوہرہ)

و کفن دیں گے اوراس کی نماز پڑھیں گے، ورنہ اُسے ویسے ہی نہلا کرایک کپڑے میں لیپٹ کر فن کر دیں گے،اُس کے لیے خسل و کفن بطر ایق مسنون نہیں اور نماز بھی اس کی نہیں بڑھی جائے گی ، یہاں تک کہ سر جب باہر ہوا تھااس وقت چیختا تھا مگرا کثر حصہ نکلنے سے پیشتر مرگیا تونماز نہ پڑھی جائے ،اکثر کی مقدار یہ ہے کہ سر کی جانب سے ہوتو سینة تک اکثر ہےاوریاؤں کی جانب سے ہوتو کمرتک _⁽³⁾ (درمختار،ردالحتاروغیرہما)

سن کی مان پاجنائی نے زندہ پیدا ہونے کی شہادت دی تواس کی نماز پڑھی جائے ، مگرورا ثت کے بارے میں اُن کی گواہی نامعتر ہے یعنی بچہاہیے باپ فوت شدہ کا وارث نہیں قرار دیا جائے گانہ بچہ کی وارث اُس کی ماں ہوگی ، یہاس وقت ہے کہ خود باہر نکلا اور کسی نے حاملہ کے شکم پرضرب لگائی کہ بچے مراہوا باہر نکلاتو وارث ہوگا اور وارث بنائے گا۔ (4) (ردالحتار) سیتان اس کانام رکھا جائے اور قیامت کے دن اُس کاحشر ہوگا۔⁽⁵⁾ (درمختار،ردالحتار)

باپ میں سےاب تک کوئی مسلمان نہ ہوا تو اسے نیفسل دیں گے نہ کفن ،خواہ دارالحرب ہی میں مراہو یا دارالاسلام میں اوراگر تنہا دارالاسلام میں اُسے لائیں یعنی اُس کے ماں باپ میں سے کسی کوقید کر کے نہ لائے ہوں نہ وہ بطور خود بچے کے لانے سے

● "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: فيما يترجع تقديمه من صلاة عيد و جنازة... إلخ، ج٣، ص ۲۰ ـ ۳۰.

و "الفتاوي الرضوية"، ج٩، ص١٨٣_١٨٤.

- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٢.
- و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الكسوف، ص ٢٤.
- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٣، ص٥٠ ١٥٤.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٢، ص١٥١.
 - **5** المرجع السابق، ص٤٥١.

ﷺ پہلے ذمی بن کرآئے تواسے غسل وکفن دیں گے اور اُس کی نماز پڑھی جائے گی ،اگر اس نے عاقل ہوکر کفر اختیار نہ کیا۔ ⁽¹⁾

(عالمگیری، در مختار وغیر بها)

<u> مسئان اس) ۔ کافر کے بچہ کوقید کیا اور ابھی وہ دار الحرب ہی میں تھا کہ اُس کا باپ دار الاسلام میں آ کرمسلمان ہوگیا تو بچے مسلمان سمجھا جائے گالعنی اگرچہ دار الحرب میں مرجائے ،اسے قسل وکفن دیں گے اس کی نماز پڑھیں گے۔ (2) (روالمحتار) ۔ ۔</u>

بید منتمانی بھا جانے ہیں ہرچیدورور مرب میں رجائے ہائے من وین دیں ہے ہوگیا یا وہ بچہ مجھ وال تھا،خود مسلمان میں سے کوئی مسلمان ہوگیا یا وہ بچہ مجھ وال تھا،خود مسلمان

ہوگیا توان دونوں صورتوں میں وہ مسلمان سمجھا جائے گا۔⁽³⁾ (تنویرالا بصار)

سَمَان کا بچه کافرہ سے پیدا ہوا اور وہ اُس کی منکوحہ نہ تھی، یعنی وہ بچہ زنا کا ہے تو اُس کی نماز پڑھی جائے۔ (⁵⁾ (ردالحتار)

﴿ قبرودفن كابيان ﴾

مستان السبار کی اور جاروں کے اور بیجا ئر نہیں کہ میت کوز مین پر رکھ دیں اور چاروں طرف سے دیواریں قائم کرکے بند کر دیں۔⁽⁶⁾ (عالمگیری، روالحتار)

سَسَنَانُ کَ بِهِ جَس جَلَدانقال ہوا اس جَلد فن نہ کریں کہ بیانبیاعیہ الصلوۃ والسلام کے لیے خاص ہے بلکہ مسلمانوں کے قبرستان میں فن کریں ،مقصد میرکہ اس کے لیے کوئی خاص مدفن نہ بنایا جائے میّت بالغ ہویا نا بالغ ۔ (7) (درمختار،ردالمختار)

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الحنائز، الفصل الثاني، ج١، ص٩٥.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الحنازة، ج٣، ص٥٥، وغيرهما.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٣، ص٥٥٠.
 - 3 "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٥٥ _ ١٥٧.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٣، ص١٥٧.
 - 5 "ردالمحتار"
- آلفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٥.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص٢١.
- 🥱 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٦.

ﷺ مسئلاً الله عنه میت کے قد برابر ہواور چوڑائی آ دھے قد کی اور گہرائی کم ہے کم نصف قد کی اور بہتریہ کہ گہرائی بھی قد برابر ہواور متوسط درجہ بیر کہ سینہ تک ہو۔ ⁽¹⁾ (ردالحتار)اس سے مرادیہ کہ لحد یا صندوق اتنا ہو، پنہیں کہ جہاں سے کھودنی

شروع کی وہاں ہے آخرتک بہمقدار ہو۔

میںعمو مأرانج ہے،لحدسنت ہےا گرز مین اس قابل ہو تو یہی کریں اور زم زمین ہو تو صندوق میں حرج نہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

سَتَ اللَّهُ اللَّهِ عَبِرَكَا ندر چِنَا فَي وغيره بجِهَا نا ناجا مُزْ ہے كہ بےسبب مال ضائع كرنا ہے۔ (3) (در مختار) سَبِيعًا ﴾ تا بوت کہ میت کوئسی لکڑی وغیرہ کےصندوق میں رکھ کر ڈن کریں یہ مکروہ ہے، مگر جب ضرورت ہو

مثلاً زمین بہت تر ہے تو حرج نہیں اور اس صورت میں تابوت کےمصارف اس میں سے لیے جا ئیں جومیّت نے مال حیموڑا ہے۔⁽⁴⁾ (عالمگیری، درمختار وغیر ہما)

سکان کی ہے اگر تابوت میں رکھ کر دفن کریں تو سنت سے کہاس میں مٹی بچھا دیں اور دہنے بائیں خام ⁽⁵⁾اینٹیں لگا دیں اور او برکہ گل ⁽⁶⁾ کر دیں غرض بیر کہا ندر کا حصہ مثل لحد کے ہوجائے اور لوہے کا تابوت مکروہ ہے اور قبر کی زمین نم ہو تو دھول بچھادیناسنت ہے۔⁽⁷⁾ (صغیری،ردالحتار)

سَسَعَانُ ٨ ﴾ قبر کے اس حصہ میں کہ میت کے جسم سے قریب ہے، کی اینٹ لگانا مکروہ ہے کہ اینٹ آگ سے پکتی ہے۔اللہ تعالیٰ مسلمانوں کوآگ کے اثر سے بچائے۔ (⁸⁾ (عالمگیری وغیرہ)

سَسَالُ الله الله الربيترية والے دونين جومناسب ہوں کوئی تعداداس میں خاص نہیں اور بہتریہ کہ قوی ونیک وامین

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٤.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١٠ ص ١٦٥.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص ١٦٤.
- ₫..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١٠ ص٦٦.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٥٦، وغيرهما.

- هسس لعني پکي۔...
- 6..... يعنى ملى كى ليائي۔
- س.... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص ١٦٥.
- الفتاوى الهندية "، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦ ، وغيره.

ہوں کہ کوئی بات نامناسب دیکھیں تولوگوں پر ظاہر نہ کریں۔⁽¹⁾ (عالمگیری)

پائنتی رکھیں اور سرکی جانب سے قبر میں لائیں۔⁽²⁾ (در مختار وغیرہ)

ا تارنے میں مضایقہ نہیں۔⁽³⁾ (عالمگیری)

مَنْ اللَّهُ ١٦﴾ ميّت كوقبر مين ركھتے وقت بيدُ عابرُ هين:

بِسُمِ اللَّهِ وَ بِاللَّهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ .

اوراككروايت مين بِسْمِ اللهِ ك بعد وَفِي سَبِيْلِ اللهِ بهي آياب -(4) (عالمكيري،روالحتار)

مسک ایستان ایست که دهنی طرف کروٹ پرلٹا ئیں اوراس کا مونھ قبلہ کوکریں ،اگر قبلہ کی طرف مونھ کرنا بھول گئے تختہ

لگانے کے بعد یاد آیا تو تختہ ہٹا کر قبلہ رُ وکر دیں اور مٹی دینے کے بعد یاد آیا تو نہیں ۔ یو ہیں اگر بائیں کروٹ پررکھایا جدھرسر ہانا

ہونا چاہیےادھریاؤں کیے تواگرمٹی دینے سے پہلے یادآیاٹھیک کردیں در نہیں۔⁽⁵⁾ (عالمگیری، درمختار، روالمحتار)

سَمَالُهُ اللهِ عَلَى مِنْ رکھنے کے بعد کفن کی بندش کھول دیں کہاب ضرورت نہیں اور نہ کھولی تو حرج نہیں۔ ⁽⁶⁾ (جوہرہ)

سَمَانُ اللهِ عَلَيْ اللهُ الل

در میان جھری رہ گئی تو اُسے ڈھیلے وغیرہ سے بند کردیں،صندوق کا بھی یہی تھم ہے۔⁽⁷⁾ (در مختار،ردالمحتار)

مَسِيَّا لَهُ 🕦 ﴾ عورت کا جنازہ ہو تو قبر میں اتارنے سے تختہ لگانے تک قبر کو کپڑے وغیرہ سے چھپائے رکھیں ،مرد کی قبر کو

- 1 ---- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٦، وغيره.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
- ١٦٦٠... "تنوير الأبصار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٦.
 و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٧.
 الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
 - 6 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٤٠.
 - 🕡 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٧.

قبرودفن كابيان

فن کرتے وقت نہ چھیا ئیں البتہ اگر مینھ وغیرہ کوئی عذر ہو تو چھیا ناجا کز ہے، عورت کا جنازہ بھی ڈھکار ہے۔ (1) (جو ہرہ، درمخار)

سَسَالُهُ كال الله تفخة لگانے كے بعد ملی دى جائے مستحب بيہ ہے كدسر بانے كى طرف دونوں ہاتھوں سے تين بار ملی

ڈالیں۔

يىلى باركہيں: مِنْهَاخَلَقْنَكُمْ. (2)

دوسرى بار: وَفِيْهَانُعِيْدُكُمُ. (3)

تيرىبار: وَمِنْهَانُخْرِجُكُمْ تَامَلًا أُخْرِي . (4)

يا بِهِلْ بار: اللَّهُمَّ جَافِ الْأَرْضَ عَنُ جَنُبَيُّهِ . (5)

ووسرى بار: اللَّهُمَّ افْتَحُ أَبُوابَ السَّمَآءِ لِرُوْحِهِ . (6)

تيسرى بار: اللُّهُمَّ زَوِّ جُهُ مِنْ حُوْرِ الْعِيْنِ . (7)

اورميّت عورت ہوتو،

تيرى باريكين: اللَّهُمَّ ادْخِلُهَا الْجَنَّةَ بِرَحُمَتِكَ . (8)

باقی مٹی ہاتھ یا گھر پی یا پھوڑے وغیرہ جس چیز ہے ممکن ہوقبر میں ڈالیں اور جتنی مٹی قبر نے لکی اُس سے زیادہ ڈالنا

مکروہ ہے۔ (⁽⁹⁾ (جوہرہ،عالمگیری)

مسئلہ کا کہ ہاتھ میں جومٹی گئی ہے،اسے جھاڑ دیں یادھوڈ الیں اختیار ہے۔

١٦٨٠٠٠٠٠ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٨.
 و "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص٠٤١.

🗗 اس ہے ہم نے تم کو پیدا کیا۔ ۱۲

🗗 اوراس میں تم کولوٹا کیں گے۔۱۲

4 اوراس سےتم کودوبارہ نکالیں گے۔۱۲

الله (عزوجل)! زمین کواس کے دونوں پہلوؤں سے کشادہ کر۔ ۱۲ عورت کے لئے ضمیر مؤنث ہو جَنبيْها، نِرُوْ حِهَا۔ ۱۲

اے اللہ (عزوجل)! اس کی روح کیلئے آسان کے دروازے کھول دے۔ ۱۲

ہے..... اےاللہ(عزوجل)!حورعین کواس کی زوجہ کردے۔۱۲

این درجت سے تواس کو جنت میں داخل کرد ہے۔ ۱۲۔

• الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٤١.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.

يان کون

مسئل 19 و تبر چوکھوٹی نہ بنا کیں بلکہ اس میں ڈھال رکھیں جیسے اونٹ کا کوہان اور اس پر پانی چیڑ کئے میں حرج نہیں، بلکہ بہتر ہے اور قبرایک بالشت اونچی ہویا کچھ خفیف زیادہ۔ (1) (عالمگیری، ردالحتار)

846

مستان (2) جہاز پر انقال ہوا اور کنارہ قریب نہ ہو، توعنسل وکفن دے کرنماز پڑھ کرسمندر میں ڈبودیں۔ (2) (غنبہ ،ردالحتار)

مَسْعَالُ 10 ﴾ علما وسادات کی قبور پر قبه وغیرہ بنانے میں حرج نہیں اور قبر کو پختہ نہ کیا جائے۔ (3) (درمختار، ردالحتار)

لعنی اندر سے پختہ نہ کی جائے اور اگر اندر خام ہو،او پرسے پختہ تو حرج نہیں۔

مسئال ۲۲ گا۔ اگر ضرورت ہوتو قبر پرنشان کے لیے بچھ کھ سکتے ہیں، مگرالی جگہ نکھیں کہ بے ادبی ہو، ایسے مقبرہ میں دفن کرنا بہتر ہے جہاں صالحین کی قبریں ہوں۔(4) (جو ہرہ، درمخار)

مسئل کہ کہ فن کے بعد قبر کے پاس اتنی دیر تک تھہر نامسحب ہے جتنی دیر میں اونٹ ذخ کر کے گوشت تقسیم کر دیا

جائے، کہ ان کے رہنے سے میت کوانس ہوگا اور نکیرین کا جواب دینے میں وحشت نہ ہوگی اور اتنی ویر تک تلاوت قِر آن اور میت کے لیے دُعاواستغفار کریں اور بیدُ عاکریں کہ سوال نکیرین کے جواب میں ثابت قدم رہے۔ ⁽⁶⁾ (جو ہرہ وغیرہا)

یں۔ <u>سکانہ کا ہے۔</u> ایک قبر میں ایک سے زیادہ بلاضر ورت دفن کرنا جائز نہیں اور ضرورت ہو تو کر سکتے ہیں، مگر دومیتوں کے

درمیان مٹی وغیرہ سے آٹر کردیں اور کون آگے ہوکون پیچھے بیادیر ندکور ہوا۔⁽⁷⁾ (عالمگیری)

<u> مَسعًا کَمُ الْکَ</u> جَنْ شهرِ یا گاؤں وغیرہ میں انتقال ہوا و ہیں کے قبرستان میں دنن کرنامستحب ہے اگر چہ بیدوہاں رہتا نہ

الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٨.

2 "ردالمحتار" المرجع السابق، ص١٦٥ و "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٧٠٦.

€ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص٦٩. ا.

4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٧٠.

و "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٤١.

5 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٤١، وغيره.

6 المرجع السابق.

🤿 🗗 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص٦٦.

🤏 ہو، بلکہ جس گھر میں انتقال ہوااس گھر والوں کے قبرستان میں فن کریں اور دوایک میل باہر لے جانے میں حرج نہیں کہ شہر کے قبرستان اکثر اینے فاصلے پر ہوتے ہیں اورا گر دوسرے شہرکواس کی لاش اٹھالے جائیں توا کثر علانے منع فر مایا اور یہی صحیح ہے۔ یہ اس صورت میں ہے کہ وفن سے پیشتر لے جانا جا ہیں اور وفن کے بعد تو مطلقاً نقل کرناممنوع ہے، سوابعض صورتوں کے جو مذکور ہوں گی۔(1)(عالمگیری)اور پیجوبعض لوگوں کا طریقہ ہے کہ زمین کوسپر دکرتے ہیں پھروہاں سے نکال کر دوسری جگہ دفن کرتے ہیں، بینا جائز ہےاور رافضیوں کا طریقہ ہے۔

سَسَعَالُهُ ٢٧﴾ دوسرے کی زمین میں بلاا جازتِ مالک فن کر دیا تو مالک کواختیار ہے خواہ اولیائے میت ہے کہے اپنا مردہ نکال اویا زمین برابر کر کے اس میں کھیتی کرے۔ یو ہیں اگروہ زمین شفعہ میں لے لی گئی یاغصب کیے ہوئے کیڑے کا کفن دیا تو ما لک مرد ہ کونکلواسکتا ہے۔⁽²⁾ (عالمگیری،روالمحتار)

سَسَعًا ﴾ ٢٨﴾ ﴿ وقفي قبرستان ميں كسى نے قبرطيار كرائي اس ميں دوسر بےلوگ اپنامردہ دفن كرنا جاہتے ہيں اور قبرستان ميں جگہ ہے، تو مکروہ ہےاورا گر فن کردیا تو قبر کھودوانے والا مردہ کونہیں نکلواسکتا جوخرج ہواہے لے لے۔⁽³⁾ (عالمگیری،ردالحتار) سَسَانُ ٢٩﴾ ﴿ عورت كوكسي وارث نے زيورسميت دفن كر ديا اوربعض ور ثه موجود نه تھے ان ور ثه كوقبر كھود نے كي اجازت ہے،کسی کا کچھ مال قبر میں گر گیامٹی وینے کے بعد یادآیا تو قبر کھود کر نکال سکتے ہیں اگر چہوہ ایک ہی درہم ہو۔ (4) (عالمگیری،ردالحتار)

مَسِعًا ﴾ اینے لیے گفن تیارر کھے تو حرج نہیں اور قبر کھود وار کھنا بے معنی ہے کیا معلوم کہاں مرے گا۔ (⁵⁾ (درمختار) سَسَعَالُ 🗂 ﴾ قبر پر بیٹھنا، سونا، چلنا، یا خانہ، بیشاب کرنا حرام ہے۔قبرستان میں جو نیاراستہ نکالا گیا اس سے گزرنا ناجائز ہے،خواہ نیا ہونااسے معلوم ہویااس کا گمان ہو۔ (6) (عالمگیری، درمختار)

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٧.
- المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص ١٧١.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١٠ ص٦٦١. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص ١٧١.
 - ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٧. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص ١٧١.
 - الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٨٣.
 - €..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٨٣.

کی سیکان ۳۲ این سی رشته داری قبرتک جانا چاہتا ہے مگر قبروں پر گزرنا پڑے گا تو وہاں تک جانا منع ہے، دور ہی سے فاتحہ پڑھ دے، قبرستان میں جو تیاں پہن کرنہ جائے۔ایک شخص کو حضور اقدس سلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے جوتے پہنے دیکھا، فر مایا:
''جوتے اتاردے، نقبروالے کو تُو ایذ ادے، ندوہ مختھے'' (1)

مسئلہ ۳۳ گی جب کہ پڑھنے کے لیے حافظ مقرر کرنا جائز ہے۔ (2) (درمختار) یعنی جب کہ پڑھنے والے اُجرت پر نہ پڑھتے ہول کہ اُجرت پر قرآن مجید پڑھنا اور پڑھوانا ناجائز ہے، اگر اُجرت پر پڑھوانا چاہے تو اپنے کام کاج کے لیے نوکر رکھے پھر بیکام لے۔

زيارتِ قبور

تریارت قبور مستحب ہے ہم ہفتہ میں ایک دن زیارت کرے، جُمُعَہ یا جعرات یا ہفتہ یا پیر کے دن مناسب ہے، سب میں افضل روزِ جُمُعَہ و قتِ صبح ہے۔ اولیائے کرام کے مزارات طیبہ پرسفر کر کے جانا جائز ہے، وہ اپنے زائر کونفع پہنچاتے ہیں اورا گروہاں کوئی منکر شرعی ہومثلاً عورتوں سے اختلاط تو اس کی وجہ سے زیارت ترک نہ کی جائے کہ ایسی باتوں سے نیک کام ترک نہیں کیا جاتا، بلکہ اسے بُرا جانے اور ممکن ہو تو بُری بات زائل کرے۔ (5) (ردامختار)

-0
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٨٥.
- المرجع السابق، و "الفتاوى التاتار خانية"، كتاب الصلاة، الفصل الثاني، ج٢، ص ١٧٠.
- 4 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: فيما يكتب على كفن الميت، ج٣، ص١٨٦.
 - 🧣 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٧.

ﷺ المُستَعَلَيْنِ اللهِ عن معارتوں کے لیے بعض علمانے زیارتِ قبور کو جائز بتایا ، درمخنار میں یہی قول اختیار کیا ،مگر عزیز وں کی قبور یر جائیں گی تو جزع وفزع کریں گی،الہٰذاممنوع ہےاورصالحین کی قبور پر برکت کے لیے جائیں تو بوڑھیوں کے لیے حرج نہیں اور جوانوں کے لیے ممنوع۔ (1) (ردامحتار)اوراسلم میہ ہے کہ عورتیں مطلقاً منع کی جائیں کہ اپنوں کی قبور کی زیارت میں تو وہی جزع وفزع ہےاورصالحین کی قبور پر پاتعظیم میں حدہے گزرجائیں گی پاہےاد بی کریں گی کہ عورتوں میں بیدونوں باتیں بکثرے مائی حاتی ہیں۔⁽²⁾ (فآویٰ رضوبہ)

مسئل ۳۵ ﴾ نیارت قبر کا طریقہ ہیہے کہ یانگتی کی جانب⁽³⁾ہے جا کرمیّت کے موبھ کے سامنے کھڑا ہو،سر ہانے سے نہ آئے کہ میت کے لیے باعث تکلیف ہے یعنی میت کوگردن چھیر کرد کھنایا ہے گا کہ کون آتا ہے اور یہ کے:

السَّلامُ عَلَيْكُمُ اهْلَ دَارِ قَوْم مُّوْمِنِينَ أَنْتُم لَنَا سَلَفٌ وَّ إِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمُ لَاحِقُونَ نَسَأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَفُو وَالْعَافِيَةَ يَرُحَمُ اللَّهُ الْمُسْتَقُدِمِينَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِيْنَ اَللَّهُمَّ رَبَّ الْاَرُواحِ الْقَانِيَةِ وَالْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ اَدُخِلُ هَاذِهِ الْقُبُورِ مِنْكَ رَوْحًا وَّرَيْحَانًا وَّمِنَّا تَحِيَّةً وَّسَلَامًا . ⁽⁴⁾

پھر فاتحہ پڑھے اور بیٹھنا چاہے تواہنے فاصلہ ہے بیٹھے کہاس کے پاس زندگی میں نز دیک یا دور جتنے فاصلہ پر بیٹھ سكتا تقايه ⁽⁵⁾ (ردالحتار)

تك اورسورهُ ينسَّ اور تَبَلِّرَكَ الَّذِي اور اَلْهِمُكُمُ التَّكَاثُرُ ايك ايك باراور قُلُهُوَ اللَّهُ باره يا گياره ياسات يا تين بار يرُ هے اوران سب كا تواب مردول كو پہنچائے ۔ حديث ميں ہے: ''جو گيارہ بار قُلُ هُوَاللّٰهُ شريف پرُ هركراس كا تواب مردول کو پہنچائے تو مردوں کی گنتی برابراسے ثواب ملے گا'' (6) (درمختار،ردالحتار)

- ١٧٨٠٠ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٨.
 - 2 "الفتاوي الرضوية"، ج٩، ص٣٨٥.
 - **ہ**..... کیخیٰ قدموں کی طرف۔
- 🗗 سلام ہوتم پرائے قوم مونین کے گھر والو! تم ہمارے اگلے ہواور ہم ان شاءاللہ تم سے ملنے والے ہیں،اللہ (عزوجل) سے ہم اپنے اور تمہارے لیےعفووعافیت کاسوال کرتے ہیں،اللہ(عزوجل) ہمارےا گلوں اور پچھلوں بررثم کرے۔اےاللہ(عزوجل)!رب فانی روحوں ا کے اورجسم گل جانے والے اور بوسیدہ ہڑیوں کے، تو اپنی طرف سے ان قبروں میں تازگی اورخوشبو داخل کر اور ہماری طرف سے تحیت وسلام پہنچادے۔۱۲
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الحنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٩.
 - 🧟 😘 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٩.

کر مسکان و بینچ گاوراس کے تواب میں پچھ کی نہ ہوگی ، بلکداُس کی رحمت سے امید ہے کہ سب کو پینچ گااوراس کے تواب میں پچھ کی نہ ہوگی ، بلکداُس کی رحمت سے امید ہے کہ سب کو پینچ گااوراس کے تواب میں پچھ کی نہ ہوگی ، بلکداُس کی رحمت سے امید ہے کہ سب کو پورا ملے بینیں کہ اُسی تواب کی تقسیم ہوکر کلڑ اٹکڑ املے ۔ (ردالمحتار) بلکہ بیامید ہے کہ اس تواب پہنچانے والے کے لیے اُن سب کے مجموعے کے برابر ملے مشلا کوئی نیک کام کیا، جس کا تواب کم از کم دس ملے گا، اس نے دس مُر دوں کو پہنچایا تو ہرایک کودس دس ملیں گے اوراس کو ایک سودس اور ہزار کو پہنچایا تو ہرایک کودس دس ملیں گے اوراس کو ایک سودس اور ہزار کو پہنچایا تو اسے دس ہزار دس و کلی بندالقیاس ۔ (2) (فاویل رضوبہ)

سَسَعَلَهُ اللهِ عَالَىٰ اللهِ تَعَالَىٰ اللهُ تَعَالَىٰ اللهِ تَعَالَىٰ اللهِ تَعَالَىٰ اللهُ تَعَالَىٰ اللهُ تَعَالَىٰ اللهِ تَعَالَىٰ اللهِ تَعَالَىٰ اللهُ تَعَالَىٰ اللهُ تَعَالَىٰ اللهُ تَعَالَىٰ اللهُ تَعَالَىٰ اللهُ اللهُ تَعَالَىٰ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ تَعَالَىٰ اللهُ ال

سَنَانُ (۱) جَر کو بوسد دینا بعض علیانے جائز کہاہے، مگر صحیح بیہ ہے کہ نع ہے۔ (۱) (اشعة اللمعات) اور قبر کا طواف تعظیمی منع ہے جائیں بلکہ عوام کے سامنے کیا بھی نہ جائے کہ سیجھا کا بچھ کا بچھا کا بچھا کے۔

دفن کے بعد تلقین

قن کے بعد مُر دہ کو تلقین کرنا، اہل سنت کے نزدیک مشروع ہے۔ (5) (جو ہرہ) یہ جواکثر کتابوں میں ہے کہ تلقین نہ کی جائے یہ معتزلہ کا ذہب ہے کہ انہوں نے ہماری کتابوں میں بیاضافہ کردیا۔ (6) (ردالحتار) حدیث میں ہے، حضور اقدس سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہ معتزلہ کا ذہب ہے کہ انہوں نے ہماری کتابوں میں بیاضافہ کردیا۔ (6) (ردالحتار) حدیث میں ایک شخص قبر کے افدس سلی اللہ تعالیٰ مرے اور اُس کی مٹی دے چکو، تو تم میں ایک شخص قبر کے سر بانے کھڑا ہو کر کہے یا فلاں بن فلا نہ وہ سیدھا ہو کر میٹھ جائے گا چر کہے یا فلال بن فلا نہ وہ کہے گا، ہمیں ارشاو کر اللہ (عزوجل) تجھ پر رحم فر مائے گا، گر شمصیں اس کے کہنے کی خرنہیں ہوتی پھر کہے:

افد کو رُختُ مُن مَا خَرَجُتَ مِنَ اللّٰہُ نُهُ اللّٰہُ وَانَ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ صَلَّى اللّٰہ تَعَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ صَلَّى اللّٰہ تَعَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ صَلَّى اللّٰہ تَعَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ صَلَّى اللّٰہ تَعَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ صَلَّى اللّٰہ تَعَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ صَلَّى اللّٰہ تَعَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ صَلَّى اللّٰہ تَعَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ مَا مُنَا اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ مَالَىٰ اللّٰہُ وَانَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَ وَسُولُ لُهُ مَا عَلَیْ اللّٰہُ اللّٰہُ وَانَّ مُعَالَٰ اللّٰہُ وَانَّ اللّٰہُ اللّٰہُ وَانَّ مُعَالَٰ عَبِیْ اللّٰہُ وَانَ اللّٰہُ اللّٰہُ وَانَّ اللّٰہُ مِنْ اللّٰہُ اللّٰہُ وَانَّ اللّٰمُ وَانَّ اللّٰہُ مَا عَلَیْ کُورُ کُورُ مِنْ اللّٰہُ مِنْ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ وَانَّ مُنْ مُلْاً عَالَٰ اللّٰہُ وَانَّ مُنْ اللّٰہُ مُنْ وَانَ مُنْ کُورُ مَا عَالْہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ مُنْ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ مُنْ اللّٰہُ مُنْ اللّٰہُ اللّٰہ

- € "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في القراءة للميت... إلخ، ج٣، ص١٨٠.
 - 2 "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٢٣ _ ٦٢٩.
 - 3 "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص ٦٢٩ _ ٦٤٢.
 - 4 "اشعة اللمعات"، كتاب الجنائز، باب زيارة القبور، ج١، ص٧٦٣.
 - الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣٠.
 - 🧣 🙃 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في التلقين بعد الموت، ج٣، ص٩٤.

کامیان کِو کونکو

اللهِ وَسَلَّمَ وَانَّكَ رَضَيْتَ بِاللَّهِ رَبًّا وَّبِالْلِسُلِامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا وَّ بِالْقُواٰنِ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا وَّ بِالْقُواٰنِ اللَّهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا وَّ بِالْقُواٰنِ

إمَامًا . (1)

تکیرین ایک دوسرے کا ہاتھ پکڑ کر کہیں گے، چلوہم اُس کے پاس کیا بیٹھیں جسے لوگ اس کی ججت سکھا چکے، اس پر کسی نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) سے عرض کی ، اگر اُس کی ماں کا نام معلوم نہ ہو؟ فرمایا: ﴿ اَ کی طرف نسبت کرے '' (2)

رواہ الطبرانی فی الکبیر والضیاء فی الاحکام وغیر هما. بعض اجلهٔ ائمة تابعین فرماتے ہیں: جب قبر پرٹی برابر کرچکیں اورلوگ واپس جائیں تومسحب مجھا جاتا کہ میت سے اس کی قبر کے پاس کھڑے ہوکر پہ کہا جائے:

يا فلان بن فلان قُلُ لَا إِلَهُ إِلَّا اللَّهُ . (3)

تین بار پھر کہا جائے:

قُلُ رَّبِّيَ اللَّهُ وَدِيْنِيَ الْإِسْلَامُ وَنَبِيِّ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ . (4)

اعلیٰ حضرت قبلہ نے اس پرا تنااوراضا فہ کیا:

وَاعُلَمُ اَنَّ هَذَيْنِ الَّذِيْنِ اتَيَاكَ اَوْيَأْ تِيَانِكَ اِنَّمَا هُمَا عَبُدَانِ لِلَّهِ لَا يَضُرَّانِ وَلَا يَنُفَعَانِ اِلَّا بِاِذُنِ اللَّهِ فَلَا تَخَفُ وَلَا تَحُزَنُ وَاَشُهَدُ اَنَّ رَبَّكَ اللَّهُ وَدِيْنَكَ الْإِسْلَامُ وَنَبِيَّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

ثَبَّتَنَا اللَّهُ وَاِيَّاكَ بِالْقَوُلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيْوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاخِرَةِ اِنَّـهُ هُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيْمُ. (5)

<u> مَسعًا لَهُ اللَّهِ</u> عَبِرُ پر چھول ڈالنا بہتر ہے کہ جب تک تر رہیں گے تبیج کرینظے اور میّت کا دل بہلے گا۔ ⁽⁶⁾ (روالمحتار)

❶ ترجمہ: تو اُسے یاد کر،جس پرتُو دنیا سے اَکلا یعنی بیگواہی کہاللہ(عزوجل) کےسوا کوئی معبودنہیں اور محمصلی اللہ تعالی علیہ وسلماس کے بندہ اور رسول ہیں اور بیرکہ تُو اللّٰہ(عزوجل) کےرب اور اسلام کے دین اور محمصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے نبی اور قر آن کے امام ہونے پر راضی تھا۔۱۳

- 2 "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٧٩٧٩، ج٨، ص ٢٤٩ _ . ٢٥٠.
 - اے فلان بن فلان تو کہہ کہ اللہ (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں۔۱۲
 - "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٢٢٢. • "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٢٢٢.

تو كهه ميرارب الله (عزوجل) ہاورميرا دين اسلام ہاورمير نے بي محمصلي الله تعالى عليه وسلم ہيں۔ ١٢

5 "الفتاوي الرضوية"، ج٩، ص٢٢٢.

اور جان لے کہ بید دو خص جو تیرے پاس آئے یا آئیں گے بیداللہ (عز دجل) کے بندے میں بغیر خدا کے حکم کے نہ ضرر پہنچائیں، نہ نفع پس نہ خوف کر اور نه نم کر اور تو گواہی وے کہ تیرار ب اللہ (عز وجل) ہے اور تیرا دین اسلام ہے اور تیرے نبی محمسلی اللہ تعالی علیہ وسلم میں اللہ (عز وجل) ہم کواور جھے کو قول ثابت بریثابت رکھے ، دنیا کی زندگی میں اور آخرت میں بے شک وہ بخشنے والامہر بان ہے۔ ۱۲

المحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في وضع الجريد و نحو الآس على القبور، ج٣، ص١٨٤.

و بین جنازه پر پھولوں کی چادرڈالنے میں حرج نہیں۔

<u> مسئالہ ۳۳) ۔</u> قبر پر سے تر گھاس نوچنا نہ چاہیے کہ اُس کی تنبیج سے رحمت اُتر تی ہے اور میت کو اُنس ہوتا ہے اور نوچنے میں میت کاحق ضائع کرنا ہے۔⁽¹⁾ (روالمحتار)

المناسخ المناس

852

مسکان کی مصیبت میں تعزیت مسنون ہے۔ حدیث میں ہے،''جوایتے بھائی مسلمان کی مصیبت میں تعزیت کرے، قیامت کے دن اللہ تعالی اُسے کرامت کا جوڑا پہنائے گا۔'' (2) اس کوابن ماجہ نے روایت کیا۔ دوسری حدیث تر مذی وابن ماجہ میں ہے، ''جوکسی مصیبت زدہ کی تعزیت کرے، اُسے اُسی کے شل اُواب ملے گا۔'' (3)

سَسَنَانُ کَ اَلَّهِ عَنِیت کا وقت موت سے تین دن تک ہے،اس کے بعد مکر وہ ہے کئم تازہ ہوگا مگر جب تعزیت کرنے والا یا جس کی تعزیت کی جائے وہاں موجود نہ ہویا موجود ہے مگرائے علم نہیں تو بعد میں حرج نہیں۔(4) (جو ہرہ،ردالحتار)

سَسَعَالُهُ اللهِ فَن سے پیشتر بھی تعزیت جائز ہے، مگر افضل ہیہے کہ دفن کے بعد ہو یہ اُس وقت ہے کہ اولیائے میّت جزع وفزع نہ کرتے ہوں، ورندان کی تسلی کے لیے دفن سے پیشتر ہی کرے۔(5) (جو ہرہ)

سَسَعَانُ کی جستحب میہ ہے کہ میّت کے تمام اقارب کوتعزیت کریں، چھوٹے بڑے مردوعورت سب کومگرعورت کواُس کے محارم ہی تعزیت کریں۔ تعزیت میں میہ کہے، اللہ تعالیٰ میّت کی مغفرت فر مائے اوراس کواپنی رحمت میں ڈھانے اورتم کو صبر روزی کرے اوراس مصیبت پر تواب عطافر مائے۔ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے ان لفظوں سے تعزیت فرمائی:

لِلَّهِ مَا أَخَذَ وَأَغُطَى وَكُلُّ شَيْئً عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُّسَمًّى .

''خدای کاہے جواُس نے لیادیااوراُس کے نز دیک ہر چیز ایک میعاد مقرر کے ساتھ ہے۔'' ⁽⁶⁾ (عالمگیری وغیرہ)

سَعَالَهُ ﴾ مصیبت پرصبر کرے تو اُسے دوثواب ملتے ہیں،ایک مصیبت کا دوسراصبر کا اور جزع وفزع سے دونوں

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في وضع الجريد و نحو الآس على القبور، ج٣، ص١٨٤.
- 2 "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في ثواب من عزى مصابا، الحديث: ١٦٠١، ج٢، ص٢٦٨.
 - 3..... "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء في أجر من عزى مصابا، الحديث: ١٠٧٥، ج٢، ص٣٣٨.
 - الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الحنائز، ص ١٤١.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٧.
 - 5 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٤١.
 - 🥱 🙃 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، ج١، ص١٦٧، وغيره.

ردامختار) عباتے رہتے ہیں۔⁽¹⁾ (ردامختار)

<u> میں اور مکان کے دروازہ پر میں بیٹھنا کہ لوگ ان کی تعزیت کوآ نمیں اس میں حرج نہیں اور مکان کے دروازہ پر</u>

یا شارع عام پر بچھونے بچھا کر بیٹھنا اُری بات ہے۔ (²⁾ (عالمگیری، درمختار)

میت کے بروی یادور کے رشتہ دارا گرمیّت کے گھر والوں کے لیےاُس دن اور رات کے لیے کھانالا ئیں تو

بہتر ہے اور انھیں اصرار کر کے کھلائیں۔⁽³⁾ (ردالحتار)

سَسَعَانُهُ ﴾ میت کے گھر والے تیجہ وغیرہ کے دن وعوت کریں تو ناجائز و بدعت قبیحہ ہے کہ وعوت تو خوشی کے وقت مشروع ہے نہ کہ غم کے وقت اورا گرفقرا کو کھلائیں تو بہتر ہے۔ (⁴⁾ (فتح القدیر)

سَسَعَانَ وَ ﴾ جن لوگوں سے قرآن مجید یا کلمہ طیبہ پڑھوایا،ان کے لیے بھی کھانا طیار کرنا ناجائز ہے۔ (5) (روالحتار) یعنی جب کہ ظہرالیا ہو یامعروف ہویاوہ اغنیا ہوں۔

مسئان النج تیج وغیرہ کا کھانا اکثر میت کے ترکہ سے کیا جاتا ہے، اس میں یہ کھاظ ضروری ہے کہ ورثہ میں کوئی نابالغ نہ ہوور نہ خت حرام ہے۔ یو بیں اگر بعض ورثہ موجود نہ ہوں جب بھی ناجائز ہے، جبکہ غیر موجودین سے اجازت نہ لی ہوا ورسب بالغ ہوں اور سب کی اجازت سے ہویا کچھ نابالغ یا غیر موجود ہوں مگر بالغ موجود اپنے حصہ سے کرے تو حرج نہیں۔ (6) (خانید وغیر ہا)

مسئلہ 11 ہے۔ تعزیت کے لیے اکثر عورتیں رشتہ دارجع ہوتی ہیں اور روتی پیٹتی نوحہ کرتی ہیں ، انھیں کھانا نہ دیا جائے کہ گناہ پر مدودینا ہے۔ ⁽⁷⁾ (کشف الغطا)

مس<u>گانہ اللہ</u> میت کے گھر والوں کو جو کھانا بھیجا جاتا ہے بیکھانا صرف گھر والے کھائیں اور انھیں کے لائق بھیجا جائے

- "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الثواب على المصيبة، ج٣، ص١٧٥.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٦.
 - ③ "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الثواب على المصيبة، ج٣، ص١٧٥.
 - ◘..... "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، فصل في الدفن، ج٢، ص١٥١. طبعة مركز اهل السنة بركات رضا.
 - المحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٦.
 - €..... "الفتاوي الخانية"، كتاب الحظر و الاباحة، ج٤، ص٣٦٦، و "الفتاوي الرضوية"، ج٩، ص٢٦٦، وغيره.
 - 🗨 🗗 "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٦٦.

🐉 زیادہ نہیں اوروں کووہ کھانا،کھانامنع ہے۔ ⁽¹⁾ (کشف الغطا)اورصرف پہلے دن کھانا بھیجناسنت ہے،اس کے بعد مکروہ۔ ⁽²⁾

(عالمگیری)

مسئل الروافن کے بعدمیّت کے مکان پر آنا اور تعزیت کرنا بدعت ہے۔ (3) (روافحتار) اور فن کے بعدمیّت کے مکان پر آنا اور تعزیت کر کے اپنے اپنے گھر جانااگرا تفا قاً ہو تو حرج نہیں اوراس کی رسم کرنا نہ چاہیے اور میّت کے مکان پرتعزیت کے لیےلوگوں کا مجمع

کرنا فن کے پہلے ہو یابعداسی وفت ہو یاکسی اوروفت خلاف اُولی ہےاورکریں تو گناہ بھی نہیں۔

مسئانی ایک جوایک بارتعزیت کرآیا اسے دوبارہ تعزیت کے لیے جانا مکروہ ہے۔ ⁽⁴⁾ (درمختار)

سوگ اور نوحه کا ذکر

سَكَ الْهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا نصاریٰ کی مشابہت بھی ہے۔

مَسْعًا اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى والول كوتين دن تك اس ليے بيٹھنا كەلوگ آئيں اور تعزيت كرجائيں جائز ہے مگرتزك بهتر

اور بیاس وفت ہے کے فمروش اور دیگر آ رائش نہ کرنا ہوور نہ ناجائز۔ ⁽⁶⁾ (عالمگیری،رداکختار)

مسئلہ کا ﷺ نوحہ یعنی میت کے اوصاف مبالغہ کے ساتھ بیان کر کے آواز سے رونا جس کوئین کہتے ہیں بالا جماع

حرام ہے۔ یو بیں واویلاو امصیبتا (7) کہد کے چلا نا۔ (8) (جو ہرہ وغیر ہا)

سَسَالُ ١٨﴾ گريبان پياڙنا،مونھ نوچنا، بال ڪھولنا،سر پرخاک ڏالنا،سينه کوڻنا،ران پر ہاتھ مارنا پيسب جاہليت کے

- ۳۱۰۰۰۰ "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٦٦.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في الهدايا و الضيافات، ج٥، ص٤٤٣.
- 3 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٧.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٧٧.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧.
- €..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧.
 - و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٦.
 - 🗗 تعنی مائے مصیبت۔
 - 😵 🔞 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ١٣٩ ،وغيره.

ی کام بیں اور حرام _{- (1)} (عالمگیری)

ست اور است اور است المارہ سوگ جائز نہیں، گرعورت شوہر کے مرنے پر جپار مہینے دس دن سوگ کرے۔ (2) (حدید ش)

مَسَنَانُ الله حضورا قدس صلى الله تعالى عليه وسلم نے مسئنان واز بلند نه ہو تو اس کی ممانعت نہیں، بلکہ حضورا قدس صلی الله تعالی علیه وسلم نے حضرت ابرا ہیم رضی الله تعالی عند کی وفات پر بُکا فر مایا۔ (3) (جو ہرہ) اس مقام پر بعض احادیث جونو حدو غیرہ کے بارہ میں وارد ہیں ذکر کی جاتی ہیں کہ مسلمان بغور دیکھیں اور اپنے بہال کی عورتوں کوسنا کیں، کہ یہ بلا ہندوستان کی اکثر عورتوں میں ہندووں کی تقلید سے یائی جاتی ہے۔

خلینٹ 🕽 💨 بخاری ومسلم عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ،حضور اقد س صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے ہیں :

''جومونھ پرطمانچہ مارے اور گریبان پیاڑے اور جاہلیت کا پکار نا پکارے (نوحہ کرے) وہ ہم سے نہیں۔'' (4)

خَلِيْتُ ٢ ﴾ صحیحین میں ابو بردہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی واللفظ کمسلم ، فرماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم : ''جو سر

منڈائے (⁵⁾اورنو حدکرے اور کپڑے پیاڑے، ہیں اس سے بری ہوں۔' (6)

خاریک سے مسلم شریف میں ابو مالک اشعری رضی الله تعالی عندسے مروی ، فرماتے ہیں صلی الله تعالی علیہ وہلم: ''میری اُمّت میں جیار کام جابلیت کے ہیں ، لوگ آخییں نہ چھوڑیں گے۔

- (1) حسب برفخر کرنااور
- (۲) نسب میں طعن کرنااور
- (۳)ستاروں سے مینھ جا ہنا(فلال کچھتر کے سبب یانی برسے گا)اور
 - (۴) نوچهرنا

اور فرمایا: ''نوحه کرنے والی نے اگر مرنے سے پہلے توبہ نہ کی تو قیامت کے دن اس طرح کھڑی کی جائے گی کہ اس پر

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧.
 - انظر: "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب إحداد المرأة على غير زوجها، الحديث: ١٢٨٠، ج١، ص٤٣٢.
 - 3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٩ _ ١٤٠.
 - ٢٩٧ "صحيح البخاري"، كتاب الحنائز، باب ليس منّا من ضرب الخدود، الحديث: ١٢٩٧، ج١، ص٤٣٩.
 - 🗗 کینی کسی کے مرنے پرجیسے ہندو بھدرا کرتے ہیں۔۱۲
 - 🕳 🌀 "صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، باب تحريم ضرب الخدود... إلخ، الحديث: ١٠٤، ص٦٦.

ایک گرتا قطران کا ہوگا اورایک خارشت کا۔'' (1)

خلینٹ ۴ 💝 صحیحین میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم:'' آگھ کے آنسواور دل

ےغم کےسبباللہ تعالیٰ عذاب نہیں فرما تااور زبان کی طرف اشارہ کر کےفر مایا !کیکن اس کےسبب عذاب یارحم فرما تا ہےاورگھر والوں کےرونے کی وجہ سے میت پرعذاب ہوتا ہے'' ⁽²⁾ یعنی جبکہاس نے دصیّت کی ہویا وہاں رونے کارواج ہواور منع نہ کیا ہو، واللہ تعالیٰ اعلم یا پیمراد ہے کہ ان کے رونے ہے اسے تکلیف ہوتی ہے کہ دوسری حدیث میں آیا،''اے اللہ (عزوجل) کے بندو!

اینے مردے کو تکلیف نہ دو، جبتم رونے لگتے ہووہ بھی روتاہے۔'' (3)

خل پیٹ 🚳 🎺 بخاری ومسلم مغیرہ بن شعبہ رض اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتے ہیں :'' جس بر

نوحه کیا گیا، قیامت کے دن اس نوحه کے سبب اس پرعذاب ہوگا۔ ''(4) لیعنی اُنھیں صورتوں میں

خلینٹ 👣 💝 صحیح مسلم میں ہے ام سلمہ رضی اللہ تعالی عنبا کہتی ہیں: جب ابوسلمہ رضی اللہ تعالی عنہ کا انتقال ہوا، میں نے کہا مسافرت اور پردلیس میں انتقال ہوا،ان پراس طرح روؤں گی جس کا چرچا ہو، میں نے رونے کا تہیّہ کیا تھااورایک عورت بھی اس ارادہ ہے آئی کہ میری مدد کرے، رسول الله صلی الله تعالی علیه بہلم نے اس عورت سے فرمایا: ' 'جس گھر سے الله تعالیٰ نے شیطان کو دومر تنبه نکالا ، تُو اس میں شیطان کو داخل کرنا جا ہتی ہے' ،فر ماتی ہیں : میں رونے سے باز آئی اورنہیں روئی _ (5)

خلایث 🗸 🎥 🚽 تر مذی ا بوموسیٰ رضی الله تعالی عنه سے را وی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتے ہیں :'' جو مرتا ہے اور رونے والااس کی خوبیاں بیان کر کے روتا ہے ،اللہ تعالیٰ اس میّت پر دوفر شنۃ مقررفر ما تاہے جواسے کو نیچۃ ہیں اور کہتے ہیں كيا تُوابساتها؟ _' (6)

ا بن ماجبه ابوا مامه رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتے عین: الله عزوجل خُلِيثُ ٨ كُولِيثُ فرما تاہے:''اےابن آ دم!اگرتُو اوّل صدمہ کے وقت صبر کرے اور ثواب کا طالب ہو تو تیرے لیے جنت کے سواکسی ثواب پر

- 1 "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب التشديد في النياحة، الحديث: ٩٣٤، ص٥٦٥.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب البكاء عند المريض، الحديث: ٢٠٠٤، ج١، ص ٤٤١.
 - المعجم الكبير"، باب القاف، قيلة بنت محرمة العنبرية ، الحديث ١، ج٥ ٢، ص٠١.
- 4 "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب الميت يعذب ببكاء أهله عليه، الحديث: ٩٣٣، ص٥٦٥.
 - 5 "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب البكاء على الميت، الحديث: ٢٢٩، ص٥٥٥.
- شجامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء في كراهية البكاء على الميت، الحديث: ١٠٠٥، ج٢، ص٥٠٣.

🗞 میں راضی نہیں۔'' (1)

خ<u>اریث و گیاں ہے۔</u> احمد وبیہ قی امام حسین بن علی رض اللہ تعالی عنها سے راوی ، کہ فرماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وہ جس مسلمان مردیا عورت پرکوئی مصیبت پنچی اسے یاد کر کے اِ<mark>نگارِ اُلیے وَ اِنگارِ اُلیے کی جُوئن</mark> کیے ، اگر چیم صیبت کا زمانہ دراز ہوگیا ہو، تو اللہ تعالیٰ اُس پر نیا تو اب عطافر ما تا ہے اور ویسابی تو اب دیتا ہے جیسا اُس دن کہ مصیبت پنچی تھی۔'' (2)



اللَّدعز وجل فرما تاہے:

﴿ وَلَا تَقُولُوْ الْمِثَنُ يُتُقِتَلُ فِي سَمِيلِ اللّهِ اَ مُوَاتٌ لَّ بِلْ اَحْيَا اللّهُ وَلَا تَشْعُرُونَ ﴿ (3) ﴿ وَلَا تَقُولُوْ الْمِثَ لِلّهُ مَا يَعْنُ مِنْ اللّهِ اللّهِ وَلَا يَعْنُ مُعْنِيلٍ مِنْ اللّهِ مِنْ اللّهِ اللّهِ وَلَا يَعْنُ مُعْنِيلٍ مِنْ اللّهِ مِنْ اللّهِ اللّهِ وَوَلَا اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ الل

اورفر ما تاہے:

﴿ وَلا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللهِ اَمُواتًا ﴿ بَلْ اَحْيَا ٓعُومُ اَلَّهُمُ اللهُ مُ اللهُ مِنْ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ اللهُ عَنْ اللهُ مِنْ فَلْفِهِمُ اللهُ مِنْ فَلْفِهِمُ اللهُ مِنْ فَلْفِهِمُ وَلاهُمُ يَحْزَنُونَ هُ يَسْتَبْشِرُونَ اللهُ مِنْ فَفْ لِهِ مُ إِلَّذِيْنَ هَا مُنْ اللهُ ا

جولوگ راہ خدا میں قتل کیے گئے انھیں مردہ نہ گمان کر، بلکہ وہ اپنے رب (عزبط) کے بہاں زندہ ہیں انھیں روزی ملتی ہے۔اللہ(عزبط) نے بہاں زندہ ہیں انھیں روزی ملتی ہے۔اللہ(عزبط) نے اپنے فضل سے جوانھیں دیا اس پرخوش ہیں اور جولوگ بعدوالے ان سے ابھی نہ ملے،ان کے لیے خوشخبری کے طالب کہ ان پر نہ کچھ خوف ہے اور نہ وہ ممگین ہوں گے،اللہ (عزبط) کی نعمت اور فضل کی خوشخبری چاہتے ہیں اور یہ کہ ایمان والوں کا اجراللہ (عزبط) ضائع نہیں فرما تا۔

احادیث میں اس کے فضائل بکٹرت وارد ہیں،شہادت صرف اس کا نام نہیں کہ جہاد میں قتل کیا جائے بلکہ:

<u> ڪليڪ ڳ ڳ ايڪ حديث ميں فرمايا: ''اس ڪسواسات شہاد تيں اور ٻيں ۔</u>

(۱) جوطاعون سے مراشہید ہے۔

- "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في العبد على المصيبة، الحديث: ٩٧ ١٥، ج٢، ص٢٦٦.
 - 2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث الحسين بن على رضى الله عنهما، الحديث: ١٧٣٤، ج١، ص ٢٩٥.
 - 3 پ٢، البقرة: ١٥٤.
 - 🐾 🕒 پ٤، ال عمران: ١٦٩ـ١٧١.

شهيد کابيان

- (۲) جوڈوب کر مراشہید ہے۔
- (٣) ذات الجنب مين مراشهيد -
- (۲) جو پیٹ کی بیاری میں مراشہیدہے۔⁽¹⁾
 - (۵) جوجل کرمراشہیدہے۔
- (۲) جس کے اوپر دیوار وغیرہ ڈویڑے اور مرجائے شہیدہے۔
- (۷) عورت کہ بچہ پیدا ہونے یا کوآ رہے بن میں مرجائے شہیدہے۔' (۵)

اس صدیث کوامام مالک (3) وابوداورونسائی نے جابر بن عتیک رض الله تعالی عندے روایت اور:

خلینٹ 🕇 💨 امام احمد کی روایت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: '' طاعون سے

بھا گنے والااس کے مثل ہے، جو جہاد ہے بھا گااور جو صبر کرے اس کے لیے شہید کا جرہے۔ ' (4)

خلینٹ سے احمد ونسائی عرباض بن سار بیرضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کی فرماتے ہیں سلی اللہ تعالی علیہ وہلم:'' جو طاعون میں

مرے،ان کے بارے میں اللہ عزوجل کے دربار میں مقدمہ پیش ہوگا۔ شہدا کہیں گے، یہ ہمارے بھائی ہیں یہ ویسے ہی قتل کیے گئے جور میں بھر نہ بھارے میں اللہ عزوجل کے دربار میں مقدمہ پیش ہوگا۔ شہدا کہیں گے، یہ ہمارے بھائی ہیں یہ ویسے ہی

جیسے ہم اور پچھونوں پروفات پانے والے کہیں گے یہ ہمارے بھائی ہیں یہا پنے بچھونوں پرمرے جیسے ہم۔اللہ عز وہل فرمائے گا: ''ان کے زخم دیکھو،اگران کے زخم مقتولین کے مشابہ ہوں، تو پیانھیں میں ہیں اور انھیں کے ساتھ ہیں۔'' ویکھیں گے توان کے

- زخم شہدا کے زخم سے مشابہ ہوں گے، شہدا میں شامل کردیے جائیں گے۔'' ⁽⁵⁾
- <u> خلیث کی سے این ماجہ کی روایت ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے ہے کہ ارشا و فر مایا مسافر ش</u>ے کی موت شہادت ہے۔ (6)
- س.... اس سے مراداست قاہے یا دست آنا دونوں قول میں اور بیلفظ دونوں کوشامل ہوسکتا ہے، لبذا اس کے فضل سے امید ہے کہ دونوں کوشہادت کااجر ملے ۱۲ مند حفظہ ربہ
- النهى عن البكاء (وَالْمَرُأَةُ تَمُوتُ بِجُمْعٍ فَهِيَ شَهِيئَةٌ) ("سنن النسائي"، كتاب الجنائز، باب النهى عن البكاء على الميت، الحديث: ١٨٤٧، ص ٢٢٠٩) دون قوله: فهي.

جس کے بیمعنی ہیں کہا لیمی چیز سے مری، جواس میں اکٹھی ہے جدانہ ہوئی اس میں ولاوت وزوال بکارت دونوں داخل ہیں۔ ۱۲

- € "الموطأ " لإمام مالك، كتاب الجنائز، باب النهي عن البكاء على الميت، الحديث: ٦٣٥، ج١، ص٢١٨.
 - **4**..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد الله، الحديث: ١٤٨٨١، ج٥، ص١٤٢.
 - "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث العرباض بن سارية، الحديث: ٥٩ ١٧١٠ ج٦، ص٨٦.
- 6 "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء فيمن مات غريبا، الحديث: ١٦١٣، ج٢، ص٢٧٥.

ا شهید کابیان 🔁 🗨

ں کے سوااور بہت صورتیں ہیں جن میں شہادت کا ثواب ملتاہے،امام جلال الدین سیوطی وغیرہ ائمہ نے ان کو ذکر کیا ۔

ہے،بعض یہ ہیں۔

(۹) سِل کی بیاری میں مرا۔

(۱۰) سواری سے گر کر مامر گی سے مرا۔

(۱۱) بخارمیں مرا۔

(۱۲) مال یا

(۱۳) جان يا

(۱۴) اہل یا

(۱۵) کسی حق کے بچانے میں قتل کیا گیا۔

(١٦) عشق مين مرابشر طيكه پا كدامن هواور چھپايا ہو۔

(۱۷) کسی درندہ نے پھاڑ کھایا۔

(١٨) بادشاه نے ظلماً قید کیایا

(۱۹) مارااورمر گیا۔

(۲۰) کسی موذی جانور کے کاٹنے سے مرا۔

(۲۱) علم دین کی طلب میں مرا۔

(۲۲) مؤذن كه طلب ثواب كے ليے اذان كہتا ہو۔

(۲۳) تاجرراست گو۔

(۲۴) جسے سمندر کے سفر میں مثلی اور قیے آئی۔

(۲۵) جواینے بال بچوں کے لیے سعی کرے، ان میں امراتبی قائم کرے اور انھیں حلال کھلائے۔

(٢٦) جو مرروز يجيس باريه يرُّ هِ اللَّهُمَّ باركُ لِي فِي الْمَوْتِ وَفِيْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ.

(۲۷) جوچاشت کی نماز پڑھے اور ہر مہینے میں تین روز بے رکھے اور وتر کوسفر وحضر میں کہیں ترک نہ کرے۔

(۲۸) فسادِاً مّت کے وقت سنت بڑمل کرنے والا،اس کے لیے سوشہید کا ثواب ہے۔

(٢٩) جومرض مين لَا إللهَ إلَّا أنْتَ سُبُحَانَكَ إنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ عِإِلَيس باركهاوراس مرض مين

مرجائے اوراحپھا ہو گیا تواس کی مغفرت ہوجائے گی۔

(۳۰) کفارے مقابلہ کے لیے سرحد پر گھوڑ اباند صنے والا۔

(۳۱) جو ہررات میں سور ہ یُس شریف پڑھے۔

(۳۲) جوباطهارت سویااورمر گیا۔

(٣٣) جونبی صلی الله تعالی علیه وسلم پر سوبار دُرُ و د شریف پڑھے۔

(۳۴) جو سیے ول سے بیسوال کرے کہ اللہ (عزوم) کی راہ میں قتل کیا جاؤں۔

(۳۵) جو جُعُدَ کے دن مرے۔

(٣٦) جو آئو وُ أَبِ اللهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيُطُنِ الوَّجِيْمِ تين بار پڑھ کرسورہ حشر کی پچھلی تین آئیتیں کرٹے ، اللہ تعالیٰ ستر ہزار فرشتے مقرر فرمائے گا کہ اس کے لیے شام تک استغفار کریں اور اگر اس دن میں مرا تو شہید مرا اور جو شام کو کے ہے تک کے لیے یہی بات ہے۔ (1)

مسائل فقهیّه

اصطلاح فقہ میں شہیداس مسلمان عاقل بالغ طاہر کو کہتے ہیں جوبطور ظلم کسی آلۂ جارحہ نے آل کیا گیا اور نفس قبل سے مال نہ واجب ہوا ہوا ورد نیا سے نفع نہ اٹھا یا ہو۔ (2) شہید کا تھم یہ ہے کو نسل نہ دیا جائے ، ویسے ہی خون سمیت وفن کر دیا جائے۔ (3) تو جہال یہ تھم پایا جائے گا فقہا اسے شہید کہیں گے ورنہ ہیں، مگر شہید فقہی نہ ہونے سے بیلازم نہیں کہ شہید کا ثواب بھی نہ پائے، صرف اس کا مطلب اتنا ہوگا کو نسل دیا جائے وہیں۔

<u>مَسَعًا ﴾ آپالغ</u> اورمجنون کونسل دیا جائے ،اگر چہ وہ کسی طرح قتل کیے گئے ، جنب اور حیض ونفاس والی عورت خواہ ابھی حیض ونفاس میں ہویاختم ہو گیا مگرا بھی عنسل نہ کیا توان سب کونسل دیا جائے۔⁽⁴⁾ (ردالمختار)

ے۔ <u>مسئالہ کی جی</u>ض شروع ہوئے ابھی پورے تین دن نہ ہوئے تھے کہ قبل کی گئی تواسے غسل نہ دیں گے کہ ابھی پنہیں کہہ

- 1 "(دالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، مطلب في تعداد الشهداء، ج٣، ص ١٩٥ ـ ١٩٧.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٧ _ ١٨٩.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص ١٩١.
 - 🐒 🐠 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٧.

علتے کہ حائض ہے۔ ⁽¹⁾ (درمختار)

بندوق کوبھی آلئرجار حد کہیں گے۔⁽³⁾ (روالمحتار)

مرکایا کوفا کہ نشانہ پر مارر ہاتھا مگرکسی آ دمی کولگا اور مرکایا یا کوئی شخص نئی تلوار لیے سوگیا اور سوتے میں کسی آ دمی پروہ تلوار گر پڑی وہ مرکایا یا کوئی شخص نئی تلوار لیے سوگیا اور سوتے میں کسی آ دمی پروہ تلوار گر پڑی وہ مرکایا یا کوئی شخص نئی تلوار لیے سوگیا اور سوتے میں کسی آ دمی پروہ تلوار گر پڑی وہ مرکایا یا کسی شہریا گاؤں میں یاان کے قریب مقتول پڑا ملا اور اس کا قاتل معلوم نہیں ، ان سب صورتوں میں شنسل دیں گے اور اگر مقتول شہروغیرہ میں ملا اور معلوم نہیں کہ کس نے قبل کیا ہویا کہ اگر چو میں اگر جنگل میں ملا اور معلوم نہیں کہ کس نے قبل کیا تو غنسل نہ دیں گے۔ یو ہیں اگر ڈاکوؤں نے قبل کیا تو غنسل نہ دیں گے۔ یو ہیں اگر ڈاکوؤں نے قبل کیا تو غنسل نہ دیں گے۔ یو ہیں اگر ڈاکوؤں نے قبل کیا تو غنسل نہ دیں گے۔ ہو ہیں اگر ڈاکوؤں نے قبل کیا تو غنسل نہ دیں گے، ترضیار سے قبل کیا ہویا کسی اور چیز ہے۔ (دوالحق روغیرہ)

مسئان کی امر خارج ہے ہمثلاً قاتل وادلیائے مقتول میں اسلح ہوگی یا باپ نے ہوا بلکہ وجوب مال کسی امر خارج سے ہے، مثلاً قاتل واولیائے مقتول میں صلح ہوگئی یا باپ نے بیٹے کو مار ڈالا یا کسی ایسے کو مارا کہ اس کا وارث بیٹا ہے، مثلاً اپنی عورت کو مار ڈالا اور عورت کا وارث بیٹا ہے جو اس شوہر سے ہے تو قصاص کا مالک یہی لڑکا ہوگا مگر چونکہ اس کا باپ قاتل ہے قصاص ساقط ہوگیا تو ان صورتوں میں غسل نہ دیا جائے۔ (در المختار وغیرہ)

<u> مَسِعًا ﴾ ﴾ اگرفتل بطورظلم نه ہو ہلکہ قصاص یا حدیا تعزیر میں قتل کیا گیا یا درندہ نے مار ڈالا تو عنسل دیں گے۔ (6)</u> (درمختار)

سَسَعَانُ کُونِ الله کوئی تخص گھائل ہوا مگراُس کے بعدد نیا ہے متنع ہوا، مثلاً کھایایا بیایاسویایاعلاج کیا، اگر چہ یہ چیزیں بہت قلیل ہوں یا خیمہ میں گشہرایعنی وہیں جہاں زخمی ہوایا نماز کا ایک وقت پورا ہوش میں گزرا، بشر طیکہ نماز اداکرنے پر قادر ہویا وہاں

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٧.
 - 2 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ص١٤٣.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٩.
 - 4 المرجع السابق، وغيره.
 - 🗗 المرجع السابق.
- 6 "الدرالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٩٢.

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام)

ے اُٹھ کر دوسری جگہ کو چلا یا لوگ اُسے معرکہ سے اُٹھا کر دوسری جگہ لے گئے خواہ زندہ پہنچا ہو یا راستہ ہی میں انتقال ہوا یا کسی دنیوی بات کی وصیّت کی یا بچھ خرید ایا بہت ہی با تیں کیں ، تو ان سب صورتوں میں خسل دیں گے ، بشر طیکہ بیا مور جہاد ختم ہونے کے بعد واقع ہوئے اور اگر اثنائے جنگ میں ہوں تو یہ چیزیں مانع شہادت نہیں بعن غسل نہ دیں گے اور وصیت اگر آخرت کے متعلق ہویا دوا کہ بات بولا اگر چیاڑائی کے بعد تو شہید ہے خسل نہ دیں گے اور اگر لڑ ائی میں نہیں قتل کیا گیا بلکہ ظلماً تو ان چیزوں میں سے اگر کوئی یائی گئی غسل دیں گے ور نہیں۔ (۱) (در مختار ، ردالحتار)

سَسَنَا الله على الل

سَسَعَانُ اللَّهِ اپنی جان یا مال یا کسی مسلمان کے بچانے میں لڑااور مارا گیاوہ شہید ہے، لوہے یا پھر یالکڑی کسی چیز سے قل کیا گیا ہو۔ (⁴⁾ (عالمگیری)

سَسَعَالُهُ اللهِ وَكُشْتِيوں مِيں مسلمان تھے، دشمن نے ايک شتی پر آگ بھينگی په لوگ جل گئے، وہ آگ بڑھ کر دوسری کشتی میں گئی ہے بھی جلے تواس دوسری کشتی والے بھی شہید ہیں۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٩٤_١٩٤.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج ١، ص ١٦٧ ـ ١٦٨.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص ٨٩٨، وغيرهما.
 - 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٩٠.
 - ₫..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج١، ص١٦٨.
 - 5 المرجع السابق.

🗳 📶 🔭 - مشرک کا گھوڑا حچھوٹ کر بھا گا اوراُس پر کوئی سوارنہیں اس نے کسی مسلمان کو کچل دیا یامسلمان نے کا فریر تیر چلایا وہ مسلمان کولگایا کا فرکے گھوڑ ہے ہے مسلمان کا گھوڑا بھڑ کا اُس نے مسلمان سوار کوگرادیایا معاذ اللہ! مسلمانوں نے فرار کی کا فروں نے ان کوآ گ یا خندق کی طرف مضطر کیا یامسلمانوں نے اپنے گرد گو کھر و بچھائے تھے پھراُس پر چلے اور مر گئے ان سے صورتوں میں غسل دیاجائے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

863

سَسَانُ ١٦ ﴾ لڑائی میں کسی مسلمان کا گھوڑا بھڑ کا یا کافروں کا حجنڈا دیکھے کربدکا ،مگر کافروں نے اسے نہیں بھڑ کا یا اوراس نے سوار کو گرا دیا وہ مرگیا یا کافر قلعہ بند ہوئے اورمسلمان شہریناہ پرچڑھے، اُس پر سے پھسل کرکوئی گرا اور مرگیا یا معاذ اللہ! مسلمانوں کوشکست ہوئی اورایک مسلمان کی سواری نے دوسرے مسلمانوں کو کچل دیا،خواہ وہ مسلمان اس برسوار ہویا باگ پکڑ کر لیے جاتا یا پیچھے سے ہانکتا ہویادتمن برحملہ کیااور گھوڑے سے گر کر مرگیا ،ان سب صورتوں میں عسل دیا جائے۔⁽²⁾ (عالمگیری) ہوکہ آلۂ جارجہ سے ظلماً قتل کیا گیاغسل دیا جائے ۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سنسٹان 👣 🦫 شہید کے بدن پر جو چیزیں ازقشم کفن نہ ہوں اُ تار لی جا کیں ،مثلاً پیشین زرہ ٹو بی ،خودہ تھیار،روئی کا کیڑا ا ادرا گر کفن مسنون میں کچھ کی پڑے تواضا فہ کیا جائے اور یا جامہ نیا ُ تارا جائے اورا گر کمی ہے گر پورا کرنے کو کچھنہیں تو پیشین اور روئی کا کیڑانہاُ تاریں،شہید کےسب کیڑے اُ تارکرنئے کیڑے دینا مکروہ ہے۔(4) (عالمگیری،رداکھتا روغیرہا)

سَيِعًا اللهُ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ ا اورا گر کیڑے میں نجاست گی ہو تو دھوڈ الیں۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری وغیرہ) شہید کی نمازِ جناز ہیڑھی جائے۔ ⁽⁶⁾ (عامهٔ کتب) سَبِينَا ﴾ آپھے۔ دتمن پروارکیاضرباُس برنہ بڑی، بلکہ خوداس پر بڑی اورمر گیا تو عنداللہ شہید ہے،مگرعسل دیں اورنماز

ره هيس _⁽⁷⁾ (جويره)

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادي والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج١، ص١٦٨.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 المرجع السابق، "و ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص ١٩١، وغيرهما.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج١، ص١٦٨، وغيره.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص ١٩١.
 - ···· "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ص ١٤٥.

کعبۂ معظمہ میں نماز پڑھنے کا بیان

ا و ۲ کینٹ ا و ۲ کی مسلم وضیح بخاری میں ہے عبداللہ بن عمر رضی اللہ نعالی عنہا کہتے ہیں ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اور

اسامہ بن زیدوعثمان بن طلحہ حجببی وبلال بن رباح رضی اللہ تعالی عنبم تعبۂ معظمہ میں داخل ہوئے اور دروازہ بند کرلیا گیا کچھ دیر تک وہاں تھہرے جب باہر تشریف لائے ، میں نے بلال رضی اللہ تعالی عنہ سے بوچھا، حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے کیا کیا؟ کہا: ایک .

سَسَعَانُ اللّٰ کعبۂ معظّمہ کے اندر ہرنماز جائز ہے، فرض ہو یانفل تنہا پڑھے یابا جماعت ، اگر چدامام کا رُخ اورطرف ہواور مقتدی کا اورطرف گر جب کہ مقتدی کی پشت امام کے سامنے ہو تو مقتدی کی نماز نہ ہوگی اور اگر مقتدی کا مونھ امام کے مونھ کے سامنے ہو تو ہوجائے گی ، مگر کوئی چیز اگر درمیان میں حائل نہ ہو تو مگر وہ ہے اور اگر مقتدی کا مونھ امام کی کروٹ کی طرف ہو تو بلا کراہت جائز۔ (جو ہرہ ہ، درمخارو غیر ہما)

مسئان کی جیت پرنماز پڑھنا بھی جب بھی یہی صورتیں ہیں، مگر اُس کی حیب پرنماز پڑھنا بھی مکروہ ہے۔ (3) (تنوبرالابصار)

سَسَنَا الله مسجد الحرام شریف میں کعبہ معظمہ کے گرد جماعت کی اور مقتدی کعبہ معظمہ کے چاروں طرف ہوں جب بھی جائز ہے اگر چہ مقتدی ہو بہنست امام کے کعبہ سے قریب تر ہو، بشر طیکہ بیم تعتدی جو بہ نسبت امام کے قریب تر ہے ادھر نہ ہوجس طرف امام ہو بلکہ دوسری طرف ہواور اگر اسی طرف ہم جس طرف امام ہے اور بہنست امام کے قریب تر ہے تو اُس کی نماز نہ ہوئی۔ (4) (عامہ کتب)

سَسَعَانُ کُن اللہ اللہ اللہ کے اندر ہے اور مقتدی باہر تو اقتد اصحیح ہے، خواہ امام تنہا اندر ہویا اس کے ساتھ بعض مقتدی بھی ہوں، مگر دروازہ کھلا ہونا چاہیے کہامام کے رکوع وجود کا حال معلوم ہوتار ہے اورا گر دروازہ بندہے مگرامام کی آواز آتی ہے جب بھی

^{● &}quot;صحيح البخاري"، كتاب الصلاة، باب الصلاة بين السواري في غير جماعة، الحديث: ٥٠٥، ج١، ص١٨٨.

الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ص٥١٠.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص١٩٨، وغيرهما.

^{3 &}quot;تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص١٩٨.

^{﴾ &}quot;تنوير الأبصار" و "ردالمحتار" كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص٩٩، وغيرهما.

جرج نہیں گرجس صورت میں امام تنہا اندر ہو کرا ہت ہے کہ امام تنہا بلندی پر ہوگا اور بیکروہ ہے۔ (1) (در مختار) روالمختار) مسئل کی گئے ۔ امام باہر ہواور مقتدی اندر جب بھی نماز شیح ہے بشر طیکہ مقتدی کی بیثت امام کے مواجہہ میں نہ ہو۔ (2) (روالمختار)

865

قد تم هذا الجزء بحمد الله تعالى وله الحمد اولا واخرا وباطنا وظاهرا والصلوة والسلام على من ارسله شاهدا ومبشرا ونذيرا وداعيا الى الله باذنه وسراجا منيرا واله واصحابه وابنه وحزبه اجمعين الى يوم الدين والحمد لله رب العلمين وانا الفقير الى العنى ابو العلا امجد على الاعظمى غفر الله ولوالديه امين.

و تصدیق جلیل و تقریظ ہے مثیل

امام ابلسنت، ناصر دين وملّت ، محى الشريع كاسرالفتند، قامع البدعه ، مجد دالماً تدالحاضره ، صاحب الحجة القابره ، سيدى وسندى وكنزى و ذخرى ليومى وغدى اعلى حضرت مولنا مولوى حاجى قارى مفتى احمد رضا خان صاحب قادرى بركاتى نفع الاسلام و المسلمين باسراره القدسيه و كما لاته المعنويه والصوريه بسُم الله الوَّحُمن الوَّحِيْم ط

الحمد لله وكفى وسلم على عباده الذين اصطفل لا سيما على الشارع المصطفل ومقتفيه في المشارع اولى الصّدق والصفا.

فقیر غفرله المولی القدیر نے بیر مبارک رساله بہارِشریعت حصهٔ چہارُم تصنیف لطیف اخی فی الله ذی المجد والجاہ والطبع السلیم والفکرالقویم والفضل والعلی مولوی حکیم امجرعلی قا دری برکاتی اعظمی بالمذہب والمشر بواسکنی رزقه الله تعالی فی الدارین الحسنی مطالعه کیا المحمد لله مسائل صححه رجحه محققه منتحه پرشتمل پایا۔ آج کل الیمی کتاب کی ضرورت تھی کہ عوام بھائی سلیس اردو میں صحح مسئلے پائیں اور گمراہی واغلاط کے مصنوع ولیمع زیوروں کی طرف آئے ہا نامی مولی عزوج مصنف کی عمر وعلم وفیض میں برکت دے اور ہرباب میں اس کتاب کے اور حصص کافی وشافی ووافی وصافی تالیف کرنے کی توفیق بخشے اور آخیں اہل سنت میں شہول فرمائے۔ آمین

والحمد لله رب العلمين وصلى الله تعالى على سيدنا ومولنا محمد واله وصحبه وابنه وحزبه الجمعين امين. ذي الحجة الحرام \ 1 mm معريه على صاحبها واله الكرام افضل الصلوة والتحية امين.

- ❶ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص٢٠٠.
 - 🧣 👂 "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص٢٠٠.

ۺٚ<u>ؚٚڵڛٚڵڿۜ؇ٳڮؠٛ</u> نَحُمَدُهٔ وَ نُصَلِّىُ عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيُم ط

زکاۃ کا بیان

اللُّدعزوجل فرما تاہے:

﴿ وَمِسَّا مَازَ تَنْهُمُ يُنْفِقُونَ أَنْ ﴾ (1)

اور متقی وہ ہیں کہ ہم نے جوانھیں دیا ہے،اُس میں سے ہماری راہ میں خرچ کرتے ہیں۔

اورفر ما تاہے:

﴿ خُلُ مِنَا مُوَالِهِمُ صَلَ قَدَّ تُطَهِّرُهُمُ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا ﴾ (2)

ان کے مالوں میں سے صدقہ لو،اس کی وجہ سے انھیں یا ک اور تھرا بنادو۔

اورفر ما تاہے:

﴿ وَالَّذِينَ هُمُلِلزَّكُوةِ فَعِلُوْنَ ﴿ ﴾ (3)

اورفلاح یاتے وہ ہیں جو زکا ۃ اداکرتے ہیں۔

اورفر ما تاہے:

﴿ وَمَا اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءِ فَهُو يُخْلِفُ فَ وَهُو خَيْرُ الرِّزِقِينَ ﴿ ﴾ (4)

اور جو کچھتم خرچ کرو گے،اللہ تعالیٰ اُس کی جگہاورد ہےگااوروہ بہتر روزی دینے والا ہے۔

اورفر ما تاہے:

﴿ مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ آمُوالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللهِ كَمَثَلِ حَبَّةِ آثَبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُثُبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ واللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَّشَاءُ واللَّهُ وَاسِمٌ عَلِيْمٌ ﴿ آلَّن لِينَ يُنْفِقُونَ آمُوا لَهُمْ فِي سَمِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لا يُتَبِعُونَ

- 1 سس ب ١ ، البقرة: ٣.
- 2 پ ۱، التوبة: ۱۰۳.
- 3 پ٨١، المؤمنون: ٤.
 - 🐾 🕰 پ۲۲، سبا: ۳۹.

﴾ مَا اَنْفَقُوا مِنَّا وَّلاَ اَذِي لا لَهُمُ اَجُرُهُمْ عِنْدَى مَ بِيهِمْ ۚ وَلا خَوْقٌ عَلَيْهِمْ وَلاهُمُ يَحْزَنُونَ ۞ قَوْلٌ مَّعُرُوفٌ وَّ

مَغْفِرَةٌ خَيْرٌ قِنْصَدَقَةٍ يَتَبَعُهَآ اَذِّي لَواللَّهُ عَنِيٌّ حَلِيْمٌ ﴿ (1)

جولوگ اللہ (عز دجل) کی راہ میں خرچ کرتے ہیں اُن کی کہاوت اس دانہ کی ہے جس ہے سات بالین کلیں۔ ہر بال میں سو دانے اوراللّٰد (عزوجل) جسے جا ہتا ہے زیادہ ویتا ہے اوراللّٰد (عزوجل) وسعت والا ، بڑاعکم والا ہے۔ جولوگ اللّٰہ (عزوجل) کی راہ میں اپنے مال خرچ کرتے پھرخرچ کرنے کے بعد نہا حسان جتاتے ، نہاؤیت دیتے ہیں ،اُن کے لیےاُن کا ثواباُن کے رب کے حضور ہے اور نہ اُن پر کچھ خوف ہے اور نہ وہ مملکین ہول گے۔اچھی بات اور مغفرت اس صدقہ سے بہتر ہے جس کے بعد اذیت دیناہواورالٹد (عزوجل) بے برواہ حلم والا ہے۔

اورفرما تاہے:

﴿ لَنُ تَنَالُواالْبِرَّحَتَّى تُنْفِقُوْ احِبَّاتُحِبُّوْنَ ۗ وَمَاتُنْفِقُوْ امِنْ شَيْءِ فَإِنَّا اللَّهَ بِهِ عَلِيْمٌ ﴿ ﴾ (2) ہرگز نیکی حاصل نہ کرو گے جب تک اس میں سے نہ خرج کرو جسے محبوب رکھتے ہواور جو کچھ خرچ کرو گے اللہ (عزوجل) ،

أسے حانتا ہے۔

اورفر ما تاہے:

﴿ لَيْسَ الْبِرَّانَ ثُوَّا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَالْكِنَّ الْبِرَّمَنْ امْنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِر وَالْمَلْلِكَةِ وَالْكِتْبِ وَالنَّبِدِينَ ۚ وَالْحَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْلِي وَالْيَتْلِي وَالْسَلِكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيلُ لِوَالسَّالِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَ ٱقَامَالصَّلوةَوَاقَالنَّالوَّكُوةَ ۚ وَالْمُوْفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَاعُهَدُوا ۚ وَالصَّبِرِينَ فِي الْبَاسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِيْنَ الْبَاسِ ۖ اُولَلِكَ النَّن يُنَصَدَقُوْا ﴿ وَاُولِيكَ هُمُ الْبُتَقُوْنَ ﴿ (3)

نیکی اس کا نامنہیں کہمشرق ومغرب کی طرف مونھ کر دو، نیکی تو اُس کی ہے جواللہ (۶۶ وجل) اور پچھلے دن اور ملائکہ و کتاب وانبیا پرایمان لایااور مال کوأس کی محبت بررشته دارول اور تیمول اور مسکینوں اور مسافر اور سائلین کواور گردن چھٹانے میں دیااورنماز قائم کی اورز کا ة دی اورنیک وه لوگ مین که جب کوئی معامده کریں تواییخ عہد کو پورا کریں اور نکلیف ومصیبت اورلڑائی

کے وقت صبر کرنے والے وہ لوگ سیج ہیں اور وہی لوگ متقی ہیں۔

🕕 پ٣، البقرة: ٢٦١ _ ٢٦٣.

2 پ٤، ال عمران: ٩٢.

3 پ٢، البقرة: ١٧٧.

اورفر ما تاہے:

﴿ وَلا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا اللهُ مِنْ فَضْلِم هُوَخَيْرًا لَّهُمْ 'بَلْ هُوَشَرَّلَّهُمْ ' سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوا

به يَوْمَ الْقِلِمَةِ ﴿ ﴿ (1)

جولوگ بخل کرتے ہیں اُس کے ساتھ جواللہ (عزوجل) نے اپنے فضل سے اُنھیں دیا۔وہ پی گمان نہ کریں کہ بیان کے لیے بہتر ہے بلکہ بدأن کے لیے بُراہے۔اس چیز کا قیامت کے دن اُن کے گلے میںطوق ڈالا جائے گاجس کےساتھ جُل کیا۔ اورفر ما تاہے۔

﴿ وَالَّنِينَ يَكُنِزُونَ النَّاهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيْلِ اللهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَدَابِ اليَّيْ فَي وَمَ يُحلى عَلَيْهَا فِي نَامِ جَهَنَّمَ فَتُكُوى بِهَاجِبَاهُهُمُ وَجُنُوبُهُمُ وَظُهُونُ هُمُ لَهُ أَمَا كَنَرْتُمُ لِا نَفْسِكُمْ فَذُوقُوْامَا كُنْتُمُ قَلْنِزُوْنَ ﴿ لَا ثَالُهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ال

جولوگ سونا اور چاندی جمع کرتے اور اُسے اللہ (عزوجل) کی راہ میں خرچ نہیں کرتے ہیں، انھیں دروناک عذاب کی خوشنجري سنادو، جس دن آتش جہنم ميں وہ تيائے جائيں گےاوراُن ہےاُن کی پیشانیاں اور کروٹیں اور پیٹھیں داغی جائیں گی (3) (اوراُن سے کہاجائے گا) یہوہ ہے جوتم نے اپنے نفس کے لیے جمع کیاتھا تواب چکھو جوجمع کرتے تھے۔ نیز ز کا ق کے بیان میں بکٹرت آیات وارد ہوئیں جن ہے اُس کامہتم بالشّان ہونا ظاہر۔

احادیث اس کے بیان میں بہت ہیں بعض ان میں سے یہ ہیں:

خلینٹ 🚺 و ۲ 💸 صحیح بخاری شریف میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں : ''جس کواللہ تعالیٰ مال دےاوروہ اُس کی زکاۃ ادا نہ کرے تو قیامت کے دن وہ مال شخیسانپ کی صورت میں کر دیا جائے گا، جس کے سریر دوجیتیاں ہوں گی۔وہ سانپاُ س کے گلے میں طوق بنا کر ڈال دیا جائے گا پھراس کی باچھیں پکڑے گا اور کہے گا میں تیرامال ہوں، میں تیراخزانہ ہوں۔''اس کے بعد حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ دسلم) نے اس آیت کی تلاوت کی ﴿ وَ لا بَيْصُمَا لِنَّى

- 1 سيع، ال عمران: ١٨٠.
- 2 پ ۱ ، التو بة: ۳۵ _ ۳۵ .
- حضرت عبدالله بن مسعود رضى الله تعالى عند نے فر ما یا: کوئی روپید دوسر بروپید پر ندر کھا جائے گا۔ ندکوئی اشر فی دوسری اشر فی پر بلکه ز کا ق ند وين والكاجسم اتنابرا كروياجائ كاكه لاكهول كرورون جمع كيهون توجررو بييجداداغ دكال رواه الطبراني في الكبير ١٦منه

"الترغيب و الترهيب"، كتاب الصدقات، الترهيب من منع الزكاة، الحديث: ٢٢، ج١، ص ٣١٠.

بِ اللَّهُ مِنْ يَدِينَ كُنُونَ ﴾ (1) الآمير. اسى كے مثل تر مذى ونسائى وابن ماجە نے عبدالله بن مسعود رضى الله تعالىءنە سے روايت كى ۔

ځ 🛫 👚 🚽 احمد کی روایت ابو ہر برہ رضی اللہ تعالی عنہ سے یوں ہے،'' جس مال کی زکا ۃ نہیں دی گئی ، قیامت کے دن وہ

گنجاسانپ⁽²⁾ ہوگا ، ما لک کودوڑ ائے گا ،وہ بھا گے گا یہاں تک کہانی انگلیاں اُس کےمونھ میں ڈال دےگا۔'' ⁽³⁾

خلینٹ 😙 و 🔊 💝 صحیح مسلم شریف میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، فرماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم :'' جو شخص سونے

جاندی کا مالک ہواوراس کاحق ادانہ کرے توجب قیامت کا دن ہوگااس کے لیے آگ کے پتر بنائے جائیں گےاون پرجہنم کی آ گ بھڑ کائی جائے گی اوراُن ہےاُس کی کروٹ اور بیشانی اور بیٹھ داغی جائے گی ، جبٹھنڈے ہونے برآئیں گے پھرویسے ہی کر دیے جائیں گے۔ یہ معاملہ اس دن کا ہے جس کی مقدار پچاس ہزار برس ہے یہاں تک کہ بندوں کے درمیان فیصلہ ہوجائے ،اب وہ اپنی راہ دیکھے گاخواہ جنت کی طرف جائے یا جہنم کی طرف اور اونٹ کے بارے میں فر مایا: جواس کاحتی نہیں اوا کرتا، قیامت کے دن ہموارمیدان میں لٹا دیا جائے گا اور وہ اونٹ سب کے سب نہایت فریہ ہوکرآ نمیں گے، ہاؤں سے اُسے روندیں گےاورمونھ سے کاٹیں گے، جبان کی بچیلی جماعت گز رجائے گی ، پہلی لوٹے گی اور گائے اور بکریوں کے بارے میں فرمایا: کہاں شخص کو ہموارمیدان میں لٹا نینگے اور وہ سب کی سب آئیں گی ، ندان میں مُڑے ہوئے سینگ کی کوئی ہوگی ، نہ بے سینگ کی ، نہ ٹوٹے سینگ کی اورسینگوں سے ماریں گی اور کھروں سے روندیں گی ⁽⁴⁾اوراسی کے مثل صحیحیین میں اونٹ اور گائے اوربکریوں کی ز کا ۃ نہ دینے میں ابوذ ررضی اللہ تعالی عنہ سے مروی _ ⁽⁵⁾

خلینٹ 💎 💝 سیجے بخاری ومسلم میں ابو ہر رہ درضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی، که رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم کے بعد جب صدیق اکبررضی اللہ تعالیٰ عنه خلیفہ ہوئے ، اس وقت اعراب میں کچھ لوگ کا فر ہوگئے (کہ زکا ق کی فرضیت ہے ا نکار کر بیٹھے) ، صدیق اکبرنے اُن پر جہاد کا حکم دیا، امیر المونین فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا اُن سے آپ کیونکر قبال کرتے ہیں کہ

- السنة "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب إثم مانع الزكاة، الحديث: ٣٠٤٠، ج١، ص٤٧٤. ب٤، ال عمران: ١٨٠.
- 🗨 سانپ جب ہزار برس کا ہوتا ہے تو اس کےسریر بال نکلتے ہیں اور جب دو ہزار برس کا ہوتا ہے، وہ بال گر جاتے ہیں۔ پیمعنی ہیں گنجے سانب کے کہا تناپرانا ہوگا۔ ۱۲ امنہ
 - 3 "المسند" للإمام أحمدبن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ١٠٨٥٧، ج٣، ص٦٢٦. بەجدىپ طوىل يىمختصراُ ذكر كى گئى۔١٢منه
 - 4 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب إثم مانع الزكاة، الحديث: ٩٨٧، ص ٩٩١.
 - "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب زكاة البقر، الحديث: ١٤٦٠، ج١، ص٤٩٢.

سول الله صلی الله صلی الله علی بولم نے تو یہ فرمایا ہے، مجھے تکم ہے کہ لوگوں سے لڑوں یہاں تک کہ آلا الله والله الله الله الله کہ لیا، اُس نے اپنی جان اور مال بچالیا، مگر حق اسلام میں اور اس کا حساب الله (عزوجل) کے ذمہ ہے (یعنی بیلوگ تو آلا الله کہ کہ لیا، اُس نے اپنی جان اور مال بچالیا، مگر حق اسلام میں اور اس کا حساب الله (عزوجل) کے ذمہ ہے (یعنی بیلوگ تو آلا الله کہ کہنوا لے ہیں، ان پر کسے جہاد کیا جائے گا) صدیق اکبر نے فرمایا: خدا کی قتم ! میں اس سے جہاد کروں گا، جو نماز وزکا قامین تفریق کرے (ا) (کہ نماز کوفرض مانے اور زکا قاکی فرضیت سے انکار کر ہے کہ تو اس پر اُن سے جہاد کری کا بچہ جورسول الله صلی الله تعالی علیہ منا کہ اللہ تعالی نے صدیق کا سینہ کھول دیا ہے۔ اُس وقت میں نے بھی کروں گا، فاروقی اعظم فرماتے ہیں: واللہ میں نے دیکھا کہ اللہ تعالی نے صدیق کا سینہ کھول دیا ہے۔ اُس وقت میں نے بھی بیجیان لیا کہ وہی حق ہے۔ اُس وقت میں نے بھی

خلیف کی کہ جب بیآ یک کر یہ اللہ بن عباس رضی اللہ تائی عہاسے روایت کی ، کہ جب بیآ یکر بیہ ﴿ وَالَّنِ بِنَى یَکُونُونَ اللّٰهِ هَبِ وَ اللّٰهِ هَبِ وَالْحِرَ اللّٰهِ وَقَى ، مسلمانوں پرشاق ہوئی (سمجھے کہ چاندی سونا جمع کرنا حرام ہے تو بہت وقت کا سامنا ہوگا) ، فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالی عند نے کہا: میں تم سے مصیبت دُور کردوں گا۔ حاضر خدمت اقد س ہوئے عرض کی ، یارسول اللہ (صلی اللہ تعالی علیہ بہم) ہے اصحاب پر گرال معلوم ہوئی فرمایا: کہ 'اللہ تعالی نے زکا قاتواس لیے فرض کی کہمارے باقی مال کو پاک کروے اور مواریث اس لیے فرض کیے کہمارے بعد والوں کے لیے ہو (یعنی مطلقاً مال جمع کرنا حرام ہوتا تو زکا قات مال کی طہارت نہ ہوتی ، بلکہ زکا قاس چیز پر واجب ہوتی اور میراث کا ہے میں جاری ہوتی ، بلکہ جمع کرنا حرام وہ ہے کہ زکا قانہ دے) اس برفاروق اعظم نے تکبیر کہی۔ (4)

خلین کے بیاری اپنی تاریخ میں اورامام شافعی و ہزار وہیمجق اُم المونین صدیقه رض الله تعالیٰ عنها سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه دسلم فرماتے ہیں:'' زکا قاکسی مال میں نہ ملے گی ، مگر اُسے ہلاک کردے گی۔'' (5) بعض ائمہ نے اس حدیث کے

• اس حدیث ہے معلوم ہوا کہ زی کلمہ گوئی اسلام کیلئے کافی نہیں، جب تک تمام ضروریات دین کا اقر ارنہ کرے اور امیر المونیین فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا بحث کرنا اس وجہ سے تھا کہ ان کے علم میں پہلے یہ بات نہ تھی ، کہ وہ فرضیت کے منکر میں بیرخیال تھا کہ زکا ۃ ویتے نہیں اس کی وجہ سے گنہگار ہوئے ، کا فرتو نہ ہوئے کہ ان پر جہاد قائم کیا جائے ، گر جب معلوم ہوگیا تو فر ماتے ہیں میں نے بیجیان لیا کہ وہی حق ہے، جوصد اق نے سمجھا اور کیا ۔ ۲امنہ

- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الاعتصام، باب الإقتداء بسنن رسول الله صلى الله عليه وسلم، الحديث: ٧٢٨٤، ج٤ ص٠٠٥.
 - 🕥 پ ۱ ، التوبة: ٣٤.
 - ₫ "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في حقوق المال، الحديث: ١٦٦٤، ج٢، ص١٧٦.
 - "شعب الإيمان"، باب في الزكاة، فصل في الاستعفاف عن المسألة، الحديث: ٢٥٣٦، ج٣، ص٢٧٣.

ی میمعنی بیان کیے کہ زکا ۃ واجب ہوئی اورادانہ کی اورا پنے مال میں ملائے رہا توبیر رام اُس حلال کو ہلاک کردے گا اورامام احمہ نے فرمایا کہ معنے بیر ہیں کہ مالدار شخص مال زکاۃ لئے توبیہ مال زکاۃ اس کے مال کو ہلاک کردے گا کہ زکاۃ تو فقیروں کے لیے ہے اور دونوں معنے شیح ہیں۔(1)

خلین و کی کہ حضور (صلی اللہ تعالی علی اللہ اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) فر ماتے ہیں: ''جو

قوم ز کا قنه دے گی،اللہ تعالی اسے قحط میں مبتلا فرمائے گا۔'' (2)

خُریْت کی، که حضور (صلی الله تعالی علیہ وسلم) فرماتے کی، کہ حضور (صلی الله تعالی علیہ وسلم) فرماتے

ہیں: ^{دوخش}ی وتری میں جو مال تلف ہوتا ہے، وہ زکا ۃ نیدرینے سے تلف ہوتا ہے۔' (3)

خلین السلام بی السلام بی احف بن قیس سے مروی، سیدنا ابوذ ررضی اللہ تعالی عند نے فر مایا: '' اُن کے سرپیتان پر جہنم کا گرم بی فررکھیں گے کہ ہڈیاں تو ڈتاسینہ سے نکلے گا۔'' (4) اور شانہ کی ہڈی پر کھیں گے کہ ہڈیاں تو ڈتاسینہ سے نکلے گا۔'' (4) اور شیح مسلم شریف میں یہ بھی ہے کہ میں نے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کوفر ماتے سُنا: که ' بیٹے تو ڈکر کر دوٹ سے نکلے گا اور گدی تو ڈکر

بیثانی ہے۔'' ⁽⁵⁾

خلینٹ الک طبرانی امیر المونین علی کرم الله تعالی وجہا کریم سے راوی ، کہ فرماتے ہیں صلی الله تعالی علیہ ہم کرنے نگے بھو کے ہونے کی تکلیف نہ اٹھا کمیں گے مگر مال داروں کے ہاتھوں ، سُن لو! ایسے تو نگروں سے الله تعالی سخت حساب لے گا اور انھیں در دناک عذاب دے گا۔' (6)

- 1 "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصدقات، الترهيب من منع الزكاة، الحديث: ١٨، ج١، ص٩٠٩.
 - 2 "المعجم الأوسط"، الحديث: ٤٥٧٧ ، ج٣، ص٢٧٥ _ ٢٧٦.
- ③ "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصدقات، الترهيب من منع الزكاة الحديث: ١٦، ج١، ص٣٠٨.
- "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب في الكنازين للأموال والتغليظ عليهم، الحديث: (٩٩٢)، ص٤٩٧.
- "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب في الكنازين للأموال والتغليظ عليهم، الحديث: ٣٥_(٩٩٢)، ص٤٩٨.
 - 6 "الترغيب والترهيب"، كتاب الصدقات، الحديث: ٥، ج١، ص٥٠... و "المعجم الأوسط"، الحديث: ٣٥٧٩، ج٢، ص٣٧٤ _ ٣٧٥.
 - "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ٤٨١٣، ج٣، ص٤٩٣.

📽 🕹 🛂 👚 ابن خزیمه وابن حبان این صحیح میں ابو ہر ریہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

'' دوزخ میں سب سے پہلے تین شخص جا کیں گے،اُن میں ایک وہ تو نگر ہے کہ اپنے مال میں اللہ عز وجل کاحق ادانہیں کرتا۔'' (1)

خلینے 🗗 🥕 🗀 مام احمد مشد میں عمارہ بن حزم رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ حضور اقد س صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتنے ہیں :

کہ' اللہ عز وجل نے اسلام میں چار چیزیں فرض کی ہیں، جوان میں سے تین اداکرے، وہ اُسے کچھ کام نہ دیں گی جب تک پوری

چاروں نه بحالائے ـ نماز ، ز کا ة ،روز هٔ رمضان ، حج بیت اللّد ـ ' ⁽²⁾

خاریث 👣 🥕 طبرانی کبیر میں بسند سیح راوی،عبدالله بن مسعود رضی الله تعالی عنه فر ماتے ہیں: ہمیں حکم دیا گیا که نماز

یژهیس اورز کا ق^و د میں اور جوز کا ق^و نید ہے ،اس کی نماز قبول نہیں ۔ ⁽³⁾

خلین کا 💝 🗢 صحیحین ومسندا حمد وسنن تر مذی میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم : ''صدقہ دینے سے مال کمنہیں ہوتا اور بندہ کسی کاقصور معاف کرے تو اللہ تعالیٰ اس کی عزت ہی بڑھائے گا اور جواللہ (عزبیل)

کے لیے تواضع کرے،اللہ(عزوجل)اسے بلندفر مائے گا۔'' (4)

خلینٹ 🗥 💝 بخاری ومسلم نصیں ہے راوی فر ماتے ہیں صلی اللہ تعالی علیہ وسلم:'' جو څخص اللہ (عزوجل) کی راہ میں جوڑ اخر ج

کرے، وہ جنت کےسب درواز وں سے بلایا جائے گا اور جنت کے کئی درواز سے ہیں، جونمازی ہے درواز وُنماز سے بلایا جائے گا، جوابل جہاد سے بے درواز و جہاد سے بلایا جائے گا اور جوابل صدقہ سے بے درواز و صدقہ سے بلایا جائے گا، جوروز و دار ب باب الرّیان سے بلایا جائے گا۔''صدیق اکبر نے عرض کی ،اس کی تو میچھ ضرورت نہیں کہ ہر دروازے سے بلایا جائے (لیعنی مقصود دخول جنت ہے، وہ ایک دروازہ سے حاصل ہے) مگر کوئی ہے ایسا جوسب درواز وں سے بلایا جائے؟ فرمایا:''ہاں اور میں

أميدكرتا ہوں كتم أن ميں سے ہو۔'' (5) خلیئٹ 👂 🎤 🚽 بخاری ومسلم وتر مذی ونسائی وابن ماجہ وابن خزیمہ ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی،حضورا قدس

صلى الله تعالى عليه وسلم فرماتے ہیں:' وجو محض تھجور برابر حلال کمائی ہے صدقہ کرے اور الله (عز دجل) نہیں قبول فرما تا مگر حلال کو، تواسے

- ❶ "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الزكاة، باب ذكر إدخال مانع الزكاة النار... إلخ، الحديث: ٢٢٤٩، ج٤، ص٨.
- 2 "المسند"، حديث زياد بن نعيم، الحديث: ٤ ، ١٧٨ ، ج٦، ص٢٣٦. "الترغيب و الترهيب" ،الحديث: ١٤ ، ج١، ص٨٠٣.
 - 3 "المعجم الكبير"، الحديث: ١٠٠٥، ج١٠ ص١٠٣.
 - ◘ "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلة والأدب، باب استحباب العفو والتواضع، الحديث: ٢٥٨٨، ص١٣٩٧.
 - 5 "صحيح البخاري "، كتاب فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ٣٦٦٦، ج٢، ص ٢٠٥.
 - و "المسند" للإمام أحمدبن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ٧٦٣٧، ج٣، ص٩٣.

بهِ ارْشِرِيْعَتْ رُصَّةَ جُمُّ (5) 🇨 🗨 (873

🦥 اللّٰد تعالیٰ دستِ راست سے قبول فرما تا ہے پھراسے اُس کے ما لک کے لیے پرورش کرتا ہے، جیسے تم میں کوئی اپنے بچھرے کی

تربيّت كرنا ہے، يہال تك كه وه صدقه يہارٌ برابر ہوجا تاہے " (1)

خلینٹ ۲۰ و ۲۱ ﴾ نسائی وابن ماجه اپنی سنن میں وابن خزیمہ وابن حبان اپنی صحیح میں اور حاکم نے بافا دہ تھیجے ابو ہریرہ و

ابوسعیدرض الله تعالی عنها سے روایت کی ، که رسول الله تعالی علیه وسلم نے خطبہ پڑھا اور پیفر مایا: که 'قشم ہے! اُس کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے۔'' اُس کوتین بار فر مایا پھر سر جُھ کا لیا تو ہم سب نے سر جُھ کا لیے اور رونے لگے، پنہیں معلوم کہ س چیز رقتم

کھائی۔ پھرحضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہلم) نے سرمبارک اُٹھالیا اور چبرۂ اقدس میں خوثی نمایاں تھی تو ہمیں یہ بات سُرخ اونٹوں سے

زياده پياري تقي اور فرمايا: ' حوبنده يانچون نمازي پرهتا ہے اور رمضان كاروز ه ركھتا ہے اور زكاة ديتا ہے اور ساتو كبيره گناموں ہے بچتا ہے اُس کے لیے جنت کے درواز ہے کھول دیے جائیں گے اوراس سے کہاجائے گا کہ سلامتی کے ساتھ داخل ہو'' (2)

خلایث ۲۲ ﴾ 🚽 امام احمد نے بروایت ثقات انس بن ما لک ضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ حضورا قدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ''اپنے مال کی زکاۃ نکال، کہوہ یاک کرنے والی ہے تجھے یاک کردے گی اور رشتہ داروں سے سلوک کراور مسکین

اور پڑوی اور سائل کاحق پیجیان۔" (3)

🕹 پئٹ ۲۳ 💸 🔻 طبرانی نے اوسط وکبیر میں ابوالدرواء رضی اللہ تعالی عنہ سے روابیت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے فرمایا: "زكاة اسلام كائل ہے-" (4)

خلین ۲۴ 💸 🗝 طبرانی نے اوسط میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) فرماتنے ہیں:

''جومیرے لیے چھے چیزوں کی کفالت کرے، میںاُس کے لیے جنت کا ضامن ہوں۔'' میں نے عرض کی ، وہ کیا ہیں یارسول اللہ ا

(صلى الله تعالى عليه وبلم) فرمايا: ' نماز وز كا ة وامانت وشرمگاه وشكم وزبان _'' (5)

خلین ۲۵ 💨 🔻 بزار نے علقمہ ہے روایت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فر مایا: ''تمھارے اسلام کا پورا ہونا بیہ

ہے کہا بینے اموال کی زکا ۃ اداکرو۔" (6)

❶ "صحيح البخاري "، كتاب الزكاة، باب لاتقبل صدقة من غلول، الحديث: ١٤١٠ ، ج١، ص٤٧٦.

2 "سنن النسائي"، كتاب الزكاة، باب وجوب الزكاة، الحديث: ٢٤٣٥، ص٩٩٩.

③ "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسندانس بن مالك، الحديث: ١٢٣٩٧، ج٤، ص٢٧٣.

4. "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ١٩٣٧، ج٦، ص٣٢٨.

5 "المعجم الأوسط"، باب الفاء، الحديث: ٩٢٥، ج٣، ص٩٦٣.

. ١٩٨٠ "مجمع الزوائد"، كتاب الزكاة، باب فرض الزكاة، الحديث: ٤٣٢٦، ج٣، ص١٩٨.

🗳 😸 خ 🙌 🔫 🚽 طبرانی نے کبیر میں ابن عمر رضی الله تعالیٰ عنبا سے روایت کی ، کہ حضور (صلی الله تعالیٰ علیه دِسلم) نے فر ما ما : ''جو

الله ورسول (عزوجل وصلى الله تعالى عليه وسلم) برايمان لا تا ہے، وہ اينے مال كى زكاة اواكرے اور جوالله ورسول (عزوجل وصلى الله تعالى عليه وسلم)

پرایمان لا تا ہے، وہ حق بولے یا سکوت کرے یعنی بُری بات زبان سے نہ ذکا لے اور جواللّٰہ ورسول (عز دجل وسلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) پر

ایمان لا تاہے، وہ اپنے مہمان کا اکرام کرے۔ ' (1)

خلیئٹ ۲۷ 💝 💎 ابوداود نے حسن بھری ہے مرسلاً اور طبرانی وہیہجی نے ایک جماعت صحابۂ کرام رضی اللہ تعالی عنہم سے روایت کی ، کہحضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فر ماتے ہیں: کہ'' زکا ۃ دے کراینے مالوں کومضبوط فلعوں میں کرلواورا سے بیاروں کا

علاج صدقہ ہے کرواور بلا نازل ہونے پر دُعاوت فرع ہے استعانت کرو' (2)

خلینٹ ۲۸ 💨 🔻 ابن خزیمه اپنی سیج اورطبرانی اوسط اور حاکم مشدرک میں جابر رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضورا قدس صلى الله تعالى عليه وللم فرماتے ہيں: 'جس نے اپنے مال كى زكا ة اداكردى ، بيشك الله تعالى نے أس سے شر وُ ورفر ما ديا۔'' (3)

مسائل فقهيّه

ز کا قاشریعت میں اللّٰہ (عزوجل) کے لیے مال کے ایک حصہ کا جوشر ع نے مقرر کیا ہے،مسلمان فقیر کو ما لک کردینا ہے اور وہ فقیر نہ ہاشی ہو، نہ ہاشی کا آزاد کردہ غلام اورا پنا نفع اُس سے بالکل جدا کر لے۔(4) (درمختار)

مَسِيَّاكُونَ اللَّهِ ﴿ زَكَا ةَ فَرْضَ ہِے، اُس كامنكر كافراور نہ دینے والا فاسق اور قل كامستحق اورا داميں تاخير كرنے والا كَنْهَا روم روو الشہادة ہے۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری)

مستان کی جہاج کر دینے سے زکاۃ ادا نہ ہوگی ، مثلاً فقیر کو بہنیت زکاۃ کھانا کھلا دیا زکاۃ ادا نہ ہوئی کہ ما لک کر دینا نہیں پایا گیا، ہاںا گرکھانا دے دیا کہ چاہے کھائے یالے جائے توادا ہوگئی۔ یوہیں بہنیت زکاۃ فقیرکوکپڑا دے دیا یا پہنا دیاا دا ہوگئی۔⁽⁶⁾(درمختار)

- 1 "المجعم الكبير"، الحديث: ١٣٥٦١، ج١١، ص٣٢٤.
- 2 "مراسيل أبي داود" مع "سنن أبي داود"، باب في الصائم يصيب أهله، ص٨.
 - 3 "المعجم الأوسط"، باب الألف، الحديث: ١٥٧٩، ج١، ص ٤٣١.
 - 4..... "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٣ _ ٢٠٦.
 - 5 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٠.
 - 🐒 🚳 "الدرالمختار"معه"ردالمحتار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٤.

كاة كابيان

ﷺ مَستَعَالِمُ اللَّهِ مَعَانِ مِنْ مِنْ مِنْ مَانِ رَبِّنِ كُود مِاز كاة ادانه مُونَى كه مال كا كونى حصدا سے ندد يا بلكه منفعت كا ما لك كيا۔ ⁽¹⁾

(درمختار)

سَسَعَانُ وَ مَا لَك كَرِ نَهِ مِينِ يَبِهِي ضروري ہے كہا يسے كود بے جو قبضه كرنا جانتا ہو، يعنى ايسانہ ہو كہ پھينك دے يا دھوكه كھائے ور نہادا نہ ہوگى ، مثلاً نہايت جيو ٹے بچه يا پاگل كودينا اور اگر بچه كواتی عقل نہ ہو تو اُس كى طرف سے اس كاباپ جوفقير ہويا وصى يا جس كى نگرانى ميں ہے قبضه كريں۔(2) (درمختار، ردالحتار)

مسكانة هي المحروب بونے كے ليے چندشرطيس ميں:

(۱) مسلمان ہونا۔

کافر پرز کا ۃ واجب نہیں یعنی اگر کوئی کافر مسلمان ہوا تو اُسے بی کم نہیں دیا جائے گا کہ زمانۂ کفر کی ز کا ۃ اوا کرے۔(3) (عامۂ کتب)معاذ اللہ کوئی مرتد ہوگیا تو زمانۂ اسلام میں جوز کا ۃ نہیں دی تھی ساقط ہوگئی۔(4)

مسئل کی پھر دارالاسلام میں آیا، اگراس کو معلوم تھا کہ دارالاسلام میں آیا، اگراس کو معلوم تھا کہ مالدار مسلمان پرز کا قواجب ہے، تو اُس زمانہ کی زکا قواجب ہے در نہ نہیں اور اگر دارالاسلام میں مسلمان ہوا اور چندسال کی زکا قان کی زکا قواجب ہے، اگر چہ کہتا ہو کہ جھے فرضیتِ زکا قاکام نہیں کہ دارالاسلام میں جہل عذر نہیں۔ (5) (عالمگیری وغیرہ)

(٢) بلوغ_

(٣) عقل، نابالغ پرز کا ۃ واجب نہیں اور جنون اگر پورے سال کو گھیر لے تو ز کا ۃ واجب نہیں اور اگر سال کے اوّل آخر میں افاقہ ہوتا ہے، اگر چہ باقی زمانہ جنون میں گذرتا ہے تو واجب ہے، اور جنون اگر اصلی ہو یعنی جنون ہی کی حالت میں بلوغ ہواتو اس کا سال ہوش آنے سے شروع ہوگا۔ یو ہیں اگر عارض ہے گر پورے سال کو گھیر لیا تو جب افاقہ ہوگا اس وقت سے سال کی ابتدا ہوگی۔ (جو ہر ہ، عالمگیری، ردالمجتار)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٥.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٤.
- ③ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في احكام المعتوه، ج٣، ص ٢٠٧.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.
- 5 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١، وغيره.
 - 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.
- و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في احكام المعتوه، ج٣، ص٢٠٧.

کر میں ایک کے جو ہرے پرز کا قواجب نہیں، جب کہ اس حالت میں پوراسال گزرے اورا گر بھی کبھی اُسے افاقہ بھی ہوتا ہے ہے تو واجب ہے۔جس پرغشی طاری ہوئی اس پرز کا قواجب ہے،اگر چیفشی کامل سال بھر تک ہو۔ (1) (عالمگیری،روالمختار) (۴) آزاو ہونا۔

غلام پرزکاۃ واجب نہیں، اگر چہ ماذون ہو (یعنی اس کے مالک نے تجارت کی اجازت دی ہو) یا مکا تب ⁽²⁾ یا ام ولد ⁽³⁾ یا مُستعط (یعنی غلام مشترک جس کوایک شریک نے آزاد کر دیا اور چونکہ وہ مالدار نہیں ہے، اس وجہ ہے باقی شریکوں کے حصے کما کر پورے کرنے کا اُسے تھم دیا گیا)۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری وغیرہ)

سَسَعَانُ کُ کُ اللہ اوا کرے، جو پچھ کمایا ہے اس کی زکاۃ نداُس پر ہے نداُس کے مالک پر، ہاں جب مالک کو وے دیا تو اب ان برسول کی بھی زکاۃ مالک اوا کرے، جب کہ غلام ماذون دَین میں مستغرق ندہو، ورنداس کی کمائی پر مطلقاً زکاۃ واجب نہیں، ندمالک کے قبضہ کرنے کے پہلے ند بعد۔ (5) (روالحتار)

سَسَعَلَا اللهِ عَمَا اللهِ عَلَى جَوَيِجَهِ كَمَا يَاسَ كَى زَكَاةَ وَاجْبُ نِينَ نَهُ اسْ بِرِنَهُ اسْ كَ ما لك بِرِ، جِبِ ما لك كودے و اور سال گذر جائے، اب بشرا لُطاز كاة ما لك بِرواجب بوگى اور گذشته برسوں كى واجب نہيں۔ (6) (روالمختار)

- (۵) مال بفدرنصاب اُس کی مِلک میں ہونا، اگرنصاب سے کم ہے توز کا ة واجب نہ ہوئی۔ (⁷⁾ (تنویر، عالمگیری)
 - (۲) بورے طور پرأس كاما لك ہوليني اس پرقابض بھي ہو۔⁽⁸⁾

مسئان اللہ جومال کم گیایا دریا میں گر گیایا کسی نے غصب کرلیا اور اس کے پاس غصب کے گواہ نہ ہوں یا جنگل میں دفن کر دیا تھا اور یہ یا دندر ہا کہ کہاں دفن کیا تھایا انجان کے پاس امانت رکھی تھی اور یہ یا دندر ہا کہ وہ کون ہے یا مدیون نے دین

- ۳۰۰۰۰۰ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في احكام المعتوه، ج٣، ص٢٠٧.
 و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.
- 2 لینی وہ غلام جس کا آقامال کی ایک مقدار مقرر کر کے یہ کہد دے کہ اتناادا کردے تو آزاد ہے اور غلام اسے قبول بھی کر لے۔
 - 3 لیعنی وہ لونڈی جس کے بچہ پیدا ہواا درمولی نے اقرار کیا کہ یہ میرا بچہ ہے۔ آذہ اساس سے انہ میں ان

تفصیلی معلومات کے لئے بہارشریعت حصد ۹ میں مدیّر ، مرکا تب اورام ولد کا بیان ملاحظ فر ما کیں۔

- للا الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١، وغيره.
- 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٤.
 - 6 المرجع السابق.
 - **1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.**
 - 😹 🔞 المرجع السابق.

مسئان ال الله المردين ايسے پرہے جواس كا اقر اركرتا ہے مگر ادا ميں ديركرتا ہے يا نادار ہے يا قاضى كے يہاں اس كے مفلس ہونے كا تكم ہو چكا يا وہ منكر ہے، مگر أس كے پاس گواہ موجود ميں تو جب مال ملے گا، سالهائے گزشته كى بھى زكا ة واجب

ہے۔⁽²⁾ (تنویر)

مس<u>عَن کی این کی با</u> کی کا جانورا گرکسی نے غصب کیا ،اگر چہوہ اقرار کرتا ہو تو ملنے کے بعد بھی اس زمانہ کی زکا ۃ واجب

نہیں۔⁽³⁾(خانیہ)

سَسَعَانُ الله عنه عصب کیے ہوئے کی زکا ۃ غاصب پرواجب نہیں کہ بیاس کا مال ہی نہیں ، بلکہ غاصب پر بیرواجب ہے کہ جس کا مال ہے اُسے واپس دے اور اگر غاصب نے اُس مال کواپنے مال میں خلط کر دیا کہ تمیز ناممکن ہواور اس کا اپنا مال بفتدر نصاب ہے تو مجموع پرز کا ۃ واجب ہے۔ (۱۰ (ردالحتار)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٨١٨.
- 2 "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص ٢١٩.
- 3 "الفتاوي الخانية، كتاب الزكاة، ج١، ص١٢٤.
- "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب فيما لو صادر السطان رجلا... إلخ، ج٣، ص٩٥٦.
 - 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣.
 - ایعنی جو چزگروی رکھی گئی ہے۔
 - 🗗 لیعن جس کے پاس چیز گروی رکھی گئی ہو۔
 - 8 ليعني گروي ر <u>کھنے</u> والا۔ ...

تفصیلی معلومات کے لئے دیکھئے: بہارشریعت حصہ ۱۷ میں رہن کا بیان۔

9 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص١٢، وغيره.

بيث ش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) 💽

گ مسئ 🔰 🗥 جو مال تجارت کے لیے خریدااور سال بھر تک اس پر قبضہ نہ کیا تو قبضہ کے قبل مشتری پر ز کا ۃ واجب نہیں اور

قبضہ کے بعداس سال کی بھی ز کا ۃ واجب ہے۔ (1) (ورمختار، روالمحتار)

(2) نصاب كادَين سے فارغ ہونا۔

تستانی کا پیشرہ کا ہو، چیسے قرض ، زرشن (2) کسی چیز کا تا وان یا اللہ عزوہ کا دیں ہو، چیسے زکا ق ہخراج مثلاً کوئی شخص صرف ایک نصاب کا مالک ہے اور دوسال گذر گئے کہ زکا ق نہیں دی تو صرف پہلے سال کی زکا ق واجب ہے دوسر سال کی نہیں کہ پہلے سال کی زکا ق واجب ہے دوسر سال کی نہیں کہ پہلے سال کی زکا ق اجب ہے دوسر سال کی نہیں کہ پہلے سال کی زکا ق اجب ہے دوسر سال گذر گئے کہ زکا ق نہیں رہتی ، لبندا دوسر سال کی زکا ق واجب نہیں ۔ یو بیں اگر تین سال گذر کے ، محر نسال گذر کے بعد نصاب باتی نہیں رہتی ، لبندا دوسر سال کی زکا ق واجب ہے کہ دوسر سال گذر کئے ، مگر تیسر سے میں ایک دن باقی تھا کہ پانچ درم اور حاصل ہوئے جب بھی پہلے ہی سال کی زکا ق واجب ہے کہ دوسر سال تک تیسر سال میں زکا ق نکا لئے کے بعد نصاب باقی نہیں ، ہاں جس دن کہ وہ پانچ درم حاصل ہوئے اس دن سے ایک سال تک اگر نصاب کا مالک تھا اور سال تمام پر نکر نصاب باقی رہ جائے تو اب اس سال کے پورے ہوئے پر زکا ق واجب ہوگی ۔ یو بیں اگر نصاب کا مالک تھا اور سال تمام پر زکا ق نہ نہیں وہ جائے تو اب اس سال کے پورے ہوئے یونکا تو واجب ہوگی ۔ یو بیں اگر نصاب کا مالک تھا اور سال تمام کیا کہ یہ بھذر نصاب ہے ، مگر سال اوّل کی زکا ق جو اس کے ذمہ دَین خواس کے ذمہ دَین نہیں وہ بھی سے نکالیں تو نصاب باقی نہیں رہتی تو اس خواس کے زکا ق واجب نہیں اور اگر اُس پہلے مال کو اُس کی زکا ق جاتی رہی ، لبندا اس کی زکا ق داجب نہیں تو اس صورت میں اس خوسال کی زکا ق واجب ہے۔ (3) (عالمگیری ، ردا کھتار)

- ❶ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٥٢٠.
 - یعن کسی خریدی گئی چیز کے دام۔
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢ ـ ١٧٤
 و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص٢١٠.
 - 🗗 کیعنی مقروض۔
 - 🚙 🗗 سینی مقروض کا ضامن۔

اورا گرعمرو کی دس شخصوں نے کفالت کی اور سب کے پاس ہزار ہزار روپے ہیں جب بھی ان میں کسی پرز کا قواجب نہیں کہ قرض

خواہ ہرایک سے مطالبہ کرسکتا ہے اور بصورت نہ ملنے کے جس کو جاہے قید کرادے۔(1) (ردالحتار)

سَمَانَهُ اللهِ عَلَى مِعادى موده مذهب صحيح مين وجوب زكاة كامانع نهين _(ردالمختار)

چونکہ عادةً وَینِ مہر کا مطالبہ نہیں ہوتا، لہذا اگر چہشو ہر کے ذمہ کتنا ہی وَینِ مہر ہو جب وہ مالکِ نصاب ہے، زکاۃ

واجب ہے۔ (3) (عالمگیری) خصوصاً مہر مؤخر جو عام طور پریہاں رائج ہے جس کی ادا کی کوئی میعاد معیّن نہیں ہوتی ،اس کے مطالبہ کا تو عورت کو اختیار ہی نہیں ،جب تک موت باطلاق واقع نہ ہو۔

مطالبہ کا تو محورت لوا صیار ہی ہیں، جب تک موت یا طلاق وائے نہ ہو۔ مسئل ان میں عورت کا نفقہ شوہر پر دَین نہیں قرار دیا جائے گا جب تک قاضی نے عکم نہ دیا ہویا دونوں نے باہم کسی مقدار

پرتصفیہ نہ کرلیا ہواورا گرید دونوں نہ ہوں تو ساقط ہوجائے گاشو ہر پراس کا دینا واجب نہ ہوگا،لہذا مانع زکا ہ نہیں۔عورت کے علاوہ کسی رشتہ دار کا نفقہ اس وفت وَین ہے جب ایک مہینہ ہے کم زمانہ گزرا ہویا اُس رشتہ دار نے قاضی کے علم سے قرض لیا اور اگرید دونوں باتیں نہیں توساقط ہے اور مانع زکا ہنہیں۔(4) (عالمگیری،ردالحتار)

<u>مَسَعَالُهُ (۱)</u> وقت مانع زکاۃ ہے جب زکاۃ واجب ہونے سے پہلے کا ہواورا گرنصاب پرسال گزرنے کے بعد ہواتو زکاۃ پراس وَین کا پچھاڑ نہیں۔ (5) (ردالحتار وغیرہ)

مسئ المسئ المسئ المسئ المساق من كامطالبه بندول كى طرف سے نه ہواس كااس جگه اعتبار نہيں يعنى وہ مانغ زكا ة نہيں مثلاً نذرو كفاره وصدقهُ فطروح قربانى كه اگر ان كے مصارف نصاب سے نكاليں تو اگر چه نصاب باتى نه رہے زكاۃ واجب ہے،عشر وخراح واجب ہوجا كيں گي۔ (6) (درمخار،ردالمحاروغير ہما)

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص٢١.
 - 2 المرجع السابق، ص ٢١١.
 - 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣.
- و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص ٢١١.
- ۲۱۰ س. "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص ٢١٠.
 و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص ١٧٣.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص ٢١١، وغيرهما.

علاوہ دَین کے نصاب کا مالک ہوگیا تو زکاۃ واجب ہوگئ، اس کی صورت بیہ ہے کہ فرض کروقرض خواہ نے قرض معاف کردیا تو اب چونکہ اس کے ذمہ دَین نہ رہا اور سال بھی پورا ہو چکا ہے، لہذا واجب ہے کہ ابھی زکاۃ وے، یہ نہیں کہ اب سے ایک سال گزرنے پر زکاۃ واجب ہوگی اورا گرشر وع سال سے مدیون تھا اور سال تمام پر معاف کیا تو ابھی زکاۃ واجب نہ ہوگی بلکہ اب سے سال گزرنے پر۔(1) (ردالحتار وغیرہ)

اشرفیاں بھی ہیں، تجارت کے اسباب بھی، چرائی کے جانور بھی تو روپے اشرفیاں دَین کے مقابل سمجھے اور اور چیزوں کی زکاۃ دے اور اگرروپے اشرفیاں بھی ہیں، تجارت کے اسباب بھی، چرائی کے جانور بھی تو روپے اشرفیاں دَین کے مقابل سمجھے اور اور چیزوں کی زکاۃ دے اور اگرروپے اشرفیاں نہ بوں اور تیس گا کیں اور پانچ اونٹ تو جس کی زکاۃ میں اسے آسانی ہو، اُس کی زکاۃ دے اور دوسرے کو دَین میں سمجھے تو اُس صورتِ مذکورہ میں اگر بکریوں یا اونٹ تو جس کی زکاۃ میں اسے آسانی ہو، اُس کی زکاۃ دے اور دوسرے کو دَین میں سمجھے تو اُس صورتِ مذکورہ میں اگر بکریوں یا اونٹ کی رکاۃ میں سال بھر کا نچھڑ ااور ظاہر ہے کہ ایک بکری دینا کچھڑ اور یہ نے اور اگر برابر ہوں تو اسے اختیار ہے۔ مثلاً پانچ اونٹ ہیں اور چالیس بکریاں دونوں کی زکاۃ ایک بکری ہے، اُسے اختیار ہے جسے چا ہے دَین کے لیے سمجھے اور جس کی چا ہے زکاۃ دے اور بیسب تفصیل اُس وقت ہے ایک بکری ہے، اُسے اختیار ہے جسے چا ہے دَین کے لیے سمجھے اور جس کی چا ہتا ہے تو ہر صورت میں اختیار ہے۔ (درمختار، ردامختار)

سکان اورایک مکان اورخدمت کے لیے ایک غلام تو ہیں اوراس کے پاس ہزاررو پے ہیں اورایک مکان اورخدمت کے لیے ایک غلام تو زکاۃ واجب نہیں، اگر چہ مکان وغلام دس ہزاررو پے کی قیمت کے ہوں کہ یہ چیزیں حاجت اصلیہ سے ہیں اور جب روپے موجود ہیں تو قرض کے لیے روپے قرار دیے جائیں گے نہ کہ مکان وغلام۔(3) (عالمگیری)

(۸) نصاب حاجت اصلیہ سے فارغ ہو۔(۱)

سَسَعَانُ اللہ علیہ عاجت اصلیہ لیعنی جس کی طرف زندگی بسر کرنے میں آ دمی کوضرورت ہے اس میں زکا ۃ واجب نہیں، جیسے رہنے کا مکان، جاڑے گرمیوں میں پہننے کے کپڑے، خانہ داری کے سامان، سواری کے جانور، خدمت کے لیے لونڈی غلام،

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٥ ٢١، وغيره.
- الدرالمختار"، "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٦.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.
 - 🗗 المرجع السابق، ص٧٧ . .

زکاة کابیان کونته کابیان

881

مسئان ۲۷ گوریدی جس سے کوئی کام کرے گا اور کام میں اس کا اثر باقی رہے گا، جیسے چڑا اپکانے کے لیے مازو⁽²⁾اور تیل وغیرہ اگراس پرسال گزر گیا زکا قہ واجب ہے۔ یوہیں رنگریز نے اُجرت پر کپڑ اربکٹنے کے لیے کسم، زعفران خریدا

تواگر بقدرنصاب ہےاورسال گزر گیا زکا ۃ واجب ہے۔ پُڑیا وغیرہ رنگ کا بھی یہی تھم ہےاورا گروہ ایسی چیز ہے جس کا اثر باقی نہیں رہے گا، جیسے صابون تواگر چہ بقدرنصاب ہواورسال گزرجائے زکا ۃ واجب نہیں۔(3) (عالمگیری)

میں ان پرز کا قرواجب ہے۔ عطر فروش نے عطر بیچنے کے لیے شیشیاں خریدیں ،ان پرز کا قرواجب ہے۔ (۱۰ (ردالحتار)

مسئالہ 19 و خرج کے لیے روپے کے پیسے لیے تو یہ بھی حاجت اصلیہ میں ہیں۔ حاجتِ اصلیہ میں خرج کرنے کے روپے رکھے ہیں تو ان کی زکا ق واجب ہے، اگر چداسی نتیت روپے رکھے ہیں تو سال میں جو بچھ خرج کیا کیا اور جو باقی رہے اگر بقدر نصاب ہیں تو ان کی زکا ق واجب ہے، اگر چداسی نتیت سے رکھے ہیں کہ آئندہ حاجتِ اصلیہ ہی میں خرج کرنے کی ضرورت ہے تو زکا ق واجب نہیں۔ (5) (روالحجار)

المُلِيم علی منابوں کی زکاۃ المبیاں جب کہ المیں جب کہ المبی جا جی اور غیرائل کے پاس ہوں، جب بھی کتابوں کی زکاۃ واجب نہیں جب کہ تجارت کے لیے نہ ہوں، فرق اتنا ہے کہ اہلِ علم کے پاس ان کتابوں کے علاوہ اگر مال بقدر نصاب نہ ہوتو زکاۃ لینا جا کڑنے جاور غیرا ہل علم کے لیے ناجا کڑن، جب کہ دوسودرم قیمت کی ہوں۔ اہل وہ ہے جے پڑھانے یا تھیجے کے لیے ان کتابوں کی ضرورت ہو۔ کتاب سے مراد نہ بھی کتاب فقہ وتفییر وحدیث ہے، اگر ایک کتاب کے چند نسخے ہوں تو ایک سے زائد حقنے نسخے ہوں اگر دوسودرم کی قیمت کے ہوں تو اس اہل کو بھی زکاۃ لینا ناجا کڑنہ ہوہ اوا میک بھی کتاب کے ذائد نسخے اس قیمت کے ہوں۔ (ورمختار، ردالحتار)

مسئل السبال المسائد عافظ کے لیے قرآن مجید حاجت اصلیہ سے نہیں اور غیر حافظ کے لیے ایک سے زیادہ حاجت اصلیہ کے

- الفتاوى الهندية "، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١٠ ص١٧٢.
- و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٢.
 - 2 ایک دوا کانام۔
 - 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.
- ◘ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٨.
 - 5 المرجع السابق، ص٢١٣.
- 🧝 🙃 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٧.

ک علاوه ہے بعنی اگر مصحف شریف دوسودرم قبت کا ہو تو ز کا ةلینا جائز نہیں۔⁽¹⁾ (جو ہرہ،ردالحتار)

مَسِينًا لَهُ ٣٦﴾ طبیب کے لیےطب کی کتابیں حاجت اصلیہ میں ہیں، جب کہمطالعہ میں رکھتا ہو یا اُسے دیکھنے کی ضرورت ہڑے،نحووصرف ونجوم اور دیوان اور قصے کہانی کی کتابیں حاجت اصلیہ میں نہیں ،اصول فقہ وعلم کلام واخلاق کی کتابیں ،

882

جیسے احیاءالعلوم و کیمیائے سعادت وغیر ہما حاجت اصلیہ سے ہیں۔⁽²⁾ (ردامحتار) مَسِيعًا ﴾ کفاراور بدیذہبول کے رداوراہل سنت کی تائید میں جو کتابیں ہیں وہ حاجت اصلیہ سے ہیں۔ یو ہیں

عالم اگرید مذہب وغیرہ کی کتابیں اس لیےرکھے کہاُن کاردکرےگا تو یہ بھی جاجت اصلیہ میں ہیںاورغیر عالم کو توان کا دیکھناہی حائزنہیں۔

(٩) مال نامى مونا يعنى برصف والاخواه حقيقةً برص ياحكماً يعنى الربرهانا جائي توبرهائ يعنى أس ك يا أس ك نائب کے قبضہ میں ہو، ہرایک کی دوصورتیں ہیں وہ اس لیے پیدا ہی کیا گیا ہوا سے خلقی کہتے ہیں، جیسے سونا جاندی کہ بیاس لیے پیدا ہوئے کہان سے چیزیں خریدی جائیں یااس لیے مخلوق تونہیں، مگراس سے ریھی حاصل ہوتا ہے،اسے فعلی کہتے ہیں۔سونے جاندی کے علاوہ سب چیزیں فعلی ہیں کہ تجارت سے سب میں نُمو ہوگا۔ (3) سونے جاندی میں مطلقاً زکا ۃ واجب ہے، جب کہ بفدرنصاب ہوں اگر چہ وفن کر کے رکھے ہوں ، تجارت کرے یا نہ کرے اور ان کے علاوہ باقی چیزوں پرز کا قاس وفت واجب ہے کہ تجارت کی نتیت ہویا چرائی پر چھوٹے جانوروبس،خلاصہ پیکہ زکاۃ تین قتم کے مال پر ہے۔

- (۱) نثمن یعنی سونا حیاندی۔
 - (۲) مال تحارت۔
- (٣) سائمہ یعنی چرائی پرچھوٹے جانور۔(⁴⁾(عامة کتب)

مسئ ۴ 🥕 💨 متیت تجارت بھی صراحةً ہوتی ہے بھی دلالةً صراحةً بید کہ عقد کے وقت ہی نتیت تجارت کر لی خواہ وہ عقد خریداری ہو بااجارہ ہمّن روپیہاشر فی ہو بااساب میں ہے کوئی شے دلالۂ کیصورت یہ ہے کہ مال تجارت کے بدلے کوئی چز

- 1 "الجو هرة النيرة"، كتاب الزكاة، ص ١٤٨.
- و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٧.
- ٣---- "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٧.
 - 😘 یعنی زیادتی ہوگی۔
 - 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١،٤٧٤.
 - و "الفتاوي الرضوية"، ج ١٠ ، ص ١٦١.

ﷺ خریدی یا مکان جو تجارت کے لیے ہے اس کو کسی اسباب کے بدلے کرایہ پر دیا توبیا سباب اور وہ خریدی ہوئی چیز تجارت کے لیے ہیں اگر چہ صراحة تجارت کی بیّت نہ کی ۔ یو ہیں اگر کسی سے کوئی چیز تجارت کے لیے قرض کی توریجی تجارت کے لیے ہے، مثلًا دوسودرم کاما لک ہےاورمن بھر گیہوں قرض لیے تو اگر تجارت کے لیے نہیں لیے تو ز کا ۃ واجب نہیں کہ گیہوں کے دام انھیں دوسو سے نمجر اکیے جائیں گے تو نصاب باقی نہ رہی اوراگر تجارت کے لیے لیے تو زکا ۃ واجب ہوگی کہ اُن گیہوں کی قیمت دوسویر اضافه کریں اور مجموعہ ہے قرض ثُجر اکریں تو دوسوسالم رہے لبنداز کا قواجب ہوئی۔ (1) (عالمگیری، درمختار، رداکتار)

883

مَسِيَّاكُ ٣٥﴾ ﴿ جَس عقد مين تبادله ہي نه هوجيسے بهه، وصيّت ،صدقه يا تبادله هومگر مال سے تبادله نه هوجيسے مهر ، بدل خلع (2) برلِ عتق (3) ان دونوں قتم کے عقد کے ذریعہ سے اگر کسی چیز کا مالک ہوا تو اس میں نیت تجارت سیجے نہیں یعنی اگر چہ تجارت کی نتیت کرے، زکا ۃ واجب نہیں ۔ یو ہیںا گرالی چیز میراث میں ملی تواس میں بھی نتیت تجارت صحیح نہیں ۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

واجب ہے۔ یو ہیں چرائی کے جانوروراثت میں ملے، زکاۃ واجب ہے چرائی پررکھنا چاہتے ہوں پانہیں۔ (⁵⁾ (عالمگیری، درمخار) مَسِعًا اللهِ اللهِ عَلَيْتِ تَجَارِت کے لیے بیشرط ہے کہ وقت عقد نتیت ہو، اگر چہ دلالۃً تو اگر عقد کے بعد نتیت کی زکا ۃ

واجب نہ ہوئی۔ یو ہیںا گرر کھنے کے لیےکوئی چیز لی اور یہنیت کی کرفع ملے گا تو بیچ ڈالوں گا تو ز کا ۃ واجب نہیں۔ ⁽⁶⁾ (درمختار)

مَسِيعًا ﴾ ﴿ ٣٨﴾ ﴿ تجارت کے لیےغلام خریدا تھا پھر خدمت لینے کی نتیت کر لی پھر تجارت کی نتیت کی تو تجارت کا نہ ہوگا

جب تك اليي چيز كے بدلے نديجيجس ميں زكاة واجب موتى ہے۔ (7) (عالمكيرى، درمختار)

مَسِعًا ﴾ موتی اورجواہر پرز کا ۃ واجب نہیں، اگرچہ ہزاروں کے ہوں۔ ہاں اگر تجارت کی میت سے لیے تو واجب ہوگئی۔(8) (درمختار)

مسک ایک اس کی اور بین اور ہوئی اس میں نیت تجارت سے زکا ہ واجب نہیں، زمین عشری ہو یاخراجی، اس کی

1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٤.

و "الدرالمختار"، و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص ٢٢١.

2 یعنی و د مال جس کے بدلے میں نکاح زائل کیا جائے۔

🗗 یعنی وہ مال جس کے بدلے میں غلام یالونڈی کوآ زاد کیا جائے۔

الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص٧٤.

6 المرجع السابق.

الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص ٢٣١.

🔊 🔞 "تنويرالأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٣٠.

يثي كش: مجلس المدينة العلمية (دوت اسلام) €

7 المرجع السابق، ص٢٢٨.

کی ملک ہو یاعاریت یا کرایہ پر لی ہو، ہاں اگر زمین خراجی ہواور عاریت یا کرایہ پر لی اور نئے وہ ڈالے جو تجارت کے لیے تھے تو پیداوار میں تجارت کی نیت صحیح ہے۔ ⁽¹⁾ (ردامختار)

(۱۰) سال گزرنا، سال سے مراد قمری سال ہے لینی جاند کے مہینوں سے بارہ مہینے۔ شروع سال اور آخر سال میں نصاب کامل ہے، مگر درمیان میں نصاب کی کی ہوگئی تو یہ کی کچھا شنہیں رکھتی لینی زکا قواجب ہے۔ (۱۰) (عالمگیری)

مسئل المسئل المسئل المسئل المسئل على المسئل المين المين المين المين المين المين المين الما ين الما ين الما تواس كى وجد سے مال گزرنے ميں نقصان نه آيا اور اگر چرائی كے جانور بدل ليے تو سال كث گيا يعنی ابسال اس دن سے ثار كريں گے جس دن بدلا ہے۔ (6) (عالمگيرى)

مسئ الم اس کے جو محض مالک نصاب ہے اگر درمیان سال میں پچھاور مال اس جنس کا حاصل کیا تو اُس نے مال کا جدا سال نہیں، بلکہ پہلے مال کا ختم سال اُس کے لیے بھی سال تمام ہے، اگر چہسال تمام سے ایک ہی منٹ پہلے حاصل کیا ہو، خواہ وہ مال اُس کے پہلے مال کے حاصل کوا یو بہہ یا اور کسی جائز ذریعہ سے ملا ہواور اگر دوسری جنس کا ہے مثلاً پہلے اُس کے باس اونٹ تھے اور اب بکریاں ملیں تو اس کے لیے جدید سال شار ہوگا۔ (جوہرہ)

<u>مَسَعًا کَهُ الله</u> ما لک نصاب کو درمیان سال میں کچھ مال حاصل ہوااوراس کے پاس دونصابیں ہیں اور دونوں کاجُد اجُد ا

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٢.
- سسس مضار بت، تجارت میں ایک قتم کی شرکت ہے کہ ایک جانب سے مال ہواور ایک جانب سے کام اور منافع میں دونوں شریک ۔ کام کرنے والے کومضارب اور مالک نے جو پچھ دیاا سے راس المال (مال مضارب) کہتے ہیں۔

تفصیلی معلومات کے لیے بہارشریعت حصہ ۱۲، میں "مضاریت کابیان" و کیولیجئے۔

- €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢١.
 - 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥.
- - 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥.
 - 🧳 🗗 "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب الزكاة الخيل، ص٥٥.

🧱 سال ہے تو جو مال درمیان سال میں حاصل ہوا اُسے اس کے ساتھ ملائے ،جس کی زکا ۃ پہلے واجب ہومثلاً اس کے پاس ایک

ہزارروپے ہیں اور سائمکی قیمت جس کی زکا ۃ دے چکا تھا کہ دونوں ملائے نہیں جائیں گے، اب درمیان سال میں ایک ہزار رویےاور حاصل کیے توان کاسال تمام اس دفت ہے جبان دونوں میں پہلے کا ہو۔⁽¹⁾ (درمختار)

انھیں کے ساتھ ملائیں لینی اُن کی زکاۃ انھیں رویوں کے ساتھ دی جائے۔(2) (جوہرہ)

سَسَعَالُهُ ٢٥٠﴾ اس كے ياس چرائی كے جانور تھاور سال تمام پران كى زكا ة دى پھر انھيں روپوں سے نج ڈالا اور اُس کے پاس پہلے سے بھی بقدرنصاب رویے ہیں جن پرنصف سال گزراہے توبیدویے اُن روبوں کے ساتھ نہیں ملائے جائیں گے، بلکہ اُن کے لیے اُس وقت سے نیاسال شروع ہوگا یہ اس وقت ہے کہ بیٹمن کے رویے بقدر نصاب ہوں ، ورنہ بالا جماع

سیالی سے پیشتر اگر سائمہ کورو ہے کے بدلے پیچا تواب ان روپوں کواُن رُوپوں کے ساتھ ملالیں گے جو پیشتر سے اُس کے پاس بقدرنصاب موجود ہیں یعنی ان کے سال تمام پران کی بھی زکا قددی جائے ،ان کے لیے نیاسال شروع نہ ہوگا۔ یو ہیں اگر جانور کے بدلے بیچا تواس جانور کواس جانور کے ساتھ ملائے ، جو پیشتر ہے اس کے پاس ہے اگر سائمہ کی ز کا ق دے دی پھراسے سائمہ نہ رکھا پھر چے ڈالا توشن کوا گلے مال کے ساتھ ملادیں گے۔(3) (عالمگیری)

مست ایک ایس ایک کودوسرے کے بدلے سال تمام سے پہلے بیچا تواب سے اُن کے لیے نیا سال شروع ہوگا۔ یو ہیں اگراور چیز کے بدلے بہنیت تجارت بیچا تواب ہے ایک سال گزرنے پرز کا ۃ واجب ہوگی اورا گراپی جنس کے بدلے بیچایعنی اونٹ کواونٹ اور گائے کو گائے کے بدلے جب بھی یہی حکم ہے اور اگر بعد سال تمام بیچا تو زکا ۃ واجب ہوچکی اوروہ اُس کے ذمہ ہے۔⁽⁴⁾ (جوہرہ)

مَسِيَّالُهُ ٢٨﴾ ﴿ ورميان سال ميں سائمہ کو بيجا تھا اور سال تمام ہے پہلے عيب کی وجہ ہے خريدار نے واپس کر ديا تو اگر قاضی کے حکم سے واپسی ہوئی تو نیاسال شروع نہ ہوگا، ورنہ اب سے سال شروع کیا جائے اورا گر ہبہ کر دیا تھا پھر سال تمام سے پہلے واپس کرلیا تو نیاسال لیاجائے گا، قاضی کے فیصلہ سے واپسی ہو یابطورخود۔ ⁽⁵⁾ (جوہرہ) سَسَالَ وَ ثُمَن كواصل نصاب كے ساتھ ملا

1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٥٥٥.

- 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 "الحوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب زكاة، الابل، ص٠٥١.
 - 🚙 🍮 ---- المرجع السابق.

ييش كش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلامي) 🤾

ویں گے۔(1)(عالمگیری)

<u> اس کے پاس روپے ہیں جن کی زکاۃ دے چکا ہے پھراُن سے چرائی کے جانور خریدے اوراس کے</u>

<u> مسئالہ ۵۱ ﷺ کسی نے اسے چار ہزاررو پے بطور ہبہ دیے اور سال پورا ہونے سے پہلے ہزاررو پے اور حاصل کیے پھر</u>

ہبہ کرنے والے نے اپنے دیے ہوئے روپے حکم قاضی سے واپس لے لیے تو ان جدیدروپوں کی بھی اس پرز کا ہ واجب نہیں جب تک ان پرسال نہ گزر لے۔(3) (عالمگیری)

سَمَعُ اللهُ عَلَى اللهُ اللهُ عَلَى اللهُ الله

سَسَعَانُ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللّهُ عَلَ

. برای میرات کرتار ما،اب نیت کی که جو یکھ دیاہے زکا ہے توادانہ ہوئی۔ (6) (عالمگیری)

سَمَانُ ۵۵﴾ ایک شخص کو وکیل بنایا اُسے دیتے وقت تونیّت زکا ۃ نہ کی ،مگر جب وکیل نے فقیر کو دیااس وقت مؤکل نے متب کر لی ہوگئی۔ (۲) (عالمگیری)

سَسَعَانُ ۵۷ ﴾ دیتے وقت بیّت نہیں کی تھی ، بعد کو کی تواگر وہ مال فقیر کے پاس موجود ہے یعنی اسکی ملک میں ہے توبیہ بیّت کا فی ہے ور نہیں۔(8) (درمختار)

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥.
 - 2 المرجع السابق.
- 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥ ـ ١٧٦.
 - 4 المرجع السابق، ص١٧٦.
 - 5 المرجع السابق، ص ١٧٠.
 - 6 المرجع السابق، ص١٧١.
 - 7 المرجع السابق.
 - 8 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٢.

کی ارسال کی کی سے دونت نیت نہیں کی اوروکیل کو بیٹت زکاۃ مال دیا مگروکیل نے نقیر کودیتے وفت نیت نہیں کی اداہوگئی۔ یو بین زکاۃ کامال ذی کودیا کہ وہ فقیر کودے دے اور ذی کو دیتے وفت نیت کر کی تھی تو بیٹیت کافی ہے۔ (۱) (درمختار)

مسئلہ ۱۹۸۵ وکیل کودیتے وقت کہانفل صدقہ یا کفارہ ہے گرقبل اس کے کہوکیل فقیروں کودے، اُس نے زکاۃ کی تاہم است کر سات کر سات

نتیت کرلی تو زکا ق ہی ہے،اگر چہوکیل نے نفل یا کفارہ کی بتیت سے فقیر کودیا ہو۔ (2) (درمختار) سیستان (3) جسستان کے شخص چند زکا ق دینے والوں کا وکیل ہے اور سب کی زکا قبلا دی تو اُسے تاوان دینا پڑے گا اور جو کچھ

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٢.
- الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٣.
- € "الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٣.
 - سیعنی دلال کوخریدی گئی چیز کی قیمت یا خریدی گئی چیز کا ملانا۔
 - الفتاوى الخانية"، كتاب الزكاة، فصل في اداء الزكاة، ج١، ص٥١٠.

کی اجازت نددی مگرعرف ایساجاری ہوگیا کہ وکیل ملادیا کرتے ہیں تو ہیں ہوگیا کہ وکیل ملادیا کرتے ہیں تو ہیہ بھی اجازت تیم مجھی جائے گی، جب کہ مؤکل (2) اس عرف سے واقف ہو، مگر دلال کوخلط کی اجازت نہیں کہ اس میں عرف نہیں۔ (3) (ردالمختار)

سَسَعَانُ اللهِ وَيِل كواختيار ہے كہ مالِ زكاۃ اپنے لڑكے يا بی بی كوديدے جب كہ يہ فقير ہوں اور اگراڑ كا نابالغ ہے تو اُسے دینے کے لیے خوداس وکیل كافقیر ہونا بھی ضروری ہے، مگراپی اولا دیا بی بی کواس وقت دے سکتا ہے، جب مؤكل نے اُن كے سوائسی خاص شخص كودینے كے لیے نہ كہد يا ہوور نہ اضين نہيں دے سكتا۔ (4) (روالحتار)

سَسَعَالُهُ اللهِ عَلَى كَا يَوْمِيا خَتَيَارُنِينَ كَهُ خُود لے لے، ہاں اگرز كا قدينے والے نے بير كہد ديا ہوكہ جس جگہ جا ہوصرف كرو تولے سكتا ہے۔ (5) (درمختار)

سَسَعَالَهُ ۱۳ ﴾ اگرز کا قادینے والے نے اسے تکم نہیں دیا،خود ہی اُس کی طرف سے زکا قادے دی تو نہ ہوئی اگر چاب اُس نے جائز کر دیا ہو۔ (6) (روالحتار)

سَسَعَانُ الله الله الله و ال

مَسَعَانُ اللهِ وَكُولِ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ وَمِلْ اللهِ وَمِرْ عَلَيْ اللهِ وَمِرْ عَلَيْ اللهِ وَمِر عَلَيْ اللهِ وَمِر عَلَيْ اللهِ وَمِرْ عَلَيْ اللهِ وَمِرْ عَلَيْ اللهِ وَمِرْ عَلَيْ اللّهِ وَمِنْ عَلَيْ اللّهِ وَمِنْ عَلَيْ اللّهِ وَمِنْ عَلَيْ اللّهِ وَمِ

<u> سَمَانَا کَ اِکَ ﴾</u> سیمی نے بیکہا کہ اگر میں اس گھر میں جاؤں تو مجھ پراللہ (عزوجل) کے لیےان سورو پوں کا خیرات کر دینا ہے پھر گیااور جاتے وقت بینیت کی کہ زکا قامین دے دوں گا تو زکا قامین نہیں دے سکتا۔ (⁹⁾ (عالمگیری)

٣٠٠٠٠ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٣.

4 المرجع السابق، ص٢٢٤.

5 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٤.

6 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣٢٣

7 ····· "الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٤.

٣٠٠٠ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٤.

🕥 🔞 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.

ہے۔ اور ایس میں میں میں میں ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی اور اگر ہاتھ سے گر گیا اور فقیر نے اُٹھالیا اگریپہ میں میں میں میں میں اور فقیر نے اُٹھالیا اگریپہ

_______ اسے بیجانتاہے اور راضی ہو گیا اور مال ضائع نہیں ہوا تو ہو گئی۔(¹⁾ (عالمگیری)

اسے پہچا تماہے اور را می ہونیا اور مال صاح ہیں ہوا تو ہوئ۔ مسر عالمیری ہے۔ مسئل 19 ﷺ امین کے پاس سے امانت ضائع ہوگئ ،اس نے ما لک کو دفع خصومت کے لیے کچھ رویے دے دیے اور

دیتے وفت ز کا ق^ا کی بیّت کر لی اور ما لک فقیر بھی ہے ز کا قادانہ ہوئی۔⁽²⁾(عالمگیری)

۔ می<u>ں کا کہ کی ہے ۔</u> مال کو بہنیت زکا ۃ علیحد ہ کردینے سے بری الذّ مہنہ ہوگا جب تک فقیروں کو نہ دیدے، یہاں تک کہا گر

وه جا تار ما توز کا ة ساقط نه بهونی اورا گرمر گیا تواس میں وراثت جاری بهوگی _⁽³⁾ (درمختار، ردالمحتار)

نکاۃ اداہوگی اور اگرکل فقیر کودے ویا اور منت یا کسی اور واجب کی نیت کی تو دینا جھے ہے، مگرز کاۃ اس کے فقہ ہے ساقط نہ ہوئی رکاۃ اداہوگی اور اگرکل فقیر کودے ویا اور منت یا کسی اور واجب کی نیت کی تو دینا جھے ہے، مگرز کاۃ اس کے فقہ ہے ساقط نہ ہوئی اور اگر مال کا کوئی حصہ خیرات کیا تو اس حصہ کی بھی زکاۃ ساقط نہ ہوگی، بلکہ اس کے ذمتہ ہے اور اگرکل مال ہلاک ہوگیا تو کل کی زکاۃ ساقط (4) ہوگی اور کچھ ہلاک ہوا تو جمتنا ہلاک ہوا اس کی ساقط اور جو باقی ہے اس کی واجب، اگر چہوہ بقدر نصاب نہ ہو۔ ہلاک کے بیمعنی ہیں کہ بغیر اس کے فعل کے ضائع ہوگیا، مثلاً چوری ہوگئی یا کسی کو قرض و عاریت دی اُس نے انکار کر دیا اور گواہ خبیں یا وہ مرگیا اور گچھڑ کہ میں نہ چھوڑ ااور اگر اپنے فعل سے ہلاک کیا مثلاً صرف کرڈ الایا بھینک دیا یا غنی کو ہم کر دیا (5) تو زکاۃ برستور واجب الا داہے، ایک بیسہ بھی ساقط نہ ہوگا اگر چہ بالک نا دار ہو۔ (6) (عالمگیری، در مختار)

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث، الفصل الثاني، ج١، ص١٨٣.
 - 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٥.
 - 4 یعنی معاف۔
 - ایعن غنی کو تخفے میں دے دیا۔
 - 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.
 - 🥱 🗗 المرجع السابق.

ادا ہوگئی۔فقیر پرقرض ہے اس قرض کواپنے مال کی زکاۃ میں دینا چاہتا ہے لینی یہ چاہتا ہے کہ معاف کردے اور وہ میرے مال کی نکاۃ میں دینا چاہتا ہے لینی یہ چاہتا ہے کہ معاف کردے اور وہ میرے مال کی نکاۃ ہوجائے یہ نہیں ہوسکتا، البتہ یہ ہوسکتا ہے کہ اُسے زکاۃ کا مال دے اور اپنے آتے ہوئے میں لے لے، اگر وہ دینے سے انکار کرے تو ہاتھ پکڑ کرچھین سکتا ہے اور یوں بھی نہ ملے تو قاضی کے پاس مقدمہ پیش کرے کہ اُس کے پاس ہے اور میرا نہیں دیتا۔ (درمختار وغیرہ)

ن کا قاکارو پییمُرده کی تجهیز و تکفین (2) یا مبحد کی تغییر میں نہیں صرف کر سکتے کہ تملیک فقیر نہیں پائی گئی اور ان امور میں صرف کرنا چاہیں تو اس کا طریقہ یہ ہے کہ فقیر کو ما لک کر دیں اور وہ صرف کرے اور ثواب دونوں کو ہوگا بلکہ حدیث میں آیا،''اگر سوہا تھوں میں صدقہ گزرا تو سب کو دیسا ہی ثواب ملے گا جبیبا دینے والے کے لیے اور اس کے اجرمیں کچھ کمی نہ ہوگی۔'' (3) (روالحجار)

کی کے بہاں تک کو اور نیت نکا قادینے میں اس کی ضرورت نہیں کہ فقیر کو زکا قاکہ کہ کردے، بلکہ صرف نیت زکا قاکا فی ہے یہاں تک کہ اگر مہدیا قرض کہدکر دے اور نیت زکا قاکی ہوا دا ہوگئی۔ (5) (عالمگیری) یو بین نذریا ہدیدیا پان کھانے یا بچوں کے مٹھائی کھانے یا عیدی کے نام ہے دی ادا ہوگئی۔ بعض متاج ضرورت مندز کا قاکار و پینہیں لینا چاہتے، انھیں زکا قاکہ کہدکر دیا جائے گا تو نہیں لیں گے لہٰذاز کا قاکا فظ نہ کہے۔

مَسِيَّلُمُ ٤٤﴾ ناة ادانہيں كي تقى اوراب بيار ہے تو وارثوں سے چُھپا كردے اورا گرنددى تقى اوراب دينا جا ہتا ہے، مگر مال نہيں جس سے اداكرے اور بير چا ہتا ہے كہ قرض لے كرا داكرے تو اگر غالب گمان قرض ادا ہوجانے كا ہے تو بہتريہ

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٦، وغيره.
 - 🕰 يعنى لفن دفن 🕳
- "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٧.
 - "تاریخ بغداد"، رقم: ۳۵۶۸، ج۷، ص۱۳۵.
 - 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.
 - 😸 🗗 المرجع السابق.

کھ کے قرض لے کرادا کرے ور نہیں کہ ق العبد ق اللہ سے سخت ترہے۔ (1) (ردالحمار)

مالکِ نصاب کامالک رہے ۔ اوراگرختم سال پر مالک نصاب ندر ہا یا آغائے سال میں وہ مالِ نصاب بالکل ہلاک ہوگیا تو جو پچھ دیانفل ہے اور جو شحص نصاب کا مالک نہ ہو، وہ زکا قانبیں دے سکتا لیعنی آئندہ اگر نصاب کا مالک ہوگیا تو جو پچھ پہلے دیا ہے وہ اُس کی زکا قامین محسوب نہ ہوگا۔ (2) مالک نہ ہو، وہ زکا قانبیں دے سکتا لیعنی آئندہ اگر نصاب کا مالک ہوگیا تو جو پچھ پہلے دیا ہے وہ اُس کی زکا قامین محسوب نہ ہوگا۔ (2)

مسئا 20 درسکتا ہے یعنی شروع سال میں ایک نصاب اگر پیشتر سے چند نصابوں کی زکا قربینا چاہے تو درسکتا ہے یعنی شروع سال میں ایک نصاب کا مالک ہو گیا تو نصاب کا مالک ہو گیا تو نصاب کا مالک ہو گیا تو سب کی ادا ہوگی اور سال تمام تک ایک ہی نصاب کا مالک رہا ، سال کے بعد اور حاصل کیا تو وہ زکا قاس میں محسوب نہ ہوگ ۔ (3) (عالمگیری)

سکتا ہے۔ (4) (عالمگیری) لہذا مناسب ہے کہ تھوڑا تھوڑا دے سکتا ہے۔ (4) (عالمگیری) لہذا مناسب ہے کہ تھوڑا تھوڑا تھوڑا دیا ہے، ختم سال پر حساب کرے، اگر زکا ۃ پوری ہوگئی فبہا اور پچھ کی ہو تو اب فوراً دیدے، تا خیر جائز نہیں کہ نہ اُس کی اجازت کہ اب تھوڑا تھوڑا کر کے ادا کرے، بلکہ جو پچھ باقی ہے گل فوراً ادا کر دے اور زیادہ دے دیا ہے تو سال آئندہ میں مُجرا کردے۔ (5)

مَسَنَّانُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ ہے اور دو ہزار کی زکاۃ دی اور نیت بیہ ہے کہ سال تمام تک اگرایک ہزار اور ہوگئے توبیہ اس کی ہے، ورنہ سال آئندہ میں محسوب ہوگی بیرجائز ہے۔ ⁽⁶⁾ (عالمگیری)

سَسَعَالُهُ ٢٥﴾ بيگان كرك كه پانسوروپي بين، پانسوكى زكاة دى پھرمعلوم ہوا كه چار ہى سوتھ توجوزيادہ دياہے،سال آئندہ ميں محسوب كرسكتا ہے۔⁽⁷⁾ (خانيه)

- ٣٠٠٠٠ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٨.
 - 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٦.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 المرجع السابق.
 - 🗗 کیعنی آئندہ سال میں اس کوشار کر لے۔
 - 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٦.
 - 🤿 🦪 "الفتاوي الخانية"، كتاب الزكاة، فصل في اداء الزكاة، ج١، ص١٢٦.

ميثن كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلامي) 🚅

کی حست کا قادی کی دونوں کی دادہ ہے گئی اور سال تمام سے پہلے ایک کی زکا قادی تو وہ دونوں کی زکا قاہے کے ایک کی زکا قادی ہے تو جورہ گیا ہے اس کی زکا قاہیہ ہوگئی ایک درمیان سال میں ان میں سے ایک ہلاک ہوگیا ، اگر چہوہی جس کی نیت سے زکا قادی ہے تو جورہ گیا ہے اُس کی زکا قادی ہے اُس کی زکا قادی ، اُس کی اور اگر اس کے پاس گائے بکری اونٹ سب بقدر نصاب بیں اور پیشتر سے ان میں ایک کی زکا قادی تو جس کی زکا قادی ، اُس کی نصاب جاتی رہی تو وہ باقیوں کی زکا قائیں قرار دی حائے گی۔ (1) (عالمگیری)

سَسَعَالُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ على جس فقير كوزكاة دى تقى ، ختم سال پروه مالدار ہوگيايا مرگيايا معاذ الله مُر تد ہوگيا تو زكاة پرأس كا پچھا اثر نہيں وہ ادا ہوگئ، جس شخص پر زكاة واجب ہے اگروہ مرگيا تو ساقط ہوگئ يعنی اس كے مال سے زكاة دينا ضرور نہيں ، ہاں اگروسيّت كرگيا تو تہائی مال تك وصيّت نافذ ہے اور اگر عاقل بالغ ور ثذا جازت دے ديں تو گل مال سے زكاة اداكى جائے ۔ (عالمگيرى ، در مختار)

مَسِعَلَا اللهِ اللهِ اللهِ الرَّسُك ہے كەزكاة دى يانېيں تواب دے۔ (3) (روالحتار)

🥞 سائمه کی زکاۃ کا بیان 🧲

سائمہ وہ جانورہے جوسال کے اکثر حصہ میں چرکر گذر کرتا ہواور اوس سے مقصود صرف دودھ اور بیچے لینا یا فربہ کرنا ہے۔ (4) (تنویر) اگر گھر میں گھاس لا کر گلاتے ہوں یا مقصود بوجھ لا دنا یا بل وغیرہ کسی کام میں لانا یا سواری لینا ہے تو اگرچہ چرکر گذر کرتا ہو، وہ سائمہ نہیں اور اس کی زکاۃ واجب نہیں۔ یو ہیں اگر گوشت کھانے کے لیے ہے تو سائمہ نہیں، اگرچہ جنگل میں چرتا ہواور اگر تجارت کا جانور چرائی پر ہے تو بیچھی سائمہ نہیں، بلکہ اس کی زکاۃ قیمت لگا کر ادا کی جائے گی۔ (5) (در مختار، ردامختار)

مسئان السلام جومہینے چرائی پررہتا ہے اور چومہینے جارہ پاتا ہے توسائم نہیں اوراگریدارادہ تھا کہ اسے جارہ دیں گے بااس سے کام لیں گے مگر کیانہیں، یہاں تک کہ سال ختم ہوگیا تو زکا ۃ واجب ہے اورا گر تجارت کے لیے تھا اور چھ مہینے یا زیادہ تک

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٦.
 - 2 المرجع السابق.
- ٣٠٠٠٠ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٨.
 - 4 "تنويرالأبصار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٢.
 - 줒 🍕 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٣.

جرائی پردکھا توجب تک میزنیت نہ کرے کہ بیسائمہ ہے، فقط چرانے سے سائمہ نہ ہوگا۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

مَسَعًا ﴾ تجارت کے لیے خریدا تھا پھر سائمہ کر دیا، تو زکا ۃ کے لیے ابتدائے سال اس وقت سے ہے خریدنے کے

وقت ہے نہیں۔⁽²⁾(درمختار)

مسئل سال تمام سے پہلے سائمہ کوکسی چیز کے بدلے نیج ڈالا، اگریہ چیز اس تسم کی ہے جس پرز کا ۃ واجب ہوتی ہے اور پہلے سے اس کی نصاب اس کے پاس موجو ذہیں، تواب اس کے لیے اُس وقت سے سال شار کیا جائے گا۔ (3) (درمختار)

ہروپ ہے۔ ہی تاب مات کی دبرویں مربوب میں سے میں اندھے یا ہاتھ یاؤں کٹے ہوئے جانور کی زکا ق^نہیں۔ یو ہیں اندھے یا ہاتھ یاؤں کٹے ہوئے جانور کی زکا ق

شہیں،البتہ اندھااگر چرائی پررہتا ہے توواجب ہے۔⁽⁴⁾ یو ہیںاگرنصاب میں کمی ہےاوراس کے پاس اندھاجانور ہے کہاس

کے ملانے سے نصاب بوری ہوجاتی ہے توز کا ہ واجب ہے۔ (عالمگیری)

تین قتم کے جانوروں کی زکا ہ واجب ہے، جب کہ سائمہ ہوں۔

- (۱) اونٹ_
- (۲) گائے۔
- (۳) کبری۔

لہٰذاان کی نصاب کی تفصیل بیان کرنے کے بعد دیگرا حکام بیان کیے جائیں گے۔

﴿ اونت کی زکاۃ کا بیان ﴾

صحیحین میں ابوسعید خدری رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں: '' پانچ اونٹ سے کم میں زکا قینہیں ۔'' (5) اوراس کی زکا قامیں تفصیل صحیح بخاری شریف کی اس حدیث میں ہے، جوانس رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ۔ (6)

مَسِعَالَةُ اللَّهِ اللَّهِ اونتْ سے كم ميں زكاة واجب نہيں اور جب پانچ يا پانچ سے زيادہ موں، مَرْ يجيين سے كم موں توہر پانچ

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، ج١٠ ص١٧٦.
 - 2 "تنويرالأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص ٢٣٥.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٥.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٦.
- 5 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب ليس فيما دون خمسة أو سق صدقة، الحديث:٩٧٩، ص٤٨٧.
- 🐒 🚳 "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب من بلغت عندة صدقة...الخ،الحديث ٥٣ ٥ ٤ ١ ، ٤ ٥ ٤ ١ ، ج ١ ، ص ٠ ٤٩.

ن میں ایک بکری واجب ہے یعنی پانچ ہوں تو ایک بکری، دن ہوں تو دُو، وَعَلَی ہٰدِ االقیاس _ ⁽¹⁾ (عامهُ کتب)

<u> سَسَالُهُ الْ الْ</u> وَكُا ةِ مِين جُوبِكِرى دى جائے وہ سال بھرسے كم كى نه ہوبكرى ديں يا بكرااس كاا ختيار ہے۔⁽²⁾ (ردالمختاروغيرہ)

وہی ایک بکری ہے۔⁽³⁾ (درمختار)

سین کور کی دوسری برس میں ہو۔
پینیت سی کی کہ مادہ جوایک سال کا ہو چکا، دوسری برس میں ہو۔
پینیت سی کی کہ کم ہے یعنی وہی بنت مخاض دیں گے۔ چھتیں ہے پینتالیس تک میں ایک بنت لبون یعنی اونٹ کا مادہ بچہ جودو
سال کا ہو چکا اور تیسری برس میں ہے۔ چھیالیس سے ساٹھ تک میں چھ یعنی اونٹ کی ہو چکی چوھی میں ہو۔اکسٹھ سے
سیکھٹے تک جذعہ یعنی چارسال کی اونٹی جو پانچویں میں ہو۔ چھہٹڑ سے نو 'فے تک میں دوبنت لبون ۔اکا نو افے سے ایک سوبین تک
میں دوجھ ۔ اس کے بعد ایک سوبینتالیس تک دوجھ اور ہر پانچ میں ایک بکری، مثلاً ایک سوبچیس میں دوجھ ایک بکری اور
ایک سوتھی میں دوجھ دوبکریاں، (4) ویلی ہز االقیاس (5)۔ پھر ایک سوبچیاس میں تین چھراگراس سے زیادہ ہوں تو ان میں ویسا

- "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الثاني، ج١، ص١٧٧.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص٢٣٨.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص٢٣٨.
 - اونٹ کا نصاب مزید آسانی کے لیے ذیل کا نقشہ ملاحظہ بیجئے: اونٹ کا نصاب

| شرح ز کا ة | تعداد جن پرز کاۃ واجب ہے |
|---------------------------|---|
| ایک بکری | ۵ ہے۔ ۹ تک |
| دوبكرياں | ۱۰ ہے۔ |
| تین بکریاں | ۱۵سے۱۵ک |
| حيار بكريان | ۲۰ سے۲۳ تک |
| ایک سال کی اونٹنی | ت من من المن المن المن المن المن المن الم |
| دوسال کی اونٹنی | سے ۱۳۵ کے |
| تنین سال کی اونٹنی | ۲۹سے ۲۰ تک |
| حيارسال كي اونٹني | ۲۱ سے ۵ کتک |
| وودوسال کی دواونشنیاں | ۲۷ ہے۔ ۹ تک |
| تین، تین سال کی دواونشیاں | ۹۱ ہے۔۱۲ تک |

۱۳۵۰ بینتیس میں دو هقه تین بکریاں ،ایک موچالیس میں دو هقه حپار بکریاں اورایک موہینیتنالیس میں دو هقه اورایک جنبِ مخاض۔

پی کریں جبیبا شروع میں کیا تھا یعنی ہر پانچ میں ایک بکری اور پچین میں بنت مخاض، چھتیں میں بنت لبون، یہ ایک سوچھیا ہی بلکہ

ایک سوچھیا نوے تک کا تکم ہو گیا یعنی اسنے میں تین حِقہ اور ایک بنت ِلبون۔ پھر ایک سوچھیا نوے سے دوسوت کے ارحِقہ اور ریجی

اختیار ہے کہ پانچ بنت لبون دے دیں۔ پھر دوسو کے بعد وہی طریقہ برتیں، جو ایک سوچپیاس کے بعد ہے یعنی ہر پانچ میں

ایک بکری، پچیس میں بنت مخاض، چھتیں میں بنت لبون۔ پھر دوسوچھیا کیس سے دوسوپچیاس تک پانچ جِقہ وعلی مہز القیاس۔ (1)

(عامہُ کتب)

گائے کی زکاہ کا بیان 🎇

ابوداودوتر مذی ونسائی ودارمی معاذبن جبل رضی الله تعالی عند سے راوی ، کہ جب حضورا قدس صلی الله تعالی علیه و بلم نے ان کو یمن کا حاکم بنا کر بھیجا تو یہ فرمایا: که ' ہرتئیں گائے سے ایک تبیع یا تبیعہ لیں اور ہر چالین میں ایک مسن یا مستف' (3) اور اس کے مثل ابوداود کی دوسری روایت امیر المونین مولی علی کرم الله تعالی دجہ سے ہے اور اس میں یہ بھی ہے کہ کام کرنے والے جانور کی ذکا قرنہیں۔(4)

مَسَعَلَیْ اللّٰ مَسِی ہے کم گائیں ہوں تو زکاۃ واجب نہیں، جب تین پوری ہوں تو ان کی زکاۃ ایک تبیع یعنی سال بھر کا بچھڑا یا تبیعہ یعنی سال بھر کی بچھیا، انسٹھ تک یہی بچھڑا یا تبیعہ یعنی دوسال کا بچھڑا یا مُبیّہ یعنی دوسال کی بچھیا، انسٹھ تک یہی حکم ہے۔ پھر ساٹھ میں دوتیع یا تبیعہ پھر ہر تمین میں ایک تبیع یا تبیعہ اور ہر چالین میں ایک مُسِن یامُبیّہ، مثلاً ستز کمیں ایک تبیع اور ایک مُسِن اور چالین دونوں ہوسکتے ہوں وہاں، اختیار ہے کہ تبیع ایک مُسِن اور جالین دونوں ہوسکتے ہوں وہاں، اختیار ہے کہ تبیع

- 1 "تبيين الحقائق"، كتاب الزكاة، باب صدقة السوائم، ج٢، ص٢٣.
- و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص٢٣٨ _ ٢٤٠،وغيرهما.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص ٢٤٠.
 - 3 "سنن أبى داود"، كتاب الزكاة، باب في زكاة السائمة، الحديث: ٥٧٦، ج٢، ص٥٥١.
 - سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في زكاة السائمة، الحديث: ١٥٧٢، ج٢، ص١٤٢.
 - السانی کے لیے ذیل کا نقشہ ملاحظہ کیجئے: گائے کا نصاب

| شرحزكاة | تعداد جن پرز کا ۃ واجب ہے |
|---------------------------|---------------------------|
| ایک سال کا بچھڑا یا بچھیا | ۳۰ہے ۳۹ تک |

المسلم ا

سَسَعَانُ سُ گائے بھینس کی زکاۃ میں اختیار ہے کہ زلیا جائے یامادہ، مگر افضل بیہ ہے کہ گائیں زیادہ ہوں تو بچھیااور نر زیادہ ہوں تو بچھڑا۔ (3)(عالمگیری)

﴿ بكريوں كى زكاة كا بيان

صیح بخاری شریف میں انس رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ صدیقِ اکبر رضی اللہ تعالی عنہ نے جب انھیں بحرین بھیجا تو فر اکف صدقہ جورسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے مقرر فرمائے تھے ککھ کردیے ، ان میں بکری کی نصاب کا بھی بیان ہے اور بید کہ زکا ہ میں نہ بوڑھی بکری دی جائے ، نمعیب والی نہ بکرا۔

ہاں اگر مصدق (صدقہ وصول کرنے والا) چاہے تو لے سکتا ہے۔ (⁴⁾ اور زکا ۃ کے خوف سے نہ متفرق کو جمع کریں نہ مجتمع کو متفرق کریں۔

مسئلاً المستعلقات حوالیس سے کم بکریاں ہوں تو زکا ۃ واجب نہیں اور حیالیس ہوں تو ایک بکری اور یہی تھم ایک سوبلیس تک ہے

| بپورے دوسال کا بچھڑا یا بچھیا | ۴۰ ہے ۵۹ تک |
|--|--------------|
| ایک ایک سال کے دو بچھڑے یا بچھیا ں | ۲۰ ہے۔ ۲۲ تک |
| ایک سال کا بچھڑا یا بچھیااورایک دوسال کا بچھڑا | ۰۷سے۹۷تک |
| دوسال کے دو بچھڑے | ۸۰ سے ۸۹ تک |

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة البقر، ج٣، ص ٢٤١.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثانى في صدقة السوائم، الفصل الثالث، ج١، ص١٧٨.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، الحديث: ٤٥٤١، ٥٥٤١، ج١، ص ٤٩٠.

یعنی ان میں بھی وہی ایک بکری ہےاور ایک سوا کیس میں دواور دوسوایک میں تین اور چارسومیں چار گھر ہرسو پرایک ⁽¹⁾اور جو دو

نصابوں کے درمیان میں ہے معاف ہے۔ (عامہ کتب)

سَسَعَالُهُ اللهِ عَلَى اختیار ہے کہ بکری دے یا بکرا، جو پچھ ہوریضرور ہے کہ سال بھرسے کم کا نہ ہو، اگر کم کا ہو تو قیمت

کے حساب سے دیا جاسکتا ہے۔ ⁽³⁾ (درمختار)

میں بھی ان کودے سکتے ہیں مگر سال ہے کم کے نہ ہوں۔ ⁽⁴⁾ (درمختار)

سَسَعَانُ کی ہے۔ جانوروں میں نسب مال سے ہوتا ہے، تو اگر ہرن اور بکری سے بچہ بیدا ہوا تو بکر یوں میں شار ہوگا اور نصاب میں اگرایک کی کمی ہے تو اُسے ملا کر پوری کریں گے، بکرے اور ہرنی سے ہے تو نہیں۔ یو بیں نیل گائے اور بیل سے ہے تو گائے ہے۔ (⁵⁾ (عالمگیری وغیرہ)

مسئ ایک سال سے کم کے بچے ہوں تو زکا قواجب ہے وہ کم سے کم سال بھر کے ہوں ،اگر سب ایک سال سے کم کے بچے ہوں تو زکا قواجب نہیں اورا گرایک بھی اُن میں سال بھر کا ہو تو سب اس کے تابع ہیں ، زکا قواجب ہوجائے گی ، یعنی مثلاً بکری کے چالین بھی سال سال بھر سے کم کے خرید ہے تو وقت خریداری سے ایک سال پرزکا قواجب نہیں کہ اس وقت قابلِ نصاب نہ تھے بلکہ اُس وقت سے سال لیا جائے گا کہ ان میں کا کوئی سال بھر کا ہوگیا۔ یو ہیں اگر اس کے پاس بفتر رنصاب بکریاں تھیں اور چھ

مزیدآسانی کے لیے ذیل کا نقشہ ملاحظہ کیجئے:

| شرح زكاة | تعدادجن پرز کا ۃ فرض ہے |
|--------------------|-------------------------|
| ایک بکری | ۴۰ ہے۔۲۱ تک |
| دوبكرياں | ا۲۱ ہے۔ ۲۰ تک |
| تین بکریاں | ۲۰۱ ہے۔۳۹۹ تک |
| چ <u>ار</u> بگريال | ۰۰م سے۹۹م تک |
| ایک بکری کااضافه | پھر ہرسو پر |

- 2 "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٢٤٣.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الرابع، ج١، ص١٧٨.
 - ③ "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٢٤٣.
 - 4 المرجع السابق، ص٢٤٢.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الرابع، ج١، ص١٧٨، وغيره.

نہیں،لہذاز کا ۃ واجب نہیں۔⁽¹⁾ (جوہرہ)

سَسَعَانُ اللّٰ اللّٰهِ الرّاس کے پاس اونٹ، گائیں، بکریاں سب ہیں مگر نصاب سے سب کم ہیں یا بعض تو نصاب پوری کرنے کے لیے خلط نہ کریں گے اور زکا ۃ واجب نہ ہوگا۔ (2) (درمختار وغیرہ)

سَمَعَانُهُ کی ہوں تو ورجہ کا جانورلیا جائے گا پُن کرعمدہ نہ لیں ، ہاں اُس کے پاس سب الجھے ہی ہوں تو وہی لیں اور گا بھن اور وہ جانور نہ لیں جسے کھانے کے لیے فر بہ کیا ہو، نہ وہ مادہ لیں جواپنے بچے کو دود دھیلاتی ہے نہ بکرالیا جائے۔(3) (عالمگیری، درمختار، روالحتار)

مسئ کی اور ہو جس عمر کا جانور دینا واجب آیا وہ اس کے پاس نہیں اور اس سے بڑھ کرموجود ہے تو وہ دے دے اور جو زیادتی ہووا پس لے، مگر صدقہ وصول کرنے والے پر لے لینا واجب نہیں اگر نہ لے اور اُس جانور کو طلب کرے جو واجب آیا یا اس کی قیمت تو اُسے اس کا اختیار ہے جس عمر کا جانور واجب ہوا وہ نہیں ہے اور اس سے کم عمر کا ہے تو وہی دیدے اور جو کی بڑے اُس کی قیمت دیدے دونوں طرح کرسکتا ہے۔ (4) (عالمگیری)

<u> سَسَعَالُهُ 9 ﴾</u> گھوڑے، گدھے، خچرا گرچہ چرائی پر ہوں ان کی زکا ۃ نہیں ، ہاں اگر تجارت کے لیے ہوں تو ان کی قیمت نگا کرائس کا حیالیسواں حصہ زکا ۃ میں دیں۔⁽⁵⁾ (درمختار وغیر ہ)

مسئ ان المراق ہوجائے تو زکاۃ میں ہوتی بعنی بعد سال تمام اگروہ عنو ہلاک ہوجائے تو زکاۃ میں کوئی کی نہ ہوگی اور واجب ہونے کے بعد نصاب ہلاک ہوگئی تواس کی زکاۃ بھی ساقط ہوگئی اور ہلاک پہلے عفو کی طرف بھیریں میں کوئی کی نہ ہوگی اور واجب ہونے کے بعد نصاب ہاس کی طرف بھر بھی بچے تو اسکے بعد وعلیٰ بذا القیاس ۔ مثلاً استی مجمریاں تھیں جاس کی طرف بھر بھی بچے تو اسکے بعد وعلیٰ بذا القیاس ۔ مثلاً استی مجمریاں تو بنتِ جاس کی طرف بھر بھی نے بعد دوسرا جالیس عفو ہے اور جالیس اونٹ میں بپندرہ مرگئے تو بنتِ مخاض واجب ہے کہ جالیس میں جارعفو ہیں وہ نکا لے ،اس کے بعد چھتیں کی نصاب ہے وہ بھی کافی نہیں ، لہٰذا گیارہ اور نکا لے ،

- 1 "الحوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب زكاة الخيل، ص ١٥٤.
- ◘ "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٨٠. وغيره
 - ③ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص ٢٥١.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الثاني، ج١، ص٧٧.
 - 5 "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص ٢٤٤، وغيره.

[©] تجییس رہان میں بنتِ مخاص کا حکم ہے بس یہی دیں گے۔⁽¹⁾ (درمختار،روالمحتا روغیر ہما)

سَمَالَ الله و کریاں زکاۃ میں واجب ہوئیں اور ایک فربہ بکری دی جو قیت میں دو کی برابر ہے زکاۃ ادا ہوگئی۔ (2) (جو ہرہ)

مستان ۱۳ استان ۱۳ سال تمام کے بعد مالک نصاب نے نصاب خود ہلاک کردی تو زکا قساقط نہ ہوگی ، مثلاً جانور کو چارا پانی نہ دیا گیا کہ مرگیا زکا قدینی ہوگی۔ یو ہیں اگر اُس کا کسی پر قرض تھا اور وہ مقروض مالدار ہے سال تمام کے بعد اس نے معاف کردیا تو یہ ہلاک کرنا ہے ، لہذا زکا قدے اور اگروہ نا دارتھا اور اس نے معاف کردیا تو ساقط ہوگئی۔(3) (درمختار)

سکانی استان استان

مسئ المرابعی زکاۃ نہیں دی، ان کے پاس روپے اشرفیاں تھیں جن پرسال گزرا مگرا بھی زکاۃ نہیں دی، ان کے بدلے تجارت کے لیے کوئی چیز خریدی اور یہ چیز ہلاک ہوگئ تو زکاۃ ساقط ہوگئ مگر جب کہ اتنی گراں (5) خریدی کہ اتنے نقصان کے ساتھ لوگ نہ خریدتے ہوں تو اُس کی اصلی قیمت پر جو پچھزیا دہ دیا ہے، اس کی زکاۃ ساقط نہ ہوگی کہ وہ ہلاک کرنا ہے اور اگر تجارت کے لیے نہو، مثلاً خدمت کے لیے غلام خریدا، وہ مرگیا تو اس روپے کی زکاۃ ساقط نہ ہوگی۔ (6) (ردا محتار)

مَسِعًا ﴾ الماني المناه المام ني الرجه ظالم ياباغي مو، سائمه كي زكاة لي ياعُشر وصول كرليا اورانهين محل برصرف كيا تو

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٢٤٦، وغيرهما.
 - الحوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب زكاة الذهب، الجزء الاوّل، ص٩٥٠.
 - 3 "الدرالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٢٤٧.
 - 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص ٢٤٨ _ ٢٥٠.
 - 🗗 کیعنی مهنگلی۔
 - 💣 🌀 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٢٤٨.

اعاده کی حاجت نہیں اور کل پرصرف نہ کیا تواعادہ کیاجائے اور خراج لے لیا تو مطلقاً اعادہ کی حاجت نہیں۔ (1) (درمختار)

<u> مَسعًا ﴾ الله الله الله الله وصول كرنے والے) كے سامنے سائمہ نے ڈالا تومُصدٌ ق كواختيار ہے جاہم بقدرز كا ة اس</u>

میں سے قیمت لے لےاوراس صورت میں نیع تمام ہوگئی اور جاہے جو جانور واجب ہواوہ لے لےاوراس وقت جولیااس کے حق میں نیع باطل ہوگی اورا گرمُصدّ ق وہاں موجود نہ تھا بلکہ اس وقت آ ما کم مجلس عقد سے وہ دونوں حُد ا ہو گئے تو اب حانور نہیں لے

سکتا، جو جانورواجب ہوا، اُس کی قیمت لے لیے۔⁽²⁾(عالمگیری)

مسئلہ کا ہے۔ جس غلمۃ پرعشر واجب ہوا اُسے نی ڈالا تو مُصدّ ق کواختیار ہے جاہے بائع (3) سے اس کی قیمت لے یا مشتری (4) سے اُتنا غلّہ والیس لے، بھی اس کے سامنے ہوئی ہو یا دونوں کے جُد اہونے کے بعد مُصدّ ق آیا۔ (5) (عالمگیری) مشتری (4) سے اُسی اُسی کے سامنے ہوئی ہو یا دونوں کے جُد اہونے کے بعد مُصدّ ق آیا۔ (5) (عالمگیری) مسئلہ کا کہ جالیس جالیس کے دوا گروہ کر کے دوا کر وہ کر کے دوا کر وہ کر کے دوا کر وہ کر دیں کہ ایک ہی جالیس جالی گروہ کردیں کہ ایک ہی جالیس جالی گروہ کردیں کہ ایک ہی دوا کا ق میں لیس اور اگر دوا مخصوں کی جالیس جالیس جالیس کر بیاں ہیں تو بنہیں کرسکتے کہ اُخیس جمع کر کے ایک گروہ کردیں کہ ایک ہی

عمری زکاۃ میں دینی پڑے، بلکہ ہرایک سے ایک ایک لی جائے گی۔ یو ہیں اگر ایک کی انتالیٹ ہیں اور ایک کی حالیش تو انتالیٹ والے سے پچھنہ لیں گے،غرض نمجتمع کومتفرق کریں گے، نہ متفرق کومجتمع ۔ ⁽⁶⁾ (عالمگیری وغیرہ)

ان یا واسے ہے پھانہ میں شرکت سے زکا قریر بچھا اثر نہیں پڑتا،خواہ وہ کسی قتم کی ہو۔اگر ہرایک کا حصہ بقد رنصاب ہے تو مسئل 19 ایک میں شرکت سے زکا قریر بچھا اثر نہیں پڑتا،خواہ وہ کسی قتم کی ہو۔اگر ہرایک کا حصہ بقد رنصاب ہے تو

دونوں پر پوری پوری زکاۃ واجب اور ایک کا حصہ بقدر نصاب ہے دوسرے کا نہیں تو اس پر واجب ہے، اس پر نہیں مثلاً ایک کی چالین بھری اس بین میں دوسرے کی تعیب تو چالین بھری تعیب والے پر ایک بھری تعیب اگراور کسی کی بفتدر نصاب نہ ہوں مگر مجموعہ بفتدر نصاب ہے تو کسی پر پچھ نہیں۔ (⁷⁾ (عالمگیری وغیرہ)

ر است است است کے است کی است کا میں الکاشی شریک ہیں، یوں کہ ایک شخص ہر بکری میں نصف کا مالک ہے اور ہر بکری کے دوسرے نصف کا ان میں سے ایک ایک شخص مالک ہے تو اُس کے سب حصوں کا مجموعہ حیالیش کے برابر ہوا اور بیسب صرف

- 1 "الدرالمختار" كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٥٥ ٢.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث، في زكاة الذهب والفضة والعروض مسائل شتي، ج١، ص١٨١.
 - العنی فروخت کرنے والے۔
 - 4 لعنی خرید نے والے۔
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث، في زكاة الذهب والفضة والعروض مسائل شتى، ج١٠ ص ١٨١.
 - 6 المرجع السابق، وغيره.
 - 7 المرجع السابق.

ورونتار) آوهی آوهی بکری کے حصہ دار ہوئے ، مگرز کا قائسی پنہیں۔(1) (درمیتار)

سکان (۱) جو بھوصہ سے زائد گیا وہ شریک سے واپس لے مصدی قدرہ، جو بھوصہ سے زائد گیا وہ شریک سے واپس لے ، مثلاً ایک کا اتبالا کیستان (۱) بین ، برایک سے واپس لے ، مثلاً ایک کا اتبالا بین ، دوسر سے کی بیائی، کل ایک سوئیس ہوئیں اور دو زکا قبیس کی گئیں ، بعنی ہرایک سے ایک مگر چونکہ ایک تہائی کا شریک ہے اور دوسرا دو کا ، البذا ہر بکری میں دو تہائی والے کی دو تہائیاں گئیں ، جن کا مجموعہ ایک بکری تہائی اور ایک بکری ہے اور ایک تہائی والے کی ہر بکری میں ایک ہی تہائی گئی کہ مجموعہ دو تہائیاں ہوا اور اُس پر واجب ایک بکری ہے ، البذا دو تہائیوں والا ایک تہائی والے سے تہائی کا شریک ہے ، البذا دو تہائی کا اور زکا قبیں ایک بکری لی گئی تو تہائی کا حصہ دار اپنے شریک سے تہائی بکری کی قیمت لے کہ اس پر زکا قوجے نہیں ۔ (ردالحتار)

سونے چاندی مالِ تجارت کی زکاۃ کا بیان

خلین ایک سنن ابی داود و تر ندی میں امیر المونین مولی علی کرم الله وجه سے مروی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه و با مقر مات بیں: '' گھوڑے اور لونڈی غلام کی زکاۃ میں نے معاف فر مائی تو اب جاندی کی زکاۃ ہر جالیس درہم سے ایک درہم اوا کرو، مگر ایک سونوے میں بچھنمیں ، جب دوسو درہم ہول تو یانچ درہم دو۔'' (3)

خلیث البوداود کی دوسری روایت آخیں سے بول ہے، کہ ہر چالیش درہم سے ایک درہم ہے، مگر جب تک ۲۰۰ ہیں۔ سرنہا کی دوسری روایت آخیں سے تول ہے، کہ ہر چالیش درہم سے ایک درہم ہے، مگر جب تک

۲۰۰ دوسودرہم پورے نہ ہول چھ ہیں جب دوسو پورے ہوں تو پانچ درہم اوراس سے زیادہ ہوں تواسی حساب سے دیں۔ (⁴⁾

اقدس کے دین سے میں جوابت عمر و بن شعیب عن ابیعن جدہ مروی، کہ دوعورتیں حاضرِ خدمت اقدس جو کیں، اُن کے ہاتھوں میں سونے کے کنگن تھے،ارشاد فرمایا:''تم اس کی زکاۃ اداکرتی ہو؟ عرض کی نہیں فرمایا: تو کیاتم اُسے

پندكرتى موكهالله تعالى تعين آگ كے نگن پېنائے ،عرض كى ند فرمايا: تواس كى زكا ۋادا كرو-' (5)

<u> کی پیٹ کی ہیں: میں سونے کے امام مالک وابوداود وام المومنین ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنبا سے روایت کرتے ہیں فر ماتی ہیں: میں سونے کے </u>

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٨١.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص ٢٨٠.
- 3..... "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ما جاء في زكاة الذهب والورق، الحديث: ٦٢٠، ج٢، ص١٢٢.
 - ◘ "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في زكاة السائمة، الحديث: ٧٧٦ ١، ج٢، ص١٤٢.
 - 🥱 🗗 "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في زكاة الحلى، الحديث: ٦٣٧، ج٢، ص١٣٢.

ن یور پہنا کرتی تھی، میں نے عرض کی یارسول اللہ (صلی اللہ تعالی علیہ ہلم) کیا یہ کنز ہے (جس کے بارے میں قرآن مجید میں وعیدآئی)

؟ارشادفر مایا: ' جواس حدکو پنچ کهاس کی ز کا ة اداکی جائے اورادا کر دی گئی تو کنزنہیں۔' (1)

خلیف ۵ امام احمد با سناد حسن اسابنت برید سے راوی ،کہتی ہیں۔ میں اور میری خالہ حاضر خدمتِ اقدس ہو کیں اور ہمر کی خالہ حاضر خدمتِ اقدس ہو کیں اور ہمر کی خالہ کی اندی تعلق میں ہو کہ اللہ تعالی شمیں ہم سونے کے نگن پہنے ہوئے تھے۔ارشاد فرمایا: ''اس کی زکا قادا کرو'' (2)

آگ کے نگن بہنائے ،اس کی زکا قادا کرو'' (2)

خلیث 👣 🚽 ابوداود وسمرہ بن جندب بضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ ہم کورسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم حکم دیا کرتے کہ

"جسكوم كا تعارت) كے ليے مهياكري،اس كى زكاة كالس " (3)

سکان ایک دو تکو درم یعنی ساڑھے باون تو لیے اور چاندی کی دو تک و درم یعنی ساڑھے باون تو لیے اور چاندی کی دو تکو درم یعنی ساڑھے باون تو لیعنی وہ تو لیجنی وہ تو لیجنی وہ تو لیجنی وہ تو لیجنی وہ تا کہ کا زیور یابرتن بنا ہو کہ اس کی کاریگری کی وجہ سے دو تعور م سے زائد قیمت ہوجائے یا سونا گراں ہو کہ ساڑھے سات تو لیسونے کی قیمت جو بائدی کی ساڑھے سات تو لیسونے کی قیمت چاندی کی ساڑھے سات تو لیسونے کی قیمت چاندی کی ساڑھے سات تو لیسونے کی قیمت جو بیل مونے کی تو تا تو کئی نصابیں ہوں گی، غرض مید کہ وزن میں بھتر رنصاب نہ ہو تو زکا ہ واجب نہیں قیمت جو پھی ہو۔ یو ہیں سونے کی زکا ہ میں سونے اور چاندی کی زکا ہ میں جاندی کی کوئی چیز دی تو اس کی قیمت کا اعتبار نہ ہوگا، بلکہ وزن کا آگر چاس میں بہت پھے صنعت ہو جس کی وجہ سے قیمت بڑھ گئی یا فرض کرودس آنے بھری چاندی بک رہی ہے اور زکا ہ میں ایک رو پید یا جوسولہ آنے کا قرار ویا جاتا ہے تو زکا ۃ اداکر نے میں وہ یہی سمجھا جائے گا کہ سوا گیارہ ماشے چاندی دی ، یہ چھ آنے بلکہ پھوا و پر جواس کی قیمت میں زائد جیں بغو بیں۔ (۵) (درمختار ، ردمختار ، ردالحتار)

سَسَعَانُ کَ کَ اَن مِینَ کَ اوائِ زَکاۃ میں قیمت کا اعتبار نہیں، بیاس صورت میں ہے کہ اُس کی جنس کی زکاۃ اُسی جنس سے اوا کی جائے اور اگر سونے کی زکاۃ میں سے اوا کی تو قیمت کا اعتبار ہوگا، مثلاً سونے کی زکاۃ میں سے اوا کی جائے اور اگر سونے کی زکاۃ میں جاندی کی کوئی چیز دی جس کی قیمت ایک اشرفی ہے تو ایک اشرفی و بینا قرار پائے گا، اگر چہوزن میں اس کی جاندی پندرہ روپے

- ❶ "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب الكنز ما هو؟ وزكاة الحلي، الحديث: ١٥٦٤، ج٢، ص١٣٧.
- "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، من حديث أسماء ابنة يزيد، الحديث: ٢٧٦٨٥، ج٠١، ص٤٤٦.
- 3. "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب العروض اذا كانت للتجارة هل فيها زكاة؟، الحديث: ١٥٦٢، ج٢، ص١٣٦.
 - . ۲۲۷ ـ ۲۲۷ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٦٧ ـ ٢٧٠.

هر بهی نه هو_⁽¹⁾ (ردالحتار)

سکتے جیسے روپ اشرفیاں یا ان کی کوئی چیز بنی ہوئی خواہ اس کا استعال جائز ہوجیسے عورت کے لیے زیور، مرد کے لیے چاندی کی سکتے جیسے روپ اشرفیاں یا ان کی کوئی چیز بنی ہوئی خواہ اس کا استعال جائز ہوجیسے عورت کے لیے زیور، مرد کے لیے چاندی کی ایک نگ کی ایک انگوشی ساڑھے چار ماشے سے کم کی یا سونے چاندی کے بلا زنچیر کے بٹن یا استعال ناجائز ہوجیسے چاندی سونے کے برتن، گھڑی، سُر مہدانی، سلائی کہ ان کا استعال مرد وعورت سب کے لیے حرام ہے یا مرد کے لیے سونے چاندی کی چھلا یا زیور یا سونے کی انگوشی یا ساڑھے چار ماشے سے زیادہ چاندی کی انگوشی یا چندانگوشیاں یا گئی نگ کی ایک انگوشی، غرض جو پچھ ہو زکا قسب کی واجب ہے، مثلاً کے لیے تولیسونا ہے تو دوماشرز کا قواجب ہے یا ۵۲ تولید ماشہ چاندی ہے توایک تولیس ماشہ ارتی۔ (درمختار وغیرہ)

سین کی نصاب کو پہنچ تو اس پر بھی نکا قادہ تجارت کی کوئی چیز ہو، جس کی قیمت سونے چاندی کی نصاب کو پہنچ تو اس پر بھی نکا قادہ جب ہیں قیمت کا چالیسوال حصداور اگر اسباب کی قیمت تو نصاب کو نہیں پہنچ تی مگر اس کے پاس ان کے علاوہ سونا چاندی بھی ہے تو اُن کی قیمت سونے چاندی کے ساتھ ملا کر مجموعہ کریں ، اگر مجموعہ نصاب کو پہنچا زکا قا واجب ہے اور اسباب تجارت کی قیمت اُس سکتے سے لگا ئیں جس کا رواج وہاں زیادہ ہو، جیسے ہندوستان میں روپیہ کا زیادہ چلن ہے، اس سے قیمت لگا ئی جائے اور اگر کہیں سونے چاندی دونوں کے سکوں کا کیسال چلن ہو تو اختیار ہے جس سے چاہیں قیمت لگا ئیں ، مگر جب کہ روپیہ سے ایک بین ہوتی اور اگر کہیں ہوتی ہوتی ہوجاتی ہے یا بلعکس تو اُسی سے قیمت لگائی جائے جس سے نصاب پوری ہوتی ہوتی ہے مگر ایک سے نصاب کے علاوہ نصاب کا پانچواں حصد زیادہ ہوتا ہے ، دوسر سے نہیں تو اس سے قیمت لگا ئیں جس سے ایک نصاب اور نصاب کا پانچواں حصد ہو۔ (3) (درمختار وغیرہ)

مسئالہ کی ہے۔ نصاب سے زیادہ مال ہے تو اگر بیزیادتی نصاب کا پانچواں حصہ ہے تو اس کی زکاۃ بھی واجب ہے، مثلاً دوسوچالیس درم یعنی ۱۳ تولہ چا ندی ہوتو زکاۃ میں چھدرم واجب، یعنی ایک تولہ ۲ ماشہ اللہ سے ۱۳ تولہ ۲ ماشہ کے ۱۳ تولہ ۲ ماشہ کے بعد ہرایک تولہ ۲ ماشہ کے بعد ہرایک تولہ ۲ ماشہ پر ۳ ماشہ اللہ اللہ کا مشہ کے بعد ہرایک تولہ ۲ ماشہ پر ۳ میں اور پانچواں حصہ نہ ہوتو معانی یعنی مثلاً نو تولہ سے ایک رتی کم اگر سونا ہے تو زکاۃ وہی کے تولہ ۲ ماشہ بر ۳ میں کے بعد ہرایک تولہ ۲ ماشہ بر ۳ میں کے بعد ہرایک تولہ ۲ ماشہ بر ۳ میں کو نو کاۃ وہی کے تولہ ۲ ماشہ بر ۳ میں کی کو لہ ۲ ماشہ بر ۳ میں کو ایک تولہ ۲ ماشہ بر ۳ میں کو کو کو کو کو کو کو کو کو کہ ۲ میں کو کو کہ ۲ میں کو کہ کو کہ ۲ میانچوال کو کہ کو کہ ۲ میں کو کہ ۲ میں کو کہ ۲ میانچوال کیس کو کو کہ کو کہ

^{1 &}quot;ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٧٠.

^{2 &}quot;الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص ٢٧٠، وغيره.

^{🔊} المرجع السابق، ص٢٧٠ ـ ٢٧٢، وغيره.

🥞 کی واجب ہے یعنی ماشہ یو ہیں جاندی اگر ۲۳ تولہ سے ایک رتی بھی کم ہے تو زکا ۃ وہی ۵۲ تولہ ۲ ماشہ کی ایک تولہ ۳ ماشہ ۲ رتی واجب ۔ یو ہیں یانچویں حصہ کے بعد جوزیادتی ہے، اگروہ بھی یانچواں حصہ ہے تو اُس کا حیالیسواں حصہ واجب ور نہ معاف وعلی ہٰذاالقیاس۔مال تجارت کا بھی یہی تھم ہے۔⁽¹⁾ (درمختار)

سَسَعَانُ اللَّهِ الرُّسونے جاندی میں کھوٹ ہواور غالب سونا جاندی ہے تو سونا جاندی قرار دیں اور کل پرز کا ۃ واجب ہے۔ یو ہیں اگر کھوٹ سونے جاندی کے برابر ہو تو زکاۃ واجب اوراگر کھوٹ غالب ہو تو سونا جاندی نہیں پھراس کی چند صورتیں ہیں۔اگراس میں سونا چاندی اتنی مقدار میں ہوکہ جُد اکریں تو نصاب کو پہنچ جائے یاوہ نصاب کونہیں پہنچا گراس کے پاس اور مال ہے کہ اس سے مل کرنصاب ہو جائے گی یا وہ تمن میں چاتا ہے اور اس کی قیمت نصاب کو پہنچتی ہے تو ان سب صورتوں میں زکا ۃ واجب ہےاوراگران صورتوں میں کوئی نہ ہو تواس میں اگر تجارت کی بیّت ہو تو بشر الط تجارت اُسے مال تجارت قرار دیں اوراس کی قیمت نصاب کی قدر ہو،خود یا اورول کے ساتھ ل کر تو زکا ہ واجب ہے ور ننہیں۔(2) (در مختار)

سے کے گئے کی ہے۔ سونے جاندی کو باہم خلط کر دیا تو اگر سونا غالب ہو، سوناسمجھا جائے اور دونوں برابر ہوں اور سونا بقدرِ نصاب ہے، تنہایا جاندی کے ساتھ ال کر جب بھی سونا سمجھا جائے اور جاندی غالب ہو تو جاندی ہے، نصاب کو پہنچے تو جاندی کی زکاۃ دی جائے مگر جب کہ اس میں جتنا سونا ہے وہ چاندی کی قیت سے زیادہ ہے تو اب بھی گل سونا ہی قرار دیں۔ (3) (درمختار، ردامختار)

سن کے یاس سونا بھی ہے اور چاندی بھی اور دونوں کی کامل نصابیں تو پیضر ورنہیں کہ سونے کو چاندی یا چاندی کوسونا قرار دے کرز کا ۃ ادا کرے، بلکہ ہرایک کی ز کا ۃ علیحدہ علیحدہ واجب ہے۔ ہاں ز کا ۃ دینے والا اگر صرف ایک چیز ہے دونوں نصابوں کی زکا ۃ اداکرے تواہے اختیار ہے، گراس صورت میں بیواجب ہوگا کہ قیمت وہ لگائے جس میں فقیروں کا زیادہ نفع ہے مثلاً مندوستان میں رویے کا چلن بنسبت اشرفیوں کے زیادہ ہے تو سونے کی قیمت چاندی سے لگا کر چاندی زکاۃ میں دے اور اگر دونوں میں سے کوئی بقدرنصاب نہیں تو سونے کی قیمت کی جاندی یا جاندی کی قیمت کا سونا فرض کر کے ملائیں پھرا گرملانے پر بھی نصاب نہیں ہوتی تو کچھنہیں اورا گرسونے کی قیمت کی جاندی جاندی میں ملائیں تونصاب ہوجاتی ہے اور جا ندی کی قیمت کا سونا سونے میں ملائمیں تو نہیں ہوتی یا بالعکس تو واجب ہے کہ جس میں نصاب یوری ہووہ کریں اورا گر دونوں

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٧٢.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٧٣ _ ٢٧٥.
- الدرالمختار "و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٧٥ _ ٢٧٧.

📽 صورت میں نصاب ہو جاتی ہے تو اختیار ہے جو چاہیں کریں مگر جب کہ ایک صورت میں نصاب پریانچواں حصہ بڑھ جاتا ہے تو جس میں یانچواں حصہ بڑھ جائے وہی کرنا واجب ہے،مثلاً سواچھبیٹس تو لے جاندی ہےاور یونے جارتو لےسونا،اگر پونے جار تو لے سونے کی جاندی سواچھییں تو لے آتی ہے اور سواچھییں تو لے جاندی کا بونے چارتو لے سونا آتا ہے تو سونے کو جاندی یا عاندی کوسونا جو عاہیں تصور کریں اور اگر یونے عار تولے سونے کے بدلے ۳۷ تولے عاندی آتی ہے اور سوا چھییں تولے جاندی کا یونے جارتو لےسونانہیں ملتا تو واجب ہے کہ سونے کو جاندی قرار دیں کہ اس صورت میں نصاب ہو جاتی ہے، بلکہ یانچواں حصہ زیادہ ہوتا ہے اوراُس صورت میں نصاب بھی پوری نہیں ہوتی۔ یو ہیں اگر ہرایک نصاب سے پچھزیادہ ہے تو اگر زیادتی نصاب کا پانچواں ہے تواس کی بھی زکاۃ دیں اوراگر ہرایک میں زیادتی پانچواں حصہ نصاب ہے کم ہے تو دونوں ملائیں، اگرمل کربھی کسی کی نصاب کا یا نچواں حصنہیں ہوتا تواس زیاد تی پر پچھنمیں اورا گر دونوں میں نصاب یا نصاب کا یا نچواں حصہ ہو تو اختیار ہے، مگر جب کہا یک میں نصاب ہواور دوسرے میں یانچواں حصہ تو وہ کریں جس میں نصاب ہواورا گرایک میں نصاب یا یانچواں حصہ ہوتا ہے اور دوسرے میں نہیں تو وہی کرنا واجب ہے، جس سے نصاب ہویا نصاب کا پانچواں حصہ۔ (1) (درمختار، ر دالحتار وغير بها)

مسئل الله عليه الله المرائح ہوں اور دوسودرم جاندی (²⁾ یا بیس مثقال سونے ⁽³⁾ کی قیمت کے ہوں تو ان کی زکا ق واجب ہے (4)،اگرچہ تجارت کے لیے نہ ہوں اور اگر چکن اُٹھ گیا ہو تو جب تک تجارت کے لیے نہ ہوں ز کا ۃ واجب نہیں۔ (فقاویٰ قاری الہدایہ) نوٹ کی زکاۃ بھی واجب ہے، جب تک ان کا رواج اور چلن ہو کہ یہ بھی ثمن اصطلاحی ⁽⁵⁾ ہیں اور پیپیوں کے حکم میں ہیں۔

سَتَانُ 🕩 🎏 جو مال کسی بر دَین (6) ہو، اس کی ز کا ۃ کب واجب ہوتی ہےاورادا کب اس میں تین صورتیں ہیں۔اگر وَين قوى مو، جيسة قرض جسع ف مين وستكروال كهتم مين اور مال تجارت كاثمن مثلاً كوكي مال أس في بدنيت تجارت خريدا، أس کسی کے ہاتھ اُدھار بچ ڈالا یا مال تجارت کا کرا ہیں مثلاً کوئی مکان یاز مین بہ نیت تجارت خریدی ، اُسے کسی کوسکونٹ یا زراعت کے ،

- ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٧٨، وغيرهما.
 - **2**..... یعنی ساڑھے باون تولے۔
 - 3 يعنى ساڑھے سات تولے۔
 - 4 "فتاوى قارئ الهداية"، ص ٢٩.
 - یعنی وہمن ہے جود رحقیقت متاع (سامان) ہے لیکن لوگوں کی اصطلاح نے اسے ثمن بنا دیا۔
- 🙃 یہاں دَین ہےمرادمطلقاً قرض ہی نہیں ، بلکہ ہروہ مال ہے جو کسی بھی سبب ہے کسی شخص کے ذرمہ واجب ہو۔

لیے کرایہ پردے دیا، یہ کرایہ اگر اُس پر دَین ہے تو دَین توی ہوگا اور دَین توی کی زکا قبحالتِ دَین ہی سال بہ سال واجب ہوتی رہے گی، گر واجب الادا اُس وقت ہے جب پانچواں حصہ نصاب کا وصول ہوجائے، گر جتنا وصول ہوا استے ہی کی واجب الادا ہے یعنی چالیس درم وصول ہونے سے ایک درم دینا واجب ہوگا اور استی وصول ہوئے تو دو، وعلی ہذا القیاس ۔ دوسرے دَین متوسط کہ کسی مالی غیر تجارتی کا بدل ہو مثلاً گھر کا غلّہ یا سواری کا گھوڑ ایا خدمت کا غلام یا اور کوئی شے حاجت اصلیہ کی بی ڈالی اور دام خریدار پر باقی ہیں اس صورت میں زکا قدینا اس وقت لازم آئے گا کہ دوسودرم پر قبضہ ہوجائے۔ یو ہیں اگر مُورث کا دینا ان مقت لازم آئے گا کہ دوسودرم ہونے اور مُورث کی موت کوسال گزرنے پر زکا قدینا لازم آئے گا۔ تیسرے دین ضعیف جوغیر مال کا بدل ہوجیسے مہر، بدل ضع ، دیت، بدلِ کتابت یا مکان یا دوکان کہ بنیت تجارت خریدی نظمی اس کا کرایہ کرایہ دار پر چڑھا، اس میں زکا قدینا اس وقت واجب ہے کہ نصاب پر قبضہ کرنے کے بعد سال گزرجائے یا اس خریاں کوئی نصاب اس جنس کی ہے اور اس کا سال تمام ہوجائے تو زکا قدوا جب ہے۔

پھراگر دَین قوی یا متوسط کئی سال کے بعد وصول ہو تو اگلے سال کی زکا ق جواس کے ذمہ دَین ہوتی رہی وہ پچھلے سال کے حساب میں اسی رقم پر ڈالی جائے گی، مثلاً عمر و پر زید کے تین سو درم دَین قوی ہے، پانچ برس بعد چالیس درم ہے کم وصول ہوئے تو پیختہیں اور چالیس وصول ہوئے تو ایک درم دینا واجب ہوا، اب انتالیس باقی رہے کہ نصاب کے پانچویں حصہ ہے کم ہوئے تو پختہیں اور پانچ ہیں اور پانچ ہیں اور پانچ ہیں اور پانچ بہندا باقی برسوں کی ابھی واجب نہیں اور اگر تین سو درم دین متوسط تھے تو جب تک دوسو درم وصول نہ ہوں پچھنیں اور پانچ برس بعد دوسو وصول ہوئے تو اکیس واجب ہوں گے، سال اوّل کے پانچ ابسال دوم میں ایک سوپچانو سے رہان میں سے کم ہیں معاف ہو گئے، ایک سوسا ٹھر ہے اس کے چار درم واجب البذا سال سوم میں ایک سواکا نو سے رہان میں بھی چار درم واجب، لہذا گل میں بھی چار درم واجب، لہذا گل ایک سوتر اسی رہے واجب، لہذا گل ایک سوستا ہی رہے، پنجم میں ایک سوتر اسی رہے ان میں بھی چار درم واجب، لہذا گل ایک سوستا ہی رہے۔ (1) (درمختار، روالحیٰ روغیر ہما)

سَسَتَانُ اللَّهِ الرَّدَين سے پہلے سال نصاب رواں تھا تو جو دَين اثنائے سال ميں کسي پرلازم آيا، اس کا سال بھي وہي قرار ديا جائے گا جو پہلے سے چل رہا ہے، وفت دَين سے نہيں اورا گر دَين سے پہلے اس جنس کی نصاب کا سالِ رواں نہ ہو تو وفت ِ دَين سے شار ہوگا۔ ((روالحتار)

الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، مطلب في وجوب الزكاة في دين المرصد، ج٣،
 حم ٢٨١ ـ ٢٨١، وغيرهما.

^{2 &}quot;ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في وجوب الزكاة في دين المرصد، ج، ٣ص٣٨٣.

🗳 مَسْعَالُهُ 🗥 ﷺ کسی پر دَین قوی یا متوسط ہےاور قرض خواہ کا انتقال ہو گیا تو مرتے وفت اس دَین کی زکاۃ کی وصیّت ضرور نہیں کہ اس کی زکا ۃ واجب الا داتھی ہی نہیں اور وارث پر زکاۃ اس وقت ہوگی جب مُورث کی موت کو ایک سال گزر جائے اور چالیس درم دَین قوی میں اور دوسودرم دَین متوسط میں وصول ہوجائیں ۔ ⁽¹⁾ (ردالحتار)

سال تمام کے بعد دائن نے دین معاف کر دیا یا سال تمام سے پہلے مالِ زکاۃ ہبہ کر دیا تو زکاۃ ساقط ہوگئی۔⁽²⁾(درمختار)

مسئانی ساتھ عورت نے مہر کا روپیہ وصول کر لیاسال گزرنے کے بعد شوہر نے قبل دخول طلاق دے دی تو نصف مہر واپس کرنا ہوگا اور زکا ہ پورے کی واجب ہے اور شوہر پر واپسی کے بعد ہے سال کا اعتبار ہے۔ (3) (درمختار)

سَسَعًا ﴾ ایک شخص نے بیا قرار کیا کہ فلال کا مجھ پر دَین ہے اور اُسے دیجھی دیا پھر سال بھر بعد دونوں نے کہا دَین نہ تھا تو کسی برز کا ہ واجب نہ ہوئی۔ (⁴⁾ (عالمگیری) مگر ظاہر ہیہے کہ بیاس صورت میں ہے جب کہ اُس کے خیال میں دَین ہو، ورنہا گرمحض ز کا ۃ ساقط کرنے کے لیے بیصلہ کیا تو عنداللہ مواخذہ کامستحق ہے۔

سَسَالُ 👣 ﴾ مال تجارت میں سال گزرنے پر جو قیت ہوگی اس کا اعتبار ہے ، مگر شرط یہ ہے کہ شروع سال میں اس کی قیت دوسودرم ہے کم نہ ہواورا گرمختلف قتم کے اسباب ہوں توسب کی قیمتوں کا مجموعہ ساڑھے باون تولے جاندی پاساڑھے سات تو لے سونے کی قدر ہو۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری) یعنی جب کہاس کے پاس یہی مال ہواور اگراس کے پاس سونا جاندی اس کے علاوہ ہوتواہے ملالیں گے۔

تو جتنااس دن تھااس کا جالیسواں حصہ دے دیں اور اگراس قیمت کی کوئی اور چیز دینا جا ہیں تووہ قیمت کی جائے جوسال تمام کے دن تھی اورا گروہ چیز سال تمام کے دن ترتھی اب خشک ہوگئی، جب بھی وہی قیت لگا ئیں جواس دن تھی اورا گراس روز خشک تھی، اب بھیگ گئی تو آج کی قیمت لگائیں۔⁽⁶⁾(عالمگیری)

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، مطلب في وجوب الزكاة في دين المرصد، ج، ٣ ص٢٨٣.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٨٣ _ ٢٨٥.
 - ٢٨٥ المرجع السابق، ص ٢٨٥.
 - 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، في مسائل شتى، ج١، ص١٨٢.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث في زكاة الذهب والفضة والعروض، الفصل الثاني، ج١٠ ص ١٧٩.
 - 🕝 المرجع السابق، ص١٧٩ ـ ١٨٠.

🗳 مَسَعًانُهُ ١٨ ﴾ قیمت اس جگه کی ہونی چاہیے جہاں مال ہےاورا گر مال جنگل میں ہوتو اُس کے قریب جو آبادی ہے وہاں

جو قیمت ہواس کا اعتبار ہے۔⁽¹⁾ (عالمگیری) ظاہر ہیہ ہے کہ بیاس مال میں ہے جس کی جنگل میں خریداری نہ ہوتی ہواورا گرجنگل

میں خریدا جاتا ہو، جیسے ککڑی اور وہ چیزیں جووہاں پیدا ہوتی میں توجب تک مال وہاں پڑا ہے، وہیں کی قیمت لگائی جائے۔

ستان (۱۹ ﷺ کرایہ براٹھانے کے لیے دیکیں ہوں، اُن کی زکاۃ نہیں۔ یو ہیں کرایہ کے مکان کی۔(2) (عالمگیری) مستان ۲۰۱۴ کی حجارت کرتا ہے، جُھول ⁽³⁾اورلگام اوررسیاں وغیرہ اس لیے خریدیں کہ گھوڑوں کی حفاظت

میں کا م آئیں گی تو اُن کی زکا ۃ نہیں اورا گراس لیے خریدیں کہ گھوڑ ہےان کے سمیت بیچے جائیں گے توان کی بھی زکا ۃ دے۔ نان بائی نے روٹی یکانے کے لیے لکڑیاں خریدیں یاروٹی میں ڈالنے کونمک خریدا توان کی زکا ۃ نہیں اور روٹی پر چھڑ کئے کوتِل خریدے تو تِلو ا کی ز کا ۃ واجب ہے۔(4) (عالمگیری)

اور جو کرایہ میں آتا ہے، سب کو محفوظ رکھتا ہے تو آٹھ مہینے گزرنے پر نصاب کا مالک ہوگیا کہ آٹھ ماہ میں دوسو درم کرایہ کے ہوئے،الہٰدا آج سے سال زکا ۃ شروع ہوگا اور سال پورا ہونے پریانسو درم کی زکا ۃ دے کہ بیں ماہ کا کرایہ یانسو ہوا،اباس کے بعدا یک سال اورگزرا تو آٹھیسو کی زکا ۃ دے،مگر سال اوّل کی زکا ۃ کے ساڑھے بارہ درم کم کیے جائیں۔⁽⁵⁾ (عالمگیری) بلکہ آ ٹھ سومیں جالیس کم کی زکا ہ واجب ہوگی کہ جالیس سے کم کی زکا ہ نہیں بلکہ عفوہے۔

مست المراب نے سودرم سالا نہ کرا یہ بردن سال کے اس صرف ایک ہزار درم ہیں اور کچھ مال نہیں ،اس نے سودرم سالا نہ کرا یہ بردن سال کے لیے مکان لیا اور وہ کل رویے مالک مکان کودے دیے تو پہلے سال میں نوسو کی زکا ۃ دے کہ سوکرا یہ میں گئے ، دوسرے سال آٹھ سوکی بلکہ پہلے سال کی زکا ۃ کے ساڑھے بائیس درم آٹھ سومیں ہے کم کرکے باقی کی زکا ۃ دے۔اسی طرح ہرسال میں سورویے اورسال گزشتہ کی زکا ۃ کےرویے کم کر کے باقی کی زکا ۃ اُس کے ذمہ ہےاور ما لک مکان کے پاس بھی اگراس کراہی کے ہزار کے سوا کچھ نہ ہو تو دوسال تک کچھنیں ۔ دوسال گز رنے پراب دوسوکا ما لک ہوا، تین برس پرتین سوکی زکا ۃ دے۔ یو ہیں ہرسال سو درم کی زکاۃ بڑھتی جائے گی، مگر اگلی برسوں کی مقدار زکاۃ کم کرنے کے بعد باقی کی زکاۃ واجب ہوگی۔صورت مذکورہ

- ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث في زكاة الذهب والفضة والعروض، الفصل الثاني، ج١، ص١٨٠.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 یعنی گھوڑے کے او برڈ النے کا کیڑا۔
- 4..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث في زكاة الذهب والفضة والعروض، الفصل الثاني، ج١، ص١٨٠.
 - 🚙 🗗 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، في مسائل شتى، ج١، ص١٨١.

میں اگراس قیت کی کنیز کرایہ میں دی تو کرایہ دار پر کچھ واجب نہیں اور مالکِ مکان پراُسی طرح وجوب ہے، جو درم کی صورت میں ہے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

مسئان الله على المعلم في المستحدد من المستحدد على المستحدد على المرغلام بر فيضدنه كيايهال تك مستعلق المستحدد على المرغلام بر فيضدنه كيايهال تك

کہ ایک سال گزرگیا، اب وہ بائع کے یہاں مرگیا تو بائع و مشتری دونوں پروددوسوکی زکا ۃ واجب ہے اور اگر غلام دوسودرم ہے کم قیت کا تھا اور مشتری نے دوسو پر لیا تو بائع دوسوکی زکا ۃ دے اور مشتری پر کچھنہیں۔(2) (عالمگیری)

قاضى نے واپسى كاحكم ديا ہويا اُس نے خودا بنى خوشى سے واپس لے ليا ہو تو ہزار كى زكاة دے۔(3) (عالمگيرى)

مسئل المسكان المسكان المسكر المستجی جائے ، بالائی مصارف مثلاً بازار سے لانے میں جومز دور کو دیا ہے یا گاؤں سے منگوایا تو جو بازار بھاؤ سے ہوگی وہ ذکا قامیں بھی جائے ، بالائی مصارف مثلاً بازار سے لانے میں جومز دور کو دیا ہے یا گاؤں سے منگوایا تو کرایہ اور چوگی وضع نہ کریں گے یا بکواکر دیا تو بکوائی یالکڑیوں کی قیمت مُجر انہ کریں ، بلکہ اس بکی ہوئی چیز کی جو قیمت بازار میں ہو،اس کا اعتبار ہے۔ (۵) (درمختار ، عالمگیری)

و عاشر کا بیان

مَسْعَلَانُ اللّٰ عاشِر اُس کو کہتے ہیں جسے بادشاہِ اسلام نے راستہ پر مقرر کر دیا ہو کہ تجار (5) جو اموال لے کر گزریں، اُن سے صدقات وصول کرے۔عاشر کے لیے شرط میہ ہے کہ مسلمان ٹر (6) غیر ہاشمی ہو، چوراورڈاکوؤں سے مال کی حفاظت پر قادر ہو۔ (7) (بحر)

سَسَنَا اُنْ کَ اِسْ جوراہ گیریہ کیے کہ میرےاس مال پر نیز گھر میں جوموجود ہے کسی پرسال نہیں گزرا یا کہتا ہے کہ میں نے اس میں تجارت کی نیّے نہیں کی یا کیے بیرمیر امال نہیں بلکہ میرے پاس امانت یا بطور مضاربت ہے، بشر طیکہ اس میں اتنا نفع نہ ہو کہ اس

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، في مسائل شتى، ج١، ص١٨١ ـ ١٨٢.
 - 2 المرجع السابق، ص١٨٢.
 - 3 المرجع السابق.
- 4 المرجع السابق، ص ١٨٠ ، "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص ٢٠٤.
 - **5** لعنی تجارت کرنے والے۔ **6** لعنی جوغلام نہ ہو۔
 - 🕏 🤣 "البحر الرائق"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٢، ص٤٠٢.

🤏 کا حصہ نصاب کو پہنچ جائے یا اپنے کومز دوریا م کا تب یا ماذون بتائے یا اتناہی کیے کہاس مال پر ز کا ۃ نہیں ،اگر چہ وجہ نہ بتائے یا کے مجھ پر دین ہے جو مال کے برابر ہے یا اتناہے کہ اُسے نکالیں تو نصاب باقی ندر ہے یا کھے دوسرے عاشر کودے دیا ہے اور جس کودینا بتا تا ہے واقع میں وہ عاشِر ہے اوراس عاشِر کوبھی اس کاعاشِر ہونامعلوم ہویا کے شہر میں فقیرول کوز کا ۃ دے دی اورا پنے بیان پر حلف کرے تو اُس کا قول مان لیا جائے گا ،اس کی کچھ ضرورت نہیں کہ اس سے رسید طلب کریں کہ رسید بھی جعلی ہوتی ہے اور بھی غلطی ہے رسیز نہیں لی جاتی اور بھی گم ہو جاتی ہے اورا گررسید پیش کی اوراس میں اس عاشِر کا نام نہیں جھے اُس نے بتایا، جب بھی حلف لے کراُس کا قول مان لیں گے اورا گر چندسال گزرنے برمعلوم ہوا کہاُس نے جھوٹ کہاتھا تواب اُس سے زکا ۃ لی جائے گی۔(1)(عالمگیری، درمختار، ردامختار)

مال کے ساتھ ملاسکتے ہوں تواس کا قول نہیں مانا جائے گا۔ یو ہیں اگرایسے عاشر کودینا بتائے جواُسے معلوم نہیں یا کے کسی بدیذ ہب کوز کا ۃ دے دی پاکھے شہر میں فقیر کونہیں دی بلکہ شہر ہے باہر جا کر دی تو ان سب صورتوں میں اس کا قول نہ مانا جائے۔ (2) (درمختار، ردامحتار)

مَسِيَّانُ ﴾ سائمہاوراموال باطنہ میں اس کا قول نہیں ہانا جائے گا اور جن امور میں مسلمان کا قول ہانا جاتا ہے، ذمی کا فر کا بھی مان لیاجائے گا ،مگراس صورت میں کہ شہر میں فقیر کودینا بتائے تواس کا قول معتزنہیں۔(3) (درمختار)

سَسَالُهُ ﴾ حربی کافر کا قول بالکل معترنہیں،اگر چہ جو پچھ کہتا ہےاُس پر گواہ پیش کرےاورا گر کنیز کوام ولد بتائے یا غلام کوا پنالڑ کا کیے اور اس کی عمر اس قابل ہو کہ بیاس کالڑ کا ہوسکتا ہے یا کہے میں نے دوسرے کو دے دیا ہے اور جسے بتا تا ہے وہ وہاں موجود ہے توان امور میں حرلی کا بھی قول مان لیاجائے۔(4) (در مختار، ردا کحتار)

مَسَعَانُ 🔰 ﴾ جو تخص دوسودرم ہے کم کا مال لے کر گزرا تو عاشراً سے پچھ نہ لے گا،خواہ وہ مسلمان ہویا ذمّی یا حربی ، خواہ اُس کے گھر میں اور مال ہونامعلوم ہویانہیں۔(⁵⁾(عالمگیری)

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الرابع فيمن يمر على العاشر، ج١، ص١٨٣. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، مطلب: لاتسقط الزكاة... إلخ، ج٣، ص٢٨٩ _ ٢٩١.
 - 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، مطلب: لاتسقط الزكاة... إلخ، ج٣، ص ٢٩٠.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص ٢٩١.
 - 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٢٩٣.
 - 🤿 🍮 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الرابع فيمن يمر على العاشر، ج١، ص١٨٣.

ر مسئل کے ہے۔ مسلمان سے حالیسوال حصد لیا جائے اور ذمی سے بیسوال اور حربی سے دسوال حصد۔ (1) (تنویر) حربی

سے دسواں حصہ لینااس وقت ہے جب معلوم نہ ہو کہ حربیوں نے مسلمانوں سے کتنا لیا تھااور اگر معلوم ہو تو جتنا انہوں نے لیا

مسلمان بھی حربیوں سے اتناہی لیں ،مگرحربیوں نے اگرمسلمانوں کاگل مال لے لیا ہو تو مسلمان گل نہ لیں ، بلکہ اتنا جیموڑ دیں کہ اسٹ ٹیکا ذبینچے دائران اگر حربیوں نرمسلانوں سے تحریز لیاقہ مسلمان بھی تحریز لیں (2) درمیزاں دانچیاں)

ا پنے ٹھکانے پہنچ جائے اورا گرحر بیوں نے مسلمانوں سے کچھ نہ لیا تو مسلمان بھی کچھ نہ لیں۔⁽²⁾ (درمختار ، ردامحتار) مسئل کی کے حربی بچے اور م کا تب سے کچھ نہ لیں گے ، مگر جب مسلمانوں کے بچوں اور م کا تب سے حربیوں نے لیا ہو تو

مسلمان بھی اُن سے لیں۔⁽³⁾ (درمختار)

ایک بارجب حربی سے لے لیا تو دوبارہ اس سال میں نہ لیں ، مگر جب لینے کے بعد دارالحرب کو واپس گیا اوراب پھر دارلحرب سے آیا تو دوبارہ لیں گے۔(⁴⁾ (تنوبرالا بصار)

مَسَعًا الله الله حربی وارالاسلام میں آیا اور واپس گیا مگر عاشر کوخیر نه ہوئی پھر دوبارہ دارالحرب ہے آیا تو پہلی مرتبہ کا نہ لیس اورا گرمسلمان یاذ تی کے آنے اور جانے کی خبر نه ہوئی اوراب دوبارہ آیا تو پہلی بار کالیس گے۔(⁵⁾ (درمختار)

مَسِعًا اللهِ الل

مسئ الرجہ اُن کی قیمت نصاب کی قدر ہو مگر عشر نہ لیا جائے ، ہاں اگر وہاں فقرا موجود ہوں تو لے کر فقر اکو ہانٹ دے۔ (9) وغیر ہا، اگر چہ اُن کی قیمت نصاب کی قدر ہو مگر عشر نہ لیا جائے ، ہاں اگر وہاں فقرا موجود ہوں تو لے کر فقر اکو ہانٹ دے۔ (9) (عالمگیری، در مختار)

- 1 "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣ ص ٢٩٤.
- ۱۹۵۰ س. "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٩٥٠.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٩٥.
 - 4 "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، باب العاشرج ٣ ص ٢٩٥.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٩٦.
 - است لیخی وہ غلام جے اس کے مالک نے تجارت کی اجازت وے دی ہو۔
 - 🗗 کیعنی گھیرے ہوئے۔
 - 8 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٩٩ ٢.
 - 9 المرجع السابق.

الله عاشر نے مال زیادہ خیال کر کے زکاۃ لی پھر معلوم ہوا کہ اسنے کا مال نہ تھا تو جتنا زیادہ لیا ہے سال آئندہ ا

میں محسوب ہوگا اورا گرقصداً زیادہ لیا توبیز کا قامیں محسوب نہ ہوگا کظلم ہے۔ (1) (خانیہ)

کان اور دفینه کا بیان

صحیح بخاری و میح مسلم میں ابو ہر ریرہ رض اللہ تعالی عنہ سے مروی ،حضورِ اقدس سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: ''رکاز (کان)

میں خس ہے۔' ⁽²⁾

المستان المستان المستان المار المستان المار المستان المار المار المستقل المستان المار المار المار المار المار المار المار المار المستقل المار المستقل المار المستان المار المستمان المولان المار الما

سَسَعَانُ کَ ﴾ فیروزه و یاقوت و زمرد و دیگر جواهر اور سرمه، پیشکری، چونا،موتی میں اور نمک وغیره بہنے والی چیزوں میں خمس نہیں ۔ ⁽⁵⁾ (درمختار، ردالحتار)

مكان يادكان ميس كان نكل توخمس نه لياجائي، بلكه كل ما لك كودياجائي ومقار)

مَسَعَلَهُ ﴾ فيروزه، ياقوت، زمّر دوغيره جواهر سلطنت اسلام سے پيشتر كے فن تھے اور اب نكلے توخمس ليا جائے گا بيہ

مال غنیمت ہے۔ ⁽⁷⁾ (درمختار)

- الفتاوى الخانية"، كتاب الزكاة، فصل في اداء الزكاة، ص١٢٦.
- ۳۰۰۰۰ "صحيح مسلم"، كتاب الحدود، باب جرح العجماء والمعدن... إلخ، الحديث: ١٧١٠، ص ٩٤٠.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الخامس في المعادن و الركاز، ج١، ص١٨٤.
 - ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٥٠ ٣.
 - **ئ**..... المرجع السابق، ص ٣٠١.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٥٠٣.
 - 7 المرجع السابق، ص٦٠٦.
 - 🤏 🔞 المرجع السابق.

بستان کی جس دفینہ (1) میں اسلامی نشائی پائی جائے خواہ وہ نقد ہو یا ہتھیار یا خانہ داری کے سامان وغیرہ، وہ پڑے مال کے حکم میں ہے یعنی مسجدوں، بازاروں میں اس کا اعلان اسنے دنوں تک کرے کی ظن غالب ہو جائے، اب اس کا تلاش کرنے والا نہ ملے گا پھر مساکین کودے دے اور خود فقیر ہو توا پنے صرف میں لائے اورا گراس میں کفر کی علامت ہو، مثلاً بُت کی تصویر ہو یا کا فرباد شاہ کا نام اس پر لکھا ہو، اُس میں سے خس لیا جائے، باتی یانے والے کو دیا جائے، خواہ اپنی زمین میں یائے یا

سَمَعَالَةُ كَا مِن عَلَى ع من سري حَلَى عَلَى ع

اسلام کے حکم سے کھود کر نگالا تو جو کھیراہے وہ دیں گے۔ ⁽³⁾ (عالمگیری)

مسئ کی اور الروائی اللہ میں دو خصوں نے کام کیا توخس کے بعد باقی اُسے دیں گے جس نے پایا، اگر چدونوں نے شرکت کے ساتھ کام کیا ہو جس کے بعد باقی اُسے دیں گے جس نے پایا اور بیٹیس معلوم کہ کتنا کس نے پایا ور میں تھوں نے پایا اور دوسرے نے بدد کی تو وہ پانے والے کا ہے اور مددگار کو تو نصف نصف کے شریک بیں اور اس صورت میں اگر ایک نے پایا اور دوسرے نے مدد کی تو وہ پانے والے کا ہے اور مددگار کو کام کی مزدور کی دورک دورک دورک دورک میں کہ بیا جارہ فاسد (4) کام کی مزدور کی جائے گی اور اگر دفینے نکالنے پر مزدور رکھا تو جو برآ مد ہوگا مزدور کو ملے گا، متا جر کو پچھ ہیں کہ بیا جارہ فاسد (4) ہے۔ (5) (ردا کھتار)

مسئانہ و اور دیاجائے۔ (عالمگیری) المستانہ و اور اور ایاجائے۔ (6) (عالمگیری)

سَسَعَانُ اللهِ صحرائے دارالحرب میں سے جو پچھ اکلامعد نی ہویا دفینہ اُس میں خمس نہیں ، بلکہ گل پانے والے کو ملے گا اور

اگربہت ہےلوگ بطورغلبے نکال لائے تواس میں خمس لیاجائے گا کہ یفنیمت ہے۔ (7) (درمختار)

مسئانی الی جسلمان دارالحرب میں امن لے کر گیا اور وہاں کسی کی مملوک زمین سے خزانہ یا کان نکالی تو ما لکِ زمین کوواپس دے اوراگرواپس نہ کیا بلکہ دارالاسلام میں لے آیا تو یہی ما لک ہے مگر مِلک خبیث ہے، لہٰذا تصدق کرے اور چے ڈالا تو

- 🗗 کیعنی وفن کیے ہوا مال _
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٧.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الخامس في المعادن والركاز، ج١٠ ص١٨٤.
 -4
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٨.

دوسرے کی زمین میں یا مباح زمین میں ۔⁽²⁾ (در محتار، ردالحتار)

- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الخامس في المعادن والركاز، ج١، ص٥١٨.
 - "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص ٣٠٩.

ہیں سے صبیح ہے، مگرخریدار کے لیے بھی خبیث ہےاورا گرامان لے کرنہیں گیا تھا تو یہ مال اس کے لیے حلال ہے، نہ واپس کرے نہاں معرفی میں میں میں (1) کیا گئی ہے۔ تاہمی کے اس کا معرفی کا معرفی کا معرفی کیا تھا تو کیا گئی ہے۔ تاہمی کے انہوں

مین خس لیاجائے۔⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار)

جب بھی جائز ہے، بادشاہ اسلام کوخبر پہنچے تو اُسے برقر ارر کھے اور اُس کے تصرف کو نافذ کر دے اور اگریہ خود مسکین ہے تو بقدرِ حاجت اپنے صرف میں لاسکتا ہے اور اگرخس نکالنے کے بعد باقی دوسودرم کی قدر ہے تو مُحس اپنے صرف میں نہیں لاسکتا کہ اب

حاجت البح صرف من لاسمنا ہے اور اگر کن رفاعے کے بعد ہاق دوسود رم فی فدر ہے تو کن البح صرف میں لاسکتا ہے اور اگر ماں بیفقیر نہیں ہاں اگر مدیوُن ہو کہ دَین نکا لئے کے بعد دوسود رم کی قدر باقی نہیں رہتا توخمس اینے صرف میں لاسکتا ہے اور اگر ماں باب یا اولا دجومساکین ہیں ،اُن کُٹُمس دیدے توبید بھی جائز ہے۔(2) (درمختار ،ردالمختار)

﴿ زراعت اور پھلوں کی زکاۃ ﴾

اللُّدعز وجل فرما تاہے:

﴿ وَالْتُوْاحَقَّهُ يَوْمَحَصَادِمٌ ﴾

کھیتی کٹنے کے دن اس کاحق ادا کرو۔

خلینٹ ایک محصیح بخاری شریف میں ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ''جس زمین کو آسان یا چشموں نے سیراب کیا یاعشری ہو یعنی نہر کے پانی سے اسے سیراب کرتے ہوں ، اُس میں عشر ہے اور جس زمین

کے سیراب کرنے کے لیے جانور پر پانی لا دکرلاتے ہوں ، اُس میں نصف عشر ^{(4) یع}نی بیسواں حصہ۔'' <mark>خلی بنٹ ۲ کے ا</mark> بین نجارانس رض اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) فر ماتے ہیں : که ''ہراُس شے میں جسے

زمین نے نکالا ،عشر یا نصف عشر ہے۔'' (5)

مسائل فقهيّه

زمین تین قتم ہے:

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٩٠٦.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص ٣١.
 - 3 پ٨، الانعام: ١٤١.
- **4**..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب في العشر فيما من ماء السماء... الخ، الحديث: ١٤٨٣، ج١، ص ٥٠١.
 - 🧣 🗗 "كنزالعمال"، كتاب الزكاة، زكاة النبات والفواكه، الحديث: ١٥٨٧٣، ج٦، ص١٤٠.

(۱) عشری (۲) خراجی (۳) نه عشری، نه خراجی _

اوّل وسوم دونول کا حکم ایک ہے لینی عشر دینا۔

ہندوستان میں مسلمانوں کی زمینیں خراجی نہ بھی جائیں گی، جب تک کسی خاص زمین کی نبیت خراجی ہونا دلیل شرع سے ثابت نہ ہولے۔ عشری ہونے کی بہت سی صورتیں ہیں مثلاً مسلمانوں نے فتح کیا اور زمین مجاہدین پر تقسیم ہوگئی یا وہاں کے لوگ خود بخو دمسلمان ہوگئے، جنگ کی نوبت نہ آئی یا عشری زمین کے قریب پڑتی تھی، اسے کاشت میں لایایا اُس پڑتی کو کھیت بنایا جو عشری وخراجی دونوں سے قرب و بعد کی کیساں نبیت رکھتی ہے یا اس کھیت کو عشری پانی سے سیراب کیا یا خراجی وعشری دونوں سے یا عشری سے یا مسلمان نے اپنے مکان کو باغ یا کھیت بنالیا اور اسے عشری پانی سے سیراب کرتا ہے۔ یا عشری وجہ سے واپس ہوئی یا خیار شرط یا خیار رویت کی وجہ سے واپس ہوئی یا خیار عیب (1) کی وجہ سے قاضی کے تعم سے واپس ہوئی یا خیار عیب (1) کی وجہ سے قاضی کے تعم سے واپس ہوئی۔

اور بہت صورتوں میں خراجی ہے مثلاً فتح کر کے وہیں والوں کوا حسان کے طور پرواپس دی یا دوسر ہے کا فروں کو دے دی
یا وہ ملک صلح کے طور پر فتح کیا گیایا ذمّی نے مسلمان سے عشری زمین خرید لی یا خراجی زمین مسلمان نے خریدی یا ذمّی نے بادشاہ اسلام کے عکم سے بنجرکوآباد کیایا بنجرز مین ذمّی کو دے دی گئی یا سے مسلمان نے آباد کیا اور وہ خراجی زمین کے پاس تھی یا اسے خراجی بی سے سیراب کی جائے ،خراجی ہی رہے گ

اورخراجی وعشری دونوں نہ ہوں،مثلاً مسلمانوں نے فتح کر کے اپنے لیے قیامت تک کے لیے باقی رکھی یااس زمین کے مالک مرگئے اور زمین بیت المال کی ملک ہوگئی۔

مسئلة المج خراج دوسم ہے:

- (۱) خراج مقاسمہ کہ بیداوار کا کوئی حصہ آدھایا تہائی یا چوتھائی وغیر ہامقرر ہو، جیسے حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے یہودِ خیبر برمقرر فرمایا تھا۔ اور
- (۲) خراج مؤظف کهایک مقدار معتین لازم کردی جائے خواہ روپے،مثلاً سالا نیدوروپے بیگھدیا کچھاور جیسے فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مقرر فرمایا تھا۔

مسئ المرابع المرمعلوم ہو کہ سلطنت اسلامیہ میں اتنا خراج مقررتھا تووہی دیں، بشرطیکہ خراج مؤظف میں جہال جہاں فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰءنہ سے مقدار منقول ہے، اس پرزیادت نہ ہواور جہال منقول نہیں اس میں نصف پیداوار سے زیادہ بیا

نیج فاسد، خیارشرط، خیاررویت اور خیارعیب کی تفصیلی معلومات کے لیے بہارشریعت حصداا، ملاحظ فرمائیں۔

نه ہو۔ یو ہیں خراج مقاسمہ میں نصف سے زیادت نہ ہواور بیر بھی شرط ہے کہ زمین اُتنے دینے کی طاقت بھی رکھتی ہو۔ ⁽¹⁾ (درمختار ، دامختار)

مَسْتَالُةُ اللهِ اللهِ اللهِ على منه ہو كەسلطنتِ اسلام ميں كيامقرر تقاتو جہاں جہاں فاروقِ اعظم رضى الله تعالىء خدنے مقرر فرماديا ہے، وہ دیں اور جہاں مقرر ندفر مایا ہونصف دیں۔(2) (فقاوی رضوبیہ)

ساع اور خربوزے، تربوزی پالیز اور کھیرے، کٹری، بیگن وغیر ہر کاریوں میں فی جریب ایک درم اوراُس غلّہ کا ایک صاع اور خربوزے، تربوزی پالیز اور کھیرے، کٹری، بیگن وغیر ہر کاریوں میں فی جریب پانچ درم انگور وخر ما کے گھنے باغوں میں جن کے اندر زراعت نہ ہوسکے۔ دس درم پھر زمین کی حیثیت اور اس شخص کی قدرت کا اعتبار ہے، اس کا اعتبار نہیں کہ اُس نے کیا بویا یعنی جوز مین جس چیز کے بونے کے لائق ہے اور شخص اُس کے بونے پر قادر ہے تو اس کے اعتبار سے خراج اداکرے، مثلاً انگور بوسکتا ہے تو اس کا خراج اداکرے اگر چہ جو بوئے۔ انگور بوسکتا ہے تو اس کا خراج اداکرے اگر چہ جو بوئے۔ جریب کی مقدار انگریزی گز ہے ۳۵ گرطول ، ۳۵ گرغوض ہے اور صاع دوسواٹھ اسی روپیہ پھراور دس درم کے عام و سے پائی پانچ درم ہم رہ کہ ایک ہے گئی اپنچ کے درم ہم رہ کہ ایک ہوئی اور کا خراج درم ہم رہ کہ ہوئی اور کی درم ہم رہ کہ ہوئی اور کا خراج درم ہم رہ ہوئی اور کا خراج درم ہم رہ ہوئی اور کا خراج درم ہم رہ ہوئی کا درم ہم رہ ہوئی کا کہ کہ درم ہم رہ ہوئی کا کہ درم ہم رہ ہوئی کے درم ہم رہ ہی ہی کہ درم ہم رہ ہوئی کی کر سے کا کہ درم ہم رہ ہوئی کا کہ درم ہم رہ ہوئی کا کہ درم ہم رہ ہوئی کے درم ہم رہ ہوئی کا کہ کا کہ کو کہ کا کہ بیائی کے درم ہوئی کا کہ کھنے کے لائوں کی کر سے کا کہ درم ہم رہ کے گئی کو کر کر کھنے کی کھنے کے درم ہم رہ کو کہ کا کہ کہ کہ کہ کہ کا کہ کو کہ کو کہ کہ کہ کہ کو کہ کہ کہ کو کہ کو کہ کو کہ کہ کہ کو کہ کا کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کے کہ کہ کو کہ کو کہ کہ کو کہ کہ کو کہ کو کہ کر کے کہ کو کہ کو کہ کو کہ کہ کو کہ کہ کو کہ کہ کو کہ کر کی کر کے کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کر کے کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کر کے کہ کو کو کہ کو

سَسَعَانُ فَ ﴾ جہاں اسلامی سلطنت نہ ہو، وہاں کے لوگ بطور خود فقراوغیرہ جومصار فی خراج ہیں، اُن پرصر ف کریں۔ سَسَعَانُهُ لَ ﴾ عشری زمین سے ایک چیز پیدا ہوئی جس کی زراعت سے مقصود زمین سے منافع حاصل کرنا ہے تو اُس پیداوار کی زکاۃ فرض ہے اور اس زکاۃ کا نام عشر ہے یعنی دسواں حصہ کہ اکثر صور توں میں دسواں حصہ فرض ہے، اگر چہ بعض صور توں میں نصف عشر یعنی بیسواں حصہ لیاجائے گا۔ (4) (عالمگیری، ردالحتار)

سَنَا ہُون اور نابالغ کی زمین میں جو کچھ پیدا ہوااس میں جو کچھ پیدا ہوااس میں جو کچھ پیدا ہوااس میں بھی عشر واجب ہے۔ (5) (عالمگیری وغیرہ)

<u>مَسِعًا لَهُ ﴾</u> خوشی سے عشر نہ دے تو باد شاہِ اسلام جبراً لے سکتا ہے اور اس صورت میں بھی عشر ادا ہوجائے گا، مگر ثواب کا

- □ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الجهاد، باب العشر و الخراج و الجزية، مطلب في خراج المقاسمة، ج٦، ص٢٩٢ _ ٢٩٤ .
 - 2 "الفتاوي الرضوية"، ج.١٠ ص. ٢٣٨.
 - € "الدرالمختار"، كتاب الجهاد، باب العشر و الخراج و الجزية، ج٦، ص٢٩٢.
 - ₫ "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٥.
 - 🤿 🗗 المرجع السابق، وغيره.

الله مستحق نہیں اور خوشی سے ادا کرے تو تواب کا مستحق ہے۔ (1) (عالمگیری وغیرہ)

<u>مَسَعَالُهُ 9 ﴾</u> جس پرعشر واجب ہوا، اُس کا انتقال ہوگیا اور پیداوار موجود ہے تو اس میں سے عشر لیا جائے گا۔ ⁽²⁾ (عالمگیری)

مسئلہ والی عشر میں سال گزرنا بھی شرطنہیں ، بلکہ سال میں چند بارا یک کھیت میں زراعت ہوئی تو ہر بارعشر واجب ہے۔ (در مختار، ردالمختار)

سَمَعَانُهُ اللَّهِ اس میں نصاب بھی شرط نہیں ، ایک صاع بھی پیدا دار ہو تو عشر داجب ہے اور بیشر طبھی نہیں کہ دہ چیز باقی رہنے والی ہوا ور بیشر طبھی نہیں کہ کا شتکار زمین کا مالک ہو یہاں تک کہ مکاتب و ماذون نے کاشت کی تواس پیدا وار پر بھی عشر واجب ہے ، خواہ ذراعت کرنے والے اہلِ وقف ہوں یا اُجرت پر کاشت کی ۔ (درمختار، ردالحجتار)

سَسَعَانُ الله جو چیزیں الیی ہول کہ اُن کی پیداوار سے زمین کے منافع حاصل کرنامقصود نہ ہواُن میں عشر نہیں، جیسے ایندھن، گھاس، نرکل، سنیٹھا، جھاو، کھجور کے پتے ، خطمی، کپاس، بیگن کا درخت، خربزہ، تربز، کھیرا، ککڑی کے نجے یو ہیں ہوشم کی ترکار بول کے نجے کہ اُن کی کھیتی سے ترکاریاں مقصود ہوتی ہیں، نئے مقصود نہیں ہوتے ۔ یو ہیں جو نئے دوا ہیں مثلاً کندر، بیتھی، کلونجی اوراگر نرکل، گھاس، بید، جھاوُ وغیرہ سے زمین کے منافع حاصل کرنامقصود ہواور زمین ان کے لیے خالی چھوڑ دی تو اُن میں بھی عشر واجب ہے۔ (5) (درمختار، ردالمختار وغیر ہما)

سَسَعَانُ اللهِ جو کھیت بارش یا نہر نالے کے پانی سے سیراب کیا جائے، اس میں عُشر یعنی دسواں حصہ واجب ہے اور جس کی آبیا تی چرسے (6) یا ڈول سے ہو، اس میں نصف عشر یعنی بیسواں حصہ واجب اور پانی خرید کر آبیا تی ہو یعنی وہ پانی کسی کی ملک ہے، اُس سے خرید کر آبیا تی کی جب بھی نصف عشر واجب ہے اور اگر وہ کھیت کچھ دنوں مینھ کے پانی سے سیراب کیا جا تا ہے

- 🚹 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص٥٨. وغيره.
 - 2 المرجع السابق.
 - ③ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣١٣.
 - 4 المرجع السابق.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص ٣٥، وغيرهما.
 - **6**..... یعنی چیڑے کا برٹا ڈول۔

اور کچھ دنوں ڈول چرسے سے تواگرا کثر مینھ (1) کے پانی سے کام لیا جاتا ہے اور کبھی کبھی ڈول چرسے سے توعشر واجب ہے،

ورنه نصف عشر_⁽²⁾ (درمختار، ردامختار)

سَسَانُ الله عشري زمين يا يبار يا جنگل ميں شهد مواءاس برعشر واجب ہے۔ يو بيں بباڑ اور جنگل كے كھلوں ميں بھي

عشر واجب ہے، بشرطیکہ بادشاہِ اسلام نے حربیوں اور ڈاکوؤں اور باغیوں سے اُن کی حفاظت کی ہو، ورنہ کچھنہیں۔ (3) (د. متن یہ دالمجن)

مسئ ایک اور ہوتم کے میوں، بو ، جوار، باجرا، دھان (4) اور ہوتم کے غلّے اورالی، سم، اخروٹ، بادام اور ہوتم کے میوے، روئی، پھول، گنا، خربزہ، تربز، کھیرا، ککڑی، بیگن اور ہوتتم کی ترکاری سب میں عشر واجب ہے (5) بھوڑا پیدا ہو یا زیادہ (6) (عالمگیری)

مسئل المسئل الله جس چیز میں عشر یا نصف عشر واجب ہوااس میں گل پیداوار کاعشر یا نصف عشر لیاجائے گا، یہ نہیں ہوسکتا کہ مصارف زراعت، ہل بیل، حفاظت کرنے والے اور کام کرنے والوں کی اُجرت یا نیج وغیرہ نکال کر باقی کاعشر یا نصف عشر دیاجائے۔ ((درمختار، ردالحتار)

سَسَعَانُ کا گیہ عشر صرف مسلمانوں سے لیاجائے گا، یہاں تک کہ عشری زمین مسلمان سے ذمّی نے خرید کی اور قبضہ بھی کرلیا تواب ذمّی سے عشر نہیں لیاجائے گا بلکہ خراج لیاجائے گا اور مسلمان نے ذمّی سے خراجی زمین خریدی تو پی خراجی ہی رہے گی۔اُس مسلمان سے اس زمین کا عشر نہ لیس کے بلکہ خراج لیاجائے۔(8) (ورمختار، روالمحتار)

مسئل 10 ﴾ فئی نے مسلمان ہے عشری زمین خریدی پھر کسی مسلمان نے شفعہ میں وہ زمین لے لی یا کسی وجہ سے بیچ فاسد ہوگئ تھی اور بائع کے پاس واپس ہوئی یا بائع کوخیار شرط تھا یا کسی کوخیار رویت تھا اس وجہ سے واپس ہوئی یامشتری کوخیار عیب

- € بارش۔
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣١٣ _ ٣١٦.
- 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص ٣١١ ـ ٣١٣.
 - ₩ ---- حياول-
 - مثلاً دس من میں ایک من ، دس سیر میں ایک سیر یادس پھل میں ایک پھل۔
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٦.
- ◘ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣١٧.
 - 🔊 🚯 المرجع السابق، ص٣١٨.

🥞 تھااور حکم قاضی سے واپس ہوئی،ان سب صورتوں میں پھرعشری ہی ہےاورا گر خیار عیب میں بغیر حکم قاضی واپس ہوئی تو اب

خراجی ہی رہے گی۔⁽¹⁾ (در مختار ،ردالمحتار)

مستانہ 📵 🐣 مسلمان نے اپنے گھر کو باغ بنالیا، اگراس میں عشری یانی دیتا ہے تو عشری ہے اور خراجی یانی دیتا ہے تو

خراجی اور دونوں قتم کے پانی دیتا ہے، جب بھی عشری اور ذمّی نے اپنے گھر کو باغ بنایا تو مطلقاً خراج لیں گے۔آسان اور کوئیں اورچشمہاوردریا کا پانی عشری ہےاور جونہم عجمیوں نے کھودی اس کا پانی خراجی ہے۔ کافروں نے کوآں کھودا تھااور ابمسلمانوں

کے قبضہ میں آ گیایا خراجی زمین میں کھودا گیاوہ بھی خراجی ہے۔⁽²⁾ (عالمگیری، در مختار، ردالحتار)

مسئل المراجي مان يامقبره مين جو پيداوار موه أس مين نيوشر بين خراج (3) (درمختار)

سَسَعَالُهُ (۲) ﴾ زفت اورنفط کے چشمے عشری زمین میں ہوں یا خراجی میں اُن میں کچھنہیں لیاجائے گا،البتہ اگرخراجی زمین میں ہوں اور آس پاس کی زمین قابل زراعت ہو تو اس زمین کا خراج لیا جائے گا، چشمہ کائبیں اورعشری زمین میں ہوں تو جب تک آس یاس کی زمین میں زراعت نه ہو کچونہیں لیاجائے گا، فقط قابلی زراعت ہونا کافی نہیں۔ (4) (درمختار)

سَسَعَالُ ۲۲ ﴾ جو چیز زمین کی تابع ہو، جیسے درخت اور جو چیز درخت سے نکلے جیسے گوند اس میں عشر نہیں۔ (5) (عالمگیری)

اگرچہ ابھی توڑنے کے لائق نہ ہوئے ہوں۔ (6) (جوہرہ نیرہ)

سَتَ الرام الرن سے بیشتر اُس کی آمدنی کھانا حلال نہیں۔ یو ہیں عشر ادا کرنے سے پیشتر مالک کو کھانا حلال نہیں ، کھائے گا تو ضان دےگا۔ یو ہیں اگر دوسر بے کوکھلا یا تواتنے کے عشر کا تاوان دےاورا گریہارا دہ ہے کہ کل کاعشرا دا کر دےگا تو کھانا حلال ہے۔(7) (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

- ❶ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣١٨.
 - ◘ المرجع السابق، ص٩١٩، و "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٦.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص ٣٢٠.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٦.
 - الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب زكاة الزروع و الثمار، ص١٦٢.
 - 🕡 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.
- و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣٢١.

🚳 مَسِيَّالُةُ 👣 🗕 بادشاہ اسلام کواختیار ہے کہ خراج لینے کے لیے علّہ کوروک لے مالک کوتصرف نہ کرنے دے اوراس نے کٹی سال کاخراج نید یا ہواور عاجز ہو تو اگلی برسوں کا معاف ہےاور عاجز نہ ہو تولیس گے۔⁽¹⁾ (درمختار ،ر داکختار)

مَسِعًا الْحُرْنِ اللَّهِ ﴿ وَرَاعِت بِرِ قادر ہےاور بوپانہیں تو خراج واجب ہےاورعشر جب تک کاشت نہ کرےاور پیداوار نہ ہو

واجب نہیں ۔⁽²⁾ (درمختار)

سَسَعَالُهُ ٢٤﴾ ﴿ كَلِيتِ بويا مَكْر پيداوار ماري كُني مثلاً حَيتى دُوبِ كَني يا جل كَني يا ثيري كھا گئي يا يالے اور لوسے جاتى رہى توعشر وخراج دونوں ساقط ہیں، جب کہ گل جاتی رہی اورا گر کچھ باقی ہے تواس باقی کاعشر لیں گےاورا گرچو یائے کھا گئے تو ساقط نہیں ، اورساقط ہونے کے لیے یہ بھی شرط ہے کہ اس کے بعداس سال کے اندراس میں دوسری زراعت طیار نہ ہو سکے اور یہ بھی شرط ہے کہ توڑنے یا کاٹنے سے پہلے ہلاک ہوور نہ ساقط نہیں۔(3) (روالحتار)

سَسَعَالُهُ ٢٨﴾ ﴿ خرا جي زمين کسي نے غصب کی اورغصب سے انکار کرتا ہے اور ما لک کے پاس گواہ بھی نہیں، تو اگر کاشت کریے خراج غاصب برہوگا۔⁽⁴⁾ (درمختار)

سَسَالُ 19 ﴾ نیچ وفالینی جس نیچ میں بہ شرط ہو کہ بائع جب ثمن مشتری کو واپس دے گا تو مشتری میچ چیسردے گا تو جب خراجی زمین اس طور برکسی کے ہاتھ بیجاور بائع کے قبضہ میں زمین ہے تو خراج بائع پراورمشتری کے قبضہ میں ہواورمشتری نے بومابھی تو خراج مشتری سر۔ ⁽⁵⁾ (درمختار،ردالحتار)

سَسَالُ 🔭 ﴾ طیار ہونے ہے پیشتر زراعت 👺 ڈالی توعشرمشتری پر ہے،اگر چەمشتری نے بیشرط لگائی کہ یکنے تک زراعت کائی نہ جائے بلکہ کھیت میں رہے اور بیچنے کے وقت زراعت طیارتھی توعشر بائع پر ہے اورا گرز مین وزراعت دونوں یا صرف زمین بیچی اوراس صورت میں سال پورا ہونے میں اتنا زمانہ باقی ہے کہ زراعت ہو سکے، تو خراج مشتری پر ہے ور نہ بالغير_⁽⁶⁾(ورمختار، ردامختار)

- ❶ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣٢٢.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣٢٣.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣٢٣.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣٢٣.
- 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص ٢٢٤.
 - 6 المرجع السابق.

عشری زمین عاریةً دی توعشر کاشتکار پرہے مالک پرنہیں اور کا فرکوعاریت دی تو مالک پرعشرہے۔ (1) المستالة (٣)

(عالمگیری وغیره)

(ردامختار)

عشری زمین بٹائی پر دی تو عشر دونوں پر ہے اور خراجی زمین بٹائی پر دی تو خراج مالک پر ہے۔ (2) A Praticula

زمین جو زراعت کے لیے نفتری پر دی جاتی ہے، امام کے نزد یک اُس کا عشر زمیندار پر ہے اور - Pratino صاحبین (3) کے نزدیک کاشتکار پر اور علامہ شامی نے بیٹھیق فرمائی کہ حالت زمانہ کے اعتبار سے اب قول صاحبین پرعمل

مست المرامن المرامنت کوجو مالگذاری دی جاتی ہے،اس سے خراج شرعی نہیں ادا ہوتا بلکہ وہ مالک کے ذمہ ہے اُس کا ادا كرنا ضرورى اورخراج كامصرف صرف كشكر اسلام نہيں، بلكه تمام مصالح عامه مسلمين ہيں جن ميں تغمير مسجد وخرچ مسجد و وظيفهُ ا مام ومؤذن وتخواه مدرسین علم دین وخبر گیری طلبه علم دین وخدمت علمائے اہلسنت حامیانِ دین جووعظ کہتے ہیں اورعلم دین کی تعلیم کرتے اور فتو ہے کے کام میں مشغول رہتے ہوں اور پُل وسرا بنانے میں بھی صرف کیا جاسکتا ہے۔ ⁽⁵⁾ (فتاویٰ رضویہ) سَنَا الله الله عنر لینے سے پہلے غلّہ ﷺ ڈالاتو مصدق کواختیار ہے کہ عشر مشتری سے لے یابائع سے اورا گرجتنی قیمت ہونی چاہیےاُس سے زیادہ پر بیجا تو مصدق کواختیار ہے کہ غلّہ کاعشر لے یاتمن کاعشر اورا گرکم قیت پر بیجااوراتنی کمی ہے کہلوگ ا سے نقصان پڑہیں بیجتے توغلّہ ہی کاعشر لے گا اور وہ غلّہ نہ رہا تو اُس کاعشر قر اردے کر بائع سے لیں یا اُس کی واجبی قیمت۔ (6) (عالمگیری)

انگورن والے توشن کاعشر لے اورشیرہ کرتے ہیا تواسکی قیت کاعشر لے۔(7) (عالمگیری) - E MY & Fund

- "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.
- ◘ "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب: هل يجب العشرعلي المزارعين في الاراضي السلطانية، ج٣،
 - قة محتى ميں امام ابو يوسف اور امام محمد رحمة الله تعالى عليها كو كہتے ميں ۔
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر و شام السلطانية، ج٣، ص٥٣.
 - 5 "الفاوى الرضوية" (الجديدة)، كتاب الزكاة، رساله افصح البيان، ج١٠، ص٢٢٣.
 - 6 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.
 - 7 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.



الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ إِنَّمَا الصَّدَافَتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْسَلِينِ وَالْعِيلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَّلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْعُرِمِينَ وَفِي

سَبِيْلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ﴿ فَرِيْضَةً قِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ مَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۞ ﴿ (1)

صدقات فقراومساکین کے لیے ہیں اور انکے لیے جواس کام پرمقرر ہیں اور وہ جن کے قلوب کی تالیف مقصود ہے اور گردن چھڑانے میں اور تاوان والے کے لیے اور اللہ (عزد جل) کی راہ میں اور مسافر کے لیے، یہ اللہ (عزد جل) کی طرف سے مقرر کرنا ہے اور اللہ (عزد جل) علم و حکمت والا ہے۔

خلين الله عنوا في داود مين زياد بن حارث صدائي رضي الله تعالى عند عهم وي ، كدرسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم في فرمايا:

كـ "الله تعالى في صدقات كونبي ياكسي اور كے تكم پرنهيس ركھا بلكه أس في خوداس كا تھم بيان فرمايا اوراُس كي تھ حصے كيد ـ " (2)

خ<u>ل پئٹ ۲ ﴾</u> امام احمر وابو داو دوحا کم ابوسعید رضی الله تعالی عنہ سے راوی ، کدرسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم نے فر مایا: که دعنی

ك ليصدقه حلال نهيل مرياني شخف ك ليه:

- (۱) الله (عزوجل) كى راه مين جهادكرنے والا يا
 - (٢) صدقه برعامل يا
 - (m) تاوان والے کے لیے یا
 - (۴) جس نے اپنے مال سے خرید لیا ہو یا
- (۵) مسكين كوصدقد ديا گيااوراس مسكين نے اپنے پڑوى مالداركو مديدكيا۔'' (3) اوراحدوبيهي كى دوسرى روايت

میں مسافر کے لیے بھی جواز آیا ہے۔ (⁴⁾

خلیث سیجی نے حضرت مولی علی رض الله تعالی عند سے روایت کی ، که فر مایا: ''صدقه مفر وضه میں اولا داور والد کا

- ١٠٠١ پ ١٠ التوبة: ٦٠.
- سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب يعطىٰ من الصدقة وحدالغنى، الحديث: ١٦٣٠، ج٢، ص١٦٥.
- 3 "المستدرك" للحاكم، كتاب الزكاة، باب مقدار الغنى الذي يحرم السؤال، الحديث: ٢٠٥١، ج٢، ص٢٩.
- انظر: "السنن الكبرى" للبيهقي، كتاب قسم الصدقات، باب العامل على الصدقة ياخذ منها بقدر عمله... إلخ،
 الحديث: ١٣١٦٧، ج٧، ص٢٣.

🐔 حق نہیں '' (1)

<u> کے پیٹ کی بھی این عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے فر مایا: ''اے بنی</u>

ہاشم!تما ہے نفس پرصبر کرو کہ صدقات آ دمیوں کے دھوون ہیں۔'' ⁽²⁾

خَلِيْتُ ٥ تا ٧ ﴾ امام احمد ومسلم مطلب بن ربيعه رضى الله تعالى عنه سے راوى ،حضور (صلى الله تعالى عليه وسلم) نے فر مایا: آلِ

محرصلی الله تعالی علیہ وَلم کے لیے صدقہ جائز نہیں کہ بیاتو آ دمیوں کے میل ہیں۔ ' (3)

اورابن سعد کی روایت امام حسن مجتبے رضی اللہ تعالی عندسے ہے کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ بہلم) نے فرمایا: ' اللہ تعالی نے مجھ پر اور میری اہل بیت پر صدقہ حرام فرما دیا۔'' (4)

اورتر مذی ونسائی وحاکم کی روایت ابورافع رضی الله تعالی عندسے ہے کہ حضور (صلی الله تعالی علیہ وَہم) نے فر مایا:'' ہمارے لیے صدقہ حلال نہیں اور جس قوم کا آز اوکر دہ غلام ہو، وہ آخییں میں سے ہے۔'' (5)

الحکریث اللہ تعالی عنہ نے صدفتہ کا خرما کے کرمنھ میں ابوہ ہر بریہ درضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ امام حسن رضی اللہ تعالی عنہ نے صدفتہ کا خرما کے کرمنھ میں رکھ لیا۔ اس پر حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وہمانے فرمایا: '' جھی چھی کہ اُسے بھینک دیں ، پھر فرمایا: کیا شہمیں نہیں معلوم کہ ہم صدقہ نہیں کھاتے '' (6) طہمان و بہزین عمیم و براء وزید بن ارقم وعمرو بن خارجہ وسلمان وعبد الرحمٰن بن ابی کیا ومیمون و کیسان و ہر مزو خارجہ بن عمر و ومغیرہ و وانس وغیر ہم رضی اللہ تعالی عنہ سے بھی روایتیں ہیں کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہم) کی اہل بیت کے لیے

صدقات ناجا ئز ہیں۔⁽⁷⁾

مَسْعَلَهُ كَا وَكِهِ مِعْارِفُ مات بين:

(۱) فقیر

- ❶ "السنن الكبرى"، كتاب قسم الصدقات باب المراة تصيرف من زكاتها في زوجها، الحديث: ٩ ١٣٢٢، ج٧، ص ٥٠.
 - 2 "المعجم الكبير"، الحديث: ١٢٩٨٠ ، ج١١ ، ص١٨٢.
 - 3 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب ترك استعمال آل النبي على الصدقة، الحديث: ١٠٧٢، ص٥٣٩.
 - 4 "الطبقات الكبرى "لابن سعد، ج١،ص٢٩٧
- شجامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في كراهية الصدقة للنبى صلى الله عليه وسلم وأهل بيته ومواليه،
 الحديث: ٢٥٧، ج٢، ص٢٤٢.
- المحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب مايذكر في الصدقة للنبي صلى الله عليه وسلم وآله، الحديث: ١٤٩١، ج١، ص٥٠٥.
 - 7 انظر: "كنز العمال"، كتاب الزكاة، ج٦، ص١٩٥ _ ١٩٦.

- (۲) مسکین
 - (۳) عامل
- (۴) رقاب
 - (۵) غارم
- (١) في سبيل الله
- (۷) ابن مبیل (۱)

مستان کے ایساب کی قدر ہو ڈخص ہے جس کے پاس کچھ ہومگر نہ اتنا کہ نصاب کو پہنچ جائے یا نصاب کی قدر ہو تو اُس کی حاجتِ اصلیہ میں متنغرق ہو، مثلاً رہنے کا مکان پیننے کے کیڑے خدمت کے لیے لونڈی غلام علمی شغل رکھنے والے کودینی کتابیں جواس کی ضرورت سے زیادہ نہ ہوں جس کابیان گزرا۔ یو ہیں اگر مدیون ہے اور دَین نکا لنے کے بعد نصاب باقی نہ رہے، تو فقیر ہے اگرچاس کے پاس ایک تو کیا کئی نصابیں ہوں۔(2) (ردالمحتار وغیرہ)

رکھے کہاس کااعز از مد نظر ہو،ادب کے ساتھ دے جیسے چھوٹے بروں کونذ ردیتے ہیں اور معاذ اللہ عالم وین کی حقارت اگر قلب میں آئی توبہ ہلا کت اور بہت سخت ہلا کت ہے۔

مسکان کی کہا ہے۔ مسکین وہ ہے جس کے پاس کچھ نہ ہو یہاں تک کہ کھانے اور بدن چھیانے کے لیے اس کامختاج ہے کہ لوگوں سے سوال کرے اور اسے سوال حلال ہے، فقیر کوسوال ناجائز کہ جس کے پاس کھانے اور بدن چھپانے کو ہوا سے بغیر ضرورت ومجبوری سوال حرام ہے۔ (⁴⁾ (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ کامل وہ ہے جسے بادشاہ اسلام نے زکا ۃ اورعشر وصول کرنے کے لیےمقرر کیا،اسے کام کے لحاظ سے اتنادیا جائے کہاُ س کواوراُ س کے مددگاروں کا متوسط طور پر کافی ہو، مگرا تنا نہ دیا جائے کہ جو وصول کر لایا ہے اس کے نصف سے زیادہ

- ہوجائے۔⁽⁵⁾(درمختاروغیرہ)
- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٦، ص٣٣٣ _ ٣٤٠.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٣. وغيره
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٧.
 - 4 المرجع السابق، ص١٨٧ _ ١٨٨.
- 🥃 🗗 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٤ _ ٣٣٦، وغيره.

کا ق کے مصارف رکا ق کے مصارف

کے استان کی ساز کا قامیں سے دینا بھی ناجائز اور ہاشی ہو تو اس کو مالِ ز کا قامیں سے دینا بھی ناجائز اور اس کو مالِ ز کا قامیں سے دینا بھی ناجائز اور اس کے مامی کا جائز اور اس کا ماریکا ہوئی کے ماریکا کا تعلق کے اس کے ماریکا کا تعلق کا ماریکا کا تعلق کا ماریکا کا تعلق کا ماریکا کا تعلق کا تعلق

اُ ہے لین بھی ناجائز ہاں اگر کسی اور مدے دیں تولینے میں بھی حرج نہیں۔(1) (عالمگیری)

مَسِعَالُهُ كَ ﴾ زكاة كا مال عامل كے پاس سے جاتا رہا تو اب اسے پھھ نہ ملے گا ،مگر دینے والوں كی زكاتيں ادا

ہوگئیں۔⁽²⁾(درمختار،ردالحتار)

(عالمگیری) کوئی شخص اپنے مال کی زکاۃ خود لے کربیت المال میں دے آیا تو اُس کامعاوضہ عامل نہیں پائے گا۔ (3)

مسئلہ وقت سے پہلے معاوضہ لے لیایا قاضی نے دے دیا یہ جائز ہے، مگر بہتر یہ ہے کہ پہلے نہ دیں اور اگر پہلے لیا اور وصول کیا ہوا مال ہلاک ہوگیا تو ظاہر یہ کہ واپس نہ لیں گے۔(4) (روالمختار)

مَسَعَلَهُ اللّهِ عَنى كِم كاتب كوبهى مالِ زكاة دي سكتے بيں اگر چەمعلوم ہے كه بيغى كامكاتب ہے۔ مكاتب پورابدل كتابت اداكر نے سے عاجز ہو گيا اور پھر بدستورغلام ہو گيا تو جو بچھاُس نے مالِ زكاة ليا ہے، اس كومولى تصرف ميں لاسكتا ہے اگر چنى ہو۔ (6) (درمختاروغيره)

مستان استان استان

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٤.
- 3 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٦.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٧، وغيره.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
 - و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٧.

ميثن شن: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) 🚅

الم المستعلقات الله عند المديون ہے لين اس پراتنا وَ بن ہو کداُسے نکالنے کے بعد نصاب باقی ندرہے، اگر چداس کا اللہ عند نصاب باقی ندرہے، اگر چداس کا اللہ عند اللہ عند

اَوروں پر باقی ہومگر لینے پر قادر نہ ہو، مگر شرط میہ ہے کہ مدیون ہاشمی نہ ہو۔ (1) (درمختار وغیرہ)

مَسِيَّالُهُ اللهِ فَي سبيل الله يعنى راو خدا ميں خرچ كرنااس كى چندصورتيں ہيں،مثلاً كو كَي شخص محتاج ہے كہ جہاد ميں جانا

926

چاہتا ہے، سواری اورزادِراہ اُس کے پاس نہیں تو اُسے مالِ زکا ۃ دے سکتے ہیں کہ بیراہ خدامیں دینا ہے اگر چہوہ کمانے پر قادر ہو کی کہ چی سر میں میں میں میں میں میں اس میں کہ سے میں کے جس اور اس میں میں اس کے میں اور اس کے میں اس میں میں می

۔ یا کوئی فج کوجانا چاہتا ہےاوراُس کے پاس مال نہیں اُس کوز کا ۃ دے سکتے ہیں ،مگراسے فج کے لیےسوال کرنا جائز نہیں۔ '

یا طالب علم کھلم دین پڑھتایا پڑھنا چاہتا ہے،اسے دے سکتے ہیں کہ یہ بھی راہِ خدامیں دینا ہے بلکہ طالبعلم سوال کر کے بھی مالِ زکا قلے سکتا ہے، جب کہ اُس نے اپنے آپ کواس کام کے لیے فارغ کر رکھا ہوا گرچہ کسب پر قادر ہو۔ یو ہیں ہرنیک بات میں

مَسْعَانُ 10 ﴾ بہت ہے لوگ مالِ ز کا ۃ اسلامی مدارس میں بھیج دیتے ہیں ان کو چاہیے کہ متو تی مدرسہ کواطلاع دیں کہ بیہ مالِ ز کا ۃ ہے تا کہ متو تی اس مال کو جُدار کھے اور مال میں نہ ملائے اور غریب طلبہ پرِصَر ف کرے ،کسی کام کی اُجرت میں نہ دے ور نہ ز کا ۃ ادانہ ہوگی۔

سر المراق المرا

- "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٩، وغيره.
 - **2**..... کیعنی جس کودے،اسے مالک بنادے۔
- الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٩، وغيره.
- ١٨٨٠ "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
 - و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٠.

ل زکاۃ کےمصارف

سے پہلے مطالبہ کا اختیار نہ ہوگا اگر مطالبہ کرے تو باطل و نامسموع ہوگا کہ سب شرطیں باطل ہیں اور قرض دینے والے کو ہروفت مطالبہ کا اختیار ہے۔ (1) (درمختار وغیرہ)

مسئل الکاری مسئل الکو نصاب نے جس کا اپنا مال دوسرے پر دَین ہے، بوقتِ ضرورت مالِ زکاۃ بقدرِ ضرورت الله بقدرِ ضرورت لیا پھراپنامال مِل گیا مثلاً مسافر گھر پہنچ گیا یا مالکِ نصاب کا دَین وصول ہوگیا، تو جو پھرزکاۃ میں کا باقی ہے اب بھی اپنے ضرورت لیا پھراپنامال مِل گیا مثلاً مسافر گھر پہنچ گیا یا مالکِ نصاب کا دَین وصول ہوگیا، تو جو پھرزکاۃ میں کا باقی ہے اب بھی اپنے صرف میں لاسکتا ہے۔ (ردالحجار)

سر المراق المرا

سَسَعًا الله الماحت کافی نہیں، البذا مالِ زکا قادا کرنے میں بیضرور ہے کہ جسے دیں مالک بنا دیں، اباحت کافی نہیں، البذا مالِ زکا قامسجد میں صَرف کرنایا اُس سے میّت کو گفن دینایا میّت کا دَین ادا کرنایا غلام آزاد کرنا، پُل، سرا، سقایہ، سڑک بنوادینا، نہریا کوآں کھدوادینا ان افعال میں خرج کرنایا کتاب وغیرہ کوئی چیز خرید کردقف کردینا ناکافی ہے۔ (4) (جوہرہ، تنویر، عالمگیری)

سَسَعَانُ اللهُ فَقِيرِ پِرَةِ بِن ہے اس کے کہنے سے مالِ زکاۃ سے وہ دَین ادا کیا گیاز کاۃ ادا ہوگئی اور اگراُس کے حکم سے نہ ہو تو زکاۃ ادا نہ ہوئی اور اگر فقیر نے اجازت دی مگر ادا سے پہلے مرگیا، تو بید َین اگر مالِ زکاۃ سے ادا کریں زکاۃ ادا نہ ہوگی۔ (5) (در مختار) ان چیزوں میں مالِ زکاۃ صَرف کرنے کا حیلہ ہم بیان کر چکے ،اگر حیلہ کرناچاہیں تو کر سکتے ہیں۔

-1
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٠.
- 3 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
- 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج ١، ص ١٨٨٠. و "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤١ ـ ٣٤٣.
 - 🗲 🖘 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٢.

928 🗨 عال زكاة كمصارف

ﷺ سکتاہے بلکہ بہتر ہے۔ ⁽¹⁾(عالمگیری،ردالمختاروغیرہا)

سَسَعَالُهُ ٢٣ ﴾ بهواور داما داورسوتیلی مال پاسوتیلے باپ یا زوجه کی اولا دیا شوہر کی اولا د کودے سکتا ہے اور رشتہ داروں

میں جس کا نفقہ اُس کے ذمہ واجب ہے، اُسے زکا ہ دے سکتا ہے جب کہ نفقہ میں محسوب نہ کرے۔(3) (روالحتار)

<u> سَسَعَالُهُ ۲۳﴾</u> ماں باپ محتاج ہوں اور حیلہ کر کے زکاۃ وینا چاہتا ہے کہ بیفقیر کو دے دے پھر فقیر آتھیں دے بیہ کمروہ ہے۔ ⁽⁴⁾ (ردالحتار) یو ہیں حیلہ کر کے اپنی اولا دکو دینا بھی مکروہ ہے۔

سَسَعَالُهُ ٢٥﴾ (٣) اپنے یا پنی اصل یا پنی فرع یا پنے زوج یا پنی زوجہ کے غلام یا مکا تب ⁽⁵⁾ یا مربّر ⁽⁶⁾ یا ام ولد ⁽⁷⁾ یا اُس غلام کوجس کے کسی جُز کا بیرما لک ہو،اگر چہ بعض حصه آزاد ہوچکا ہو زکا ہے نہیں دےسکتا۔⁽⁸⁾ (عالمگیری)

ہو، جب تک عدّ ت میں ہے اور عدّ ت پوری ہو گئی تواب دیسکتا ہے۔⁽⁹⁾ (در مختار، روالمحتار)

سکان کان، سامان خانہ داری، پہننے کے کیڑے، خادم، سواری کا جانور، ہتھیار، اہلِ علم کے لیے کتابیں جواس کے کام میں ہول کہ بیسب حاجتِ اصلیہ سے ہیں اوروہ چیزان کے علاوہ ہو، اگر چیاس پرسال نہ گزرا ہواگر چیدوہ مال نامی نہ ہو) ایسے کوز کا قدینا جائز نہیں۔

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٤، وغيره.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٤.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٢٤٤.
 - 4 المرجع السابق.
- ایعنی آقایے غلام سے مال کی ایک مقدار مقرر کر کے بیکہ دے کہ اتناادا کردے تو آزاد ہے اور غلام اس کو قبول بھی کرلے۔
 - العنی وہ غلام جس کی نسبت مولی نے کہا کہ تو میرے مرنے کے بعد آزاد ہے۔
 - 🗗 کیخی وہ لونڈی جس کے بچہ پیدا ہوااور مولی نے اقرار کیا کہ بیرمیرا بچہ ہے۔ آند اس میں میں میں میں میں میں میں میں میں اور مولی ہے۔
 - تفصیلی معلومات کے لئے بہار شریعت حصه میں مدیر، مكاتب اورام ولد كابیان ملاحظ فرمائیں۔

 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص ١٨٩.

 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٥٣.

اورنصاب سے مراویہاں میہ ہے کہ اُس کی قیمت دوسو درم ہو، اگر چہ وہ خوداتنی نہ ہو کہ اُس پر زکاۃ واجب ہو مثلاً چھ تو لیست نہیں کہ ہونے کی نصاب ساڑھے سات تو لے تو لیسونا جب دوسو درم قیمت کا ہوتو جس کے پاس ہے اگر چہ اُس پر زکاۃ واجب نہیں کہ ہونے کی نصاب ساڑھے سات تو لے ہے مگر اس شخص کو زکاۃ نہیں دے سکتے یا اس کے پاس تمیس بکریاں یا بیس گا کیں ہوں جن کی قیمت دوسو درم ہے اسے زکاۃ نہیں دے سکتے یا اس کے پاس ضرورت کے سواا سباب ہیں جو تجارت کے لیے بھی نہیں اور وہ دوسو درم کے ہیں تو اسے زکاۃ نہیں دے سکتے ۔ (1) (ردالمحتار)

سَمَعَالُہُ ٢٨﴾ صحیح تندرست کو زکاۃ دے سکتے ہیں،اگر چہ کمانے پر قدرت رکھتا ہومگر سوال کرنا اسے جائز نہیں۔ (²⁾ (عالمگیری وغیرہ)

مولی کھانے کو بھی نہیں دیتایا اُس کا مالک نصاب ہے اُس کے غلام کو بھی زکاۃ نہیں دے سکتے ، اگرچہ غلام اپانچ ہواور اُس کا مولی کھانے کو بھی نہیں دے سکتے ہیں جوخوداور اُس کا مولی کھانے کو بھی نہیں دیتایا اُس کا مالک غائب ہو، مگر مالکِ نصاب کے مکا تب کواور اُس ماذون کو دے سکتے ہیں جو خوداور اُس کا مال دَین میں مستغرق ہو۔ (۸) یو بین غنی مرد کے نابالغ بچے کو بھی نہیں دے سکتے اور غنی کی بالغ اولا دکودے سکتے ہیں جب کہ فقیر ہوں۔ (۵) (عالمگیری، درمختار)

سَسَعَانُ سَنَ کَی کِی بِی بِی کودے سکتے ہیں جب کہ مالکِ نصاب نہ ہو۔ یو ہیں غنی کے باپ کودے سکتے ہیں جبکہ فقیرہے۔(4)(عالمگیری)

سَسَعَلُمُ اللهِ عَلَى عَلَى مَالَ مَا لِكَ نَصَابِ ہِے، اگر چِداس كا باپ زندہ نہ ہواُسے زكاۃ دے سكتے ہیں۔ (6) (درمختار)

مسئ الکرسی جس کے پاس مکان یا دکان ہے جے کرایہ پراٹھا تا ہے اوراُس کی قیمت مثلاً تین ہزار ہومگر کراہیا تنا

- € "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٣٤٦.
 - 🗨 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩، وغيره.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٨.
 - 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩.
- الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة اليه ومن لا يجوز، ص١٦٧.
 - 💪 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٩.

🦥 نہیں جواُس کی اور بال بچوں کی خورش کو کافی ہو سکے تو اُس کوز کا ۃ دے سکتے ہیں۔ یو ہیں اس کی مِلک میں کھیت ہیں جن کی کاشت کرتا ہے، مگر پیداوارا تن نہیں جوسال بھر کی خورش کے لیے کافی ہوائس کوز کا ۃ دے سکتے ہیں، اگر چہ کھیت کی قیمت دوسودرم مازائدہو۔⁽¹⁾(عالمگیری،ردالحتار)

جس کے پاس کھانے کے لیے غلّہ ہوجس کی قیت دوسو درم ہواور وہ غلّہ سال بھرکو کافی ہے، جب بھی اللہ علیہ میں اللہ می اس کوز کا ة دیناحلال ہے۔ (2) (روالحتار)

بیش قیت ہوں زکا ہے کے سکتا ہے،جس کے پاس رہنے کا مکان حاجت سے زیادہ ہویعنی پورے مکان میں اس کی سکونت نہیں ہے شخص ز کا ق لےسکتاہے۔⁽⁴⁾ (ردامختار)

سنا السام اللہ عورت کو ماں باپ کے یہاں سے جو جہیز ملتا ہے اس کی ما لک عورت ہی ہے، اس میں دوطرح کی چیزیں ہوتی ہیں ایک حاجت کی جیسے خانہ داری کے سامان، پہننے کے کپڑے،استعال کے برتن اس قشم کی چیزیں گتنی ہی قیمت کی ہوں ان کی وجہ سےعورت غنی نہیں ، دوسری وہ چزیں جوجاجت اصلیہ سے زائد ہیں زینت کے لیے دی جاتی ہیں جیسے زیوراور ۔ حاجت کےعلاوہ اسباب اور برتن اور آنے جانے کے بیش قیمت بھاری جوڑے،ان چیز وں کی قیمت اگر بقذر نصاب ہے عورت غنی ہےز کا ہ^{نہیں لے} سکتی۔⁽⁵⁾ (ردالحتار)

نصاب کی قبت کے ہوں توز کا ۃ لے نہیں سکتا۔ (6) (ردامختاروغیرہ)

<u>مسئانہ ۳۸ ہے۔</u> جس کے مکان میں نصاب کی قیت کا باغ ہواور باغ کے اندرضروریات مکان باور چی خانہ بخسل خانہ وغیرهٔ بیں تواسے ز کا ة لینا جائز نہیں۔⁽⁷⁾ (عالمگیری)

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩.
- س. "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٤٦.
 - 😘 یعنی سردی۔
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٧.
- 5..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في جهاز المرأة هل تصير به غنية، ج٣، ص٤٤٣.
 - 6 المرجع السابق، وغيره.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩.

ﷺ مسئلی وس کے انہ میں دے سکتے۔ نہ غیر انھیں دے سکے ، نہ ایک ہاشی دوسرے ہاشی کو۔ ا

بنی ہاشم سے مُر ادحفزت علی وجعفر وعقیل اور حضزت عباس وحارث بن عبدالمطلب کی اولا دیں ہیں۔ان کے علاوہ جفوں نے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وکلہ کی اعانت نہ کی ،مثلاً ابولہب کہ اگر چہ بیرکا فربھی حضرت عبدالمطلب کا بیٹا تھا، مگراس کی اولا دیں بنی ہاشم میں شار نہ ہوں گی۔⁽¹⁾ (عالمگیری وغیرہ)

مسئ ایک کی ملک میں ہیں، انھیں دیا ہوئے غلاموں کو بھی نہیں دے سکتے تو جو غلام اُن کی مِلک میں ہیں، انھیں دینا ا اور انتہ کی ال سری کردہ میں میں میں میں میں میں اور اور کے علاموں کو بھی نہیں دینا

بطريق أولى ناجائز ـ (2) (درمختاروغيره، عامهُ كتب)

سَسَعَانُ (۲۰) الله علی بلکه سیدانی ہواور باپ ہاشی نہ ہو تو وہ ہاشی نہیں کہ شرع میں نسب باپ سے ہے، لہذا ایسے شخص کو زکا ۃ دے سکتے ہیں اگر کوئی دوسرا مانع نہ ہو۔

مسئل المراد علی اوراوقاف کی آمدنی بنی ہاشم کودے سکتے ہیں،خواہ وقف کرنے والے نے ان کی تعیین کی ہویا انہیں۔(3)(درمختار)

مسئل (۱۰) و می کافرکوندز کا قرح سکتے ہیں، نہ کوئی صدقهٔ واجبہ جیسے نذر و کفّاره وصدقهٔ فطر (۱۰) اور حربی کوکسی فتم کا صدقه دینا جائز نہیں نہ واجبہ نفل، اگر چہوہ دارالاسلام میں باوشادِ اسلام سے امان لے کرآیا ہو۔ (5) (درمختار) ہندوستان اگر چہدارالاسلام ہے مگریہاں کے کفّار ذمّی نہیں، اُنھیں صدقات نفل مثلاً ہدیدوغیرہ دینا بھی ناجائز ہے۔

فا کدہ: جن لوگوں کوز کا قردینا ناجائز ہے آئھیں اور بھی کوئی صدقۂ واجبہ نذر و کفّارہ وفطرہ دینا جائز نہیں،سوا دفینہ اور معدن کے کہان کاخمس اپنے والدین واولا دکو بھی دے سکتا ہے، بلکہ بعض صورت میں خود بھی صَرف کرسکتا ہے جس کا بیان

- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩، وغيره.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ١ ٥٥، وغيره.
 - 🚯 المرجع السابق، ص٥٦ ٣٥.
 - ناوی قاضی خان میں ہے، صدقہ فطرذ می فقراء کودینا جائز ہے گر مکروہ ہے۔

("الفتاوى الخانية"، كتاب الصوم، فصل في صدقة الفطر، ج١، ص١١١).

فتاوی عالمگیری میں ہے،ذی کافروں کوزکوۃ دینا بالاتفاق جائز نہیں اور نفلی صدقہ ان کو دینا جائز ہے۔صدقۂ فطر، نذراور کفارات میں اختلاف ہےامام ابوحنیفداورا مام محمد رحمۃ اللہ تعالی علیما فرماتے ہیں کہ جائز ہے مگر مسلمان فقراءکو دینا جمیں زیادہ محبوب ہے۔

("الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨).

انظر: "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٣٥٣.

و "المبسوط"، كتاب الصوم، فصل في صدقة الفطر، ج٢، ص١٢٣.

🕽 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥٣.

ﷺ گزرا _{- (1)} (جوہرہ)

مسئل المراسب كافقير ہونا شرط ہے، سواعا مل کے کہاس کے لیے فقیر ہونا شرط نہیں اور ابن السبیل اگر چیغنی ہو، اُس وفت تھم فقیر میں ہے، باقی کسی کو جوفقیر نہ ہوز کا ہنہیں دے سکتے۔⁽²⁾ (درمختاروغیرہ)

مَسِعًا ﴾ ﴿ جَوْحُض مرض الموت میں ہےاس نے زکا ۃ اپنے بھائی کودی اور یہ بھائی اس کاوارث ہے تو زکا ۃ عنداللہ ادا ہوگئ، مگر باقی وارثوں کواختیار ہے کہاس سے اس زکا ہ کو واپس لیں کہ بیدو صیّت کے تھم میں ہے اور وارث کے لیے بغیر ا حازت دیگرور ثه وصیّت صحیح نهیں _⁽³⁾ (ردالحتار)

سَسَالُ الله جوان الله عندمت كرتا اوراس كے يہال كے كام كرتا ہے اسے ذكا قادى ياس كودى جس نے خوشخرى سنائی یا اُسے دی جس نے اُس کے باس مدرہ بھیجابہ سب جائز ہے، ہاں اگرعوض کہہ کر دی توادا نہ ہوئی عید، بقرعید میں خذ ام مرد وغورت کوعیدی کهه کردی توادا ہوگئی۔⁽⁴⁾ (جویر ہ،عالمگیری)

مستان کے کا جس نے تحری کی لیعنی سوچا اور دل میں بیربات جمی کہ اس کوز کا قادے سکتے ہیں اور ز کا قادے دی بعد میں ظاہر ہوا کہ وہ مصرف زکا ۃ ہے یا کچھ حال نہ گھلا تو ادا ہوگئی اورا گر بعد میں معلوم ہوا کہ وہ غنی تھایا اُس کے والدین میں کوئی تھایا ا بني اولا دَهي يا شوہرتھاياز وحبَهي يا ہاشي يا ہاشي كاغلام تھاياذ تى تھا، جب بھي ادا ہوگئي اورا گربيمعلوم ہوا كه أس كاغلام تھايا حربي تھا تو ادانہ ہوئی۔اب پھردےاور پیجھی تحری ہی کے تھم میں ہے کہ اُس نے سوال کیا ،اس نے اُسے غنی نہ جان کردے دیایا وہ فقیروں کی جماعت میں آنھیں کی وضع میں تھا اُسے دے دیا۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

سَسَعَانُ ۴۸ ﴾ اگر بےسویے شمجھ دے دی یعنی پی خیال بھی نہ آیا کہ اُسے دے سکتے ہیں یانہیں اور بعد میں معلوم ہوا کہ اُسے نہیں دے سکتے تھے توادا نہ ہوئی ، ورنہ ہوگئی اوراگر دیتے وفت شک تھااورتحری نہ کی یا کی مگر کسی طرف دل نہ جمایاتحری کی اور غالب گمان بیہوا کہ بیز کا ق کامصرف نہیں اور دے دیا توان سب صورتوں میں ادانہ ہوئی مگر جبکہ دینے کے بعد بیظا ہر ہوا کہ واقعی

- 1 ---- "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، ص١٦٧.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٤ _ ٣٤١، وغيره.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٤.
- 4 "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة... إلخ، ص٦٩. و "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٩٠.
- ۱۸۹۰ الفتاوى الهندية"، المرجع السابق، ص٩٩، ١، و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥٣.

وهمرف زكاة تقا تو موكن _(1) (عالمكيري وغيره)

سَسَعَانُ وَ ﴾ نکاۃ وغیرہ صدقات میں افضل میہ ہے کہ اوّلاً اپنے بھائیوں بہنوں کو دے پھر اُن کی اولا د کو پھر چچا اور پھو ہیوں کو پھران کی اولا د کو پھر ماموں اور خالہ کو پھراُن کی اولا د کو پھر ذوی الارحام بینی رشتہ والوں کو پھر پڑوسیوں کو پھرا پنے بیشہ والوں کو پھرا بینے شہریا گاؤں کے رہنے والوں کو۔⁽²⁾ (جو ہرہ، عالمگیری)

صدیث میں ہے کہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فرمایا: ''اے اُمتِ محمد (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم)! فتم ہے اُس کی جس نے مجھے حق کے ساتھ بھیجا، اللہ تعالیٰ اس شخص کے صدقہ کو قبول نہیں فرما تا، جس کے رشتہ داراس کے سلوک کرنے کے محتاج ہوں اور یہ غیروں کو دے فتم ہے اُس کی جس کے دستِ قدرت میں میری جان ہے، اللہ تعالیٰ اس کی طرف قیامت کے دن نظر نہ فرمائے گا۔'' (درالحتار)

مسئان من والے ہوں تو اُن کے لیے بھیج سکتا ہے۔ اور کا قابھیجنا مکروہ ہے، مگر جب کہ وہاں اُس کے رشتے والے ہوں تو اُن کے لیے بھیج سکتا ہے یا وہاں کو گوں کوزیادہ حاجت ہے یا زیادہ پر ہیزگار ہیں یا مسلمانوں کے تن میں وہاں بھیجنا زیادہ نافع ہے یا طالب علم کے لیے بھیج یا زاہدوں کے لیے یا دارالحرب میں ہے اور زکا قا دارالاسلام میں بھیج یا سال تمام سے پہلے ہی بھیج دے، ان سب صورتوں میں دوسرے شہرکو بھیجنا بلاکراہت جائز ہے۔ (4) (عالمگیری، درمختار)

<u> سَمَالُهُ (۵)</u> شہرے مرادوہ شہر ہے جہاں مال ہو، اگرخودا یک شہر میں ہے اور مال دوسرے شہر میں تو جہاں مال ہو وہاں کے فقر اکوز کا قدی جائے اور صدقۂ فطر میں وہ شہر مراد ہے جہاں خود ہے، اگرخودا یک شہر میں ہے اُس کے چھوٹے بچے اور غلام دوسرے شہر میں تو جہاں خود ہے وہاں کے فقر اپر صدقۂ فطر تقسیم کرے۔ (5) (جو ہرہ، عالمگیری)

<u> مَسَعَالُهُ ۵۲ ﴾</u> بدند ہب کوز کا قادینا جائز نہیں۔ ⁽⁶⁾ (درمختار) جب بدند ہب کا بی^{نکم} ہے تو وہابیۂ زمانہ کہ توہینِ خدا

- "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١١، ص١٩، وغيره.
 - 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٩٠.
 - 3 "المعجم الاوسط"، ،الحديث ٨٨٨٨، ج٦، ص ٩٦.
- و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٥٥.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص ١٩٠.
 - 5 "الفتاوي الهندية"، المرجع السابق.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٥٦.٣.

و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٥٥٣.

ييث ش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) €

🐉 وتنقیص شانِ رسالت کرتے اور شائع کرتے ہیں، جن کوا کا برعلائے حرمین طبیین نے بالاتفاق کا فر ومرتد فرمایا۔ (1) اگر چہ وہ

ا ہے آپ کومسلمان کہیں ، انھیں ز کا ۃ دیناحرام و تخت حرام ہے اور دی تو ہر گزادانہ ہوگی۔

سَسَانُ ۵۳ ﴾ جس کے پاس آج کھانے کو ہے یا تندرست ہے کہ کما سکتا ہے اُسے کھانے کے لیے سوال حلال نہیں اور بے مائے کوئی خود دے دے تولینا جائز اور کھانے کواس کے پاس ہے مگر کیڑا نہیں تو کیڑے کے لیے سوال کرسکتا ہے۔ یو ہیں اگر جہاد پاطلب علم وین میں مشغول ہے تو اگر چرچیج تندرست کمانے پر قادر ہواُ ہے سوال کی اجازت ہے، جے سوال جائز نہیں اُس كے سوال بردينا بھي ناجائز دينے والا بھي گنزگار ہوگا۔(2) (درمختار)

مستحب بیرے کہ ایک شخص کواتنادیں کہ اُس دن اُسے سوال کی حاجت نہ پڑے اور بیا ُس فقیر کی حالت کے اعتبار سے مختلف ہے، اُس کے کھانے بال بچوں کی کثر ت اور دیگرامور کا لحاظ کر کے دے۔⁽³⁾ (درمختار ، روالمحتار)

صدقهٔ فطر کا بیان

خلیث ایک صحیح بخاری و سیح مسلم میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، کدرسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم نے زکا 🖥 فطرایک صاع خرمایا بو ،غلام وآ زادمر دوعورت جھوٹے اور بڑے مسلمانوں پرمقرر کی اور بیچکم فرمایا: که' نماز کوجانے سے پیشتر اوا

ابو داود ونسائی کی روایت میں ہے کہ عبداللہ بن عباس رضی اللہ تنافی عنہا نے آخر رمضان میں فرمایا: اپنے روزے کا صدقہ ادا کرو،اس صدقہ کورسول الله صلی الله تعالی علیه وللم نے مقرر فر مایا ، ایک صاع کُر مایا بھویانصف صاع گیہوں۔(5)

🗨 تفصیلی معلومات کے لیے اعلیٰ حضرت، امام اہلِ سنت، مجر دِ دین وملت، علامہ مولا نااحمد رضاخان علیہ رحمۃ الرحمٰن کی کتاب ''حُسَّ سامُ الْحَرَ مَيْنِ عَلْي مَنْحَو الْكُفُو وَالمَيْنِ " كامطالعة مراكيجَ ـ " حُسَّاهُ الْحَرَمَيْنِ " كيا بميت كييش نظر، اميرا بلسنت ، باني وتوت إسلامي حضرت علامه مولانا ابوبلال محمدالياس عطارةا درى دامت بركاتهم العالية فرمات بين: تَسمُهينُهُ ٱلِايْعَان اور حُسَّامُ الْحَرَمَيْن كَ كيا كَضِ إو اللَّه المعظيم جلّ جلاله،ميريآ قاامام احمد رضاعليه رحمة الرحن نے بيكتا بين لكھ كردود ھكا دودھادرياني كاياني كرديا ـ تمام اسلامي بھائيوں اوراسلامي بہنوں ہے میری مکڈ نی التجاء ہے کہ پہلی فرصت میں ان کتابوں کا مطالعہ فرمالیں '' آپ کے عطا کردہ مدنی انعامات میں سے ایک مدنی انعام ہے کہ:'' کیا آب نے اعلیٰ حضرت علید حمة الرحمٰن کی تُلُب تَمْهینکه اُلایمهان اور **حُسَّامُ الْحَرَ مَیْن** بیرُه یاس فی میں؟''

- 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٥٧.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٥٨.
 - 4 "صحيح البخاري"، أبواب صدقة الفطر، باب فرض صدقة الفطر، الحديث: ١٥٠٣، ج١، ص٧٠٥.
- 🥞 🗗 "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب من روى نصف صاع من قمح، الحديث: ١٦٢٢، ج٢، ص١٦١.

😸 👈 🔑 🤝 تر مذی شریف میں بروایت عمرو بن شعیب عن ابیون جد ہ مروی ، کہ حضورِ اقدس صلی اللہ تعالی علیہ دسلم نے

ایک شخص کو بھیجا کہ مکہ کے کو چوں میں اعلان کردے کہ صدقۂ فطروا جب ہے۔ (1)

ځ لینٹ 🗬 🎇 ۔ ابوداود وابن ماجہ و حاکم ابن عباس رضی الله تعالی عنها ہے را وی ، که رسول الله سلی الله تعالی علیه و ملم نے ز کا 🛪 فطر

مقرر فرمائی کہ لغواور بیہودہ کلام سے روزہ کی طہارت ہوجائے اور مساکین کی خورش (2) ہوجائے۔(3)

خلینے 🔕 🐣 دیلی وخطیب وابن عسا کرانس رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے فر مایا: '' بیندہ کا

روزه آسان وزمین کے درمیان معلّق رہتاہے، جب تک صدقہ فطرادانہ کرے۔ ' (4)

مَستَانُ اللَّهِ صدقهُ فطرواجب ہے،عمر مجراس کا وقت ہے یعنی اگرادانہ کیا ہو تواب ادا کر دے۔ادانہ کرنے سے ساقط نہ

ہوگا، نداب ادا کرنا قضاہے بلکداب بھی ادائی ہےا گرچہ مسنون قبل نمازِ عیدادا کردیناہے۔ ⁽⁵⁾ (در مختار وغیرہ)

بطورِاحسان اپنی طرف سے ادا کریں تو ہوسکتا ہے کچھائن پر جبز ہیں اورا گر دصیّت کر گیاہے تو تہائی مال سے ضرورا دا کیا جائے گا اگرچەدرىثداجازت نەدىي_⁽⁶⁾ (جوہرە دغيره)

سَسَان سی عیدے دن صبح صادق طلوع ہوتے ہی صدقہ فطر واجب ہوتا ہے، لہذا جو شخص صبح ہونے سے پہلے مرگیا یاغنی تھافقیر ہو گیا یاضبح طلوع ہونے کے بعد کا فرمسلمان ہوایا بچہ پیدا ہوایا فقیرتھاغنی ہو گیا تو واجب نہ ہوااورا گرضبح طلوع ہونے ۔ کے بعد مرا یاضبح طلوع ہونے ہے پہلے کا فرمسلمان ہوایا بچہ پیدا ہوایا فقیرتھاغنی ہو گیا تو واجب ہے۔⁽⁷⁾ (عالمگیری)

مَسَعًا ﴾ ﴿ صدقهُ فطر ہرمسلمان آزاد مالکِ نصاب پرجس کی نصاب حاجت اصلیہ سے فارغ ہو واجب ہے۔ اس میں عاقل بالغ اور مال نامی ہونے کی شرط نہیں۔ ⁽⁸⁾ (درمختار) مال نامی اور حاجت اصلیہ کا بیان گزر چکا،اس کی صورتیں

- السنة "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في صدقة الفطر، الحديث: ٦٧٤، ج٢، ص١٥١.
 - 🕰 لیخی خوراک_
 - 3 "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب زكاة الفطر، الحديث: ١٦٠٩، ج٢، ص٥٧٠.
 - ◘ "تاريخ بغداد"، رقم: ٤٧٣٥، ج٩، ص١٢٢.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص ٣٦٢، وغيره.
 - 6 "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ص ١٧٤، وغيره.
 - 🕡 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢.
 - 8 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٢ _ ٣٦٥.

بيثر كش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلامي) 🛒

🏖 وہیں ہے معلوم کریں۔

سَسَالُهُ ﴾ نابالغ یا مجنون اگر مالکِ نصاب ہیں توان پرصدقہ فطرواجب ہے،اُن کاولی اُن کے مال سےاداکرے، اگرولی نے ادانہ کیا اور نابالغ بالغ ہوگیایا مجنون کا جنون جاتار ہا تواب بیخود اداکردیں اورا گرخود مالکِ نصاب نہ تھاورولی نے ادانہ کیا توبالغ ہونے یا ہوش میں آنے براُن کے ذمہادا کرنانہیں۔⁽¹⁾ (درمختار ،ردالحتار)

سَسَالُ اللَّهِ صِدِقَهُ فطرادا کرنے کے لیے مال کا باقی رہنا بھی شرطنہیں، مال ہلاک ہونے کے بعد بھی صدقہ واجب رہے گاسا قط نہ ہوگا ، بخلاف زکا ہ وعشر کہ بیدونوں مال ہلاک ہوجانے سے ساقط ہوجاتے ہیں۔(2) (درمختار)

مسئل کی استان کے ایک نصاب پراپی طرف سے اور اپنے جھوٹے بچہ کی طرف سے واجب ہے، جبکہ بچہ خود مالکِ نصاب نہ ہو، ورنداس کا صدقہ اس کے مال سے اوا کیا جائے اور مجنون اولا واگر چہ بالغ ہو جبکہ غنی نہ ہوتو اُس کا صدقہ اُس کے باب برواجب ہےاورغیٰ ہوتو خوداس کے مال سےادا کیا جائے،جنون خواہ اصلی ہویعنی اسی حالت میں بالغ ہوایا بعد کوعارض ہوا دونول کاایک حکم ہے۔ (3) (درمختار،ردالحتار)

سَسَعًا ﴾ ﴿ صدقهُ فطرواجب ہونے کے لیے روزہ رکھنا شرطنہیں، اگر کسی عذر،سفر،مرض، بڑھایے کی وجہ سے یا معاذ الله بلاعذرروزه نهر کھاجب بھی واجب ہے۔ (4) (روالحتار)

تو سی پراس کی طرف سے صدقہ واجب نہیں، نہ شوہر پر نہ باپ پراوراگر قابل خدمت نہیں یا شوہر کے یہاں اُسے بھیجانہیں تو بدستور باپ برہے پھر بیسب اس وقت ہے کہ لڑکی خود مالک نصاب نہ ہو، ورنہ بہر حال اُس کا صدقۂ فطراس کے مال سے اوا کیا جائے۔⁽⁵⁾ (درمختار،ردامختار)

<u>مسئان کی طرف سے اس پر صدقہ دینا واجب</u> ے_(درمختار)

- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٥٦٥.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٦.
- € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٧.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٧.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٨.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٨.

الله المستعلية الله المستعلم المارية جهول بي المحتار) المحتار) المحتار) المحتار) المحتار) المحتار)

مست الکری اللہ کی خدمت کےغلام اور مدبروام ولد کی طرف سے ان کے مالک برصد قررُ فطرواجب ہے،اگر چہغلام مدیوُن

ہو،اگر چہ دَین میں مستغرق ہواورا گرغلام گروی ہواور مالک کے پاس حاجتِ اصلیہ کے سواا تناہو کہ دَین ادا کردےاور پھرنصاب کاما لک رہے تو مالک پراس کی طرف سے بھی صدقہ واجب ہے۔ (2) (درمخار، عالمگیری وغیر ہما)

سَسَعَانُ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلام كا فطره ما لك يرواجب نهيں اگر جداس كى قيمت بقد رِنصاب نه ہو۔ (3) (ورمخار، ردامخار)

مسئلہ اللہ عامیات (4) و روزیایا کسی کے پاس امانة رکھاتوما لک پر فطرہ واجب ہے اورا گریہ وصیّت کر گیا کہ

یہ غلام فلاں کا کام کرے اور میرے بعد اس کا مالک فلاں ہے تو فطرہ مالک پر ہے، اُس پرنہیں جس کے قبضہ میں ہے۔ (5) (درمختار)

مستان ۱۵ 💨 بھا گا ہوا غلام اور وہ جسے حربیوں نے قید کرلیا ان کی طرف سے صدقہ مالک پرنہیں۔ یو ہیں اگر کسی نے غصب کرلیا اور غاصب انکار کرتا ہے اوراس کے پاس گواہ نہیں تو اس کا فطرہ بھی واجب نہیں ، مگر جب کہ واپس مل جائیں تو اب ان کی طرف سے سالہائے گزشتہ کا فطرہ دے، مگر حربی اگر غلام کے ما لک ہو گئے تو واپسی کے بعد بھی اس کا فطرہ نہیں۔ (6) (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

بدل كتابت اداكرنے سے عاجز آيا تو مالك برسالهائے گزشته كا فطرہ نہيں۔(7) (عالمگيري)

مسئانی (عام شرک ہے تو اُس کا فطرہ کسی پزہیں۔⁽⁸⁾ (عالمگیری)

سَسَعًا ﴾ منال 💨 غلام 👺 ڈالا اور بائع یامشتری یا دونوں نے واپسی کا اختیار رکھاعیدالفطر آگئی اور میعادا ختیار ختم نہ ہوئی تو

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٨.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٩.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢، وغيرهما.

- 3 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص ٣٦٩.
 - 🗗 یعنی اوهار ـ
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٩٦٩.
 - 6 المرجع السابق، ص ٧٠٠٠.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص٩٣.
 - 🦔 🔞 المرجع السابق.

صدقهُ فطركابيان

اُس کا فطره موقوف ہے، اگر بی قائم رہی تو مشتری دے در نہ بائع۔(1) (عالمگیری)

مسئان 19 اگرمشتری نے خیار عیب یا خیار رویت کے سبب واپس کیا تواگر قبضہ کرلیا تھا تو مشتری پرہے، ورنہ

بائع پر۔⁽²⁾(عالمگیری)

ب ہے۔ مستان کو یا اعید کے بعد قبضہ کر کے آزاد کر دیا تو مستان کو یا ایک علام کو بیچا مگروہ زمیج فاسد ہوئی اور مشتری نے قبضہ کر کے واپس کر دیایا عید کے بعد قبضہ کر کے آزاد کر دیا تو

بائع پرہاورا گرعیدہ پہلے قبضہ کیااور بعد عیر آزاد کیا تو مشتری پر۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُ ٢٥﴾ مالک نے غلام سے کہا جب عید کا دن آئے تو آزاد ہے۔عید کے دن غلام آزاد ہوجائے گا اور مالک پراس کا فطرہ واجب۔(4)(عالمگیری)

سَسَعَالُهُ ٢٦﴾ اپنی عورت اور اولا دعاقل بالغ کا فطرہ اُس کے ذمنہیں اگر چہ اپانچ ہو، اگر چہ اس کے نفقات اس کے ذمہ ہوں۔ (5) (درمخاروغیرہ)

سَمَّنَا الله الله عورت یا بالغ اولا د کا فطرہ ان کے بغیر إذن ادا کردیا تو ادا ہو گیا، بشر طیکہ اولا داس کے عیال میں ہولیتی اس کا نفقہ وغیرہ اُس کے ذمہ ہو، ورنہ اولا د کی طرف سے بلاإذن (⁶⁾ ادانہ ہوگا اور عورت نے اگر شوہر کا فطرہ بغیر علم ادا کر دیا ادا نہ ہوا۔ ⁽⁷⁾ (عالمگیری، ردالحتا روغیر ہا)

سَسَعَانُ اسْ الله علی اور بغیر حکم ادا بھی نہیں اور دیگر رشتہ داروں کا فطرہ اس کے ذمہ نہیں اور بغیر حکم ادا بھی نہیں کرسکتا۔(8) (عالمگیری، جوہرہ)

سَسَنَا ﴾ آگای استفاد کی مقدار میہ گیہوں یاس کا آٹایاستونصف صاع ، کھجور یامنقے یا بھویاس کا آٹایاستوایک صاع۔((درمختار، عالمگیری)

- ۱۹۳۰۰۰۰۰ "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٣٠.
 - 2 المرجع السابق.
 - 4 المرجع السابق.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص ٣٠، وغيره.
 - 6..... یعنی بغیراجازت۔
- آلفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٣.
 و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٠٠، وغيرهما.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٣.
- 🗨 المرجع السابق، ص ١٩١، و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٧٢.

🦫 📶 🐪 🤻 گیہوں، بَو ،کھجوریں، منقر دیےجائیں توان کی قیمت کااعتبارنہیں،مثلاً نصف صاع عمدہ بَوجن کی قیمت ایک صاع بو کے برابرہے یا چہارم صاع کھرے گیہوں جو قیمت میں آ دھے صاع گیہوں کے برابر ہیں یا نصف صاع تحجوریں دیں جوایک صاع بو یانصف صاع گیہوں کی قیمت کی ہوں سیسب ناجائز ہے جتنادیا اُتناہی ادا ہوا، باقی اس کے ذمہ باقی ہے اداکرے۔(1)(عالمگیری وغیرہ)

مست الم ٢٥ اور نصف صاع بو اور چہارم صاع گيهوں ديے يا نصف صاع بو اور نصف صاع محبور تو بھی جائز ہے۔(²⁾(عالمگیری،ردالحتار)

مستان (۲۸ ایس اور جو ملے ہوئے ہوں اور گیہوں زیادہ ہیں تو نصف صاع دے ورندایک صاع۔ (3) (ردالختار)

کی قیمت دے یا بھو کی یا تھجور کی مگر گرانی میں خودان کا دینا قیمت دینے سے افضل ہے اورا گرخراب گیہوں یا بھو کی قیمت دی تو اچھی قیمت سے جو کی پڑے بوری کرے۔(4) (ردالحتار)

سَسَانُ 📆 🐣 ان جار چیزوں کےعلاوہ اگر کسی دوسری چیز ہے فطرہ ادا کرنا جا ہے،مثلاً جاول، جوار، باجرہ یا اورکوئی غلّہ يا اورکوئي چيز ديناچاہے تو قيمت کالحاظ کرنا ہوگاليعن وه چيز آ دھےصاع گيہوں ياايک صاع بھو کی قيمت کی ہو، يہاں تک که روٹی ویں تواس میں بھی قیمت کالحاظ کیا جائے گااگرچہ گیہوں یا بھو کی ہو۔ (5) (درمختار، عالمگیری وغیر بما)

مستعلی است ایکی درجه کی تحقیق اوراحتیاط بیر ہے، کہ صاع کا وزن تین سوا کاون رویے بھر ہے اور نصف صاع ایک سو پچھتر روپےاٹھنی بھراویر۔⁽⁶⁾(ف**ت**اویٰ رضویہ) ⁻

سَسَالُ الله على المراه کا مقدم کرنا مطلقاً جائز ہے جب کہ وہ خص موجود ہو، جس کی طرف سے ادا کرتا ہوا گرچہ رمضان ہے پیشتر ادا کر دے اور اگر فطرہ ادا کرتے وقت مالک نصاب نہ تھا پھر ہو گیا تو فطرہ صحیح ہے اور بہتر ہیہے کہ عید کی صبح صادق

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢، وغيره.
 - 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٧٣.
- ₫..... المرجع السابق، ص٣٧٦، و "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩١ _ ١٩٢.
- 🗗 "الفتاوي الهندية"، المرجع السابق، ص ١٩١، و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٧٣، وغيرهما.
 - 🔊 6..... "الفتاوي الرضوية"، ج٠١، ص٥٩٦.

پيش ش: مجلس المدينة العلمية (ووتاسلام) €

بیک ہونے کے بعداورعیرگاہ جانے سے پہلے اداکردے۔(1) (درمخار، عالمگیری)

سکان استان استان است کا فطرہ ایک مسکین کورینا بہتر ہے اور چندمسا کین کودے دیا جب بھی جائز ہے۔ یو ہیں ایک

مسکین کو چنر شخصوں کا فطرہ دینا بھی بلاخلاف جائز ہے اگر چہ سب فطرے ملے ہوئے ہوں۔⁽²⁾ (درمختار ، ردالحتار)

سن المستان المستان المستحد المستعادية والمرتبي المستعان ا میں ملا کر فقیر کودے دیے اور شوہرنے ملانے کا حکم نہ دیا تھا تو عورت کا فطرہ ا دا ہو گیا شوہر کانہیں مگر جب کہ ملا دینے برعرف جاری

موتوشومر كابھى ادا ہوجائے گا۔⁽³⁾ (درمختار، ردالحتار)

سَسَعًا ﴾ عورت نے شوہرکوا پنا فطرہ ادا کرنے کا اذن دیا ،اس نے عورت کے گیہوں اپنے گیہووں میں ملا کرسب کی نتیت سے فقیر کودے دیے جائز ہے۔ (4) (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ صدقة فطر کے مصارف وہی ہیں جوز کا ۃ کے ہیں یعنی جن کو زکاۃ وے سکتے ہیں، انھیں فطرہ بھی دے سکتے ہیں اور جنھیں زکا قنہیں دے سکتے ، انھیں فطرہ بھی نہیں سوا عامل کے کہ اس کے لیے زکا ق ہے فطرہ نہیں۔ (5)

مَسِعَلَا اللّٰهِ اللّٰهِ عَلام کی عورت کو فطرہ دے سکتے ہیں،اگر چِداُس کا نفقداُسی پر ہو۔⁽⁶⁾ (درمختار)

ٌ سوال کسے حلال ھے اور کسے نھیں

آج کل ایک عام بلایہ پھیلی ہوئی ہے کہ اچھے خاصے تندرست جا ہیں تو کما کر اوروں کو کھلائیں، مگر انہوں نے اپنے وجود کو بیکار قرار دے رکھا ہے، کون محنت کرے مصیبت جھیلے، بے مشقت جوال جائے تو تکلیف کیوں برداشت کرے۔ ناجائز طور پر سوال کرتے اور بھیک مانگ کرپیٹ بھرتے ہیں اور بہتیرےایسے ہیں کہ مزدوری تو مزدوری، چھوٹی موٹی تجارت کوننگ و عار خیال کرتے اور بھیک مانگنا کہ حقیقۃً ایسوں کے لیے بےعز تی و بے غیر تی ہے مایۂ عزت جانتے ہیں اور بہتوں نے تو بھیک

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٧٦.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، مطلب في مقدار الفطرة بالمد الشامي، ج٣، ص٣٧٧.
 - 3 المرجع السابق، ص٣٧٨. في الفتاوي الهندية"،
- 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، مطلب في مقدار الفطرة بالمد الشامي، ج٣، ص٣٧٩.
 - 🐒 🌀 "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص ٣٨٠.

🥌 مانگنا اپنا پیشه بی بنا رکھا ہے، گھر میں ہزاروں روپے ہیں سود کا لین دین کرتے زراعت وغیرہ کرتے ہیں مگر بھیک مانگنانہیں 👶

حچوڑتے، اُن سے کہا جاتا ہے تو جواب دیتے ہیں کہ یہ ہمارا پیشہ ہے واہ صاحب واہ! کیا ہم اپنا پیشہ چھوڑ دیں۔ حالا نکہ ایسوں کو

سوال حرام ہے اور جسے اُن کی حالت معلوم ہو، اُسے جا تزنبیں کہ ان کودے۔

اب چند حدیثیں سنیے! دیکھیے کہ آقائے دوعالم صلی اللہ تعالی علیہ دملم ایسے سائلوں کے بارے میں کیا فرماتے ہیں۔

خلایث 🔰 – بخاری ومسلم عبدالله بن عمر رضی الله تعالی عنها سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتے ہیں: '' آ وی سوال كرتار ہے گا، يہاں تك كه قيامت كے دن اس حال مين آئے گا كه أس كے چبره برگوشت كا كلزانه موگا-" (1) لعني نهايت

ہےآبروہوکر۔

ځ 🗘 پنٹ 🔼 تا 🗥 🇨 ابوداود وتر مذی ونسائی وابن حبان سمره بن جندب رضی الله تعالی عنه سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه وتلم فرماتے ہیں:''سوال ایک قتم کی خراش ہے کہ آ دمی سوال کر کے اپنے موزھ کونو چتا ہے، جو چاہے اپنے موزھ پر اس خراش کو باقی رکھےاور جوچاہے چھوڑ دے، ہاں اگرآ دمی صاحبِ سلطنت سے اپناحق مائلے یا ایسے امر میں سوال کرے کہ اُس سے جارہ نہ ہو⁽²⁾(تو جائز ہے)۔''اوراس کے مثل امام احمد نے عبداللہ بن عمراور طبرانی نے جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالی عنہم سے روایت کی۔

خلیئٹ 🚳 💨 بیہ چی نے عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے روایت کی ، که رسول الله صلی اللہ تعالی علیه وسلم نے فر مایا: ''جو تشخص لوگوں سے سوال کرے، حالا نکہ نہ اُسے فاقہ پہنچا، نہاتنے بال بیجے ہیں جن کی طاقت نہیں رکھتا تو قیامت کے دن اس طرح آئے گا کہ اُس کے موزھ برگوشت نہ ہوگا۔''اورحضور (صلی اللہ تعالی علیہ ہم) نے فرمایا:''جس پر نہ فاقہ گزرااور نہ استے بال بیچے ہیں جن کی طاقت نہیں اور سوال کا درواز ہ کھولے اللہ تعالیٰ اُس پر فاقہ کا درواز ہ کھول دے گا، ایس جگہ ہے جواس کے دل میں بھی

ځ پئٹ 🔨 و 🖊 🧨 نسائی نے عائذ بن عمر ورض اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ،رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ عایہ وہلم فر ماتے ہیں:''اگر لوگوں کومعلوم ہوتا کہ سوال کرنے میں کیا ہے تو کوئی کسی کے پاس سوال کرنے نہ جاتا۔' (4) اس کی مثل طبرانی نے عبداللہ بن عماس رضی الله تعالی عنها سے روایت کی ۔

- **1**..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، با ب كراهة المسألة للناس، الحديث: ١٠٤_(١٠٤٠)، ص١٨٥.
 - 2 "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب ماتحوز فيه المسألة، الحديث: ٦٦٩ ١،ج٢، ص١٦٨.
- 3 "شعب الإيمان"، باب في الزكاة، فصل في الاستعفاف عن المسألة، الحديث: ٢٦٥٦، ج٣، ٢٧٤.
 - 4 "سنن النسائي"، كتاب الزكاة، باب المسألة، الحديث: ٢٥٨٣، ص ٢٥٤.

🕏 🕹 پیٹ 🔥 و ۹ 🎤 امام احمد به سند جید وطبر انی و بز ارغمران بن حسین رضیالله تعالی عنبهاسے راوی که حضورا قد س سلی الله تعالی علیه وسلم 🔻

فرماتے ہیں:' دغنیٰ کا سوال کرنا، قیامت کے دن اس کے چہرہ میں عیب ہوگا۔'' ⁽¹⁾ اور بزار کی روایت میں یہ بھی ہے کہ ' دغنی کا سوال آگ ہے، اگر تھوڑ ادیا گیا تو تھوڑی اور زیادہ دیا تو زیادہ'' (2) اوراسی کے مثل امام احمد و ہزار وطبر انی نے ثوبان

خلینٹ 🕩 🚽 طبرانی کبیر میں اورابن خزیمہ اپنی سیح میں اور تریذی اور بیہ بی حبشی بن جنادہ رمنی اللہ تعالی عنہ ہے راوی ، کہ

رسول الله صلى الله تعالى عليه وبلم نے فر مايا: '' جو شخص بغير حاجت سوال كرتا ہے، گويا و ہ انگارا كھا تا ہے۔'' (3)

خلیئٹ 🕕 🂝 👚 مسلم وابن ماجه ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا:

''جو مال بڑھانے کے لیے سوال کرتا ہے ، وہ انگارے کا سوال کرتا ہے تو جا ہے زیادہ مائکے یا کم کا سوال کرے'' (4)

خَلِيْثُ ١٦﴾ ابوداودوابن حبان وابن خزیمه تهل بن حینه ظلیه رضیالله تعالی عنه سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا:'' جو مخص سوال کرے اور اس کے پاس اتناہے جو اُسے بے پر داہ کرے، وہ آگ کی زیادتی حیا ہتا ہے۔لوگوں نے ا عرض کی، وہ کیا مقدارہے،جس کے ہوتے سوال جائز نہیں؟ فر مایا صبح وشام کا کھانا۔'' (5)

خلين الله عند المونين عمر فاروق اعظم رضى الله تعلى المونين عمر فاروق اعظم رضى الله تعالى عند سے راوى ، رسول الله صلى الله تعالى عليه وملم نے فر مایا:'' جو تخص لوگوں سے سوال کرے،اس لیے کہا ہے مال کو بڑھائے تو وہ جہنم کا گرم پھر ہے،اب اسے اختیار ہے، جا ہے تھوڑ امائگے ہازیادہ طلب کریے'' (6)

خل یئٹ ۱۴ و ۱۵ 🎏 امام احمد وابو یعلیٰ و ہزار نے عبدالرحمٰن بن عوف اور طبر انی نے صغیر میں اُم المونین ام سلمہ رضی الله تعالیٰ عبدا سے روایت کی ، کررسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: ' صدقہ سے مال کم نہیں ہوتا اور حق معاف کرنے سے قیامت کے دن اللَّه تعالى بنده كى عزت برُّهائے گااور بنده سوال كا دروازه نه كھولے گا، مَّراللّٰد تعالىٰ اس برفتا جي كا دروازه كھولے گا۔'' (7)

- "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث عمران بن حصين، الحديث: ١٩٨٤٢، ج٧، ص١٩٣٠.
 - 2 "مسند البزار"، مسند عمران بن حصين، الحديث: ٧٧٦، ج٩، ص٤٩.
 - 3 "المعجم الكبير"، باب الحاء، الحديث: ٦ ، ٣٥، ج٤، ص ١٥.
 - ◘ "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب كراهة المسألة للناس، الحديث: ١٠٤١، ص١١٥.
- سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب من يعطيٰ من الصدقة وحدالغني، الحديث: ١٦٢٩، ج٢، ص١٦٤.
- الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الزكاة، باب المسألة... إلخ، الحديث: ٣٣٨٢، ج٥، ص١٦٦.
 - . ١٦٧٤ : ١٦٧٤ : ١٠٠٠ المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث عبدالرحمن بن عوف، الحديث: ١٦٧٤، ج١، ص ١٤٠.

🕏 🕹 ین ۱۱ 🎏 🔻 مسلم وابوداود ونسائی قبیصه بن مخارق رضی الله تعالی عنه سے راوی ، کہتے ہیں : مجھ پر ایک مرتبه تا وان لازم

آیا۔ میں نے حضورا قدس صلی اللہ تعالی علیہ ہم کی خدمت میں حاضر ہوکر سوال کیا، فرمایا: ' تھہر و ہمارے یاس صدقہ کا مال آئے گا تو تمھارے لیے تکم فرمائیں گے، پھر فرمایا: اے قبیصہ! سوال حلال نہیں، مگرتین باتوں میں کسی نے ضانت کی ہو(لیتن کسی قوم کی

طرف ہے دیت کا ضامن ہوایا آپس کی جنگ میں صلح کرائی اوراس پرکسی مال کا ضامن ہوا) تو اسے سوال حلال ہے، یہاں تک

کہ وہ مقداریائے پھر بازر ہے یاکسی شخص برآفت آئی کہ اُس کے مال کوتباہ کردیا تواسے سوال حلال ہے، یہاں تک کہ بسراوقات کے لیے یا جائے یا کسی کوفاقہ پہنچا اوراُس کی قوم کے تین عقلمند شخص گواہی دیں (1) کہ فلاں کوفاقہ پہنچاہے تو اسے سوال حلال ہے،

یہاں تک کہ بسراوقات کے لیے حاصل کر لے اور ان تین باتوں کے سوااے قبیصہ سوال کرنا حرام ہے کہ سوال کرنے والاحرام

کھاتاہے۔'' (2)

🕹 یئٹ 🖊 و ۱۸ 🎺 🗀 امام بخاری وابن ماجہ زبیر بن عوّام رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

فرمایا:'' کوئی شخص رسی لے کر جائے اورا بنی پیٹھ پرکٹڑیوں کا گٹھا لا کر بیچے اور سوال کی ذلت سے اللہ تعالیٰ اس کے چہرہ کو بیجائے یہاس سے بہتر ہے کہلوگوں سے سوال کرے کہلوگ اُسے دیں یا نہ دیں۔'' ⁽³⁾ اسی کے مثل امام بخاری ومسلم وامام مالک و تر مذی ونسائی نے ابو ہر رہ درضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔

ځ 🚅 😉 🥕 🚽 امام ما لک و بخاري ومسلم وا بو داو د ونسا ئې عبدالله . بن عمر رضي املا تعالى عنها 🚅 راوي ، رسول الله صلى امله تعالى عليه وسلم منبر يرتشريف فرماته، صدقه كااورسوال سے بحيخ كاذكر فرمارہے تھے، ييفرمايا: كە''اوپروالا ہاتھ، ينچے والے ہاتھ سے بہتر ہے، اويروالا ماتھ خرج كرنے والا ہے اور ينچے والا ما تكنے والا ـ'' (4)

ځ لینٹ 👣 🦰 امام مالک و بخاری ومسلم وابو داو د وتر مذی ونسائی ابوسعید خدری رضی الله تعالی عند سے راوی ، که انصار میں سے سیجھ لوگوں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) ہے۔ سوال کیا، حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) نے عطافر مایا، پھر ما نگا حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) نے عطافر مایا، پھر مانگاحضور (صلی الله تعالیٰ علیه وہلم) نے عطافر مایا، یہاں تک وہ مال جوحضور (صلی الله تعالیٰ علیه وہلم) کے پاس تھاختم ہو گیا پھر فر مایا: ' جو کچھ میرے یاس مال ہوگا، اُسے میں تم سے اُٹھا نہ رکھوں گا اور جوسوال سے بچنا چاہے گا،اللہ تعالیٰ اُسے بچائے گا اور

🕕 تین شخصول کی گواہی جمہور کے نز دیک بطوراسخباب ہے اور پیچکم اس شخص کے لیے ہے جس کا مالدار ہونا معلوم ومشہور ہے تو بغیر گواہ اس کا قول مسلمٌ نہیں اور جس کا مالدار ہونامعلوم نہ ہوتو فقط اس کا کہددینا کافی ہے۔۱۳منہ

- 2 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب من تحل له المسألة، الحديث: ٤٤ . ١ ، ص ٩١ ٥ .
- 3 "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب الاستعفاف عن المسألة، الحديث: ١٤٧١، ج١، ص٤٩٧.
- "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان ان اليد العليا خيرٌ من اليد السفلي... إلخ، الحديث: ١٠٣٣، ص١٥٥.

۔ چنی بنناچاہے گا،اللہ (عزومل) اُسے غنی کردے گا اور جوصبر کرنا چاہے گا،اللہ تعالیٰ اُسے صبر دے گا اور صبر سے بڑھ کر اوراس سے

زياده وسيع عطائسي کونه کې '' (1)

خليث الله حضرت امير المونين فاروقِ اعظم عمر رضى الله تعالى عنه نے فر مایا: كه لا لچ محتاجی ہے اور نا أميدى تو تگرى۔

آدمی جب کسی چیز سے نامید ہوجا تا ہے تواس کی پرواہ ہیں رہتی۔ (2)

<u> خلرینٹ ۲۲ پ</u> امام بخاری ومسلم فاروقِ اعظم رضی الله تعالی عنه سے راوی ، فرماتے ہیں: که حضور اقد س صلی الله تعالی علیه وسلم

مجھے عطا فرماتے تو میں عرض کرتا، کسی ایسے کو دیجیے جو مجھ سے زیادہ حاجت مند ہو، ارشاد فرمایا:''اسے لواور اپنا کرلواور خیرات کردو، جو مال تمھارے پاس بے طبع اور بے مانکے آجائے،اسے لے لواور جوندآئے تو اُس کے بیجھے اپنے نفس کونہ ڈالو'' (3)

خیلین ۲۳ ﷺ ابوداودانس رضی الله تعالی عند سے راوی ، کدایک انصاری نے حاضرِ خدمت اقدس ہوکر سوال کیا ، ارشاد

فرمایا: ''کیاتمهارے گھر میں کچھ نہیں ہے؟ عرض کی ، ہے تو ، ایک ٹاٹ ہے جس کا ایک حصہ ہم اوڑ ھے ہیں اورا یک حصہ بچھاتے ہیں اورا یک کٹری کا بیالہ ہے جس میں ہم پانی پیتے ہیں ، ارشا وفر مایا: میر سے حضور دونوں چیز وں کو حاضر کرو ، وہ حاضر لائے ، حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے اپنے وستِ مبارک میں لے کر ارشا وفر مایا: اُنھیں کون خرید تا ہے؟ ایک صاحب نے عرض کی ، ایک در ہم کے عوض میں خرید تا ہوں ، ارشا وفر مایا: ایک در ہم سے زیادہ کون ویتا ہے؟ دویا تین بار فر مایا، کسی اور صاحب نے عرض کی ، میں دو در ہم پر لیتا ہوں ، ارشا وفر مایا: ایک در ہم لے لیے اور انصاری کو دونوں در ہم دے کر ارشا وفر مایا: ایک کا غلّہ فرید کر گھر ڈال آواور ایک کی کلہاڑی خرید کرمیر ہے پاس لاؤ ، وہ حاضر لائے ، حضور (صلی اللہ تعالی علیہ ہم) نے اپنے وستِ مبارک خرید کر گھر ڈال آواور آب کی کلہاڑی خرید کرمیر ہے پاس لاؤ ، وہ حاضر لائے ، حضور (سلی اللہ تعالی علیہ ہم) نے اپنے وستِ مبارک ہوئا وہ گئے ، کٹریاں کا کٹریاں کا گواور پنجوا ور پندرہ دن تک محصیں ندد کھوں (لیتی استے دنوں تک یہاں حاضر نہ ہونا) وہ گئے ،کٹریاں کا کٹر جو کہ اپنی کا گواور پنجوا وہ گئے پاس دس در ہم تھے ،چند در ہم کا کپڑا خریدا اور چند کا غلّہ رست نہیں ،گرتین شخص کے لیے ،ایسی مجتاجی والے کے لیے جواسے زمین پر لٹا دے یا تاوان والے کے لیے جورسوا کر دے در سے نہیں ،گرتین شخص کے کے لیے جواسے زمین پر لٹا دے یا تاوان والے کے لیے جورسوا کر دے یا خون والے (دیت) کے لیے جواسے کیف بہنجائے ۔'' (4)

السسس "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب التعفف والصبر... إلخ، الحديث: ١٠٥٣، ص٢٥.

^{2 &}quot;حلية الأولياء و طبقات الأصفياء"، رقم: ٥٦٥، ج١، ص٨٧.

^{3 &}quot;صحيح البخاري"، كتاب الأحكام، باب رزق الحكام والعاملين عليها، الحديث: ٢١٦٤، ج٤، ص٢٦٦.

سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب ماتحوز فيه المسألة، الحديث: ١٦٤١، ج٢، ص١٦٨.

🐉 😹 بن ۲۵ و۲۵ 🌯 ابو داود وتر مذی با فادهٔ تشجیح وتحسین و حاکم با فادهٔ تشجیح عبدالله بن مسعود رضی الله تعالی عنه سے راوی ،

رسول الله صلى الله تعالى عليه بلم نے فرمایا: '' جسے فاقعہ پہنچااوراً س نے لوگوں کے سامنے بیان کیا تو اُس کا فاقعہ بند نہ کیا جائے گا اورا گر اس نے الله تعالی سے عرض کی تو الله عزوجل جلداُ سے بے نیاز کردے گا ،خواہ جلد موت دے دے یا جلد مالدار کردے۔'' (1) اور طبرانی کی روایت ابو ہر برہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ہے کہ'' حضور (صلی اللہ تعالی علیہ بہم) نے فرمایا: ''جو بھوکایا مختاج ہوا اور اس نے آ دمیوں

سے چھپایا اور اللہ تعالی کے حضور عرض کی تو اللہ تعالی پر حق ہے کہ ایک سال کی حلال روزی اس پر کشادہ فرمائے۔'' (2)

بعض سائل کہ دیا کرتے ہیں کہ اللہ (عزبہ مل) کے لیے دو، خدا کے واسطے دو، حالا نکہ اس کی بہت شخت ممانعت آئی ہے۔
ایک حدیث میں اُسے ملعون فرمایا گیا ہے۔ اور ایک حدیث میں برترین خلائق اور اگر کسی نے اس طرح سوال کیا تو جب تک بُری بات کا سوال نہ ہو یا خود سوال بُر انہ ہو (جیسے مالدار یا ایسے شخص کا بھیک مانگنا جو قوی تندرست کمانے پر قادر ہو) اور یہ سوال کو بلاد دقت پورا کرسکتا ہے تو پورا کرنا ہی ادب ہے کہ کہیں بروئے ظاہر حدیث یہ بھی اُسی وعید کا ستحق نہ ہو (3) وہاں اگر سائل مُت عنت ہو (4) تو نہ دے۔ نیزیہ بھی لحاظ رہے کہ مجد میں سوال نہ کرے، خصوصاً جُمعۃ کے دن لوگوں کی گردنیں بھلانگ سائل مُت عنت ہو (6) مولی علی کرم اللہ وجہ الکریم نے ایک شخص کوعرفہ کے دن عرفات میں سوال کرتے دیکھا، اُسے وُر سے لگائے اور کفارہ ہو۔'' (5) مولی علی کرم اللہ وجہ الکریم نے ایک شخص کوعرفہ کے دن عرفات میں سوال کرتے دیکھا، اُسے وُر سے لگائے اور فرمایا: کہ اس دن میں اور الیسی جگہ غیر خدا سے سوال کرتا ہے۔ (6)

- ❶ "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث: ١٦٤٥، ج٢، ص١٧٠.
 - 2 "المعجم الصغير "للطبراني ، الحديث: ٢١٤، ج١، ص١٤١.
- طبرانی مجم کبیر میں ابومویٰ اشعری رضی الله تعالیٰ عنہ سے راوی که رسول الله صلی تعالیٰ علیه وسلم فر ماتے ہیں: پا

((ملعون من سال بوجه اللَّه و ملعون من سئِل بوجه اللَّه ثم منع سائله مالم يسال هجرا)).

("الترغيب و الترهيب"، كتاب الصدقات، ترهيب السائل أن يسأل بوجه الله غير الجنة... إلخ، الحديث: ١، ج١، ص ٣٤٠). تجنيس ناصري پهرتا تارخانيه پهر بند به يس به:

اذا قبال السبائل بحق الله تعالى او بحق محمد صلى الله تعالى عليه وسلم ان تعطيني كذا لا يحب عليه في الحكم والاحسن في المروءة ان يعطيه. وعن ابن المبارك قال يعجبني اذا سأل سائل بوجه الله تعالى ان لا يعطي - ١٢مم والاحسن في المروءة ان يعطيه - ١٢مم (انظر: "ردالمحتار"، كتاب الهبة، مطلب في معنى التمليك، ج١٢، ص ١٤٩٠)

- (انظر: "ر دالمحتار"، ختاب الـ س.... لینی سوال کرنے والاخوداین ذکّت کے دریے ہولینی پیشہور بھکاری ہو۔
- "" (دالمحتار"، كتاب الهبة، مطلب في معنى التمليك، ج١١، ص ٦٤٩.
- €..... "مشكاة المصابيح"، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث: ١٨٥٥، ج١، ص١٥٥.

ان چندا حادیث کے دیکھنے سے معلوم ہوا ہوگا کہ بھیک مانگنا بہت ذلّت کی بات ہے بغیر ضرورت سوال نہ کرے اور حالت ضرورت میں بھی اُن امور کا لحاظ رکھے، جن ہے ممانعت وارد ہے اور سوال کی اگر حاجت ہی پڑ جائے تو مبالغہ ہرگز نہ کرے کہ بے لیے پیچھانہ چھوڑے کہاس کی بھی ممانعت آئی ہے۔

صدقات نفل کا بیان

الله تعالیٰ کی راہ میں دینا نہایت اچھا کام ہے، مال ہےتم کوفائدہ نہ پہنچا تو تمھارے کیا کام آیا اوراینے کام کاوہی ہے۔ جو کھا پہن لیایا آخرت کے لیے خرج کیا، نہ وہ کہ جمع کیا اور دوسروں کے لیے چھوڑ گئے ۔اس کے فضائل میں چند حدیثیں سُنیے اور ان برغمل کیجیے،اللہ تعالیٰ تو فیق دینے والا ہے۔

خلین اللہ تعالیٰ علیہ و کم ملم شریف میں ابو ہر رہ و منی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وکلم فر ماتے ہیں: '' بندہ کہتا ہے، میرامال ہے،میرامال ہے اور اُسے تواس کے مال سے تین ہی قتم کا فائدہ ہے، جوکھا کرفنا کر دیا، یا پہن کر پُرانا کر دیا، یا عطا کر کے آخرت کے لیے جمع کیا اوراُس کے سواجانے والا ہے کہ اوروں کے لیے چھوڑ جائے گا۔'' (1)

خلیئٹ \Upsilon 🦟 🥏 بخاری ونسائی این مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ،حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فر ماتے ہیں:'' تتم میں کون ہے کہ اُسے اپنے وارث کا مال، اپنے مال سے زیادہ مجبوب ہے؟ صحابہ نے عرض کی ، یارسول الله (صلی الله تعالی علیه وکلم)! ہم میں کوئی ایپانہیں، جسے اپنامال زیادہ محبوب نہ ہونے مایا: اپنامال تووہ ہے، جوآ گےروانہ کر چکااور جو پیچھے جھوڑ گیا، وہ وارث کامال

خلینٹ 👚 🚽 امام بخاری ابو ہر رہ درضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فر ماتے ہیں :''اگر میرے یاس اُحد برابرسونا ہوتو مجھے یہی پیندآ تاہے کہ تین راتیں نہ گزرنے یا کیں اوراُس میں کامیرے یاس کچھرہ جائے، ہاں اگرمجھ پر دَین ہوتواُس کے لیے بچھرکھلوں گا۔'' (3)

خلینٹ سم و ۵ کی صحیح مسلم میں انھیں سے مروی، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ علم نے فر مایا: ''کوئی دن ایسانہیں کہ میج ہوتی ہے،مگر دوفر شنتے نازل ہوتے ہیں اوران میں ایک کہتا ہے، اےاللہ (عز جمل)! خرچ کرنے والے کو بدلیہ دے اور دوسرا

- ❶ "صحيح مسلم"، كتاب الزهد والرقائق، باب الدنيا سجن للمؤمن وجنة للكافر، الحديث: ٩٥٩، ص١٥٨٢.
 - 2 "صحيح البخاري"، كتاب الرقائق، باب ماقدم من ماله فهو له، الحديث: ٢٤٤٢، ج٤، ص ٢٣٠.
- 3 "صحيح البخاري"، كتاب الرقائق، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم ما يسرني أن عندى مثل احد هذا ذهبا، الحديث: ٥٤٤٥، ج٤، ص٢٣٢.

رضى الله تعالى عنه سے روایت كى ۔

خلیث کی صحیحین میں ہے کہ حضورا قدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے اساء رضی اللہ تعالی عنہا سے فر مایا: ' خرج کراورشار نہ کر

كەللەتغالى شاركر كے دے گااور بندنە كركەاللەتغالى بھى تچھ ير بند كردے گا۔ بچھ دے جو تجھے استطاعت ہو۔'' (2)

ځ 🚅 کیونٹ 🗸 💝 💎 نیز صحیحین میں ابو ہر بریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وَہِلم فرماتے ہیں : کہ اللہ تعالیٰ

نے فرمایا: اے ابن آوم! خرچ کر، میں تجھ برخرچ کروں گا۔'' (3)

خَلِيْتُ 🔨 🥕 💝 مسلم وسنن تزمذي ميں ابوا مامه رضي الله تعالی عنه سے مروی ، رسول الله صلی الله تعالی عابيه وہلم نے فرمایا: ''اے ابن آ وم! نیچے ہوئے کاخرچ کرنا، تیرے لیے بہتر ہے اوراُس کا روکنا، تیرے لیے بُراہے اور بقدر ضرورت رو کنے پر ملامت نہیں اوراُن ہے شروع کر جو تیری پرورش میں ہیں۔''(4)

خلینٹ و 🔑 - صحیحین میں ابو ہر بر ہورضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ،حضورِ اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فر مایا: '' بخیل اور صدقہ دینے والے کی مثال ان دوشخصوں کی ہے جولو ہے کی زرہ پہنے ہوئے ہیں، جن کے ہاتھ سینے اور گلے سے جکڑے ہوئے ہیں تو صدقہ دینے والے نے جب صدقہ دیاوہ زرہ کشادہ ہوگئ اور بخیل جب صدقہ دینے کاارادہ کرتا ہے، ہرکڑی اپنی جگہ کو پکڑ لیتی ہے وه کشاده کرنا بھی جا ہتا ہے تو کشادہ نہیں ہوتی ۔' (5)

خلینٹ 🕽 💝 مسلم میں جاہر رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے ہیں: ' دظلم سے بچو کے ظلم قیامت کے دن تاریکیاں ہے اور بخل سے بچو کہ بخل نے اگلوں کو ہلاک کیا، اسی بخل نے اُٹھیں خون بہانے اور حرام کو حلال کرنے برآ ماده کیا۔'' ⁽⁶⁾

نیزاُسی میں ابو ہر رہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، ایک شخص نے عرض کی یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)

- ❶ "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب في المنفق والممسك، الحديث: ١٠١٠ ص٤٠٥.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب الصدقة فيما استطاع، الحديث: ٤٣٤ ١، ج١، ص٤٨٣. كتاب الهبة، باب هبة المرأة لغير زوجها... إلخ، الحديث: ٢٥٩١، ص٢٠٤.
- 3 "صحيح البخاري"، كتاب النفقات، باب فضل النفقة على الأهل، الحديث: ٥٣٥٢، ج٣، ص١١٥.
- ◘..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان أن اليد العليا خير من اليد السفلي... إلخ، الحديث: ١٠٣٦، ص١٦٥.
 - 5..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب مثل المنفق والبخيل، ٧٦ـ (١٠٢١)، ص٠١٥.
 - 6 "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلة والأدب، باب تحريم الظلم، الحديث: ٢٥٧٨، ص١٣٩٤.

🥌 کس صدقه کا زیاده اجر ہے؟ فرمایا: اس کا کہ صحت کی حالت میں ہواور لا لیج ہو، محتاجی کا ڈر ہواورتو نگری کی آرز و، پینہیں کہ

حچوڑے رہےاور جب جان گلے کوآ جائے تو کہےا تنافلاں کواورا تنافلاں کودینااور بیاتو فلاں کا ہو چکالیعنی وارث کا'' (1)

خلینے 👣 💝 🗝 صحیحین میں ابوذ ررضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہتے ہیں میں حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کی خدمت میں حاضر

ہوا اور حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کعبہ معظمہ کے سامی**ہ میں تشریف فرما نتھ**، مجھے دیکھ کر فرمایا: ' دفتھم ہےرب کعبہ کی! وہ ٹوٹے میں ہیں۔ میں نے عرض کی ، میرے باپ ماں حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) پر قربان وہ کون لوگ ہیں؟ فرمایا: زیادہ مال والے، مگر جواس

طرح اوراس طرح اوراس طرح کرےآ گے پیچھے دہنے بائیں یعنی ہرموقع برخرج کرےاورا پسےلوگ بہت کم ہیں۔' (2)

خلیث الله تعالی علیه و میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، که رسول الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: ' مخی

قریب ہے اللہ (عزوجل) سے، قریب ہے جنت سے، قریب ہے آ دمیوں سے، دُور ہے جہنم سے اور بخیل دور ہے اللہ (عزوجل) سے، دور ہے جنت سے، دور ہے آ دمیوں سے، قریب ہے جہنم سے اور جاہل سخی اللہ (عزد بل) کے نز دیک زیادہ پیارا ہے،

خل بنث 🗥 🦫 سُنن ابوداود میں ابوسعیدرض الله تعالیءنه سے مروی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: '' آ دمی کا اینی

زندگی (یعن صحت) میں ایک درم صدقه کرنا، مرتے وقت کے سودرہم صدقه کرنے ہے زیادہ بہتر ہے۔ ' (4)

خلینے 🗗 🚽 🗀 امام احمد ونسائی و دارمی وتز مذی ابودرداء رضی الله تعالی عنه سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا:

'' جو محض مرتے وقت صدقہ دیتا یا آزاد کرتا ہے، اُس کی مثال اُس شخص کی ہے کہ جب آسودہ ہولیا تو ہدیہ کرتا ہے۔'' (5)

خلینٹ 🔰 💝 صحیح مسلم شریف میں ابو ہر رہے وضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فر ماتے ہیں : ''ایک شخص جنگل میں تھا،اُس نے اَبر میں ایک آوازسُنی کہ فلاں کے باغ کوسیراب کر، وہ اَبرایک کنارہ کو ہو گیااوراُس نے پانی سنگستان میں گرایا اور ایک نالی نے وہ سارا پانی لے لیا، وہ مخض پانی کے پیچھے ہولیا، ایک شخص کو دیکھا کہ اپنے باغ میں کھڑا ہوا

کھر پیاسے یانی پھیررہاہے۔اُس نے کہا،اےاللہ(عزوجل) کے بندے! تیرا کیا نام ہے؟ اُس نے کہا،فلال نام،وہی نام جو

• • • • صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان ان افضل الصدقة صدقة الصحيح الشحيح، الحديث: ١٠٣٢، ص٥١٥.

2 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب تغليظ عقوبة من لايؤدى الزكاة، الحديث: ٩٩٠ م ٥٩٥.

3 "جامع الترمذي"، أبواب البر والصلة، باب ماجاء في السخاء، الحديث: ١٩٦٨، ج٣، ص٣٨٧.

4..... "سنن أبي داود"، كتاب الوصايا، باب ماجاء في كراهية الإضرار في الوصية، الحديث: ٢٨٦٦، ج٣، ص١٥٥.

سنن الدارمي"، كتاب الوصايا، باب من أحب الوصية ومن كره، الحديث: ٣٢٢٦، ج٢، ص٥٠٥.

و "جامع الترمذي"، ابواب الوصايا... الخ، باب ماجاء في الرجل يتصدق ... الخ، الحديث: ٢١٢٣، ج٤، ص٤٤.

🥈 اُس نے اَبر میں سےسُنا۔اُس نے کہا،اےاللہ(عزوجل) کے بندے! تُو میرانام کیوں بو چھتاہے؟ اُس نے کہا،میں نے اُس اَبر میں سے جس کا یہ یانی ہے،ایک آواز سُنی کہوہ تیرانام لے کر کہتا ہے، فلاں کے باغ کوسیراب کر، تو تُو کیا کرتا ہے(کہ تیرانام کے کریانی بھیجاجا تاہے)؟ جواب دیا کہ جو کچھ پیدا ہوتا اس میں ہے ایک تہائی خیرات کرتا ہوں اور ایک تہائی میں اور میرے بال يح كهات بي اوراك بهائى بونے كے ليے ركھتا موں " (1)

خلایث کا 💝 🗢 صحیحیین میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مر وی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فر ماتے ہیں:'' بنی اسرائیل میں تین شخص تھے۔ایک برص والا ، دوسرا گنجا، تیسراا ندھا۔اللّٰہ عزوجل نے ان کا امتحان لینا چاہا،ان کے پاس ایک فرشتہ بھیجا، وہ فرشتہ برص والے کے باس آیا۔اس سے یو جھا، تخھے کیا چیز زیادہ محبوب ہے؟ اُس نے کہا:اجھارنگ اوراجھا چیڑ ااور یہ بات حاتی رہے،جس سےلوگ گھن کرتے ہیں۔فرشتہ نے اس پر ہاتھ پھیرا، وہ گھن کی چیز جاتی رہی اورا چھارنگ اورا چھی کھال اسے دی گئی، فرشتے نے کہا: مجھے کونسا مال زیادہ محبوب ہے؟ اُس نے اونٹ کہا یا گائے (راوی کا شک ہے، مگر برص والے اور گنجے میں سے ایک نے اونٹ کہا، دوسرے نے گائے)۔اُسے دی مہینے کی حاملہ انٹنی دی اور کہا کہ اللہ تعالیٰ تیرے لیے اس میں

پھر گنج کے باس آیا، اُس سے کہا: تجھے کیا شے زیادہ محبوب ہے؟ اُس نے کہا: خوبصورت بال اور بیجاتا رہے، جس ہےلوگ مجھ ہے گھن کرتے ہیں۔فرشتے نے اس پر ہاتھ پھیرا، وہ بات جاتی رہی اورخوبصورت بال اُسے دیے گئے،اُس ہے کہا: مجھے کون سا مال محبوب ہے؟ اُس نے گائے بتائی۔ایک گامجھن گائے اُسے دی گئی اور کہا اللہ تعالیٰ تیرے لیےاس میں

پھراندھے کے پاس آیا اور کہا: تجھے کیا چیز زیادہ محبوب ہے؟ اُس نے کہا: یہ کہاللّٰد تعالیٰ میری نگاہ واپس دے کہ میں لوگوں کودیکھوں ۔فرشتہ نے ماتھ پھیرا،اللہ تعالیٰ نے اُس کی نگاہ واپس دی ۔فرشتہ نے یو جھا، مجھے کونسا مال زیادہ پیند ہے؟ اُس نے کہا: بکری۔اُسے ایک گابھن بکری دی۔اب اوٹٹن اور گائے اور بکری سب کے بیچے ہوئے ،ایک کے لیے اونٹوں سے جنگل کھر گیا۔ دوسرے کے لیے گائے سے، تیسرے کے لیے بکر یوں سے۔

پھروہ فرشتہ برص والے کے پاس اُس کی صورت اور ہیات میں ہوکرآیا (یعنی برص والا بن کر) اور کہا: میں مردمسکین ہوں،میرے سفر میں وسائل منقطع ہو گئے، پہنچنے کی صورت میرے لیے آج نظرنہیں آتی ،گمراللّٰد (عزوجل) کی مدد سے پھرتیری مدد ہے، میں اُس کے واسطے سے جس نے تحقیح خوبصورت رنگ اوراجیما چمڑااور مال دیا ہے۔ ایک اونٹ کا سوال کرتا ہوں، جس سے

1 "صحيح مسلم"، كتاب الزهد و الرقائق، باب فضل الانفاق على المساكين وابن السبيل، الحديث: ٢٩٨٤، ص٩٦٠.

گ میں سفر میں مقصد تک پہنچ جاؤں۔اُس نے جواب دیا:حقوق بہت ہیں۔فرشتے نے کہا: گویا میں تجھے پیچانتا ہوں، کیا تو کوڑھی نہ تھا كەلوگ تچھ ہے گھن كرتے تھے، فقير نہ تھا۔ پھر اللہ تعالیٰ نے تختے مال دیا، اُس نے كہا: میں تواس مال كانسلاً بعدنسلِ وارث كيا گیاموں _فرشتہ نے کہا:اگر تو حجوثا ہے توالڈرتعالی تجھے ویساہی کرد ہےجیسا ٹو تھا۔

پھر گنج کے پاس اُسی کی صورت بن کرآیا، اُس ہے بھی وہی کہا: اُس نے بھی ویباہی جواب دیا۔ فرشتے نے کہا: اگر تو حھوٹا ہے تواللہ تعالیٰ تھے ویساہی کردے،جیسا ٹو تھا۔

پھراندھے کے پاس اس کی صورت وہیائت بن کرآیا اور کہا: میں مسکین شخص اور مسافر ہوں ، میرے سفر میں وسائل منقطع ہوگئے، آج پہنچنے کی صورت نہیں ،گراللہ (عزوجل) کی مدد سے پھر تیری مدد سے میں اس کے وسیلہ سے جس نے تخیجے نگاہ واپس دی، ایک بکری کا سوال کرتا ہوں جس کی وجہ ہے میں اینے سفر میں مقصد تک پہنچ جاؤں ۔اُس نے کہا: میں اندھا تھا، اللہ تعالی نے مجھے آئکھیں دیں تُو جو چاہے لے اور جتنا چاہے چھوڑ دے۔خداکی قسم!الله(عز جل) کے لیے تُو جو کچھ لے گا، میں تجھ پرمشقت نہ ڈالوں گا فرشتے نے کہا: تُو اپنامال اپنے قبضہ میں رکھ، بات بیرے کہتم تینوں شخصوں کاامتحان تھا، تیرے لیے اللہ (عز وجل) کی رضاہےاوران دونوں پر ناراضی ۔'' (1)

خلایث (۱۸ 🔑 🔻 امام احمد وابوداود وتریزی ام بجید رضی الله تعالیٰ عنها سے راوی ، کہتی ہیں : میں نے عرض کی ، بارسول الله (صلی الله تعالی علیه وسلم)!مسکین دروازه بر کھڑا ہوتا ہے اور مجھے شرم آتی ہے کہ گھر میں کچھنہیں ہوتا کہ اُسے دوں ،ارشادفر مایا:'' اُسے کچھ و مدے،اگر چہ کھر جلا ہوا۔' (2)

خلایث (19 ﷺ 🗕 بیم قی نے ولائل النبو ۃ میں روایت کی ، کہ ام المومنین امسلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی خدمت میں گوشت کا گلڑا مدیہ میں آیا اورحضورا قدس صلی اللہ تعالی علیہ وہلم کو گوشت پیند تھا۔انہوں نے خاومہ سے کہا: اسے گھر میں رکھ دے،شاپدحضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) تناول فر مائنیں ، اُس نے طاق میں رکھ دیا۔ایک سائل آ کر درواز ہ پر کھڑ ا ہوا اور کہا صدقہ کرو ، اللہ تعالیٰ تم میں برکت وے گا۔لوگوں نے کہا،اللہ (عزوجل) تجھ میں برکت وے۔ (3) سائل چلا گیا،حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) تشریف لائے اور فرمایا: تمھارے یہاں کچھ کھانے کی چیز ہے؟ اُم المونین نے عرض کی ، ہاں اور خادمہ سے فرمایا: جاوہ گوشت لے آ۔

- "صحيح مسلم"، كتاب الزهد... الخ، باب الدنيا سجن للمؤمن... إلخ، الحديث: ٢٩٦٤، ص١٥٨٤. و "صحيح البخاري"، كتاب احاديث الأنبياء، باب حديث أبرص وأعمى وأقرع في بني إسرائيل، الحديث: ٣٤٦٤،
 - 2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أم بحيد، الحديث: ٢٧٢١٨، ج١٠ ص٣٢٨.
 - اسس سائل كودا پس كرنا بوتا تويد لفظ بولتے ١٢ منه

إِبهَارِشْرِيْعَتْ ثِصَّةَ ثَمُّ (5) 🗨 🥌 951 🥏 وہ گئی تو طاق میں ایک پھر کا ایک ٹکڑا پایا۔حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے ارشاد فر مایا:'' چونکہ تم نے سائل کو نہ دیا، الہذا وہ گوشت

خَلِيَثُ ٢٠﴾ تيمق شعب الايمان ميں ابو ہر برہ رض الله تعالى عنه سے راوى ، كه رسول الله صلى الله تعالى عليه وملم نے فر مایا:

"سخاوت جنت میں ایک درخت ہے، جو تنی ہے، اُس نے اُسکی ٹہنی پکڑلی ہے، وہ ٹہنی اُس کونہ چھوڑ ہے گی جب تک جنت میں داخل نه کر لے اور بخل جہنم میں ایک درخت ہے، جو بنیل ہے، اُس نے اس کی ٹہنی بکڑلی ہے، وہ ٹہنی اُسے جہنم میں داخل کیے بغیر نہ چھوڑ ہےگی۔'' (2)

خلیئٹ (۲) 🐣 رزین نے علی رضی اللہ تعالی عند سے روایت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فرمایا: ''صدقہ میں جلدی كروكه بلا صدقه كونهيس بيلانگتي-" (3)

خلینٹ ۲۲ 💝 💎 صحیحین میں ابوموی اشعری رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: ''دہر مسلمان پرصدقہ ہے۔لوگوں نے عرض کی ،اگر نہ یائے؟ فرمایا: اپنے ہاتھ سے کام کرے، اپنے کونفع پہنچائے اورصدقہ بھی وے۔عرض کی ،اگراس کی استطاعت نہ ہویا نہ کرے؟ فرمایا: صاحبِ حاجت پریشان کی اعانت کرے۔عرض کی ،اگریہ بھی نہ کرے؟ فرمایا: نیکی کا تکم کرے۔عرض کی ،اگریپھی نہ کرے؟ فرمایا: شرہے بازرہے کہ یہی اُس کے لیےصدقہ ہے۔'' (4)

خلینٹ ۲۳ 💝 💎 صحیحین میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے ہیں:'' دوشخصوں میں عدل کرناصدقہ ہے،کسی کو جانور پر سوار ہونے میں مدودینا یا اُس کا اسباب اُٹھادیناصدقہ ہے اور اچھی بات صدقہ ہے اور جو

قدم نماز کی طرف چلے گاصدقہ ہے، راستہ سے اذیت کی چیز دور کرناصدقہ ہے۔ ' (5) ځ 🔑 💝 🔭 صحیح بخاری ومسلم میں انس رضی الله تعالی عنہ سے مروی ، رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فرماتے ہیں: ''جو

مسلمان پیڑلگائے یا کھیت بوئے ،اُس میں ہے کئ آ دمی پارپزیاچو پاپیے نے کھایا ،وہ سباُس کے لیےصد قد ہے۔'' (6)

● "دلائل النبوة" للبيهقي، باب ماجاء في اللحم الذي صا رحجرا... إلخ، ج٦، ص٠٠٣. و "مشكاة المصابيح"، كتاب الزكاة، باب الانفاق وكراهية الامساك، الحديث: ١٨٨٠، ج١، ص٢٦٥.

- 2 "شعب الإيمان"، باب في الجودو السخاء، الحديث: ١٠٨٧٧، ج٧، ص ٤٣٥.
- 3 "مشكاة المصابيح"، كتاب الزكاة، باب الانفاق و كراهية الأمساك، الحديث: ١٨٨٧، ج١، ص٢٢٥.
 - إلى البخاري"، كتاب الأدب، باب كل معروف صدقة، الحديث: ٢٠٢٢، ج٤، ص١٠٥.
 - اسس "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان أن اسم الصدقة يقع... إلخ، الحديث: ١٠٠٩، ص٤٠٥.
- 6 "صحيح مسلم"، كتاب المساقاة والمزارعة، باب فضل الغرس والزرع، الحديث: ٥٥٣، ص ٨٤٠.

😸 🕹 پیٹ ۲۵ و۲۷ 💨 سنن تر مذی میں ابوذ ررضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) فر ماتے ہیں :''اینے

بھائی کے سامنے مسکرانا بھی صدقہ ہے، نیک بات کا تھم کرنا بھی صدقہ ہے، بری بات مے منع کرنا صدقہ ہے، راہ بھولے ہوئے کو راہ بتاناصدقہ ہے، کمزورنگاہ والے کی مدد کرناصدقہ ہے، راستہ سے پھر، کا نٹا، بڈی دور کرناصدقہ ہے، اینے ڈول میں سے اپنے

بھائی کے ڈول میں پانی ڈال دیناصد قہ ہے۔'' (1) اس کے مثل امام احمد وتر مذی نے جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔

خل پیٹ ۲۷ 💝 💎 صحیحین میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ،حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتے ہیں: ''ایک

درخت کی شاخ بچ راستہ پرتھی ،ایک شخص گیا اور کہا: میں اُس کومسلمانوں کے راستہ سے دُور کر دوں گا کہ اُن کو ایز انہ دے، وہ جنت میں داخل کر دیا گیا۔'' ⁽²⁾

خليث ٢٨ 💨 ابوداود وتر مذي ابوسعيد رضي الله تعالى عنه ہے راوي ، كەرسول الله تعالى عليه وسلم فر ماتے ہيں: ''جومسلمان کسی مسلمان ننگےکوکیڑ ایپہنادے،اللہ تعالیٰ اُسے جنت کے سبز کیڑے پہنائے گااور جومسلمان کسی جھوکے مسلمان کوکھانا کھلائے، الله تعالیٰ اُسے جنت کے پھل کھلائے گا اور جومسلمان کسی پیاسے مسلمان کو پانی پلائے ،الله تعالیٰ اُسے رحیق مختوم (یعنی جنت کی شراب سربند) پلائے گا۔'' (3)

خلیئٹ ۲۹ 💨 🔻 امام احمد وتر مذی ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے راوی ، که رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم فرماتے ہیں : ''جومسلمان کسی مسلمان کو کیڑا پہنا دے تو جب تک اُس میں کا اُس شخص پرایک پیوند بھی رہے گا، پیاللہ تعالیٰ کی حفاظت میں رےگا۔" (4)

خلینٹ سواس 💨 🗕 ترمذی وابن حبان انس رضی الله تعالی عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتے ہیں : ''صدقه رب العزت کے غضب کو بچھا تا ہے اور بُری موت کو دفع کرتا ہے۔'' ⁽⁵⁾ نیز اس کے مثل ابو بکر صدیق و دیگر صحابہ کرام رضى الله تعالى عنهم يسيم روى _

تر مذى نے بافاد و تھے ام المونين صديقه رض الله تعالى عنها سے روايت كى ، لوگوں نے ايك بكرى ذرج كى خُلِيثُ ۳۲ الله تھی ،حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ بہلم)نے ارشا دفر مایا:''اس میں سے کیا باقی رہا؟ عرض کی ،سواشا نہ کے کیچھ باقی نہیں ،ارشا دفر مایا: شانہ

- ❶ "جامع الترمذي"، أبواب البر والصلة، باب ماجاء في صنائع المعروف، الحديث: ١٩٦٣، ج٣، ص٣٨٤.
- 🗨 "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلقو الأدب، باب فضل إزالة الأذى عن الطريق، الحديث: ١٢٨_(١٩١٤) (٢٦١٨) ص ١٤١١،١٤١.
 - € "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في فضل سقى الماء، الحديث: ١٦٨٢، ج٢، ص١٨٠.
 - 4 "جامع الترمذي"، أبواب صفة القيامة، باب ماجاء في ثواب من كسا مسلما، الحديث: ٢٩٤٢، ج٤، ص٢١٨.
 - 5 "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في فضل الصدقة، الحديث: ٢٦٤، ج٢، ص٢٤١.

ع بهرارشريعت خِطَنْهُ مَمْ (5)

🥈 کےسواسب باقی ہے۔'' (1)

ابوداود وترندی ونسائی وابن خزیمه وابن حیان ابوذ ررضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور اقد س صلی الله تعالی

علیہ وسلم فرماتے ہیں: '' تین شخصوں کو اللہ (عزبہ با مجبوب رکھتا ہے اور تین شخصوں کو مبغوض۔ جن کو اللہ (عزبہ با مجبوب رکھتا ہے، ان میں ایک ہیے ہے کہ ایک شخص کسی قوم کے پاس آیا اور اُن سے اللہ (عزبہ با) کے نام پر سوال کیا، اس قرابت کے واسطے سے سوال نہ کیا، جو سائل اور قوم کے درمیان ہے، انہوں نے نہ دیا، اُن میں سے ایک شخص چلا گیا اور سائل کو چھپا کر دیا کہ اس کو اللہ (عزبہ با) جا نتا ہے اور وہ شخص جس کو دیا اور کسی نے نہ جانا۔ اور ایک قوم رات بھر چلی، یہاں تک کہ جب اُنھیں نیند ہر چیز سے زیادہ پیاری ہوگئی، سب نے سررکھ دیے (یعنی سوگئے)، اُن میں سے ایک شخص کھڑا ہو کر دُعاکر نے لگا اور اللہ (عزبہ بال) کی آئیتیں پڑھنے لگا۔ اور ایک شخص لئے کہ نام بھی اور ایک شخص اینا سینہ آگے کر دیا، یہاں تک کہ قبل کیا جائے یا اور ایک شخص لئے رہنا میں اللہ (عزبہ بال) تا پہنا تھی کہ قبل کیا جائے یا فتح ہو۔ اور وہ تین جنھیں اللہ (عزبہ بط) نا پہند فرما تا ہے۔ ایک بوڑھا زنا کار، دوسرا فقیر متنکم، تیسرامال دار ظالم '' (2)

خلیف ۳۳ کردی نے انس رض اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ رسول الله صلی الله تعالی علیہ وہ ہم اتے ہیں: 'جب الله ا (عزوجل) نے زمین پیدافر مائی تو اُس نے ملنا شروع کیا تو پہاڑ پیدافر ماکراس پرنصب فر مادیاب زمین تھہرگئی ،فرشتوں کو پہاڑ کی تختی د کھے کرتیجب ہوا،عرض کی ،اے پروردگار! تیری مخلوق میں کوئی الی شے ہے کہ وہ پہاڑ سے زیادہ سخت ہے؟ فرمایا: ہاں ،او ہا۔ عرض کی ،اے رب (عزوجل)! لو ہے سے زیادہ سخت کوئی چیز ہے؟ فرمایا: ہاں ،آگ عرض کی ،آگ سے بھی زیادہ کوئی سخت ہے؟ فرمایا: ہاں، پانی عرض کی ، پانی سے بھی زیادہ سخت کچھ ہے؟ فرمایا: ہال ہُوا۔عرض کی ، ہُوا سے بھی زیادہ سخت کوئی شے ہے؟
فرمایا: ہال، بان آ دم کہ دہنے ہاتھ سے صدقہ کرتا ہے اورائسے بائیں ہاتھ سے چھیا تا ہے۔' (3)

خلین هم نیان برای نے ابوذ رض اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہ ملیان ''جومسلمان اللہ علی نے فرمایا: ''جومسلمان اللہ علی نے اللہ (عزومل) کی راہ میں جوڑا خرج کرے، جنت کے در بان اس کا استقبال کریں گے۔ ہر ایک اُسے اُس کی طرف بلائے گا، جو اُس کے پاس ہے۔ میں نے عرض کی ، اس کی کیا صورت ہے؟ فرمایا: ''اگر اُونٹ دے تو دو اُونٹ اور گائے ور کے تو دو گائیں '' (4)

السنة جامع الترمذي"، أبواب صفة القيامة... إلخ، ٣٣ باب، الحديث: ٢٤٧٨، ج٤، ص٢١٢.

^{2 &}quot;سنن النسائي"، كتاب الزكاة، باب ثواب من يعطى، الحديث: ٢٥٥٧، ص٢٢٠.

^{3 &}quot;جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب في حكمة خلق الجبال... إلخ، الحديث: ٣٣٨٠، ج٥، ص ٢٤٢.

^{4 &}quot;سنن النسائي"، كتاب الجهاد، باب فضل النفقة في سبيل الله تعالى، الحديث: ٣١٨٢، ص١٩٥.

954 • (5) بركارشريعت بْرَصْدَ تَجْمُ (5) و المعلق ا

، 👈 یئٹ 🗥 🐣 💎 امام احمد وتر مذی وابن ماجبه معافر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وئلم نے فر مایا: 💰

''صدقہ خطا کوایسے دور کرتاہے جیسے یانی آ گ کو بھا تاہے۔'' (1)

ځ لینٹ 🚾 🐂 🔻 امام احمر بعض صحاب رضی الله تعالیّینهم سے روایت کرتے ہیں کہ حضور (صلی الله تعالیٰ علیه وہلم) نے فر مایا: که

"مسلمان كاسابية يامت كون أس كاصدقه موكاء" (2)

خلینٹ 🗥 💝 جیجے بخاری میں ابو ہر رہ و حکیم بن حزام رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتے

ہیں: ' بہتر صدقہ وہ ہے کہ پُشے عنیٰ سے ہولیعنی اُس کے بعد تو نگری باقی رہے اور ان سے شروع کروجوتم ھاری عیال میں ہیں لعنی پہلے اُن کودو پھراوروں کو۔'' (3)

خلیث وس 💝 🔻 ابومسعود رضی الله تعالی عنه سے سیجین میں مروی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے فر مایا: ''مسلمان جو پچھ

اینابل پرخرچ کرتاہے،اگرثواب کے لیے ہے تو یہ بھی صدقہ ہے۔' (4)

خَلِيْثُ 💎 🥕 زينب زوجهُ عبدالله بن مسعود رضى الله تعالى عنها سے صحیحین میں مروی ، انہوں نے حضورِ اقد س صلی الله تعالی عليه وبلم سے دریافت کرایا، شوہراوریتیم بچے جو پرورش میں ہیں ان کوصد قد دینا کافی ہوسکتا ہے؟ ارشاد فرمایا: ان کو دینے میں دُونا اجرہے،ایک اجرقرابت اور ایک اجرصد قد ۔ ' (5)

ځ 🔑 💝 💎 امام احمد وتر مذی وابن ماجه و دارمی سلیمان بن عا مررضی الله تعالی عنه سے را وی که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم

نے فر مایا: 'مسکین کوصد قد دینا، صرف صدقہ ہے اور رشتہ والے کو دینا، صدقہ بھی ہے اور صله کری بھی۔'' (6)

خلیئٹ ۲۳ 💨 💎 امام بخاری ومسلم ام المومنین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتے ہیں : گھر میں جوکھانے کی چیز ہے،اگرعورت اُس میں ہے پچھودیدےمگرضائع کرنے کےطوریر نہ ہوتو اُسے دینے کا ثواب ملے گا اورشو ہر کو کمانے کا ثواب ملے گااور خازن (بھنڈاری) کو بھی اتناہی ثواب ملے گا۔ایک کااجر دوسرے کےاجر کو کم نہ کرے گا ⁽⁷⁾ لینی اس صورت میں کہ جہاں ایسی عادت جاری ہو کہ عورتیں دیا کرتی ہوں اورشو ہرمنع نہ کرتے ہوں اوراُسی حد تک جوعادت

- ❶ "جامع الترمذي"، أبواب الإيمان، باب ماجاء في حرمة الصلاة، الحديث: ٢٦٢٥، ج٤، ص٢٨٠.
- 2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث رجل من أصحاب النبي صلى الله عليه و سلم، الحديث: ١٨٠٦٥، ج٦، ص٣٠٢.
 - 3 "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب لاصدقة إلا عن ظهر غنى، الحديث: ١٤٢٦، ج١، ص ١٨١.
 - ₫ "صحيح البخاري"، كتاب النفقات، باب فضل النفقة على الأهل... إلخ، الحديث: ٥٣٥١، ج٣، ص١١٥.
 - 5 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب فضل النفقة والصدقة... إلخ، الحديث: ١٠٠٠، ص ٥٠١.
 - 6 "جامع الترمذي"، ابواب الزكاة، باب ماجاء في الصدقة على ذي القرابة، الحديث: ١٥٨، ج٢، ص١٤٢.
 - 🕡 "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب من أمرخادمه... إلخ، الحديث: ١٤٢٥، ج١، ص ٤٨١.

🥞 کےموافق ہےمثلاً روئی دوروئی،جیسا کہ ہندوستان میںعموماً رواج ہےاورا گرشو ہرنے منع کر دیا ہویاوہاں کی ایسی عادت نہ ہو تو بغیرا جازت عورت کودینا جائز نہیں۔ترمذی میں ابوا مامہ رضی الد تعالیٰ عنہ سے مروی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ دِسلم) نے خطبہ حجة الوداع

میں فر مایا عورت شو ہر کے گھر سے بغیرا جازت کچھ نہ خرج کرے۔عرض کی گئی ،کھانا بھی نہیں؟ فر مایا: بیاتو بہت اچھامال ہے۔ (1)

خلینٹ سیم 💝 💎 صحیحین میں ابوموی اشعری رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ،حضورِ اقدس سلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا: ''خاز ن مسلمان امانت دار کہ جواُسے تھم دیا گیا، پورا پورا اُس کودید پتاہے، وہ دوصد قہ دینے والوں میں کا ایک ہے۔' 🎱

خلینٹ 🙌 🋫 🚽 حاتم اورطبرانی اوسط میں ابو ہر رہے دخی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کدرسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فر ماتنے ہیں :

کہ''ایک لقمہ روٹی اور ایک مٹھی خرمااور اس کی مثل کوئی اور چیز جس ہے سکین کونفع پہنچے۔اُن کی وجہ سے اللہ تعالیٰ تین شخصوں کو جنت میں داخل فر ما تا ہے۔ ایک صاحب خانہ جس نے حکم دیا، دوسری زوجہ کہا ہے تیار کرتی ہے، تیسرے خادم جو مسکین کودے

آ تاہے پھرحضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے فر مایا: حمد ہےاللّٰہ (عزوجل) کے لیے جس نے ہمارے خادموں کو بھی نہ چھوڑا۔'' ⁽³⁾

خلایث (۴۵) 💝 💎 ابن ماحه جابر بن عبدالله رضی الله تعالی عنبا سے راوی ، کہتے ہیں کہ حضور (صلی الله تعالی عليه وسلم) نے خطبہ میں فرمایا:''اےلوگو! مرنے سے پہلے اللہ (عزوجل) کی طرف رجوع کرواورمشغولی سے پہلے اعمال صالحہ کی طرف سبقت کرواور پوشیدہ وعلانیہ صدقہ دے کراینے اوراینے رب کے درمیان تعلقات کوملاؤ توشیحییں روزی دی جائے گی اور تمھاری مدد کی جائے

گ اورتمھاری شکستگی دُور کی جائے گی۔'' ⁽⁴⁾

خلینٹ 省 🎺 💎 مصحیحین میں عدی بن حاتم رض اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فر ماتے ہیں: '' تم میں ہر شخص ہےاللہء وہل کلام فرمائے گا،اس کےاوراللہ تعالیٰ کے مابین کوئی ترجمان نہ ہوگا،وہ اپنی دہنی طرف نظر کرے گا تو جو پچھ یہلے کر چکا ہے، دکھائی دےگا، پھر بائیں طرف دیکھے گا تو وہی دیکھے گا، جو پہلے کر چکا ہے، پھراینے سامنے نظر کرے گا تو موتھ کے سامنے آگ دکھائی دے گی تو آگ ہے بچو، اگر چیخر مے کا ایک گلڑا دے کر۔'' ⁽⁵⁾ اوراسی کے مثل عبداللہ بن مسعود و

ابویعلیٰ حابراورتر مذی معاذبن جبل رضی الله تعالی عنهاسے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے ارشاد

صديق اكبرواً مالمومنين صديقة وانس وابو هريره وابوامامه ونعمان بن بشير وغير جم صحابه كرام رضي الله تعالىءنهم سيرمروي _

❶ "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في نفقة المرأة من بيت زوجها، الحديث: ٦٧٠، ج٢، ص٩٤١.

- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب اجر الخادم... إلخ، الحديث: ١٤٣٨، ج١، ص٤٨٤.
 - 3 "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٩ . ٥٣٠٩ ج٤، ص٩٨.
- 4 "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات، باب في فرض الجمعة، الحديث: ١٠٨١، ج٢، ص٥.
- 5 "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب الحث على الصدقة... إلخ، الحديث: ٦٧ ـ (١٠١٦)، ص٥٠٧.

صدقات نفل كابيان 956

🐉 فرمایا: 'صدقه خطا کوایسے بچھا تاہے جیسے بانی آگ کو۔'' (1)

ځ 🔑 💝 💎 💎 امام احمد وابن خزیمیه وابن حبان وحاکم عقبه بن عامر رضی الله تعالی عنه سے راوی رسول الله صلی الله تعالی علیه دملم

فرماتے ہیں:'' ہر خص قیامت کے دن اپنے صدقہ کے سامید میں ہوگا،اُس وقت تک کہلوگوں کے درمیان فیصلہ ہوجائے۔'' (2)

اورطبرانی کی روایت میں بیجی ہے کہ صدقہ قبر کی حرارت کو دفع کرتا ہے۔ ' (3)

خلایث 🙌 🎥 💎 طبرانی وبیمقی حسن بصری رضی الله تعالی عنه سے مرسلاً راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وبلم فر مات عین :

رب عزوجل فرما تاہے:''اے ابنِ آوم! اپنے خزانہ میں ہے میرے پاس کچھ جمع کردے، نہ جلے گا، نہ ڈو و بے گا، نہ چوری جائے گا _ تخصّے میں بورادوں گا، اُس ونت که تو اُس کا زیادہ محتاج ہوگا۔'' ⁽⁴⁾

خل پیٹ ۵۰ و ۵۱ 💨 – ۱ مام احمد و بزار وطبرانی وابن خزیمیه وحاکم و بیه قی برید ه رضی الله تعالی عنه سے اور بیه قی ابوذ ررضی الله تعالی عنه

ے راوی، کہ ' آ دمی جب کچھ بھی صدقہ نکالتاہے توستر شیطان کے جبڑے چیر کرنکاتا ہے۔' (5)

خلینے ۵۲ 💨 🔻 طبرانی نے عمرو بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وتلم فر ماتے ہیں ، کہ:''مسلمان کا صدقہ عمر میں زیاد تی کا سبب ہےاور بُری موت کو دفع کرتا ہے اوراللہ تعالیٰ اس کی وجہ ہے تکبر وفخر کو دور فرما

🕹 پیٹ 😘 💝 💎 طبرانی کبیر میں رافع بن خدتج رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کدرسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فر ماتے ہیں ، که: 'صدقه بُرائی کے ستر دروازوں کو بند کر دیتا ہے۔'' (7)

خل پیٹ ۵۴ 💝 🔻 تر مذی وابن خزیمہ وابن حیان وحا کم حارث اشعری رضی الله تعالی عنه سے راوی رسول الله صلی الله تعالی علیه وہلم فرماتے ہیں: که الله عزوجل نے بچی بن زکر یاعلیهالصلاۃ والسلام کو یا نچے باتوں کی وحی بھیجی کہ خودعمل کریں اور بنی اسرائیل کو حکم فرمائیں کہ وہ ان بڑمل کریں۔ان میں ایک بیہ ہے کہاس نے شخصیں صدقہ کا حکم فرمایا ہے اوراس کی مثال ایسی ہے جیسے کسی کورشمن نے قید

- ❶ "جامع الترمذي"، أبواب الإيمان، باب ماجاء في حرمة الصلاة، الحديث: ٢٦٢٥، ج٤، ص ٢٨٠.
- 2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند الشاميين، حديث عقبه بن عامر، الحديث: ١٧٣٥ ج٦، ص١٢٦.
 - 3 "المعجم الكبير"، الحديث: ٧٨٧، ج١٧، ص٢٨٦.
 - شعب الإيمان"، باب في الزكاة، التحريض على صدقة التطوع، الحديث: ٣٣٤٢، ج٣، ص ٢١١.
 - المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث بريدة الأسلمي، الحديث: ٢٣٠٢٢، ج٩، ص١٢.
 - 6 "المعجم الكبير"، ، الحديث: ٣١، ج١٧، ص٢٢.
 - 7 "المعجم الكبير"، الحديث: ٢٧٤، ج٤، ص٢٧٤.

کیااوراس کا ہاتھ گردن سے ملاکر باندھ دیااوراُسے مارنے کے لیےلائے ،اُس وقت تھوڑا بہت جو کچھ تھا،سب کودے کراپنی جان بحائی۔'' (1)

خلیک ۵۵ 🚽 🔻 ابن خزیمه وابن حبان وحاکم ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فر مایا:

''جس نے حرام مال جمع کیا پھرا سے صدقہ کیا تو اُس میں اُس کے لیے کچھ تُوابِنہیں، بلکہ گناہ ہے۔'' (2)

خلینٹ 🖎 💝 ابوداود وابن خزیمہ و حاکم أخصیں سے راوی، عرض کی ، یار سول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ و ملم)! کونسا صدقہ

افضل ہے؟ فرمایا: '' تم مانی خص کا کوشش کر کے صدقہ دینا۔'' (3)

خلیت ۵۷ کی می الله علیہ الله وابن خزیمہ وابن حبان انھیں ہے راوی ، کہ حضورِ اقد س سای الله تعالی علیہ ہلم نے فرمایا: ''ایک ورہم لاکھ درہم سے بڑھ گیا۔''کسی نے عرض کی ، یہ کیونکر یارسول الله (صلی الله تعالی علیہ وسلم)؟ فرمایا: ''ایک شخص کے پاس مال کشر ہے ، اُس نے اُس میں سے ایک کو ہے ، اُس نے اُس میں سے ایک کو صدقہ کردیا۔'' (4)

روزه کابیان کے

اللَّهُ عزوجل فمر ما تاہے:

﴿ يَا تَيْهَا الَّانِ اَنْ الْمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِن قَبْلِكُمْ اَعَلَّكُمْ اَتَّاقُونَ ﴿ اَيَّامًا مَعُنُ وَلَتِ الْمَنْ اللَّهُ مُعَنَّ الْمَنْ اللَّهُ مُعَنَّ الْمُنْ اللَّهُ مُعَنَّ اللَّهُ الْمُعَنَّ اللَّهُ الْمُعْمَلِيْنِ اللَّهُ اللَّهُ مُعَنَّ اللَّهُ الْمُعْمَلِيْنِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ

- ❶ "جامع الترمذي"، أبواب الأمثال، باب ماجاء في مثل الصلاة والصيام والصدقة، الحديث: ٢٨٧٢، ج٤، ص٤٩٣.
 - 2 "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الزكاة، باب التطوع، الحديث: ٣٣٥٦، ج٥، ص ١٥١.
 - 3 سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب الرخصة في ذلك، الحديث: ١٦٧٧، ج٢، ص١٧٩.
 - 🧣 🗗 "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الزكاة، باب صدقة التطوع، الحديث: ٣٣٣٦، ج٥، ص١٤٤.

وَٱنۡتُمۡلِبَاسُ لَهُنَّ عَلِمَا للهُ ٱلَّكُمُ لَٰنَتُمۡ تَخۡتَانُونَ ٱنۡفُسَكُمُ فَتَابَعَلَيْكُمُ وَعَفَاعَنُكُمُ ۖ فَالْأَيْ بَاشِرُ وَهُنَّ وَابْتَغُوامَا كَتَبَاللهُ لَكُمُ اللهُ لَكُمُ الْخَيْطِ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَ فِمِنَ الْفَجْرِ "ثُمَّ اَتِمُّوا لَكَبُوا لَا لَهُ لَكُمُ الْخَيْطِ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَ فِمِنَ الْفَجْرِ "ثُمَّ اَتِمُّوا لَكَ اللهُ لَكُمُ اللهُ لَكُمُ اللهُ لَكُمُ اللهُ لَكُمُ اللهُ ال

اےایمان والو! تم پرروز ہ فرض کیا گیا حبیباان پرفرض ہوا تھا جوتم سے پہلے ہوئے ، تا کہتم گنا ہوں ہے بچو چند دنوں کا۔ پھرتم میں جوکوئی بیار ہویا سفر میں ہو، وہ اور دنوں میں گنتی پوری کر لے اور جوطافت نہیں رکھتے ، وہ فدیہ دیں۔ایک مسکین کا کھانا پھر جوزیادہ بھلائی کرے توبیاس کے لیے بہتر ہے اور روزہ رکھناتمھارے لیے بہتر ہے،اگرتم جانتے ہو۔ ماورمضان جس میں قرآن اُتارا گیا۔لوگوں کی ہدایت کواور ہدایت اورحق وباطل میں جدائی بیان کرنے کے لیے توتم میں جوکوئی بیمہینہ پائے تو اس کاروزه رکھےاور جو بیاریا سفرمیں ہووہ دوسر بے دنوں میں گنتی پوری کر لے۔اللہ (۶۶ جل)تمھار بےساتھ آ سانی کاارادہ کرتا ہے بختی کاارادہ نہیں فرما تااور شخصیں جا ہے کہ گنتی پوری کرواوراللہ(عزوجل) کی بڑائی بولو، کہاُس نے شخصیں مدایت کی اوراس امید یر کہاس کے شکر گزار ہو جاؤ۔اورا مے محبوب (صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہلم)! جب میرے بندےتم سے میرے بارے میں سوال کریں تو میں نزدیک ہوں، دُعا کرنے والے کی دُعا سنتا ہوں جب وہ مجھے یکارے تو اُٹھیں جاہیے کہ میری بات قبول کریں اور مجھ پر ایمان لائیں،اس اُمید برکہراہ یا ئیں تے مھارے لیے روزہ کی رات میں عورتوں سے جماع حلال کیا گیا، وہ تمھارے لیے لباس ہیں اورتم ان کے لیے لباس ۔ اللہ (عزومل) کومعلوم ہے کہتم اپنی جانوں پر خیانت کرتے ہو تو تمھاری تو بہ قبول کی اورتم سے معاف فرمایا تواب اُن سے جماع کرواوراسے جاہو جواللہ (عزوجل) نے تھارے لیے لکھااور کھاؤاور پیواس وقت تک کہ فجر کاسپید ڈورا سیاہ ڈورے سے متاز ہوجائے بھررات تک روزہ پورا کرواوران سے جماع نہ کرواس حال میں کہتم مسجدوں میں معتکف ہو۔ بیہ الله(عزوجل) کی حدیں ہیں ،اُن کے قریب نہ جاؤ ،الله (عزوجل) اپنی نشانیاں یو ہیں بیان فرما تا ہے کہ کہیں وہ بچیں۔

روزه بہت عده عبادت ہے،اس کی فضیلت میں بہت حدیثیں آئیں۔ان میں سے بعض ذکر کی جاتی ہیں۔

الله عند الله الله تعالى عليه والموجريره رضى الله تعالى عند مروى ، حضورِ اقدس صلى الله تعالى عليه وسلم فر مات عين:

^{&#}x27; جب رمضان آتا ہے، آسان كدرواز ع هول ديجاتے ہيں۔' (2)

^{🛈} پ۲، البقرة: ۱۸۳ ـ ۱۸۷ .

^{2 &}quot;صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب هل يقال رمضان أو شهر رمضان... إلخ، الحديث: ١٨٩٩، ج١، ص٦٢٦.

ایک روایت میں ہے، کہ' جنت کے درواز ہے کھول دیے جاتے ہیں۔' (1)

ایک روایت میں ہے، که "رحمت کے درواز ہے کھول دیے جاتے ہیں اور جہنم کے درواز سے بند کردیے جاتے ہیں اور

شیاطین زنجروں میں جکڑ دیےجاتے ہیں۔ ' (2)

اورامام احمد وتر مذی وابن ماجه کی روایت میں ہے،' جب ماہِ رمضان کی پہلی رات ہوتی ہے تو شیاطین اورسرکش جنّ قید کر لیے جاتے ہیں اور جہنم کے درواز ہے بند کر دیے جاتے ہیں تو اُن میں سے کوئی دروازہ کھولانہیں جاتا اور جنت کے دروازے کھول دیے جاتے ہیں تو اُن میں سے کوئی دروازہ بند نہیں کیا جاتا اور منادی پکارتا ہے، اے خیر طلب کرنے والے!

متوجہ ہوا دراے شرکے حیاہنے والے! بازرہ اور کچھاوگ جہنم ہے آزاد ہوتے ہیں اور یہ ہررات میں ہوتا ہے۔'' ⁽³⁾

امام احمد ونسانی کی روایت آتھیں ہے ہے، کہ حضورِ اقد س صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فرمایا: '' رمضان آیا، یہ برکت کا مہینہ ہے،اللّٰد تعالیٰ نے اس کےروز ہےتم پرفرض کیے،اس میں آسان کے درواز ہے کھول دیے جاتے ہیں اور دوزخ کے درواز ہے۔ بند کر دیے جاتے ہیں اورسرکش شیطانوں کےطوق ڈال دیے جاتے ہیں اوراس میں ایک رات ایسی ہے جو ہزارمہینوں سے بہتر ہے، جواس کی بھلائی سے محروم رہا، وہ بینک محروم ہے۔'' (4)

خلیئٹ ۲ 💨 - ابن ماجدانس رض اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہتے ہیں۔رمضان آیا تو حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے فرمایا: '' پیم پیندآ یا،اس میں ایک رات ہزار مہینوں سے بہتر ہے، جواس سے محروم رہا، وہ ہر چیز سے محروم رہااوراس کی خیر سے وہی محروم ہوگا، جو پورا محروم ہے۔'' (⁵⁾

خليئت 👚 💨 جيهتي ابن عباس رضي الله تعالى عنها ہے راوي ، كہتے ہيں : جب رمضان كامهينة آتارسول الله صلى الله تعالى عليه وملم

سبقيديول كور ما فرمادية اور برسائل كوعطا فرمات ـ " (6)

خلینٹ 🦙 💝 بیریقی شعب الا بمان میں ابن عمر رضی الله تعالی عنها سے راوی ، که نبی صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: ''جنت ابتدائے سال سے سال آئندہ تک رمضان کے لیے آراستہ کی جاتی ہے، جب رمضان کا پہلا دن آتا ہے تو جنت کے پوّ ل سے

- ◘ "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب هل يقال رمضان أو شهر رمضان... إلخ، الحديث: ١٨٩٨، ج١، ص٥٦٥.
 - 2 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل شهر رمضان، الحديث: ٢_(١٠٧٩)، ص٤٥٥.
 - 3 "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، با ب ماجاء في فضل شهر رمضان، الحديث: ٦٨٢، ج٢، ص٥٥٥.
 - 4.... "سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب ذكر الاختلاف على معمر فيه، الحديث: ٣١٠٣، ص٥٥٥.
 - اسنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب ماجاء في فضل شهر رمضان، الحديث: ١٦٤٤، ج٢، ص٢٦٨.
 - "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٢٩، ج٣، ص ٣١١.

۔ عرش کے پنچایک ہوا حورعین پرچلتی ہے، وہ کہتی ہیں،اےرب! ٹو اپنے بندوں سے ہمارے لیےان کوشو ہر بنا، جن سے ہماری

آئکھیں ٹھنڈی ہوں اوراُن کی آئکھیں ہم سے ٹھنڈی ہوں۔'' ⁽¹⁾

خلین هم الله تعالی علیہ وض الله تعالی عنہ سے راوی ، کہ حضورِ اقدس سلی الله تعالی علیہ دیلم فرماتے ہیں: ''رمضان کی آخر شب میں اِس اُمّت کی مغفرت ہوتی ہے۔ عرض کی گئی ، کیا وہ شبِ قدر ہے؟ فرمایا: نہیں ولیکن کام کرنے والے کواس وقت م

مزدوری پوری دی جاتی ہے، جب کام پورا کرلے۔'' (2)

صحيحيين وترمذي ونسائي وصحيح ابن خزيمه مين سهل بن سعدر ضي الله تعالىء نه سے مروى رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم

- "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٣٣، ج٣، ص٣١٢ ـ ٣١٣.
 - 2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ٢٩٢٦، ج٣، ص١٤٤.
 - ایعنی عمخواری اور بھلائی۔
 - ◘....."شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٠٨، ج٣، ص٣٠٥.
- و "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الصيام، باب فضائل شهر رمضان... إلخ، الحديث: ١٨٨٧، ج٣، ص١٩١.

🏖 فرماتے ہیں:''جنت میں آٹھ دروازے ہیں،ان میں ایک دروازہ کا نام ریّان ہے،اس دروازہ سے وہی جائیں گے جوروزے ر کھتے ہیں۔'' (1)

خلینٹ 🔨 🥕 بخاری ومسلم میں ابو ہر رپرہ دخی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ،حضورِ اقد س صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا:'' جوایمان کی وچہ ہےاور ثواب کے لیےرمضان کاروز ہ رکھے گا،اس کےا گلے گناہ بخش دیے جائیں گےاور جوابیان کی وجہ سےاور ثواب کے لیے رمضان کی راتوں کا قیام کرے گا ،اُس کےا گلے گناہ بخش دیے جائیں گے اور جوایمان کی وجہ سے اور ثواب کے لیے شب قدر کا قیام کرےگا، اُس کےا گلے گناہ بخش دیے جائیں گے۔'' (2)

خليث و 🥕 امام احمد وحاكم اورطبراني كبيريين اورابن ابي الدُّنيا اوربيه عن شعب الايمان مين عبدالله بن عمر ورضي الله تعالى عنها ہے راوی، کہرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ ملیہ وسلم فر ماتے ہیں:'' روزہ وقر آن بندہ کے لیے شفاعت کریں گے، روزہ کیے گا، اے رب (عز دجل)! میں نے کھانے اورخوا ہشوں سے دن میں اسے روک دیا ،میری شفاعت اُس کے حق میں قبول فرما قر آن کیے گا ،ا ب رب (عز جل)! میں نے اسے رات میں سونے سے باز رکھا، میری شفاعت اُس کے بارے میں قبول کر۔ دونوں کی شفاعتیں ، قبول ہوں گی۔'' (3)

خلینٹ 🕩 🥕 صحیحین میں ابو ہر رہ و ضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ و کم ماتے ہیں:'' آ دمی کے ہر نیک کام کا بدلہ دس سے سات سوتک دیا جاتا ہے ،اللہ تعالیٰ نے فرمایا:'' گمرروزہ کہوہ میرے لیے ہےاوراُس کی جزامیں دوں گا۔ بندہ اپنی خواہش اور کھانے کومیری وجہ ہے ترک کرتا ہے۔روزہ دار کے لیے دوخوشیاں ہیں،ایک افطار کے وقت اورایک ا سے رب (عزوجل) سے ملنے کے وقت اور روزہ وار کے موزھ کی اُو اللہ عزوجل کے نزد یک مُشک سے زیادہ پا کیزہ ہے اور روزہ سپر ہے اور جب کسی کے روزہ کا دن ہو تو نہ بے ہودہ بلے اور نہ جینے پھراگر اِس ہے کوئی گالی گلوچ کرے یالڑنے پرآ مادہ ہو تو کہہ دے، میں روزہ دارہوں '' ⁽⁴⁾ اس کے مثل امام مالک وابوداود وتر مذی ونسائی اورا بن خزیمہ نے روایت کی ۔

خلیئٹ 🕕 🥕 طبرانی اوسط میں اور بیہجق ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے راوی ، که رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر ما یا: اللہ عز دجل کے نز دیک اعمال ساتے قتم کے ہیں۔ دوعمل واجب کرنے والے اور دو کا بدلدان کے برابر ہے اور ایک عمل کا بدلا دیں گنا

- المحيح البخاري"، كتاب بدء الخلق، باب صفة أبواب الجنة، الحديث: ٧٥٧، ج٢، ص٤٩٣.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب صلاة التراويح، باب فضل من قام رمضان، الحديث: ٢٠٠٩، ج١، ص٦٥٨. و "صحيح البخاري، كتاب فضل ليلة القدر، باب فضل ليلة القدر، الحديث: ٢٠١٤، ج١، ص ٦٦٠.
- ③ "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٦٦٣٧، ج٢، ص٥٨٦.
 - "مشكاة المصابيح"، كتاب الصوم، الفصل الأول، الحديث: ١٩٥٩، ج١، ص ١٥٥.

اورایک عمل کامعاوضه سات سو ہے اورایک وعمل ہے، جس کا ثواب اللہ (عزدجل) ہی جانے۔وہ دوجو واجب کرنے والے ہیں

ان میں:

(۱) ایک بیر کہ جوخداسے اس حال میں ملے کہ خالص اس کی عبادت کرتا تھا، کسی کواس کے ساتھ شریک نہ کرتا تھا، اُس کے لیے جنت واجب۔

- (۲) دوسراید کہ جوخدا سے ملااس حال میں کدأس نے شرک کیا ہے تواس کے لیے جہنم واجب اور
 - (m) جس نے برائی کی ،اس کواسی قدرسزادی جائے گی اور
 - (۴) جس نے نیکی کاارادہ کیا، مگر عمل نہ کیا تو اُس کوایک نیکی کابدلا دیاجائے گااور
 - (۵) جس نے نیکی کی ،اُسے دس گنا تواب ملے گااور
- (۲) جس نے اللہ (عزوجل) کی راہ میں خرچ کیا ،اُس کوسات مو کا ثواب ملے گا۔ایک درہم کا سات سودرہم اورایک

خلین ۱۷ و ۱۷ گیا - ابویعلی و پیمق سلمه بن قیس اوراحمد و برزارا بو هریره درخی اند تعالی عنها سے راوی ، کدرسول الله صلی اند تعالی علیه و با خلین من الله تعالی علیه و کرد ہے گا جیسے کو ا نے فر مایا: '' جس نے الله عزوجل کی رضا کے لیے ایک دن کا روز ہ رکھا ، الله تعالیٰ اس کوجہنم سے اتنا دور کرد ہے گا جیسے کو ا

كه جب بچيقا،اس وقت ہے اُڑتار ہايبال تك كه بوڑھا ہوكرمرا۔'' (3)

خلیث ۱۸ ﴾ ابویعلی وطبرانی ابو ہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، که رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فرمایا: ''اگر کسی نے ایک دن نفل روزہ رکھا اور زمین بھراً سے سونا دیا جائے ، جب بھی اس کا ثواب پورانہ ہوگا۔اس کا ثواب تو قیامت ہی کے دن ملے گا۔'' (4)

خلین 19 🔑 ابن ماجه ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم نے فر مایا: '' ہر شے کے لیے

- شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل الصوم، الحديث: ٢٥٨٩، ج٣، ص٢٩٨.
 و "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصوم، الحديث: ٨، ج٢، ص٤٩.
- 2 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ٩٢٣٦، ج٣، ص٣٦٧.
- ③ "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ١٠٨١٠، ج٣، ص٦١٩.
 - "مسند أبي يعلى"، مسند أبي هريرة، الحديث: ٢١٠٤، ج٥، ص٣٥٣.

💯 زكاة ہے اور بدل كى زكاة روزہ ہے اور روزہ نصف صبر ہے۔' (1)

خلایث ۲۰ 💨 نسانی وابن خزیمه و حاکم ابوا مامه رضی الله تعالی عنه سے راوی ،عرض کی ، یارسول الله (صلی الله تعالی علیه دملم)! مجھے

کسی عمل کا تھم فر مایئے؟ فر مایا:''روز ہ کولازم کرلو کہ اس کے برابر کوئی عمل نہیں۔'' میں نے عرض کی ، مجھے کسی عمل کا تھم فر مایئے؟

ارشا دفر مایا:''روز ہ کولازم کرلو کہاس کے برابر کوئی عمل نہیں۔''انھوں نے چھر وہی عرض کی ، وہی جواب ارشاد ہوا۔ (²⁾

خلینٹ ۲۱ تا۲۷ 💨 🗕 بخاری ومسلم وتر مذی ونسائی ابوسعید رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی،حضورِ اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فرمایا: جو بندہ اللہ (عزوجل) کی راہ میں ایک دن روزہ رکھے، اللہ تعالیٰ اُس کے موزھ کو دوزخ سے ستر برس کی راہ دور فرما دے گا۔'' ⁽³⁾ اوراسی کیمثل نسائی وتر مذی وابن ماجه ابو ہر برہ دضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے راوی ، اورطبرانی ابودرداءاور تر مذی ابوامامه _ا رضی الله تعالی عنها سے روایت کرتے ہیں ، فرمایا: که' اُس کے اور جہنم کے درمیان الله تعالیٰ اتنی بڑی خندق کر دےگا، جتنا آسان و

زمین کے درمیان فاصلہ ہے۔ ' (4)

اورطبرانی کی روایت عمروبن عبسه رضی الله تعالی عندسے ہے کہ' دوزخ اس سے سوبرس کی راہ دُور ہوگی ۔'' (5) اورا بو يعلیٰ کی روابیت معاذبن انس رضی الله تعالی عندے ہے که ' غیر رمضان میں الله (عز وجل) کی راہ میں روز ہ رکھا تو تیز گھوڑ ہے کی رفتار ہے سوبرس کی مسافت پرجہنم سے دور ہوگا۔ ' (6)

خلینٹ ۲۷ 💝 💎 بیہ قی عبداللہ بن عمر و بن العاص رضی اللہ تعالی عنہا سے راوی ، که رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیه و بل فر ماتے ہیں :

روز ہ دار کی ؤ عا،افطار کے وقت رہبیں کی جاتی۔'' (7)

خلینے ۲۸ 🎥 مام احمد وتر مذی وابن ماجیہ وابن خزیمیہ وابن حبان ابو ہر رہے درضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں ، رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فرمات : ‹ وتين شخص كي دُعار دنهين كي جاتي _روزه دارجس وقت افطار كرتا ہے اور باوشاه عادل اورمظلوم كي

- "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب في الصوم زكاة الجسد، الحديث: ٥٤٧١، ج٢، ص٤٦٣.
 - 2 "سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب ذكر الاختلاف ... إلخ، الحديث: ٢٢٢٠، ص ٣٧١.

و "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصوم، الحديث: ٢١، ج٢، ص٥٠.

- 3 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل الصيام في سبيل الله... إلخ، الحديث: ١٦٨ ـ (١١٥٣)، ص ٥٨١.
- ◘ "جامع الترمذي"، أبواب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل الصوم... إلخ، الحديث: ١٦٣٠، ج٣، ص٢٣٣.
 - 5 "المعجم الأوسط"، باب الباء، الحديث: ٩٤ ٣٢، ج٢، ص٢٦٨.
 - 6 "مسند أبي يعلى "، مسندمعاذ بن أنس، الحديث: ١٤٨٤، ج٢، ص٣٦.
 - 🕡 "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فصل فيما يفطر الصائم عليه، الحديث: ٢٩٠٤، ٣٩، ج٣، ص٤٠٧.

🥌 وُعا، اِس کواللہ تعالیٰ ابر ہےاو پر بلند کرتا ہے اوراس کے لیے آسان کے دروازے کھولے جاتے ہیں۔''اور ربعز وجل فر ما تاہے: 👶

'' مجھا پنی عزت وجلال کی قتم! ضرور تیری مدد کروں گا،اگرچة هوڑے زمانہ بعد'' (1)

خلینے ۲۹ 💨 💎 ابن حیان وہیم تی ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے ہیں : ' جس نے

رمضان کاروزہ رکھااوراُس کی حدود کو پہچانااور جس چیز ہے بچنا جا ہےاُس سے بچاتو جو پہلے کر چکاہےاُس کا کفارہ ہو گیا۔'' (2)

خلیک وسا 💨 💎 ابن ماجه ابن عباس رضی الله تعالی عنباسے را دی ، که حضورِ اقدس صلی الله تعالی علیه وللم فر ماتے ہیں:''جس نے

مکّہ میں ماہِ رمضان پایا اور روزہ رکھا اور رات میں جتنامیّسر آیا قیام کیا تو الله تعالیٰ اُس کے لیے اور جگہ کے ایک لا کھرمضان کا ثواب لکھے گااور ہردن ایک گردن آ زاد کرنے کا ثواب اور ہررات ایک گردن آ زاد کرنے کا ثواب اور ہرروز جہاد میں گھوڑے پر

سوار كردينے كا ثواب اور ہردن ميں حسنه اور ہررات ميں حسنہ لکھے گا۔'' (3)

خلینٹ (۳) ﷺ ۔ بیمقی جابر بن عبداللّٰہ رضی اللہ تعالیٰءنہا ہے راوی ، کہ رسول اللّٰہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:''میری اُمّت کو ماورمضان میں یانچ با تیں دی گئیں کہ مجھ ہے پہلے کسی نبی کو نملیں ۔اوّل پیرکہ جب رمضان کی پہلی رات ہوتی ہے،اللہءو دجل ان کی طرف نظر فرما تا ہے اور جس کی طرف نظر فرمائے گا، اُسے بھی عذاب نہ کرے گا۔ دوسری پیرکہ شام کے وقت اُن کے موٹھ کی یُو اللّٰہ (عزوجل) کے نزد یک مُشک سے زیادہ احجھی ہے۔ تیسری پیہے کہ ہردن اور ہررات میں فرشتے ان کے لیے استغفار کرتے ۔ ہیں۔ چوتھی پیرکہاللّٰدعز وجل جنت کوتھم فر ما تاہے، کہتا ہے: مستعد ہوجااور میرے بندوں کے لیے مزیّن ہوجا قریب ہے کہ دنیا کی تعب ہے یہاں آ کرآ رام کریں۔ ہانچویں یہ کہ جبآ خررات ہوتی ہے توان سب کی مغفرت فر مادیتا ہے۔کسی نے عرض کی ،کیا وہ شب قدر ہے؟ فرمایا نہیں کیا تونہیں دیکھتا کہ کام کرنے والے کام کرتے ہیں، جب کام سے فارغ ہوتے ہیں اُس وقت مزدوری یاتے ہیں۔'' (4)

الله صلى الله تعالى الله تعالى عليه ولله على الله تعالى عند سے روایت كى ، رسول الله صلى الله تعالى عليه وللم نے فرمایا: ''سب لوگ منبر کے پاس حاضر ہوں، ہم حاضر ہوئے، جب حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)منبر کے پیملے درجہ پرچڑھے، کہا: آمین ۔ دوسرے پر چڑھے، کہا: آمین۔تیسرے پر چڑھے، کہا: آمین۔ ' جب منبر سے تشریف لائے، ہم نے عرض کی ، آج ہم نے

^{● &}quot;سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب في الصائم لاترددعوته، الحديث: ٢٥٧١، ج٢، ص٣٤٩.

^{2 &}quot;الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب فضل رمضان، الحديث: ٣٤٢٤، ج٥، ص١٨٣-١٨٣.

سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الصوم شهر رمضان بمكة، الحديث: ٣١١٧، ج٣، ص٣٢٥.

٣٠٠٠٠ "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٠٣، ج٣، ص٣٠٣.

🍣 حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) سے الیمی بات سُنی که مجھی نه سُنتے تھے۔فرمایا: جبرئیل نے آ کرعرض کی ،''وہ پخض دور ہو،جس نے 🕯 رمضان پایااورا پنی مغفرت نه کرائی۔ میں نے کہا آمین۔ جب دوسرے درجہ پرچڑھا تو کہاوہ تحض دور ہو،جس کے یاس میرا ذکر ہواور مجھ پر درود نہ بھیجے۔ میں نے کہا آمین۔ جب میں تیسرے درجہ پر چڑھا کہاوہ شخص دور ہو،جس کے ماں باپ دونوں یاایک کو بڑھایا آئے اوراُن کی خدمت کر کے جنت میں نہ جائے۔ میں نے کہا آمین '' (1) اسی کے مثل ابو ہر رہ وحسن بن مالک بن حوریث رضی الله تعالی عنهم سے ابن حیان نے روایت کی۔

خلیئٹ 省 💨 صبانی نے ابو ہر مرہ درضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ، که رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فر مایا: جب رمضان کی پہلی رات ہوتی ہے،اللہءز وجل اپنی مخلوق کی طرف نظر فر ما تا ہےاور جب اللہ(ءوجل) کسی بندہ کی طرف نظر فر مائے تو اُسے بھی عذاب نہ دے گا اور ہرروز دیں لا کھ کوجہنم ہے آزاد فر ما تا ہے اور جب انتیبو آی رات ہوتی ہے تو مہینے بھر میں جتنے آزاد کیے،اُن کے مجموعہ کے برابراُس ایک رات میں آزاد کرتاہے پھر جب عیدالفطر کی رات آتی ہے، ملسکہ خوشی کرتے ہیں اور اللَّهُ ءَ دِجْلَ بِينِ نُورِ كَي خَاصِّ حَبِّي فرما تا ہے، فرشتوں ہے فرما تا ہے:''اے گروہ ملئکہ! اُس مزوور کا کیابدلہ ہے،جس نے کام پورا کرلیا۔'' فرشتے عرض کرتے ہیں،اُس کو بوراا جردیا جائے۔اللہ عز وجل فرما تاہے:''میں شمصیں گواہ کرتا ہوں کہ میں نے ان سب کو بخش دیا۔'' ⁽²⁾

ابن خزیمہ نے ابومسعود غفاری رضی الله تعالی عنہ سے ایک طویل حدیث روایت کی ،اُس میں بیکھی ہے، خ ل پنٹ ۲۷ کی کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے فرمایا: ''اگر بندول کومعلوم ہوتا کہ رمضان کیا چیز ہے تو میری اُمّت تمنا کرتی کہ پورا سال رمضان ہی ہو۔'' (3)

بزار وابن خزیمه وابن حبان عمر وبن مره جهنی رضی الله تعالی عندسے راوی ، که ایک شخص نے عرض کی ، خليث ٢٧ ﴾ یارسول الله (صلی الله تعالی علیه ولم)! فرماییج تو اگر میں اُس کی گواہی دول کہالله (عزوجل) کےسوا کوئی معبودنہیں اورحضور (صلی الله تعالیٰ علیہ وہلم) الله (عزوجل) کے رسول میں اور یانچوں نمازیں پڑھوں اور زکا ۃ ادا کروں اور رمضان کے روزے رکھوں اوراس کی راتوں کا قیام کروں تو میں کن لوگوں میں ہے ہوں گا؟ فرمایا: 'صدیقین اور شہدامیں ہے۔'' (4)

- ❶ "المستدرك"، كتاب البرو الصلة، باب لعن الله العاق لوالديه... إلخ، الحديث: ٧٣٣٨، ج٥، ص٢١٢.
 - 2 "كنز العمال"، كتاب الصوم، الحديث: ٢٣٧٠، ج٨، ص ٢١٩.
- 3 "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الصيام، باب ذكر تزيين الجنة لشهر رمضان... إلخ، الحديث: ١٨٨٦، ج٣، ص١٩٠.
 - الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب فضل رمضان، الحديث: ٣٤٢٩، ج٥، ص١٨٤.

مسائل فقهيّه

روزہ عرف شرع میں مسلمان کا بہ نیت عبادت صبح صادق سے غروب آفتاب تک اپنے کوقصداً کھانے پینے جماع سے بازر کھنا ،عورت کا حیض ونفاس سے خالی ہونا شرط ہے۔ ⁽¹⁾ (عامہ کتب)

مَسْنَاكُ اللَّهِ ورشرم گاہ كو كھانے پينے جماع سے

رو کنا۔ دوسرا خواص کاروزہ کہا نئے علاوہ کان ، آئکھ، زبان ، ہاتھ پاؤں اور تمام اعضا کو گناہ سے بازر کھنا۔ تیسرا خاص الخاص کا کہ

جمیع ماسوی الله ⁽²⁾ سے اپنے کو بالکلیہ جُد اگر کے صرف اس کی طرف متوجد رہنا۔ ⁽³⁾ (جو ہرہ نیرہ)

مسكانا المجهد روز حركى يا نخ قسمين بين:

- (۱) فرض_
- (٢) واجب
- (۳) نفل_
- (۴) کروہ تنزیبی۔
- (۵) مکروه تحریی۔

فرض و واجب کی دوقشمیں ہیں: معیّن وغیرمعیّن _فرض معیّن جیسے ادائے رمضان _فرض غیرمعیّن جیسے قضائے رمضان اور روز وَ کفارہ _واجب معیّن جیسے نذرمعیّن ۔واجب غیرمعیّن جیسے نذرمطلق _

نقل دومین:نقل مسنون،نقل مستحب جیسے عاشورا یعنی دسویں محرم کاروزه اوراس کے ساتھ نویں کا بھی اور ہر مہینے میں تیرھویں، چودھویں، پندرھویں اور عرفہ کاروزہ، پیراور جعرات کاروزہ،شش عید کے روز سے صوم داود علیہ السلام، یعنی ایک دن روزہ ایک دن افظار۔

مکر دو تنزیہی جیسے صرف ہفتہ کے دن روزہ رکھنا۔ نیروز ومہر گان کے دن روزہ۔صوم دہر (لیعنی ہمیشہ روزہ رکھنا)، صوم سکوت (لیعنی ایساروزہ جس میں کچھ بات نہ کرے)،صوم وصال کہ روزہ رکھ کرافطار نہ کرےاور دوسرے دن چھر روزہ

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٤.
 - 🗗 یعنی الله عزوجل کے سوا کا ئنات کی ہر چیز۔
 - 3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص٥٧٠.

کی رکھے، بیسب مکروہ تنزیبی ہیں۔مکروہ تحریمی جیسے عیداور ایا م تشریق ⁽¹⁾ کے روزے۔⁽²⁾(عالمگیری، درمختار، روالحتار)

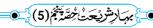
<u> سَسَعَالُهُ اللَّهِ</u> روزے کے مختلف اسباب ہیں، روز وُ رمضان کا سبب ماوِ رمضان کا آنا، روز وَ نذر کا سبب منت ماننا، روز وَ کفارہ کا سبب قسم تو ڑنایاقتل یا ظہار وغیرہ۔⁽³⁾ (عالمگیری)

مسئالی کی ابتدا کر سے پالے لیعن میں صادق سے ضحوہ کی ابتدا کر سکے پالے لیعن میں صادق سے ضحوہ کی ابتدا کر سکے پالے لیعن میں صادق سے ضحوہ کری تک کدائس کے بعد روزہ کی نتیت نہیں ہوسکتی، البذا اگر مجنون کو رمضان کی کسی رات میں ہوش آیا اور میں جنون کی حالت میں ہوئی یاضحوہ کبری کے بعد کسی دن ہوش آیا تو اُس پر رمضان کے حدوث کی دن ہوش آیا تو اُس پر مضان کے روزے کی قضانہیں، جبکہ پورارمضان اسی جنون میں گزرجائے اورایک دن بھی ایساوقت مل گیا، جس میں بیت کرسکتا ہے تو سارے رمضان کی قضالا زم ہے۔ (4) (درمختار، روالحجتار)

سَسَوَا اَنْ اَلَهُ اللَّهُ اللَّ

سَمَعَالُهُ كَا ﴿ صَحْوَهُ كَبِرِي نِيْتَ كَا وقت نهين، بلكهاس سے پيشتر نيّت ہو جانا ضرور ہے اور اگر خاص اس وقت يعنی جس وقت آقاب خط نصف النہار شرعی پر بہنج گيا، نيّت کی توروز ہنہ ہوا۔ (⁷⁷⁾ (در مختار)

- 🗗 لعنى عيدالفطر ،عيدالاضخى اور گياره ، باره ، تيره ذى الحجه ،ان پايخ ونوں _
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٤.
 و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٨٨ _ ٣٩٢.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٤.
- ٣٨٧ ـ ٣٨٥ ـ ٣٨٠ . "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٨٥ ـ ٣٨٧.
 - الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
 - و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٨٨.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٣.
 - 🧳 🗗 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٤.



روزه كابيان

💨 📶 🐧 💨 نتیت کے بارے میں نفل عام ہے، سنت ومتحب ومکروہ سب کوشامل ہے کہان سب کے لیے نتیت کا وہی

وفت ہے۔ ⁽¹⁾(روالحتار)

، <u>سستانہ وی ج</u> جس طرح اور جگہ بتایا گیا کہ نیت دل کے ارادہ کا نام ہے، زبان سے کہنا شرطنہیں۔ یہاں بھی وہی مراد

ب مرزبان سے کہدلینامستحب ہے، اگررات میں نتیت کرے تو یول کے:

نَوَيْتُ أَنُ أَصُومُ غَدًا لِلَّهِ تَعَالَى مِنُ فَرُضٍ رَمَضَانَ هَذَا.

''لینی میں نے متیت کی کہ اللہ عزوجل کے لیے اس رمضان کا فرض روز ہکل رکھوں گا۔''

اورا گردن میں نتیت کرے تو پیہ کے:

نَوَيْتُ أَنُ أَصُومُ هَٰلَا الْيَوُمَ لِلَّهِ تَعَالَىٰ مِنُ فَرُضِ رَمَضَانَ .

"میں نے میت کی کہ اللہ تعالی کے لیے آج رمضان کا فرض روزہ رکھوں گا۔"

اور اگر تیرک وطلب توفیق کے لیے بیت کے الفاظ میں ان شاء اللہ تعالیٰ بھی ملالیا تو حرج نہیں اور اگر پکا ارادہ نہ ہو،

ند بذب ہو تونیّت ہی کہاں ہوئی۔⁽²⁾ (جوہرہ نیرہ)

مسئان السام ون میں متبت کرے تو ضرور ہے کہ یہ نتیت کرے کہ میں شبخ صادق سے روزہ دار ہوں اور اگریہ نتیت ہے کہ اب سے روزہ دار ہوں مبنج سے نہیں توروزہ نہ ہوا۔ (3) (جو ہرہ، ردالحتار)

مَسَعَلَا اللهِ المِلْمُ المِلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المِلْمُولِيِيِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المِلْمُ اللهِ اللهِ المِلم

(جوہرہ)

<u>مسئانۂ ۱۳ گ</u>ے۔ یوں نیت کی کہ کل کہیں دعوت ہوئی تو روز ہنیں اور نہ ہوئی تو روز ہے بینیت صحیح نہیں ، بہر حال وہ روز ہ دار نہیں ۔⁽⁵⁾(عالمگیری)

مَسِيَّا لَهُ سَالِ ﴾ رمضان کے دن میں نہ روز ہ کی نیّت ہے نہ ریہ کہ روز ہنیں ، اگر چہ معلوم ہے کہ ریم مہیدنہ رمضان کا ہے تو

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٣.
 - 2 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص٥٧١.
 - ۱۷۵ "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
- و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٤.
 - 4 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص٧٧.
- 5 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول في تعريفه... إلخ، ج١، ص١٩٥.

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) 🚅

ورزه نه هوا (⁽¹⁾ (عالمگیری)

سین کی سات میں نیت کی پھراس کے بعدرات ہی میں کھایا پیا، تونیت جاتی ندر ہی وہی پہلی کافی ہے پھر سے نیت

کرناضرورنہیں۔⁽²⁾ (جوہرہ)

مسئانہ کا ہے۔ عورت حیض ونفاس والی تقی، اُس نے رات میں کل روز ہ رکھنے کی بیّت کی اور شبح صادق سے پہلے حیض و

نفاس سے پاک ہوگئ توروزہ چیج ہوگیا۔⁽³⁾ (جوہرہ) ------

مسئ الرق کی امر نہ پایا گیا ہو، اور الرق کے کوئی صادق سے نیت کرتے وقت تک روزہ کے خلاف کوئی امر نہ پایا گیا ہو، لہٰذاا گر شبح صادق کے بعد بھول کر بھی کھا ٹی لیا ہو یا جماع کر لیا تو اب نیت نہیں ہو سکتی۔ (4) (جو ہرہ) مگر معتمد سے کہ بھو لنے کی حالت میں اب بھی نیت صحیح ہے۔ (5) (ردا کمتار)

مستان کے ایک جسطرح نماز میں کلام کی نتیت کی ، مگر بات نہ کی تو نماز فاسد نہ ہوگی۔ یو ہیں روزہ میں توڑنے کی نتیت ہے روز نہیں ٹوٹے گا، جب تک توڑنے والی چزنہ کرے۔(6) (جو ہرہ)

سَسَتَانُ ١٨﴾ اگررات ميں روز ه کی نتيت کی چمر پٽااراده کرليا کنہيں رکھے گا تووه نتيت جاتی رہی۔اگرنئ نتيت نه کی اور

دن بھر بھوکا پیاسار ہااور جماع سے بچا توروزہ نہ ہوا۔⁽⁷⁾ (درمختار،ردالحتار)

مسئلہ 19 استری کھانا بھی نیت ہے،خواہ رمضان کے روز ہے کے لیے ہو یا کسی اور روزہ کے لیے، مگر جب سحری کھاتے وقت بدارادہ ہے کہ مجبح کوروزہ نہ ہوگا تو یہ حری کھانا نیت نہیں۔(8) (جو ہرہ،ردالمحتار)

. مسئانی کی سردوزہ کے لیےنئی نیت کی ضرورت ہے۔ پہلی یاسی تاریخ میں پورے رمضان کے روزہ کی

نتیت کرلی توبیه نتیت صرف اُسی ایک دن کے حق میں ہے، باقی دنوں کے لینہیں۔ (⁹⁾ (جو ہرہ)

- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول في تعريفه... إلخ، ج١، ص١٩٥.
 - 2 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
 - 3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
 - 4 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٦.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب مايفسد الصوم ومالايفسده، ج٣، ص ٤١٩.
 - 6 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
 - 7 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٩٨.
 - 8 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٦.
 - 🕥 1٧٦... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٦.

970) بہارشرنیعت بخصَّة نُجُمُ (5)

🥌 ایستان ۲۱ 🔑 به نیزوں یعنی رمضان کی ادااورنفل ونذ رمعین مطلقاً روز ہ کی نتیت سے ہو جاتے ہیں، خاص انھیں کی بتیت ضروری نہیں۔ یو ہیں نفل کی بتیت ہے بھی ادا ہو جاتے ہیں، بلکہ غیر مریض ومسافر نے رمضان میں کسی اور واجب کی بتیت کی

جب بھی اسی رمضان کا ہوگا۔ ⁽¹⁾ (درمختار وغیر ہ)

سین اگریں تو جس کی نتیت کریں اور مریض اگر رمضان شریف میں نفل پاکسی دوسرے واجب کی بتیت کریں تو جس کی نتیت کریں

گے، وہی ہوگارمضان کانہیں ۔ ⁽²⁾ (تنوبرالابصار)اورمطلق روز بے کی نتیت کریں تورمضان کا ہوگا۔ ⁽³⁾ (عالمگیری) 🛁 🕻 ۴ 💨 نذرمعین یعنی فلال دن روز ہ رکھوں گا ،اس میں اگراُس دن کسی اور واجب کی نتیت ہے روز ہ رکھا توجس

کی نتیت سے روز ہ رکھا، وہ ہوامنت کی قضادے۔ ⁽⁴⁾(عالمگیری)

مسئل ۲۴ 💨 رمضان کے مہینے میں کوئی اور روز ہ رکھااوراً ہے بیمعلوم نہ تھا کہ بیرما ورمضان ہے، جب بھی رمضان ہی کا $(1(3)^{(5)} - 1(3))$

سَسَانُ ٢٥ ﴾ کوئی مسلمان دارالحرب میں قیدتھا اور ہرسال بیسوچ کر کدرمضان کامہینہ آگیا، رمضان کے روز ہے رکھے بعد کومعلوم ہوا کہ کسی سال بھی رمضان میں نہ ہوئے بلکہ ہرسال رمضان سے پیشتر ہوئے تو پہلے سال کا تو ہوا ہی نہیں کہ رمضان سے پیشتر رمضان کاروز ہ ہونہیں سکتا اور دوسرے تیسرے سال کی نسبت پیہے کہا گرمطلق رمضان کی متیہ کی تھی تو ہر سال کے روز بے سال گزشتہ کے روزوں کی قضا ہیں اور اگر اس سال کے رمضان کی نتیت سے رکھے توکسی سال کے نه هر بخر⁽⁶⁾ (ردامختار)

مسئ 😙 🤻 👚 اگرصورت مذکورہ میں تحری کی تینی سوجیا اور دل میں یہ بات جمی کہ پہرمضان کامہینہ ہےاور روز ہ رکھا،مگر وا قع میں روز ہے شوال کے مہینے میں ہوئے توا گررات ہے نیت کی تو ہو گئے ، کیونکہ قضا میں قضا کی نیت شرطنہیں ، بلکہا دا کی نیت ہے بھی قضا ہو جاتی ہے پھراگر رمضان وشوال دونوں تمیں تمیں دن یا انتی⁷⁹ انتی⁷⁰ انتیاں دن کے ہیں تو ایک روزہ اور رکھے کہ عید کا روز همنوع ہےاورا گررمضان تنتی کا اورشوال انتی^{مو} کا تو دواورر کھےاوررمضان انتی^{ن کا} تھااورییٹیں کا تو پورے ہوگئے اورا گروہ

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٩٣، وغيره.
 - "تنوير الأبصار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٩٩٥.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٥ ـ ١٩٦.
 - 4 المرجع السابق، ص١٩٦.
 - الدرالمختار"،
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٩٧.

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلامي) 🛒

وهٰ ہیں ہوگا بلکیوں ہوگا۔ (2) (درمختار وغیر ہ)

مہینہ ذی الحبہ کا تھا تو اگر دونوں تنب یا انتی^{ان} کے ہیں تو چار روزے اور رکھے اور رمضان تیس کا تھا بیانتیس کا تو پانچ اور بالعکس تو

تین رکھے۔غرض ممنوع روز نے نکال کروہ تعداد پوری کرنی ہوگی جتنے رمضان کے دن تھے۔⁽¹⁾ (عالمگیری)

ادائے رمضان اور نذر عمین اور نظر کے علاوہ باقی روزے، مثلاً قضائے رمضان اور نذر غیر معیّن اور نفل کے قضالی دوزہ رکھ کرتو ڑدیا تھااس کی قضا) اور نذر معیّن کی قضا اور کھّارہ کاروزہ اور حرم میں شکار کرنے کی وجہ سے جوروزہ

کی قضا (یعنی کلی روزہ رکھ کرتو ڑ دیا تھا اس کی قضا) اور نذر معین کی قضا اور کقارہ کا روزہ اور حرم میں شکار کرنے کی وجہ ہے جوروزہ واجب ہواوہ اور حج میں شکار کرنے کی وجہ ہے جوروزہ واجب ہواوہ اور حج میں وقت سے پہلے سرمنڈ انے کا روزہ اور تہت کا روزہ ، ان سب میں میں صبح حیکتے وقت یارات میں نتیت کرنا ضروری ہے اور رہے کہ جوروزہ رکھنا ہے ، خاص اس معین کی نتیت کرے اور اُن روزوں کی نتیت اگرون میں کی تو نفل ہوئے پھر بھی ان کا پورا کرنا ضرور ہے تو ڑے گا تو قضا واجب ہوگی ۔ اگر چہ بیاس کے علم میں ہو کہ جوروزہ رکھنا چا ہتا ہے میہ

مسئ المرات المبان کرے کہ اس کے ذمتہ روزے کی قضا ہے روزہ رکھا۔ اب معلوم ہوا کہ کمان غلط تھا تو اگر فوراً توڑ دے تو تو ڈسکتا، توڑے گا تو قضا واجب ہے۔ (3) دے تو تو ڈسکتا، توڑے گا تو قضا واجب ہے۔ (3) (روالحجتار)

مَسِعَالُهُ 19﴾ رات میں قضاروزے کی نیت کی مبیح کواُسے فل کرنا جا ہتا ہے تو نہیں کرسکتا۔ (۱۰ الحتار) مَسِعَالُهُ ۳۰﴾ نماز پڑھتے میں روزہ کی نیت کی تو نیت صحیح ہے۔ (5) (درمخار)

مسئلہ اسکانی اسکانی کی دوزے قضا ہو گئے تونیّت میں یہ ہونا جا ہے کہ اس رمضان کے پہلے روزے کی قضا، دوسرے کی قضا

اورا گر پچھاس سال کے قضا ہو گئے، پچھا گلے سال کے باقی ہیں تو یہ نتیت ہونی چاہیے کہاس رمضان کی اور اُس رمضان کی قضا اورا گردن اور سال کومعیّن نہ کیا، جب بھی ہوجا کیں گے۔⁽⁶⁾ (عالمگیری)

مَسِعَالَةُ ٣٢﴾ رمضان کاروزه قصداً تو اُلقا تو اس پراس روزے کی قضاہے اور ⁽⁷⁾ ساٹھ روزے کفارہ کے۔اب اُس

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٦.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٩٣، وغيره.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣ ص٩٩٩.
 - ₫ المرجع السابق، ص٣٩٨.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٩٨.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٦.
 - اگر كفاركى شرائط پائى كئيس تو۔

سی اور نقل اور دورہ رکھا تو مکر وہ ہے،خواہ مطلق روزہ کی بتیت ہو یا فرض کی باکسی واجب کی،خواہ بتیت سے روزہ رکھ سکتے ہیں اور نقل کے سوا کوئی اور روزہ رکھا تو مکر وہ ہے،خواہ مطلق روزہ کی بتیت ہو یا فرض کی باکسی واجب کی،خواہ بتیت معیّن کی، کی ہو یا تر دد کے ساتھ بیسب صور تیں مکر وہ ہیں۔ پھرا گررمضان کی بتیت ہے تو مکر وہ تحریک ہے، ورنہ قیم کے لیے تنزیجی اور مسافر نے اگر کسی واجب کی بتیت کی تو کر اہت نہیں پھرا گراس دن کا رمضان ہونا ثابت ہوجائے تو مقیم کے لیے بہر حال رمضان کا روزہ ہے اورا گرین طاہر ہو کہوہ شعبان کا دن تھا اور بتیت کسی واجب کی کتھی تو جس واجب کی بتیت تھی وہ ہوا اور اگر پچھ حال نہ کھلا تو واجب کی بتیت ہو۔ (در مختار، روانحتار)

مَسَعَانُ الله الله الله المستعلق المس

اورعوام ندر کھیں، بلکہ عوام کے لیے بی میکم ہے کہ ضحوہ کبری تک روز پہلے سے روز رہے تو اب خاص لوگ روز ہو کھیں اورعوام ندر کھیں، بلکہ عوام کے لیے بی میکم ہے کہ ضحوہ کبری تک روز ہ کے مثل رہیں، اگر اس وقت تک جاند کا ثبوت ہو جائے تو رمضان کے روز ہے نتی کرلیں ورنہ کھائی لیں نواص سے مرادیباں علماہی نہیں، بلکہ جو شخص بیجا نتا ہو کہ یہ وہ الشّک میں اس طرح روز ہ رکھاجا تا ہے، وہ خواص میں ہے ورنہ عوام میں ۔ (۵) (در مختار)

مسئ المسكان المسك كروزه مين به پكااراده كرك كه بيروزه نفل ہے تردد ندر ہے، يوں نه ہوكه اگر دمضان كا ہے، ورنه كى اورواجب كا كه بير تو بيروزه دمضان كا ہے، ورنه كى اورواجب كا كه بير دونوں صورتوں ميں ماروہ ہيں۔ پھراگراس دن كارمضان ہونا ثابت ہوجائے تو فرض رمضان ادا ہوگا۔ ورنه دونوں صورتوں ميں نفل ہے اور گئرگار بہر حال ہوا اور يوں بھی نيت نه كرے كه به دن رمضان كا ہے تو روزه ہے، ورنه روزه نہيں كه اس صورت ميں تو نه

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٦.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مبحث في صوم يوم الشك، ج٣، ص٩٩.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٠٤٠.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٢.

چاندد <u>کھشے</u> کابیان **€۔**

تیت ہی ہوئی، نہ روزہ ہوااورا گرنفل کا پوراارادہ ہے مگر کبھی بھی دل میں بیہ خیال گز رجا تا ہے کہ شاید آج رمضان کا دن ہو تو اس

میں حرج نہیں _ ⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

مسئالة المرجم عوام كوجوبيتكم ديا گيا كفحوهٔ كبرى تك انتظار كرين، جس نے اس برعمل كيا مگر بھول كر كھاليا پھراس دن

______ کارمضان ہونا ظاہر ہوا تو روزہ کی نیت کر لے ہوجائے گا کہا نتظار کرنے والا روزہ دار کے حکم میں ہے اور بھول کرکھانے سے روزہ نہیں ٹوٹنا۔⁽²⁾(درمختار)

چاند دیکھنے کا بیان

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ يَشَنَّا وُنَكَ عَنِ الْآهِ لَّةِ لَقُلْ هِي مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ لَهِ (3)

اے محبوب! تم سے ہلال کے بارہ میں لوگ سوال کرتے ہیں، تم فرما دووہ لوگوں کے کاموں اور حج کے لیے اوقات

ہیں۔

خلیت این علم میں ابن عمر رضی الله تعالی عنبها سے مروی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فرماتے ہیں:

'' روزه نه رکھو، جب تک چاندنه دیکیولواورافطار نه کرو، جب تک چاندنه دیکیولواورا گراَبر ہو تو مقدار پوری کرلو''

خلینٹ 🗨 نیز صحیحین میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ،حضورِ اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وہلم فر ماتے ہیں:'' چیا ند دیکھ کر

روز ه رکھنا شروع کرواور چاند دکھے کرافطار کرواورا گراَبر ہوتو شعبان کی گنتی تیس پوری کرلو۔'' (5)

خلین سی اللہ تعالی علیہ و ابوداود و تر مذی ونسائی و ابن ماجہ و دارمی ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے راوی ، ایک اعرابی نے حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کی خدمت میں حاضر ہو کرعرض کی ، میں نے رمضان کا جا ند دیکھا ہے۔ فرمایا:'' تُو گواہی دیتا ہے کہ اللہ (عزوجل) کے رسول ہیں۔'' (عزوجل) کے رسول ہیں۔''

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص٠٠٠.
- و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مبحث في صوم يوم الشك، ج٣، ص٤٠٣.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٤.
 - 3 ٢٠ البقرة: ١٨٩.
- "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم، إذا رأيتم الهلال فصوموا... إلخ، الحديث: ١٩٠٦، ج١، ص٦٢٩.
- 🥞 🗗 "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم، إذارأيتم ... إلخ، الحديث: ١٩٠٩، ج١، ص٦٣٠.

اس نے کہا، ہاں۔ارشاد فر مایا: ''اے بلال! لوگوں میں اعلان کردو کہ کل روز ہ رکھیں۔'' (1)

خلیث 🕜 🔫 ابو داود و دارمی ابن عمر رض الله تعالی عنباسے راوی ، که لوگوں نے باہم جاند دیکھنا شروع کیا ، میں نے

حَكُم فر ما يا ـ ⁽²⁾

خليث هي ابوداوداً م المومنين صديقة رضى الله تعالى عنها سے راوى ، كەرسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم شعبان كااس قدر تحفظ

کرتے کہ اتنااور کسی کا نہ کرتے پھر رمضان کا جا ندد کیچ کرروزہ رکھتے اورا گراً برہوتا تو تیس دن پورے کر کے روزہ رکھتے۔(3)

البختری سے مروی، کہتے ہیں ہم عمرہ کے لیے گئے، جبیطن تخلہ میں پنچے تو چاند

د کی کر کسی نے کہا تین رات کا ہے، کسی نے کہا دورات کا ہے۔ ابن عباس رضی اللہ تعالی عنباہے ہم ملے اور ان سے واقعہ بیان کیا، فرمایا: تم نے ویکھاکس رات میں؟ ہم نے کہا، فلال رات میں، فرمایا: کهرسول الله صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے اُس کی مدّت ویکھنے

ے مقرر فر مائی ، لہذااس رات کا قرار دیا جائے گا جس رات کوتم نے دیکھا۔⁽⁴⁾

<u>مَسعًا کُهُ الْ ﴾</u> پانچ مهینوں کا حیا ندو کھنا، واجب کفامیہ ہے۔

- (۱) شعبان۔
- (۲) رمضان۔
- (۳) شوال۔
- (۴) زيقعده۔
- (۵) ذى الحهه

شعبان کا اس لیے کہ اگر رمضان کا جاند دیکھتے وقت اُبریا غبار ہو تو یہ ٹیس پورے کر کے رمضان شروع کریں اور

کے لیے۔⁽⁶⁾(فقاویٰ رضوبیہ)

1 "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب في شهادة الواحد على رؤية هلال رمضان، الحديث: ٢٣٤٠، ج٢، ص ٤٤.

◘ "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب في شهادة الواحد على رؤية هلال رمضان، الحديث: ٢٣٤٢، ج٢، ص ٤٤١.

3..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب إذا أغمي الشهر، الحديث: ٢٣٢٥، ج٢، ص٤٣٤.

4 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب بيان أنه لااعتبار بكبر الهلال وصفره... إلخ، الحديث: ١٠٨٨، ص٩٥٥.

🗗 كه وه م كاخاص مجمينه بـــــ 🕳 "الفتاوى الرضوية"، ج١٠ ص ٤٤٩ ــ ٤٥١.

975

ہے۔ جب سے منظم کی انتیا^ل کو شام کے وقت جا ندر یکھیں دکھائی دے تو کل روز ہر کھیں، ورنہ شعبان کے تنیں دن منسکاٹ کی انتیا^ل کو شام کے وقت جا ندر یکھیں دکھائی دے تو کل روز ہر کھیں، ورنہ شعبان کے تنیں دن

. پورے کر کے دمضان کامہینہ شروع کریں۔(1) (عالمگیری)

سَسَعَانُ سی ہے روکر دی گئی مثلاً فاس ہے یاعید کا ایک گواہی کسی وجہ شرعی سے روکر دی گئی مثلاً فاس ہے یاعید کا چانداس نے تنہا دیکھا تو اُسے تکم ہے کہ روزہ رکھے، اگر چہا پنے آپ عید کا چاند دیکھ لیا ہے اور اس روزہ کو تو ڑنا جائز نہیں، مگر

توڑے گا تو کقارہ لازم نہیں ⁽²⁾اوراس صورت میں اگر رمضان کا جاند تھااوراُس نے اپنے حسابوں تبیں روزے پورے کیے، مگر عبر کسان کر دقت تھا کہ اغلام مرتز کہ بھی اس دربان کھنے کا تھکمہ میں ⁽³⁾ رہائیگیری میں متاں ک

مسئ ای گواہی پھی دی تھی اور ابھی اُس نے چاند دیکھ کرروزہ رکھا پھرروزہ توڑ دیایا قاضی کے یہاں گواہی بھی دی تھی اور ابھی اُس نے اُس کی گواہی پھی نہاں سے اُس کی گواہی پھی نہاں سے اُس کی گواہی تبعی کھارہ لازم نہیں، صرف اُس روزہ کی قضادے اور اگر قاضی نے اُس کی گواہی قبول کرلی۔ اُس کے بعداُس نے روزہ توڑ دیا تو کھارہ لازم ہے اگر چہ بیفاستن ہو۔ (4) (درمخار)

مسئان کی جاتی ہرگواہی میں بیہ کہنا ضرور ہے کہ میں گواہی دیتا ہوں کہ بغیراس کے شہادت نہیں، مگر اَبر میں رمضان کے جاند کی گواہی میں اس کہنے کی ضرورت نہیں، اتنا کہد دینا کافی ہے کہ میں نے اپنی آ نکھ سے اس رمضان کا جاند آج یا کل یا فلال دن دیکھا ہے۔ یو بیں اس کی گواہی میں دعویٰ اور مجلس قضا اور حاکم کا حکم بھی شرط نہیں، یہاں تک کہ اگر کسی نے حاکم کے یہاں گواہی دی تو جس نے اُس کی گواہی شنی اور اُس کو بظاہر معلوم ہوا کہ بیادل ہے اس پرروز ہر کھنا ضروری ہے، اگر چہ حاکم کا حکم اُس نے نہ سُنا ہو مثلاً حکم دینے سے پہلے ہی چلا گیا۔ (6) (درمختار، عالمگیری)

سَنَا الله کی اور غبار میں رمضان کا ثبوت ایک مسلمان عاقل بالغ، مستور باعادل شخص سے ہوجا تا ہے، وہ مرد ہوخواہ ع عورت، آزاد ہویا باندی غلام یا اس پرتہمت زنا کی حد ماری گئی ہو، جب کہ تو بہ کرچکا ہے۔

- - 2..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٤.
 -8
 - ۵-۱۰۰۰ "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٤.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في روية الهلال، ج١، ص١٩٧.
 - 🔊 🌀 المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٦.

بيش كش: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلام)

عادل ہونے کےمعنے یہ ہیں کہ کم ہے کم مثقی ہویعنی کیائر گناہ ہے بچتا ہواورصغیر ہیراصرار نہ کرتا ہواوراییا کام نہ کرتا ہو

جوم وت کےخلاف ہومثلاً مازار میں کھانا۔ ⁽¹⁾ (درمختار، ردالمختار)

مَسِعًا اللهِ ﴾ فاسق اگرچەرمضان كے جاندكى شہادت دے اُس كى گواہى قابل قبول نہيں رہايہ كہ اُس كے ذمّہ گواہى دينا

لازم ہے پانہیں۔اگراُمید ہے کہاُس کی گواہی قاضی قبول کرلے گا تو اُسے لازم ہے کہ گواہی دے۔(2)

مستوریعن جس کا ظاہر حال مطابق شرع ہے، مگر باطن کا حال معلوم نہیں ، اُس کی گواہی بھی غیر رمضان میں قابلِ قبول

تہیں۔(درمخار)

مستان و جس شخص عادل نے رمضان کا چانددیکھا، اُس پر واجب ہے کہ اسی رات میں شہادت ادا کردے، یہاں تک کہا گرلونڈی پایردہ نشین عورت نے جاند دیکھا تواس پر گواہی دینے کے لیےاسی رات میں جاناواجب ہے۔لونڈی کواس کی کچھ ضرورت نہیں کہایئے آقا سے اجازت لے۔ یوہیں آزادعورت کوگواہی کے لیے جانا واجب،اس کے لیے شوہر سے اجازت لینے کی ضرورت نہیں، مگر بیچکم اُس وفت ہے جب اُس کی گواہی پر ثبوت موقوف ہو کہ بے اُس کی گواہی کے کام نہ چلے ور نہ کیا ضرورت به ⁽³⁾ (درمختار، ردامحتار)

مسکاں اس کے پاس رمضان کے جاند کی شہادت گزری، اُسے بیضرور نہیں کہ گواہ سے دریافت کرے تم نے ا کہاں ہے دیکھااور وہ کس طرف تھااور کتنے اونچے برتھاوغیرہ وغیرہ ہ⁽⁴⁾(عالمگیری وغیرہ) مگر جب کہاس کا بیان مشتبہ ہو تو سوالات کر بےخصوصاً عید میں کہ لوگ خواہ نخواہ اس کا جاند دیکھ لیتے ہیں۔

سَسَالُ الله الله تنها امام (باوشاه اسلام) یا قاضی نے جاند دیکھا تو اُسے اختیار ہے،خواہ خودہی روزہ رکھنے کا حکم دے یاکسی کوشہادت لینے کے لیے مقرر کرے اوراس کے پاس شہادت اداکرے۔(5) (عالمگیری)

مستان اس گواہی دے تو گاؤں میں جا ند دیکھا اور وہاں کوئی ایسانہیں جس کے پاس گواہی دے تو گاؤں والوں کو جمع کر کے

شہادت ادا کرے اورا گربیعادل ہے تو لوگوں پر روز ہر کھنالازم ہے۔ (6) (عالمگیری)

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مبحث في صوم يوم الشك، ج٣، ص٤٠٦.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٦٠٦.
 - 3 المرجع السابق، ص٧٠٤.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧، وغيره.
 - 5 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧.
 - 6 المرجع السابق.

🦠 📶 📜 کسی نے خود تو چاندنہیں دیکھا،مگر دیکھنے والے نے اپنی شہادت کا گواہ بنایا تو اُس کی شہادت کا وہی حکم

ہے جوچاندد کیھنےوالے کی گواہی کاہے، جبکہ شہادة علی الشہادة کے تمام شرائط یائے جائیں۔(1) (عالمگیری وغیرہ)

لیے کتنے لوگ جا ہے بیقاضی کے متعلق ہے، جتنے گواہوں سے اُسے غالب گمان ہوجائے حکم دیدے گا، مگر جب کہ بیرون شہریا

بلندجگہ سے جاند دیکھنا بیان کرتا ہے تو ایک مستور کا قول بھی رمضان کے جاند میں قبول کرلیا جائے گا۔(2) (درمختار وغیرہ)

مسئلہ 🐧 🎏 جماعت کثیرہ کی شرط اُس وقت ہے جب روز ہ رکھنے یاعید کرنے کے لیے شہادت گزرےاورا گرکسی اور معاملہ کے لیے دومرد باایک مرداور دوعورتوں ثقہ کی شہادت گزری اور قاضی نے شہادت کی بنابر تھم دے دیا تو اب بیشہادت کا فی ہے۔روز ہ رکھنے یاعید کرنے کے لیے بھی ثبوت ہو گیا، مثلاً ایک شخص نے دوسرے بردعویٰ کیا کہ میرااس کے ذمہ اتنا دَین ہے اور اس کی میعاد پٹھیری تھی کہ جب رمضان آ جائے تو دَین ادا کردے گا اور رمضان آ گیا مگر پنہیں دیتا۔ مدعی علیہ ⁽³⁾ نے کہا، ہیشک اس کا ؤین میرے ذمتہ ہےاور میعاد بھی یہی گھری تھی ،گمرا بھی رمضان نہیں آیااس پر مدعی نے دوگواہ گزارے جنھوں نے جاند د کیھنے کی شہادت دی، قاضی نے تھم دے دیا کہ دَین ادا کر، تواگر چیم طلع صاف تھااور د^او ہی کی گوا ہیاں ہوئیں ، مگراب روز در کھنے ، اورعيد كرنے كے حق ميں بھى يهى دو گواہياں كافى ہيں۔(4) (در مختار، ردالحتار)

مسئلۂ 🕦 🌯 یہاں مطلع صاف تھا، مگر دوسری جگہ ناصاف تھا، وہاں قاضی کےسامنے شہادت گزری، قاضی نے جاند ہونے کا تھکم دیا،اب دویا چندآ دمیوں نے یہاں آ کر جہاں مطلع صاف تھا،اس بات کی گواہی دی کہ فلاں قاضی کے یہاں دو شخصول نے فلاں رات میں جاند دیکھنے کی گواہی دی اوراس قاضی نے ہمارے سامنے تھم دے دیا اور دعوے کے شرا کط بھی یائے جاتے ہیں تو بیال کا قاضی بھی ان شہاد توں کی بنایر حکم دیدےگا۔ ⁽⁵⁾ (درمختار)

شہادت دیں کہ فلاں فلاں نے دیکھا، بلکہا گریہشہادت دیں کہ فلاں جگہ کے قاضی نے روزہ یا افطار کے لیےلوگوں سے کہایہ سے طریقے نا کافی ہیں۔ (6) (درمختار،ردالحتار)

- ❶..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧، وغيره.
- **3**..... یعنی و همخف جس پر دعویٰ کیا جائے۔ 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٩٠٤. وغيره
- 4..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول... إلخ، ج٣، ص ١١.
 - 🗗 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص١١٦.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول... إلخ، ج٣، ص١٤.

منے کا بیان کے کھنے کا بیان

کھی است کی اورسب نے اس کی خبر دی کہ مستقدہ جماعتیں دوسر سے شہر میں آئیں اورسب نے اس کی خبر دی کہ وہاں خان میں اور سب نے اس کی خبر دی کہ وہاں خان میں اور میں میں میں میں بیابات مشہور ہے اور وہاں کے لوگوں نے رویت کی بنا پر فلال دن سے روز سے شروع

ن برادر المحتار) کے لیے بھی ثبوت ہوگیا۔ (۱) (روالمحتار)

مستان و رہنان کی جاندرات کو اَبرتھا، ایک شخص نے شہادت دی اوراس کی بناپرروز ہے کا تھم دے دیا گیا، اب عید کا جاندرا کی جاندرات کو ایر تھا، ایک شخص نے شہادت دی اورا گرمطلع صاف ہے تو عید نہ کریں، گرجبکہ دو

پ عادلوں کی گواہی سے رمضان ثابت ہوا ہو۔ ⁽²⁾ (درمختار ، ردالحتار)

مطلع ناصاف ہے تو علاوہ رمضان کے شوال و ذی الحجہ بلکہ تمام مہینوں کے لیے دومر دیا ایک مرداور دو عورتیں گواہی دیں اور سب عادل ہوں اور آزاد ہوں اور ان میں کسی پرتہت زنا کی حد نہ قائم کی گئی ہو، اگر چہ تو ہہ کر چکا ہواوریہ بھی شرط ہے کہ گواہ گواہی دیتا ہوں۔(3) (عامهٔ کتب)

سکان ال کا کول میں دوشخصوں نے عید کا جاند دیکھا اور مطلع نا صاف ہے اور وہاں کوئی ایسانہیں جس کے پاس

شهادت دیں تو گاؤں والوں ہے کہیں،اگریہ عادل ہوں تولوگ عید کرلیں۔⁽⁴⁾ (عالمگیری)

سَسَعَالُہُ ۲۳﴾ تنہاامام یا قاضی نے عید کا جاند دیکھا تو انھیں عید کرنایا عید کا تکم دینا جائز نہیں۔(5) (درمختار وغیرہ) سستانہ ۳۳﴾ انتیار مضان کو کچھ لوگوں نے بیشہادت دی کہ ہم نے لوگوں سے ایک دن پہلے جاند دیکھا جس کے

سین مقبول کے اور اور ایر میان کی گواہی مقبول نہیں کہ وقت پر گواہی کیوں نہ دی اورا گریہاں نہ تھے۔ حساب سے آج تمیں ہے تو اگر میانوگ بہیں تھے تو اب ان کی گواہی مقبول نہیں کہ وقت پر گواہی کیوں نہ دی اورا گریہاں نہ تھے۔ اور عادل ہوں تو قبول کر لی جائے۔ (6) (عالمگیری)

رمضان کا چاند دکھائی نہ دیا، شعبان کے تین دن پورے کر کے روزے شروع کر دیے، اٹھائیس بی روزے رکھے تھے کہ عید کا چاند ہوگیا تو اگر شعبان کا چاند دیکھ کرتمیں دن کا مہینة قرار دیا تھا تو ایک روزہ رکھیں اور اگر شعبان کا بھی

- "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول الحساب مردود، ج٣، ص١٤٠.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول الحساب مردود،
 - ③ الفتاوى الهنديه"، كتاب الصوم، الباب الثانى في رؤية الهلال، ج١٠ص١٩٨.
 - ١٩٨٠، "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١٠ ص١٩٨.
 - الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٨، وغيره.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١٠ ص١٩٨.

بِ 🔐 چانددکھائی نہ دیاتھا، بلکہ رجب کی تمنی تاریخیں بوری کر کے شعبان کامہینہ شروع کیا تو دوروز بے قضا کے رکھیں۔(1)(عالمگیری)

سَسَعَالُهُ ٢٥﴾ ﴿ ون ميں ہلال وکھائی وياز وال ہے پہلے يا بعد، بہرحال وہ آئندہ رات کا قرار ديا جائے گا يعني اب جو

رات آئے گی اس سے مہینہ شروع ہوگا تو اگر تیسویں رمضان کے دن میں دیکھا توبید دن رمضان ہی کا ہے شوال کانہیں اور روزہ بورا کرنا فرض ہے اور اگر شعبان کی تیسویں تاریج کے دن میں دیکھا تو بیدن شعبان کا ہے رمضان کانہیں للبذا آج کاروزہ فرض

نهیں _⁽²⁾ (درمختار، ردامختار) مستان کی ہے۔ ایک جگہ جاند ہوا تو وہ صرف وہیں کے لیے نہیں، بلکہ تمام جہان کے لیے ہے۔ مگر دوسری جگہ کے لیے

اس کا حکم اُس وفت ہے کہ اُن کے نز دیک اُس دن تاریخ میں جاند ہونا شرعی ثبوت سے ثابت ہوجائے (3) یعنی دیکھنے کی گواہی یا قاضی کے حکم کی شہادت گزرے یا متعدد جماعتیں وہاں ہے آ کر خبر دیں کہ فلاں جگہ جاند ہوا ہے اور وہاں لوگوں نے روزہ

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص٩٩.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في اختلاف المطالع، ج٣، ص١٧ ك.
- 🚯 مجد دِاعظم ،اعلیٰ حضرت ،امام احمد رضاخان علیه رحمته الرحن فرماتے ہیں : که رویت ہلال کے ثبوت کے لیے شرع میں سات طریقے ہیں : (۱) خودشهادت رویت یعنی جاند دیکھنے والوں کی گواہی۔
- (۲) شہادۃ علی الشہادۃ ۔ یعنی گواہوں نے جا ندخود نہ در میصا بلکہ در میکھنے والوں نے ان کے سامنے گواہی دی اور اپنی گواہی پر انہیں گواہ کیا۔
- انہوں نے اس گواہی کی گواہی دی۔ بیرو ہاں ہے کہ گواہان اصل حاضری سے معذور ہوں۔
- (۳) شہادۃ علی القضاء یعنی دوسر ہے کسی اسلامی شہر میں جا کم اسلام کے بیہاں رویت ہلال پرشہاد تیں گزریں اوراس نے ثبوت ملال کا تھم دیا اور دوعادل گواہوں نے جواس گواہی کے وقت موجود تھے،انہوں نے دوسرے مقام پراس قاضی اسلام کے روبرو گواہی گزرےاور قاضی کے حکم برگواہی دی۔
- (۴) کتابالقاضی الی القاضی بینی قاضی شرع جے سلطان اسلام نے مقد مات کا اسلامی فیصلہ کرنے کے لیےمقرر کیا ہووہ دوسرے شہر کے قاضی کو، گواہیاں گزرنے کی شرعی طریقے پراطلاع دے۔
- (۵) استفاضه یعنی کسی اسلامی شهرسید متعدد جماعتیں آئیں اور سب یک زبان اپنے علم سے خبر دیں کہ وہاں فلال دن رویب ہلال کی بنا ىرروز ە ہوا باعبد كى گئى۔
- (۲) اکمال مدت لیخی ایک مہینے کے جب تیس ۳۰ دن کامل ہوجا کیں تو دوسرے ماہ کا ہلال آپ ہی ثابت ہوجائے گا کہ مہینہ تیس ۳۰ سے زائد کانہ ہونا نیٹنی ہے۔
- (۷) اسلامی شہر میں حاکم شرع کے حکم سے انتیس ۲۹ کی شام کومثلاً تو میں داغی گئیں یا فائر ہوئے تو خاص اس شہر والوں یااس شہر کے گر د اگردیبات والوں کےواسطے تو یوں کی آ وازیں سننا بھی ثبوت ہلال کے ذریعوں میں سےایک ذریعہ ہے۔

(انظر: "الفتاوي الرضوية"، ج١٠، ص٥٠٥ ـ ٢٢٠، ملحصاً).

بهَارِشْرِيْحَتْ خِصَّةٌ ثُمُّ (5)

کے رکھایاعید کی ہے۔⁽¹⁾(درمختار)

سین از اری افواہ اور جنتریوں اور اخباروں میں چھپا ہونا کوئی ثبوت ہے۔ آج کل عموماً ویکھا جاتا ہے کہ انتیش رمضان کو بکثرت ایک جگہ سے دوسری جگہ تار بھیجے جاتے ہیں کہ چاند ہوایا

کوئی تبوت ہے۔ان کل عموما ویلھا جاتا ہے کہ اسٹیس رمضان کو بلتر ت ایک جلہ سے دوسری جلہ تار بھیجے جاتے ہیں کہ جاند ہوایا نہیں،اگر کہیں سے تارآ گیا بس لوعیدآ گئی میرمض ناجائز وحرام ہے۔ ...

تارکیا چیز ہے؟ اولا تو بہی معلوم نہیں کہ جس کا نام کھا ہے واقعی اُسی کا بھیجا ہوا ہے اور فرض کرواُسی کا ہو تو تھارے
پاس کیا ثبوت اور یہ بھی سہی تو تارمیں اکثر غلطیاں ہوتی ہیں رہتی ہیں ، ہاں کا نہیں نہیں کا ہاں معمولی بات ہے اور مانا کہ بالکل شیح بہی اور ہے تھی ہیں اور وہ بھی ہیں واسطہ ہے اگر تارد سنے والا انگریزی پڑھا ہوا نہیں تو کسی اور ہے تھوائے
گا معلوم نہیں کہ اُس نے کیا کھے والی اُس نے کیا کھا ، آ دمی کو دیا اُس نے تارد سنے والے کے حوالہ کیا ، اب یہاں کے تارگھر میں پہنچا
تو اُس نے تقسیم کرنے والے کو دیا اُس نے اگر کسی اور کے حوالے کر دیا تو معلوم نہیں کتنے وسالط ہے اُس کو ملے اور اگراسی کو دیا
جب بھی کتنے واسطے ہیں پھرید دیکھیے کہ سلمان مستور جس کا عادل و فاسق ہونا معلوم نہ ہوا س تک کی گواہی معتبر نہیں اور یہاں
جب بھی کتنے واسطے ہیں پھرید دیکھیے کہ سلمان مستور جس کا عادل و فاسق ہونا معلوم نہیں کا وجود معلوم نہیں ہوتا اور اگراسی کو دیا
جن جن ذریعوں سے تاریب نچا اُن میں سب کے سب مسلمان بی ہوں ، یہ ایک عقلی اختال ہے جس کا وجود معلوم نہیں ہوتا اور اگری کو خوالہ کیا اعتبار اور مسلمان نے بہر ہوتا میں اُس کی عمر بھی ہوکہ النہ ہوتا کے اگر کسی کا فرنے پڑھا تو کیا اعتبار اور مسلمان نے دیا کا توا عتبار بھی نہیں فتہا نے خط کا توا عتبار بھی نہیں تو تاری کا عتبار کو کھوتی ہیں فقہا نے خط کا توا عتبار بھی نہیں نہیں ہوتا ہے استبدہ النہ المنات میں میں ہو کہا تا ہے ادر مُر مُر مرکے ۔ تو کہا تار ۔ واللہ تعالی اعلی ۔ مشیلہ ہوتا ہے اور مُر مُر مرکے ۔ تو کہا تار ۔ واللہ تعالی اعلی ۔

سَمَالُهُ ٢٨﴾ بلال (3) و مکيو کراُس کی طرف انگل سے اشارہ کرنا مکروہ ہے (4)، اگر چہدوسرے کو بتانے کے ليے ہو۔ (5) (عالمگیری، درمختار)

ان چیزوں کا بیان جن سے روزہ نھیں جاتا

خلاینت 🕕 💝 بخاری وضیح مسلم میں ابو ہر بر ہ درضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہ^ملم فر ماتے ہیں:'' جس

🕕 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٩ ٤١ .

4 كيونكه بيابلِ جاہليت كاعمل ہے۔

5 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في اختلاف المطالع، ج٣، ص ٤١٩.

وزه دارنے بھول کر کھایا یا پیا، وہ اپنے روز ہ کو پورا کرے کہ اُسے اللہ (عز دجل) نے کھلایا اور پلایا۔'' (1)

خلیث 🥕 ابوداود وتر مذی وابن ماجه و دارمی ابو ہر رہے وہی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فر مایا:

"جس پرقے نے غلبہ کیا،اس پر قضانہیں اورجس نے قصداً قے کی،اس پر روزہ کی قضاہے۔" (2)

خلینت سی سے ترمذی انس رضی اللہ تعالی عنہ ہے راوی ، کہ ایک شخص نے خدمت اقد س میں حاضر ہو کر عرض کی ، میری آنکھ

میں مرض ہے، کیاروزہ کی حالت میں سرمہ لگاؤں؟ فرمایا: 'مال۔'' (3)

<u> کریٹ کی بند کی ابوسعیدرضی الله تعالی عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: '' تین چیزیں روز ونہیں ، </u>

توڑتیں، پچھِنااور قے اوراحتلام۔'' ⁽⁴⁾

تنبید: اس باب میں ان چیز وں کا بیان ہے، جن ہے روزہ نہیں ٹوٹما۔ رہا بیامر کہ اُن سے روزہ مکروہ بھی ہوتا ہے یا نہیں اس سے اس باب کتعلق نہیں ، نہ یہ کہ وہ فعل جائز ہے یا ناجائز۔

سَسَعَانُ الله بھول کر کھایا یا پیا یا جماع کیا روزہ فاسد نہ ہوا۔خواہ وہ روزہ فرض ہو یانفل اورروزہ کی بیت سے پہلے یہ چیزیں پائی گئیں یا بعد میں، مگر جب یا دولانے پر بھی یا دنہ آیا کہ روزہ دارہے تواب فاسد ہوجائے گا،بشر طیکہ یا دولانے کے بعد بیا فعال واقع ہوئے ہوں مگر اس صورت میں کفارہ لازم نہیں۔ (5) (درمخار،ردالمحار)

سَسَعَانُ کَ اَسْ اَوْرَهُ وَارْ وَارْ وَارْ وَانْ افعال مِیْنْ دیکھے تو یا دولا نا واجب ہے، یا د نه دلایا تو کنهگار ہوا، مگر جب که وہ روزہ دار بہت کمز ور ہوکہ یا دولائے گا تو وہ کھانا چھوڑ دے گا اور کمز وری اتنی بڑھ جائے گی کہ روزہ رکھنا دشوار ہوگا اور کھالے گا تو روزہ بھی اوچھی طرح پورا کرلے گا اور دیگر عبادتیں بھی بخو بی اواکر لے گا تو اس صورت میں یا د نه دلا نا بہتر ہے۔

بعض مشائ نے کہا جوان کو دیکھے تو یا دولا دے اور بوڑھے کو دیکھے تو یا دخہ دلانے میں حرج نہیں۔ مگریہ تکم اکثر کے لحاظ سے ہے کہ جوان اکثر قوی ہوتے ہیں اور بوڑھے اکثر کمزور اور اصل تکم یہ ہے کہ جوانی اور بڑھا پے کوکوئی دخل نہیں، بلکہ قوت وضعف (6) کا لحاظ ہے، لہذا اگر جوان اس قدر کمزور ہو تو یا دنہ دلانے میں حرج نہیں اور بوڑھا قوی ہو تو یا دولانا

- ❶ "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب أكل الناسي وشربه وجماعه لايفطر، الحديث: ٥١١، ص٥٨٢.
- 2 "جامع الترمذي"، أبواب الصوم... إلخ، باب ماجاء فيمن استقاء عمدا، الحديث: ٧٢٠، ج٢، ص١٧٣.
 - 3 "جامع الترمذي"، ابواب الصوم، باب ماجاء في الكحل للصائم، الحديث: ٢٢٦، ج٢، ص١٧٧.
 - ◘ "جامع الترمذي"، ابواب الصوم، باب ماجاء في الصائم يذرعه القيء، الحديث: ٧١٩، ج٢، ص١٧٢.
 - €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص١٩.
 - ه العنی طاقت اور جسمانی کمزوری ₋ ها

واجب _(ردالحتار)

اڑتا ہے یاغلّہ کا غبار ہو یا ہوا سے خاک اُڑی یا جانوروں کے کھر یا ٹاپ سے غبار اُڑ کرحلق میں پہنچا، اگر چہروزہ دار ہونا یا دتھا اور اگر خود قصد اُدھواں بہنچایا تو فاسد ہو گیا جبکہ روزہ دار ہونا یا دہو، خواہ وہ کسی چیز کا دھواں ہوا ورکسی طرح پہنچایا ہو، یہاں تک کہ اگر کی بتی وغیرہ خوشبوسُلگتی تھی، اُس نے موزھ قریب کر کے دھوئیں کوناک سے کھینچاروزہ جاتارہا۔ یو ہیں دہتہ بینے سے بھی روزہ ٹوٹ

ی ویره و او سن ۱۰۰ س می و در الا اگر پید کا تو کفاره بھی لازم آئے گا۔ (در محتار، روالمحتار وغیر ہما)

<u> تسعَالُهُ ﷺ</u> بھری سَلَّی لگوائی ⁽³⁾ یا تیل یاسُر مدلگایا تو روزه نه گیا، اگر چه تیل یاسُر مه کا مزه حلق میں محسوس ہوتا ہو بلکه تھوک میں سرمه کارنگ بھی دکھائی دیتا ہو، جب بھی نہیں ٹوٹا۔ ⁽⁴⁾ (جو ہرہ، ردالمحتار)

سَسَعَانُ کُ اِی شرمگاہ کی شرمگاہ کی اور وز نہیں ٹوٹا۔ یو ہیں عورت کی طرف بلکہ اس کی شرم گاہ کی طرف نظر کی مگر ہاتھ نہ لگایا اور انزال ہو گیا ،اگر چہ بار بارنظر کرنے یا جماع وغیرہ کے خیال کرنے سے انزال ہوا،اگر چہ دیر تک خیال جمانے سے ایسا ہوا ہوان سب صورتوں میں روز نہیں ٹوٹا۔ (⁵⁾ (جو ہرہ، درمختار)

سَسَنَانُ الْ بَالَكُل بَهِينَك دیا صرف کچھ تری مونھ میں اس کا مزہ محسوں ہوئی یا گئی کی اور پانی بالکل بھینک دیا صرف کچھ تری مونھ میں باقی رہ گئی تھوک کے ساتھ اقی رہ گئی تھوک کے ساتھ اقلی رہ گئی تھوک کے ساتھ ہڑ (⁷⁾ کا کوئی مُجْرَحُلق میں نہ پہنچایا کان میں پانی چلا گیایا تک سے کان تھجایا اور اُس پر کان کامیل لگ گیا بھر وہی میل لگا ہوا تنکا کان میں ڈالا ،اگر چہ چند بارکیا ہویا دانت یا مونھ میں خفیف چیز بے معلوم ہی رہ گئی کہ لعاب کے ساتھ خود ہی اُتر جائے گی اور وہ

- € "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٠٠.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٠٠. وغيرهما
- جہاں تنی لگانی ہوتی ہے پہلے اس جگہ کو تیز دھارا ٓ لے (استرے) وغیرہ سے زخم لگاتے ہیں، پھر کسی جانور کے سینگ کا چوڑ احصہ زخم پر رکھ کر اس کا باریک حصہ اپنے منہ میں لے کرزور سے چوستے ہیں، پھراس سوراخ کو آٹے وغیرہ سے بند کردیتے ہیں، پھر جب اکھیڑتے ہیں تو فاسد خون نکل جاتا ہے۔
 - "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٩.

و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب: يكره السهر... إلخ، ج٣، ص ٤٢١.

- 5 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٨.
- و "الدرالمختار" كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٢١.
 - 🗗 ایک دوا کا نام_
- 🔬 6 گھنڈک۔

اُر گئی یا دانتوں سے خون نکل کرحلق تک پہنچا، مگرحلق سے نیچے ندائر اتوان سب صورتوں میں روزہ ند گیا۔ ⁽¹⁾ (درمیتار، فتح القدیر)

روزہ دار کے بیٹ میں کسی نے نیزہ یا تیر بھونک دیا، اگر چداس کی بھال یا پیکان (2) بیٹ کے اندررہ گئی یا اس کے بیٹ میں تک زخم تھا، کسی نے کنکری ماری کہ اندر چلی گئی تو روزہ نہیں ٹوٹا اور اگر خوداس نے بیسب کیا اور بھال یا یکان یا کنکری اندررہ گئی تو جا تار ہا۔ (3) (درمختار، ردالمختار)

سَمَعُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَ

سَسَعَالُهُ ﴿ ﴾ كَلَمِي حَلَق مِين جِلَى تَى روزه نه كيا اورقصداً نَكَلَى توجا تار ہا۔ (5) (عالمگيري)

مسئان السلام بھولے ہے جماع کرر ہاتھا یادآتے ہی الگ ہوگیا یاضح صادق سے پیشتر جماع میں مشغول تھا سبج ہوتے ہی جدا ہوگیا دورہ نے بی الگ ہوگیا ہواگر چددونوں صورتوں میں جدا ہونا یادآنے ہی جدا ہوگیا ہواگر چددونوں صورتوں میں جُدا ہونا یادآنے اور سبح ہونے پر فوراً الگ نہ ہوا گر چھرف ٹھہر گیا اور حرکت اور شبح ہونے پر فوراً الگ نہ ہوا اگر چھرف ٹھہر گیا اور حرکت نہی روزہ جاتارہا۔ (6) (درمختار)

سَمَعُ اللّٰهِ اللّٰهِ بِهِولِے سے کھانا کھار ہاتھا، یاد آتے ہی فوراً لقمہ بھینک دیایا صبح صادق سے پہلے کھار ہاتھا اور صبح ہوتے ہی اُگل دیا، روزہ نہ گیا اورنگل لیا تو دونوں صورتوں میں جاتار ہا۔⁽⁷⁾(عالمگیری)

مَسِنَاكُ اللهِ ﴿ عَيرسبيلين (8) ميں جماع كيا تو جب تك انزال نه ہوروزہ نہ ٹوٹے گا۔ يو ہیں ہاتھ ہے منی نكالنے میں

- الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٢١.
 و "فتح القدير"، كتاب الصوم، باب ما يوجب القضاء و الكفارة، ج٢، ص٢٥٧ _ ٢٥٨.
 - 🗗 تیریا نیزے کی نوک۔
 - € "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٣.
- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٣.

و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم... إلخ، مطلب في حكم الاستمناء بالكف، ج٣، ص٤٢٨.

- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٣.
 - € "الدرالمختار"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٤.
- ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٣.
 - 🔞 کینی آ گے اور پیچھے کے مقام کے علاوہ۔

ر به کر ریک دی ازان)

اگرچەر پیخت حرام ہے کہ حدیث میں اسے ملعون فر مایا۔ (1) (درمختار)

کی فرج کو چُھوا توروزہ نہ گیااگر چانزال ہو گیاہو۔⁽²⁾ (درمختار)

مسئانی ایس احتلام ہوایا غیبت کی توروزہ نہ گیا (³⁾،اگرچہ غیبت بہت سخت کبیرہ ہے۔

قرآن مجيد مين غيبت كرنے كى نسبت فرمايا: ' جيسے اپنے مُر دہ بھائى كا گوشت كھانا۔'' (4)

اور حدیث میں فرمایا: ''غیبت زنا ہے بھی سخت تر ہے۔'' (⁵⁾ اگر چہ غیبت کی وجہ سے روزہ کی نورانیت جاتی رہتی ہے۔ ے۔(درمختاروغیرہ)

سَمَالَ الله الله عناب (6) کی حالت میں صبح کی بلکداگر چیسارے دن جنب رہاروزہ نہ گیا (7) مگراتنی دیر تک قصداً عنسل نہ کرنا کہ نماز قضا ہوجائے گناہ وحرام ہے۔ حدیث میں فرمایا: کہ جنب جس گھر میں ہوتا ہے، اس میں رحمت کے فرشتے نہیں آتے۔ (8) (درمخاروغیرہ)

سَسَنَاكُ اللهِ جَن يعني پرى سے جماع كيا توجب تك انزال نه ہو، روزه نه ٹوٹے گا۔ (9) (روالحتار) يعنی جب كه انسانی

شکل میں نہ ہواورانسانی شکل میں ہوتو وہی حکم ہے جوانسان سے جماع کرنے کا ہے۔

<u> مست کی کا گ</u> تیل یا تِل کے برابر کوئی چیز چبائی اور تھوک کے ساتھ طلق ہے اُتر گئی تو روزہ نہ گیا، مگر جب کہ اس کا مزہ حلق میں محسوس ہوتا ہو تو روزہ جاتار ہا۔⁽¹⁰⁾ (فتح القدیر)

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٦.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٢٧٠.
 - € "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٢٨،٤٢.
 - 4 ٢٦، الحجرات: ١٢.
 - المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ٩٠٩٠، ج٥، ص٦٣.
 - **ہ** سے بعنی غسل فرض ہونے۔
 - 7 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٢٨٥.
- انظر: "سنن أبى داود"، كتاب الطهارة، باب في الجنب يؤخر الغسل، الحديث: ٢٢٧، ج١٠ ص١٠٩.
 - 9 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في جواز الافطار بالتحري، ج٣، ص ٤٤٢.
 - 🐠 "فتح القدير"، كتاب الصوم، باب ما يوجب القضاء و الكفارة، ج٢، ص٩٥٠.

روزہ توڑنے والی چیزوں کا بیان

اگرچەر كەبھى لے۔'' ⁽¹⁾ يعنى وە فضيلت جورمضان ميں ركھنے كى تھى كسى طرح حاصل نہيں كرسكتا تو جب روز ہندر كھنے ميں بيہ

سخت وعید ہے رکھ کرتوڑ دینا تواس سے سخت ترہے۔

خالینٹ کا کہتے ہیں میں حیان اپنی صحیح میں ابوامامہ با ہلی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہتے ہیں میں نے رسول اللہ

ہیں پھر مجھے آگے لے گئے، میں نے ایک قوم کودیکھا کہ وہ لوگ اُلٹے لٹکائے گئے ہیں اور اُن کی باچھیں چیری جارہی ہیں،جن سےخون بہتا ہے۔ میں نے کہا:'' یکون لوگ ہیں؟ کہا:'' یہ وہ لوگ ہیں کہ وقت سے پہلے روز ہ افطار کردیتے ہیں۔'' (2)

کے دی جہا ہے۔ ابویعلیٰ باسنادھن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنباسے راوی ، که''اسلام کے کڑے اور دین کے قواعد تین ہیں ،

جن پراسلام کی بنامضبوط کی گئی، جو اِن میں ایک کوترک کرے وہ کا فرہے، اُس کا خون حلال ہے، کلمہ توحید کی شہادت اور نمازِ فرض اور روز وَرمضان ۔'' ⁽³⁾

اورایک روایت میں ہے،''جو اِن میں سے ایک کو ترک کرے، وہ اللہ (عزوجل) کے ساتھ کفر کرتا ہے اوراس کا فرض و نفل کچھ مقبول نہیں'' (4)

مَسِعَكُوْلِ ﴾ كھانے پينے، جماع كرنے سے روزہ جاتار ہتا ہے، جبكہ روزہ دار ہونایا دہو۔ ⁽⁵⁾ (عامهُ كتب)

- "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في الإفطار متعمدا، الحديث: ٧٢٣، ج٢، ص١٧٥.
- الخ، الحديث: ١٩٨٦. "صحيح ابن خزيمة"، أبواب صوم التطوع، باب ذكرتعليق المفطرين قبل وقت الإفطار... إلخ، الحديث: ١٩٨٦.
 ج٣، ص٣٧٧.
 - 3 "مسند أبي يعلى"، مسند ابن عباس، الحديث: ٢٣٤٥، ج٢، ص٣٧٨.
 - الترغيب و الترهيب"، كتاب الصوم، الترهيب من إفطار شئى من رمضان من غير عذر، الحديث: ٣، ج٢، ص٦٦.
 - 5 "الهداية "، كتاب الصوم، باب مايوجب القضاء والكفارة، ج١٠ص٠١٠.

میں روز ہ جا تار ہااورا گرکم تھااور مز ہ بھی محسوں نہ ہوا، تونہیں ۔⁽²⁾ (درمختار)

بَيْنَ مُسكَلِّلًا ﴾ مُقد، سكار، سكريث، چرٹ يينے سے روزہ جاتار ہتا ہے، اگر چدا پنے خيال ميں حلق تک دھواں نہ پہنچاتا ہو،

بلکہ پان یا صرف تمباکو کھانے ہے بھی روزہ جاتارہے گا،اگرچہ پیکتھوک دی ہو کہاس کے باریک اجزا ضرور حلق میں پہنچتے

یو ہیں دانتوں کے درمیان کوئی چیز چنے کے برابریا زیادہ تھی اُسے کھا گیایا کم ہی تھی ⁽¹⁾، مگر مونھ سے نکال کر پھر کھالی یا دانتوں سے خون نکل کرحلق سے بنیچے اُتر ااور خون تھوک سے زیادہ پا برابر تھایا کم تھا، مگراس کا مزہ حلق میں محسوس ہوا تو ان سب صورتوں

سَسَعَالُهُ ﴾ روزہ میں دانت اکھڑ وایا اورخون نکل کرحلق ہے نیچے اُترا، اگر چہسوتے میں ایسا ہوا تو اس روزہ کی قضا واجب ہے۔(3)(ردالحتار)

مسئل کی چنر پاخانہ کے مقام میں رکھی ،اگراس کا دوسراسرا باہرر ہا تونہیں ٹوٹا، ورنہ جاتار ہالیکن اگروہ ترہے اوراس کی رطوبت اندر پینچی تو مطلقاً جاتار ہا، یہی حکم شرم گاہ زن (4) کا ہے، شرمگاہ ہے مراداس باب میں فرح داخل (5) ہے۔ یو ہیں اگر ڈورے میں بوٹی باندھ کرنگل لی،اگر ڈورے کا دوسرا کنارہ باہرر ہااور جلد نکال لی کہ گلنے نہ یائی تونہیں گیااوراگر ڈ ورے کا دوسرا کنارہ بھی اندر چلا گیایا ہوٹی کا بچھ حصہ اندررہ گیا توروز ہ جاتار ہا۔ ⁽⁶⁾ (درمختار ، عالمگیری)

مَسْتَانُ کی ﷺ عورت نے بیشاب کے مقام میں روئی کا کپڑ ارکھااور بالکل باہر ندر ہا، روزہ جاتار ہااورخشک انگلی یاخانہ کے مقام میں رکھی یاعورت نے شرمگاہ میں توروزہ نہ گیااور بھیگی تھی یااس پر کچھالگا تھا تو جاتار ہا، بشرطیکہ یاخانہ کے مقام میں اُس جگه رکھی ہو جہاںعمل دیتے وقت حقنہ کا سرار کھتے ہیں ۔⁽⁷⁾ (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

📭 گرفتخ القدریمیں فرمایا کہ اگراتنی ہو کہ بغیر تھوک کے مدد کے حلق سے نیچے اتر سکتی ہے تو اس ہے بھی روزہ ٹوٹ جائے گا۔اورا گراتنی خفیف ہو کہ لعاب کے ساتھ اتر سکتی ہے در نہبیں تو روز نہبیں ٹوٹے گا۔۱۲منہ

- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٢٢٦.
- 3 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم... إلخ، مطلب: يكره السهر اذا خاف فوت الصبح، ج٣، ص٢٢٤.
 - 🗗 گیخی شرمگاه کااندرونی حصه 4 عورت کی شرمگاہ۔
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٢٢٠.
 - و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.
 - 🕡 "الفتاوي الهندية"، المرجع السابق، و "الدرالمختار"، المرجع السابق، ص٢٤.

ﷺ مسئلہ کے 🔑 مبالغہ کے ساتھ استنجاکیا، یہاں تک کہ حقنہ رکھنے کی جگہ تک پانی پینچ گیا،روز ہ جاتار ہااورا تنامبالغہ چاہیے

بھی نہیں کہاس سے سخت بیاری کا اندیشہ ہے۔ (1) (ورمختار)

سَسَعَالُهُ ﴾ مرد نے پیثاب کے سوراخ میں پانی یا تیل ڈالا تو روزہ نہ گیا،اگرچہ مثانہ تک پہنچ گیا ہواورعورت نے

شرمگاه میں ٹیکایا توجا تار ہا۔⁽²⁾(عالمگیری)

خشک اورا گرمعلوم نه هو که د ماغ پاشکم تک پیچی یانهیں اوروہ دواتر تھی ، جب بھی جا تار ہااور خشک تھی تونہیں۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سَسَعَالُهُ 10 ﴾ حشنه (4) کیایا نتھنوں ہے دواچڑ ھائی یا کان میں تیل ڈالایا تیل چلا گیا،روز ہ جا تار ہااور پانی کان میں چلا

گياما د الا تونهير په ⁽⁵⁾ (عالمگيري)

سَسَعَانُ اللَّهِ ﴿ كَلِّي كُرِرِ مِا تَصَادِ بِانِي حَلْق ہے أُمّر كَيايا ناك ميں پانی چڑھايا اور د ماغ كوچڑھ گياروز ہ جاتار ہا،مگر جبكيه روزہ ہونا بھول گیا ہو تو نہ ٹوٹے گا اگر چہ قصداً ہو۔ یو ہیں کسی نے روزہ دار کی طرف کوئی چیز بھینکی، وہ اُس کے علق میں چلی گئ روزه جاتار ہا۔⁽⁶⁾(عالمگیری)

مَسْعَالُهُ اللَّهِ ﴿ سُوتَ مِينَ بِإِنِّي بِي لِيايا كِي كُلِيايا مُونِه كُلُولا تَقَااور ياني كا قطره يااولاحلق مين جار ہاروزہ جاتار ہا۔ (7) (جوہرہ،عالمگیری)

سَسَانُ اللهِ ورسرے کا تھوک نگل گیایا اپناہی تھوک ہاتھ پر لے کرنگل گیاروزہ جاتارہا۔(8) (عالمگیری)

مونھ میں نگین ڈورارکھا جس سے تھوک نگین ہو گیا پھرتھوک نگل لیاروز ہ جاتار ہا۔⁽⁹⁾ (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ وورا بٹااسے تر کرنے کے لیے مونھ پر گزارا پھر دوبارہ، سہ بارہ۔ یو ہیں کیا روزہ نہ جائے گا مگر جبکہ

- ❶ "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٤.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.
 - 3 المرجع السابق.
 - **4** یعنی کسی دوا کی بتی یا بچکاری چیھیے کے مقام میں چڑھانا جس سے اجابت ہوجائے۔
- 🗗 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.
 - 6 المرجع السابق، ص٢٠٢.
 - 7 المرجع السابق. و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٨.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٣.
 - 🧝 9 المرجع السابق.

یک ڈورے سے پچھ رطوبت جُدا ہو کر مونھ میں رہی اور تھوک نگل لیا تو روزہ جاتارہا۔ ⁽¹⁾ (جوہرہ)

سَمَعَانُ 12 ﴾ پاخانہ کا مقام ہاہرنگل پڑا تو تھم ہے کہ کپڑے سے خوب پونچھ کراُٹھے کہ تری بالکل ہاتی نہ رہے اوراگر کچھ انی اُس بر اقی تھااور کھڑا ہوگیا کی اندر کو جااگراتور وزوز اسد ہوگیا۔ اسی وجہ سرفقہا کی کرام فریا۔ ترین کی وزودار

کچھ پانی اُس پر باقی تھااور کھڑا ہوگیا کہ پانی اندر کو چلا گیا تو روزہ فاسد ہوگیا۔ای وجہ سے فقہائے کرام فرماتے ہیں کہ روزہ دار استنجا کرنے میں سانس نہ لے۔⁽³⁾(عالمگیری)

مسئل المراب عورت كابوسدليايا چُھوا يامباشرت كى يا گلے لگايا اور اِنزال ہوگيا توروزہ جا تار ہااورعورت نے مردكو چُھوا اورم دكوانزال ہوگيا توروزہ نہ گيا۔عورت كوكيڑے كے اوپرسے چُھوا اور كيڑا اتناد بيز ہے كہ بدن كى گرمی محسوس نہيں ہوتی تو فاسد نہ ہوا اگر چدانزال ہوگيا۔ (4) (عالمگيرى)

مسئ اور بلااختیار است کم کی تو نہیں اور بروزہ دار ہونایاد ہے تو مطلقاً روزہ جاتار ہااوراس سے کم کی تو نہیں اور بلااختیار قع ہوئی تو بھر مونھ ہے یا نہیں اور بہر تقدیر وہ لوٹ کر حلق میں چلی گئی یا اُس نے خودلوٹائی یا نہ لوٹائی تو اگر بھر مونھ نہ ہو تو روزہ نہ گیا، اگر چہلوٹ گئی یا اُس نے خودلوٹائی اور بھر مونھ ہے اور اُس نے لوٹائی، اگر چہاں میں سے صرف چنے برابر حلق سے اُتری توروزہ جاتار ہاور نہیں۔ (در مختار وغیرہ)

مسئان الله عنه المستكام أل وقت بي كه قي مين كهانا آئ يا صفرا (6) يا خون اوربلغم آيا تو مطلقاً روزه نه لونا - (عالمليري)

سَعَانَ اللهِ اللهِ عَلَى الله عَدْر جَوْخُصُ عَلَانيةِ قَصَداً كَهَائِ تَوْحَكُم ہے كَداُسِةِ لَكِ يَا جَائِ _ (8) (روالمحتّار)

- 1 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨١.
- ۲۰۳۰ "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٣.
 - 3 المرجع السابق، ص٢٠٤.
 - 4 المرجع السابق، ص٢٠٤ _ ٢٠٥.
- الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، ج٣، ص ٠٥، وغيره.
 - 6 لیعنی کڑوایانی۔
 - **7**..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.
- 🔊 🔞 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤٩.

أن صورتوں كا بيان جن ميں صرف قضا لازم ھے

سیکان کی ایک تھا کہ میں نہیں ہوئی اور کھایا پیایا جماع کیا بعد کو معلوم ہوا کہ میں ہو چکی تھی یا کھانے پینے پر مجبور کیا گیا لین کی ایک میں ایک روزہ رکھنا لین ایک روزہ رکھنا کی ایک روزہ رکھنا پڑھے گا۔ (2) (درمختار وغیرہ)

مَسَعَلَیْ کَ ﴾ بھول کر کھایا یا پیایا جماع کیا تھایا نظر کرنے سے انزال ہوا تھایا احتلام ہوایاتے ہوئی اوران سب صورتوں میں بہ گمان کیا کہ روزہ جاتار ہاات قصداً کھالیا تو صرف قضافرض ہے۔(3) (درمختار)

مستان سے دواچڑھائی یا پھر، تنگری، مٹی، روئی، کاغذ، گھاس وغیر ہاالی چیز کھائی جس سے لوگ گھن کرتے ہیں یار مضان میں بلا اپنے سے دواچڑھائی یا پھر، تنگری، مٹی، روئی، کاغذ، گھاس وغیر ہاالی چیز کھائی جس سے لوگ گھن کرتے ہیں یار مضان میں بلا متیت روزہ روزہ کی طرح رہایا ہے کو نتیت نہیں کی تھی، دن میں زوال سے پیشتر نتیت کی اور بعد نتیت کھالیا یا روزہ کی نتیت تھی مگر روزہ رمضان کی نتیت نتھی یااس کے علق میں مینے کی بوند یا اولا جارہا یا بہت سا آنسو یا پیدنے گل گیا یا بہت چھوٹی لڑکی سے جماع کیا جو قابلِ جماع نتھی یا مردہ یا جانور سے وطی کی یاران یا پیٹ پر جماع کیا یا بوسہ لیا یا عورت کے ہونٹ پھو سے یا عورت کا بدن چھوا اگر چہکوئی کیڑا ھائل ہو، مگر پھر بھی بدن کی گرمی محسوں ہوتی ہو۔

اوران سب صورتوں میں انزال بھی ہوگیا یا ہاتھ ہے منی نکالی یا مباشرت فاحشہ سے انزال ہوگیا یا ادائے رمضان کے علاوہ اورکوئی روزہ فاسد کر دیا، اگر چہوہ رمضان ہی کی قضا ہو یا عورت روزہ دار سورہی تھی، سوتے میں اس سے وطی کی گئی یا شبح کو ہوش میں تھی اور روزہ کی نتیت کر لی تھی پھر پاگل ہوگئی اور اسی حالت میں اس سے وطی کی گئی یا میگان کر کے کہ رات ہے، سحری کھالی یا رات ہونے میں شک تھا اور سحری کھالی حالا نکہ شبح ہو چکی تھی یا یہ گمان کر کے کہ آفتاب ڈوب گیا ہے، افطار کر لیا حالا نکہ ڈوبا نتھا یا دوشخصوں نے شہادت دی کہ دن ہے اور اُس نے روزہ افطار کر لیا، بعد کو معلوم ہوا کہ غروب نہیں ہوا تھا ان سب صورتوں میں صرف قضا لازم ہے، کفارہ نہیں۔ (۵) (درمختار وغیرہ)

- اگراہ شرعی بیہے کہ کوئی شخص کسی کوشیح وصم کی دے کہ اگر تو روزہ نہ توڑے گا تو میں تجھیے مارڈ الوں گایا ہاتھ پاؤں توڑ دوں گایا ناک، کان وغیرہ کوئی عضو کاٹ ڈالوں گایا تخت مار ماروں گا۔اورروزہ داریہ جھتا ہو کہ یہ کہنے والا جو کچھ کہتا ہے، کرگز رے گا۔
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٣٠، ٤٣٦، وغيره.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٣١.
 - 🧣 🛕 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٣١ _ ٤٣٩، وغيره.

المُستَالُةُ السَّالِينَ اللَّهِ مسافر نے اقامت کی ، حیض ونفاس والی پاک ہوگئی ، مجنون کو ہوش ہو گیا، مریض تھا اچھا ہو گیا، جس کا روز ہ جاتار ہااگر چہ جبراً کسی نے توڑوادیا یاغلطی ہے یانی وغیرہ کوئی چیز حلق میں جارہی۔کافرتھامسلمان ہوگیا، نابالغ تھابالغ ہوگیا،

رات سمجھ کرسحری کھائی تھی حالانکہ ہنتج ہو چکی تھی ،غروب سمجھ کرافطار کردیا حالانکہ دن باقی تھاان سب باتوں میں جو پچھودن باقی رہ گیاہے، اُسے روزے کے مثل گزار ناواجب ہے اور نابالغ جو بالغ ہوایا کا فرتھامسلمان ہوا اُن پراس دن کی قضاواجب نہیں باقی

سب پر قضاواجب ہے۔⁽¹⁾ (درمختار)

سَسَعَانُهُ ﴾ نابالغ دن میں بالغ ہوایا کافردن میں مسلمان ہوااوروہ وفت ایساتھا کہروزہ کی نیّت ہوسکتی ہےاور نیّت کر بھی لی پھروہ روزہ توڑ دیا تواس دن کی قضاوا جب نہیں۔⁽²⁾ (ردالمحتار)

سَسَعَانُ کی ﷺ بچیدی عمرون سال کی ہوجائے اوراس میں روز ہ رکھنے کی طاقت ہو تواس سے روز ہ رکھوایا جائے نہ رکھے تو مار کر رکھوا ئیں ، اگر یوری طاقت دلیکھی جائے اور رکھ کر توڑ دیا تو قضا کا تھم نہ دیں گے اور نماز توڑے تو پھر پڑھوا ئیں۔ ③ (ردامختار)

سَسَانُ کی ہے۔ حیض ونفاس والی عورت صبح صادق کے بعدیا ک ہوگئی ،اگر چیشحوۂ کبریٰ سے پیشتر اور روزہ کی نیت کر لی تو آج کاروزہ نہ ہوا، نہ فرض نیفل اور مریض یا مسافر نے بتیت کی یا مجنون تھا ہوش میں آ کربتیت کی تو ان سب کاروزہ ہو گیا۔ 🔑 (درمختار)

مَسِعًا ﴾ صبح ہے پہلے یا بھول کر جماع میں مشغول تھا، مبح ہوتے ہی یا یاد آنے پرفوراً جدا ہو گیا تو کچھنہیں اوراسی حالت پررہا تو قضاواجب ہے کفارہ نہیں۔ (5) (ردالحتار)

مَسِيًّا ﴾ ﴿ ﴾ ميّت كے روز بے قضا ہو گئے تھے تو اُس كاولي اس كى طرف سے فديہا داكر دبے يعنى جب كہ وصيت كى اور مال چھوڑا ہو، ورنہ ولی پرضروری نہیں کردے تو بہتر ہے۔

- ❶ "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٤٠.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، مطلب في حواز الإفطار بالتحرى،
- ③ "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، مطلب في جواز الإفطار بالتحرى،
 - 4..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٤١.
 - قسس "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، مطلب يكرد السهر... إلخ، ج٣، ص٥٢٤.

أن صورتوں كا بيان جن ميں كفارہ بھى لازم ھے

توان سب صورتوں میں روزہ کی قضااور کفارہ دونوں لازم ہیں اوراگران صورتوں میں کہ افطار کا گمان نہ تھا اوراس نے گمان کرلیا اگر کسی مفتی نے نوتو کی دیے پر گمان کرلیا اگر کسی مفتی نے نوتو کی دیے پر اوروہ مفتی ایسا ہو کہ اہل شہر کا اس براعتاد ہو، اُس کے فتو کی دیے پر اُس نے قصداً کھالیایا اُس نے کوئی حدیث شُنی تھی جس کے حجم معنی نہ بجھ سکا اور اُس غلط معنی کے لحاظ سے جان لیا کہ روزہ جاتارہا اورقصداً کھالیا تواج کفارہ لازم نہیں، اگر چہ مفتی نے غلط فتو کی دیایا جو حدیث اُس نے شنی وہ ثابت نہ ہو۔ (1) (درمختار وغیرہ)

سَسَعَالُهُ اللهِ مَسَافِر بعد صبح کے ضحوہ کبری سے پہلے وطن کوآیا اور روزہ کی نتیت کر لی پھر تو ڑ دیایا مجنون اس وقت ہوش میں آیا اور روزہ کی نتیت کر کے پھر تو ڑ دیا تو کفار نہیں۔⁽³⁾ (عالمگیری)

مسئانی ہو یا بغیراختیارایساامرنہ پایا گیا ہو،جس کی وجہ سے روزہ افطار کرنے کے بعد کوئی ایساامرواقع نہ ہوا ہو، جوروزہ کے منافی ہو یا بغیراختیارایساامرنہ پایا گیا ہو،جس کی وجہ سے روزہ افطار کرنے کی رخصت ہوتی، مثلاً عورت کو اُسی دن میں حیض یا نفاس آگیا یا روزہ ندر کھنے کی اجازت ہے تو کفارہ ساقط ہے اور سفرسے ساقط نہ ہوگا کہ یہ اختیاری امرے۔ یو ہیں اگراپنے کو خرخی کرلیا اور حالت یہ ہوگئی کہ روزہ نہیں رکھ سکتا، کفارہ ساقط نہ

^{1 &}quot;الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٤٦ _ ٤٤٦.

^{2 &}quot;الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٠ _ ١٨١.

^{🕥 🕙 &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٦.

(جويره) and red-(1)

سَسَالُ اللَّهِ مردکومجبورکر کے جماع کرایا یاعورت کومرد نے مجبور کیا پھرا اثنائے جماع میں اپنی خوثی سے مشغول رہایا رہی

تو کفّارہ لازمنہیں کہروزہ تو پہلے ہی ٹوٹ چکا ہے۔ ⁽³⁾ (جوہرہ) مجبوری سے مرادا کراہِ شرعی ہے،جس میں قتل یاعضو کاٹ ڈ النے یاضربِشد پیر (4) کی صحیح دھمکی دی جائے اورروز ہ داربھی سمجھے کہا گرمیں اس کا کہانہ مانوں گا توجو کہتاہے، کرگز رے گا۔

المستعلق کے ایک ہے۔ کفارہ واجب ہونے کے لیے بھریپیٹے کھاناضرورنہیں ،تھوڑ اسا کھانے سے بھی واجب ہوجائے گا۔ ⁽⁵⁾

(50,70)

مَسِعًاكُ ٨﴾ ﴿ تَيْلِ لِكَامِا مِنْسِبَ كَي چُربير كمان كرليا كه روزه جاتار ہاياكسي عالم ہي نے روزه جانے كافتو كي دے ديا، اب اس نے کھا بی لیاجب بھی کقارہ لازم ہے۔⁽⁶⁾ (درمختار)

مستان و کی جاتی یا بھول کر کھایا یا پیایا جماع کیا اوران سب صورتوں میں اے معلوم تھا کہ روزہ نہ گیا بھراس کے بعد کھالیا تو کفّارہ لازمنہیں اورا گرا حتلام ہوااورا سے معلوم تھا کہروز ہ نہ گیا پھر کھالیا تو کفّارہ لازم ہے۔⁽⁷⁾ (ردامختار)

تبرک کے لیے تھوک نگل گیا تو کفارہ لازم ہے۔ (9) (روالمحتار)

مَسِيّانُ اللّٰہ جنصورتوں میں روزہ توڑنے بر کفّارہ لازم نہیں ان میں شرط ہے، کہ ایک ہی باراییا ہوا ہواورمعصیت کا قصدنه کیا ہو، ورنهاُن میں کفّار ہ دینا ہوگا۔⁽¹⁰⁾ (درمختار)

- 1 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص ١٨١.
- الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١٠ ص٢٠٦.
 - 3 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٠ ـ ١٨١.
 - 4.... يعنى شخت ماريه
 - 5 "الجو هرة النيرة"، كتاب الصوم، ص ١٨٠.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٤٦.
- ◘ "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم... إلخ، مطلب في حكم الاستمناء بالكف، ج٣، ص ٤٣١، وغيره.
 - ہے.... تعنی بزرگ _س
 - € "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في جواز الإفطار بالتحري، ج٣، ص٤٤٤.
 - 🕕 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٤٠.

نہیں_⁽¹⁾(ردالحتار)

مَسْتَانَ اللَّهِ مَنْ کَھانے سے کفارہ واجب نہیں ،مگرگل ارمنی یا وہ ٹی جس کے کھانے کی اُسے عاوت ہے ، کھائی تو کفارہ

واجب ہےاورنمک اگر تھوڑ اکھایا تو کفارہ واجب ہے، زیادہ کھایا تونہیں۔(2) (جو ہرہ، عالمگیری)

مَسَعَالُهُ ١٥٠﴾ نجس شور بے میں روٹی بھگو کر کھائی یاکسی کی کوئی چیز خصب کر کے کھالی تو کفارہ واجب ہےاور تھوک میں

خون تھاا گرچه خون غالب ہو،نگل لیایا خون پی لیا تو کفارہ نہیں۔⁽³⁾ (جوہرہ)

سَسَعَانُ 10 کی یمی کھائی یا پستہ یا اخروٹ مسلّم یا خشک یا بادام مسلّم نگل لیایا تھیلکے سمیت انڈایا تھیلکے کے ساتھ انار کھا لیا تو کفارہ نہیں اور خشک پستہ یا خشک بادام اگر چبا کر کھایا اور اس میں مغز بھی ہو تو کفارہ ہے اور مسلّم نگل لیا ہو تو نہیں ،اگر چبہ پھٹا ہواور تربادام مسلّم نگلنے میں بھی کفارہ ہے۔ (4) (عالمگیری)

مسئل اللہ چنکاسا گھایا تو کفارہ واجب، یہی علم درخت کے بتوں کا ہے جبکہ کھائے جاتے ہوں ور نہیں۔ مسئل کا کے خریزہ یا تربز کا چھلکا کھایا، اگر خٹک ہویا ایسا ہو کہ لوگ اس کے کھانے سے گھن کرتے ہوں تو

کفارہ نہیں درنہ ہے۔ کیچے چاول، باجرا،مسور،مونگ کھائی تو کفارہ نہیں، یہی حکم کیچے بو کا ہے اور بھنے ہوئے ہوں تو کفارہ لازم۔⁽⁵⁾(عالمگیری)

مس<u>تانہ ۱۸ ہے۔</u> تِل یا تِل کے برابر کھانے کی کوئی چیز باہر سے موزھ میں ڈال کر بغیر چبائے نگل گیا تو روزہ گیا اور کفارہ

واجب_ (درمختار)

• "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في حواز الإفطار بالتحري، ج٣، ص

2 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨١.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج ١، ص ٢٠٢، ٢٠٥.

- 3 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص ١٨١.
- ◘..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٢، ٢٠٥.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٢، ٢٠٥.
 - ش.... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٥٥٣.

🦓 🚵 📶 📢 دوسرے نے نوالہ چبا کردیا، اُس نے کھالیایا اُس نے خودا پنے مونھ سے نکال کرکھالیا تو کفارہ نہیں۔ (1)

(عالمگیری) بشرطیکداس کے چبائے ہوئے کولذات یا تبرک نہ مجھتا ہو۔

مَسْتَالُونِ 🔫 🐣 سحری کا نوالہ مونھ میں تھا کہ منج طلوع ہوگئ یا بھول کرکھار ہا تھا،نوالہ مونھ میں تھا کہ یاد آ گیااورنگل لیا تو

دونوں صورتوں میں کفارہ واجب ،مگر جب مونھ سے نکال کر پھر کھایا ہو تو صرف قضاوا جب ہوگی کفارہ نہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری) مستان ۱۱ 💨 عورت نے نابالغ یا مجنون ہے وطی کرائی یا مرد کو وطی کرنے پر مجبور کیا،تو عورت پر کفارہ واجب ہے مرد پر

نہیں۔⁽³⁾(عالمگیری وغیرہ)

منت 🔭 🐣 مُشک، زعفران، کا فور، سر کہ کھایا یا خریزہ، تربز، کگڑی، کھیرا، با قلا کا یانی پیا تو کفارہ واجب ہے۔ (⁴⁾ (عالمگیری)

مسئانہ اس نے اُسے پانی پلادیا پھروہ دار قتل کے لیے لایا گیا اُس نے پانی ما نگا، کسی نے اُسے پانی پلادیا پھروہ چھوڑ دیا گیا تو اُس برکفارہ واجب ہے۔⁽⁵⁾(عالمکیری)

مستانہ ۲۳ ﴾ باری سے بخار آتا تھااور آج باری کا دن تھا۔ اُس نے بیگان کر کے کہ بخار آئے گاروزہ قصداً توڑ دیا تو اس صورت میں کفارہ ساقط ہے۔ (6) یو ہیں عورت کو معیّن ناری نیر چیش آتا تھا اور آج حیش آنے کا دن تھا، اُس نے قصد اُروزہ توڑ دیا اور حیض نہ آیا تو کفارہ ساقط ہوگیا۔ یو ہیں اگریقین تھا کہ دشمن ہے آج لڑنا ہے اور روزہ توڑ ڈالا اور لڑائی نہ ہوئی تو کفارہ واجب نہیں۔⁽⁷⁾ (درمختار)

سروزہ توڑنے کا کفارہ بیہ ہے کم مکن ہو تو ایک رقب یعنی باندی یا غلام آزاد کرے اور بینہ کر سکے مثلاً اس کے یاس نہ لونڈی غلام ہے، نہ اتنامال کہ خریدے یا مال تو ہے مگر رقبہ میسر نہیں جیسے آج کل یہاں ہندوستان میں، تو بے در بے ساٹھ روزے رکھے، یبھی نہ کر سکے تو ساٹھ مساکین کو جر جر پیٹ دونوں وقت کھا نا کھلائے اور روزے کی صورت میں اگر درمیان میں

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٣٠٠.
- "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٥٠٠، وغيره.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٥.
 - 5 المرجع السابق، ص٢٠٦.
 - 6 نیعنی کفاره کی ضرورت نہیں۔
 - 🕡 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٤٨.

🚅 روزه کے مکروہات کا بیان

ایک دن کا بھی چھوٹ گیا تو اب سے ساٹھ روزے رکھے، پہلے کے روزے محسوب نہ ہول گے اگر چہ اُنسٹھ رکھ چکا تھا، اگر چہ بیاری وغیرہ کسی عذر کے سبب چھوٹا ہو، مگر عورت کوچیش آجائے تو حیض کی وجہ سے جیتنے ناغے ہوئے بینا غیز ہیں شار کیے جا کیں گیعنی پہلے کے روزے اور چیش کے بعدوالے دونوں مِل کرساٹھ ہوجانے سے کفارہ ادا ہوجائے گا۔(1)(کتب کثیرہ)

مس<u>کان (۲) ہے کہ اکبر دوروز</u> ہوڑے تو دونوں کے لیے دو کفارے دے، اگر چہ پہلے کا ابھی کفارہ نہ اوا کیا ہو۔ ⁽²⁾

(ردالحتار) بعنی جب که دونوں دورمضان کے ہوں اورا گر دونوں روز ہے ایک ہی رمضان کے ہوں اور پہلے کا کفارہ ادانہ کیا ہو تو

ایک ہی کفارہ دونوں کے لیے کافی ہے۔ (3) (جو ہرہ)

كفاره ك متعلق ديگر جزئيات كتاب الطلاق باب الظهار مين ان شاء الله تعالى معلوم هول گي ـ

مسئ المراح المستان المراح المراح وعورت، باوشاه وفقیرسب پرروزه توڑنے سے کفاره واجب ہوتا ہے، یہاں تک کہ باندی کواگر معلوم تھا کہ منج ہوگئ اُس نے اپنے آقا کوخبر دی کہ ابھی منج نہ ہوئی اس نے اس کے ساتھ جماع کیا تو لونڈی پر کفاره واجب ہوگا اور اُس کے مولی پر صرف قضا ہے کفارہ نہیں۔ (۵) (ردالحتار)

روزہ کے مکروھات کا بیان

خلینٹ (و ۲ گیست کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں رسول اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ سے فر مایا:''جو بُری بات کہنا اور اُس پڑمل کرنا نہ چھوڑے، تو اللہ تعالیٰ کواس کی پچھھاجت نہیں کہ اس نے کھانا پینا چھوڑ دیا ہے۔'' (⁵⁾ اور اس کے مثل طبر انی نے انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔

خلیٹ سے وہم کی اللہ تعالی عدسے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی عدسے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی عدہ سے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہم سے فرمایا: ''بہت سے روزہ دارایسے ہیں کہ انھیں روزہ سے سواپیاس کے بچھٹمیں اور بہت سے رات میں قیام

- "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤٧.
 و "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٩٥، وغيرهما.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤.
 - 3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٢.
- ◘ "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤٧.
- المحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب من لم يدع قول الزور والعمل به في الصوم، الحديث: ١٩٠٣،

ج۱، ص۲۲۸.

روابت کابیان کوست کابیان کردانت کابیان کردانت کابیان کردانت کابیان کردانت کابیان کردانت کابیان کردانت کابیان ک

المستحد المستح

خلایث ۵ و ۷ گیجی بیمتی ابوعبیده اورطبرانی ابو مربره رضی الله تعالی عنها سے راوی ، که حضور (سلی الله تعالی علیه وسلم) نے فرمایا:

''روز ہ سپر ہے، جب تک اسے بھاڑانہ ہو۔عرض کی گئی،کس چیز سے بھاڑے گا؟ارشاوفر مایا: جھوٹ یاغیبت ہے۔'' (2)

خلیث کے ابن خزیمہ وابن حبان وحاکم ابو ہر برہ وض اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فر مایا:

" روزه اس کانام نہیں کہ کھانے اور پینے سے بازر ہنا ہو،روزہ توبیہ ہے کہ لغووبیہودہ باتوں سے بچاجائے۔" (3)

خلین ۸ کیا یک ایوداود نے ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ ایک شخص نے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روز ہ دار کو

ہوکر یہی سوال کیا توانھیں منع فر مایا اور جن کوا جازت دی تھی ، بوڑھے تھے اور جن کومنع فر مایا: جوان تھے۔'' ⁽⁴⁾

خلین و گرین و گرتے و یکھا۔ (5) کوروز دمیں مسواک کرتے و یکھا۔ ⁽⁵⁾

سکان اورزیادہ حرام اوران کی وجہ سے روزہ میں کراہت آتی ہے۔ میں اورزیادہ حرام اوران کی وجہ سے روزہ میں کراہت آتی ہے۔

سَسَانَ کُ کَ اِی عَدْریہ ہے کہ مثلاً عورت کا چکھنایا چیانا مکروہ ہے۔ چکھنے کے لیے عذریہ ہے کہ مثلاً عورت کا شوہریا باندی غلام کا آقا بد مزاج ہے کہ مثلاً عورت کا شوہریا باندی غلام کا آقا بد مزاج ہے کہ مثلاً عورت کا مواس کی ناراضی کا باعث ہوگا اس وجہ سے چکھنے میں حرج نہیں، چبانے کے لیے یہ عذرہے کہ اتنا چھوٹا بچہہے کہ روٹی نہیں کھا سکتا اور کوئی نرم غذا نہیں جواُسے کھلائی جائے ، نہین ونفاس والی یا کوئی اور بے روزہ ایسا ہے جواُسے چبا کردیدے ، تو بچہ کے کھلانے کے لیے روٹی وغیرہ چبانا مکروہ نہیں۔ (6) (درمختاروغیرہ)

بچکھنے کے وہ معنی نہیں جوآج کل عام محاورہ ہے یعنی کسی چیز کا مزہ دریافت کرنے کے لیے اُس میں ہے تھوڑا کھالینا کہ

- سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب ماجاء في الغيبة والرفث للصائم، الحديث: ١٦٩٠، ج٢، ص ٣٢٠.
 و "السنن الكبرى"، كتاب الصيام، باب الصائم... الخ، الحديث: ٨٣١٣، ج٤، ص٤٤٩.
 - 2 "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ٥٣٦، ج٣، ص٢٦٤.
 - € "المستدرك" للحاكم، كتاب الصوم، باب من أفطر في رمضان ناسيا... إلخ، الحديث: ١٦١١، ج٢، ص٦٧.
 - 4 "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب كراهية للشاب، الحديث: ٢٣٨٧، ج٢، ص٥٥٧.
 - الترمذي"، ابواب الصوم، باب ماجاء في السواك للصائم، الحديث: ٥٧٧، ج٢، ص١٧٦.
 - 🕳 🌀 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، ج٣، ص٥٥٣، وغيره.

پیل ہوتو کراہت کیسی روز ہ ہی جا تار ہے گا، بلکہ کفارہ کے شرائط پائے جائیں تو کفارہ بھی لازم ہوگا۔ بلکہ چکھنے سے مرادیہ ہے کہ

زبان پررکھ کرمزہ دریافت کرلیں اور اُسے تھوک دیں اس میں سے حلق میں کچھ نہ جانے پائے۔

مَسَعَانَهُ اللهِ عَلَى جَيْرِخْريدى اوراس كا چکھنا ضرورى ہے كہنہ چکھے گا تو نقصان ہوگا، تو چکھنے میں حرج نہیں ورنہ مکروہ (۱) درجتری ک

ہے۔⁽¹⁾(درمختار)

مَسَعَلَىٰ ﴾ بلاعذر چکھنا جومکروہ بتایا گیا بیفرض روزہ کا حکم ہے فل میں کراہت نہیں، جبکہ اس کی حاجت ہو۔ (²⁾ (ردالحتار)

سَمَعَالُهُ ﴾ عورت کا بوسه لینا اور گلے لگا نا اور بدن چھونا مکروہ ہے، جب کہ بیا ندیشہ ہو کہ انزال ہوجائے گایا جماع میں مبتلا ہوگا اور ہونٹ اور زبان چوسناروز ہمیں مطلقاً ⁽³⁾ مکروہ ہے۔ یو ہیں مباشرت فاحشہ۔ ⁽⁴⁾ (ردالمختار)

سروزہ میں بھی مسواک کرنا مکروہ نہیں، بلکہ جیسے اور دنوں میں ستت ہے روزہ میں بھی مسنون ہے۔مسواک خشک ہو یا تراگر چہ پانی ہے ترکی ہو، زوال سے پہلے کرے یا بعد کسی وقت مکروہ نہیں۔ (⁷⁾ (عامهُ کتب) اکثر لوگوں میں مشہور ہے کہ دو پہر بعدروزہ دار کے لیے مسواک کرنا مکروہ ہے، یہ ہمارے مذہب کے خلاف ہے۔

سَسَعَانَ ٨ ﴾ فصد کھلوانا، کچھنےلگوانا مکروہ نہیں جب کہ ضعف کا اندیشہ نہ ہواوراندیشہ ہو تو مکروہ ہے، اُسے جا ہیے کہ

- € "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٥٣.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد ما لا يفسده، ج٣، ص٤٥٣.
 - ایعنی حاہرازال و جماع کا ڈرہویانہ ہو۔
- ◘..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب: فيما يكره للصائم، ج٣، ص٤٥٤.
 - 🗗 لیعنی ایک مٹھی۔
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٥٥٥.
 - 🕡 "البحر الرائق"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٢، ص ٤٩١.

مجد دِ اعظم اعلى حضرت امام احمد رضاخان عليه رحمة الرحن فرمات مين كه اگر مسواك چبانے سے رَيشے جھوٹيس يامز و محسوس ہوتو الي مسواك روزے مين نہيں كرنا جا ہے۔ ("الفتاوى الرضوية" ، ج ۱۰ ، ص ۱۱ ٥).

ن غروب تک مؤخر کرے۔⁽¹⁾ (عالمگیری)

<u> مسئالہ وں ہے۔ کلی میں مبالغہ کرنے اور ناک میں پانی چڑھانے میں مبالغہ کرنا مکروہ ہے۔ کلی میں مبالغہ کرنے کے </u>

یہ معنی میں کہ بھر موزھ پانی لے اور وضوو خسل کے علاوہ ٹھنڈ پہنچانے کی غرض سے کلی کرنایاناک میں پانی چڑھانایا ٹھنڈ کے لیے نہانا بلکہ بدن پر بھیگا کپڑ البیٹنا مکروہ نہیں۔ ہاں اگر پریشانی ظاہر کرنے کے لیے بھیگا کپڑ البیٹا تو مکروہ ہے کہ عبادت میں دل تنگ ہونا

اچھی بات نہیں۔⁽²⁾(عالمگیری،ردالمختاروغیر ہما) مسئل ایک ہے اندر⁽³⁾ریاح خارج کرنے سے روز ہنیں جاتا،مگر کروہ ہے اور روزہ دار کواشننج میں مبالغہ کرنا

مسکان الیند ہے اور روزہ میں تھوک اکٹھا کر کے نگل جانا بغیر روزہ کے بھی ناپیند ہے اور روزہ میں مکروہ۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری)

سَسَالُهُ اللهِ مَصَانِ کے دنوں میں ایسا کام کرنا جائز نہیں، جس سے ایساضعف آجائے کہ روزہ توڑنے کاظن غالب ہو۔ الہذا نا نبائی کو جائیے کہ دو پہر تک روٹی ایکائے کھر باقی دن میں آرام کرے۔ (6) (درمختار) بہی تھم معمار ومزدور اورمشقت

سکونی ہوت ہاں دیا ہیں۔ مدروں ہار دف ہوت ہوتا کا میں کمی کر دیں کہ دوزے ادا کرسکیں۔ کے کام کرنے والوں کا ہے کہ زیادہ ضعف کا اندیشہ ہوتو کام میں کمی کر دیں کہ روزے ادا کرسکیں۔

سَسَعَانُ اللهِ الرَّروزه رکھے گا تو کمزور ہوجائے گا ، کھڑے ہوکر نماز نہ پڑھ سکے گا تو حکم ہے کہروزہ رکھے اور بیٹھ کرنماز

پڑھے۔⁽⁷⁾ (درمختار) جب کہ کھڑا ہونے سے اتناہی عاجز ہوجو باب صلاقہ المریض میں گزرا۔

مستان ۱۳ استری کھانا اور اس میں تاخیر کرنامتحب ہے، مگراتن تاخیر مکروہ ہے کہ شیج ہوجانے کا شک ہوجائے۔(8) (عالمگیری)

مَسْعَانُ ١٥﴾ افطار میں جلدی کرنامستحب ہے، مگرافطاراس وقت کرے کہ غروب کا غالب مگمان ہو، جب تک مگمان

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثالث، فيما يكره للصائم وما لا يكره، ج١، ص١٩٩ ـ ٢٠٠.
- المرجع السابق، ص ١٩٩، و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في حديث التوسعة على العيال والاكتعال يوم عاشوراء، ج٣، ص ٥٥٩. وغيرهما
 - شلاً نهر، ندى، تالاب وغيره مين نهاتے وقت.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثالث فيمايكره للصائم وما لا يكره، ج١، ص٩٩.
 - 5 المرجع السابق، وغيره.
 - الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص ٤٦٠.
 - 7 المرجع السابق، ص ٢٦١.
 - 8 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثالث، فيمايكره للصائم وما لا يكره، ج١٠ ص ٢٠٠.

غالب نہ ہوا فطار نہ کرے ، اگر چہ مؤذن نے اذان کہدی ہے اور اَبرے دنوں میں افطار میں جلدی نہ چاہیے۔ (1) (روالحتار)

مسئ کی لا ایک عادل کے قول پر افطار کرسکتا ہے ، جب کہ اس کی بات بھی مانتا ہواور اگر اس کی تصدیق نہ کرے تو

اس کے قول کی بنا پر افطار نہ کرے ۔ یو ہیں مستور کے کہنے پر بھی افطار نہ کرے اور آج کل اکثر اسلامی مقامات میں افطار کے

وقت تو پے چلنے کارواج ہے ، اس پر افطار کرسکتا ہے ، اگر چہ تو پ چلانے والے فاسق ہوں جب کہ کسی عالم محقق تو قیت دان محتاط

فی الدین کے تھم پر چاتی ہو۔ (2)

آج کل کے عام علا بھی اس فن سے ناوا قف محض ہیں اور جنتریاں کہ شائع ہوتی ہیں اکثر غلط ہوتی ہیں ان پڑمل جائز خہیں۔ نہیں۔ یو ہیں سحری کے وفت اکثر جگہ نقارہ بجتا ہے، انھیں شرائط کیساتھ اس کا بھی اعتبار ہے اگر چہ بجانے والے کیسے ہی ہوں۔ سحری کے وفت مرغ کی اذان کا اعتبار نہیں کہ اکثر دیکھا گیا ہے کہ صبح سے بہت پہلے اذان شروع کر دیتے ہیں، بلکہ جاڑے کے دنوں میں تو بعض مرغ دو بجے سے اذان کہنا شروع کر دیتے ہیں، حالانکہ اس وقت صبح ہونے میں بہت وقت باقی رہتا ہے۔ یو ہیں بول جال سُن کراورروشنی دیکھر بولنے لگتے ہیں۔ (3) (ردا کمتار مع زیادہ)

سَسَعَ اللهِ اللهِ وَقَاتِ مِينَ صَادِقَ كُوراتِ كَامِطَلَقاً جِهِا ياسا تواں حصة بجھناغلط ہے، رہا یہ کہ صبح ص سوم باب الاوقات میں بیان کرآئے وہاں سے معلوم کریں۔

المرى وإفطار كابيان

خليث الله عند الله الله على وأبين ماجدانس رضى الله تعالى عند سے راوى ، رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فرمايا:

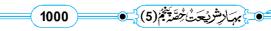
''سحری کھاؤ کہ سحری کھانے میں برکت ہے۔'' (4)

خلینت 🕜 🐣 مسلم وابوداود وتر مذی ونسائی وابن خزیمه عمر و بن عاص رضی الله تعالی عنه سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم

نے فر مایا: "ہمارے اور اہلِ کتاب کے روز ول میں فرق سحری کا لقمہ ہے۔" (5)

خلیث کرد کشور (صلی الله تعالی علیه و میں سلمان فارسی رضی الله تعالی عند سے روایت کی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے فر مایا:

- ❶ "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم... إلخ، مطلب في حديث التوسعة على العيال... إلخ، ج٣، ص٥٩٥.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في جواز الإفطار التحري، ج٣، ص٤٣٩، وغيره.
 -
 - ◘ "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، بابركة السحور من غير ايجاب، الحديث: ١٩٢٣، ج١، ص٦٣٣.
 - 🥱 🗗 " صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل السحور... إلخ، الحديث: ٩٦، ١٠ ص٥٥٥.



🐉 ''' تین چیزوں میں برکت ہے، جماعت اور ثریداور سحری میں۔'' (1)

خلینٹ میں طبرانی اوسط میں اورا بن حبان سیج میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے راوی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے

تحرى وافطار كابيان

خلیث 🕒 – ابن ماجہ وابن خزیمہ و بیریقی ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت کرتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

نے فر مایا: ' سحری کھانے سے دن کے روز ہ پر استعانت کرواور قبلولہ سے رات کے قیام پر۔'' (3)

خلیث 🔰 – نسائی با شادهسن ایک صحابی سے راوی ، کہتے ہیں میں حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کی خدمت میں حاضر ہوااور

حضور (صلى الله تعالى عليه بلم) سحرى تناول فرمار ہے تھے،ارشا وفر مایا: ' پیبرکت ہے کہ الله تعالیٰ نے صحصیں دی تواسے نہ چھوڑ نا۔' (4)

خلیف کی سے طبرانی کبیر میں عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنبا سے روایت کرتے ہیں کہ نبی سلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا: ' تین شخصوں پر کھانے میں ان شاء اللہ تعالی حساب نہیں ، جبکہ حلال کھایا۔ روز ہ دار اور سحری کھانے والا اور سرحد پر گھوڑ ا

خلینٹ 🐧 تا ۱۰ 🎢 – امام احمرا بوسعید خدری رضی الله تعالیٰ عنہ سے را دی ، که رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم نے فر مایا : ' دسحری

گل کی گل برکت ہے اُسے نہ چھوڑ نا، اگر چہ ایک گھونٹ پانی ہی پی لے کیونکہ تحری کھانے والوں پر اللہ (عزوجل) اوراس کے فرشتے دُرود جیجتے ہیں۔'' ⁽⁶⁾ نیزعبداللہ بن عمر وسائب بن پر یدوابو ہر برہ رضی اللہ تعالی عنهم سے بھی اسی قسم کی روایتیں آئیں۔

خلین اللہ علی اللہ تعالی علیہ و ترمذی سہل بن سعد رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فر ماتے ہیں:

''ہمیشہ لوگ خیر کے ساتھ رہیں گے، جب تک افطار میں جلدی کریں گے۔'' ⁽⁷⁾

<u> خلیت ۱۲) ۔</u> ابن حبان صحیح میں انھیں سے رادی ، کہ فر مایا: ' میری اُمت میری سنت پررہے گی ، جب تک افطار میں

ستاروں کاانتظار نہ کرے۔'' ⁽⁸⁾

- 1 "المعجم الكبير"، الحديث: ٢١٢٧، ج٦، ص٥٥١.
- 2 "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب السحور، الحديث: ٥٨ ٣٤٥، ج٥، ص١٩٤.
- 3 "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب ماجاء في السحور، الحديث: ١٦٩٣، ج٢، ص ٣٢١.
 - 4 "السنن الكبرى" للنسائي، كتاب الصيام، باب فضل السحور، الحديث: ٢٤٧٢، ج٢، ص٧٩.
 - 5 "المعجم الكبير"، الحديث: ١٢٠١٢، ج١١، ص٥٨٥.
 - المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي سعيد الخدرى، الحديث: ١١٠٨٦، ج٤، ص٢٦.
 - **1**..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب تعجيل الإفطار، الحديث: ١٩٥٧، ج١، ص ٦٤٥.
- 8 "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب الإفطار و تعجيله، الحديث: ٥٠١، ج٥، ص ٢٠٩٠.

تحرى وافطار كابيان ج

🥌 😹 🔑 👚 👚 احمد وتر مذی وابن خزیمه وابن حبان ابو هر ریره رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه و ہم

فرماتے ہیں: کہالٹدعز دجل نےفر مایا:''میرے بندوں میں مجھے زیادہ پیاراوہ ہے، جوافطار میں جلدی کرتاہے۔'' ⁽¹⁾

خلینٹ 🗥 🎥 طبرانی اوسط میں یعلی بن مرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے راوی ، کہ فرمایا:'' تین چیزوں کواللہ (عز وجل)محبوب رکھتا

ہے۔افطار میں جلدی کرنااور سحری میں تاخیراور نماز میں ہاتھ پر ہاتھ رکھنا۔' (2)

خلیئے 🚯 🥍 💎 ابوداود وابن خزیمہ وابن حیان ابو ہر بریہ درخی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے .

ہیں:'' بیددین ہمیشہ غالب رہےگا، جب تک لوگ افطار میں جلدی کرتے رہیں گے کہ یہودونصار کی تاخیر کرتے ہیں۔'' 🔞

خیل پئٹ (۱۷ ﷺ — 🗀 امام احمد وابوداود وتر مذی وابن ماحه و دارمی سلمان بن عامرضی رضی الله تعالی عنه سے راوی، حضورِ اقد س صلی الله تعالی علیه ہلم فرماتے ہیں:'' جبتم میں کوئی روزہ افطار کرے تو تھجوریا چھو ہارے سے افطار کرے کہ وہ برکت ہے اورا گرنہ

ملے تویانی سے کہوہ یاک کرنے والا ہے۔" (4)

خلیث کا 💝 💎 ابوداودوتر مذی انس رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه بسلی نماز سے پہلے تر تھجوروں سے روز ہ افطار فرماتے ، تر تھجوریں نہ ہوتیں تو چند خشک تھجوروں سے اور اگریہ بھی نہ ہوتیں تو چند چلوپانی پینے '' (5) ابوداود نے روایت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وملم) افطار کے وفت بیدوُ عا بڑھتے ۔

اللَّهُمَّ لَكَ صُمُّتُ وَعَلَى رِزُقِكَ اَفْطَرُتْ. (6)

خلایث (۱۸ 🔑 🔻 نسائی وابن خزیمه زیدین خالدجهنی رض الله تعالی عنه سے راوی ، که فر مایا:'' جوروز ه دار کاروز ه افطار کرائے یا

غازی کاسامان کردے تواویے بھی اتناہی ملے گا۔'' ⁽⁷⁾

خلیئٹ 19 💨 🚽 طبرانی کبیر میں سلمان فارسی رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، که رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں : ''جس نے حلال کھانے یا پانی سے روز ہ افطار کرایا۔فرشتے ماوِ رمضان کے اوقات میں اس کے لیے استغفار کرتے ہیں اور ا

- الترمذي"، أبواب الصوم ، باب ماجاء في تعجيل الإفطار ، الحديث: ٧٠٠ ج ٢ ، ص ١٦٤ .
 - 2 "المعجم الأوسط"، الحديث: ٧٤٧٠ ج٥، ص ٣٢.
- 3 "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب ما يستحب من تعجيل الفطر، الحديث: ٢٣٥٣، ج٢، ص٤٤٦.
- 4 "جامع الترمذي"، أبواب الصوم باب ماجاء ما يستحب عليه الإفطار، الحديث: ٦٩٥، ج٢، ص١٦٢.
- 5 "جامع الترمذي"، ابواب الصوم، باب ماجاء ما يستحب عليه الافطار، الحديث: ٦٩٦، ج٢، ص١٦٢.
 - 6 "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب القول عند الإفطار، الحديث: ٢٣٥٨، ج٢، ص٤٤٧.
 - 🕡 "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فصل فيمن فطر صائما، الحديث: ٣٩٥٣، ج٣، ص٤١٨.

👸 جبرئیل علیه افسانة والسّلام شب قدر میں اُس کے لیے استغفار کرتے ہیں۔' (1)

اورایک روایت میں ہے،''جوحلال کمائی ہے رمضان میں روز ہافطار کرائے،رمضان کی تمام راتوں میں فرشتے اس پر

دُرود بھیجے ہیں اور شب قدر میں جرئیل اس سے مصافحہ کرتے ہیں۔ ' (2)

اورایک روایت میں ہے، 'جوروزہ دار کو پانی پلائے گا،اللہ تعالی اُسے میرے حوض سے بلائے گا کہ جنت میں داخل ہونے تک پیاسا نہ ہوگا۔'' ⁽³⁾

بیان اُن وجوہ کا جن سے روزہ نہ رکھنے کی اجازت ھے ﴿

خلینٹ 🕽 🥕 صحیحین میں اُم المونین صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا ہے مروی کہتی ہیں حمزہ بن عمر واسلمی بہت روز بے رکھا کرتے ۔

تھے، انہوں نے نبی کریم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے دریافت کیا، کہ سفر میں روزہ رکھوں؟ ارشاد فرمایا: ' حیا ہور کھو، جیا ہے ندر کھو۔' (4)

خلینٹ 🔰 🥕 صحیح مسلم میں ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، کہتے ہیں سولھویی رمضان کورسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

کے ساتھ ہم جہاد میں گئے۔ہم میں بعض نے روزہ رکھا اور بعض نے ندر کھا تو ندروزہ داروں نے غیرروزہ داروں پرعیب لگایا اورندانھوں نے ان بر۔ (⁵⁾

خلینٹ 👚 🔫 ابوداود وتر مذی ونسائی وابن ما جہانس بن ما لک تعبی رض اللہ تعالی عنہ سے رادی ، کہ حضورِ اقد س صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا: که الله تعالی نے مسافر سے آ دھی نماز معاف فرمادی (بعنی چارر کعت والی دویر معے گا) اور مسافر اور دُودھ پلانے والی

اورحاملہ سے روزہ معاف فرمادیا۔'' (⁶⁾ (کہاُن کواجازت ہے کہاُس وفت ندر کھیں بعد میں وہ مقداریوری کرلیں)۔

مست المراه ونقصان عقل اوربچه کودود ده پلانا اور مرض اور بژها یا اورخوف ملاک واکراه ونقصان عقل اور جهادیه سب روز ه نه ر کھنے کے لیے عذر ہیں ،ان وجوہ ہے اگر کوئی روزہ ندر کھے تو گنہ گارنہیں۔⁽⁷⁾ (درمختار)

- 1 "المعجم الكبير"، الحديث: ٦٦١٦، ج٦، ص ٢٦١.
- 2 "كنز العمال"، كتاب الصوم، الحديث: ٢٣٦٥٣، ج٨، ص٢١٥.
- 3 "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٠٨، ج٣، ص٥٠٥ _ ٣٠٦.
- 4.... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب الصوم في السفر والإفطار، الحديث: ٩٤٣، ج١، ص ٦٤٠.
- الصحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب جواز الصوم والفطرفي الشهر رمضان... إلخ، الحديث: ١١١٦، ص٦٤٥.
- 6 "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في الرخصة في الإفطار للحبلي والمرضع، الحديث: ٧١٥، ج٢، ص ١٧٠.
 - 🥱 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٢.

عِبَ ارشِ رئيعَتْ رَصَّ أَنْتُمُ (5) 🚅 🚺 🦓 📶 📜 سفر سے مرادسفرشری ہے یعنی اتنی وُ ور جانے کے ارادہ سے فکلے کہ یہاں سے وہاں تک تین دن کی مسافت

ہو،اگر چدوہ سفر کسی ناجائز کام کے لیے ہو۔ (1) (درمختار)

سَسَاكُ اللهِ ون میں سفر كيا تو أس دن كاروزه افطار كرنے كے ليے آج كاسفر عذر نہيں _البنة اگر توڑے گا تو كفاره لازم نہ آئے گا مگر گنہ کا رہوگا اورا گرسفر کرنے ہے پہلے تو ڑویا پھرسفر کیا تو کفارہ بھی لازم اورا گردن میں سفر کیا اور مکان پر کوئی چیز بھول

گیا تھا، أے لینے واپس آیا اور مکان برآ کرروزہ توڑڈ الا تو کفارہ واجب ہے۔(²⁾ (عالمگیری)

مست 😭 🥕 مسافر نے ضحوہ کبریٰ ہے پیشتر اقامت کی اورابھی کچھ کھایانہیں تو روزہ کی نیت کر لینا واجب ہے۔ (3) (جوہرہ)

مستان کی 💨 حمل والی اور دودھ پلانے والی کواگراپنی جان یا بچه کاشیح اندیشہ ہے، تو اجازت ہے کہ اس وقت روز ہ نہ ر کھے،خواہ دودھ پلانے والی بچرکی مال ہو یادائی اگرچہ رمضان میں دودھ پلانے کی نوکری کی ہو۔(4) (درمختار ،ردا کمتار)

مَسِعًا ﴾ ﴿ ﴾ مریض کومرض بڑھ جانے یا دیر میں اچھا ہونے یا تندرست کو بیار ہوجانے کا گمان غالب ہویا خادم وخادمہ کو

نا قابل برداشت ضعف کاغالب گمان ہوتوان سب کواجازت ہے کہاس دن روز ہ نہر تھیں۔⁽⁵⁾ (جو ہرہ، درمختار)

ستان کے ان صورتوں میں غالب گمان کی قید ہے محض وہم نا کافی ہے۔غالب گمان کی تین صورتیں ہیں۔

(۱) اس کی ظاہر نشانی یائی جاتی ہے یا (۲) اس شخص کاذاتی تجربہ ہے یا

(٣) کسی مسلمان طبیب هاذق مستور یعنی غیر فاسق نے اُس کی خبر دی ہوا درا گرنہ کوئی علامت ہونہ تجربہ نہ اس قتم کے طبیب نے اُسے بتایا، بلکہ کسی کافریا فاسق طبیب کے کہنے سے افطار کرلیا تو کفارہ لازم آئے گا۔ (6) (ردامحتار) آج کل کے اکثر اطباا گرکافرنہیں تو فاسق ضرور ہیں اور نہ ہی تو حافق طبیب فی زمانہ نایاب سے مورہے ہیں، ان لوگوں کا کہنا کچھ قابل

1 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٣.

2 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الافطار، ج١، ص٢٠٦ _ ٢٠٧.

3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص٦٨٦.

4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٣.

5 "الحوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٣.

و "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٣.

. 6 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص ٢٦٤.

ييْرُكُ : مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلام) 🤾



100

اعتبارنہیں نہان کے کہنے پرروز ہافطار کیا جائے۔ان طبیبوں کودیکھاجا تاہے کہ ذراذ راسی بیاری میں روز ہ کوشع کردیتے ہیں ،اتنی

بھی تمیز نہیں رکھتے کہ کس مرض میں روز ہ مُضر ہے کس میں نہیں۔

<u>مَسَعًا ﴾ ﴾</u> باندی کواپنے مالک کی اطاعت میں فرائض کا موقع نہ ملے تو یہ کوئی عذر نہیں۔ فرائض ادا کرے اور اتن دیر کے لیے اُس پراطاعت نہیں۔ مثلاً فرض نماز کا وقت تنگ ہوجائے گا تو کام چھوڑ دے اور فرض ادا کرے اور اگر اطاعت کی اور

ے ہے ہی پر ہو تھ ہیں۔ میں طرف موروروں میں روزہ تو ڑدیا تو کفارہ دے۔⁽¹⁾ (درمختار،ردالمحتار)

سَمَعَانُ وَ ﴾ عورت کو جب حیض ونفاس آگیا تو روزہ جاتا رہااور حیض سے پورے دس دن رات میں پاک ہوئی تو بہر حال کل کاروزہ رکھےاور کم میں پاک ہوئی تواگر صبح ہونے کوا تناعرصہ ہے کہ نہا کرخفیف ساوقت بچے گا تو بھی روزہ رکھےاور اگر نہا کرفارغ ہونے کے وفت صبح چیکی توروزہ نہیں۔ (2) (عالمگیری)

سَسَعَلَهُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى اللهُ عَلَى اللهِ عَلَى

مَسَعَلَ اللهِ ال

کے بعد دوسرے رمضان کے آنے سے پہلے قضار کھ لیں۔

حدیث میں فرمایا: دوجس پرا گلے رمضان کی قضاباتی ہے اور وہ ندر کھے اس کے اس رمضان کے روز ہے قبول نہ ہوں

(7) "

€ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٤.

الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٧.

3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٦.

4 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الإفطار، ج١، ص٧٠٠.

🧊 🗗 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ٢٦٦٨، ج٣، ص٢٦٦.

اورا گرروزے نہ رکھےاور دوسرارمضان آگیا تواب پہلےاس رمضان کےروزے رکھ لے، قضا نہ رکھے، بلکہا گرغیر مریض ومسافرنے قضا کی بتیے کی جب بھی قضانہیں بلکہاُ سی رمضان کےروزے ہیں۔⁽¹⁾ (درمختار)

مسئالہ کا سے خوداس مسافر کواوراُس کے ساتھ والے کوروزہ رکھنے میں ضرر نہ پنچے تو روزہ رکھنا سفر میں بہتر ہے ور نہ

نەركھنا بہتر _⁽²⁾(درمختار)

سَسَتَانُ الْ بِی الله بی الله بی عذر میں مرکئے، اتنا موقع ند ملا کہ قضار کھتے تو ان پر بیدواجب نہیں کہ فدید کی وصیّت کر جانا کر جائیں پھر بھی وصیّت کی تو تہائی مال میں جاری ہوگی اور اگراتنا موقع ملا کہ قضار وزے رکھ لیتے، مگر ندر کھے تو وصیّت کر جانا واجب ہے اور عمداً ندر کھے ہوں تو بدرجۂ اُولی وصیّت کرنا واجب ہے اور وصیّت ندکی، بلکہ ولی نے اپنی طرف سے دے دیا تو بھی جائز ہے مگر ولی پردینا واجب نہ تھا۔ (3) (در مختار، عالمیکیری)

مسئل 12 ہمروزہ کا فدیہ بقدرصدقہ فطر ہے اور تہائی مال میں وصیّت اس وقت جاری ہوگی ، جب اس میت کے وارث بھی ہوں اور اگر وارث نہ ہوں اور سارے مال سے فدیہ ادا ہوتا ہوتو سب فدیہ میں صرف کر دینا لازم ہے۔ یو ہیں اگر وارث صرف شوہر یاز وجہ ہے تو تہائی نکا لنے کے بعد ان کا حق دیا جائے ، اس کے بعد جو پچھ بچے اگر فدیہ میں صرف ہوسکتا ہے تو صرف کردیا جائے گا۔ (در مختار ، روالحتار)

سَسَعَالُهُ 10 ﴾ وصیّت کرناصرف استے ہی روزوں کے قق میں واجب ہے جن پر قادر ہوا تھا، مثلاً دس قضا ہوئے تھے اور عذر جانے کے بعد پانچ پر قادر ہوا تھا کہ انتقال ہو گیا تو پانچ ہی کی وصیّت واجب ہے۔⁽⁵⁾ (درمختار)

سینان (⁶⁾ ایک شخص کی طرف ہے دوسراشخص روز ہنیں رکھ سکتا۔ ⁽⁶⁾ (عامهٔ کتب)

<u>مَسَعَالَةُ ٢٤﴾</u> اعتكاف واجب اورصدقهُ فطر كابدلها گرور شادا كردين توجائز ہے اوراُن كى مقدار وہى بقد رصدقهُ فطر

- الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٥٦٥.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٥٦٥.
- ③ "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٦٦.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٧.

- 4..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٧.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٧.
 - 6 انظر: "فح القدير"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٢، ص٢٧٩.

چاورز کا ة ديناچا بين توجتني واجب تفي اُس قدر زکاليس_⁽¹⁾ (درمختار)

سَسَعَالُهُ ٢١﴾ ﷺ فانی یعنی وہ بوڑھاجس کی عمرا یہی ہوگئی کہ اب روز بروز کمز ورہی ہوتا جائے گا، جب وہ روز ہ رکھنے سے

عاجز ہولیعنی نداب رکھسکتا ہے ندآئندہ اُس میں اتنی طاقت آنے کی اُمیدہے کدروزہ رکھ سکے گا، اُسے روزہ ندر کھنے کی اجازت ہے اور ہرروزہ کے بدلے میں فدریہ یعنی دونوں وقت ایک سکین کو کھر پیٹے کھانا کھلانااس پر واجب ہے یا ہرروزہ کے بدلے میں

، صدقهٔ فطر کی مقدار مسکین کودیدے۔⁽²⁾ (در مختار وغیرہ)

مسئان (۱) میں رکھ سکے گا تواب افطار میں بوجہ گرمی کے روز ہنیں رکھ سکتا، مگر جاڑوں ⁽³⁾ میں رکھ سکے گا تواب افطار

کرلےاوراُن کے بدلے کے جاڑوں میں رکھنا فرض ہے۔⁽⁴⁾ (ردالحتار)

سکار سکے۔ آگرفدیہ دینے کے بعداتی طاقت آگئ کہروزہ رکھ سکے، تو فدیہ صدقہ نقل ہوکررہ گیاان روزوں کی قضا رکھے۔ (5) (عالمگیری)

سینان ۲۳ گیستان ۱۳ کیشروع رمضان ہی میں پورے رمضان کا ایک دم فدید دے دے یا آخر میں دے اور اس میں تملیک (⁶⁾ شرطنہیں بلکہ اباحت بھی کا فی ہے اور ریبھی ضرورنہیں کہ جینے فدیے ہوں اتنے ہی مساکین کودے بلکہ ایک مسکین کوئی دن کے فدیے دے سکتے ہیں۔ ⁽⁷⁾ (درمختار وغیر ہ)

سَمَعَالُهُ ٢٥﴾ قتم (8) يقتل (9) كے كفارہ كااس پرروزہ ہےاور بڑھا ہے كی وجہ سےروزہ نہيں رکھسکتا تواس روزہ كافد ريہ نہيں اور روزہ تو ڑنے يا ظہار ⁽¹⁰⁾ كا كفارہ اس يرہے، تواگر روزہ نه ركھ سكے ساٹھ مسكينوں كوكھانا كھلاوے۔ ⁽¹¹⁾ (عالمگيرى)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص ٤٧١.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص ٤٧١، وغيره.
 - €..... سرد بول۔
 - ٢٠٠٠ "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٢.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٧.
 - 6 ليعني ما لك بنادينا _
 - الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٤، وغيره.
 - اس فتم کے کفارے میں تین روزے ہیں۔
 - 9 سس لعنی قل خطا کے کفار ہے میں دوماہ کے روز ہے ہیں۔
- السنة في الفتاوي"، كتاب الصوم، ص٩٢ _ ٩٤).
 - ❶..... "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٧.

ميثن كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلامي) 🚅

🥮 📶 🚅 🕬 کسی نے ہمیشہ روزہ رکھنے کی منّت مانی اور برابر روز بے رکھے تو کوئی کامنہیں کرسکتا جس سے بسر

اوقات ہوتو اُسے بقدر ضرورت افطار کی اجازت ہے اور ہرروزے کے بدلے میں فدیددے اوراس کی بھی قوت نہ ہو تو استغفار

(روامجتار)

سَسَعَانُ ٢٤﴾ نفل روزه قصداً شروع كرنے سے لازم ہوجا تاہے كەتوڑے گا تو قضاوا جب ہوگی اور بیرگمان كر كے كه اس کے ذمّہ کوئی روز ہے،شروع کیا بعد کومعلوم ہوا کہ ہیں ہے،اباگرفوراً توڑ دیا تو بچھ ہیں اور یہ معلوم کرنے کے بعد نہ توڑا ا

توانہیں تو ڈسکتا، تو ڑے گا تو قضاوا جب ہوگی۔⁽²⁾ (درمختار)

🚚 الله اثنائے ۲۸ 🎏 🔻 نفل روز ہ قصداً نہیں تو ڑا بلکہ بلااختیار ٹوٹ گیا، مثلاً اثنائے روز ہیں حیض آ گیا، جب بھی قضا واجب ہے۔⁽³⁾ (درمختار)

مسئلہ 👣 🥕 عیدین یا تیا م تشریق میں روز وُنفل رکھا تواس روز ہ کا پورا کرناوا جب نہیں ، نہاُس کے توڑنے سے قضا واجب، بلکہاس روزہ کا توڑ دیناواجب ہےاوراگران دنوں میں روزہ رکھنے کی منّت مانی تو منّت پوری کرنی واجب ہے مگران دنوں میں نہیں بلکہ اور دنوں میں ۔(4) (ردامحتار)

ا گرکھانا نہ کھائے تو میزبان کواذیت ہوگی تونفل روزہ توڑ دینے کے لیے بیعذر ہے،بشرطیکہ پیجمروسہ ہو کہاس کی قضار کھ لے گا اور بشرطیکہ ضحوۂ کبریٰ سے پہلے تو ڑے بعد کونہیں۔زوال کے بعد ماں باپ کی ناراضی کے سبب تو ڈسکتا ہےاوراس میں بھی عصر کے بل تک تو رسکتا ہے بعد عصر نہیں ۔ ⁽⁵⁾ (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

السَّنَانِينَ اللهِ اللهِ عَلَيْ مَا مُعَالَىٰ كَهَا مُرتوروزه نه توڑے تو میری عورت کوطلاق ہے، تو اُسے جا ہے کہ اس کی قتم سی کردے یعنی روزہ توڑوے اگر چەروزۂ قضاہو⁽⁶⁾ اگر چہ بعدزوال ہو۔(درمختار)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٢.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٣.
 - 3 المرجع السابق، ص٤٧٤.
- 4 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٤.
- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص ٤٧٥ ـ ٤٧٧.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٨.
 - "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٦.

ﷺ السَّنَانُ اللهِ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْمُلِي اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المِ سن المستان المسال المستعان المحادث كفل اورمنّت وتتم كروز بندر كھاورر كھ ليے توشو ہر تو ڑواسكتا ہے ا گر توڑے گی تو قضا واجب ہوگی ،گراس کی قضا میں بھی شوہر کی اجازت در کار ہے یا شوہراوراُس کے درمیان جدائی ہوجائے یعنی طلاق بائن دیدے یا مرجائے ہاں اگر روز ہ رکھنے میں شو ہر کا کچھ حرج نہ ہومثلاً وہ سفر میں ہے یا بیار ہے یا احرام میں ہے تو ان حالتوں میں بغیرا جازت کے بھی قضار کھ کتی ہے، بلکہا گروہ منع کر ہے جب بھی اوران دنوں میں بھی ہےاس کی اجازت کے نفل نہیں رکھسکتی ۔ رمضان اور قضائے رمضان کے لیے شو ہر کی اجازت کی کچھ ضرورت نہیں بلکہ اس کی ممانعت پر بھی رکھے۔ ⁽²⁾

سیتان کی سی کے سازری غلام بھی علاوہ فرائض کے مالک کی اجازت بغیر نہیں رکھ سکتے۔ان کا مالک حاہے تو تو ٹرواسکتا ہے۔ پھراُس کی قضاما لک کی اجازت بریا آزاد ہونے کے بعد رکھیں۔البتہ غلام نے اگراپنی عورت سے ظہار کیا تو کفارہ کے روز بے بغیرمولی کی اجازت کے رکھ سکتاہے۔⁽³⁾(درمختار،روانحتار)

سردوریا نوکراگرنفل روزہ رکھے تو کام پوراادا نہ کرسکے گا تو متاجر یعنی جس کا نوکر ہے یا جس نے مزدوری پراُسے رکھاہے، اُس کی اجازت کی ضرورت ہے اور کام پورا کرسکے تو کچھ ضرورت نہیں۔⁽⁴⁾ (ردامختار)

سَسَعَالُ اللهِ ﴿ لَا كِي كُوبابِ اور مال كوبيٹے اور بہن كو بھائى ہے اجازت لينے كى كچھ ضرورت نہيں اور مال باپ اگر بیٹے كو روز وُلفْل ہے منع کردیں ،اس وجہ ہے کہ مرض کااندیشہ ہے تو ماں باپ کی اطاعت کرے۔ ⁽⁵⁾ (ردالحتار)

روزۂ نفل کے فضائل

(۱) عاشورالینی دسویں محرم کاروز ہ اور بہتریہ ہے کہنویں کوبھی رکھے۔

خلینٹ 🔰 🥕 صحیحین میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہے مروی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے عاشورا کا روز ہ خو در کھا

اوراس کےرکھنے کا حکم فر مایا۔ ⁽⁶⁾

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٧.
- 🗗 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٧.
 - 3 المرجع السابق، ص٤٧٨.
- 5 المرجع السابق، ص٤٧٨. 4 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٨.
 - 🧣 🙃 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب اي يوم يصام في عاشوراء، الحديث: ١١٣٤، ص٧٧٥.

🥰 📥 🚉 👚 مسلم وابو داو دوتر مَدى ونسائي ابو ہر برہ رض الله تنابي عنہ ہے راوي ، رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم فرماتے ہيں :

''رمضان کے بعدافضل روزہ محرم کاروزہ ہے اور فرض کے بعدافضل نماز صلاۃ اللّیل ہے۔'' (1)

ځ لینٹ 🍟 🐣 صحیحیین میں ابن عباس منی الله تعالی عنها سے مروی ، فر ماتے ہیں : میں نے نبی صلی الله تعالی علیه وسلم کوکسی ون

کے روز ہ کواور دن پرفضیات دے کرجشتو فر ماتے نہ دیکھا مگر پیعاشورا کا دن اور پیرمضان کامہینہ۔ (2)

خلیئٹ 🗨 💝 🐣 مصحیحیین میں ابن عباس رضی اللہ تعالی عنبا سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب مدینہ میں تشریف

لائے، یہودکوعاشورا کے دن روزہ داریایا،ارشادفر مایا: یہ کیا دن ہے کہتم روزہ رکھتے ہو؟ عرض کی، یہ عظمت والا دن ہے کہ اس میں موٹیٰ علیہ اصل ہواستام اور اُن کی قوم کو اللہ تعالیٰ نے نجات دی اور فرعون اور اُس کی قوم کوڑ بودیا، البذا موٹیٰ علیہ استام نے بطورشکر اً س دن كاروزه ركھانو هم بھى روزه ركھتے ہيں۔ارشادفر مايا: موسىٰ عليه الصلاة والسّلام كى موافقت كرنے ميں بنسبت تمھارے ہم زياده

حق دارا درزیا ده قریب بین تو حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے خود بھی روز ہ رکھاا وراُس کا تھیم بھی فر مایا۔ 😘

ځ 🔑 🚓 🕒 مسلم میں ابوقیا د ہ رضی الله تعالی عنہ سے مروی ، رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فر ماتے ہیں:'' مجھے الله (عز دجل) پر گمان ہے کہ عاشورا کاروزہ ایک سال قبل کے گناہ مٹادیتا ہے۔'' (4)

(٢) عرفه ليني نوين ذي الحبركاروزه-

خلیئٹ 🔨 تا 🕩 🦫 صحیحمسلم وسنن ابی داود وتر مذی ونسائی واین ماجه میں ابوقتا د ہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:'' مجھے اللہ (عزوجل) پر گمان ہے، کہ عرفہ کا روزہ ایک سال قبل اور ایک سال بعد کے گناہ مثا

- **1**..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم، الحديث: ١١٦٣، ص٩١٥.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث: ٢٠٠٦، ج١، ص٧٥٦.
- 3 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث: ١٢٨ ـ (١١٣٠)، ص ٥٧١.

اس حدیث سےمعلوم ہوا کہ جس روز اللّٰہء وجل کوئی خاص نغمت عطا فر مائے اس کی یادگار قائم کرنا درست ومحبوب ہے کہ وہ نعمت خاصہ يادة نيك اوراس كاشكراداكرني كاسب بوكا خووقرة ن عظيم مين ارشاد فرمايا: ﴿ وَذَكِّرُهُمْ بِإِنَّكِمِ اللَّهِ ﴾ (ب٥١٠ ابرهيم: ٥) "خدا کےانعام کے دنوں کو ہا دکرو'''

اور ہم مسلمانوں کے لیے ولا دت اقدس سید عالم صلی اللہ علیہ وللم ہے بہتر کون سا دن ہوگا ،جس کی یاد گار قائم کریں کہ تمام تعمیں انہیں کے طفیل میں ہیں اور بیدن عید ہے بھی بہتر کہ آنہیں کےصدقہ میں تو عیدعید ہوئی ای وجہ سے پیر کے دن روز ہ رکھنے کا سبب ارشاد فر مایا: كه ((فِيُهِ وُلِلُاثُ)) ("صحيح مسلم"، كتاب الصيام، الحديث: ١٩٨٠ - (١٦٢)، ص ٩١ ٥) ال ون ميري ولادت بوكي - ١١منه

..... وصحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ١١٦٢، ص٥٨٩.

1010 • (5) جُرَّفَ أَنْجُمُ (5) مِهَادِشِونِيعَتْ خُصَّةً مُّمُ (5)

بیگی و پتاہے۔'' (1) اوراس کے مثل نہل بن سعد وابوسعید خدری وعبداللہ بن عمر وزید بن ارقم رضی اللہ تعالیٰ عنهم سے مروی۔

خَلِيْثُ 🕕 🥕 ام المومنين صديقة رضي الله تعالى عنها سے بيہ في وطبر اني روايت كرتے ہيں ، كه رسول الله صلى الله تعالى عليه وملم عرفہ کے روزہ کو ہزار دن کے برابر بتاتے۔ ⁽²⁾ گمر حج کرنے والے پر جوعرفات میں ہے، اُسے عرفہ کے دن کاروزہ مکروہ ہے۔ کہ ابوداود ونسائی وابن خزیمیہ وابو ہر برہ رض اللہ تعالی عنہ سے راوی ،حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے عرفہ کے دن عرفہ میں روز ہ رکھنے

سے نع فر مایا۔ ⁽³⁾

(m) شوال میں چھدن کے روز ہے (4) جنھیں لوگ شش عید کے روز ہے کہتے ہیں۔

خلینٹ ۱۲ وسال 💨 - مسلم وابوداود وتر مذی ونسائی وابن ماجه وطبرانی ابوابوب رضی املاتعالی عنه سے راوی ، رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم فرمات عين : وجس نے رمضان كے روز بر كھے پھران كے بعد چيدون شوال ميں ركھ تو ايسا ہے جيسے وہركا روز ہ رکھا۔'' (5) اوراسی کے مثل ابو ہر بر ہوضی اللہ تعالی عنہ سے مروی۔

خلایث ۱۴۰ و ۱۵ 🌯 نسائی وابن ماجه وابن خزیمه وابن حبان ثوبان رضی الله تعالی عند سے اور امام احمد وطبر انی و بزار جابر بن عبداللَّدرض الله تعالى عنها سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی عليه وسلم نے فر مايا: ' جس نے عيدالفطر كے بعد جيوروز بے ركھ ليے تو اُس نے پورے سال کاروزہ رکھا، کہ جوایک نیکی لائے گا اُسے دس ملیں گی تو ماور مضان کاروزہ دس مہینے کے برابر ہے اوران جیر دنوں کے بدلے میں دومہینے تو پورے سال کے روزے ہو گئے ۔'' (6)

خلینٹ 🔰 🥕 طبرانی اوسط میں عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہا سے راوی ، کدرسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں : ''جس نے رمضان کےروزے رکھے پھراُس کے بعد چیودن شوال میں رکھے تو گناہوں سے ایسے نکل گیا، جیسے آج مال کے بیٹ سے پیدا ہوا ہے۔'' ⁽⁷⁾

- --- "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ١١٦٢، ص٥٨٩.
 - 2 "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٢٨٠٢، ج٥، ص١٢٧.
 - 3 "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب في صوم يوم عرفة بعرفة، الحديث: ٢٤٤٠، ج٢، ص٤٧٩.
- ◘ …… بہتر ہیہے کہ بیدوزے متفرق رکھے جائیں اورعید کے بعدلگا تارچھون میں ایک ساتھ رکھ لیے، تب بھی حرج نہیں ۔ کذافی الدر ۱۲ امنہ
- **5**..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صوم ستة ايام من شوال اتباعا لرمضان، الحديث: ١٦٢، م ٥٩٢٠.
- السنن الكبرى" للنسائي، كتاب الصيام، باب صيام ستة ايام من شوال، الحديث: ٢٨٦٠ ـ ٢٨٦١، ج٢، ص١٦٣ ـ ١٦٣٠.
 - 🕡 "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٢٦٢٨، ج٦، ص٢٣٤.

(۷) شعبان کاروز ہ اور پندرھویں شعبان کے فضائل۔

طبرانی وابن حبان معاذبن جبل رضی الله تعالی عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فر ماتے

خليث 12

میں: ''شعبان کی بندرھویں شب میں اللہ عزوجل تمام مخلوق کی طرف تحبّی فرما تا ہے اورسب کو بخش دیتا ہے ، مگر کا فراور عداوت سرید دری

وا<u>لے کو</u>'' (1)

خلین ۱۸ و ۱۹ 🔑 بیریق نے ام المونین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے روایت کی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه وَکلم) نے فر مایا:

''میرے پاس جبرئیل آئے اور بیر کہا: بیشعبان کی پندر هویں رات ہے، اس میں اللہ تعالیٰ جہنم سے اتنوں کو آزاد فرما تاہے جتنے بنی کلب (2) کے بکریوں کے بال ہیں، مگر کا فراور عداوت والے اور رشتہ کاٹنے والے اور کیٹر الٹکانے والے اور واللہ بن کی نافر مانی کرنے والے اور شراب کی مداومت کرنے والے کی طرف نظر رحمت نہیں فرما تا۔'' (3) امام احمدنے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنباسے جو روایت کی ، اس میں قاتل کا بھی ذکر ہے۔

خلین ۲۰ کی کہ حضورا قدس سلی اللہ تعالی علیہ وسلی اللہ تعالی عنہا سے روایت کی ، کہ حضورا قدس سلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فر مایا: اللّه عزوجل شعبان کی بندر هویں شب میں تحلّی فر ماتا ہے، استغفار کرنے والوں کو بخش دیتا ہے اور طالب رحمت پر رحم فر ماتا ہے اور عداوت والوں کوجس حال پر ہیں، اسی پر چھوڑ دیتا ہے۔'' (4)

خلین این ماجہ مولی علی کرم اللہ تعالی وجہ انکریم سے راوی ، نبی صلی اللہ تعالی علیہ وہلم فرماتے ہیں: ''جب شعبان کی پندر هویں رات آ جائے تو اُس رات کو قیام کر واور دن میں روزہ رکھو کہ رب تبارک و تعالی غروب آ فتاب ہے آ سمان و نیا پرخاص تحلّی فرما تا ہے: کہ ہے کوئی بخشش چیا ہے والا کہ اسے بخش دوں ، ہے کوئی روزی طلب کرنے والا کہ اُسے روزی

• الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الحظرو الإباحة، باب ماجاء في التباغض... إلخ، الحديث: ٦٣٦ ٥، ج٧، ص ٤٧٠.

جن دو شخصوں میں کوئی دنیوی عداوت ہوتواس رات کے آنے سے پہلے انہیں چاہیے کہ ہرایک دوسرے سے ل جائے اور ہرایک دوسرے کی خطامعاف کردے تا کہ مغفرت الہی انہیں بھی شامل ہو۔ انہیں احادیث کی بنا پر بحدہ تعالیٰ یہاں بر بلی میں اعلیٰ حضرت قبلہ مظاہم الاقدس نے بیطریقة مقرر فرمایا کہ ۱۴ چودہ شعبان کورات آنے سے پہلے مسلمان آپس میں ملتے اور عفوتقفیر کراتے اور جگہ کے مسلمان بھی ایسا ہی کرس تو نہایت انسے وبہتر ہو۔ ۱۲ منہ

- 2 عرب میں بنی کلب ایک قبیلہ ہے، جن کے یہاں بکریاں بکثرت ہوتی تھیں۔ ۱۲ مند
- ③ "شعب الإيمان"، باب في الصيام، ماجاء في ليلة النصف من شعبان، الحديث: ٣٨٣٧، ج٣، ص٣٨٣.
- ٣٨٢٠. "شعب الإيمان"، باب في الصيام، ماجاء في ليلة النصف من شعبان، الحديث: ٣٨٣٥، ج٣، ص٣٨٢.

ي و وں، ہے کوئی مبتلا کہ اُسے عافیت دُوں، ہے کوئی ایسا، ہے کوئی ایسااور بیاس وفت تک فر ما تاہے کہ فجر طلوع ہوجائے۔'' (1)

اُم المومنین صدیقه فرماتی ہیں:حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم کو شعبان سے زیادہ کسی مہینے میں روزہ 🔰

رکھتے میں نے نہ دیکھا۔(2)

(۵) ہر مہینے میں تین روز نے خصوصاً ایّا م بیض تیرہ، چودہ، پیدرہ۔

خل پئٹ ۲۳ و۲۳ 💨 بخاری ومسلم ونسائی ابو ہر بریہ اورمسلم ابودر داء رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے راوی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

نے مجھے تین باتوں کی وصیّت فر مائی ،ان میں ایک بیہ ہے کہ ہر مہینے میں تین روز رے رکھوں۔(3)

خلینٹ ۲۵ و۲۷ 💨 – تصحیح بخاری وسلم میں عبداللہ بن عمر و بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنها سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وکم

نے فر مایا:''ہر مہینے میں تین دن کے روز ےایسے ہیں جیسے دہر (ہمیشہ) کاروزہ'' ⁽⁴⁾ اسی کے مثل قرہ بن ایاس رضی الله تعالی عنہ ہےمروی۔

ځ 🗘 پیٹ 🖊 ۲۵ ۴ 🔑 امام احمد وابن حبان ابن عباس اور برزارمولی علی رضی الله تعالی عنبم سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم

فرماتے ہیں:''رمضان کے روز ہے اور ہر مہینے میں تین دن کے روز ہے سینہ کی خرابی کو دُورکرتے ہیں۔'' (5)

خلین وسی الله تعالی علیه و نه بنت سعدرضی الله تعالی عنبا سے راوی ، که حضور (صلی الله تعالی علیه و کم ماتے ہیں: ' جس سے

ہو سکے، ہرمہینے میں تین روز بےرکھے کہ ہرروزہ دس گناہ مٹا تا ہے اور گناہ سے ایسا یا ک کردیتا ہے جیسا یانی کیڑے کو'' (6) خلینٹ 🕶 🤲 مام احمد وتر مذی ونسائی وابن ماجه ابوذ ررضی الله تعالی عند سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا:

''جب مهينے ميں تين روز بر ڪھنے ہوں تو تيرہ، چودہ، پندرہ کور کھو'' (7)

🕹 پئٹ 🗂 🐣 نسائی نے ام المونین حفصہ رضی اللہ تعالی عنہا سے روایت کی ، کہ حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حیار چیز ول کو

● "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات... إلخ، باب ماجاء في ليلة النصف من شعبان، الحديث: ١٣٨٨، ج٢، ص١٦٠.

2 "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في وصال شعبان برمضان، الحديث: ٧٣٦، ج٢، ص١٨٢.

3 "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب صيام البيض ثلاث عشرة... إلخ، الحديث: ١٩٨١، ج١، ص ٦٥١.

• الحديث: ١٨٧ ـ (١٥٩) ١٩٧٠ الصيام، باب النهى عن صوم الدهر... إلخ، الحديث: ١٨٧ ـ (١٥٩) ١٩٧٠ ـ (١١٦٢)،

5 "مسند البزار"، مسند على بن طالب، الحديث: ٦٨٨، ج٢، ص ٢٧١.

6 "المعجم الكبير"، الحديث: ٦٠، ج٢٥، ص٥٦.

🕡 "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في صوم ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ٧٦١، ج٢، ص١٩٣.

تہیں چھوڑتے تھے۔عاشورااورعشر ہُذی الحجباور ہرمہینے میں تین دن کے روزے اور فجر کے پہلے دور کعتیں۔ (1)

خلیث ۳۲ 🚽 🔻 نسانی این عباس رضی الله تعالی عنبها سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم ایا م بیض میس بغیر روز و کے نید

ہوتے ، نہ سفر میں ، نہ حضر میں ۔ ⁽²⁾

(۲) پیراورجعرات کے روزے۔

خلیت سستاه الله تعالی علیه و ابو هر روه رضی الله تعالی عنه سے مروی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه و کم ماتے ہیں:

'' پیراور جعرات کواعمال پیش ہوتے ہیں تو میں پسند کرتا ہوں کہ میراعمل اس وقت پیش ہو کہ میں روز ہ دار ہوں۔'' ⁽³⁾ اسی کے مثل اسامہ بن زید و جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی۔

ابن ماجه انھیں سے راوی، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) پیراور جمعرات کوروزے رکھا کرتے تھے،

اس کے بارے میں عرض کی گئی تو فر مایا:ان دونوں دِنوں میں الله تعالیٰ ہرمسلمان کی مغفرت فر ما تاہے،مگر وہ دو شخص جنھوں نے

باہم جدائی کرلی ہے،ان کی نسبت ملائکہ ہے فرما تاہے: ' انھیں چھوڑو، یہاں تک کہ کے کرلیں۔' (4)

خاریث سے مروی، که رسول الله صلی الله مین ام المومنین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے مروی، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم پیراور جمعرات کو خیال کر کے روز ہ رکھتے تھے۔ ⁽⁵⁾

خلین سی البوقیاده رضی الله تعالی عندسے مروی ، حضور (صلی الله تعالی علیه وَلم) سے پیر کے دن

روزے کا سبب دریافت کیا گیا، فرمایا: ''اسی میں میری ولادت ہوئی اوراسی میں مجھ پروحی نازل ہوئی۔'' (6)

(۷) بعض اور دنوں کے روزے۔

- "سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب كيف يصوم ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ٢٤١٣، ص٥٩٥.
- سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب صوم النبي صلى الله تعالىٰ عليه وسلم بأبي هو وامي... إلخ، الحديث: ٢٣٤٢،
 ص٣٨٦٠.
 - ١٨٧٠. "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في صوم يوم الاثنين و الخميس، الحديث: ٧٤٧، ج٢، ص١٨٧.
 - 4 "سنن ابن ماجه"، أبواب ما جاء في الصيام، باب صيام يوم الاثنين و الخميس، الحديث: ١٧٤٠، ج٢، ص٤٤٣.
 - الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في صوم يوم الاثنين و الخميس، الحديث: ٧٤٥، ج٢،ص١٨٦.
- 🥃 💰 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ١٩٨ ـ (١١٦٢)، ص ٩٩٥.

💨 پخشنبه کوروزے رکھے،اس کے لیے دوزخ سے براءت ککھ دی جائے گی۔'' (1)

خلینٹ 🕫 تا ۴ 👙 🚽 طبرانی اوسط میں انھیں سے راوی، کہ حضور سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:'' جس نے جیہار شنبہ و پنجشنبہ و جُمُعَہ کوروزے رکھے،اللہ تعالٰی اس کے لیے جنت میں ایک مکان بنائے گا،جس کا باہر کا حصہ اندر سے دکھائی دے گا اور

اورانس رض الله تعالی عند کی روایت میں ہے، که' جنت میں موتی اور یا قوت وز برجد کامحل بنائے گا اوراس کے لیے دوز خ سے برأت لکھ دی جائے گی۔'' (3)

اورا بن عمر رضی الله تعالی عنها کی روایت میں ہے، که 'جوان تین دنوں کے روزے رکھے پھر مجمعَة کوتھوڑ ایا زیادہ تصدق کرے تو جو گناہ کیا ہے، بخش دیا جائے گا اور ایبا ہو جائے گا جیسے اُس دن کہانی مال کے پیٹ سے پیدا ہوا۔ ' (4) مگر خصوصیت کے ساتھ جُمُعَہ کے دن روز ہ رکھنا مکروہ ہے۔

خلینٹ سیس کے مسلم ونسائی ابو ہر ریرہ رض اللہ تعالی عنہ سے راوی،حضورِ اقدس صلی اللہ تعالی علیہ رسلم نے فر مایا: ''را توں میں سے جُمُعَہ کی رات کو قیام کے لیے اور دِنوں میں جُمُعَہ کے دن کوروز ہ کے لیے خاص نہ کرو، ہاں کوئی کسی قسم کا روز ہ رکھتا تھا اور جُمُعَهَ كا دن روزه ميں واقع ہوگيا تو حرج نہيں _'' (5)

ځ ے پیٹ 🔫 💝 🚽 بخاری ومسلم وتر مذی ونسائی وابن ماجہ وابن خزیمیه انھیں سے راوی ،رسول اللہ سلی اللہ تعالی عایہ وہلم فر ماتے ہیں:'' جُمُعَہ کے دن کوئی روزہ نیر کھے، مگراس صورت میں کہاس کے پہلے یا بعدا یک دن اور روزہ رکھے'' (6) اورا بن خزیمہ کی روایت میں ہے،'' جُمُعَه کا دن عید ہے، لہٰذاعید کے دن کوروز ہ کا دن نہ کر و،مگریہ کہ اس کے قبل یا بعدروز ہ رکھو'' (7)

خلین ۴۵ 💝 💎 صحیح بخاری و مسلم میں محمد بن عباد سے ہے کہ جابر رضی اللہ تعالی عنہ خانہ کعبہ کا طواف کرتے تھے، میں نے ان سے بوچھا، کیا نبی سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے جُمُعۃ کے روزہ سے منع فرمایا؟ کہا: ہاں ،اس گھر کے رب کی قشم۔ (8)

- 1 "مسند أبي يعليٰ"، مسند عبد الله بن عمر، الحديث: ١١٠٥، ج٥، ص١١٥.
- - ◘ "شعب الإيمان"، باب في الصيام، صوم شوال والأربعاء والخميس والجمعة، الحديث: ٣٨٧٢، ج٣، ص٣٩٧.
 - 5 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب كراهية إفراد يوم الجمعة... إلخ، الحديث: ١٤٨ ـ (١١٤٤)، ص٥٧٦.
 - 6 "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب كراهية إفراد يوم الجمعة... إلخ، الحديث: ١١٤٤، ص٥٧٦.
- 🗗 "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الصيام، باب الدليل على ان يوم الجمعة يوم عيد... إلخ، الحديث: ٢١٦١، ج٣، ص٥١٣.
 - الحديث: ١١٤٣، ص٥٧٥.

منت کے روزہ کا بیان 🎇

شرعی منّت جس کے ماننے سے شرعاً اس کا پورا کرناوا جب ہوتا ہے،اس کے لیے مطلقاً چند شرطیں ہیں۔

- (۱) الیی چیز کی منت ہو کہ اس کی جنس سے کوئی واجب ہو، عیادت مریض اور معجد میں جانے اور جنازہ کے ساتھ جانے کی منت نہیں ہوسکتی۔
- رح) وہ عبادت خود بالذات مقصود ہو کسی دوسری عبادت کے لیے وسیلہ نہ ہو، لہذا وضو وغسل ونظر مصحف کی منت صحیح اللہ ا
- (۳) اس چیز کی منّت نہ ہوجوشر ع نے خوداس پر واجب کی ہو،خواہ فی الحال یا آئندہ مثلاً آج کی ظہریا کسی فرض نماز کی منّت صحیح نہیں کہ بید چیزیں تو خود ہی واجب ہیں۔
- (۴) جس چیز کی منّت مانی وہ خود بذاتہ کوئی گناہ کی بات نہ ہواورا گر کسی اور وجہ سے گناہ ہو تو منّت صحیح ہوجائے گی، مثلاً عید کے دن روزہ رکھنامنع ہے، اگر اس کی منّت مانی تو منّت ہوجائے گی اگر چہتم سیہ ہے کہ اُس دن نہ رکھے، بلکہ کسی دوسر بے دن رکھے کہ بیممانعت عارضی ہے یعنی عید کے دن ہونے کیوجہ سے،خودروزہ ایک جائز چیز ہے۔
 - (۵) اليي چيز کي منت نه ہوجس کا ہونا محال ہو، مثلاً ميمنت مانی که کل گزشته ميں روز ه رکھوں گاميمنت صحيح نہيں۔(1)
- مسئل السنان المسئل المستعلم منت صحیح ہونے کے لیے بچھ بیضر ورنہیں کہ دل میں اس کا ارادہ بھی ہو،اگر کہنا بچھ جپاہتا تھا زبان سے منت کے الفاظ جاری ہو گئے منت صحیح ہوگئ یا کہنا بیج ہا ہتا تھا کہ اللہ (عزوجل) کے لیے مجھ پرایک دن کاروزہ رکھنا ہے اور زبان سے ایک مہینہ نکلا مہینے بھر کاروزہ واجب ہوگیا۔ (2) (روالحمتار)
- مسئانی کی ایا منهیّه یعنی عید و بقرعید اور ذی الحجه کی گیارهویں بارهویں تیرهویں کے روزے رکھنے کی منت مانی اور اخییں دِنوں میں رکھ بھی لیے تواگر چہدیہ گناہ ہوا مگر منت ادا ہوگئی۔⁽³⁾ (درمختار دغیرہ)
- سَسَعَانُ اللہ اس سال کے روز ہے کی منت مانی تو ایّا م منہیّہ چھوڑ کر باقی دنوں میں روز ہے رکھے اور ان دنوں کے بدلے کے اور دنوں میں رکھے اور اگرایّا م منہیّہ میں بھی رکھ لیے تو منت پوری ہوگئ مگر گنہگار ہوا۔ بیچکم اُس وقت ہے کہ ایّا م
 - 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٢٠٨.
 - شردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في الكلام على النذر، ج٣، ص٤٨٢.
 و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٠٠٠.
 - ③ "الدرالمختار" كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص ٤٨١ ـ ٤٨٣، وغيره.

منت کےروز ہ کا بیان

بهَادِشْرِيْحَتْ ثِصَّةَ جُمُّ (5)

منہ تیر سے پہلے منت مانی اوراگرا تا م منہ تیرگز رنے کے بعد مثلاً ذی الحجہ کی چودھویں شب میں اس سال کے روزے کی منت مانی توختم ذی الحجہ تک روز ہ رکھنے سے منت پوری ہوگئی کہ بیرسال ختم ذی الحجہ برختم ہوجا تا ہے اور رمضان سے پہلے اس سنہ کے

روزے کی منت مانی تھی تورمضان کے بدلے کے روزے اس کے ذمتہ نہیں۔

اوراگرمنّت میں پے در پے روزہ کی شرط یا نتیت کی جب بھی جن دنوں میں روزہ کی ممانعت ہے، اُن میں روزہ نہ ر کھے۔گر بعد میں پے در پے ان دنوں کی قضار کھے اورا گرایک دن بھی بےروزہ رہا تواس دن کے پہلے جتنے روزے ر کھے تھے، ان سب کا اعادہ کرے اورا گرایک سال کے روزے کی منّت کی تو سال بھرروزہ رکھنے کے بعد پینیتیں میا چونتیس دن کے اور

ر کھے یعنی ما ورمضان اور پانچ دن ایا م ممنوعہ کے بدلے کے،اگر چیان دنوں میں بھی اُس نے روزے رکھے ہوں کہاس صورت میں بینا کافی ہیں۔البتداگریوں کہا کہ ایک سال کے روزے پے در پے رکھوں گا تواب ان پینیٹس دنوں کے روزوں کی ضرورت

نہیں، مگراس صورت میں اگر پے در پے نہ ہوں گے تو سرے سے پھرر کھنے ہوں گے، مگرا یا ممنوعہ میں نہ ر کھے بلکہ سال پورا ہونے پریانچے دن علی الاتصال رکھ لے۔(1) (درمختار ، روالحتار)

منت كالفاظ مين يمين (2) كا بهى احمال ہے، البذايبال چيوسورتيں ہوں گا۔

- (۱) ان لفظول سے کچھ نیت نہ کی نہ منت کی نہ میں کی۔
- (٢) فقط منت كى نتيت كى يعنى يميين ہونے نہ ہونے كسى كاارادہ نه كيا۔
 - (۳) منت كى نتيت كى اورىيد كەيمىن نهيى _
 - (۴) ئىيىن كىنت كى اور يەكەمنت نېيىں ـ
 - (۵) منت اوريمين دونول کي نتيت کي۔
 - (۲) فقط يمين كى بيت كى اور منت ہونے يانہ ہونے سى كى نہيں۔

پہلی تین صورتوں میں فقط منت ہے کہ پوری نہ کرے تو قضاد ہے اور چوتھی صورت میں یمین ہے کہ اگر پوری نہ کی تو کفارہ

دینا ہوگا۔ پانچویں اور چھٹی صورتوں میں منت اور پمین دونوں ہیں، پوری نہ کرے تو منّت کی قضا دے اور پمین کا کفارہ (تنوبرالا بصار)

€.... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في الكلام على النذر، ج٣، ص٤٨٦ _ ٤٨٤.

🕰 يعنى قشم ـ

"تنويرالأبصار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٨٤.

🚵 📶 🕻 🕒 اس مہینے کے روز ہے کی منت مانی اوراس میں ایا م منہیّہ ہیں تو اُن میں روز بے ندر کھے، بلکہ اُن کے

بدلے کے بعد میں رکھے اور رکھ لیے تو گئزگار ہوا مگرمنت یوری ہوگئی اوراس صورت میں یورے ایک مہینے کے روزے واجب نہیں، بلکہ منت ماننے کے وقت ہے اُس مہینے میں جتنے دن باقی ہیں اُن دنوں میں روز ہے واجب ہیں اورا گروہ مہینہ رمضان کا تھا تو منت ہی نہ ہوئی کہ رمضان کے روز ہے تو خود ہی فرض ہیں۔ ہاں اگر ماہِ رمضان کے روز وں کی منت مانی اور رمضان

آنے سے پہلے انتقال ہو گیا توایک ماہ تک مسکین کوکھانا کھلانے کی وصیّت واجب ہے۔

ادرا گرکسی معیّن مہینے کی منت مانی ، مثلاً رجب یا شعبان کی تو پورےمہینه کا روز ہ ضرور ہے، و ہمہینہ اونتیس کا ہو تو اونتیس روز ہےاورتمیں کا ہو تو تمیں اور ناغہ نہ کرے پھرا گر کوئی روز ہ چھوٹ گیا تواس کو بعد میں رکھ لے پورے مہینے کےلوٹا نے کی ضرورت نہیں ۔ ⁽¹⁾ (ردالحتا روغیرہ)

سَسَعَانُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْهِ مِهِينِي كَرُوزِ هِ كَا مِنتَ مانى تولور تِنسِ دن كروز رواجب ہيں،اگر چه جس مہينے ميں ركھے وہ انتیس ہی کا ہواور یہ بھی ضرور ہے کہ کوئی روزہ اتا م منہتیہ میں نہ ہو کہ اس صورت میں اگراتیا م منہتیہ میں روزے رکھے تو گنہگار تو ہوا ہی ، وہ روزے بھی نا کافی ہیں اور بے در بے کی شرط لگائی یا دل میں بتیت کی توبیجھی ضرور ہے کہ ناغہ نہ ہونے یائے اگر ناغہ ہوا،اگر چہاتا مہنہتے میں تواب سےایک مہینے کے علی الاتصال روز سے رکھے یعنی بیضرور ہے کہان تیس دنوں میں کوئی دن ایسانہ ہو،جس میں روزہ کی ممانعت ہے اور بے در بے کی نہ شرط لگائی، نہ نیّت میں ہے تو متفرق طور پرتمیں روزے رکھ لینے سے بھی منت بوری ہوجائے گی۔

اورا گرعورت نے ایک ماہ پے در پے روزے رکھنے کی منّت مانی تو اگرا یک مہینہ یا زیادہ طہارت کا زمانہ اُسے ملتا ہے تو ضرور ہے کہایسے دفت شروع کرے کہ حیض آنے سے پیشتر تمیں دن پورے ہوجائیں، ورنہ حیض آنے کے بعداب سے تمیں پورے کرنے ہوں گے اور اگرمہینہ بورا ہونے سے پہلے اُسے حیض آجایا کرتا ہے تو حیض سے پہلے جتنے روزے رکھ چکی ہے، انھیں حساب کرلے جو باقی رہ گئے ، نھیں چیف ختم ہونے کے بعد متصلاً بلاناغہ بورا کرلے۔⁽²⁾ (درمختار ، ردالحتا روغیر ہما) مستان کے کی منت مانی تو ناغہ کرنا جائز نہیں اور متفرق طور پر مثلاً دین روزے کی منت مانی تو لگا تار

رکھنا جائز ہے۔ (3)(بح)

^{1 &}quot;ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٨٤، ٤٨٦، وغيره.

^{2 &}quot;الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في صوم الست من شوال، ج٣، ص ٤٨٦، وغيرهما.

^{3 &}quot;البحر الرائق"، كتاب الصوم، فصل في النذر، ج٢، ص١٩٥.

مسئالهُ ٨ ﷺ منت دوسم ہے۔

ایک معلّق که میرافلاں کام ہوجائے گایافلاں شخص سفر ہے آجائے تو مجھ پراللد (عزوجل) کے لیے اپنے روزے یا نمازیا

منت کےروز ہ کا بیان

صدقه وغير ہاہے۔

دوسری غیر معلّق جو کسی چیز کے ہونے ، نہ ہونے پر موقوف نہیں بلکہ بید کہ اللّہ (عزبط) کے لیے میں اپنے او پراتنے روز سے یا نماز یاصدقہ وغیر ہاوا جب کرتا ہوں ۔غیر معلّق میں اگر چہ وقت یا جگہ وغیر ہ معیّن کر ہے، مگر منت پوری کرنے کے لیے بیضر ورنہیں کہ اس سے پیشتر یا اس کے غیر میں نہ ہو سکے، بلکہ اگر اس وقت سے پیشتر روز ہے رکھ لیے یا نماز پڑھ لی وغیرہ وغیرہ وق منت بوری ہوگئی۔ (1) (درمخار)

سَسَعَالُهُ ﴿ ﴾ اس رجب کے روزے کی منت مانی اور جمادی الآخرہ میں روزے رکھ لیے اور یہ مہینہ انتیس کا ہوا، اگریہ رجب بھی انتیس کا ہو تو پوری ہوگئی ایک اور روزہ کی ضرورت نہیں اور تمیں کا ہوا تو ایک روزہ اور رکھے۔(2) (روالمحتار)

مسئل ان کی قضار کھے اور قضامیں ہے۔ سر میں اس جب کے روزہ کی منت مانی اور رجب میں بیمار مہا تو دوسرے دنوں میں ان کی قضار کھے اور قضامیں

اختیارہے کہ لگا تار روز ہے ہوں یا ناغہ دے کر۔⁽³⁾ (درمختار)

سَمَعَانُ اللَّهِ معلَق میں شرط پائی جانے سے پہلے منت پوری نہیں کر سکتا، اگر پہلے ہی روزے رکھ لیے بعد میں شرط پائی گئی تواب پھررکھنا واجب ہوگا، پہلے کے روزے اس کے قائم مقام نہیں ہو سکتے۔(4) (درمُنار)

مسئالة الكون كروز كى منت مانى تواختيار بكايا م منهيّد كسواجس دن چابروزه ركه كـ يومين

دودن، تین دن میں بھی اختیار ہے،البتہ اگران میں پے در پے کی نیّت کی تو پے در پے رکھنا واجب ہوگا، ورنہ اختیار ہے کہ ایک

ساتھ رکھے یا ناغہ دے کراور متفرق کی نیت کی اور پے در پے رکھ لیے جب بھی جائز ہے۔ (⁵⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُهُ اللهِ اللهِ

- "الدرالمختار"، كتاب الصوم،باب مايفسدالصوم... إلخ،فصل في العوارض... إلخ، ج٣، ص٤٨٦.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في صوم الست من شوال، ج٣، ص ٤٨٧.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٩٨٠.
 - 4 المرجع السابق. ص٤٨٨.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١٠ ص ٢٠٩.
 - 👸 المرجع السابق.

ييث كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) }

ا کے استان میں اور اگرایک دن کے اسک ماہ روزہ رکھنے کی منت مانی اور صحت نہ ہوئی مرگیا تو اُس پر پچھنجیں اورا گرایک دن کے ایک ماہ روزہ رکھنے کی منت مانی اور صحت نہ ہوئی مرگیا تو اُس پر پچھنجین اورا گرایک دن کے ایک میں میں ایک میں ایک میں اور اگرایک دن کے دن

لیے بھی اچھا ہوگیا تھا اور روزہ نہ رکھا تو پورے مہینے بھر کے فدید کی وصیّت کرنا واجب ہے اوراس دن روزہ رکھ لیاجب بھی باقی دنوں کے لیے وصیّت جا ہیں۔ یو ہیں اگر تندرست نے منّت مانی اور مہینہ پورا ہونے سے پہلے مرگیا تو اس پر بھی وصیّت کرنا

بعدآیایا کھانے کے بعدآیایامنت ماننے والی عورت بھی اوراُس دن اُسے حیض تھا توان صورتوں میں بھی کچھنہیں اوراگریہ کہا تھا کہ جس دن فلاں آئے گا، اُس دن کا اللہ (عزوجل) کے لیے مجھے ہمیشہ روز ہر کھنا ہے اور کھانا کھانے کے بعدآیا تو اُس دن کاروز ہ تو

> . مَسِعَ اللهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ مِن عَلَيْ اللهِ مِن عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَي

اعتكاف كا بيان

اللَّهُ عزوجل ارشا دفر ما تاہے:

﴿ وَلَا تُبَاشِرُ وَهُنَّ وَ أَنْتُمُ عَكِفُونَ لِ فِي الْمَسْجِيلَ ﴾ (5)

عورتوں سے مباشرت نہ کرو، جب کہتم مسجدوں میں اعتکاف کیے ہوئے ہو۔

فرین الله صحیحین میں ام المومنین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے مروی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم رمضان کے آخر

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في صوم الست من شوال، ج٣، ص ٤٨٨.
 - 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٨٠٢٠٨، وغيرد.
 - 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٠٢.
 - 4 المرجع السابق.
 - 📆 🗗 ۱۸۷. پ۲، البقرة: ۱۸۷.

جِهِ ارشِريُعَتْ خِصَّةَ ثَجُمُ (5)

🕹 عشرہ کااعتکاف فرمایا کرتے۔ ⁽¹⁾

خلیث ۲ 🔫 ابوداودانھیں سے راوی، کہتی ہیں: معتلف پرسنت (لیعنی حدیث سے ثابت) یہ ہے کہ نہ مریض کی

. این ماجه این عباس رضی الله تعالی عنها سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے معتکف کے بارے میں

فرمایا: ''وہ گناہوں سے بازر ہتاہے اور نیکیوں سے اُسے اُس قدر تواب ملتاہے جیسے اُس نے تمام نیکیاں کیں۔'' (3)

خریث کے بیمق امام حسین رضی الله تعالی عنہ سے راوی ، کہ حضورِ اقد س صلی الله تعالی علیه دسم نے فر مایا: ' د جس نے رمضان

میں دل دنوں کا اعتکاف کرلیا توالیاہے جیسے دو جج اور دوعمرے کیے۔'' (4)

سَعَانُ الله مسجد میں الله (عزوج) کے لیے نیت کے ساتھ طلم بنا اعتکاف ہے اوراس کے لیے مسلمان ، عاقل اور جنابت وحض ونفاس سے پاک ہونا شرط ہے۔ بلوغ شرط نہیں بلکہ نابالغ جو تمیز رکھتا ہے اگر بدنیت اعتکاف مسجد میں طلم سے کا ختر میں اعتکاف صحیح ہے ، آزاد ہونا بھی شرط نہیں لہذا غلام بھی اعتکاف کرسکتا ہے ، گراہے مولی سے اجازت لینی ہوگی اور مولی کو بہر حال منع کرنے کا حق حاصل ہے۔ (5) (عالمگیری ، در مختار ، روالحتار)

مسئل کی مسجد جماعت وہ ہے جس میں امام ومؤذن مقرر ہوں ، اگر چداس میں پنجگانہ جماعت نہ ہوتی ہواور آسانی اس میں ہے کہ مطلقاً ہر مسجد میں اعتکاف صحیح ہے اگر چدوہ مسجد جماعت نہ ہو،خصوصاً اس زمانہ میں کہ بہتیری مسجد میں ایسی ہیں جن میں نہ امام ہیں نہ مؤذن ۔ (6) (روالمحتار) مسکتان سب سے افضل مسجد حرم شریف میں اعتکاف ہے پھر مسجد نبوی میں میں صاحبا الصلاۃ والتسلیم پھر مسجد اقصلی (7) میں

- ❶ "صحيح مسلم"، كتاب الاعتكاف، باب اعتكاف العشرالأو خر من رمضان، الحديث: ١١٧٢، ص٩٧٥.
 - ◘ "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب المعتكف يعود المريض، الحديث: ٧٢٤٧٣، ج٢، ص٤٩٢.
- 3..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ما جاء في الصيام، باب في ثواب الاعتكاف، الحديث: ١٧٨١، ج٢، ص٥٣٥.
 - 4.... "شعب الإيمان"، باب في الاعتكاف، الحديث، ٣٩٦٦، ج٣، ص ٤٢٥.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص ٤٩٢ ـ ٤٩٤.
 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص ٢١١.
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٣.
 - 🗗 لعنى بيت المقدّس _

اعتكاف كابيان

پهراُس میں جہاں بڑی جماعت ہوتی ہو۔ (1) (جو ہرہ)

سَسَعَانَ ﴾ عورت کومسجد میں اعتکاف مکروہ ہے، بلکہ وہ گھر میں ہی اعتکاف کرے مگراس جگہ کرے جواُس نے نماز

پڑھنے کے لیے مُقرر کررکھی ہے جے مسجد بیت کہتے ہیں اورعورت کے لیے بیمستحب بھی ہے کہ گھر میں نماز پڑھنے کے لیے کوئی عبگہ مقرر کر لے اور جا ہے کہ اس جگہ کو پاک صاف ر کھے اور بہتر یہ کہ اس جگہ کو چبوتر ہ وغیرہ کی طرح بلند کر لے۔ بلکہ مرد کو بھی

جا ہے کہ نوافل کے لیے گھر میں کوئی جگہ مقرر کر لے کہ نفل نماز گھر میں پڑِ ھناافضل ہے۔ ⁽²⁾ (درمختار، دوالمحتار)

مسئل ہے ۔ مسئل کی جاتا ہے ۔ اگرعورت نے نماز کے لیے کوئی جگہ مقرر نہیں کررکھی ہے تو گھر میں اعتکاف نہیں کرسکتی،البتة اگراس وقت

ینی جب کداعتکاف کاارادہ کیا کسی جگہ کونماز کے لیے خاص کرلیا تواس جگہ اعتکاف کر سکتی ہے۔⁽³⁾ (درمختار ،ردالمختار)

مَسِعَالَهُ لَ ﴾ خنتی (⁴⁾ مسجد بیت میں اعتکاف نہیں کرسکتا۔ ⁽⁵⁾ (ورمختار)

مَسِعَلَمُ كَيْ ﴾ اعتكاف تين قتم ہے۔

- (۱) واجب، كماعتكاف كى منت مانى يعنى زبان سے كہام حض دل ميں اراده سے واجب نه ہوگا۔
- (۲) سنت مؤکدہ، کہ دمضان کے پورے عشر ہُ اخیرہ یعنی آخر کے دس دن میں اعتکاف کیا جائے یعنی ہیسویں رمضان کو پورے عشر ہُ اخیرہ یعنی آخر کے دس دن میں اعتکاف کیا جائے یعنی ہیسویں کے غروب کے بعد یا انتیس کو چاند ہونے کے بعد نکلے۔ اگر ہیسویں تاریخ کو بعد نماز مغرب نیت اعتکاف کی توسنت مؤکدہ ادانہ ہوئی اور بیاعتکاف سنت کفایہ ہے کہ اگر سب ترک کریں توسب سے مطالبہ ہوگا اور شیمیں ایک نے کرلیا توسب بری الذمہ۔
 - (س) ان دو کے علاوہ اور جواعت کاف کیا جائے وہ مستحب وسنت غیر مؤکدہ ہے۔ (⁶⁾ (درمختار ، عالمگیری)

سَمَعُ الله عَلَى الل

- 1 "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ص١٨٨.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٤.
 - 3 المرجع السابق.
 - _ايجوا_ • ينجوا_
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٤.
- 6 المرجع السابق، ص ٩٩٥، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص ٢١١.
 - 🧊 🗗 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص ٢١١، وغيره.

🥌 ہے کہ فقط نتیت کر لینے سے اعتکاف کا ثواب ملتا ہے، اسے تو نہ کھونا چاہیے۔مسجد میں اگر درواز ہ پر بیعبارت لکھ دی جائے کہ اعتکاف کی نیت کرلو، اعتکاف کا ثواب یاؤگے تو بہتر ہے کہ جواس سے ناواقف ہیں انھیں معلوم ہوجائے اور جوجانتے ہیں اُن

کے لیے ماد د مائی ہو۔

سَسَانُ ﴿ ﴾ اعتكاف سنت يعني رمضان شريف كي تيجيلي دس تاريخوں ميں جوكيا جاتا ہے، اُس ميں روز ه شرط ہے، لہذا اگرکسی مریض پامسافر نے اعتکاف تو کیا مگرروز ہندرکھا توسنت ادانہ ہوئی بلکنفل ہوا۔⁽¹⁾ (ردالحتار)

سَسَانُ اللهِ مَنْ اللهِ عَنْ اللهُ مِنْ بَعِي روز ه شرط ہے، یہاں تک کدا گرایک مہینے کے اعتکاف کی منت مانی اور بیکہا کہ روز ہ ندر کھے گا جب بھی روز ہ رکھنا واجب ہے اورا گررات کے اعتکاف کی منت مانی تو بیمنت صحیح نہیں کہ رات میں روز ہنیں ہوسکتا اوراگریوں کہا کہ ایک دن رات کا مجھ پراعتکاف ہے توبیہ منت صحیح ہے اوراگر آج کے اعتکاف کی منت مانی اور کھانا کھا چکا ہے تو منت صحیح نہیں۔(2) (درمختار، عالمگیری) یو ہیں اگر ضحوہ کبریٰ کے بعد منت مانی اور روزہ نہ تھا تو بیرمنت صحیح نہیں کہ اب روزہ کی نیّت نہیں کرسکتا، بلکہ اگر روزہ کی نیّت کرسکتا ہومثلاً ضحوۂ کبریٰ ہے قبل جب بھی منت صحیح نہیں کہ بیر روزہ نفل ہوگا اور اس اعتكاف ميں روز هُ واجب در كار _

مسئلہ السیالہ السیالہ سی کے الیے روزہ ہوبلکہ روزہ ہونا ضروری ہے، اگر چہ اعتکاف کی نیت سے نہ ہومثلاً اس رمضان کے اعتکاف کی منت مانی تو وہی رمضان کے روز ہے اس اعتکاف کے لیے کافی ہیں اورا گر رمضان کے روزے تور کھے مگراعتکاف نہ کیا تواب ایک ماہ کےروز بےر کھےاوراس کےساتھواعتکاف کرےاورا گریوں نہ کیا یعنی روز ہے ۔ ر کھ کراء تکاف نہ کیا اور دوسرار مضان آگیا تو اس رمضان کے روزے اس اعتکاف کے لیے کافی نہیں۔

یو ہیں اگر کسی اور واجب کے روزے رکھے تو یہ اعتکاف ان روزوں کے ساتھ بھی ادانہیں ہوسکتا، بلکہ اب اُس کے لیے خاص اعتکاف کی نتیت سے روز ہے رکھنا ضروری ہے اورا گراس صورت میں کہ رمضان کے اعتکاف کی منت مانی تھی ۔ نہ روزے رکھے، نہاعتکاف کیا اب ان روزوں کی قضا رکھ رہاہے تو ان قضا روزوں کے ساتھ وہ اعتکاف کی منت بھی پوری کرسکتا ہے۔(3) (عالمگیری، در مختار، روالحتار)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٩٦.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص ٢٩٦.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص ٢١١.
- 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٧.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص ٢١١.

اعتكاف كابيان

روزه کافی نهیں اور بیروزه واجب ہونہیں سکتا۔ (1) (عالمگیری)

مَسِعَانُ اللهِ اللهِ عَلَيْ مِهِنِيْ كِ اعتكاف كى منت مانى تويه منت رمضان ميں پورى نہيں كرسكتا بلكه خاص أس اعتكاف كے ليے روزے ركھنے ہوں گے۔ (2) (عالمگيرى)

سے وروے وہے۔ دی ہے۔ رہ سیری اور کی منت مانی توشو ہرمنت یوری کرنے سے روک سکتا ہے اور اب بائن ہونے یا موتِ منت کا منت مانی توشو ہر منت کے منت مانی توشو ہر منت کے منت مانی توشو ہر منت کا منت مانی توشو ہر منت کے منت مانی کے منت کے منت کے منت مانی کے منت مانی کے منت مانی کے منت کے منت کے منت مانی کے منت کے من

مسئائی 10 ﷺ شوہر نے عورت کواعت کاف کی اجازت وے دی اب روکنا جاہے تو نہیں روک سکتا اور مولی نے باندی غلام کواجازت دیدی جب بھی روک سکتا ہے اگر چہاب روکے گا تو گنہگار ہوگا۔ (4) (عالمگیری)

سَمَعَانُ اللهِ عَمْدِ عَلَيْهِ مَهِينِ كِاعْتِكاف كَى اجازت دى اورعورت لگاتار پورے مہینے كااعتكاف كرنا چاہتى ہے تو شوہر كواختيار ہے كہ يہ يتكم دے كه تقوڑ ئے تورك كے ايك مہينہ پوراكر لے اوراگركسى خاص مہینے كی اجازت دى ہے تو اب اختيار نه رہا۔ (5) (عالمگيرى)

مَسَعَلَىٰ کا ہے۔ اعتکاف واجب میں معتکف کومسجد سے بغیر عذر نکلنا حرام ہے، اگر نکلا تو اعتکاف جاتار ہاا گرچہ بھول کر نکلا ہو۔ یو ہیں اعتکاف سنت بھی بغیر عذر نکلنے سے جاتار ہتا ہے۔ یو ہیں عورت نے مسجد بیت میں اعتکاف واجب یامسنون کیا تو بغیر عذر وہاں سے نہیں نکل سکتی ،اگروہاں سے نکلی اگرچہ گھر ہی میں رہی اعتکاف جاتار ہا۔ ⁽⁶⁾ (عالمگیری ، روالمحتار)

مَسَعَلَهُ ١٨ ﴾ معتلف كومتجدسے نكلنے كے دوعذر ہيں۔

ایک حاجت طبعی کہ مسجد میں پوری نہ ہو سکے جیسے پاخانہ، پیٹاب،استنجا، وضواور عنسل کی ضرورت ہو توعنسل، مگر عنسل و وضومیں بیشرط ہے کہ مسجد میں نہ ہو سکیں یعنی کوئی الیی چیز نہ ہوجس میں وضووعنسل کا پانی لے سکے اس طرح کہ مسجد میں پانی کی

- الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١٠ ص ٢١١.
 - 2 ····· المرجع السابق.
 - 3 المرجع السابق.
 - 4 المرجع السابق.
 - 5 المرجع السابق.
- المرجع السابق، ص٢١٢، و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٠١٥.

کوئی بوند نہ گرے کہ وضووغسل کا پانی مسجد میں گرانا ناجائز ہے اور لگن وغیرہ موجود ہو کہ اس میں وضواس طرح کرسکتا ہے کہ کوئی

چھنٹ مسجد میں نہ گرے تو وضو کے لیے مسجد سے نکلنا جائز نہیں ، نکلے گا تو اعتکاف جاتار ہے گا۔ یو ہیں اگر مسجد میں وضووغسل کے لیے جگہ بنی ہویا حوض ہو تو باہر جانے کی اب اجازت نہیں۔

دوم حاجت شرعی مثلاً عیدیا جمعہ کے لیے جانایا او ان کہنے کے لیے منارہ پر جانا، جبکہ منارہ پر جانے کے لیے باہر ہی سے راستہ ہواورا گرمنارہ کاراستہ اندر سے ہوتو غیر مؤذن بھی منارہ پر جاسکتا ہے مؤذن کی تخصیص نہیں۔ ⁽¹⁾ (درمختار، ردامختار)

راستہ ہواورا کرمنارہ کاراستہ اندرہے ہو تو غیر مؤذن بھی منارہ پر جاسلتا ہے مؤذن کی تصیف نہیں۔ ⁰¹ (ورمختار ، ردامختار) مسکانہ 19 ﷺ قضائے حاجت کو گیا تو طہارت کر کے فوراً چلا آئے تھہرنے کی اجازت نہیں اورا گرمعتلف کا مکان مسجد

سے دُور ہے اور اس کے دوست کا مکان قریب تو بیضر ورٹہیں کہ دوست کے یہاں قضائے حاجت کوجائے ، بلکہ اپنے مکان پر بھی جاسکتا ہے اور اگر اس کے خود دوم کان ہیں ایک نزدیک دوسرا دُور تو نزدیک والے مکان میں جائے کہ بعض مشائخ فرماتے ہیں دُور والے میں جائے گا تواعث کاف فاسد ہوجائے گا۔ (2) (ردالمحتار ، عالمگیری)

مسئ ان ان ان ان سے پیشرسنیں ہوتا ہے تو آفتاب ڈھلنے کے بعداس وقت جائے کہ اذان ٹانی سے پیشرسنیں پڑھ سکے پڑھ کے اورا گر دُور ہو تو آفتاب ڈھلنے سے پہلے بھی جاسکتا ہے، مگراس انداز سے جائے کہ اذان ٹانی کے پہلے سنیں پڑھ سکے زیادہ پہلے نہ جائے۔

اور یہ بات اس کی رائے پر ہے جب اس کی سمجھ میں آجائے کہ پہنچنے کے بعد صرف سنتوں کا وقت باقی رہے گا، چلا جائے اور فرم جمعہ کے بعد حیار یا چھر کعتیں سنتوں کی پڑھ کر چلا آئے اور فلہرا حتیاطی پڑھنی ہے تو اعتکاف والی مسجد میں آکر پڑھے اور اگر پچپلی سنتوں کے بعد والیس نہ آیا، وہیں جامع مسجد میں کھہرا رہا، اگر چدا یک دن رات تک وہیں رہ گیا یا اپنااعتکاف وہیں پورا کیا تو بھی وہ اعتکاف فیا سدنہ ہوا مگر یہ مکروہ ہے اور یہ سب اس صورت میں ہے کہ جس مسجد میں اعتکاف کیا، وہاں جمعہ نہوتا ہو۔ (3) (ورمختار روراکمتار)

سکان ۱ گرایسی مسجد میں اعتکاف کیا جہاں جماعت نہیں ہوتی تو جماعت کے لیے نکلنے کی اجازت ⁽⁴⁾ہے۔ ⁽⁵⁾ (ردالحمتار)

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص١٥٠.
 - 2..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص١٠٥.
- و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٢. 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٠٠٥.
-سیّدی اعلی حضرت تحریر فرماتے بین' اگراپنے محلے کی الیم متجد میں اعتکاف کیا جہاں جماعت نہیں ہوتی تو اب جماعت کے لیے نگلنے کی اجبان جماعت نہیں ہوتی تو اب جماعت کے لیے نگلنے کی اجازت نہیں بلکہ افضل کہی ہے کہ اس متجد میں تنہا نماز پڑھے کیونکہ بیرق متجد ہے۔ (''جدالممتار''، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، جس، صر۸۸) لہذا اس بڑمل کیا جائے۔...علمیه
 - شردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٥،٥٥٥.

ﷺ استان ۲۲ ﷺ اعتکاف کے زمانہ میں جج یاعمرہ کا احرام باندھا تو اعتکاف بورا کر کے جائے اور اگر وقت کم ہے کہ

اعتكاف بوراكرے كا توج جاتارہے كا توج كوچلاجائے پھرسرے سے اعتكاف كرے۔(1) (ردالحتار)

مسئان السروہ سجد میں چاگی یا کسی نے مجبور کر کے وہاں سے نکال دیااور فوراً دوسری مسجد میں چلا گیا تواعت کاف فاسد

نههوا_⁽²⁾(عالمگیری)

سَمَعَالُ ٢٣ ﴾ اگر ڈو بنے یا جلنے والے کے بچانے کے لیے متجد سے باہر گیایا گواہی دینے کے لیے گیایا جہاد میں سب لوگوں کا بلاوا ہوا اور یہ بھی نکلایا مریض کی عیادت یا نماز جنازہ کے لیے گیا،اگر چہکوئی دوسرا پڑھنے والا نہ ہو تو ان سب صور تو ں میں اعتکاف فاسد ہو گیا۔ (عالمگیری وغیرہ)

مسئلہ 10 عورت مبحد میں معتلف تھی ، اسے طلاق دی گئی تو گھر چلی جائے اور اسی اعتکاف کو پورا کرلے۔ (4) (عالمگیری)

سَسَعَانُ الله الرمنت مانتے وقت یہ شرط کر لی کہ مریض کی عیادت اور نماز جنازہ اور مجلس علم میں حاضر ہوگا تو یہ شرط جائز ہے۔اب اگران کاموں کے لیے جائے تو اعتکاف فاسد نہ ہوگا، (5) مگرخالی دل میں بیّت کر لینا کافی نہیں بلکہ زبان سے کہدلینا ضروری ہے۔(6) (عالمگیری،ردالمختار وغیر ہما)

سَمَالُهُ كَا ﴾ پاخانه بیثاب کے لیے گیا تھا، قرض خواہ نے روک لیااعتکاف فاسد ہو گیا۔ (۲) (عالمگیری)

سَمَالُهُ ٢٨﴾ معتلف کو وطی کرنا اورعورت کا بوسه لینایا چھونایا گلے لگانا حرام ہے۔ جماع سے بہر حال اعتکاف فاسد ہوجائے گا، انزال ہویا نہ ہوقصداً ہویا بھولے سے مسجد میں ہویا باہر رات میں ہویا دن میں، جماع کے علاوہ اوروں میں اگر انزال ہو تو فاسد ہے ورنہ نہیں، احتلام ہوگیایا خیال جمانے یا نظر کرنے سے انزال ہوا تو اعتکاف فاسد نہ ہوا۔ (8) (عالمگیری وغیرہ)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٣.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٢.
 - 3 المرجع السابق.
- 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٢.
- اسسنت اعتکاف حضور علیه الصلاة والسلام ہے ثابت شدہ طریقے ہے ہی ادا ہو گا اور آپ علیه الصلاة والسلام ہے اعتکاف کے دوران اس شم
 کی حاجت کے لیے نکلنا ثابت نہیں للبذا ظاہر یہی ہے کہ سنت اعتکاف میں اس طرح کی شرط لگائے گا تو بیاعتکاف نفلی ہوجائے گا۔
 ("جدالم متار"، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج۳، ص ۲۹، ملخصاً) ... علمیه
 - (الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص١٢.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٥. وغيرهما
 - **1**..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٢.
 - 🤿 🔞 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٣١٣، وغيره.

معتکف نے دن میں بھول کر کھالیا تو اعتکاف فاسد نہ ہوا، گالی گلوچ یا جھگڑا کرنے سے اعتکاف فاسد

نہیں ہوتامگر بےنورو بے برکت ہوتا ہے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری وغیرہ)

معتلف نکاح کرسکتا ہے اور عورت کور جعی طلاق دی ہے تورجعت بھی کرسکتا ہے، مگران امور کے لیے اگر

رجعت ہوجائے گی۔

مسکانی استان است معتلف نے حرام مال یا نشه کی چیز رات میں کھائی تواعت کاف فاسد نه ہوا۔ (³) (عالمگیری) مگراس حرام کا

گناہ ہوا تو بہ کر ہے۔

سَسَعَالُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اور جنون اگر طویل مول کدروزه نه موسکے تواعتکاف جاتار ہااور تضاوا جب ہے، اگر چیکی سال کے بعد صحت ہواور اگر معتوہ لینی بو ہرا ہوگیا، جب بھی اچھے ہونے کے بعد قضاوا جب ہے۔ (4) (عالمگیری)

عے بعد حت ہواور اسموہ یہ می بوہرا ہوئیا، جب می ابھے ہوئے ہے بعد تصاوا جب ہے۔ '' (عاسمین) مسکانی سیکانی سے معتکف مسجد ہی میں کھائے ہے سوئے ان امور کے لیے مسجد سے باہر ہوگا تواعت کاف جاتا رہے گا۔ ⁽⁵⁾

(درمختاروغیره) مگرکھانے پینے میں بیاحتیاط لازم ہے کہ سجد آلودہ نہ ہو۔

سَمَعُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ عَنْ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ

معتلف کوا بنی یابال بچوں کی ضرورت ہے مسجد میں کوئی چیزخرید نایا بیچنا جائز ہے، بشرطیکہ وہ چیز مسجد میں نہ

ہو یا ہوتو تھوڑی ہوکہ جگہ نہ تھیرے اور اگرخرید وفروخت بقصد تجارت ہوتو ناجائز اگرچہ وہ چیز مسجد میں نہ ہو۔⁽⁷⁾ (درمختار، دامختار)

معتلف اگر ہوئیت عبادت سکوت کرے یعنی جب رہنے کو ثواب کی بات سمجھے تو مکروہ تح بی ہے اورا گر

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٣١٣، وغيره.
 - ۲۱۳س. "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٣.
 و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٦.
 - 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١٠ ص٣١٠.
 - 4 المرجع السابق.
 - الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٥، وغيره.
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٦.
 - 🕡 ----- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٦.

ميثن شن: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) 🚅

ہے۔ ایک چپ رہنا تواب کی بات سمجھ کرنہ ہو تو حرج نہیں اور بری بات سے چُپ رہا تو بید مکروہ نہیں، بلکہ بید تواعلیٰ درجہ کی چیز ہے کیونکہ بری

بات زبان سے نہ زکالنا واجب ہے اور جس بات میں نہ تو اب ہونہ گناہ یعنی مباح بات بھی معتکف کو مکر وہ ہے، مگر بوقت ضرورت

اور بے ضرورت مسجد میں مباح کلام نیکیوں کوایسے کھا تاہے جیسے آگ لکڑی کو۔ ⁽¹⁾ (درمختار)

سک ان جیدی تلاوت، حدیث شریف کی آن محتکف نه پی رہے، نه کلام کرے تو کیا کرے۔ بیکرے قرآن مجید کی تلاوت، حدیث شریف کی قراءت اور درود شریف کی کثرت، علم دین کا درس و قدریس، نبی صلی الله تعالی علیه تبلم ودیگر انبیاعلیم السلاۃ والسلام کے سیر واذکار اور اولیا و

فراءت اوردرود سریف کا نفرت، م دین کا در ل ومدریان، صالحین کی حکایت اورامورد مین کی کتابت۔⁽²⁾(در مختار)

اورغروب کے بعد چلاآئے اوراگردودن یا تین دن یازیادہ دنوں کی منت مانی تواس میں رات داخل نہیں۔ طلوع فجر سے پیشتر مسجد میں چلا جائے اورغروب کے بعد چلاآئے اوراگردودن یا تین دن یازیادہ دنوں کی منت مانی یادویا تین یازیادہ راتوں کے اعتکاف کی منت مانی توان دونوں صورتوں میں اگر صرف دن یا صرف را تیں مراد لیس تو نتیت صحیح ہے، لہذا پہلی صورت میں منت صحیح ہے اور صرف دنوں میں اعتکاف واجب ہوا اور اس صورت میں اختیار ہے کہ استے دنوں کا لگا تا راعتکاف کرے یا متفرق طور پر۔ اور دوسری صورت میں منت صحیح نہیں کہ اعتکاف کے لیے روزہ شرط ہے اور رات میں روزہ ہونہیں سکتا اور اگر دونوں صورتوں میں دن اور رات دونوں کا اعتکاف واجب ہے اور کی الاتصال است دنوں میں اعتکاف ضروری ہے، تفریق نہیں کرسکتا۔

نیز اس صورت میں یہ بھی ضرورہ کہ دن سے پہلے جورات ہے،اس میں اعتکاف ہو،الہذا غروب آفتاب سے پہلے جورات ہے،اس میں اعتکاف مو،الہذا غروب آفتاب سے پہلے جائے اعتکاف میں چلا جائے اور جس دن پورا ہوغروب آفتاب کے بعد نکل آئے اورا گردن کی منت مانی اور کہتا ہے کہ میں نے دن کہہ کررات مرادلی، تو ہیں تیے صحیح نہیں دن اور رات دونوں کا اعتکاف واجب ہے۔ (3) (جو ہرہ، عالمگیری، درمختار)

<u> سَسَعَالُهُ 19 ﴾</u> عید کے دن کے اعتکاف کی منت مانی تو کسی اور دن میں جس دن روز ہ رکھنا جائز ہے،اس کی قضا کر ہے اورا گریمین کی نیّت تھی تو کفارہ دے اور عید ہی کے دن کر لیا تو منت پوری ہوگئ مگر گننهگار ہوا۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٧.
 - 2 المرجع السابق، ص٨٠٥.
 - الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ص١٩٠.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٣ _ ٢١٤.

- و "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص١٥٠.
- € "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٤.

ف کابیان کے

ﷺ مسئلی میں دن یا کسی مہینے کے اعتکاف کی منت مانی تواس سے پیشتر بھی اس منت کو بورا کرسکتا ہے یعنی جبکہ ا

معلّق نہ ہوا ورمسجد حرم شریف میں اعتکاف کرنے کی منّت مانی تو دوسری مسجد میں بھی کرسکتا ہے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

مَسْتَاكُ (٢٠) ﴿ مَا وَكُرْشته كِ اعتكاف كَي منت ما في توضيح نهيل _منت مان كرمعاذ الله مرتد ہو گيا تو منت ساقط ہو گئ پھر

مسلمان ہوا تو اُس کی قضاواجب نہیں۔(²⁾ (عالمگیری)

مسئل المراق الكرمهيني كے اعتكاف كى منت مانى اور مركبيا تو ہرروز كے بدلے بقد رصد قد فطر كے مسكين كوديا جائے يعنى جبكہ وصيّت كى ہواوراس پر واجب ہے كہ وصيّت كرجائے اور وصيّت نه كى ، مگر وار توں نے اپنی طرف سے فديد دويا ، جب بھى جائز ہے۔ مریض نے منت مانی اور مركبيا تو اگر ایک دن كو بھى اچھا ہو گيا تھا تو ہرروز كے بدلے صدقہ فطر كى قدر ديا جائے اور ایک دن كو بھى اچھا نہ ہوا تو کچھ واجب نہيں۔ (3) (عالمگيرى)

کرے، مگر لگا تاراعتکاف میں بیٹھنا واجب ہے اور اگریہ کہے کہ میری مرادایک مہینے کے حرف دن تھے، را تیں نہیں تو یہ قول کرے، مگر لگا تاراعتکاف میں بیٹھنا واجب ہے اور اگریہ کہے کہ میری مرادایک مہینے کے صرف دن تھے، را تیں نہیں تو یہ قول نہیں مانا جائے گا۔ دن اور رات دونوں کا اعتکاف واجب ہے اور تیں دن کہا تھا جب بھی بہی تھم ہے۔ ہاں اگر منت مانے وقت یہ کہا تھا کہ ایک مہینے کے دنوں کا اعتکاف ہے، را توں کا نہیں تو صرف دنوں کا اعتکاف واجب ہوا اور اب یہ بھی اختیار ہے کہ متفرق طور پر تمیں دن کا اعتکاف کرلے اور اگریہ کہا تھا کہ ایک مہینے کی را توں کا اعتکاف ہے ونوں کا نہیں تو کی خوبیں۔ (4) جو ہرہ، درمختار)

مسئل اوراعتکاف مسنون که درمضان کی قضانہیں، کہ وہیں تک ختم ہوگیا اوراعتکاف مسنون که درمضان کی تحقیل دس تاریخوں تک کے لیے بیٹھا تھا، اسے توڑا توجس دن توڑا فقط اس ایک دن کی قضا کرے، پورے دس دنوں کی قضا واجب نہیں اور منّت کا اعتکاف توڑا توا گرکسی معین مہینے کی منت تھی تو باقی دنوں کی قضا کرے، ورندا گرعلی الاتصال واجب ہوا تھا توہر ہے ہے اعتکاف کرے اور کھی الاتصال واجب نہ تھا توہا تی کا اعتکاف کرے ۔ (5) (ردالحتار)

- € "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٤.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 المرجع السابق.
 - الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ص ١٩١،١٩١.
 و"الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص ١٠٥.
 - 🦽 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٩٩٩، ٥٠١،٥٠١.

مثلاً عورت کویض یا نفاس آیا یا جنون و بے ہوثی طویل طاری ہوئی ،ان میں بھی قضا واجب ہےاوران میں اگر بعض فوت ہو تو گل کی قضا کی حاجت نہیں، بلکہ بعض کی قضا کر دےاورگل فوت ہوا تو گل کی قضا ہےاور منّت میں علی الاتصال واجب ہوا تھااور تو علی الاتصال ⁽¹⁾ گل کی قضا ہے۔⁽²⁾ (ردائحتار)

وَالُـحَـمُـدُلِلَّهِ عَلَى الْآئِهِ وَالصَّلَوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى اَفُضَلِ انْبِيَائِهِ وَعَلَىٰ الِهِ وَصَحْبِهِ وَاَولِيَائِهِ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ يِنارُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَاخِرُ دَعُولَنا اَنِ الْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ طَ

امیرِ اہلسنت ، بانی دعوتِ اسلامی حضرت علامه مولا ناابو بلال <mark>گمر البیاس عطار قادری رضوی دامت برکات</mark>یم العالیه اپن شهرهٔ آفاق کتاب **"فیضانِ سنت' می**ں لکھتے ہیں :

فرمانِ مصطفى صلّى الدَّتالى عليه والهوسم: نِسِيَّةُ الْمُؤمِنِ خَيْرٌ مِّنُ عَمَلِهِ . "مسلمان كى قيت اسكمل سي بهتر

- "("المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٢٤ ٩٥، ج٦، ص١٨٥.)

ا پناء کاف کی عظیم الشّان نیک کے ساتھ مزیدا چھی اچھی نیٹیں شامل کر کے ثواب میں خوب اِضافہ کیجئے۔

(۱) تسوُّ ف کے ان مَدَ نی اصولوں (الف) تقلیل طَعام (یعنی تم کھانا) (ب)تقلیل کلام (یعنی تم بولنا) (ج)تقلیل مَنام (یعنی تم سونا) پر

کار بندرہوں گا،روزانہ یانچوں نمازیں (۲) پہلی صف میں (۳) تکبیر اُولی کےساتھ (۴) باجماعت ادا کروں گا (۵) ہراذان اور

(۲) ہرا قامت کا جواب دوں گا (۷) ہر بار بُکُع اوّل وآثِر وُرُودشریف اذان کے بعد کی دُعاییْ هوں گا (۸) روزانہ ہجیگہ (۹) اِشراق

(۱۰) حاشت اور (۱۱) اَوّابین کے نوافِل ادا کروں گا (۱۲) تلاوت اور (۱۳) وُرُودشریف کی کثرت کروں گا (۱۴) روزانہ

رات مدورةُ المُلُك بِرُّعُول/سُنوںگا(١٥) زَبان بِرِقْفلِ مدینه لگاؤں گایعنی فُضُول گوئی سے بچوں گااورممکن ہوا تواس نتیب خیر کے ساتھ

ضَرورت کی وُنیوی بات بھی لکھ کریا اشارہ ہے کروں گا تا کہ فُضُول ، یا بُری باتوں میں نہ جا پڑوں یا شوروغُل کاسب نہ بن جاؤں

(١٦) مسجِد كوبرطرح كى بديُو سے بچاؤل گا۔ (ماخوذاز: فيضانِ سنت (تخ تَحُ شده) مطبوعہ مكتبة المدينة)

1..... لعنى مسلسل بلاناغد.

^{2 &}quot;ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٣.

<u>ؠٚٵۺٳڶڰۣٷٳٳؠٞڰؠؙ</u>

نَحُمَدُهُ وَ نُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكُرِيمِ ط

حج کا بیان

الله عزوجل ارشادفرما تاہے:

﴿ إِنَّ ٱوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَّكَةَ مُبَامَ كَاوَّهُ لَى لِّلْعَلَمِينَ ﴿ فِيْءِ النَّ بَيَّانَتُ مَّقَامُ إِبْرُهِيمَ ۗ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ امِنًا وَيِلْهِ عَلَى النَّاسِحِجُ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الُعلَينُن۞﴾ (1)

بے شک پہلا گھر جولوگوں کے لیے بنایا گیا وہ ہے جو مکہ میں ہے، برکت والا اور مدایت تمام جہان کے لیے، اُس میں کھلی ہوئی نشانیاں ہیں،مقام ابراہیم اور جو تحض اس میں داخل ہو باامن ہے اوراللہ (عزوجل) کے لیےلوگوں پر ہیت اللّٰہ کا حج ہے، جو خص باعتبار راستہ کے اس کی طافت رکھے اور جو کفر کرے تو اللہ (عز وجل)سارے جہان ہے بیاز ہے۔

اورفرما تاہے:

﴿ وَٱتِبُّواالْحَجَّوَالْعُبْرَةَ لِللهِ ١ ﴾ حج وغمرہ کواللہ(عزوجل)کے لیے پورا کرو۔

خلینے 🕽 🧢 صحیح مسلم شریف میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وتلم نے خطبہ ریڑ ھا اور فرمایا:''اےلوگو! تم پر حج فرض کیا گیالہٰذا حج کرو''ایک شخص نے عرض کی ، کیا ہرسال پارسول الله(صلی الله تعالی علیه وہلم)حضور (صلی الله تعالی علیه وسلم) نے سکوت فر مایا ⁽³⁾ ۔انھوں نے تین باریہ کلمہ کہا۔ارشا وفر مایا:اگر میں ہاں کہد بیا توتم پرواجب ہوجا تااور تم سے نہ ہوسکتا پھر فر مایا: جب تک میں کسی بات کو بیان نہ کروں تم مجھ سے سوال نہ کرو، اگلے لوگ کٹر تِ سوال اور پھرانبیا کی مخالفت سے ہلاک ہوئے ،الہذا جب میں کسی بات کا حکم دوں تو جہاں تک ہو سکے اُسے کرواور جب میں کسی بات سے منع کروں تو اُسے جھوڑ دو_ ⁽⁴⁾

- 2 ٢، البقرة: ١٩٦. 1 پ٤، آل عمران: ٩٦ ـ ٩٧.
 - العنی خاموش رہے۔
- 🗣 🗗 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فرض الحج مرّة في العمر، الحديث: ١٣٣٧، ص٦٩٨.

🗳 🕹 🛂 🐣 صحیحین میں انھیں سے مروی، حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے عرض کی گئی، کون عمل افضل ہے؟ فرمایا:

''الله (عزوجل) ورسول (صلى الله تعالى عليه وسلم) برا بمان عرض كي تني چركيا؟ فر مايا: الله (عزوجل) كي راه مين جهاد عرض كي تني چركيا؟

فر ماما: حج مبر ورـ'' ⁽¹⁾

خلیئٹ 👚 🐣 بخاری ومسلم وتر مذی ونسائی وابن ماجه آخییں ہے راوی ، رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم فرماتے ہیں:'' جس نے حج کیا اور رفث (فخش کلام) نہ کیا اور فسق نہ کیا تو گناہوں سے پاک ہوکر ایسالوٹا جیسے اُس دن کہ مال کے پیٹ سے پیدا

خلیث میں 🐣 بخاری ومسلم وتر مذی ونسائی وابن ماجہ آخلیں ہے راوی،''عمرہ سے عمرہ تک اُن گناہوں کا کفارہ ہے جو درمیان میں ہوئے اور حج مبر ور کا ثواب جنت ہی ہے۔'' (3)

خلینٹ ۵ 💨 🕒 مسلم وابن خزیمه وغیر ہما عمر و بن عاص رضی الله تعالی عنہ سے راوی ، رسول الله صلی الله تعالی علیہ وِسلم فر ماتے ہیں :

'' حج ان گناہوں کو دفع کر دیتاہے جو پیشتر ہوئے ہیں۔'' (4)

خليث ٢ و ٧ ﴾ ابن ماحياً مالمونين أم سلمه رضي الله تعالى عنها سے راوي ، كه رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم نے فر مايا: '' حج کمزوروں کے لیے جہاد ہے۔'' (5)

اوراًم المونين صديقة رضى الله تعالى عنها سے ابن ماجر نے روايت كى ، كديس نے عرض كى ، يا رسول الله! (صلى الله تعالى عليه وسلم) عورتوں پر جہاد ہے؟ فرمایا:'' ہاں ان کے ذمّہ وہ جہاد ہے جس میں اثر نائہیں حج وعمرہ۔'' (6)

اور صحیحین میں آتھیں سے مروی، که فرمایا: '' تہماراجہاد حج ہے۔'' (7)

المحيح البخاري"، كتاب الإيمان، باب من قال ان الايمان هو العمل، الحديث: ٢٦، ج١، ص ٢١.

2 "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب فضل الحج المبرور، الحديث: ٢١٥١، ج١، ص١٥٥.

و "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الحج والعمرة... إلخ، الحديث: ٢، ج٢، ص١٠٣.

€ "صحيح البخاري"، كتاب العمرة، باب وجوب العمرة وفضلها، الحديث: ١٧٧٣، ج١، ص٥٨٦.

4 "صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، باب كون الاسلام يهدم ما قبله ... إلخ، الحديث: ١٢١، ص٧٤.

سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الحج جهاد النساء، الحديث: ٢٩٠٢، ج٣، ص٤١٤.

6 "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الحج جهاد النساء، الحديث: ٢٩٠١، ٣٣، ص١٦٣.

🕡 "صحيح البخاري"، كتاب الجهاد، باب جهاد النساء، الحديث: ٢٨٧٥، ج٢، ص٢٧٤.

🥞 📥 پئٹ 🔨 🎥 👚 تر مذی وابن خزیمیہ وابن حیان عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے را وی ،حضورِ اقد س صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فرماتے ہیں:'' حج وعمرہ محتاجی اور گنا ہول کوایسے دور کرتے ہیں، جیسے تھٹی لوہے اور جاندی اور سونے کے میل کو دور کرتی ہے اور

حج مبر ورکا ثواب جنت ہی ہے۔'' ⁽¹⁾

ځ 🔑 🔑 🐣 بخاری ومسلم وابوداود ونسائی وابن ماجه وغیر ہم ابن عباس رضی املا تعالیٰ عنہا سے راوی ، که حضورِ اقد س

صلى الله تعالى عليه وسلم في فرمايا: " رمضان مين عمره مير بيساته و حج كي برابر ہے ـ " (2)

خَلِيْثُ 🕩 💝 🚽 بزار نے ابومویٰ رضی اللہ تعالی عنہ سے روابیت کی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) نے فر مایا:'' حاجی اپنے گھر

والول میں سے چارسو کی شفاعت کرے گا اور گنا ہول ہے ایبانکل جائے گا، جیسے اُس دن کہ مال کے پیٹ سے پیدا ہوا۔'' (3)

خل پیٹ 🔢 و ۱۲ 🥍 بیم قی ابو ہر رہ درضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ میں نے ابوالقاسم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کوفر ماتے سُنا:'' جوخانیہ کعبہ کے قصد ہے آیا اوراُونٹ پرسوار ہوا تو اُونٹ جو قدم اُٹھا تا اور رکھتا ہے، اللّٰد تعالیٰ اس کے بدلے اس کے لیے نیکی لکھتا ہے۔ اور خطا کومٹا تا ہےاور درجہ بلندفر ما تا ہے، یہاں تک کہ جب کعبۂ معظمہ کے باس پہنچااورطواف کیااورصفاومروہ کے درمیان سعی کی پھر سرمنڈ ایا یا بال کتر وائے تو گناموں سے ایسانکل گیا، جیسے اس دن کہ ماں کے پیٹ سے پیدا ہوا۔'' (4) اوراسی کے مثل عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنها سے مروى _

خلینٹ 👚 💎 ابن خزیمہ و حاکم ابن عباس رضی اللہ تعالی عنبا سے روایت کرتے ہیں ، کدرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ و کم ماتے میں: 'جومکہ سے پیدل مج کوجائے یہاں تک کہ مکہ واپس آئے اُس کے لیے ہرفدم پرسات سونیکیاں حرم شریف کی نیکیوں کے مثل کھی جائیں گی۔ کہا گیا، حرم کی نیکیوں کی کیا مقدار ہے؟ فرمایا: ہرنیکی لا کھنیکی ہے۔'' (5) تواس حساب سے ہرقدم پرسات كرورتيكيال موكيل واللهُ ذُوالْفُضُلِ الْعَظِيْمِ.

خلینٹ 😘 تا 🔰 🎥 بزارنے جابر دخی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ، کہ حضورِ اقد س صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا:''حج وعمرہ کرنے والےاللّٰد(عزبیل) کے وفد ہیں،اللّٰہ(عزوبل) نے آتھیں بُلا یا، یہ حاضر ہوئے،انھوں نے اللّٰہ(عزوبل) سے سوال کیا،اُس

- ❶ "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في ثواب الحج و العمرة، الحديث: ٨١٠، ج٢، ص٢١٨.
 - 2 "صحيح البخاري"، كتاب جزاء الصيد، باب حج النساء، الحديث: ١٨٦٣، ج١، ص١٦٢.
 - ③ "مسند البزار"، مسند أبي موسىٰ الاشعرى رضى الله عنه، الحديث: ٣١٩٦، ج٨، ص٦٦٩.
 - شعب الإيمان"، باب في المناسك، باب فضل الحج و العمرة، الحديث: ٥ ١ ١ ٤ ، ج٣، ص ٤٧٨.
 - 5 "المستدرك" للحاكم، كتاب المناسك، باب فضيلة الحج ماشيا، الحديث: ١٧٣٥، ج٢، ١١٤.

چههارشرنیعت پخششم(6) چههارشونیعت پخششم(6)

ن نے انھیں دیا۔'' (1) اسی کے مثل ابن عُمر وابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالی عنہم سے مروی۔

بزار وطبرانی ابو ہریرہ رض اللہ تعالی عنہ سے راوی، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے فرمایا: ''حاجی کی

مغفرت ہوجاتی ہے اور حاجی جس کے لیے استغفار کرے اُس کے لیے بھی۔' (2)

خلایش 🗥 🌯 اصبها نی ابن عباس رضی الله تعالی عنها سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه و تلم فر ماتے ہیں : '' حج فرض جلدا دا

<u>خگریمت (۱۸) ﷺ</u> کروکه کیامعلوم کیا پیش آئے۔''⁽³⁾

خليث ١٧ ١٤

خلیف 19 کے بیان اوسط میں ابوذ رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فر مایا: کہ داود علیہ السمام نے عرض کی ، اے اللہ! (عزوجل) جب تیرے بندے تیرے گھر کی زیارت کو آئیں تو آئیس تو آئیس تو کیا عطا فر مائے گا؟ فر مایا: ''ہر زائر کا اُس پر حق ہے جس کی زیارت کو جائے ، اُن کا مجھ پریہ تق ہے کہ دنیا میں آئیس عافیت دوں گا اور جب مجھ سے ملیس گے تو اُن کی مغفرے فر مادونگا۔'' (5)

- 1 "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الحج و العمرة... إلخ، الحديث: ٢٠، ج٢، ص١٠٧.
 - "مجمع الزوائد"، باب دعاء الحجاج و العمار، الحديث: ٧٨٧ه، ج٣، ص٤٨٣.
- الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الحج و العمرة... إلخ، الحديث: ٢٦، ج٢، ص١٠٩.
 - 4 "سنن أبي داود" كتاب المناسك، باب ٥، الحديث: ١٧٣٢، ج٢، ص١٩٧.
 - المعجم الأوسط" للطبراني، باب الميم، الحديث: ٦٠٣٧، ج٤، ص٢٩٧.

1 들 🕏 کابیان

گری ہے اوراس کے ساتھ طواف اِفاضہ ⁽¹⁾ کو۔''

اُس شخص نے عرض کی جتم ہے! اس ذات کی جس نے حضور (صلی اللہ تعالی علیہ ہم) کوئ کے ساتھ بھیجا، اِسی لیے حاضر ہوا تھا کہ ان باتوں کو حضور (صلی اللہ تعالی علیہ ہم) سے دریافت کروں۔ارشا دفر مایا:''جب تو بیت الحرام کے قصد سے گھر سے نکلے گا تو اونٹ کے ہرقدم رکھنے اور ہرقدم اُٹھانے پر تیرے لیے حسنہ کھا جائے گا اور تیری خطامٹا دی جائے گی اور طواف کے بعد کی دو رکعتیں ایسی بیں جیسے اولا دِاساعیل میں کوئی غلام ہو، اُس کے آزاد کرنے کا ثواب اور صفا ومروہ کے درمیان سعی ستر غلام آزاد کرنے کے مثل ہے۔

اور عرفہ کے دن وقوف کرنے کا حال میہ ہے کہ اللہ عزوجل آسان دنیا کی طرف خاص تجلّی فرما تا ہے اور تمھارے ساتھ ملائکہ پر مباہات فرما تا ہے ، ارشاد فرما تا ہے : ' مبیرے بندے دُور دُور سے پرا گندہ سر میر کی رحمت کے امید وار ہو کر حاضر ہوئے ، اگر تمھارے گناہ دریا تا ہے ، ارشا کے قطروں اور سمندر کے جھاگ برابر ہوں تو میں سب کو بخش دوں گا، میرے بندو! واپس جاؤتمھاری مغفرت ہوگئی اور اس کی جس کی تم شفاعت کرو۔

اور جمروں پر زمی کرنے میں ہر کنگری پر ایک ایسا کبیرہ مٹادیا جائے گا جو ہلاک کرنے والا ہے اور قربانی کرنا تیرے رب کے حضور تیرے لیے ذخیرہ ہے اور سرمنڈ انے میں ہربال کے بدلے میں حسنہ کلھا جائے گا اور ایک گناہ مٹایا جائے گا،اس کے بعد خانہ کعبہ کے طواف کا بیرحال ہے کہ تو طواف کر رہا ہے اور تیرے لیے کچھ گناہ نہیں ایک فرشتہ آئے گا اور تیرے شانوں کے درمیان ہاتھ رکھ کر کہے گا کہ زمانۂ آئندہ میں عمل کر اور زمانۂ گذشتہ میں جو کچھ تھا معاف کر دیا گیا۔ (2)

خلیف (۲) کا اور مرگیا۔ قیامت تک اُس کے لیے جج کرنے والے کا ثواب کھا جائے گا اور جوعمرہ کے لیے نکلا اور مرگیا اس کے لیے نکا اور جوعمرہ کے لیے نکلا اور مرگیا اس کے لیے نکا اور مرگیا اس کے لیے قیامت تک عمرہ کرنے والے کا ثواب کھا جائے گا اور جو جہاد میں گیا اور مرگیا اُس کے لیے قیامت تک عازی کا ثواب کھا جائے گا۔'' (3)

خریث ۲۲ کے طرانی وابو یعلی و دار قطنی و بیجق اُم المونین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه و کماتے ہیں: ''جواس راہ میں جج یا عمرہ کے لیے ذکلا اور مرگیا اُس کی پیشی نہیں ہوگی ، نه حساب ہوگا اور اس سے کہا جائے گا توجنت

^{🗗}اس کوطوا نب زیارت بھی کہتے ہیں۔

^{2 &}quot;الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الحج و العمرة... إلخ، الحديث: ٣٢، ج٢، ص١١٠.

 ^{3 (}مسند أبي يعلى"، مسند أبي هريرة رضى الله عنه، الحديث: ٦٣٢٧، ج٥، ص ٤٤١.

🤏 میں داخل ہوجا۔''

خلیئٹ ۲۳ 💝 💎 طبرانی جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: ''میر گھر اسلام کے ستونوں میں سے ا بیستون ہے، پھرجس نے حج کیا یا عمرہ وہ اللہ (عزبیل) کے ضان میں ہےا گرمرجائے گا تو اللہ تعالیٰ اُسے جنت میں داخل

فر مائے گااورگھر کوواپس کردے تواجر وغنیمت کےساتھ واپس کرےگا۔'' ⁽²⁾

خلیث ۲۵ و۲۵ 💝 دارمی الی امامه رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه دسلم نے فر مایا: '' جسے حج کرنے

سے نہ حاجت ِ ظاہرہ مانع ہوئی ، نہ بادشاہ ظالم ، نہ کوئی ایبامرض جور وک دے ، پھر بغیر حج کیے مرگیا تو چاہے یہودی ہوکر مرے یا نھرانی ہوکر''⁽³⁾ اس کی مثل تز**ندی نے علی** رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی۔

خلینٹ 📆 💝 ترمذی وابن ماجہ ابن عمر رضی اللہ تعالی عنها سے راوی ، ایک شخص نے عرض کی ، کیا چیز مج کو واجب کرتی

ے؟ فرمایا: '' توشیاورسواری۔'' ⁽⁴⁾ خلینے ۲۷ 💝 شرح سنت میں انھیں سے مروی ،کسی نے عرض کی ، یارسول اللہ! (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) حاجی کو کیسا ہونا

چاہیے؟ فرمایا: پرا گندہ سر،میلا کچیلا۔ دوسرے نے عرض کی، یارسول الله! (صلی الله تعالی علیه وسلم) حج کا کونساعمل افضل ہے؟ فرمایا:

''بلندآ واز ہے لبیک کہنااور قربانی کرنا۔''کسی اور نے عرض کی سبیل کیا ہے؟ فرمایا:'' تو شداور سواری۔'' (5)

🕹 پئٹ ۲۸ 💨 🚽 ابوداود وابن ماجہ اُم المومنین اُم سلمہ رضی اللہ تعالی عنہا ہے راوی ، کیدمیں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو فرماتے سنا:'' جومسجدافصلی ہےمسجد حرام تک حج یاعمرہ کااحرام باندھ کرآیا، اُس کےا گلے اور پچھلے گناہ سب بخش دیے جائیں گے مااُس کے لیے جنت واجب ہوگی۔'' ⁽⁶⁾

مسائلِ فقهيّه

مج نام ہے احرام باندھ کرنویں ذی الحجہ کوعرفات میں تھہرنے اور کعبہ معظمہ کے طواف کا اوراس کے لیے ایک خاص

- 1 "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٥٣٨٨، ج٤، ص١١١.
- 2 "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٩٠٣٣، ج٦، ص٥٥٣.
- 3 "سنن الدارمي"، كتاب المناسك، باب من مات ولم يحجّ، الحديث: ١٧٨٥، ج٢، ص٤٥.
- ۲۱۹س "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في ايجاب الحج بالزاد و الراحلة، الحديث: ۱۸۱۳، ج۲، ص ۲۱۹.
 - شرح السنة" للبغوي، كتاب الحج، باب وجوب الحج ...إلخ، الحديث: ١٨٤٠، ج٤، ص٩.
 - 🧣 🙃 "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب في المواقيت، الحديث: ١٧٤١، ج٢، ص٢٠١.

وقت مقرر ہے کہاس میں بیافعال کیے جائیں توج ہے۔ ویہ ہجری میں فرض ہوا،اس کی فرضیت قطعی ہے، جواس کی فرضیت کا

انکارکرے کا فرہے مگر عمر بھر میں صرف ایک بار فرض ہے۔ (1) (عالمگیری، درمختار)

<u> مسئالہ اللہ</u> وکھاوے کے لیے جج کرنااور مالِحرام سے جج کوجاناحرام ہے۔ جج کوجانے کے لیے جس سے اجازت لینا

واجب ہے بغیراً س کی اجازت کے جانا مکروہ ہے مثلاً ماں باپ اگرائس کی خدمت کے محتاج ہوں اور ماں باپ نہ ہوں تو دادا،

دادی کا بھی یہی حکم ہے۔ یہ حج فرض کا حکم ہے اور نقل ہو تو مطلقاً والدین کی اطاعت کرے۔⁽²⁾ (درمختار،روالحتار)

<u> مسئلہ کی جانے سے منع کر سکتا ہے۔ ((درمختار)</u>

مَسِعًا ﴾ مال موجود تھا اور جج نہ کیا پھروہ مال تلف ہوگیا، تو قرض لے کرجائے اگر چہ جانتا ہو کہ بیقرض ادا نہ ہوگا گر نیت بیہ ہو کہ اللہ تعالیٰ قدرت دے گا تو ادا کر دوں گا۔ پھرا گرا دا نہ ہوسکا اور نیت ادا کی تھی تو امید ہے کہ مولیٰ عزوجل اس پرمؤاخذہ نیفر مائے ۔ (5) (درمختار)

سَمَالُهُ (⁰⁾ جج کا وقت شوال ہے دسویں ذی الحجہ تک (⁶⁾ ہے کہ اس سے پیشتر (⁷⁾ جج کے افعال نہیں ہو سکتے ،سوا احرام کے کہاحرام اس سے پہلے بھی ہوسکتا ہے اگر چہ مکروہ ہے۔ ⁽⁸⁾ (درمختار،ردالمحتار)

حج واجب هونے کے شرائط

مَسِعَانَ کی ایک ج واجب ہونے کی آٹھ شرطیں ہیں، جب تک وہ سب نہ پائی جائیں حج فرض نہیں:

1 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته ... إلخ ، ج ١ ، ص ٢١٦.

و"الدرالمختار"معه"ردالمحتار"، كتاب الحج، ج۲، ص١٦٥-١٨٥.

2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص١٩٥.

3 "الدرالمختار" كتاب الحج، ج٣، ص ٢٠٥.

4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص ٢٠٥٠.

5 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص ٢١٥.

6.....لیخی دومهینچ اور دس دن تک براجی در مهینچ اور دس دن تک براجی در تک برا

😵 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٤٣٥.

بيث كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام)

1 اسلام

لبنداا گرمسلمان ہونے سے پیشتر استطاعت تھی پھرفقیر ہو گیاا دراسلام لایا تو زمانۂ کفر کی استطاعت کی بناپراسلام لانے کے بعد حج فرض نہ ہوگا، کہ جب استطاعت تھی اس کا ہل نہ تھاا دراب کہ اہل ہوااستطاعت نہیں اور مسلمان کواگر استطاعت تھی اور حج نہ کیا تھااب فقیر ہوگیا تواب بھی فرض ہے۔ (1) (درمختار، ردالمحتار)

مسئلہ کی ہے۔ جج کرنے کے بعد معاذ اللہ مُر تد ہوگیا (2) پھر اسلام لایا تواگر استطاعت ہوتو پھر جج کرنا فرض ہے، کہ مرتد ہوئے نے وغیرہ سب اعمال باطل ہوگئے۔ (3) (عالمگیری) یو ہیں اگرا ثنائے جج (4) میں مرتد ہوگیا تواحرام باطل ہوگیا اوراگر کا فرنے احرام باندھا تھا، پھر اسلام لایا تواگر پھر سے احرام باندھا اور جج کیا تو ہوگا ورنہ نہیں۔

😙 دارالحرب میں ہوتو یہ بھی ضروری ہے کہ جانتا ہو کہ اسلام کے فرائض میں ج ہے۔

لهذا جس وقت استطاعت شی بیمسکه معلوم نه تقااور جب معلوم ہوااس وقت استطاعت نه ہوتو فرض نه ہوااور جانے کا ذریعہ بیے کہ دومر دوں یا ایک مرداور دوعور توں نے جن کا فاسق ہونا طاہر نه ہو، اُسے خبر دیں اور ایک عادل نے خبر دی، جب بھی واجب ہوگیا اور دار الاسلام میں ہے تو اگر چہ جج فرض ہونا معلوم نه ہوفرض ہوجائے گا کہ دار الاسلام میں نے تو اگر چہ جج فرض ہونا معلوم نه ہوفرض ہوجائے گا کہ دار الاسلام میں فرائض کاعلم نه ہونا عذر نہیں۔ (5) (عالمگیری)

۴ بلوغ

نابالغ نے جج کیا یعنی اپنے آپ جبکہ سمجھ وال (6) ہویا اُس کے ولی نے اس کی طرف سے احرام باندھا ہو جب کہ ناسمجھ ہو، بہر حال وہ جج نفل ہوا، ججۃ الاسلام لیعن جج فرض کے قائم مقامنہیں ہوسکتا۔

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص ٢١٥.
- سمر تدوہ مخض ہے کہ اسلام کے بعد کی ایسے امر کا اٹکار کرے، جو ضروریات دین سے ہو یعنی زبان سے کلمہ کفر بکے جس میں تاویل سیجے کی گنجائش نہ ہو۔ یو ہیں بعض افعال بھی ایسے ہیں جن سے کا فرہوجا تا ہے مثلاً بت کو بحدہ کرنا ، معحف شریف کو نجاست کی جگہ پھینک دینا۔

نوث تفصیل معلومات کے لئے بہارشریعت حصہ 9 ممرتد کابیان کا مطالعہ فرمائیں۔

- € "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
 - **4**.....یعنی حج کے دوران۔
- الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨.
 - 6.....6

المَّارِشِرنِعَتْ خِصْتُمُ (6) المَّارِشِرنِعَتْ خِصْتُمُ (1038)

🥮 📶 😘 - نابالغ نے حج کااحرام باندھااوروقوفءِ فیہ سے پیشتر بالغ ہو گیا تواگراسی پہلےاحرام پررہ گیا حج نفل ہوا

جة الاسلام نه موااورا گرس _ سے احرام باندھ کر وقوف عرفه کیا توجمة الاسلام موا۔ (1) (عالمگیری)

٤ عاقل ہونا

مجنون برفرض نہیں۔

مَسِيَّاكُمْ ﴿ ﴾ مِحنون تھااور وقوف ِعرفہ سے پہلے جنون جاتار ہااور نیااحرام باندھ کر جج کیا توبیہ فج ججۃ الاسلام ہوگیا ور نہ

نہیں ۔ بوہراہی مجنون کے عکم میں ہے۔ (2) (عالمگیری،ردالحتار)

ضرورت نہیں،اگراحرام کے وقت اچھاتھا پھرمجنون ہو گیااوراسی حالت میں افعال ادا کیے پھر برسوں کے بعد ہوش میں آیا توجج فرض ادا ہو گیا۔ ⁽³⁾ (منسک)

آزادہونا

باندی غلام پر جج فرض نہیں اگر چہ مد بریا مکاتب یا اُم ولد ⁽⁴⁾ ہوں۔اگر چہ اُن کے مالک نے حج کرنے کی اجازت د بدی ہوا گرچہوہ مکہ ہی میں ہوں۔⁽⁵⁾

یائے جائیں تو پھرکرنا ہوگا اوراگرمولی کے ساتھ حج کوجاتا تھا، راستہ میں اس نے آزاد کردیا تواگراحرام سے پہلے آزاد ہوا، اب احرام بانده كرج كيا توجمة الاسلام ادا ہو گيااوراحرام باندھنے كے بعد آزاد ہوا توجمة الاسلام نہ ہوگا ،اگر چه نيااحرام بانده كر فج

-"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
- 2 الفتاوي الهندية "، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧. و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٥.
- 3 "لباب المنساسك" للسندي و" المسلك المتقسط في المنسك المتوسط " للقارى، (باب شرائط الحج)، ص ٣٩.
- **△ مدبر: لینی وہ غلام جس کی نسبت مولی نے کہا کہ تو میر بےمرنے کے بعد آزاد ہے۔** مکا تب: لینی وہ غلام جس کا آقامال کی ایک مقدار مقرر کرئے یہ کہدوے کہا تناادا کردے تو آزاد ہےاورغلام اسے قبول بھی کرلے۔ ام ولد: یعنی وہ لونڈی جس کے بچہ پیدا ہوا اور مولی نے اقر ارکیا کہ بیرمیرا بچہ ہے۔

نوٹ: تفصیلی معلومات کے لئے دیکھیں: بہارشر بیت حصہ 9،مد بر،مکا تب اورام ولد کا بیان۔

5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.

مج كابيان

ر ایس ایس (۱^{۱۱} (عالمگیری)

🕤 تندرست ہو

کہ جج کو جاسکے، اعضا سلامت ہوں، انگھیارا ہو، اپا بجے اور فالجے والے اور جس کے پاؤں کٹے ہوں اور بوڑھے پر
کہ سواری پرخود نہ بیڑھ سکتا ہو جج فرض نہیں۔ یو بیں اندھے پر بھی واجب نہیں اگر چہ ہاتھ پکڑ کرلے چلنے والا اُسے ملے۔ ان
سب پر بیبھی واجب نہیں کہ کسی کو بھیج کرا پنی طرف سے جج کرا دیں یا وصیت کر جا کیں اور اگر تکلیف اُٹھا کر جج کرلیا توضیحے ہو
گیا اور ججۃ الاسلام ادا ہوا یعنی اس کے بعد اگر اعضا درست ہو گئے تو اب دوبارہ جج فرض نہ ہوگا وہی پہلا جج کافی ہے۔ (2)
(عالمگیری وغیرہ)

🛚 سفرِخرچ کاما لک ہواور سواری پر قادر ہو

خواہ سواری اس کی مِلک ہویااس کے پاس اتنامال ہوکہ کرایہ پرلے سکے۔

مسئ ان اس نہ ہوا کہ اباحت ہے ملک نہیں ہوتی اور فرض ہوا کہ اباحث ہے ملک نہیں ہوتی اور فرض ہونے کے لیے اس کو اتنا مال مُباح کردیا کہ جج کر لے توج فرض نہ ہوا کہ اباحث ہے ملک نہیں ہوتی اور فرض ہونے کے لیے مِلک در کار ہے، خواہ مباح کرنے والے کا اس پراحسان ہو جیسے غیر لوگ یا نہ ہو جیسے مال، باپ اولاد۔ یو ہیں اگر عاربیة (4) سواری مِل جائے گی جب بھی فرض نہیں۔ (5) (عالمگیری وغیرہ)

<u> مَسَعًا ﴾ آپ ۔ کسی نے حج کے لیے</u> مال ہبد کیا تو قبول کرنااس پر واجب نہیں۔ دینے والا اجنبی ہو یا مال، باپ، اولا د وغیرہ مگر قبول کر لے گا تو حج واجب ہوجائے گا۔⁽⁶⁾ (عالمگیری وغیرہ)

مسئانہ کا ﷺ سفرخرج اور سواری پر قادر ہونے کے بیمعنی ہیں کہ یہ چیزیں اُس کی حاجت سے فاضل ہول یعنی مکان و

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨، وغيره.
 - 3المرجع السابق.
 - 🗗 عاريةً لعني عارضي طور پردي هو كي چيز 🕳
 - 5المرجع السابق، ص٢١٧.
 - 6المرجع السابق.

🮉 گباس وخادم اورسواری کا جانوراور پیشد کے اوز اراور خانہ داری کے سامان اور دَین سے انتاز اُئد ہو کہ سواری پر مکہ معظمہ جائے ۔ اور وہاں ہے سواری برواپس آئے اور جانے سے واپسی تک عیال کا نفقہ اور مکان کی مرمت کے لیے کافی مال چھوڑ جائے اور جانے آنے میں اپنے نفقہ اور گھر اہل وعیال کے نفقہ میں قدرِمتوسط کا اعتبار ہے نہ کمی ہونہ اِسراف عیال سے مرادوہ لوگ ہیں

جن کا نفقہ اُس پر واجب ہے، بیضروری نہیں کہ آنے کے بعد بھی وہاں اور یہاں کے خرچ کے بعد کچھ باقی ہے۔ (1) (درمختار، عالمگیری)

سواری ہے مراداس قتم کی سواری ہے جوعر فاً اور عادتاً اُس شخص کے حال کے موافق ہو، مثلاً اگر متمول (2) آرام پیند ہوتو اُس کے لیے شقد ف⁽³⁾ درکار ہوگا۔ یو ہیں تو شہ میں اُس کے مناسب غذا کیں جاہیے ، معمولی کھانا میسر آنا فرض ہونے کے لیے کافی نہیں، جب کہ وہ اچھی غذا کاعادی ہے۔ ⁽⁴⁾ (منسک)

مست المرت ہیں بیضروریات میں بوہ دوست احباب کے لیے تخدلایا کرتے ہیں بیضروریات میں نہیں یعنی اگر کسی کے پاس اتنامال ہے کہ جوضروریات بتائے گئے اُن کے لیے اور آنے جانے کے اخراجات کے لیے کافی ہے مگر کچھ بچے گانہیں کهاحباب وغیرہ کے لیے تحفدلائے جب بھی حج فرض ہے،اس کی وجہ سے حج نہ کرناحرام ہے۔(5) (ردالحتار)

سَسَعَالُهُ ١٨﴾ ﴿ جَس كَي بسراوقات تجارت يرب اوراتني حيثيت ہوگئي كهاس ميں سے اپنے جانے آنے كاخرچ اور واليسي تک بال بچوں کی خوراک نکال لے توا تنابا قی رہے گا،جس ہے اپنی تجارت بفترا پنی گزر کے کر سکے تو حج فرض ہے ور نہیں اور اگروہ کا شنکار ہے تو ان سب اخراجات کے بعدا تنابیج کہ کھیتی کے سامان ہل بیل وغیرہ کے لیے کافی ہو تو حج فرض ہے اور پیشہ والول کے لیےان کے بیشہ کے سامان کے لائق بچنا ضروری ہے۔ (6) (عالمگیری، درمختار)

سواری میں پہنچھی شرط ہے کہ خاص اُس کے لیے ہوا گر دوشخصوں میں مشترک ہے کہ ہاری ہاری دونوں 🚽 📢 📢 💮 💮 💮 💮 میں مشترک ہے کہ ہاری ہاری دونوں تھوڑی تھوڑی ورسوار ہوتے ہیں توبیسواری پر قدرت نہیں اور حج فرض نہیں۔ یو ہیں اگر اتی قدرت ہے کہ ایک منزل کے لیے

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
- ایک میں ایک شخص بیٹھتا ہے۔
 - 4 "لباب المنساسك" و "المسلك المتقسط"، (باب شرائط الحج)، ص ٢ ٤٧،٤.
 - المحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٢٨٥.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١٠ ص ٢١٨.

بهرارشوئيعَتْ خِصْةُم (6)

مثلاً کرایه پرجانور لے پھرایک منزل پیدل چلے وعلیٰ منراالقیاس (1) توبیہ واری پر قدرت نہیں۔(2) (عالمگیری)

آ جکل جو شقدف اورشبری کارواج ہے کہ ایک شخص ایک طرف سوار ہوتا ہے اور دوسرا دوسری طرف اگریوں دوشخصوں

میں مشترک ہوتو حج فرض ہوگا کہ سواری پر قدرت یائی گئی اور پیدل چلنا نہ بڑا۔⁽³⁾ (منسک)

مسئان کی کہ معظمہ یا مکہ معظمہ سے تین دن ہے کم کی راہ دالوں کے لیے سواری شرط نہیں، اگر پیدل چل سکتے ہوں تو ان پر جج فرض ہے اگر چہ سواری پر قادر نہ ہوں اور اگر پیدل نہ چل سکیں تو اُن کے لیے بھی سواری پر قدرت شرط ہے۔ (4) (عالمگیری، ردالحتار)

سَسَعَانُ ٢٠ ﴾ اس کی ضرورت نہیں کہ ممل وغیرہ آرام کی سوار بوں کا کراہیا س کے پاس ہو، بلکہ اگر کجاوے پر بیٹھنے کا کرایہ پاس ہے تو جج فرض ہے، ہاں اگر کجاوے پر بیٹھ نہ سکتا ہوتو محمل وغیرہ کے کراہیہ سے قدرت ثابت ہوگی۔ (6) (درمختار، ردالحتار)

مسئ ان استان المسئ المسلم ملة اور ملّه سے قریب والوں کوسواری کی ضرورت ہو تو نچریا گدھے کے کرایہ پر قادر ہونے سے بھی سواری پر قدرت ہو جائے گی اگر اس پر سوار ہو تکیس بخلاف دور والوں کے کہ اُن کے لیے اونٹ کا کرایہ ضروری ہے کہ دُور والوں کے لیان نہیں اور پیفرق ہر جگہ کھوظ رہنا جا ہے۔(7) (روالحتار)

- 🗗اوراسی پر قیاس کر کیجئے۔
- - 3 "مناسك ملا على قارى"،باب شرائط الحج،ص ١٠.
- 4 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧. و "ردالمحتار"، كتاب الحج، فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٥.
 - "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٥.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٥.
 - 🕡 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٢٦٥.

مَسِيَّلِيُّ الْمُسِيَّلِيِّ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ عَلَيْ

قدم پرسات سونکیاں ہیں۔'' (۱) (ردامخار)

سَمَالَ کَا ﷺ فقیرنے پیدل جج کیا پھر مالدار ہو گیا تو اُس پر دوسراجج فرض نہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

کسٹان (۲) اتنامال ہے کہ اس سے جج کرسکتا ہے مگراُس مال سے نکاح کرنا چاہتا ہے تو نکاح نہ کرے بلکہ جج کرے کے قوض یہ لیمنی دے کے کان ان آگا ہیں، اگر مہلہ نکاح میں خرچے کہ ڈالان میریں بینے (3) میں خوف موسدہ تیا تد

کہ جج فرض ہے یعنی جب کہ جج کا زمانہ آگیا ہواوراگر پہلے نکاح میں خرج کر ڈالا اور مجر در ہنے (3) میں خوف معصیت تھا تو حرج نہیں۔(⁴⁾(عالمگیری، در مختار)

رہے کا مکان اور خدمت کا غلام اور پہننے کے کپڑے اور برتنے کے اسباب ہیں توجی فرض نہیں یعنی لازم نہیں کہ افسیں نیچ کر جی کرے اور بہتنے کے کپڑے اور برتنے کے اسباب ہیں توجی فرض نہیں یعنی لازم نہیں کہ افسیں نیچ کر جی کرے اور اگر مکان ہے مگر اس سے خدمت نہیں لیتا تو نیچ کر جی کرے اور اگر اس کے پاس ندمکان ہے نہ غلام وغیرہ اور رو پیہ ہے جس سے جی کرسکتا ہے مگر مکان وغیرہ فریدنے کا ارادہ ہے اور فرید نے کہ اگر اس کے بعد جی کے لائق نہ بچے گا تو فرض ہے کہ جی کرے اور باتوں میں اُٹھانا گناہ ہے یعنی اس وقت کہ اُس شہروالے جی کو جارہے ہوں اور اگر پہلے مکان وغیرہ فرید نے میں اُٹھادیا تو حرج نہیں۔ (5) (عالمگیری، روالحتار)

سَمَّا اللهُ ٢٨﴾ کپڑے جنسیں استعال میں نہیں لا تا انھیں ﷺ ڈالے تو جج کرسکتا ہے تو بیچے اور جج کرے اور اگر مکان بڑا ہے جس کے ایک حصّہ میں رہتا ہے باقی فاضل پڑا ہے تو بیضر وزنہیں کہ فاضل کو ﷺ کر جج کرے۔(6)(عالمگیری)

مَسْعَالُ 19 ﴾ جس مکان میں رہتا ہے اگراُسے نے کراُس سے کم حیثیت کا خرید لے توا تنارو پیہ بچے گا کہ فج کر لے تو

بیچنا ضرور نہیں مگرایسا کرے تو افضل ہے، لہذا مکان چھ کر جج کرنا اور کرایہ کے مکان میں گز رکرنا تو بدرجہاَ ولی ضرور نہیں۔ ⁽⁷⁾

- سس "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٢٦٥.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
 - ایعنی شادی نه کرنے۔
- ◘ "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
 و"" الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٢٨٥.
- 5 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
- € "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨_٢١.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٨١٦.

میری،در مختار) (عالمگیری،در مختار)

<u>مَسَعَانُهُ اللّٰہ</u> جس کے پاس سال بھر کے خرچ کاغلّہ ہوتو بیلازم نہیں کہ چچ کر حج کو جائے اوراس سے زائد ہے تواگر

ن اندکے بیچنے میں مج کاسامان ہوسکتا ہے تو فرض ہے ور ننہیں۔⁽¹⁾ (منسک)

مسئان السبال کے بی کتابیں اگر اہل علم کے پاس ہیں جوا سکے کام میں رہتی ہیں توانھیں بھے کرج کرناضر وری نہیں اور ب علم کے پاس ہوں اور اتنی ہیں کہ بیچے تو ج کر سکے گا تو اُس پر ج فرض ہے۔ یو ہیں طب اور ریاضی وغیرہ کی کتابیں اگر چہ کام میں

رہتی ہوں اگراتنی ہوں کہ بچ کر حج کرسکتا ہے تو حج فرض ہے۔(2)(عالمگیری،ردالحتار)

🕢 وقت

لعنی حج کے مہینوں میں تمام شرا کط پائے جائیں اور اگر دُور کار ہنے والا ہو تو جس وقت وہاں کے لوگ جاتے ہوں اس وقت شرا کط پائے جائیں اور اگر شرا کط ایسے وقت پائے گئے کہ اب نہیں پہنچے گا تو فرض نہ ہوا۔ یو ہیں اگر عاوت کے موافق سفر کرے تو نہیں پہنچے گا اور تیزی اور آواروی (3) کر کے جائے تو پہنچ جائے گا جب بھی فرض نہیں اور یہ بھی ضرور ہے کہ نمازیں پڑھ سکے ،اگرا تناوقت ہے کہ نمازیں وقت میں پڑھے گا تو نہ پہنچے گا اور نہ پڑھے گا اور نہ پڑھے جائے گا تو فرض نہیں۔(4) (ردالحتار)

وجوبِ ادا کے شرائط

یہاں تک وجوب کے شرا کط کابیان ہوا اور شرا کط ادا کہ وہ پائے جائیں تو خود حج کو جانا ضروری ہے اور سب نہ پائے جائیں تو خود حج کو جانا ضروری ہے اور سب کہ حج کرانے کے جائیں تو خود جانا ضروری نہیں ملکہ دوسرے سے حج کرا سکتا ہے یا وصیت کر جائے مگر اس میں بیا بھی ضرور ہے کہ حج کرانے کے بعد آخر عمر تک خود قادر نہ ہوور نہ خود بھی کرنا ضرور ہوگا۔ وہ شرائط بہ ہیں:

راستہ میں امن ہونا لیمنی اگر غالب گمانِ سلامتی ہوتو جانا واجب اور غالب گمان یہ ہوکہ ڈاکے وغیرہ سے جان ضائع ہو جائے گی تو جانا ضرور نہیں، جانے کے زمانے میں امن ہونا شرط ہے پہلے کی بدامنی قابل لحاظ نہیں۔ (5)

- 1 "لباب المناسك" للسندى، "المسلك المتقسط في المنسك المتوسط" للقارى، (باب شرائط الحج)، ص٥٥.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨.
 و"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٢٨٥.
 - €....یعنی جلدی۔
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٤.
 - 🕏 🗗 المرجع السابق، ص ٥٣٠. و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول، ج١، ص٢١٨.

(ردالحتار، عالمگیری)

سَنَا الله الله الله الله الله الله عنه التقال ہوگیا اور وجوب کی شرطیں پائی جاتی تھیں تو حج بدل کی وصیت ضروری

ہے اورامن قائم ہونے کے بعد انتقال ہوا تو بطریق اولی وصیت واجب ہے۔(1) (ردالحتار) مسئل المن کے لیے کھر شوت دینا پڑے جب بھی جانا واجب ہے اور بداین فرائض ادا کرنے کے لیے

مجبور ہے لہٰذااس دینے والے پرموَاخذہ نہیں۔⁽²⁾ (درمختار ، ردامحتار)

مَسِعًا ﴾ اراستہ میں چوگی وغیرہ لیتے ہوں تو بیامن کے منافی نہیں اور نہ جانے کے لیے عذر نہیں۔ (3) (ورمختار) یو ہیں ٹیکہ کہ آج کل حجاج کولگائے جاتے ہیں یہ بھی عذر نہیں۔

🕥 عورت کومکه تک جانے میں تین دن یا زیادہ کا راستہ ہوتو اُس کے ہمراہ شوہریامحرم ہونا شرط ہے،خواہ وہ عورت جوان ہو یا بوڑھیااور تین دن ہے کم کی راہ ہو تو بغیرمحرم اور شوہر کے بھی جاسکتی ہے۔ ⁽⁴⁾

محرم سے مرادوہ مرد ہے جس سے ہمیشہ کے لیے اُس عورت کا نکاح حرام ہے، خواہ نسب کی وجہ سے نکاح حرام ہو، جیسے باب، بیٹا، بھائی وغیرہ یا دُودھ کے رشتہ سے نکاح کی حرمت ہو، جیسے رضاعی بھائی، باپ، بیٹا وغیرہ یاسسر الی رشتہ سے مُحرمت آئی،جیسے ٹسر، شوہر کابیٹاوغیرہ۔

شوہر یامحرم جس کے ساتھ سفر کرسکتی ہے اُس کا عاقل بالغ غیر فاسق ہونا شرط ہے۔ مجنون یا نابالغ یا فاسق کے ساتھ نہیں

- "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٠.
- 2 "الدرالمختار"و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص ٥٣٠.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص ٥٣١.
- ◄ يظا برالروايه ٢ ـ مرماعلى قارى عليه رحمة الله البارى المسلك المتقسط في المنسك المتوسط "صفح 57 يرتح رفر مات بين: ''امام ابوصنیفداورامام ابوبوسف رحمها الله تعالی سے عورت کو بغیر شوہر یا محرم کے ایک دن کاسفر کرنے کی کرا ہیت بھی مروی ہے۔ فتندوفساد کے

زمانى كى وجهست اسى قول (ايك دن) يرفتوى ويناج إيري " ("المسلك المتقسط"، ص٥٥. "ردالمحتار"، كتاب الحج ،ج٣ ،ص٥٣٥)

اعلی حضرت امام احمد رضاخان علید رعمة الرحمٰن فرماتے ہیں: عورت کو بغیر شوہر یامحرم کے ساتھ لیے سفر کو جانا حرام ہے،اس میں کچھ حج کی

خصوصیت نہیں ، کہیں ایک دن کے راستہ پر بغیر شوہر یا محرم جائے گی تو گناہ گار ہوگی۔ (فناوی رضویہ ، کتاب الحج ،ج ١٠ ص ٢٥٧)

"بہار شریعت" حصہ 4 ہنماز مسافر کا بیان ، صفحہ 101 بر ہے کہ ' عورت کو بغیر محرم کے تنین دن یا زیادہ کی راہ جانا ، نا جائز ہے بلکہ **ایک دن** کی راہ جانا بھی۔'' (عالمگیری وغیرہ) لہذاای پڑمل کرنا چاہیے۔

🧬 جاسکتی آزادیامسلمان ہوناشرطنہیں ،البتہ مجوی جس کےاعتقاد میں محارم سے نکاح جائز ہےاُس کے ہمراہ سفنہیں کرسکتی۔مراہق ومراہقہ لعنی لڑ کا اورلڑ کی جو بالغ ہونے کے قریب ہوں بالغ کے تھم میں ہیں یعنی مراہتی کے ساتھ جاسکتی ہے اور مراہقہ کو بھی بغیر

محرم یا شوہر کے سفر کی ممانعت ہے۔ (1) (جوہرہ، عالمگیری، در مختار)

مسكاني هي عورت كاغلام اس كامحرم نبيل كه أس كے ساتھ نكاح كى حرمت بميشد كے ليے نبيل كه اگر آزاد كردي تو اُس سے نکاح کرسکتی ہے۔⁽²⁾ (جوہرہ)

مستان سے اندیوں کو بغیرمحرم کے سفرجائز ہے۔ (3) (جوہرہ)

نکاح نہیں کرسکتا ، مگراُ س لڑکی کواُ س کے ساتھ صفر کرنا جائز نہیں۔(4) (ردالحتار)

مَسِيَّانُ ٣٨﴾ عورت بغيرمحرم ياشو ہر كے فج كوننى تو كنهار ہوئى، مگر فج كرے كى تو فج ہوجائے گا يعنی فرض ادا ہوجائے گا_⁽⁵⁾(جوہرہ)

سَسَالُ الله عورت كينشو برب، ندمرم تواس پريدواجب نبيل كدفج كے جانے كے ليے ذكاح كر لے اور جب محرم ہے توج فرض کے لیے محرم کے ساتھ جائے اگر چیشو ہرا جازت نہ دیتا ہو نفل اور منّت کا حج ہو تو شو ہر کومنع کرنے کا اختیار ہے۔

کے نفقہ برقادر ہو۔ (⁷⁾ (درمختار، ردامختار)

- "الحوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص٩٣ . و"الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٣١ . و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص١٨. ٢١٩.
 - 2" الجوهرة النيرة" ، كتاب الحج، ص٩٣.
- الحوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص١٩٣٥. هكذا في الجوهرة النيرة لكن في شرح اللباب والفتوى: على أنه يكره فى زماننا. (انظر: ودالمحتار"، كتاب الحج ،ج٣ ،ص٥٣٢).
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣١.
 - 5 "الجوهرة النيرة" ، كتاب الحج، ص١٩٣.
 - 6 المرجع السابق.
 - 🕡"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٣٢٥.

3 قید میں نہ ہو مگر جب کسی حق کی وجہ سے قید میں ہواوراُس کے اداکرنے پر قادر ہو تو بیعذر نہیں اور بادشاہ اگر حج

کے جانے سے روکتا ہوتو بیعذر ہے۔⁽²⁾ (درمختار،ردالحتار)

صحت ادا کے شرائط

صحت اداکے لیے نوشرطیں ہیں کہ وہ نہ یائی جائیں توج صحیح نہیں:

- 🛈 اسلام، كافرنے فيح كيا تونه ہوا۔
- 🕆 احرام، بغیراحرام ججنہیں ہوسکتا۔
- © زمان یعنی جی کے لیے جوزمانہ مقرر ہے اُس سے قبل افعالِ جی نہیں ہو سکتے ، مثلاً طواف قدوم وسعی کہ جی کے مہینوں سے قبل نہیں ہو سکتے اور وقوف عرفہ نویں کے زوال سے قبل یا دسویں کی ضبح ہونے کے بعد نہیں ہوسکتا اور طواف زیارت دسویں سے قبل نہیں ہوسکتا۔
- مکان، طواف کی جگہ مسجد الحرام شریف ہے اور وقوف کے لیے عرفات ومُز دلفہ، کنگری مارنے کے لیے منی، قربانی
 کے لیے حرم، یعنی جس فعل کے لیے جوجگہ مقرر ہے وہ وہیں ہوگا۔
- ت عقل، جس میں تمیز نه ہوجیسے ناسمجھ بچہ یا جس میں عقل نه ہوجیسے مجنون بیہ خودوہ افعال نہیں کرسکتے جن میں نیت کی ضرورت ہے، مثلاً احرام ماطواف، بلکہ ان کی طرف سے کوئی اور کرے اور جس فعل میں نیت شرط نہیں، جیسے وقو ف عرفہ وہ یہ خود کر سکتے ہیں۔ کر سکتے ہیں۔
 - 📎 فرائض في كا بجالا نامگر جب كه عذر مو۔
 - 🔕 احرام کے بعداور وقوف سے پہلے جماع نہ ہونا اگر ہوگا تج باطل ہوجائے گا۔
- جس سال احرام باندها أسى سال مج كرنا، للبذاا گرأس سال مج فوت ہوگيا تو عمره كركے احرام كھول دے اور
 سال آئندہ جدیدا حرام سے مج كرے اورا گراحرام نه كھولا بلكه أسى احرام سے مج كيا تو مج نه ہوا۔
 - € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٣٤٥.
 - 🗣 👂 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٢٥.

حج فرض ادا ھونے کے شرائط

حج فرض ادا ہونے کے لیےنو شرطیں ہیں:

- 1 اسلام۔
- 🕥 مرتے وقت تک اسلام ہی پر رہنا۔
 - ٣ عاقل په
 - ③ مالغ ہونا۔
 - آزادہونا۔
 - ٦ اگر قادر ہو تو خو دادا کرنا۔
 - ♡ نفل کی نیت نه ہونا۔
- دوس ہے کی طرف سے حج کرنے کی نیت نہ ہونا۔
- ان میں بہت باتوں کی تفصیل مذکور ہوچکی بعض کی آئندہ آئے گی۔

حج کے فرائض 🕯

سَعَالُهُ ١٩٤٨ ﴿ جَمِين بِهِ جِزِينِ فَرضَ مِينَ:

- 🛈 احرام، که پهشرط ہے۔
- 🗨 وقوف عرف يعني نوين ذي الحجه كة فتاب وطلغ سے دسويں كي صحصا دق سے پيشتر تك كسى وقت عرفات ميں طمير نا۔
 - 🕏 طواف زیارت کاا کثر حصه، یعنی حیار پھیر ہے بچپلی دونوں چیزیں یعنی و توف وطواف رُکن ہیں۔
 - ٤ نيت ـ
 - ترتیب یعنی پہلے احرام باندھنا پھر و قوف پھر طواف۔
- 🕤 ہر فرض کا اپنے وقت پر ہونا، لیعنی وقوف اُس وقت ہونا جو مذکور ہوااس کے بعد طواف اس کا وقت وقوف کے بعد
 - سے آخر عمر تک ہے۔
 - 🐒 🛈 "لباب المناسك" (باب شرائط الحج) ص٦٢.

© مکان یعنی و توف زمینِ عرفات میں ہونا سوابطنِ عرنہ کے اور طواف کا مکان مسجدالحرام شریف ہے۔ ⁽¹⁾ (درمختار، ردالحتار)

🥻 حج کے واجبات 🦜

حج کے واجبات سے ہیں:

- (۱) میقات سے احرام باندھنا، یعنی میقات ہے بغیراحرام نہ گزرنااورا گرمیقات سے پہلے ہی احرام باندھ لیا تو جائز ہے۔
 - (۲) صفاومروہ کے درمیان دوڑ نااس کوسعی کہتے ہیں۔
 - (۳) سعی کوصفا سے شروع کرنااورا گرمروہ سے شروع کی تو پہلا پھیراشار نہ کیا جائے ، اُس کااعادہ کرے۔
 - (۴) اگرعذرنہ ہوتو پیدل سعی کرنا، سعی کا طواف معتد بہ کے بعد یعنی کم سے کم حیار کھیروں کے بعد ہونا۔
- (۵) دن میں وقوف کیا تواتی دریتک وقوف کرے کہ آفتاب ڈوب جائے خواہ آفتاب ڈھلتے ہی شروع کیا ہویا بعد

میں ،غرض غروب تک وقوف میں مشغول رہے اورا گررات میں وقوف کیا تواس کے لیے کسی خاص حد تک وقوف کرنا واجب نہیں

مگروه أس واجب كا تارك ہوا كه دن ميں غروب تك وقوف كرتا۔

- (٢) وقوف ميں رات كا كچھ جزآ جانا۔
- (2) عرفات سے واپسی میں امام کی متابعت کرنالینی جب تک امام وہاں سے نہ نکلے یہ بھی نہ چلے، ہاں اگرامام نے وقت سے تاخیر کی تو اُسے امام کے پہلے چلا جانا جائز ہے اور اگر بھیڑ وغیرہ کسی ضرورت سے امام کے چلے جانے کے بعد طفہر گیا ساتھ نہ گیا جب بھی جائز ہے۔
 - (۸) مزدلفه میں گھہرنا۔
 - (۹) مغرب وعشا کی نماز کاوفت عشامین مزدلفه مین آکر پڑھنا۔
- (۱۰) نتیول جمروں پر دسویں، گیار ہویں، بارھویں نتیوں دن کنگریاں مارنا لیعنی دسویں کوصرف جمرۃ العقبہ پر اور

گیار ہویں بارھویں کونتیوں پررَمی کرنا۔ ۔

- (۱۱) جمره عقبه کی رَمی پہلے دن حلق سے پہلے ہونا۔
 - (۱۲) ہرروز کی رَمی کااسی دن ہونا۔

■ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في فروض الحج و واجباته، ج٣، ص٣٦٥.

مج كابيان

- (۱۶) قِران اورتتع والے کوقر مانی کرنااور
- (۱۷) اس قربانی کاحرم اورایام نحرمیں ہونا۔
- (۱۸) طواف ِافاضہ کا اکثر حصہ ایام نح میں ہونا۔عرفات سے واپسی کے بعد جوطواف کیا جاتا ہے اُس کا نام طواف

إ فاضه ہے اور اُسے طواف زیارت بھی کہتے ہیں۔طواف زیارت کے اکثر حصہ سے جتنا زائد ہے لینی تین پھیرے ایا منحر کے غیرمیں بھی ہوسکتا ہے۔

- (۱۹) طواف حطیم کے ماہر سے ہونا۔
- (۲۰) دہنی طرف سے طواف کرنالیعنی کعیہ معظمہ طواف کرنے والے کی ہا ئیں جانب ہو۔
- (۲۱) عذر نہ ہوتو یاؤں سے چل کر طواف کرنا، یہاں تک کہ اگر گھٹے ہوئے طواف کرنے کی منت مانی جب بھی طواف میں یاؤں سے چلنا لازم ہے اور طواف نِفل اگر گھٹتے ہوئے شروع کیا تو ہوجائے گا مگر افضل بیہ ہے کہ چل کر طواف
- (۲۲) طواف کرنے میں نجاست حکمیہ سے یاک ہونا، یعنی جنب (1) ویوضونہ ہونا، اگر بے وضویا جنابت میں طواف کیا تواعاد ہکر ہے۔
- (۲۳) طواف کرتے وقت ستر چھیا ہونا یعنی اگرا یک عضو کی چوتھائی یا اس سے زیادہ حصہ کھلار ہا تو دَم واجب ہوگا اور چندجگہ ہے کھلار ہا تو جمع کریں گے ،غرض نماز میں ستر کھلنے ہے جہاں نماز فاسد ہوتی ہے یہاں وَ م واجب ہوگا۔
 - (۲۴) طواف کے بعد دور کعت نمازیر هنا، نه پرهی تو دَم واجب نہیں۔
- (۲۵) کنگریاں چینکنے اور ذیج اور سرمُنڈ انے اور طواف میں ترتیب یعنی پہلے کنگریاں چینکے پھر غیرمُفرد قربانی کرے پھرسرمنڈائے پھرطواف کرے۔
- (۲۶) طواف صدر یعنی میقات سے باہر کے رہنے والوں کے لیے رخصت کا طواف کرنا۔اگر حج کرنے والی حیض با نفاس سے ہےاورطہارت سے پہلے قافلہ روانہ ہوجائے گا تواس برطوانپ رخصت نہیں ۔
 - یعنی جس بر جماع بااحتلام باشکوت کے ساتھ منی خارج ہونے کی وجہ سے غسل فرض ہو گیا ہو۔

(۲۷) وقوف عرفه کے بعد سرمُنڈ انے تک جماع نہ ہونا۔

(۲۸) احرام کے ممنوعات ، مثلاً سِلا کپڑا ایمنے اور موزھ یاسر چھپانے سے بچنا۔ (1)

مسئان کو اجب ہونا جانتا ہو یا نہیں ، ہاں اگر قصداً کرے اور جانتا بھی ہے تو گنہگار بھی ہے مگر واجب کے ترک سے جج باطل نہ ہوگا ، اس کا واجب ہونا جانتا ہو یا نہیں ، ہاں اگر قصداً کرے اور جانتا بھی ہے تو گنہگار بھی ہے مگر واجب کے ترک سے جج باطل نہ ہوگا ، البتہ بعض واجب کا اس حکم سے استثنا ہے کہ ترک پردَم لازم نہیں ، مثلاً طواف کے بعد کی دونوں رکعتیں یا کسی عذر کی وجہ سے سرنہ منڈانا یا مغرب کی نماز کا عشا تک مؤخر نہ کرنا یا کسی واجب کا ترک ، ایسے عذر سے ہوجس کو شرع نے معتبر رکھا ہولیعنی وہاں

🧳 جج کی سنتیں

(طواف قدوم یعنی میقات کے باہر سے آنے والا مکم عظمہ میں حاضر ہوکرسب میں پہلا جوطواف کرے اُسے

طواف قدوم کہتے ہیں۔طواف قدوم مفرداور قارِن کے لیے سنت ہے، متع کے لیے ہیں۔

🕏 طواف کا حجراسود ہے شروع کرنا۔

اجازت دی ہواور کفارہ ساقط کردیا ہو۔

طواف قدوم بإطواف فرض ميں رَمَل كرنا۔

③ صفاومروہ کے درمیان جو دومیل اخضر ہیں، اُن کے درمیان دوڑ نا۔

🕒 امام کامکه میں ساتویں کواور

🧿 عرفات میں نویں کواور

🛇 منیٰ میں گیار ہویں کوخطیہ پڑھنا۔

🕢 آٹھویں کی فجر کے بعد ملّہ ہے روانہ ہونا کہ نئی میں پانچے نمازیں پڑھ کی جائیں۔

نوس رات منی میں گزارنا۔

🕥 آ فآب نکلنے کے بعد منی سے عرفات کوروانہ ہونا۔

🕲 وقوف عرفہ کے لیے سل کرنا۔

1 "لباب المناسك" للسندي، (فصل في واجباته) ص٦٨-٧٣.

و"الفتاوي الرضوية"، ج١٠ ص٧٨٩ ٧١ ٩٧، وغيره.

- مج کابیان
 - آفاب نکلنے سے پہلے یہاں ہے منی کوچلا جانا۔

🕲 عرفات ہے واپسی میں مز دلفہ میں رات کور ہنااور

- ③ دس اور گیارہ کے بعد جودونوں راتیں ہیں اُن کومنی میں گز ارنا اورا گرتیرھویں کوبھی منی میں رہاتو ہارھویں کے بعد کی رات کو بھی منلی میں رہے۔
- 🐵 ابطح یعنی وادی محصَّب میں اُتر نا، اگر چیتھوڑی دیر کے لیے ہواور اِن کے علاوہ اور بھی سنتیں ہیں، جن کا ذکرا ثنائے بیان میں آئے گا۔ نیز حج کے مستحبات ومکر وہات کا بیان بھی موقع موقع ہے آئے گا۔

اب حرمین طیبین کی روانگی کا قصد کرواورآ واب سفر ومقد ماتِ حج جو لکھے جاتے ہیں اُن پڑمل کرو۔

ا داب سفر و مقدماتِ حج کا بیان

- (۱) جس كا قرض آتايا امانت ياس موادا كرد ،جن كے مال ناحق ليے موں واپس دے يامعاف كرا لے، پتانہ يلے توا تنامال فقیروں کودیدے۔
 - (۲) نماز،روزه،زکاة جتنی عبادات ذمه پر بهول ادا کرے اور تائب بهواور آئنده گناه نه کرنے کا یکااراده کرے۔
- (۳) جس کی بےاجازت سفر مکروہ ہے جیسے ماں، باپ،شو ہراُسے رضامند کرے، جس کااس پر قرض آتا ہے اُس وفت نہ دے سکے تو اُس سے بھی اجازت لے، پھر حج فرض کسی کے اجازت نہ دینے سے روک نہیں سکتا ، اجازت میں کوشش ، کرے نہ ملے جب بھی چلا جائے۔
 - (۴) الس سفر سے مقصود صرف اللّٰد (عز دِجل) ورسول (صلى الله تعالى عليه دِسلم) ہول، رِيا وسُمعه وفخر ہے جُد ار ہے۔
- (۵) عورت کے ساتھ جب تک شوہر یامحرم بالغ قابلِ اطمینان نہ ہو،جس سے نکاح ہمیشہ کوحرام ہے۔ سفرحرام ہے، اگر کرے گی حج ہوجائے گامگر ہر قدم پر گناہ لکھاجائے گا۔
- (۲) توشه مالِ حلال سے لے ورنہ قبولِ حج کی امیز نہیں اگر چہ فرض اُنز جائے گا، اگراینے مال میں کچھ شبہہ ہوتو قرض لے کر حج کوجائے اور وہ قرض اپنے مال سے ادا کر دے۔
 - (۷) حاجت سے زیادہ توشہ لے کہ رفیقوں کی مدداور فقیروں پرتصدق کرتا چلے، پیچ مبرور کی نشائی ہے۔
- (٨) عالم كتب فقه بفتر كفايت ساتھ لے اور بِعلم كى عالم كے ساتھ جائے۔ يېھى ند ملے تو كم ازكم بير ساله بمراه ہو۔
 - (۹) آئذنہ، سرمہ، کنگھا،مسواک ساتھ رکھے کہ سُنّت ہے۔

(۱۱) حدیث میں ہے، 'جب تین آ دمی سفر کو جا کیں اپنے میں ایک کو سردار بنالیں۔'' (۱) اس میں کا موں کا انتظام ر ہتا ہے، سرداراُ سے بنا کیں جوخوش خلق عاقل دیندار ہو، سردار کو چاہیے کہ رفیقوں کے آ رام کواپنی آ ساکش پرمقدم رکھے۔

(۱۲) چلتے وفت سب عزیزوں دوستوں سے ملے اور اپنے قصور معاف کرائے اور اب اُن پر لازم کہ دل سے معاف کردیں۔حدیث میں ہے: دجس کے پاس اس کامسلمان بھائی معذرت لائے واجب ہے کہ قبول کرلے، ورنہ حوض کوٹریآنانہ

(۱۳) وقت رُخصت سب سے دعا کرائے کہ برکت پائے گا کہ دوسروں کی دعا کے قبول ہونے کی زیادہ امید ہے اور یہ بیں معلوم کہ کس کی دعام تبول ہو۔ لہذا سب سے دعا کرائے اور وہ لوگ حاجی یا کسی کورُ خصت کریں تو وقت ِ رخصت بید دعا

اَسْتَوُدِعُ اللَّهَ دِينَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ . (3)

حضورِ اقدس صلى الله تعالى عليه وملم جب كسى كورخصت فر ماتے توبيد عايرُ بصتے اور اگر چاہے اس برا تنااضا فہ كرے۔

وَغَفَرَ ذَنُبَكَ وَيَسَّرَلَكَ الْخَيْرَ حَيْثُمَا كُنُتَ زَوَّدَكَ اللَّهُ التَّقُولى وَجَنَّبَكَ الرّدى . (4)

(۱۴) اُن سب کے دین، جان، مال، اولاد، تندرسی، عافیت خدا کوسونیے۔

(١٥) لباس سفر پہن کر گھر میں جاررکعت فل اَلْحَمْدُ و قُلُ سے پڑھکر باہر نکلے۔ وہ رکعتیں واپس آنے تک اُس کے اہل و مال کی تگہبانی کریں گی ۔نماز کے بعدیہ دُعایر ھے:

ٱللُّهُمَّ بِكَ انْتَشَرْتُ وَالَّيْكَ تَوَ جَّهُتُ وَبِكَ اعْتَصَمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ ٱللَّهُمَّ ٱنْتَ ثِقَتِي وَٱنْتَ رِجَائِيُ اللَّهُمَّ اكْفِنِي مَا اَهَمَّنِيُ وَمَا لَا اَهْتَمُّ بِهِ وَمَا اَنْتَ اعْلَمُ بِهِ مِنِّي عَزَّ جَارُكَ وَلَآ اِللَّهُ غَيْرُكَ اللَّهُمَّ زَوِّدُنِي التَّقُوٰى وَاغُفِرُلِيُ ذُنُوبِيُ وَ وَجِّهُنِيُ اِلَى الْخَيْرِ اَيْنَمَا تَوَجَّهُتُ اَللَّهُمَّ اِنِّيَ اَعُوْذُ بِكَ مِنُ وَّعُثَاءِ السَّفَرِ

❶ "سنن أبي داود"، كتاب الحهاد، باب في القوم يسافرون . . . إلخ، الحديث: ٢٦٠٨، ج٣، ص٥٥.

^{2 &}quot;المستدرك"، كتاب البر والصلة، باب بروا آبائكم تبر ابناؤ كم، الحديث ٧٣٤، ج٥، ص٢١٣. و فتاوي رضويه، ج ١٠، ص٧٢٦.

الله کے سیر دکرتا ہوں تیرے دین اور تیری امانت کو اور تیرے عمل کے خاتمہ کو۔ ۱۲

^{4}ترجمه: اورتیرے گناه کو بخش دے اور تیرے لئے خیر میسر کرے، توجہاں ہواور تقوی کو تیرا توشہ کرے اور تخفی ہلاکت سے بچائے۔ ۱۲

وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَالْحَوُرِ بَعُدَ الْكُورِ وَسُوءِ الْمَنْظَرِفِي الْآهُلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ . (1)

- (۱۲) گھرے نکلنے کے پہلے اور بعد پھے صدقہ کرے۔
- (١٤) جدهر سفر كوجائے جمعرات يا ہفتہ يا بير كا دن ہواور صبح كا وقت مبارك ہے اور اہلِ جُمُعَہ كوروزِ جُمُعَه قبلِ جُمُعَه سفراحِها

نہیں۔

(۱۸) دروازه سے باہر نکلتے ہی بیدعاریا ھے:

بِسُمِ اللَّهِ وَبِاللَّهِ وَتَوَكَّلُتُ عَلَى اللَّهِ وَلَا حَوُلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ اَللَّهُمَّ اِنَّا نَعُوُذُ بِكَ مِنُ اَنُ نَّزِلَّ اَوُ لَخُهَلَ عَلَيْنَا اَحَدٌ . (2) لَزُلَّ اَوُ نَضِلًّ اَوُ نَضِلًّ اَوُ نَضِلًّ اَوُ نَضِلًّ اَوُ نَضِلًّ اَوُ نَضِلًّ اَوْ نَضِلًّ اَوْ نَضِلًا اَحَدٌ . (2)

اور درود شریف کی کثرت کرے۔

- (19) سب سے رخصت کے بعدا پنی مسجد سے رخصت ہو، وفت کراہت نہ ہوتواس میں دورکعت نفل پڑھے۔
- (۲۰) ضروریات سفراپ ساتھ لے اور بہتھداراورواقف کارسے مشورہ بھی لے، پہننے کے کپڑے وافر ہوں اور متوسط الحال شخص کو چا ہیے کہ موٹے اور مضبوط کپڑے لے اور بہتر یہ کدان کورنگ لے اور اگر خیال ہو کہ جاڑوں کا زمانہ آجائے گا تو بچھ گرم کپڑے بھی ساتھ رکھے اور جاڑوں کا موسم ہواور خیال ہو کہ واپسی تک گرمی آجائے گی تو بچھ کرمیوں کے کپڑے بھی لے لے بہت آرام دیتا لے بچھانے کے واسطے اگر چھوٹا ساروئی کا گدا بھی ہوتو بہت اچھا ہے کہ جہاز میں بلکہ اُونٹ پر بچھانے کے لیے بہت آرام دیتا ہے بلکہ وہاں پہنچ کر بھی اس کی حاجت پڑتی ہے۔ کیونکہ ہندوستانی آدمی عموماً جاریا ئیوں پر سونے کے عادی ہوتے ہیں۔ چٹائی
- شد: اے اللہ(عزوجل)! تیری مدد سے میں نکلا اور تیری طرف متوجہ ہوا اور تیرے ساتھ میں نے اعتصام کیا اور تجھی پر تو کل کیا ، اے اللہ
 (عزوجل)! تو میر ااعتاد ہے اور تو میری امید ہے۔ اللی تو میری کفایت کراُس چیز سے جو مجھے فکر میں ڈالے اور اُس سے جس کی میں فکر نہیں کرتا اور اُس سے جس کو تو مجھے سے ذیادہ جا تیا ہے۔ تیری پناہ لینے والا باعزت ہے اور تیرے سواکوئی معبوذ نہیں۔

اللی! تقویٰ کومیرازادِراہ کراورمیرے گناہوں کو پخش دےاور مجھے خیر کی طرف متوجہ کرجدھر میں توجہ کروں۔اللی! میں تیری پناہ مانگتا ہوں سفر کی تکلیف سے اور والپسی کی برائی سے اور آرام کے بعد تکلیف سے اوراہل و مال واولا دمیں بُری بات د کیھنے سے۔۱۲

الله (عزوجل) کے نام کے ساتھ اور الله (عزوجل) کی مدد سے اور الله (عزوجل) پر توکل کیا میں نے اور گناہ سے پھر نا اور نیکی کی قوت نہیں مگر الله (عزوجل) سے، اے الله! (عزوجل) ہم تیری پناہ مانگتے ہیں اس سے کہ لغزش کریں یا ہمیں کوئی لغزش دے یا گمراہ ہوں یا گمراہ کیے جائیں یاظلم کریں یا ہم پرظلم کیا جائے یا جہالت کریں یا ہم پرکوئی جہالت کرے۔ ۱۲

اک کابیان کی کابیان کی کابیان

وغیرہ پرسونے میں تکلیف ہوتی ہےاور گدّے کی وجہ سے پھھ تلافی ہوجائے گی اور صابون بھی ساتھ لے جائے کہ اکثر اپنے ہاتھ

سے کیڑے دھونے پڑتے ہیں کہ وہاں دھو بی میسرنہیں آتے۔

اورایک دلی کمل بھی ہونا چاہیے کہ بیاُونٹ کے سفر میں بہت کام دیتا ہے جہاں چاہو بچھالو بلکہ بعض مرتبہ جہاز پر بھی کام دیتا ہےاور شقد ف پرڈالنے کے لیے بوری کاٹاٹ لے لیاجائے، چاقواور سُتلی اور سُواہونا بھی ضروری ہے۔

اور پچھ تھوڑی تی دوائیں بھی رکھ لے کہ اکثر تجائے کو ضرورت پڑتی ہے، مثلاً کھانی ، بخار، زکام ، پیچیش ، برہضمی کہ ان سے کم لوگ بچے ہیں۔ الہٰذاگلِ بنفشہ خطمی ، گاؤزبان ، ملیٹھی کہ یہ بخار، زکام ، کھانی میں کام دیں گی ، پیچیش کے لیے چاروں تخم یا کم اسپغول ہواور برہضمی کے لیے آلوئے بخارا، نمک سلیمانی ہواور کوئی پورن بھی ساتھ ہو کہ اکثر اس کی ضرورت پڑتی ہے۔ مثلاً بادیان ، پودیہ خشک ، ہلیلہ سیاہ نمک سیاہ کہ آئھیں کا پورن بنالے کافی ہوگا، اور عرق کا فورو پیپر منٹ ہوتو یہ بہت امراض میں کام دیتے ہیں۔

دوائیں ضرور ہوں کہ ان کی اکثر ضرورت پڑتی ہے اور میسر نہیں آئیں اگرتم کوخود ضرورت نہ ہوئی اور جس کو ضرورت پڑی اور تم نے دیدی وہ اُس کسم پُرسی کی حالت میں تمھارے لیے کتنی دعائیں دے گا

اور برتنوں کی شم سے اپی حثیت کے موافق ساتھ رکھے، ایک دیگی ایسی جس میں کم از کم دوّا دمیوں کا کھانا پک جائے یہ تو ضروری ہے کیونکہ اگر تنہا بھی ہے جب بھی بدوکو کھانا دینا ہوگا اور اگر چند شم کے کھانے کھانا چاہتا ہو تو اسی انداز سے پکانے کے برتن ساتھ ہوں اور پیالے رکا بیاں بھی اُسی انداز سے ہوں اور ہر خض کو ایک مشکیزہ بھی ساتھ رکھنا ضروری ہے۔ اولاً تو جہاز پر بھی پانی لینے میں آسانی ہوگی، دوم اونٹ پر بغیر اس کے کام نہیں چل سکتا کیونکہ پانی صرف منزل پر ماتا ہے پھر درمیان میں ملنا دشوار ہے بلکہ نہیں ملتا، اگر مشکیزہ ساتھ ہوا تو اس میں پانی لے کراُونٹ پر رکھ لوگے کہ چینے کے بھی کام آئے گا اور وضو و طہارت کے لیے بھی اگر تمھارے یاس خودنہ ہوا تو کس سے مانگو گے اور شاید ہی کوئی دے ایّلا مَا شَاءَ اللّه .

اور ڈول رسی بھی ساتھ ہو کیونکہ بعض منزلوں پربعض وقت خود بھر ناپڑتا ہے اورا کثر جگہ پانی بیچنے والے آجاتے ہیں اور جہاز کائل بعض مرتبہ بند ہوجاتا ہے اس وقت اگر میٹھا پانی حاجت سے زیادہ نہ ہوا تو وضووغیرہ دیگر ضرور بیات میں سمندر سے پانی نکال کر کام چلا سکتے ہو۔

کچھ تھوڑے سے بھٹے پرانے کپڑے بھی ساتھ رکھو کہ جہاز پراستنجا سکھانے میں کام دیں گے۔

لوہے کا پُولھا بھی ساتھ رکھو کہ جہاز پراس کی سخت ضرورت پڑتی ہے۔ اگر کو کلے والا پُولھا ہو تو جمبئی ہے حسبِ

مج کابیان

بَارِشِرِيْعَتْ جُصْمُهُم (6)

صرورت کو کلے بھی خریدلواورلکڑی والا پُولھا ہوتو لکڑی لے جانے کی حاجت نہیں۔اس لیے کہ لکڑی جہاز والے کی طرف سے ضرورت کے لائق ملاکرتی ہے مگر اس صورت میں کلہاڑی کی حاجت پڑے گی کیونکہ جہاز پرموٹی موٹی لکڑیاں ملتی ہیں۔انھیں چیرنے کی ضرورت پڑے گی۔اور بمبئی ہے کچھ لیموضرور لےلوکہ جہاز پراکٹرمتلی آتی ہے۔اُس وقت اس سے بہت تسکین ہوتی ہے،اگر جہاز پرسوار ہونے سے پہلے معمولی تلییں لے لی جائے تو چکر کم آئے گا۔

اورمٹی یا پھر کی کوئی چیز بھی ہوکہ اگر تیم کرنا پڑے تو کام دے کہ جہاز میں کس چیز پر تیم کرو گے اور کچھ نہ ہو تو مٹی کا کوئی برتن ہی ہوجس پر روغن نہ کیا ہوکہ وہ اور کام میں بھی آئے گا اور اُس پر تیم بھی ہوسکے گا۔ بعض حجاج کیڑے پر جس پر غبار کا نام بھی خہیں ہوتا تیم کرلیا کرتے ہیں نہ یہ تیم ہوانہ اس تیم سے نماز جائز۔

ایک اوگالدان ہونا چا ہے کہ جہاز میں اگر قے کی ضرورت محسوس ہوتو کام دے گا ورنہ کہاں قے کریں گے اوراس کے علاوہ تھوکنے کے لیے بھی کام دے گا۔اس کے لیے بمبئی میں خاص اسی مطلب کے اوگالدان ٹین کے ملتے ہیں وہاں سے خرید لے اورایک بیشاب کا برتن بھی ہواس کی ضرورت بعض مرتبہ جہاز پر بھی پڑتی ہے۔ مثلاً چکر آتا ہے پاخانہ تک جانا دشوار ہے یہوگا تو جہاں ہے وہیں پردہ کر کے فراغت کر سکے گا اوراونٹ پرشب میں بعض مرتبہ اتر نے میں خطرہ ہوتا ہے یہ ہوگا تو اس کام کے لیے اتر نے کی حاجت نہ ہوگا اس کے لیے بمبئی میں ٹین کا برتن جو خاص اسی کام کے لیے ہوتا ہے خرید لے۔ چائے بھی کے لیے اتر نے کی حاجت نہ ہوگا اس کے لیے بمبئی میں ٹین کا برتن جو خاص اسی کام کے لیے ہوتا ہے خرید لے۔ چائے بھی تھوڑی ساتھ ہوتو آرام دے گی کہ جہاز پر اس کی ضرورت محسوس ہوتی ہے۔ سمندر کی مرطوب ہوا کے اثر کو دفع کرتی ہے نیز بدو بہت شوق سے پیتے ہیں ،اگر تم انھیں چائے بلاؤ گے تو تم سے بہت خوش رہیں گے اور آرام پہنچا ئیں گے۔ اس کی پیالیاں تام چینی کی زیادہ مناسب ہیں کہ ٹوٹے کا اندیشے نہیں بلکہ کھانے یہنے کے برتن بھی اسی کے بول تو بہتر ہے۔

تھوڑی موم بتیاں بھی ہوں کہ جہاز پر رات میں پاخانہ بیشاب کوجانے میں آ رام دیں گی۔ پانی رکھنے کے لیے ٹین کے پینے ہونے چاہتے کہ جہاز پر کام دیں گے اور منزل پر بھی۔اچارچٹنی اگر ساتھ ہوں تو نہایت بہتر کہان کی بھی ضرورت پڑتی ہے۔
اسباب رکھنے کے لیے ایک چیڑ کا بڑا صندوق ہونا چاہیے اور اس میں ایک یہ بھی فائدہ ہے کہ بعض مرتبہ جہاز میں مافروں کی کثرت ہوتی ہے اور جگہ نہیں ماتی اگر یہ ہوگا تو تیسرے درجے کے مسافر کو بیٹھنے بلکہ تھوڑی تکلیف کے ساتھ اس پر مسافر و بیٹھنے بلکہ تھوڑی تکلیف کے ساتھ اس پر لیٹ رہنے کی جگہ لل جائے گی۔اپنے صندوق اور بوری اور دیگر اسباب پر نام لکھ لوکہ اگر دوسرے کے سامان میں ل جائیں تو تلاش کرنے میں آسانی ہوگی۔

احرام کے کیڑے یعنی تہبنداور جا در یہبیں سے یا جمبئی سے لے لے کیونکہ احرام جہاز ہی پر باندھنا ہوگا اور بہتریہ کہ دو

جوڑے ہوں کہ اگر میلا ہوا تو بدل سکیں گے۔ مستورات ساتھ ہوں تو اُن کے احرام کی حالت میں موتھ چھپانے کو مجور کے پکھے جو خاص اسی کام کے لیے بنتے ہیں بمبئی سے خرید لے کہ احرام میں عورتوں کو کسی ایسی چیز سے موتھ چھپانا جو چہرہ سے چیٹی ہو حرام ہے۔ کفن بھی ساتھ ہو کہ موت کا وقت معلوم نہیں یا اتنا تو ہوگا کہ وہ کپڑ ااس زمین پاک پر پہنچ جائے گا اوراسے زمزم میں غوطہ دے لوگے اور گرمی کا موسم ہو تو پکھا بھی ساتھ ہو۔

اس کے بیان کرنے کی حاجت نہیں کہ کھانے کے لیے کیا لے جائے کیونکہ اس میں ہر شخص کی مختلف حالت ہے اور لوگوں کو معلوم ہے کہ ہمیں کن چیز وں کی ضرورت ہوگی اور ہم کس طرح بسر کر سکتے ہیں پھر بھی اس کے متعلق بعض خاص باتیں عرض کر دیتا ہوں۔ آٹازیادہ نہ لے کیونکہ سمندر کی ہوا ہے بہت جلد خراب ہوجا تا ہے اور اس میں سونڈیاں پڑجاتی ہیں صرف اتنا لے کہ جہاز پر کام دیدے یا کچھزا کد بلکہ گیہوں لے لے کہ اس کو جدّہ یا کمیش عظمہ یا مدینہ طیبہ میں جہاں چاہے پہواسکتا ہے اور عوال ضرور ساتھ لے کہ اکثر کھیڑی پکانی پڑتی ہے اور آلو بھی ہوں کہ متواتر دال دِقت سے کھائی جاتی ہے اور استطاعت ہوتو کبرے، مرغیاں ، انڈے ساتھ رکھلے۔

جہاز پر بعض مرتبہ گوشت مل جاتا ہے گراس میں خیال کرلے کہ کسی کا فریائر تدکا ذرج کیا ہوا تو نہیں۔ (1) مسالے پسے
ہوئے ہوں اور پیاز لہس بھی ہوں ، بڑیاں بھی ہوں تو بہتر ہے ، مدینہ طیبہ کے راستے میں کئی منزلیں ایبی آتی ہیں جہاں دال نہیں
گلتی ، اس کے متعلق بھی کچھا نظام کرلے ، نیز مدینہ طیبہ جانے کے لیے مکہ معظمہ سے بھٹے ہوئے چنے لے لیا یہبیں سے لیتا
جائے کہ بعض مرتبہ اتنا موقع نہیں ملتا کہ دوسرے وقت کے لیے کھانا پکایا جائے ایسے وقت کام دیں گے۔ گھی حسبِ حیثیت زیادہ
لے کہ بدوؤں کو زیادہ گئی دینا پڑتا ہے اور زیادہ گئی سے وہ خوش بھی ہوتے ہیں۔ مسور کی دال ضرور لے کہ جلدگاتی ہے اور بعض دفعہ ایسانی موقع ہوتا ہے کہ جلدگھانا تیار ہوجائے۔

(۲۱) خوشی خوش گھرہے جائے اور ذکرِ اللی بکثرت کرے اور ہر وقت خوفِ خدا دل میں رکھی،غضب سے بچے، لوگوں کی بات برداشت کرے،اطمینان ووقار کو ہاتھ سے نہ دے، بیکار باتوں میں نہ پڑے۔

ا وراگرمسلمان کا ذَنَ کرده است. فقاوی عالمگیری میں ہے: مُر تَدُ کا ذَبیحه مُر دارہے اگر چہ بسیم اللہ پڑھ کر ذَن کر کرے۔ (عالمگیری بیس ہے: مُر تَدُ کا ذَبیحه مُر دارہے اگر چہ بسیم اللہ پڑھ کر ذَن کر کر کر تَدُ یا غیر کتابی کا فر کے قبضے میں گیا تو اس کا کھانا بھی ناجائز کوشت ذَن کے سے لیکر کھانے بھی مسلمان کی نظر سے اوجھل ہو کر اگر مُر تَدُ یا غیر کتابی کافر کے قبضے میں گیا تو اس کا کھانا بھی ناجائز اور کھانا حلال رہے: بھی مسلمان کی نگاہ سے غائب نہ ہواور یوں اظمینان کا فی حاصل ہو کہ یہ مسلمان کا ذبیحہ ہے، تو اس کا خرید نا، جائز اور کھانا حلال ہوگا۔'' (فاوئل رضویہ، ج ۲۰ می ۲۸۲)

(۲۲) گھرے نکلے تو یہ خیال کرے جیسے دنیا سے جار ہاہے۔ جلتے وقت بید عایڑ ھے:

ٱللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوٰذُ بِكَ مِنْ وَّ عُشَآءِ السَّفَرِ وَكَا ٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَسُوءِ الْمَنْظَرِ فِي الْمَالِ وَٱلاَ هُلِ وَالْوَلَدِ .

والیسی تک مال واہل وعیال محفوظ رہیں گے۔

(٢٣) اسى وقت آية الكرى اور قُلْ يَا يُهَا الْكُفِي وْنَ سِ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ التَّاسِ تَك تَبَّتُ كَ سوايا فَي

سورتیں سب مع بسم اللہ پڑھے پھر آخر میں ایک باربسم الله شریف پڑھ کے ، راستہ بھر آ رام سے رہے گا۔

(٢٣) نيزاس وقت ﴿ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرُانَ لَهَا دُّكَ إِلَى مَعَادٍ ﴾ (1) ايك بار پڙھ لے، بالخير واپس آئگا۔

(۲۵) رمل وغيره جسسواري پرسوار هو، بسم الله تين بار کے پھر اَکملَهُ اَکْبَرُ اور اَلْتَحَمُدُ لِلَّهِ اور سُبُحٰنَ اللَّهِ ہرا یک تین تین بار، کا اِلْهَ اِلَّا اللَّهُ ایک بار پھر کیے:

﴿ سُبُحِنَ الَّذِي سَخَّى لِنَا لَهُ نَا وَمَا كُنَّا لَدُمُقُرِنِينَ ﴿ وَإِنَّا إِلَّى مَبِّنَا لَئُنْقَلِبُونَ ﴿ ﴾ (2) أسكثر

سے بچے۔

(٢٦) جب دريامين سوار هويه كهي:

﴿ بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرَبَهَا وَمُرْسَهَا ﴿ إِنَّ مَ بِنِ الْعَفُورُ مَّ حِدْمٌ ﴾ ﴿ وَمَاقَدَ مُرُوا اللّٰهَ مَقَ قَدْمِ الْأَوْلَ مُنْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّ اللّٰهُ اللّٰ

1 پ ۲۰ القصص: ۸۵.

ترجمہ: بےشک جس نے تجھ پر قرآن فرض کیا تجھے واپسی کی جگہ کی طرف واپس کرنے والاہے۔ ۱۲

2 پ ۲۵، الزخرف: ۱۳ ـ ۱۵.

ترجمہ: پاک ہےوہ جس نے ہمارے لیے اسے مستر کیا اور ہم اس کوفر ما نبر دار نہیں بناسکتے تصاور ہم اپنے رب کی طرف لوٹے والے ہیں۔ ۱۲

اساس دعامیں پہلی آیت سورہ هود (آیت: ۴۱) کی ہے، جب کدوسری آیت سوره زمر (آیت: ۲۷) کی ہے۔

ترجمہ:اللہ(عزوجل)کےنام کی مدد سےاس کا چلنااورکھبرنا ہے بے شک میرارب بخشنے والارحم کرنے والا ہے۔اورانھوں نے اللہ(عزوجل) کی قدر جیسی چاہیے نہ کی اورز مین پُوری قیامت کے دن اس کی مٹھی میں ہےاورآ سان اس کے ہاتھ میں لِپٹے ہوئے ہیں، پاک اور برتر ہےاُس سے جسے مصرف

أس كاشريك بتاتے ہيں۔١٢

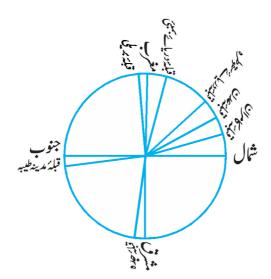
(۲۷) جہاز پرسوار ہونے میں کوشش کرے کہ پہلے سوار ہوجائے کیونکہ جو پہلے پہنچ گیااچھی اور کشادہ جگہ لے سکتا ہے

اور جو جگہ یہ لے گا پھراس کو کوئی ہٹانہ سکے گااوراُ ترنے میں جلدی نہ کرے کہ اس میں بعض مرتبہ کوئی سامان رہ جاتا ہے۔

(۲۸) تیسرے درجہ میں سفر کرنے والا جہاز پر بچھانے کو چٹائی ضرور لے لے ورنہ بستر اکثر خراب ہوجا تا ہے۔ چند ہمراہی ہوں تو بعض نیچے کے کمرہ میں جگہ لیں اور بعض اُو پر کے ، کہ اگر گرمی معلوم ہوئی تو نیچے والے اُو پر کے درجہ میں آ کر بیٹھ

سکیں گےاورسردی معلوم ہوئی توبیاُن کے پاس چلے جا کیں گے۔

(۲۹) جب بمبئی سے روانہ ہوں گے قبلہ کی سمت بدلتی رہے گی اس کے لیے ایک نقشہ دیا جاتا ہے، اس سے سمت قبلہ معلوم کر سکو گے۔ قطب نما پاس رکھا جائے، جدھروہ قُطب بتائے اس طرف اس دائرہ کا خطشال کر دیا جائے پھر جس سمت کو قبلہ کھا ہے اُس طرف مونھ کر کے نماز پڑھیں۔



(۳۰) جدّہ میں جہاز کنارہ پرنہیں کھڑا ہوتا جیسے بمبئی میں گودی بنی ہے وہاں نہیں ہے بلکہ وہاں کشتیوں پرسوار ہوکر کنار سے پہنچتے ہیں، یہ بات ضرور خیال میں رکھے کہ جس کشتی میں اپناسامان ہوائس میں خود بھی بیٹھے اگر ایسانہ کیا بلکہ سامان کسی میں اُتر ااور اپنے آپ دوسری پر بیٹھا تو سامان ضائع ہوجانے کا خوف ہے یا کم از کم تلاش کرنے میں وقت ہوگی، کشتی والے بطور انعام کچھ مانگتے ہیں اُتھیں دیدیا جائے۔

(m) اب یہاں سے سامان کی حفاظت میں پوری کوشش کرے، ہر کام میں نہایت پٹستی وہوشیاری رکھے۔کشتی سے 😨

ج کیان کے کابیان

اُر نے کے بعد چونگی خانہ میں جے بُمُرُک کہتے ہیں سامان کی تفتیش ہوتی ہے اس میں فقط بیدد کھتے ہیں کہ کوئی چیز تجارت کی غرض سے تو نہیں لایا ہے۔ اگر تجارتی سامان پائیں گے اُس کی چونگی لیس گے اور تجارتی سامان نہ ہوتو چاہے کتنی ہی کھانے پینے اور دیگر ضرورت کی چیزیں ہوں اُن سے کچھ تعرض ⁽¹⁾ نہ کریں گے۔
ضرورت کی چیزیں ہوں اُن سے کچھ تعرض ⁽¹⁾ نہ کریں گے۔

(۳۲) مکہ معظمہ میں جتے معظم ہیں اُن سب کے جدہ میں وکیل رہتے ہیں جبتم کثتی ہے اُڑو گے پھاٹک پر حکومت کا آدمی ہوگا کشتی کا کرایہ جومقرر ہے وصول کر لے گا اور وہ تم سے بع جھے گامعلم کون ہے جس معلم کا نام لوگاس کا وکیل شخصیں اپنے ساتھ لے گا اور وہ تمھارے سامان کو اُٹھوا کراپنے یہاں یا کسی کرایہ کے مکان میں لے جائے گا اس وفت شخصیں چپا سامان کی ملانی کریں بعض سامان جو جی کہا ہے کہ ایک سامان کی ملانی کریں بعض سامان کی گاڑی کے ساتھ خود جاؤاور اگرتم کئی شخص ہواور سامان زیادہ ہے تو بعض یہاں سامان کی مگرانی کریں بعض سامان کی گاڑی کے ساتھ جا کیں۔ اس لیے کہ بعض مرتبہ سامان گاڑی ہے گرجا تا ہے اور گاڑی والے خیال بھی نہیں کرتے اس میں ان کا کیا نقصان ہے کوئی ضرورت کی چیز گرگئی تو شخصیں کو تکلیف ہوگی۔

(mm) جدّه میں پانی اکثر احپھانہیں ماتا کچھ خفیف کھاری ہوتا ہے، پانی خریدوتو چکھ لیا کرو۔

(۳۴) مکی معظمہ کے لیے اونٹ کا کرایہ کرنا اُسی وکیل کا کام ہے اور اُس زمانہ میں حکومت کی طرف سے کرایہ مقرر ہو جا تا ہے جس سے کی بیشی نہیں ہوتی۔ شقد ف، شبری جس کی شخصیں خواہش ہواً س کے موافق وکیل اونٹ کرایہ کردے گا اور کرایہ پیشگی اوا کرنا ہوگا اور اُسی اونٹ کے کرایہ میں دریا کے کنارے سے مکان تک اسباب لانے کی مزدوری اور مکان کا کرایہ اور وکیل کا محنتا نہ سب کچھ جوڑلیا جا تا ہے تحصیں کسی چیز کے دینے کی ضرورت نہیں ، ہاں اگرتم پیدل جانا جا ہوگے تو یہ تمام مصارف تم سے وکیل وصول کرے گا۔

(۳۵) شبری کی پوری قیمت لے لی جاتی ہے۔اب وہ تمھاری ہوگئی مکی معظمہ پنج کرجو چا ہوکرواگر وہ مضبوط ہے تو مدینہ طبیبہ کے سفر میں بھی کام دے گی۔ شقد ف کا کرایہ لیاجا تا ہے کہ مکی معظمہ پنج کراب شمیں اس سے سروکا زئیل ہاں اگرتم چا ہو تو جدہ میں شقد ف خرید بھی سکتے ہوجو پورے سفر میں شمیں کام دے گا پھر جدہ پنج کر تھوڑے داموں پر فروخت بھی ہوسکتا ہے۔ شقد ف میں زیادہ آرام ہے کہ آ دمی سوبھی سکتا ہے اور شبری میں جیٹھا رہنا پڑتا ہے مگر اس میں سامان زیادہ رکھا جا سکتا ہے اور شقد ف میں بہتے کہ ۔

(٣٦) اگراسباب زیادہ ہوتو مکہ معظمہ تک اس کے لیے الگ اونٹ کرلواور جوچیزیں ضرورت سے زیادہ ہوں جا ہوتو

بهركارشرنيعَتْ رُحْمَةُ مُ (6)

س. سیاس زمانه میس تھااب اس زمانه حکومت نجد سیمیس ایسانهیں۔

کی کابیان

بهارشرنيعَتْ رُحْشْم (6)

یمیں جدّہ ہی میں وکیل کےسپر دکر دوجبتم آؤگے وکیل وہ چیزتمھارے حوالہ کردے گا اوراس کا کرایہ مثلاً فی بوری یا فی صندوق

آٹھآنے ماکم وہیش کے حساب سے لے لے گا اگر چہتمھاری واپسی جپار پانچ مہینے کے بعد ہو۔

(٣٧) اگر جہاز کائکٹ واپسی کا ہے تو اُسے باحتیاط رکھواورا س کانمبر بھی لکھ لوکہ شاید ٹکٹ ضائع ہوجائے تو نمبر سے

کام چل جائے گا اگر چہ دقت ہوگی اورتم کواطمینان ہوتو ٹکٹ وکیل کے پاس رکھ سکتے ہو۔

(۳۸) کرایہ کے اونٹ وغیرہ پر جو پچھ بار کرواُس کے مالک کودکھا لواوراس سے زیادہ ہےاں کی اجازت کے پچھندر کھو۔

(۳۹) جانور کے ساتھ نرمی کرو، طاقت سے زیادہ کام نہاو، بےسب نہ مارو، نہ بھی موزھ پر مارو، تتی الوسع اس پر نہ سوؤ

کہ سوتے کا بوجھ زیادہ ہوتا ہے کسی ہے بات وغیرہ کرنے کو پچھ دریٹھ ہرنا ہوتو اُنز لوا گرممکن ہو۔

(۴۰) صبح وشام أمر كر كچهد ورپياده چل لينے ميں ديني ودنيوي بهت فائدے ہيں۔

(۴۱) بدوؤں اور سب عربیوں سے بہت نرمی کے ساتھ پیش آئے، اگر وہ تختی کریں ادب سے تحل کرے اس پر شفاعت نصیب ہونے کا وعدہ فرمایا ہے۔خصوصاً اہلِ حرمین،خصوصاً اہلِ مدینہ، اہلِ عرب کے افعال پراعتراض نہ کرے، نہ دل میں کدورت لائے، اس میں دونوں جہاں کی سعادت ہے۔

اے سکھ حمّال عیب خویشتنید طعنہ ہر عیب دیگراں مسکنید (1)
(۲۲) جوعر بی نہیں جانتا اُسے بعض تُند نُو جمال وغیر ہم گالیاں بلکہ مغلظات تک دیتے ہیں ایسا آفاق ہوتو شُنیدہ کوشن ناشنیدہ (2) کر دیا جائے اور قلب بر بھی میل نہ لایا جائے۔ یو ہیں عوام اہلِ مکہ کہ تخت نُو و تُند مزاج ہیں اُن کی تختی پر نری لازم ہے۔

(۳۳) جٹال بعنی اونٹ والوں کو یہاں کے سے کرایہ والے نہ سمجھے بلکہ اپنا مخدوم جانے اور کھانے پینے میں اُن سے بُخل نہ کرے کہ وہ ایسوں ہی سے ناراض ہوتے ہیں اور تھوڑی بات میں بہت خوش ہوجاتے ہیں اور امید سے زیادہ کا م آتے ہیں۔ (۲۲) قبول حج کے لیے تین شرطیں ہیں:

اللُّدعز وجل فرما تاہے:

﴿ فَلَا ﴾ فَثَ وَلا فُسُوقَ لا وَلا جِدَالَ فِي الْحَجِّ الْ

- 🗨 یعنی جو څخص ا پناعیب اٹھائے ہے، وہ دوسروں کے عیب پرطعنہ نیددے۔
 - 🗗 يعنى سنى كوان سنى
 - 🚙 🔞 ۱۹۷۰، البقرة: ۱۹۷

مج کابیان

جے میں نفخش بات ہو، نہ ہماری نافر مانی ، نہ کسی ہے جھگڑ الڑائی۔

توان باتوں سے نہایت ہی وُورر ہنا جا ہیے، جب غصّہ آئے یا جھگڑا ہو یا کسی معصیت کا خیال ہوفوراً سر جھکا کر قلب کی طرف متوجہ ہوکراس آیت کی تلاوت کر ہے اور دوایک بار لاحول شریف پڑھے، یہ بات جاتی رہے گی بہی نہیں کہ اس کی طرف سے ابتدا ہو یااس کے رُفقا (1) ہی کے ساتھ جدال بلکہ بعض اوقات امتحاناً راہ چلتوں کو پیش کر دیا جاتا ہے کہ بے سبب اُلجھتے بلکہ سب وقت ہوشیار رہنا چا ہے، مبادا (2) ایک دو کلم میں ساری محنت اور روپیہ برباد ہو جائے۔

(۴۵) کمزوراورعورتوں کواونٹ پر چڑھنے کے لیے ایک سیڑھی جدّہ میں لے لی جائے تو چڑھنے اُتر نے میں آسانی ہوگی۔ جدّہ سے مکی معظّمہ دودن کاراستہ ہے صرف ایک منزل راستہ میں پڑتی ہے جس کو بحرہ کہتے ہیں، اب جب یہاں سے روانہ ہوتو اِن تمام باتوں پر لحاظ رکھو جو کھی جا چکیں اور جو آئندہ بیان ہول گی۔

(۳۶) اوٹ پرعموماً دو شخص سوار ہوتے ہیں۔ شقد ف اور شبری میں دونوں طرف بوجھ برابر رہنا ضرور ہے اگر ایک جانب کا آدمی ہلکا ہو تو اُدھرا سباب رکھ کروزن برابر کرلیں۔ یوں بھی وزن برابر نہ ہو تو ہلکا آدمی اپنے شقد ف یا شبری میں کنارہ بیرونی سے قریب ہوجائے اور بھاری آدمی اوٹ کی پیٹھ سے نزدیک ہوجائے۔

(۳۷) بعض مرتبکی جانب کا پلہ جھک جاتا ہے اس کا خیال رکھو جب اییا ہوتو فوراً اس طرح بیٹے جاؤ کہ درست ہو جائے۔ کیونکہ اس کی وجہ ہے اونٹ کو بھی تکلیف ہوتی ہے اور شبری ہوتو گرنے کا قوی اندیشہ ہے۔ اس کے درست کرنے کو اونٹ والا میزان میزان کہہ کر شمیں متنبہ کرے گائے ہیں جا ہے کہ فوراً درست کرلوور نہ اونٹ والا ناراض ہوگا۔

(۴۸) راہ میں کہیں چڑھائی آتی ہے کہیں اُتار، جب چڑھائی ہوخوب آگے اونٹ کی گردن کے قریب دونوں آدمی ہوجا کیں اور جب اُتارہ ہوخوب آگے اونٹ کی گردن کے قریب دونوں آدمی ہوجا کیں اور جب اُتارہ ہوخوب چھے دُم کے نزدیکہ ہوجا کیں ۔ جب راہ ہموار آئے پھر پھی میں ہوجا کیں بینشیب وفراز کھی آدمی کے سوتے میں آئے ہیں یا اُسے اس طرف النفات نہیں ہوتا، اس وقت جمال جگا تا اور متنبہ کرتا ہے اوّل اوّل یا گدُّ ام گدُّ ام کُدُّ ام کُدُ اُن کے تو آگے کو سرک کر بیٹے جاؤ اور اگر وراء وراء کے تو پیچھے ہے جاؤ، اور بعض بدوایک آدھ لفظ ہندی سکھے ہوئے فیشُو کہتے ہیں ۔ دیکھ کرھی جات پر فوراً عمل کیا جائے اور اُس جگانے پر بین پیچھے پیچھے اور بھی غلطی سے آگے کہنا ہوتا ہے اور فیشو کہتے ہیں ۔ دیکھ کرھی جات پر فوراً عمل کیا جائے اور اُس جگانے پر ناراض نہ ہونا چاہے اور اُس جگانے سے کہ ایسانہ ہوتو معاذ اللّٰد گر جانے کا احتال ہے۔

^{📭}رفیق کی جمع _ ساتھی _ دوست _

ی ایبانه مو خدانه کرے۔

کے کابیان 📜

گِمهرادشِرنِيَعَتْ ثِعْصَةُم (6) € 1062

(۴۹) جب منزل پر پہنچوتو اُتر نے میں تاخیرمت کرو کہ دبر کرنے میں اونٹ والے ناراض ہوتے اور پریثان کرتے 👶

ہیں اور روانگی کے وقت بالکل تیار رہو۔تمام ضروریات سے پہلے ہی فارغ ہولو۔

(۵۰) اُتر نے اور چڑھنے کے وقت خصوصیت کے ساتھ بہت ہوشیاری اور دیکھ بھال کی ضرورت ہے کہان دووقتوں ۔ میں سامان کے ضائع ہونے اور چھوٹ جانے کا اندیشہ ہوتا ہے اور اس وقت بعض دفعہ چور بھی آ جاتے ہیں جن کو وہاں کی زبان میں حرامی کہتے ہیں۔

(۵۱) منزلوں پر سودا بیچنے والے اور پانی لے کربکٹرت بدوآ جاتے ہیں اُن سے بھی احتیاط رکھو کہ بعض اُن میں کے موقع ہا کرکوئی چیز اُٹھالے جاتے ہیں۔

(۵۲) جس منزل میں اُتر ہے، وہاں بیدعا پڑھ لے:

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرّ مَا خَلَقَ اَللَّهُمَّ اَعُطِنَا خَيْرَ هَلَا الْمَنْزل و تَحَيْرَ مَا فِيْهِ وَاكْفِنَا شَرَّ هُذَا الْمَنُول وَشَوَّ مَا فِيُهِ اَللَّهُمَّ اَنُولُنِي مَنُولًا مُّبَارَكًا وَّ انْتَ خَيْرُ الْمُنُولِيْنَ ط (1) مِرتقصان ع نيج گااور بهتريد ہے کہ وہاں دورکعت نماز پڑھے۔

(۵۳) منزل میں راستہ ہے نچ کر اُترے کہ وہاں سانپ وغیرہ مُو ذیوں کا گز رہوتا ہے۔

(۵۴) جب منزل سے گوچ کرے دورکعت نماز پڑھ کرروانہ ہو۔ حدیث میں ہے، 'روزِ قیامت وہ منزل اُس کے حق میں اس امر کی گواہی دے گی۔'' (2)

نیز انس رضی اللہ تعالیءنہ کہتے ہیں،'' رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم جب کسی منزل میں اُٹر تے وورکعت نماز بیڑھ کروہاں سے رخصیت بهر تر " (3)

- (۵۵) راسته پرپیشاب وغیره باعث بعے۔
- (۵۲) منزل میں متفرق ہوکرنہ اُتریں بلکہ ایک جگہر ہیں۔
- (۵۷) اکثر رات کوقافلہ چلتار ہتاہے اِس حالت میں اگر سوؤ تو غافل ہوکر نہ سوؤ، بلکہ بہتریہ ہے کہ دونوں آ دمیوں

📭ترجمہ:اللہ کے کلمات تامہ کی بناہ مانگتا ہوں اس کے شریعے جیےاس نے پیدا کیاالہٰی تو ہم کواس منزل کی خیرعطا کراوراس کی خیرجو کچھاس میں ہےاوراس کےشرسےاور جو کچھاس میں ہےاس کےشرہے جمیں بچا۔الٰبی تو ہم کو برکت والی منزل میںاُ تاراورتو بہتراُ تارنے والا ہے۔١٢

3 "المستدرك"، كتاب المناسك، كان لاينزل منزلاإلاو دعه بركعتين ، الحديث: ١٦٧٧ ، - ٢٠ ص٩٢.

ج کابیان 📜

يهارشونيعَتْ رُصْمُ شم (6) 💽

تر میں جوایک اونٹ پر سوار ہیں باری باری سے ایک سوئے ایک جا گنارہے کدایسے وقت کد دونوں عافل سوجا کیں بعض مرتبہ چوری ہوجاتی ہے۔شبری کے نیچے سے چور بوری کاٹ لے جاتے ہیں اور شقد ف بھی بغل کی جانب سے حاک کر کے مال نکال لے حاتے ہیں۔خلاصہ یہ کہ ہرموقع اور ہر کل پر ہوشاری رکھواوراللّٰدعز دجل پراعتاد ، پھر ان شاء اللّٰہ العزيز البحليل نهايت امن وامان کےساتھ رہو گے۔

(۵۸) راستہ میں قضائے حاجت کے لیے دُور نہ جاؤ کہ خطرہ سے خالی نہیں اور ایک چھتری اینے ساتھ صرور رکھو اگر چرسر دی کا زمانہ ہو کہ قضائے حاجت کے وقت اس سے فی الجملہ بردہ ہوجائے گا اور بہتریہ کہ تین حیار لکڑیاں جن کے پنچلوہا لگا ہوا درایک موٹی بڑی جا درسا تھ رکھو کہ منزل پرلکڑیاں گاڑ کر جا در ہے گھیر دو گے تو نہایت پر دہ کے ساتھ رفع ضرورت کرسکو گے۔ اورعورتیں ساتھ ہوں تو ایباانظام ضرور ہے کہ خوف کی وجہ سے وہ دُورنہ جاسکیں گی اور نز دیک میں سخت بے بردگی ہوگی۔

(۵۹) کمیم عظمہ سے جب مدینہ طیبہ کے لیےاونٹ کراریکریں توایک معلّم کے جتنے حجاج ہیں وہ سب متفق ہوکر رپیر شرط کرلیں کہ نماز کے اوقات میں قافلہ گھیرانا ہوگا ،اس صورت میں نماز جماعت کے ساتھ بآسانی ادا کرسکیں گے کہ جب بہشرط ہوگی تواونٹ والوں کوونت نِماز میں قافلہ رو کناپڑے گا اور اگر کسی وجہ سے نہ روک سکیس گے تو چند بدو جاج کی حفاظت کریں گے کہ بیہ باطمینان نمازادا کرلیں پھروہ اونٹ تک پہنچادیں گے۔

اورا گرشرط نہ کی تو صرفمخرب کے لیے قافلہ روکیں گے باقی نمازوں کے لیے نہیں اوراس صورت میں بہرے کہ نماز پڑھنے کے وفت اونٹ سے کچھآ گے نکل جائے اور نماز ادا کر کے پھر شامل ہو جائے اور قافلہ سے دُور نہ ہو کہ اکثر خطرہ ہوتا ہے اور بعض مرتبہ ایسابھی کرنا پڑتاہے کہ سنت یا فرض پڑھنے تک قافلہ سب آ گے نکل گیا توباقی کے لیے پھرآ گے بڑھ جائے ورنہ قافلہ سے زیادہ فاصلہ ہوجائے گااور ریجھی یادر کھنا جا ہیے کہ فرض ووتر اور شیح کی سنت سواری پر جائز نہیں ۔اُن کواُتر کر پڑھے باقی سنتیں یانفل اونٹ کی پیٹھ پربھی پڑھ سکتے ہیں۔

منعبید: خبردار! خبردار! نماز ہرگز نہترک کرنا کہ یہ ہمیشہ بہت بڑا گناہ ہے اوراس حالت میں اور سخت تر کہ جن کے در بارمیں جاتے ہوراستہ میں آخیں کی نافر مانی کرتے چلو، تو بتاؤ کہتم نے اُن کوراضی کیایا ناراض میں نے خود بہت سے حجاج کو و یکھا ہے کہ نماز کی طرف بالکل التفات نہیں کرتے ،تھوڑی تکلیف پر نماز جھوڑ دیتے ہیں حالائکہ شرعِ مُطبَّر نے جب تک آ دمی ہوش میں ہےنماز ساقطنہیں کی۔

(۱۰) سفرمدینه طیب میں بعض مرتبہ قافلہ نہ گھہرنے کے باعث بجبوری ظہر وعصر ملا کر بڑھنی ہوتی ہےاس کے لیے لازم 🌏

هِ بِهَ ارْشُرْنِيَعَتْ بُرْصُتْهُم (6) 🗨 🚺 🐧 کابیان

🐉 ہے کہ ظہر کے فرضوں سے فارغ ہونے سے پہلے ارادہ کرلے کہاسی وفت عصر پڑھوں گا اور فرض ظہر کے بعد فوراً عصر کی نماز یڑھے یہاں تک کہ نے میں ظہر کی سنتیں بھی نہ ہوں اسی طرح مغرب کے بعد عشا بھی انھیں شرطوں سے جائز ہے اور اگر ایساموقع ہوکہ عصر کے وقت ظہریا عشا کے وقت مغرب پڑھنی ہو تو صرف اتنی شرط ہے کہ ظہر ومغرب کے وقت میں وقت نکلنے سے پہلے

ارادہ کرلے کہان کوعصر وعشا کے ساتھ پڑھوں گا۔

(۱۱) جبوه بستی نظر پڑے جس میں گھر نایا جانا جا ہتا ہے یہ کے:

اَللُّهُ مَّ رَبَّ السَّـمٰوٰتِ السَّبُع وَمَا اَظُلَلُنَ وَرَبَّ الْاَرْضِينَ السَّبُع وَمَا اَقُلَلُنَ وَ رَبَّ الشَّيطِيُنِ وَمَا ٱضۡلَلُنَ وَرَبُّ ٱلاَرۡيَاحِ وَمَا ذَرَيُنَ ٱللَّهُمَّ إِنَّا نَسُتَالُكَ خَيُرَ هاذِهِ الْقَرۡيَةِ وَخَيُرَ اهۡلِهَا وَخَيْرَ مَا فِيُهَا وَ نَعُوُذُ بِكَ مِنُ شَوِّ هلذِهِ الْقَرُيَةِ وَشَوَّ اهْلِهَا وَشَرَّ مَا فِينُهَا. (1) بإصرف يجيلي دعا يرُّ هے، ہر بلا مے محفوظ رہے گا۔

(٦٢) جس شهر میں جائے وہاں کے سُنّی عالموں اور باشرع فقیروں کے پاس ادب سے حاضر ہو، مزارات کی زیارت کرے،فضول سروتماشے میں وقت نہ کھوئے۔

(۱۳) جس عالم کی خدمت میں جائے وہ مکان میں ہوتو آواز نہ دے باہر آنے کا انتظار کرے، اُس کے حضور بےضرورت کلام نہ کرے، بےاجازت لیےمسکلہ نہ یو چھے، اُس کی کوئی بات اپنی نظر میں خلاف ِشرع معلوم ہو تو اعتراض نہ کرے اور دل میں نیک گمان رکھے گریئٹی عالم کے لیے ہے، بدند ہب کے سابیہ سے بھاگے۔

- (۱۴) ذکر خدا سے دل بہلائے کہ فرشتہ ساتھ رہے گا، نہ کہ شعر واقع یات ہے کہ شیطان ساتھ ہوگا۔
 - (٦۵) رات کوزیادہ چلے کہ سفرجلد طے ہوتا ہے۔
- (۲۲) ہرسفرخصوصاً سفر حج میں اینے اور اپنے عزیزوں، دوستوں کے لیے دعاسے غافل ندر ہے کہ مسافر کی دعا قبول ہے۔
 - (٦٤) جب کسی مشکل میں مدد کی ضرورت ہوتین بار کہے:
 - یَا عَبَادَ اللّٰه اَعَیْنُوْ نِیُ ⁽²⁾ اےاللّٰہ(عزوجل) کے نیک بندو!میری مددکرو۔

🚹ترجمہ: اےاللہ(عزوجل)!ساتوں آ سانوں کے رب اوران کے جن کوآ سانوں نے سابہ کیا اور ساتوں زمینوں کے رب اوران کے جن کو زمینوں نے اُٹھابا اور شیطانوں کے رب اوران کے جن کوانھوں نے گمراہ کیا اور ہواؤں کے رب اور اُن کے جن کو ہواؤں نے اُڑایا۔اے الله(عزوجل)! ہم تجھے سے اس بستی کی اوربستی والوں کی اور جو کچھاس میں ہےاُن کی جھلائی کاسوال کرتے اوراس بستی کےاوربستی والوں کےشر سے ۔ اور جو پھھاس میں ہےاُس کے شرسے تیری بناہ ما نگتے ہیں۔ ۱۲

2 انظر: "مجمع الزوائد"، كتاب الاذكار، الحديث: ١٧١٠٣، ١٧١٠٤ ص١٨٨، ج١٠.

غیب سے مدد ہوگی بیٹ کم حدیث میں ہے۔

(۲۸) جب سواری کا جانور بھاگ جائے اور پکڑنہ سکویہی پڑھونوراً کھڑا ہوجائے گا۔

(۲۹) جب جانور شوخی کرے بید عایر هے:

﴿ اَ فَغَيْرَدِيْنِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ اَسْلَمَ مَنْ فِي السَّلَوْتِ وَالْاَ مُضْ طَوْعًا وَّكُرُهًا وَّ إِلَيْهِ

يُرْجَعُونَ ﴿ ﴿ (1)

- (۷۰) یا صَمَدُ ۱۳۳ بارروزیر هے، بعوک پیاس سے نیج گا۔
- (ا) اگروشمن یار ہزن کا ڈر ہو لاِیلفِ پڑھے، ہر بلاسے امان ہے۔
- (۷۲) جبرات کی تاریکی پریشان کرنے والی آئے، بدعار عے:

(۷۳)جب کہیں دشمنوں سے خوف ہو، یہ پڑھ لے:

اَللَّهُمَّ إِنَّا نَجُعَلُكَ فِي نُحُورِهِمُ وَنَعُودُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمُ . (3)

(٧٤) جبغُم وبريشاني لاحق هو، يه دعا برسط:

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِينَهُ الْحَلِينَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ لَآ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمُوٰتِ

1 ٣٠٠ آل عمران: ٨٣.

ترجمہ: کیااللہ(عزوجل)کے دین کے سوا پچھاور تلاش کرتے ہیں اوراس کے فرماں بردار ہیں،خوثی اور ناخوثی سے وہ جوآ سانوں اور زمین میں ہیں اوراُسی کی طرف تم کولوٹنا ہے۔ ۱۲

2 ترجمہ:اےز مین میرااور تیراپروردگاراللہ(عزدجل) ہے،اللہ(عزدجل) کی پناہ مانگتا ہوں تیرے شرسےاوراُ س کےشرسے جو تجھے میں پیدا کی اور جو تجھ پر چلی اوراللہ (عزدجل) کی پناہ شیراور کالے اور سانپ اور بچھواوراس شہر کے بسنے والے سے اور شیطان اوراس کی اولا د

3 ترجمہ:اےاللہ!(عزوجل) میں تجھ کوان کے سینوں کے مقابل کرتا ہوں اوراُن کی بُرائیوں سے تیری پناہ مانگتا ہوں۔۱۲

1066

مج کابیان

ارشرنيعَتُ رُحْشُهُم (6)

وَالْاَرْضِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ . (1) اوراليے وقت لَا حَوُلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ ط اور حَسُبُنَا اللَّهُ وَ نِعُمَ الْوَكِيْلُ کی کمژنت کرے۔

(24) اگركوئى چيزگم ہوجائے توبيكے:

يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوُمٍ لَا رَيُبَ فِيُهِ طُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخُلِفُ الْمِيُعَادَ ٥ اِجُمَعُ بَيْنِي وَبَيْنَ ضَالَّتِي . (2) انشاءالله تعالى لل حاسے گی۔

(۷۶) ہربلندی پرچڑھتے اللہ اکبر کھے اور ڈھال میں اُٹرتے سجان اللہ۔

(۷۷) سوتے وقت ایک بارآیة الکری ہمیشہ پڑھے کہ چوراور شیطان سے امان ہے۔

(۷۸) نمازیں دونوں سرکاروں میں وقت شروع ہوتے ہی ہوتی ہیں،معاً شروع وقت پرفوراً اذان اورتھوڑی دیر بعد

تکبیر و جماعت ہوجاتی ہے، جو محض کچھ فاصلہ پر گھبرا ہواتنی گنجائش نہیں پاتا کہ اذان سُن کروضوکر ہے پھر حاضر ہوکر جماعت یا پہلی رکعت مل سکے اور وہاں کی بڑی برکت یہی طواف وزیارت اور نماز وں کی تکبیراول ہے۔لہذا اوقات پیچان رکھیں ،اذان سے

پی ربعت سے اور وہاں میرو کر رہت ہی صواف ور پارٹ اور کماروں می بیراوں ہے۔ کہدااو فات پیچان ریس او ان سے پہلے وضوطیار رہے ، اذان سُنتے ہی فوراً چل دیں تو تکبیراول ملے گی اورا گرصف اول چاہیں ، جس کا ثواب بے نہایت ہے جب تو .

اذان سے پہلے حاضر ہوجانالازم ہے۔

(29) والیسی میں بھی وہی طریقے ملحوظار کھے، جو یہاں تک بیان ہوئے۔

(۸۰) مکان پرآنے کی تاریخ ووقت سے پیشتر اطلاع دیدے، بےاطلاع ہرگز نہ جائے خصوصاً رات میں۔

(۸۱) لوگوں کو چاہیے کہ حاجی کا استقبال کریں اوراس کے گھر پہنچنے سے قبل دعا کرائیں کہ حاجی جب تک اپنے گھر

میں قدم نہیں رکھتااس کی دعا قبول ہے۔

(۸۲) سب سے پہلے اپنی مسجد میں آ کردور کعت نقل پڑھے۔

(۸۳) دورکعت گھر میں آ کر ہڑھے پھرسب سے بکشادہ پیشانی ملے۔

🕕 ترجمہ:اللّٰد (عزوجل) کے سواکوئی معبودنہیں جوعظمت والاجلم والا ہے۔اللّٰد (عزوجل) کے سواکوئی معبودنہیں جو بڑے عرش کا ما لک ہے۔اللّٰہ

(عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں جوآ سانوں اور زمین کا مالک ہے اور بزرگ عرش کا مالک ہے۔ ۱۲

🗨ترجمہ:اےلوگوں کو اُس دن جمع کرنے والے جس میں شک نہیں ، بے شک اللہ (عز وجل) وعدہ کا خلاف نہیں کرتا، میرے اور میری گمی

چیز کے درمیان جمع کردے۔۱۲

(۸۴) عزیز وں دوستوں کے لیے بچھ نہ بچھ تخفہ ضرور لائے اور حاجی کا تخفہ تبرکات ِ حرمین شریفین سے زیادہ کیا ہے اور دوسراتخفہ دعا کا کہ مکان میں پہنچنے سے پہلے استقبال کرنے والوں اور سب مسلمانوں کے لیے کرے۔(1)

میقات کا بیان

میقات اُس جگہ کو کہتے ہیں کہ مکہ معظّمہ کے جانے والے کو بغیراحرام وہاں ہے آگے جانا جائز نہیں اگر چہ تجارت وغیرہ کسی اورغرض سے جاتا ہو۔⁽²⁾ (عامہ کتب)

مَسِعَكُمُ اللهِ ميقات يانچ بين:

- 🕥 ڈُواکھلیفہ: یہ مدینہ طیبہ کی میقات ہے۔اس زمانہ میں اس جگہ کا نام ابیارِ علی ہے۔ ہندوستانی یااور ملک والے حج سے پہلے اگر مدینہ طیبہ کو جائیں اور وہاں سے پھر مکی معظمہ کو تو وہ بھی ذُوالحلیفہ سے احرام باندھیں۔
 - 🕥 ذات عرق: بيراق والول كي ميقات ہے۔
- ت جعفه: یشامیوں کی میقات ہے گر جعفه اب بالکل معدوم ساہو گیا ہے وہاں آبادی ندرہی ،صرف بعض فنان پائے جاتے ہیں اس کے جاننے والے اب کم ہوں گے، لہذا اہلِ شام رابغ سے احرام باندھتے ہیں کہ جعف مرابغ کے قریب ہے۔
 - قرن: بینجد (3) والول کی میقات ہے، بیجگه طائف کے قریب ہے۔
 - 💿 ململم: اہل یمن کے لیے۔

سیستان کی سیمقات سے گزرے اُس کے لیے بھی ہیں جن کا ذکر ہوا اور انکے علاوہ جو شخص جس میقات سے گزرے اُس کے لیے وہی میقات ہے اور اگر میقات سے نہ گزرا تو جب میقات کے محاذی آئے اس وقت احرام باندھ لے، مثلاً ہندیوں کی میقات کو ویلگم کی محاذات ہے اور محاذات میں آنا اُسے خود معلوم نہ ہوتو کسی جاننے والے سے بوچھ کر معلوم کرے اور اگر کوئی ایسانہ ملے جس سے دریا فت کرے تو تحری کرے اگر کسی طرح محاذات کاعلم نہ ہوتو مکہ معظمہ جب دومنزل باقی رہے

- 1 انظر: "الفتاوى الرضوية"، ج٩ص٦٧٢١ ٧٣١، وغيره.
- 2 "الهداية"، كتاب الحج، ج١، ص١٣٣ ١ ١٣٤، وغيره.
 - 🐾 🔞يعنى موجوده رياض _

یک احرام بانده لے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

مَسْعَالُهُ اللَّهِ ﴿ وَمُعْلَادُونِ سِي كُرْرا، مثلاً شامى كه مدينه منوره كى راه سے ذُوالحليفه آيا اور وہاں سے جے صف او تو افضل یہ ہے کہ پہلی میقات پراحرام باند سے اور دوسری پر باندھا جب بھی حرج نہیں۔ یو ہیں اگر میقات سے نہ گزرااور محاذات

میں دومیقا تنیں پڑتی ہیں تو جس میقات کی محاذاۃ پہلے ہو، وہاں احرام باندھناافضل ہے۔ ⁽²⁾ (درمختار، عالمگیری) مَسْعَلُ کی کارادہ نہ ہو بلکہ میقات کے اندرکسی اور جگہ مثلاً جدّہ جانا چاہتا ہے تو اُسے احرام کی ضرورت نہیں پھروہاں سے اگر مکی معظّمہ جانا جا ہے تو بغیراحرام جاسکتا ہے،لہذا جو شخص حرم میں بغیراحرام جانا جا ہتا ہے وہ یہ حیلہ

کرسکتا ہے بشرطیکہ واقعی اُس کا ارادہ پہلے مثلاً جدّہ جانے کا ہو۔ نیز مکهُ معظّمہ فج اورغمرہ کے ارادہ سے نہ جاتا ہو، مثلاً تجارت کے لیے جدہ جاتا ہے اور وہاں سے فارغ ہوکر مکن معظمہ جانے کا ارادہ ہے اور اگریہلے ہی سے مکن معظمہ کا ارادہ ہے تو اب بغیر احرام

نہیں جاسکتا۔ جو مخض دوسر ہے کی طرف سے جج بدل کوجاتا ہواُسے بید حیلہ جائز نہیں۔⁽³⁾ (درمختار ،ردالحتار) سَسَالُهُ ٥ ﴾ ميقات سے پيشتر احرام باندھنے ميں حرج نہيں بلكہ بہتر ہے بشرطيكہ فج كے مہينوں ميں ہواور شوال سے

سلے ہوتو منع ہے۔ (⁴⁾ (درمختار،ردالحتار)

مسكان كا حرام كى جگات كاندرك رہے والے ہيں مگر حرم سے باہر ہيں اُن كے احرام كى جگه حل يعني بيرون حرم ہے، حرم سے باہر جہاں چاہیں احرام با ندھیں اور بہتر رہے کہ گھرسے احرام با ندھیں اور بیلوگ اگر حج یاعمرہ کاارادہ نہ رکھتے ہوں تو بغيراحرام مكة معظمه جاسكتے ہیں۔ ⁽⁵⁾ (عامه كتب)

سَسَالُهُ ﴾ حرم کے رہنے والے حج کا احرام حرم ہے باندھیں اور بہتریپہ کہ معجد الحرام شریف میں احرام باندھیں اور عمره کابیرون حرم ہے اور بہتریہ کتعقیم ہے ہو۔ (6) (درمختار وغیرہ)

مَسِعًا الله الله الله الله المركسي كام سے بيرون حرم جائيں تواضيں واپسي كے ليے احرام كى حاجت نہيں اور ميقات سے

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني في المواقيت، ج١، ص ٢٢١. و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٤٨٥ ـ ٥٥.
- 2 "الفتاوي الهندية" المرجع السابق. و"الدرالمختار كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٠٥٥.
 - € "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٥٥٠.
 - 4 المرجع السابق.
 - 5"الهداية"، كتاب الحج، ج١، ص١٣٤، وغيره.
 - 🦪 "الدرالمختار كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٤٥٥، وغيره.

جهركارشرئيعَتْ خِصْمُمُمُ (6)

با برجائیں تواب بغیراحرام واپس آناخیں جائز نہیں۔⁽¹⁾ (عالمگیری،ردالحتار)

احرام کابیان

﴿ اَلْحَجُّ اَشُهُرُّمَعْ لُوْمُتُ ۚ فَمَنُ فَرَضَ فِيهِ قَالْحَجَّ فَلَا مَفَ وَلا فِسُوْقَ ۗ وَلا جِدَالَ فِالْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرِ يَعْلَمُهُ اللهُ ۗ وَتَرَوَّ دُوْا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقُوٰى ۚ وَاتَّقُوٰنِ يَا وَلِالْالْبَابِ ۞ ﴾ (2)

ی جے کے چند مہینے معلوم ہیں، جس نے اُن میں جج (اپنے او پر)لازم کیا (اَحرام باندھا) تو نیخش ہے، نیفس ، نہ جھگڑنا جج میں اور جو کچھ بھلائی کرواللہ (عزوجل) اسے جانتا ہے اور توشہ لو، بے شک سب سے اچھا توشہ تقویٰ ہے اور مجھی سے ڈرو، اے عقل والو!۔

اورفرما تاہے:

اے ایمان والواعقو د پورے کرو، تمھارے لیے چوپائے جانور حلال کیے گئے ، سوا اُن کے جن کاتم پر بیان ہوگا مگر حالت ِ احرام میں شکار کا قصد نہ کرو، بیشک اللہ (عزوجل) جو چا ہتا ہے تھم فرما تا ہے۔اے ایمان والو! اللہ (عزوجل) کے شعائر اور ماو حرام اور حرم کی قربانی اور جن جانوروں کے گلوں میں ہارڈ الے گئے (قربانی کی علامت کے لیے) اُن کی بے مُرمتی نہ کرواور نہ اُن لوگوں کی جو خانہ کعبہ کا قصد اپنے رب کے فضل اور رضا طلب کرنے کے لیے کرتے ہیں اور جب احرام کھولو، اُس وقت شکار کرسکتے ہو۔

خلیک الله صحیحین میں ام المومنین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے مروی ، میں رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم کواحرام کے لیے

1 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني في المواقيت، ج١، ص٢٢. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٤٥٥.

2 ٢٠ البقرة: ١٩٧.

🕱 😘 😘 سسپ٦، المآئدة: ١-٢.

🮉 احرام سے پہلے اور احرام کھولنے کے لیے طواف سے پہلے خوشبولگاتی جس میں مُشک تھی ،اُس کی چیک حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم)

کی ما نگ میں إحرام کی حالت میں گویا میں اب د مکھر ہی ہوں۔(1)

خلایت 🕇 🧨 ابوداو دزید بن ثابت رض الله تعالی عنه سے راوی ، که نبی صلی الله تعالی علیه وسلم نے احرام با ندھنے کے لیے عسل

🕹 پئٹ 👕 💝 😅 مسلم شریف میں ابوسعیدرضی الد تعالی عنہ سے مروی ، کہتے ہیں ہم حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کے ساتھ دیجے

کو نکلے، انی آواز حج کے ساتھ خوب بلند کرتے۔ (3)

خلینے 🥎 🚽 تر مذی وابن ماجہ وبیبھی سہل بن سعدرضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ،رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا:''جو

مسلمان لبیک کہتا ہے تو دہنے باکیں جو پھر یا درخت یا ڈھیا اُٹھ زمین تک ہے لبیک کہتا ہے۔ ' (4)

خلیئٹ ۵ و ۷ ﷺ ابن ماجہ وابن خزیمہ وابن حبان وحاکم زید بن خالد جہنی سے راوی ، کہرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: که' جبریل نے آگر مجھ سے بیکہا کہ اپنے اصحاب کو حکم فرماد یجیے کہ لبیک میں اپنی آوازیں بلند کریں کہ بیر حج کا شعار ہے۔'' (5) اسی کے مثل سائب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی۔

خلینٹ ک 🦫 مطبرانی اوسط میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ لبیک کہنے والا جب لبیک کہتا ہے تو اُسے بشارت دی جاتی ہے، عرض کی گئی جنت کی بشارت دی جاتی ہے؟ فرمایا: ہاں۔(6)

خلیئٹ 🔨 🥕 🔻 امام احمد وابن ماجہ جاہر بن عبداللّٰداور طبرانی ویبہق عامر بن رہیعہ رضی اللہ تعالیٰء نبم سے راوی ، کہ رسول اللّٰہ

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:''محرم جب آفتاب ڈو بنے تک لبیک کہتا ہے تو آفتاب ڈو بنے کے ساتھواُس کے گناہ غائب ہو

● "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب استحاب الطيب،قبيل الاحرام في البدن...إلخ، الحديث: ٣٣ _ (١١٨٩) ، ٤٥ _

(۱۱۹۰)، (۱۱۹۱)، ص ۲۰۹،۲۰۷.

2 "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في الإغتسال عند الاحرام، الحديث: ١٣٨، ج٢، ص٢٢٨.

3 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب جوازالتمتع في الحج والقران، الحديث: ١٢٤٧، ص ٢٥٥.

4 "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في فضل التلبية و النحر، الحديث: ٨٢٩، ج٢، ص٢٢٦.

سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب رفع الصوت بالتلبية، الحديث: ٢٩٢٣، ج٣، ص٢٢٣.

المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٧٧٧٩، ج٥، ص ٤١٠.

🥨 جاتے ہیں اور ایبا ہوجا تاہے جیسا اُس دن کہ پیدا ہوا۔'' (1)

خلیئٹ 👂 🎺 🔻 تر مذی وابن ماجہ وابن خزیمہ امیر المونین صدیقِ اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ کسی نے رسول اللہ

صلى الله تعالى عليه وسلم سے سوال كيا، كه حج كے افضل اعمال كيا ہيں؟ فرمايا: 'لبندآ واز سے لبيك كہنا اور قرباني كرنا۔''

خلینٹ اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسی اللہ تعالیٰ عند سے راوی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم جب لبیک سے

فارغ ہوتے تواللہ (عزوجل) ہے اُس کی رضااور جنت کاسوال کرتے اور دوزخ ہے پناہ ما نگتے۔(3)

خلینٹ 🕕 🥕 ابوداود وابن ماجهاً م المونین اُ مسلمہ رضی اللہ تعالی عنہا سے راوی ،کہتی ہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کو فرماتے سُنا کہ:'' جومسجدِ اقضیٰ ہے مسجد الحرام تک حج یاعمرہ کا احرام باندھ کرآیا اُس کے اگلے اور پچھلے گناہ بخشد بے جائیں گے یا اس کے لیے جنت واجب ہوگئی۔'' (4)

احرام کے احکام

🕥 يوتو يہلے معلوم ہو چاہے كه ہنديوں كے ليے ميقات (جہال سے احرام باندھنے كاتھم ہے) كو يكمكم كى محاذات ہے۔ پیجگہ کا مران سے نکل کر سمندر میں آتی ہے، جب جدّہ دونین منزل رہ جاتا ہے جہاز والے اطلاع دیدیتے ہیں، پہلے سے احرام کاسامان طیار دھیں۔

🕈 جب وہ جگہ قریب آئے،مسواک کریں اور وضو کریں اور خوب مکل کرنہا ئیں، نہ نہاسکیں تو صرف وضو کریں یباں تک کہ چیض ونفاس والی اور بچے بھی نہائیں اور باطہارت احرام با ندھیں یہاں تک کہا گرغسل کیا پھر بے وضو ہو گیا اور احرام باندھ کروضوکیا تو فضیلت کا ثواب نہیں اور پانی ضرر کر ہے تو اُس کی جگہ تیم نہیں، ہاں اگر نماز احرام کے لیے تیم کرے تو ہوسکتا ہے۔

🕏 مردحیا ہیں توسرمونڈالیں کہاحرام میں بالوں کی حفاظت سے نجات ملے گی ورنہ کٹکھا کر کے خوشبودارتیل ڈالیں۔ ③ عنسل سے پہلے ناخن کتریں،خط ہنوائیں،مُو ئے بغل وزیر ناف دُور کریں بلکہ پیچھے کے بھی کہ ڈھیلا لیتے وقت

بالول كے ٹوٹنے أُ كھڑنے كا قصہ ندرہ۔

- ❶ "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الظلال للمحرم، الحديث: ٢٩٢٥، ج٣، ص٤٢٤.
- 2 "جامع الترمذي"، ابواب الحج، باب ماجاء في فضل التلبية و النحر، الحديث: ٨٦٨، ج٢، ص٢٢٦.
 - 3 "المسند" للإمام الشافعي، كتاب المناسك، ص١٢٣.
 - 🧣 🐠 "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب في المواقيت، الحديث: ١٧٤١، ج٢، ص٢٠١.

مِهَادِشْرِيْعَتْ خِصْمُهُم (6)

بدن اور کیڑوں پرخوشبولگائیں کہ سنت ہے، اگرخوشبوالی ہے کہ اُس کا چرم (1) باقی رہے گا جیسے مشک وغیرہ تو میں دیا گائیں

كپڙوں ميں ندلگا ئيں۔

ک مرد سلے کیڑے اور موزے اُتاردیں ایک چا درئی یا دُھلی اور اسیاہی ایک تہبند باندھیں یہ کیڑے سفیداور نئے بہتر ہیں اور الیاہی ایک تہبند باندھیں یہ کیڑے سفیداور نئے بہتر ہیں اور اگرایک ہی کیڑ ابہبنا جس سے ساراستر چھپ گیا جب بھی جائز ہے۔ بعض عوام یہ کرتے ہیں کہ اس وقت سے چا در وا ہنی بغل کے نیچ کرکے دونوں پلو بائیں مونڈ ھے پر ڈال دیتے ہیں یہ خلاف سنت ہے، بلکہ سنت یہ ہے کہ اس طرح چا در اور ھنا طواف کے دونوں مونڈ ھے اور بیٹے اور طواف کے علاوہ باقی وقتوں میں عادت کے موافق چا دراوڑھی جائے یعنی دونوں مونڈ ھے اور بیٹے اور سین سب جھیار ہے۔

﴿ جبِوه جَلَدآ ئَا وروقت مَروه نه بوتو دور كعت به نيت احرام برُّ هيس، يبلى ميں فاتحه كے بعد قُلُ يَا يُنَهَا الْكُفِرُونَ دوسرى ميں قُلُ هُوَ اللَّهُ بِرُّ هِـ ۔

﴿ حَجْ تَيْن طُرِحَ كَا مُوتَا ہِ اِيك يدكم زَاحِ كَرے، أَسِ افراد كَهِ تِين اور حاجى كُومُوْ و ـ اس مِين بعد سلام يوں كے:

اَللّٰهُمَّ إِنِّى اُرِيُدُ الْحَجَّ فَيَسِّرُهُ لِى وَتَقَبَّلُهُ مِنِّى نَوَيْتُ الْحَجَّ وَاَحُومُتُ بِهِ مُخْلِطًا لِلَّهِ تَعَالَى . (2)

دوسرايد كه يهال سے زعمرے كى نيت كرے، مكم عظم ميں حج كا حرام باند ھے اسے ترتع كہتے ہيں اور حاجى كو تمتع ـ اس ميں يہاں بعد سلام لوں كے:

اَللَّهُمَّ إِنِّى أُرِيْدُ الْعُمُرَةَ فَيَسِّرُهَا لِى وَتَقَبَّلُهَا مِنِّى نَوَيْتُ الْعُمُرَةَ وَاَحُرَمُتُ بِهَا مُخُلِصًا لِلَّهِ تَعَالَى . تيسراييكه هج وعمره دونول كى يہيں سے نيت كرے اور يوسب سے افضل ہے اسے قران كہتے ہيں اور حاجى كوقارِن ـ اس ميں بعد سلام يول كے:

اَللَّهُمَّ اِنِّيُ اُرِيُدُ الْعُمُرَةَ وَالْحَجَّ فَيَسِّرُهُمَا لِيُ وَتَقَبَّلُ هُمَا مِنِّيُ نَوَيْتُ الْعُمُرَةَ وَالْحَجَّ وَاَحُرَمُتُ بِهِمَا مُخُلِصًا لِّلَّهِ تَعَالَى .

اورتنول صورتول میں اس نیت کے بعد لبیک باواز کے لبیک بہے:

• السجرم: ليعني تد-

الله (عزوجل)! میں جج کااردہ کرتا ہوں اُسے تو میرے لیے میسر کراوراً سے مجھ سے قبول کر، میں نے جج کی نیت کی اور خاص الله (عزوجل) کے لیے میں نے احرام ہاندھا (بعدوالی ووٹوں نیتوں کا بھی ترجمہ یہی ہے۔ اتنافرق ہے کہ جج کی جگہدوسری میں عمرہ ہے اور تیسری میں جج وعمرہ دوٹوں) ۱۲۔

لَبَّيْكَ طَالِلْهُمَّ لَبَّيْكَ طَلَبَّيْكَ لَا شَرِيُكَ لَكَ لَبَّيْكَ طَاِنَّ الْحَمُدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلُكَ طَ لَا شَرِيْكَ لَكَ طَا(1)

جہاں جہاں وقف کی علامتیں بنی ہیں وہاں وقف کرے۔لبیک تین بار کہے اور درو دشریف پڑھے پھر دعاما تگے۔ ایک دعایہاں پر بیمنقول ہے:

اَللَّهُمَّ إِنِيُ اَسُأَلُکَ رِضَاکَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُونُهُ بِکَ مِنْ غَضَبِکَ وَالنَّارِ. (2) اور بدعا بھی بزرگوں منقول ہے:

اَللّٰهُ مَّ اَحْرَمَ لَکَ شَعُرِیُ وَبَشَرِیُ وَعَظُمِیُ وَدَمِیُ مِنَ النِّسَآءِ وَالطِّیْبِ وکُلِّ شَیْءٍ حَرَّمُتَهُ عَلَی الْمُحُرِمِ اَبْتَغِی بِذَالِکَ وَجُهَکَ الْکَوِیْمَ لَبَیْکَ وَسَعُدَیْکَ وَالْخَیرُ کُلُّهُ بِیَدَیْکَ وَالرَّغَبَاءُ اِلَیْکَ وَالْعَمَلُ الْمُحُرِمِ اَبْتَغِی بِذَالِکَ وَجُهَکَ الْکَوِیْمَ لَبَیْکَ وَسَعُدَیْکَ وَالْخَیرُ کُلُّهُ بِیَدَیْکَ وَالرَّغَبَاءُ اِلَیْکَ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ لَبَیْکَ ذَاالنَّعُ مَآءِ وَالْفَضُلِ الْحَسَنِ لَبَیْکَ مَرْغُوبًا وَمُرهُوبًا اِلَیْکَ لَبَیْکَ اِللهَ الْحَلُقِ لَبَیْکَ اللّٰهُ اللّٰ اللّٰهُ عَلَّا وَرِقًا لَبَیْکَ عَدَدَ التُرَابِ وَالْحَصٰی لَبَیْکَ لَبَیْکَ ذَاالْمَعَارِجِ لَبَیْکَ لَبَیْکَ مِنْ عَبْدِ لَبَیْکَ مَقَادِ اللّٰهُ مَا اللّٰهُمُ اللّٰهُ مَا وَالْمَنُوا بِوعُدِکَ وَاتّبَعُوا اللّٰهُمُ وَاجْعَلْنِی مِنُ وَفَدِکَ الّٰذِیْنَ رَضِیتَ عَنْهُمُ وَارُضَیْتَهُمُ وَقَبِلْتَهُمُ . (3)

اللہ (عربہ) میں تیرے پاس حاضر ہوا، اے اللہ (عزوجل)! میں تیرے حضور حاضر ہوا، تیرے حضور حاضر ہوا، تیرا کوئی شریک نہیں میں تیرے حضور حاضر ہوا بیٹک تعریف اور نعت اور ملک تیرے ہی لیے ہے تیرا کوئی شریک نہیں ہے۔ ۱۱

^{2}ترجمہ:اے الله (عزوجل)! میں تیری رضا اور جنت کا سائل ہوں اور تیرے فضب اور جہنم سے تیری ہی بناہ مانگتا ہوں۔١٢

^{3} ترجمہ: اے اللہ (عزبط)! تیرے لیے احرام باندھا، میرے بال اور بُشرہ نے اور میری بٹری اور میرے خون نے عورتوں اور خوشہو سے اور ہراس چیز ہے۔ جس کوتو نے محرم پرحرام کیا اس سے میں تیرے وجہ کریم کا طالب ہوں، میں تیرے حضور حاضر ہوا اور گل خیر تیرے ہاتھ میں ہے اور رغبت وعمل مسالح تیری طرف رغبت کرتا ہوا اور خیرتیں طرف رغبت کرتا ہوا اور خیرتیں میں تیرے حضور حاضر ہوا ہے تلا کی سے معبود! بار بار حاضر ہوا ہوتے تھا می تیرے حضور اے رکنگر یوں کی گئتی کے موافق ، لبیک بار بار حاضر ہوں اے باز بار حاضر ہوں اے باز بار حاضری ہے بھا گے ہوئے غلام کی تیرے حضور، لبیک لبیک اے ختیوں کے وور کرنے والے! لبیک بار بار حاضری ہے کہا ہوں کے بختے والے! لبیک اے اللہ (عزوجل)! حج فرض کے اوا کرنے پر میری مدوکر اور اس کومیری طرف سے قبول کراور مجھوں نے تیری بات قبول کی اور تیرے وعدہ پر ایمان لائے اور تیرے امر کا اتباع کیا اور مجھوا ہے اس فرف سے قبول کرا ور تیرے امر کا اتباع کیا اور مجھوں بنایا۔ ۱۱ وفد میں کر دے جن سے تو راضی ہے اور جن کوتو نے راضی کیا اور جن کوتو نے مقبول بنایا۔ ۱۱

اورلبیک کی کثرت کریں،جب شروع کریں تین بارکہیں۔

<u>مسئان کی جہتر ہے مگرزیادتی</u> آخر میں میں نہ کی جائے ، زیادہ کر سکتے ہیں بلکہ بہتر ہے مگرزیادتی آخر میں ہو

درمیان میں نہ ہو۔ (1) (جو ہرہ) مسکانی کے جوشخص بلند آواز سے لبیک کہدر ہاہے تو اُس کو اِس حالت میں سلام نہ کیا جائے کہ مکر وہ ہے اور اگر کرلیا

توختم کرکے جواب دے، ہاں اگر جانتا ہو کہ ختم کرنے کے بعد جواب کا موقع نہ ملے گا تواس وقت جواب دے سکتا ہے۔ (2) (مذکب)

سَسَعَانُ سَكَ احرام کے لیے ایک مرتبہ زبان سے لبیک کہنا ضروری ہے اور اگراس کی جگہ سُبُحنَ اللّهِ، یا اُلْحَمُدُ لِلّهِ، لَا اِللّهُ اللّهُ یا کوئی اور ذکرِ الٰہی کیا اور احرام کی نیت کی تو احرام ہوگیا مگرسنت لبیک کہنا ہے۔(3) (عالمگیری وغیرہ) گونگا ہو تو اُسے جیا ہے کہ ہونٹ کو جنش دے۔

مسئان کی احرام کے لیے نیت شرط ہے اگر بغیر نیت لبیک کہا احرام نہ ہوا۔ یو ہیں تنہا نیت بھی کافی نہیں جب تک لبیک یااس کے قائم مقام کوئی اور چیز نہ ہو۔ (4) (عالمگیری)

سَسَانُ هُ الرَّام كوفت لبيك كه تواس كے ساتھ ہى نيت بھى ہويہ بار ہامعلوم ہو چكا ہے كہ نيت دل كاراده كو كست بيں دل ميں البيك كه تواس كے ساتھ ہى نيت بھى ہم يہ بار ہامعلوم ہو چكا ہے كہ نيت دل كاراده كو كہتے ہيں دل ميں البينك بِالْعُمُرَةِ وَالْحَبِّ اور تَتعَ مِيں لَبَيْكَ بِالْعُمُرةِ وَاور إفراد ميں لَبَيْكَ بِالْحَبِّ كَمِ وَ (ور مختار، روالحتار)

مسئلی کی نیت کرے اور بہتریہ کہ لبیک میں یوں کے اُسٹی کی طرف سے فج کرنے کی نیت کرے اور بہتریہ کہ لبیک میں یوں کے اَبَیْکُ کَ عَنْ فُلان یعنی فلال کی جگہ اُس کا نام لے اور اگرنام نہ لیا مگر دل میں ارادہ ہے جب بھی حرج نہیں۔(6) (منسک) مسئلی کے بھی سونے والے یام یض یا بیہوش کی طرف سے کسی اور نے احرام باندھا تو وہ مُحرم ہوگیا جس کی طرف سے مسئلی کے بھی سونے والے یام یض یا بیہوش کی طرف سے کسی اور نے احرام باندھا تو وہ مُحرم ہوگیا جس کی طرف سے کسی اور نے احرام باندھا تو وہ مُحرم ہوگیا جس کی طرف سے

- 1 "الحوهرة النيرة"، ، كتاب الحج، ص ١٩٥.
- 2 "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط في المنسك المتوسط" ، (باب الاحرام)، ص١٠٢.
 - ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ج١، ص٢٢٢، وغيره.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ج١، ص٢٢٢.
 - 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، فصل في الاحرام، ج٣، ص ٦٠.
 - 6 "المسلك المتقسط"، (باب الاحرام)، ص١٠١.

يَثِي شُ: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلام)) €

🦥 احرام باندھا گیامُحِرم کےاحکام اس پر جاری ہوں گے ،کسی ممنوع کاار تکاب کیا تو کفارہ وغیرہ اس پرلازم آئے گا ،اس پزہیں جس نے اس کی طرف سے احرام باندھ دیا اور احرام باندھنے والاخود بھی تُحرِم ہے اور جرم کیا توایک ہی جزاواجب ہوگی دونہیں کہاس کا

ایک ہی احرام ہے۔مریض اورسونے والے کی طرف ہے احرام باندھنے میں بیضرور ہے کہ احرام باندھنے کا انھوں نے تھم دیا ہو اوربیهوش میںاس کی ضرورت نہیں ۔⁽¹⁾ (ردالحتار)

سَسَعَالُهُ ٨ ﴾ تمام افعال في اداكرنے تك بے ہوش رہااوراحرام كے وقت ہوش ميں تھااورا ينے آپ احرام باندھا تھا تو اُس كے ساتھ والے تمام مقامات ميں لے جائيں اوراگراحرام كے وقت بھى بے ہوش تھا اُنھيں لوگوں نے احرام باندھ دياتھا تو لے جانا بہتر ہے ضرور نہیں۔⁽²⁾ (درمختار،ردالمختار)

سَسَعَانُهُ ٩ ﴾ احرام كے بعد مجنون ہوا تو ج صحیح ہے اور جرم كرے گا تو جزالازم۔⁽³⁾ (ردا كتار)

سَسَعَانُ 🕩 🥕 ناسجھ بچیہ نے خود احرام باندھایا افعال کج ادا کیے تو کج نہ ہوا بلکہ اس کا ولی اُس کی طرف سے بجا لائے مگر طواف کے بعد کی دور کعتیں کہ بچہ کی طرف سے ولی نہ پڑھے گا،اس کے ساتھ باپ اور بھائی دونوں ہوں تو باپ ار کان ادا کریے تمجھ وال بچہ خودا فعال حج ادا کرے، رمی وغیر ہ بعض باتیں چھوڑ دیں توان پر کفارہ وغیرہ لازمنہیں ۔ یو ہیں ناسمجھ بچیہ کی طرف سے اس کے ولی نے احرام با ندھااور بچہ نے کوئی ممنوع کام کیا توباپ پر بھی کچھلا زمنہیں۔ (4) (عالمگیری،ردالحتار،منسک)

مستان السبی بچدی طرف سے احرام باندھا تو اُس کے سلے ہوئے کیڑے اُتار لینے چاہیے، چا دراور تہبندیہنا کیں اور اُن تمام باتوں سے بچائیں جو مُحرِم کے لیے ناجائز ہیں اور مج کو فاسد کردیا تو قضا واجب نہیں اگر چہ وہ بچے بمجھ وال ہو۔ (5) (عالمگیری)

مسک اسکا ایک کہتے وقت نیت قران کی ہے توقران ہے اور إفراد کی ہے تو إفراد، اگر چیزبان سے نہ کہا ہو۔ فج کے

- 1 "ردالمحتار"، ، كتاب الحج، مطلب في مضاعفة الصلاة بمكة ج٣، ص٦٢٦.
- 2 "الدرالمختار"، و "ردالمحتار"، كتاب الحج،مطلب في مضاعفة الصلاة بمكة ج٣، ص٦٢٦.
 - "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في مضاعفة الصلاة بمكة ج٣، ص٦٢٨.
 - 4 المرجع السابق. و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، فصل في المتفرقات، ج١، ص٢٣٦.
 - و"المسلك المتقسط"، (باب الاحرام ،فصل في احرام الصبي)، ص١١٢.
 - 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، فصل في المتفرقات، ج١، ص٢٣٦.

🦥 ارادہ سے گیااوراحرام کےوفت نیت حاضر نہ رہی تو جج ہےاورا گرنیت کچھ نتھی تو جب تک طواف نہ کیا ہواُ سے اختیار ہے جج کا احرام قرار دے یا عمرے کا اور طواف کا ایک پھیرا بھی کر چکا توبیا حرام عمرہ کا ہوگیا۔ یو ہیں طواف سے پہلے جماع کیایاروک دیا

گیا (جس کوا حصار کہتے ہیں) تو عمرہ قرار دیا جائے بعنی قضامیں عمرہ کرنا کافی ہے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

مسئانی سی نیست نه کیا ہواور فج کا احرام باندھا،فرض وففل کی نیت نہ کی تو جمۃ الاسلام ادا ہو گیا۔ (2)

(عالمگیری)

مَسِيَّاكُ اللَّهِ اللَّهِ وَحَجْ كَا احرام باندها تو دوحج واجب ہوگئے اور دوعمرے کا تو دوعمرے۔احرام باندهااور حج یاعمرہ کسی خاص کومعین نہ کیا پھر حج کا احرام باندھا تو پہلا عمرہ ہے اور دوسراعمرہ کا باندھا تو پہلا حج ہے اورا گردوسرے احرام میں بھی کچھنیت نہ کی توقران ہے۔(3)(عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ کہا اورنیت عمرہ کی ہے یا عمرہ کہا اورنیت کچ کی ہے، تو جونیت ہےوہ ہے لفظ کا اعتبار نہیں اور لبیک میں حج کہااور نیت دونوں کی ہے توقران ہے۔ (⁴⁾ (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ احرام باندھااور یادنہیں کہ کس کا باندھاتھا تو دونوں واجب ہیں یعنی قران کے افعال بجالائے کہ پہلے عمرہ کرے پھر حج مگر قران کی قربانی اس کے ذمّہ نہیں ۔اگر دو چیز وں کااحرام باندھااوریادنہیں کہ دونوں حج میں یاعمرے یا حج وعمرہ تو

قِران ہے اور قربانی واجب۔ حج کا احرام باندھا اور پیزنیت نہیں کہ کس سال کرے گا تو اس سال کا مراد لیا جائے گا۔ (5) (عالمگیری)

منت فقل یافرض فقل کا احرام با ندها تونفل ہے۔ (6) (عالمگیری)

مَسِعًا الله الله الربینیت کی کوفلال نے جس کااحرام باندھا اُسی چیز کامیرااحرام ہےاور بعد میں معلوم ہو گیا کہ اُس نے کس چیز کا احرام با ندھاہے تو اُس کا بھی وہی ہے اور معلوم نہ ہوا تو طواف کے پہلے پھیرے سے پیشتر جو جا ہے معین کر لے اور

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ومما يتصل بذالك مسائل، ج١، ص٢٢٣.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3المرجع السابق.
 - 4المرجع السابق.
 - 5المرجع السابق.
 - 6المرجع السابق.

يثي كش: مجلس المدينة العلمية (دعوت اسلام)) €®

بهرارش نيعَتْ خِصْهُم (6)

میں ہے۔ طواف کا ایک پھیرا کرلیا تو عمرہ کا ہوگیا۔ یو ہیں طواف سے پہلے جماع کیا یا روک دیا گیا یا وقوفِع فیہ کا وقت نہ ملا تو عمرہ کا 🕝

ہے۔⁽¹⁾(منسک)

شروع کی تھی بعد کو معلوم ہوا کہ فرض پڑھ چکا ہے تو پوری کرنا ضرور نہیں فاسد کرے گا تو قضانہیں۔ (2) (منیک)

مستان کو بیک نہ کہنا گراہے کہ ترک سنت ہے وہ یہ کہنا گراہے کہ ترک سنت ہے وہ یہ کہنا ہوا کہ بیک نہ کہنا گراہے کہ ترک سنت ہے وہ یہ کہ بیک اُونٹ یا گائے کے گلے میں ہار ڈال کر جج یا عمرہ یا دونوں میں ایک غیر معین کے اراد سے ہا تکتا ہوا کے بیک تو محرم ہو گیا اگر چہ لبیک نہ ہے ہو وہ بدکہ نہ نفل کا ہو یا نذر کا یا شکار کا بدلہ یا کچھا اور۔ اگر دوسرے کے ہاتھ بدکہ بھیجا پھر خودگیا تو جب تک راست میں اُسے پانہ لے مُحرم نہ ہوگا ، لہذا اگر میقات تک نہ پایا تو لبیک کے ساتھ احرام باندھنا ضرور ہے۔ ہاں اگر متنع یا قران کا بدئہ جھیجا ہوا ور انھیں مہینوں میں تنتع یا قران کا بدئہ جھیجا ہوا ور انھیں مہینوں

ا کر کی پارلان 6 جا تورہے تو پالیکا شرط ہیں شرا ک یک سیسرورہے کہ ن کے نہیوں یک کی پارلان 6 بارخہ بیجا ہواورا یک نہیوں میں خود بھی چلا ہو بیشتر سے بھیجنا کام نہ دے گا اورا گر بکری کو ہار بیہنا کر بھیجایا لیے چلا یا اونٹ گائے کو ہار نہ بیہنا یا بلکہ نشانی کے لیے کو ہان چیر دیایا جھول اڑھا دیا تو تُحرِم نہ ہوا۔⁽³⁾ (عالمگیری، درمختار)

مسئالہ (۱) چند خص بَدَئه میں شریک ہیں، اُسے لیے جاتے ہیں سب کے تکم سے ایک نے اُسے ہار پہنایا، سب مُحرِم ہوگئے اور بغیراُن کے تکم کے اُس نے پہنایا تو یرمُحرم ہواوہ نہ ہوئے۔ (۱) (عالمگیری)

سَنَالُهُ ٢٢﴾ بار بہنانے کے معنی یہ ہیں کہ اُون یا بال کی رسی میں کوئی چیز باندھ کراُس کے گلے میں لٹکا دیں کہ لوگوں کو معلوم ہو جائے کہ حرم شریف میں قربانی کے لیے ہے تا کہ اُس سے کوئی تعرض نہ کرے اور راستے میں تھک گیا اور ذیج کر دیا تو اُسے مالدار شخص نہ کھائے۔ (کر دالمختار)

- 1 "المسلك المتقسط" ، (باب الاحرام)، ص١٠٧. و المرجع السابق.
- ١٥ الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ومما يتصل بذالك مسائل، ج١، ص٢٢٢.
 و"الدرالمختار"، كتاب الحج، فصل في الاحرام، ج٣، ص٤٦٥-٥٦١.
- 4..... "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ومما يتصل بذالك مسائل، ج ١، ص ٢٢٢.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيما يصير به محرما، ج٣، ص٦٤.

مَسِيَّالُهُ ٢٣٧﴾ اس صورت ميں بھی سنت يہي ہے كه بدنه كو ہار پہنا نے سے پيشتر لبيك كے۔ (١) (منسك)

وه باتیںجو احرام میں حرام هیں

- یاحرام تھااس کے ہوتے ہی بیکام حرام ہوگئے:
 - (۱)عورت سے صحبت۔
- (٢) بوسه (٣) مساس (٣) گلے لگانا (۵) أس كى اندام نهانى پرنگاه جب كه بيچاروں باتيں بشهوت موں ـ
 - (۲) عورتوں کے سامنے اس کام کانام لینا۔
 - (۷) فخش ـ (۸) گناه بمیشه ترام تصاب اور بخت ترام ہو گئے ۔
 - (۹) کسی سے دنیوی لڑائی جھکڑا۔
- (۱۰) جنگل کا شکار_(۱۱) اُس کی طرف شکار کرنے کواشارہ کرنا_(۱۲) پاکسی طرح بتانا_(۱۳) بندوق یا بارودیا اُس
- کے ذبح کرنے کو پھری دینا۔ (۱۴) اس کے انڈے توڑنا۔ (۱۵) پُر اُ کھیڑنا۔ (۱۲) پاؤں پابازو توڑنا۔ (۱۷) اُس کا دودھ
 - دو بنا۔ (۱۸) اُس کا گوشت _ یا (۱۹) انڈ _ یکانا، بھوننا۔ (۲۰) بیچنا۔ (۲۱) خریدنا۔ (۲۲) کھانا۔
 - (۲۳) اپنایادوسرے کا ناخن کتر نایادوسرے سے اپنا کتر وانا۔
 - (۲۴) سرسے یاؤں تک کہیں ہے کوئی بال کسی طرح جدا کرنا۔
 - (۲۵)مونھ، یا (۲۲) سرکسی کپڑے وغیرہ سے چھیانا۔
 - (۲۷)بسۃ یا کبڑے کی بھی یا کھری سر پررکھنا۔
 - (۲۸)عمامه باندهنا۔
 - (۲۹) بُر قع (۳۰) دستانے بہننا۔
- (٣١) موزے ياجُرابيں وغيره جووسطِ قدم كوچھيائے (جہال عربی جوتے كاتسمہ ہوتاہے) پہناا گرجوتياں نہ ہوں تو
 - موزے کاٹ کر پہنیں کہ وہ تسمہ کی جگہ نہ چھے۔
 - (۳۲)سِلا كِيْرا بِهِننا۔
 - (۳۳)خوشبو بالوں ، با(۳۴) بدن ، با(۳۵) كيڑوں ميں لگانا۔
 - 1 "المسلك المتقسط" للقارى، (باب الاحرام)، ص١٠٥.

(٣٦) ملا گیری یا کسم، کیسرغرض کسی خوشبو کے ریکے کیڑے بہنناجب کمابھی خوشبود سے ہول۔

(٣٧) خالص خوشبومشك ،عنبر، زعفران ، جاوترى ،لونگ ،الايچَى ، دارچيني ، رُحبيل وغيره كها نا ـ

(٣٨) اليي خوشبو كا آنچل ميں با ندھنا جس ميں في الحال مهك ہو جيسے مُشك ،عنبر ، زعفران _

(٣٩) سرياداڑھي کونظمي ياکسي خوشبودارياايي چيز ہے دھونا جس ہے جو کيس مرجا کيں۔

(۴۰) وسمه بامهندی کا خضاب لگانابه

(۴۱) گوندوغیرہ سے مال جمانا۔

(۶۲) زیون، یا (۴۳) تِل کا تیل اگر چه بےخوشبوہو بالوں یابدن میں لگانا۔

(۴۴) کسی کا سرمونڈ نااگر چهاُس کااحرام نه ہو۔

(۵۸) بُوں مارنا۔ (۴۷) کھینکنا۔ (۴۷) کسی کواس کے مارنے کا اشارہ کرنا۔ (۴۸) کپڑا اس کے مارنے کو

دھونا۔یا (۲۹) دھوپ میں ڈالنا۔ (۵۰) بالوں میں یارہ وغیرہ اس کے مارنے کولگانا غرض بُوں کے ہلاک برکسی طرح باعث

بونا_⁽¹⁾

احرام کے مکروہات

- 🛈 احرام میں یہ باتیں مکروہ ہیں:
 - (۱) بدن کامیل چیٹرانا۔
- (۲) مال مابدن کھلی باصابون وغیرہ بےخوشبوکی چیز سے دھونا۔
- (۳) تنگھی کرنا۔ (۴) اس طرح تھجانا کہ بال ٹوٹے یابُوں کے گرنے کا ندیشہ ہو۔
 - (۵)انگرکھا گرتاچغہ پہننے کی طرح کندھوں پرڈالنا۔
 - (۲) خوشبو کی دهونی دیا ہوا کیڑا کہ ابھی خوشبود ہے رہا ہویہننا اوڑ ھنا۔
- (۷) قصداً خوشبوسونگهنااگر چهخوشبودار کیل یا پتا ہوجیسے لیموں، نارنگی، پودینه، عطردانه۔
 - (۸) عطر فروش کی دوکان پراس غرض سے بیٹھنا کہ خوشبو سے د ماغ معطر ہوگا۔
 - (٩) سر، يا (١٠) مونھ پريڻي باندھنا۔
 - 🐒 🕦 " الفتاوي الرضوية "، ج ١٠ ص ٧٣٢، وغيره.

(۱۱)غلاف کعیہ معظّمہ کے اندراس طرح داخل ہونا کہغلاف نثریف سر یامونھ سے لگے۔

(۱۲) ناک وغیر ہ مونھ کا کوئی حقیہ کیڑے سے چُھیا نا۔

(۱۳) کوئی ایسی چیز کھانا بینا جس میں خوشبویڑی ہوا در نہوہ ایکائی گئی ہونہ بو زائل ہوگئی ہو۔

(۱۴) بے سلاکیڑ ارفو کیا ہوایا پیوندلگا ہوا پہننا۔

(۱۵) تکیه برمونھ رکھ کراوندھالیٹنا۔

(١٦) مهکتی خوشبو ہاتھ سے چھو ناجب کہ ہاتھ میں لگ نہ جائے ورنہ حرام ہے۔

(۱۷) باز ویا گلے پرتعویذ باندھنااگر چہ بے سلے کیڑے میں لیپیٹ کر۔

(۱۸) بلاعذر بدن پریٹی باندھنا۔

(19)سنگار کرنا۔

(۲۰) حیا دراوڑ ھے کراُس کے آنچلوں میں گرہ دے لینا جیسے گانتی باندھتے ہیں اس طرح یا کسی اورطرح پر جب کہ سر کھلا

ہوورنہ حرام ہے۔

(۲۱) یو ہن تہبند کے دونوں کناروں میں گرہ دینا۔

(۲۲) تہبند یا ندھ کر کمر بندیارتی سے کسنا۔ ⁽¹⁾

یه باتیں احرام میں جائز هیں

- السيهاتين احرام مين جائزين:
- (۱) انگر کھا گرتہ پُغہ لیٹ کراوپر ہے اس طرح ڈال لینا کہ سراور مونھ نہ چھے۔
 - (۲)إن چيزوں پايا جامه کا تهبند باندھ لينا۔
 - (٣) حادر كي نجلول كوتهبند ميل گفر سنا ـ
 - (۴) ہمیانی، یا (۵) پٹی، یا (۲) ہتھیار باندھنا۔
 - (۷) ہے میل چھڑائے حمام کرنا۔
 - (۸) يانی ميں غوطه لگانا۔
 - 1 " الفتاوي الرضوية"، ج١٠ ص٧٣٣، وغيره.

احرام کابیان 1081 🚅 احرام کابیان

(۹) کیڑے دھونا جب کہ جوں مارنے کی غرض سے نہ ہو۔

(۱۰)مسواک کرنا۔

(۱۱) کسی چیز کےسابیمیں بیٹھنا۔

(۱۲) چھتری لگانا۔

(۱۳)انگوهی پېنناپه

(۱۴) بےخوشبوکائر مدلگانا۔

(١٥) داڑھا کھاڑنا۔

(١٦) تُوٹے ہوئے ناخن کوجدا کردینا۔

(۷۷) دنبل یا چھنسی توڑدینا۔

(۱۸)ختنه کرنا۔

(۱۹) فصد ـ

(۲۰) بغیر بال مونڈے کھنے کرانا۔

(۲۱) آنکھ میں جوبال نکلےاُ سے جُدا کرنا۔

(۲۲) سریابدن اس طرح آہتہ تھجانا کہ بال نہ ٹوٹے۔

(۲۳) احرام سے پہلے جوخوشبولگائی اُس کالگار ہنا۔

(۲۲) پالتوجانوراونٹ گائے بکری مرغی وغیرہ ذیج کرنا۔(۲۵) پکانا۔(۲۷) کھانا۔(۲۷) اس کا دودھ دوہنا۔(۲۸)

اس کےانڈ بے توڑنا بھوننا کھانا۔

(۲۹) جس جانور کوغیرمُرِم نے شکار کیا اور کسی مُرِم نے اُس کے شکاریا ذیج میں کسی طرح کی مدد نہ کی ہواُس کا کھانا

بشرطيكه وه جانورنه حرم كامونه حرم مين ذبح كيا كيامو_

(۳۰) کھانے کے لیے چھلی کا شکار کرنا۔

(m) دوا کے لیے سی دریائی جانور کا مارنا، دوایا غذا کے لیے نہ ہونری تفریج کے لیے ہوجس طرح لوگوں میں رائج ہے

ہے۔ تو شکار دریا کا ہویا جنگل کا خود ہی حرام ہے اوراحرام میں سخت ترحرام۔

بيث ش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلام) 🔾

(۳۲) بیرون حرم کی گھاس اُ کھاڑنا، یا

(۳۳) درخت کاشا۔

(۳۲) چیل، (۳۵) کوا، (۳۷) چو با، (۳۷) گرگٹ، (۳۸) چھپکل، (۳۹) سانب، (۴۸) بچھو، (۴۸) کھٹل، (۴۲) مچھر،

(۴۳س) پِنُّو، (۴۴۴) مکھی وغیرہ خبیث وموذی جانوروں کا مارنااگر چیترم میں ہو۔

(۴۵) مونھ اور سر کے سواکسی اور جگہ زخم پریٹی باندھنا۔

(۲۹)سر، یا (۴۷) گال کے نیچے تکبیر کھنا۔

(۴۸)سر، ما (۴۹) ناک برایناما دوسر کے کا ہاتھ رکھنا۔

(۵۰) کان کیڑیے ہے چھمانا۔

(۵۱) ٹھوڑی سے نیچے داڑھی پر کپڑا آنا۔

(۵۲) سريرسيني يا بوري أنهانا ـ

(۵۳)جس کھانے کے مکنے میں مشک وغیرہ پڑے ہول اگر چہ خوشبودیں۔یا (۵۴) بے یکائے جس میں کوئی خوشبو

ڈالیاوروہ پُونہیں دیتی اُس کا کھانا بینا۔

(۵۵) تھی یا چرتی یا کڑواتیل یا ناریل یا بادام کدو، کا ہوکاتیل کہ بسایا نہ ہو بالوں یابدن میں لگا نا۔

(۵۲)خوشبو کے ریکئے کیڑے پہنناجب کہاُن کی خوشبو جاتی رہی ہو گر کسم،کیسر کارنگ مردکوویسے ہی حرام ہے۔

(۵۷) دین کے لیے جھگڑ نا بلکہ حسب حاجت فرض وواجب ہے۔

(۵۸)جوتا پېنناجو ياؤل كائس جوڙ كونه چھيائے۔

(۵۹) بے سلے کپڑے میں لیپٹ کرتعویذ گلے میں ڈالنا۔

(۲۰) آئکنه د کھنا۔

(۱۲) اليي خوشبو کا حجمونا جس ميں في الحال مبكن بيب الحريان ،صندل ، يا (۲۲) اس کا آنچل ميں باندھنا۔

(۶۳) نکار^۲ کرنا _{(۱۳}

🕕 " الفتاوي الرضوية"، ص ٢٣٤، وغيره.

احرام میں مرد و عورت کے فرق

🕲 ان مسائل مذكوره ميس مردعورت برابر بين، مگرعورت كوچند باتين جائز بين:

سرچھپانا بلکہ نامحرم کے سامنے اور نماز میں فرض ہے تو سر پر بستر بقچہ اُٹھانا بدرجہ اولی ۔ یو ہیں گوندوغیرہ سے بال جمانا، سروغیرہ پر پٹی خواہ باز و یا گلے پر تعویذ باندھنا اگرچہ ہی کر، غلاف کعبہ کے اندر یوں داخل ہونا کہ سر پر رہے مونھ پر نہ آئے، دستانے ، موزے ، سلے کیڑے پہننا ، عورت اتنی آ واز سے لبیک نہ کہے کہ نامحرم سُنے ، ہاں اتنی آ واز ہر پڑھنے میں ہمیشہ سب کو ضرور ہے کہ اپنے کان تک آ واز آئے۔

تنگیبید: احرام میں موتھ چھپاناعورت کو بھی حرام ہے، نامحرم کے آگے کوئی پنکھاوغیرہ موتھ سے بچاہواسا منے رکھے۔ ﴿ جو باتیں احرام میں ناجائز ہیں وہ اگر کسی عُذر سے یا بھول کر ہوں تو گناہ نہیں مگران پر جو بُر مانہ مقرر ہے ہر طرح دینا آئے گااگر چہ بےقصد ہوں یا سہواً یا جراً یا سوتے میں۔

﴿ طواف قدوم کے سواوقت ِ احرام ہے رہی جمرہ تک جس کا ذکر آئے گا اکثر اوقات لبیک کی بے ثمار کثر ت رکھے، اُٹھتے بیٹھتے، چلتے پھرتے، وضوبے وضو ہر حال میں خصوصاً چڑھائی پر چڑھتے اُترتے، دوقافلوں کے ملتے، صبح شام، پچپلی رات، پانچوں نمازوں کے بعد، غرض میہ کہ ہر حالت کے بدلنے پر مرد با واز کہیں مگر نہ اتنی بلند کہ اپنے آپ یا دوسرے کو تکلیف ہواور عورتیں بیت آ واز سے مگر نہ اتنی بیت کہ خور بھی نہ تئیں۔

داخلی حرم محترم ومکه مکرمه و مسجد الحرام

اللُّدعز وجل فرما تاہے:

﴿ وَإِذْ قَالَ إِبْهِمُ مَ بِّ اجْعَلُ هٰ فَا ابَكَمَّا امِنَا وَالْهُوْ مِنَ الثَّهَوْ مِنَ الثَّهُو مِنَ الثَّهُو مِنَ الثَّهُو مِنَ الثَّهُو وَ إِذْ قَالَ الْهُمُ مَ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ اللّهُ وَاللّهُ مِنَ اللّهُ وَالْهُو اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَالّهُ وَاللّهُ وَا لَاللّهُ وَاللّهُ و

😘 🕦 ب ۱، البقرة: ۲۲۱ ـ ۱۲۸ .

کیرایمان لائے اٹھیں پھلوں سے روزی دے فرمایا اور جس نے کفر کیا اُسے بھی کچھ برینے کو دُوں گا، پھراسے آگ کے عذاب کی ا طرف مضطر کروں گا اور بُراٹھکانا ہے وہ۔اور جب ابراہیم واسلعیل خانہ کعبہ کی بنیادیں بلند کرتے ہوئے کہتے تھے اے یروردگار! تو ہم سے (اس کام کو) قبول فرما، بیشک تو ہی ہے سُننے والا، جاننے والا اور ہمیں تو اپنا فرما نبر دار بنااور ہماری ذرّیت ہے ایک گروہ کواپنافر مانبر دار بنااور ہمارے عبادت کے طریقے ہم کود کھااور ہم پر رجوع فرما بیشک تو ہی بڑا تو بہ قبول فرمانے والا، رحم کرنے والا ہے۔

اورفرما تاہے:

﴿ اَوَلَمْ نُمَكِّنُ لَّهُمْ حَرَمًا امِنًا يُجْلَى إِلَيْهِ ثَمَاتُ كُلِّ شَيْءً يِرْدُقًا مِّنْ لَّدُتَّاوَلكِنَّ آكْثَرَهُمُ لا يَعْلَمُونَ ⊕ ﴾ (1)

کیا ہم نے اُن کوامن والے حرم میں قدرت نددی کہ وہاں ہوتتم کے پیل لائے جاتے ہیں جو ہماری جانب سے رزق ہیں مگر بہت سے لوگ نہیں جانتے۔

اورفرما تاہے:

﴿ إِنَّهَا أُمِرْتُ أَنْ اَعُبُدَ مَبَّ هٰ نِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٌ وَ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْسُلِيانَ ﴿ الْمُسْلِيانَ اللَّهِ ﴿ (2)

مجھے تو یہی حکم ہوا کہ اس شہر کے بروردگار کی عبادت کروں،جس نے اسے حرم کیا اور اس کے لیے ہرشے ہے اور مجھے حکم ہوا کہ میں مسلمانوں میں ہےرہوں۔

خلینٹ 🚺 و ۳ 🔑 صحیح بخاری وضیح مسلم میں عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی عایہ وملم نے فتح مکہ کے دن بیارشادفر مایا:''اس شہرکواللہ(۶۶ وجل) نے حرم (بزرگ) کردیا ہے جس دن آسان وزمین کو پیدا کیا تو وہ روز قیامت تک کے لیے اللہ (عزوجل) کے کیے سے حرم ہے، مجھ سے پہلے کسی کے لیے اس میں قبال حلال نہ ہوا اور میرے لیے صرف تھوڑ ہے سے وقت میں حلال ہوا،اب بھروہ قیامت تک کے لیے ترام ہے،نہ یمہاں کا کا نٹے والا درخت کا ٹا جائے نہاس کا شکار بھگایا جائے اور نہ یہاں کا پڑا ہوا مال کوئی اُٹھائے مگر جواعلان کرنا جا ہتا ہو(اُسے اُٹھانا، جائز ہے) اور نہ یہاں کی تر گھاس کا ٹی جائے'' حضرت عباس رضی اللہ تعالی عنہ نے عرض کی ، یا رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم)! مگر اِ ذخر (ایک قشم کی گھاس ہے کہ اُس

1 ب ، ٢ ، القصص: ٥٧ .

🥏 🙋پ۲۰النمل: ۹۱.

ﷺ کے کاٹنے کی اجازت دیجیے) کہ بیلو ہاروں اور گھر کے بنانے میں کام آتی ہے۔حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) نے اس کی اجازت

د يدى ـ'' ⁽¹⁾ اسى كى مثل ايُوشر يح عدوى رضى الله تعالى عنه <u>سه</u> مروى ـ

خلینے 🦈 🥕 ابن ماجہ عیاش بن ابی رہیعہ مخز وی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، که رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ دہلم نے فر مایا:

'' پیامت ہمیشہ خیر کے ساتھ رہے گی جب تک اس مُرمت کی پوری تعظیم کرتی رہے گی اور جب لوگ اسے ضائع کر دیں گے ہلاک ہوجا ئیں گے۔'' ⁽²⁾

خلیئٹ 🧨 🐣 طبرانی اوسط میں جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ رسول الله صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فر مایا: کعبہ کے لیے زبان اور ہونٹ ہیں، اُس نے شکایت کی کہاہے رب! میرے پاس آنے والے اور میری زیارت کرنے والے کم ہیں۔اللّٰہ عزوجل

نے وحی کی کہ:''میں خشوع کرنے والے ، سجدہ کرنے والے آ دمیوں کو پیدا کروں گا جو تیری طرف ایسے مائل ہوں گے جیسے ، کبوتری اینے انڈے کی طرف مائل ہوتی ہے۔" (3)

ځ لینٹ 🔬 🤏 🗝 صحیح بخاری وصحیح مسلم میں ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مکه میں تشریف لاتے تو ذی طُویٰ میں رات گزارتے ، جب صبح ہوتی عسل کرتے اور نماز پڑھتے اور دن میں داخل مکہ ہوتے اور جب مکہ سے تشریف لے جاتے توضیح تک ذی طُو کی میں قیام فرماتے۔ (4)

داخلی حرم کے احکام

🛈 جب حرم مکہ کے متصل پہنچے سر جھائے آئکھیں شرم گناہ سے نیجی کیے خشوع وخضوع سے داخل ہواور ہوسکے تو پیادہ ننگے یا وُں اور لبیک ودعا کی کثرت رکھے اور بہتریہ کردن میں نہا کر داخل ہو، حیض ونفاس والی عورت کو بھی نہا نامستحب ہے۔ 🕥 مکہ معظمہ کے گردا گرد گئی کوس تک حرم کا جنگل ہے، ہر طرف اُس کی حدیں بنی ہوئی ہیں،ان حدول کے اندر تر گھاس اُ کھیڑنا،خودروپیڑ کاٹنا،وہاں کے وحشی جانورکو نکلیف دیناحرام ہے۔ یہاں تک کدا گرسخت دھوپ ہواورایک ہی پیڑ ہے اُس کے سابیمیں ہرن بیٹھا ہے تو جائز نہیں کہ اپنے بیٹھنے کے لیے اسے اُٹھائے اورا گروشتی جانور بیرون حرم کا اُس کے ہاتھ میں

- "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب تحريم مكة وتحريم صيدها ... إلخ، الحديث: ١٣٥٣، ص٧٠٦.
 - 2 "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب فضل مكة، الحديث: ١١٠، ج٣، ص١٩٥.
 - 3 "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٦٠٦٦، ج٤، ص٥٠٣.
 - 🧣 🚯 "مشكاة المصابيح"، كتاب المناسك، باب دخول مكة ...إلخ، الحديث: ٢٥٦١، ج٢، ص٨٦.

😙 جب مكه معظمه نظرير عظم كريه دُعاير هـ: اَللَّهُمَّ اجُعَلُ لِّي بِهَا قَرَارًا وَّارْزُقْنِي فِيهَا رِزُقًا حَلا لًا . (2)

اور درودشریف کی کثرت کرے اور افضل بیہ ہے کہ نہا کر داخل ہواور مدفو نین جنت انمغکیٰ کے لیے فاتحہ پڑھے اور مکہ معظمه میں داخل ہوتے وقت بیدو عایر ہھے:

ٱللُّهُمَّ ٱنْتَ رَبِّي وَآنَا عَبُدُكَ وَالْبَلَدُ بَلَدُكَ جِئْتُكَ هَارِبًا مِّنْكَ اِلْيُكَ لِأُوَّدِّي فَرَآئِضَكَ وَٱطُـلُبَ رَحُمَتكَ وَٱلْتَمِسَ رِضُوَا نَكَ ٱسۡأَلُکَ مَسۡعَالَةَ الْمُضُطّرّيُنَ اِلَيْکَ الْخَآئِفِيْنَ عُقُوبَتَکَ ٱسۡأَلُکَ اَنُ تُـقَبَّلَنِيَ الْيَوْمَ بِعَفُوكَ وَتُدُخِلَنِيُ فِي رَحُمَتِكَ وَتَتَجَاوَزَ عَنِّيْ بِمَغْفِرَتِكَ وَتُعِيْنِنِي عَلَى اَدَآءِ فَرَائِضِكَ اَللَّهُمَّ نَجِّنِيُ مِنْ عَذَابِكَ وَافْتَحُ لِيُ اَبُوَابَ رَحْمَتِكَ وَادُخِلْنِيُ فِيْهَا وَاَعِذُنِيُ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيُمِ ^{ط (3)} ③ جب مَدعیٰ میں ہنچے یہ وہ جگہ ہے جہاں سے کعبہ معظمہ نظر آتا تھاجب کہ درمیان میں عمارتیں حاکل نہھیں، یہ عظیم اجابت وقبول کاوفت ہے یہاں گھہرےاورصد تی دل ہےاہنے اور تمام عزیزوں ، دوستوں ،مسلمانوں کے لیے مغفرت و عافیت مائكً اور جنت بلا حساب كي دُعا كرےاور درودشريف كي كثرت اس موقع پرنهايت اہم ہے۔اس مقام پرتين بار اَكْتُ أَكْبَر، اورتين مرتبه لآباله إلا الله كهاوريه يرهه:

- 📭 ترجمہ: کہا جاتا ہے کہ یہ کبوتر اس مبارک جوڑ ہے کی نسل سے ہیں،جس نے حضور سید عالم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی ہجرت کے وقت غار ثور میں انڈے دیئے تھے،اللّٰہءزوجل نے اس خدمت کےصلہ میں ان کواپنے حرم یاک میں جگہ مجشی ۔۱۲
 - 2 ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! تو مجھےاس میں برقرار رکھاور مجھےاس میں حلال روزی دے۔١٢
- 🚯 ترجمہ:اےاللہ(عز دجل)! تومیرارب ہےاور میں تیرابندہ ہوںاور رہشج تیراشج ہے میں تیرے باس تیرےعذاب ہے بھاگ کرحاضر ہوا کہ تیرے فرائض کوادا کروںاور تیری رحمت کوطلب کروں اور تیری رضا کو تلاش کروں ، میں تجھے ہےاس طرح سوال کرتا ہوں جیسے مضطراور تیرے ۔ عذاب سے ڈرنے والےسوال کرتے ہیں، میں تجھ سےسوال کرتا ہوں کہآج توا بنے عفو کےساتھ مجھ کوقبول کراورا پنی رحمت میں مجھے داخل کراور ا پنی مغفرت کے ساتھ مجھ سے درگز رفر مااور فرائض کی ادا پرمیری اعانت کر۔اےاللہ(عز وجل)! مجھ کواینے عذاب سے نجات دےاور میرے لیے ا بنی رحمت کے درواز ہے کھول دے اوراس میں مجھے داخل کر اور شیطان مردود سے مجھے بناہ میں رکھے۔ ۱۲

رَبَّنَا الْتِنَا فِي الدُّنُيَا حَسَنَةً وَّفِي الْالْحِرَةِ حَسَنَةً وَّفِيا عَذَابِ النَّارِ ۖ اَللَّهُمَّ اِنِّيُ اَسْأَلُکَ مِنُ خَيْرِ مَا سَتَالَکَ مِنُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَعُودُ بِکَ مِنُ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَکَ مِنْهُ نَبِیُّکَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ تَعالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاعُودُ بِکَ مِنُ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَکَ مِنْهُ نَبِیُّکَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ تَعالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَ (1)

اوريدعا بَصَ يُرْكِ: اَللَّهُمَّ اِيْمَانًا بُكَ وَتَصُدِيْقًا أَبِكَ وَوَفَاءً أَبِعَهُدِكَ وَاِتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيّكَ سَيِّدِنا وَمَوُلْنَا مُحَمَّدٍ صَلِّ عَلَيْهِ وَسَلِّم اَللَّهُمَّ زِدُبَيْتَكَ هَذَا تَعُظِيُمًا وَّ تَشُرِيْفًا وَمَهَابَةً وَزِدُ مِنُ تَعُظِيُمِهِ وَتَشُرِيُفًا وَمَهَابَةً وَاعْتَمَرَهُ تَعُظِيمًا وَتَشُرِيْفًا وَمَهَابَةً طَ (2)

اوربیدعائے جامع کم از کم تین باراس جگه برهین:

اَللَّهُ مَّ هٰذَا بَيُتُكَ وَاَنَا عَبُدُكَ اَسُأَلُكَ الْعَفُو وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّيُنِ وَالدُّنِيَا وَالاَحْرَةِ لِيُ وَلِوَالِدَىَّ وَلِلْمُوَّمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنِيْنَ وَالْمُومِنَاتِ وَلِعُبَيْدِكَ اَمْجَدُ عَلِي اَللَّهُمَّ انْصُرُهُ نَصُرًا (3) عَزِيْزًا. امِيْنَ . (4)

سَمَانُ الله جب مکه معظمه میں پہنچ جائے تو سب سے پہلے مسجد الحرام میں جائے۔کھانے پینے، کیڑے بدلنے، مکان کرایہ لینے وغیرہ دوسرے کاموں میں مشغول نہ ہو، ہاں اگر عذر ہو مثلاً سامان کو چھوڑ تا ہے تو ضائع ہونے کا اندیشہ ہے تو محفوظ جگہ رکھوانے یا اور کسی ضروری کام میں مشغول ہوا تو حرج نہیں اور اگر چند محض ہوں تو بعض اسباب اُنز وانے میں مشغول ہوں اور بعض مسجد الحرام شریف کو چلے جائیں۔(5) (منگ)

- ③ ذکرِخداورسول اوراپنے اور تمام مسلمانوں کے لیے دعائے فلاحِ دارین کرتا ہوا اور لبیک کہتا ہوا باب السّلام تک
-ترجمہ: اے دب! تو دنیا میں ہمیں ہملائی دے اور آخرت میں ہملائی دے اور جہنم کے عذاب سے ہمیں بچا، اے الله (عزوجل)! میں اس خیر میں سے سوال کرتا ہوں، جس کا تیرے نبی محمد سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے تجھ سے سوال کیا اور تیری پناہ مانگتا ہوں اُن چیز وں کے شرسے جن سے تیرے نبی محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پناہ مانگی ۱۲۔
- 2ترجمہ:اےاللہ(عزوجل)! تجھ پرایمان لا یا اور تیری کتاب کی تصدیق کی اور تیرے عہد کو پورا کیا اور تیرے نبی محمصلی اللہ تعالی علیہ وسلم کا اتباع کیا،اےاللہ (عزوجل)! تو اپنے اس گھرکی تعظیم وشرافت و ہیبت زیادہ کر اور اس کی تعظیم وتشریف سے اس شخص کی عظمت وشرافت و ہیبت زیادہ کر جس نے اس کا حج وعمرہ کیا۔۱۲
- ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! بہتیرا گھر ہے اور میں تیرا بندہ ہول عفوہ عافیت کا سوال تجھ سے کرتا ہوں، دین وونیا و آخرت میں میرے لیے اور میرے والدین اور تمام مومنین ومومنات کے لیے اور تیرے حقیر بندہ امجد علی کے لیے، الہی! تو اس کی قوی مدد کر آمین ۱۲
 - اوراب جب كم مدرالشر ليدرحمالله تعالى وصال فرما على يول دعاكر : اللهمة اغفِرُ مَعْفِورةً).
 - 5 "المسلك المتقسط"، (باب دخول مكة)، ص١٢٧.

🥰 پنچادراس آستانهٔ پاک کو بوسه دیمر پہلے دا ہنا پاؤں رکھ کر داخل ہواوریہ کہے:

اَعُودُ بِاللّٰهِ الْعَظِيُمِ وَ بِوَجُهِهِ الْكَرِيْمِ وَ سُلُطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيُطْنِ الرَّجِيُمِ بِسُمِ اللَّهِ اَلْحَمُدُ لِلَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى وَسُلُطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيُطْنِ الرَّجِيْمِ بِسُمِ اللَّهِ اَلْحَمُدُ لِلَّهِ وَالسَّلَامُ عَلَى وَسُولِ اللَّهِ اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلَى الِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَ اَزُوَا جِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَالسَّكَامُ عَلَى وَالْعَرُلِي ذُنُوبِي وَالْعَرُ لِي اللَّهُمَّ اغْفِرُلِي ذُنُوبِي وَالْعَرُ لِي اللَّهُ اللهُمَّ اغْفِرُلِي ذُنُوبِي وَالْعَرُ لِي اللهِ اللهِ اللهِ مَا اللهِ عَلَى اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللّهِ اللهُ الله

ید دعاخوب یا در کھے، جب بھی مسجد الحرام شریف یا اور کسی مسجد میں داخل ہو،اسی طرح داخل ہواور بید عاپڑ ھالیا کرے اوراس وقت خصوصیت کے ساتھ اس دعا کے ساتھ اتنا اور ملالے:

اَللَّهُ مَّ اَنُتَ السَّلَامُ وَمِنُكَ السَّلَامُ وَإِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ حَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدُخِلُنَا دَارَالسَّلَامِ تَبَارَكُتَ رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدُخِلُنَا دَارَالسَّلَامِ تَبَارَكُتَ رَبَّنَا وَالْكُورُمِ لَكُمِيُ تَبَارَكُتَ رَبَّنَا وَالْكُورُمُ لَحُمِيُ وَمَوْضِعُ اَمُنِكَ فَحَرِّمُ لَحُمِيُ وَبَعْنَا وَمُوضِعُ اَمُنِكَ فَحَرِّمُ لَحُمِيُ وَبَشَرِي وَدَمِي وَمُخِي وَعِظَامِي عَلَى النَّارِ . (2)

اور جب سی متجد سے باہر آئے پہلے بایاں قدم باہر رکھے اور وہی دُعاری سے مگر اخیر میں دَحُمَتِک کی جگہ فَضُلِکَ کے اور اتنا اور بڑھائے:

وَسَهِّلُ لِّيُ أَبُوَابَ رِزُقِكَ . ⁽³⁾ اس كى بركات دين ودنيا ميں بـ ثاريين وَالْحَمُدُ لِلَّهِ ـ

🛈 جب كعبه معظمه نظر ريرٌ ت تين باركآ إله والله وَالله وَالله أَكْبَو كهاور درو وشريف اوربيد عاريرٌ هـ:

اَللَّهُمَّ زِدُ بَيْتَكَ هَلَا تَعُظِيُماً وَّتَشُرِيُفًا وَّ تَكُرِيُمًا وَّ بِرًّا وَّ مَهَابَةً اَللَّهُمَّ اَدُخِلْنَا الْجَنَّةَ بِلَا حِسَابٍ اَللَّهُمَّ اِنِّى اَسُأَلُكَ اَنُ تَغُفِرَلِى وَتَرُحَمَنِى وَتُقِيْلَ عَثَرَتِى وَتَضَعَ وِزُرِى بِرَحُمَتِكَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللَّهُمَّ اِنِّى عَبُدُكَ وَزَائِرُكَ وَعَلَى كُلِّ مَزُورٍ حَقِّ وَانْتَ خَيْرُ مَزُورٍ فَاسَأَلُكَ اَنُ تَرُحَمَنِى الرَّاحِمِيْنَ اَللَّهُمَّ اِنِّى عَبُدُكَ وَزَائِرُكَ وَعَلَى كُلِّ مَزُورٍ حَقِّ وَانْتَ خَيْرُ مَزُورٍ فَاسَأَلُكَ اَنُ تَرُحَمَنِى

استرجمہ: میں خدائے عظیم کی پناہ ما نگتا ہوں اوراس کے وجہ کریم کی اور قدیم سلطنت کی مردود شیطان سے، الله (عزوجل) کے نام کی مدد سے سب خوبیال الله (عزوجل) کے لیے اور رسول الله (علی الله تعالی علیه وسلم) پرسلام، اے الله (عزوجل)! درود جھیج ہمار ہے آ قامحمہ (صلی الله تعالی علیه وسلم) اور اُن کی آل اور بیدیوں پر۔ الہی! میرے گناہ بخش دے اور میرے لیے اپنی رحمت کے دروازے کھول دے۔ ۱۲

ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! تو سلام ہے اور تحجی ہے سلامتی ہے اور تیری ہی طرف سلامتی لوٹتی ہے، اے ہمارے رب! ہم کوسلامتی کے ساتھ زندہ رکھ دار السلام (جنت) میں داخل کر، اے ہمارے رب! تو ہرکت والا اور بلندہے، اے جلال و ہزرگی والے! الٰہی یہ تیراحرم ہے اور تیری امن کی جگہ ہے میرے گوشت اور پوست اور خون اور مغز اور ہڈیول کو جہنم پرحرام کردے۔ ۱۲

الاحمد: اورمير _ ليحائي رزق كدرواز _ آسان كرد _ ١٦

مى النَّارِ . (1) قُ وَتَفُكَّ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ . (1)

طواف و سعى صفا و مروه و عمره كابيان

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ وَ إِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِلنَّاسِ وَامْنًا ۖ وَاتَّخِنُ وَامِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِ مَمْصَلًى ۖ وَعَهِ مُنَا إِلَى اِبْرَاهِ مَ وَ اِسْلِعِيلَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهُ وَهِ ﴿ (2) اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ وَهِ ﴿ (2) اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللْعَلَى اللَّهُ عَلَى عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى عَلَى اللْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى اللَّهُ عَلَى اللْعَلَى الْعَلَى ا

اور یاد کر و جب کہ ہم نے کعبہ کولوگوں کا مرجع اورامن کیااور مقام ابرا ہیم سے نماز پڑھنے کی جگہ بناؤاور ہم نے ابرا ہیم و اسلمیل کی طرف عہد کیا کہ میرے گھر کوطواف کرنے والوں اوراعت کاف کرنے والوں اور رکوع ہیجود کرنے والوں کے لیے پاک کرو۔

اورفرما تاہے:

﴿ وَإِذْبَوَّ أَنَالِا بُرْهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ آَنُ لَا تُشُوكُ فِي شَيْنًا وَّطَقِرْ بَيْتِي لِلطَّآبِ فِينُ وَالْقَآبِ بِينُ وَالْوُلِيَّةِ السُّجُوْدِ ﴿ وَ وَ ذِنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّرِيَاتُوك مِ جَالًا وَعَلَى كُلِّ ضَامِ لِتَأْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَي مِينِ ۚ فَي لِيَشْهَا وَامْنَا فِعَ الشَّجُوْدِ ﴿ وَ وَ السَّمَ اللَّهُ فَي النَّاسِ بِالْحَجِّرِيَاتُونَ مَعْلُومْتِ عَلَى مَا مَرَدَ قَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْاَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَالْعَبُوا لَهُمْ وَيَتَعَلَّونُ وَالسَّمَ اللَّهُ فَي النَّاسِ الْفَقِيْدَ ﴾ وَمَن يُعظِّمُ الْبَالِيسَ الْفَقِيْدَ ﴾ وَلَنَّ وَمَن يُعظِّمُ اللَّهُ وَلَي اللَّهِ فَهُ وَلَي اللَّهُ اللَّهُ وَلَي اللَّهُ وَلَي اللَّهُ اللَّهُ الْمَالِمُ اللَّهُ اللَّهُ وَلَي اللَّهُ مَا اللَّهُ الْعَلَالُولُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللِّهُ اللَّهُ الْمُلْعِلَةُ اللَّهُ الْمُلْكُولُولُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْعُلِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُلْكُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُ اللَّهُ الللَّهُ اللللللَّهُ الللللْمُ اللَّهُ الللللْمُ الللللْمُ اللَّهُ اللللللْمُ اللللللِمُ الللللْمُ اللللْمُ اللللللِمُ الللللْمُ اللَّهُ الللْمُ اللللْمُ اللَّلُولُ الللللْمُ الللللِمُ اللللَ

اور جب کہ ہم نے اہرا ہم کو پناہ دی خانہ تعبہ کی جگہ میں یوں کہ میرے ساتھ کسی چیز کوشریک نہ کراور میرے گھر کوطواف کرنے والوں اور قیام کرنے والوں اور رکوع سجدہ کرنے والوں کے لیے پاک کراور لوگوں میں حج کا اعلان کر دیے لوگ تیرے پاس پیدل آئیں گے اور لاغر اونٹیوں پر کہ ہر راہِ بعید ہے آئیں گی تا کہ اپنے نفع کی جگہ میں حاضر ہوں اور اللہ (عزوجل)

• ۔۔۔۔ ترجمہ: اے اللہ (عزوجل)! تو اپنے اس گھر کی عظمت و شرافت و بزرگی و نکوئی و ہیبت زیادہ کر، اے اللہ (عزوجل)! ہم کو جنت میں بلاحساب داخل کر۔ اللہی! میں تجھ سے سوال کرتا ہوں کہ میری مغفرت کردے اور جھے پر رحم کراور میری لغزش دورکر اورا پنی رحمت سے میرے گناہ دفع کر، اے سب مہر بانوں سے زیادہ مہر بان۔ اللی! میں تیرا بندہ اور تیرا زائز ہوں اور جس کی زیارت کی جائے اس پر حق ہوتا ہے اور تو سب سے بہتر زیارت کیا ہوا ہے، میں بیسوال کرتا ہوں کہ جھے پر دحم کراور میری گردن جہم سے آزاد کر۔ ۱۲

- 2 ١١٥ البقره: ١٢٥.
- 😨 😘پ۱۱، الحج: ۲٦_۳۰.

💐 کے نام کو یاد کریں معلوم دنوں میں اس پر کہ انھیں چو پائے جانورعطا کیے تو اُن میں سے کھا وَ اور نا اُمید فقیر کو کھلا وَ پھراپنے میل

کچیل اُ تاریں اورا پی منتیں بوری کریں اوراس آ زاد گھر (کعبہ) کا طواف کریں بات بیہ ہے اور جواللہ (عزوجل) کے ٹر مات کی تعظیم کرے تو یہ اس کے لیے اس کے رب کے نز دیک بہتر ہے۔

اور فرما تاہے:

﴿إِنَّ الصَّفَاوَ الْمَرُوةَ مِن شَعَ آلِرِ اللهِ قَمَن حَجَّ الْبَيْتَ آوِاعْتَمَ وَلَلا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَتَطَّوَّف بِهِمَا ﴿ وَمَن

تَطَوَّعَ خَيْرًا لَا فَإِنَّاللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿ ﴿ (1)

بیشک صفاومروہ اللہ (عزوجل) کی نشانیوں سے ہیں جس نے کعبہ کا حج یا عمرہ کیا اس پر اس میں گناہ نہیں کہ ان دونوں کا طواف کرےاور جس نے زیادہ خیر کیا تو اللہ (عزوجل) بدلا دینے والا علم والا ہے۔

تک تین پھیروں میں رمک کیااور چار پھیرے چل کر کیے ⁽³⁾ اورا یک روایت میں ہے پھرصفاومروہ کے درمیان سعی فر مائی۔ ⁽⁴⁾

خلیت سی اللہ تعالیٰ علیہ وہا ہم میں جابر رض اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم جب مکہ میں تشریف لائے تو

حجرِ اسود کے پاس آ کراُ ہے بوسد دیا پھر دہنے ہاتھ کو چلے اور تین پھیروں میں رَمُل کیا۔⁽⁵⁾

خلینٹ کی ایوالطفیل رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہتے ہیں: میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم کو ہیت اللہ کا طواف کرتے دیکھا اور حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کے دست مبارک میں چیٹری تھی اُس چیٹری کو جمرِ اسود سے لگا کر بوسہ میں (6)

- 1 ٢٠ البقره: ١٥٨.
- 2 "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب من طاف بالبيت ... إلخ، الحديث: ١٦١٤، ج١، ص ٥٤١.
- "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب استحباب الرمل في الطواف ... إلخ، الحديث: ١٢٦٢، ص٩٥٦.
- ₫ "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب استحباب الرمل في الطواف ... إلخ، الحديث: ١٢٦١، ص٥٥٨.
 - 5 "مشكاة المصابيح" كتاب المناسك، باب دخول مكة ... إلخ، الحديث: ٢٥٦٦، ج٢، ص٨٦.
- "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب جواز الطواف على بعير وغيره ... إلخ، الحديث: ١٢٧٥، ص٦٦٣.

🥌 🕹 💒 🕒 ابوداود نے ابو ہر مرہ وضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ دملم مکہ میں داخل ہوئے تو

حجراسود کی طرف متوجہ ہوئے ،اُسے بوسہ دیا پھر طواف کیا پھر صفاکے یاس آئے اوراس پر چڑھے یہاں تک کہ بیت اللہ نظر آنے

لگا پھر ہاتھا ُٹھا کرذ کرالٰہی میں مشغول رہے، جب تک خُدانے چاہااور دُعا کی۔(1)

خلیئٹ 🕽 🐣 امام احمد نے عبید بن عمیر سے روایت کی ، کہتے ہیں : میں نے ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے یو چھا کیا وجہ ہے كه آب حجراسود ورُكن يماني كوبوسه ديتي بين؟ جواب ديا، كه مين نے رسول الله صلى الله تعالى عليه دملم كوفر ماتے سُنا كه: ان كو بوسه دينا خطاؤں کو گرادیتا ہے اور میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کوفر ماتے سُنا جس نے سات پھیرے طواف کیا اس طرح کہ اس کے آ داب کوملحوظ رکھا اور دور کعت نمازیڑھی تو بیرگرون آزاد کرنیکی مثل ہے اور میں نے حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) کوفر ماتے سُنا کہ طواف میں ہر قدم کہ اُٹھا تا اور رکھتا ہے اس پر دس نیکیا ل کھی جاتی ہیں اور دس گناہ مٹائے جاتے ہیں اور دس درجے بلند کیے جاتے ہیں۔''⁽²⁾ اسی کے قریب قریب تر مذی وحاکم وابن خزیمہ وغیرہم نے بھی روایت کی۔

خلیئٹ 🗸 🥕 🔻 طبرانی کبیر میں مجمد بن منکد رہے راوی ، وہ اپنے والدہے روایت کرتے ہیں ، کدرسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم

نے فرمایا:''جو بیت اللّٰد کاسات پھیرے طواف کرے اوراُس میں کوئی لغوبات نہ کرے توابیا ہے جیسے گردن آ زاد کی ۔'' (3)

ځ 🗘 پئٹ 🔨 🥕 🚽 اصبها نی عبدالله بن عمر و بن عاص رضی الله تعالی عنها سے را وی ، کہتے ہیں : جس نے کامل وضو کیا پھر حجر اسود ك ياس بوسددية كوآياوه رحمت مين داخل بهوا، چرجب بوسدديا اوربيريرها بسُم اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ أَشُهَدُ أَنُ لَّآ إِلْهَ إِلَّا اللُّهُ وَحُدَهُ لَا شَوِيُكَ لَهُ وَاشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ . اُترحت في وها نك ليا يجرجب بيت الله كاطواف کیا تو ہرفدم کے بدلےستر ہزارنیکیاں کھی جائیں گی اورستر ہزار گناہ مٹادیے جائیں گے اورستر ہزار درجے بلند کیے جائیں گے اوراینے گھر والوں میں ستر کی شفاعت کرے گا پھر جب مقام ابراجیم پر آیا اور وہاں دور کعت نماز ایمان کی وجہ سے اور طلب ثواب کے لیے رہھی تواس کے لیےاولا دِاسلعیل میں سے جارغلام آزاد کرنے کا ثواب کھاجائیگا اور گناہوں سے ایبانکل جائے گاجیسے آج اپنی ماں سے بیدا ہوا۔ ⁽⁴⁾

خلایت 🤨 🦫 سیمق ابن عباس رضی الله تعالی عنها سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه دملم فر ماتے ہیں :''بیت الحرام کے حج

- "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب في رفع اليد إذا رأى البيت، الحديث: ١٨٧٢، ج٢، ص٥٥٠.
 - 2 "المسند" للإمام أحمد بن حنيل، الحديث: ٢٠٢٤، ج٢، ص٢٠٢.
 - 3 "المعجم الكبير"، الحديث: ٥٤٥، ج٠٢، ص٠٦٠.
 - ﴾ ♦ "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الطواف ... إلخ، الحديث: ١١، ج٢، ص١٢٤.

🧬 کرنے والوں پر ہرروز اللہ تعالیٰ ایک سومیس رحمت نا زل فر ما تا ہے،ساٹھ طواف کرنے والوں کے لیےاور حیالیس نماز پڑھنے ا

والول کے لیے اور بیس نظر کرنے والوں کے لیے۔ ' (1)

خلینٹ 🕩 🥕 ابن ماجہ ابو ہر رہے وضی اللہ تعالیٰ عنہ سے راوی ، کہ نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فر مایا:'' رُکن بیمانی برستر فرشتے

موكل بين، جوبيدعا يرُه: اللُّهُمَّ إنِّي اَسْأَلُكَ الْعَفُو وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاَخِرَةِ رَبَّنَا اتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي اللاجِرَةِ حَسَنةً وقِنا عَذَابَ النَّارِ . وه فرشة آمين كهتم بين اورجوسات يهير عطواف كراوريه يره صاري شبكان اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَلَا اِللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اَكُبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللَّهِ أَس كُوس كناه مثاديج اكبي كاوردس نیکیاں کھی جائیں گی اور دس درجے بلند کیے جائیں گے اور جس نے طواف میں یہی کلام پڑھے، وہ رحت میں اپنے یاؤں سے چل رہاہے جیسے کوئی یانی میں یاؤں سے چاتا ہے۔'' (2)

خلینٹ 🕕 🎏 - تر مذی نے ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہا ہے روایت کی ، که رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیه وسلم نے فر مایا: '' جس نے

بچاس مرتبطواف کیا، گنامول سے ایسانکل گیا جیسے آج اپنی مال سے پیداموا۔ ' (3) خلینے 🗥 🎥 تر مذی ونسائی و دارمی آخییں سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه دیلم نے فر مایا: ''بیت الله کے گر د طواف

نمازی مثل ہے، فرق پیرکتم اس میں کلام کرتے ہوتو جو کلام کر نے خیر کے سواہر گز کوئی بات نہ کہے۔'' (4)

خلیئٹ ٣ 🔑 🔻 امام احمد وتر مذی آتھیں ہے راوی ، کدرسول اللّه تعلی علیه وبلم فرماتے ہیں :'' حجراسود جب جنت ہے

نازل ہوادودھ سے زیادہ سفید تھا، بنی آ دم کی خطاؤں نے اُسے سیاہ کردیا۔ ' (5)

خلینٹ ۱۳ ﷺ 🕝 ترمذی ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہا سے راوی ، کہتے ہیں میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کوفر ماتے سُنا کہ: ''حجرِ اسود ومقام ابراہیم جنت کے یا قوت ہیں،اللہ (عزوجل) نے ان کے نور کومٹا دیا اور اگر نہ مٹاتا تو جو پچھ مشرق ومغرب کے در میان ہے سب کوروش کردیتے۔'' ⁽⁶⁾

- ❶ "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الطواف ... إلخ، الحديث: ٦، ج٢، ص١٢٣.
 - **2** ····· "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب فضل الطواف، الحديث: ٧٩٩٧، ج٣، ص٤٣٩.
- 3 "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في فضل الطواف، الحديث: ٨٦٧، ج٢، ص ٢٤٤.
- ٢٨٦٠٠٠ "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في الكلام في الطواف، الحديث: ٩٦٢، ج٢، ص٢٨٦٠.
- 5..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في فضل الحجر الاسود و الركن و المقام، الحديث: ٨٧٨، ج٢، ص٢٤٨.
- ۳۰۰۰۰ "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في فضل الحجر الاسود و الركن و المقام، الحديث: ۸۷۹، ج۲، ص۲٤٨.

جهرارشريْعَتْ خِصْمْم (6)

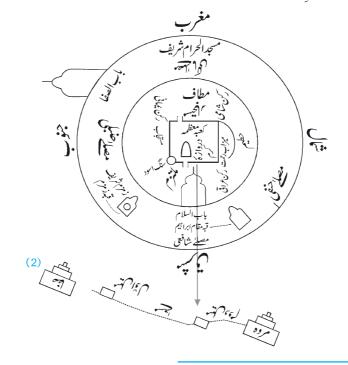
تر مذی وابن ماجه و دارمی ابن عباس رضی الله تعالی عنبها ہے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا:

''واللہ! حجرِ اسود کو قیامت کے دن اللہ تعالیٰ اس طرح اٹھائے گا کہ اس کی آٹکھیں ہوں گی جن سے دیکھے گا اور زبان ہوگی جس .

سے کلام کرے گا،جس نے حق کے ساتھ اُسے بوسد یاہے اُس کے لیے شہادت دے گا۔'' (1)

بيان احكام

مسجد الحرام شریف میں داخل ہونے تک کے احکام معلوم ہو چکے اب کہ مسجد الحرام شریف میں داخل ہوااگر جماعت قائم ہو یا نماز فرض یا وتریانماز جنازہ یا سنت موکدہ کے فوت کا خوف ہوتو پہلے اُن کو اداکرے، ورنہ سب کا موں سے پہلے طواف میں مشغول ہو۔ کعبی شع ہے اور تو پروانہ و کی کے گردکس طرح قربان ہوتا ہے تو بھی اس شع پرقربان ہونے کے میں مشغول ہو۔ کعبی شعر ہوا۔ کہا نافشہ دیکھیے کہ جوبات کہی جائے اچھی طرح ذہن میں آجائے۔



- 1 "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في الحجر الاسود، الحديث: ٩٦٣، ج٢، ص٢٨٦.
- و۔.... بہارشریعت کے نشخوں میں اس مقام پر صفاءمروہ کا نقشہ جنوب کی طرف بنا ہوا تھا جو کہ کتابت کی قلطی ہےاصل میں پینقشہ مشرق کی طرف ہے لہذا ہم نے یہاں پرنقشہ درست کر دیا۔... علمیہ

مسجد الحرام ایک گول وسیع احاطہ ہے، جس کے کنارے کنارے بکثرت دالان اور آنے جانے کے دروازے ہیں اور پھی میں اور پھی اور پھی اور پھی اور پھی اور پھی میں اور پھی میں اور پھی ا

مطاف(طواف کرنے کی جگہ)۔

مطاف ایک گول دائرہ ہے جس میں سنگ مرمر بچھا ہے،اس کے نیچ میں کعبہ معظمہ ہے۔حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ دملم

کے زمانہ میں مسجد الحرام اسی قدرتھی۔ اس کی حدیر باب السّلام مشرقی قدیم درواز ہوا قع ہے۔ رکن مکان کا گوشہ جہاں اُس کی دود بواریں ملتی ہیں، جسے زاویہ کہتے ہیں۔اس طرح مسلح الے۔ حب دونوں

ر میں مقام حریملی ہیں ہیر کن وزاد ہیے، کعبہ معظمہ کے عیار رکن ہیں۔ دیواریں مقام حریملی ہیں ہیر کن وزاد ہیہے، کعبہ معظمہ کے عیار رکن ہیں۔

ر کن اسود جنوب وشرق (1) کے گوشہ میں اس میں زمین سے او نیجا سنگ اسود شریف نصب ہے۔

رُ کنِ عراقی شرق وشال کے گوشہ میں۔درواز ہُ کعبہ اُٹھیں دور کنوں کے بیچ کی شرقی دیوار میں زمین سے بہت بلند ہے۔

ملتزم اسی شرقی دیوار کاوه کلرا جورکن اسود سے درواز هٔ کعبه تک ہے۔

رُ كنِ شِ**امى** اوتر ⁽²⁾ اور بِچھِتم ⁽³⁾ كے گوشہ ميں۔

ميزابِرحمت سونے كاپر ناله كه ركن عراقی وشامی كی الله كى شالى ديوار پر جھيت ميں نصب ہے۔

حطیم بھی ای ثالی دیوار کی طرف ہے۔ بیز مین ⁽⁴⁾ کعبۂ معظّمہ ہی کی تھی۔ زمانہ جاہلیت میں جب قریش نے کعبہ

ازسرنونغمیر کیا، کمی خرچ کے باعث اتنی زمین کعبۂ معظّمہ سے باہر چھوڑ دی۔اس کے گردا گردا کی انداز کی چھوٹی سی دیوار کھینج دی اور دونوں طرف آمدورفت کا درواز ہے اور بیمسلمانوں کی خوش نصیبی ہے اس میں داخل ہونا کعبہ معظّمہ ہی میں داخل ہونا ہے

جو بحمد الله تعالى بے تكلف نصيب ہوتا ہے۔

رُ کنِ مِمانی پچیم اور دکھن ⁽⁵⁾ کے گوشہ میں۔

مُستخاررُ کن بمانی وشامی کے چ کی غربی دیوار کاوہ گلڑا جوملتزم کے مقابل ہے۔

مُستجاب رُکنِ بمانی ورُکنِ اسود کے بیچ میں جود یوار جنوبی ہے، یہاں ستر ہزار فرشتے دعا پرآ مین کہنے کے لیے مقرر ہیں

اس لیےاس کا نام مستجاب رکھا گیا۔

- 1 جنوب اور مشرق ـ على الله عنال ـ
 - 3 مغرب _ وهسمت جدهر سورج ڈوبتا ہے _
- المجتمع المجتمع
 - **ئ**سجنوب كى سمت ـ

ييش ش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلاى)

مقام ابراهیم دروازهٔ کعبہ کے سامنے ایک قبہ میں وہ پھر ہے جس پر کھڑے ہوکر سیدنا ابراہیم خلیل الله علیہ الصلاۃ والسلام نے کعبہ بنایا تھا، ان کے قدم پاک کا اس پرنشان (1) ہوگیا جواب تک موجود ہے اور جے اللہ تعالیٰ نے المیت بیتے نت اللہ کی کھلی نشانیاں فرمایا۔

زَم زَم شریف کا قبدمقام ابرا ہیم سے جنوب کو مسجد شریف ہی میں واقع ہے اوراس قبہ کے اندرزَم زَم کا کوآں ہے۔ باب الصفام سجد شریف کے جنوبی وروازوں میں ایک وروازہ ہے جس سے نکل کرسامنے کو وصفاہے۔

صفا كعبه عظمه سے جنوب كو ہے يہال زمانة قديم ميں ايك يہاڑى تھى كەز مين ميں چھپ گئى ہے۔ اب وہال قبله رُخ

ایک دالان سابناہےاور چڑھنے کی سیر ھیاں۔

مروہ دوسری پہاڑی صفاہے پورب کوتھی یہاں بھی اب قبلدرخ دالان ساہے اور سٹر ھیاں ،صفاہے مروہ تک جوفاصلہ ہے اب یہاں باز ارہے۔صفاہے چلتے ہوئے دہنے ہاتھ کو دُ کا نیں اور بائیں ہاتھ کوا حاطۂ مسجد الحرام ہے۔

میلین انخصرین اس فاصلہ کے وسط میں جوصفا سے مروہ تک ہے دیوار حرم شریف میں دوسبز میل نصب ہیں جیسے میل کے شروع میں پتھرلگا ہوتا ہے۔

مسعطے وہ فاصلہ کہان دونوں میلوں کے ﷺ میں ہے۔ بیسب صور تیں رسالہ میں بار بار د مکھ کرخوب ذبن نشین کر لیجئے کہ وہاں پہنچ کر بوچھنے کی حاجت نہ ہو۔ ناواقف آ دمی اندھے کی طرح کام کرتا ہے اور جو مجھ لیاوہ انکھیارا ہے،اب اپنے ربء دبس کا میں کہ کے کرطواف کیجئے۔ نام ماک لے کرطواف کیجئے۔

طواف کا طریقه اور دُعائیں

(۱) جب ججرا سود کے قریب پہنچے تو مید عاریہ ھے:

لَا اِللهَ اِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ صَدَقَ وَعُدَهُ وَنَصَرَ عَبُدَهُ وهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحُدَهُ لَا اِللهُ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا اللهُ وَحُدَهُ لَا

🕕 ہمارے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے قدم پاک کے نشان میں بے قدرے، بےادب لوگ کلام کرتے ہیں پیم مجز ہ ابراہیمی ہزاروں برس سے محفوظ ہے اس سے بھی اٹکارکر دیں ۔ ۱۲

سس الله (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں، وہ تنہا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اس نے اپناوعدہ سچا کیا اور اپنے بندہ کی مدد کی اور تنہا اس نے کفار کی جماعتوں کو شکست دی، الله (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں، وہ تنہا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اُس کے لیے ملک ہے اور اس کے لیے حمد ہے اور وہ جماعتوں کو شکست دی، الله (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں، وہ تنہا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اُس کے لیے ملک ہے اور اس کے لیے حمد ہے اور وہ جماعتوں کو شکست دی، الله (عزوج لل) کے سواکوئی معبود نہیں، وہ تنہا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اُس کے لیے ملک ہے اور اس کے لیے حمد ہے اور وہ چھر ہے اور اس کے لیے حمد ہے اور وہ بھر شدی ہے تا کہ معروض کی معبود نہیں، وہ تنہا ہے اس کا کوئی شریک نہیں، اُس کے لیے ملک ہے اور اس کے لیے حمد ہے اور اس کے لیے معروض کی معروض کی معروض کے اس کے لیے حمد ہے اور اس کے لیے حمد ہے اور اس کے لیے حمد ہے اور اس کے لیے معروض کی معروض کی معروض کی معروض کے اس کے سور کی معروض کی معروض کی معروض کی معروض کی معروض کی معروض کے اس کے سور کی معروض کے معروض کی معروض کے معروض کی کر معروض کی کے معروض کی معروض کی دو معروض کی کر معروض کی کر معروض کی کر معروض کی کر معروض کی

يَثِي شُ: مجلس المدينة العلمية (وعوت اسلام)) €

(٢) شروع طواف سے پہلے مرداضطباع کر لے یعنی چادرکو دہنی بغل کے بنچے سے نکالے کہ دہنا مونڈ ھا کھلا رہے

اور دونوں کنارے بائیں مونٹر ھے پرڈال دے۔

(۳) اب کعبہ کی طرف موزھ کر کے چجرِ اسود کی دہنی طرف رُکنِ بمانی کی جانب سنگِ اسود کے قریب یوں کھڑا ہو کہ

تمام پھراپنے دہنے ہاتھ کورہے پھر طواف کی نیت کرے۔

اَللَّهُمَّ اِنِّي أُرِيدُ طَوَافَ بَيُتِكَ الْمُحَرَّمِ فَيَسِّرُهُ لِي وَتَقَبَّلُهُ مِنِّي . (1)

(۴) اس نیت کے بعد کعبہ کومونھ کے اپنی دہنی جانب چلو، جب سنگ اسود کے مقابل ہو (اوریہ بات ادنی حرکت میں حاصل ہوجائے گی) کانوں تک ہاتھ اس طرح اُٹھاؤ کہ ہتھیلیاں جرِ اسود کی طرف رہیں اور کہو بیسم اللّه وَ الْحَمُدُ لِلّهِ مِن حاصل ہوجائے گی) کانوں تک ہاتھ اس طرح اُٹھاؤ کہ ہتھیلیاں جرِ اسود کی طرف رہیں اور کہو بیسم اللّه وَ اللّهُ اَکْبَرُ وَ الصَّلَاةُ وَ السَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللّهِ طُ اور نیت کے وقت ہاتھ نہ اُٹھاؤ جیسے بعض مطوف کرتے ہیں کہ یہ بدعت ہے۔

(۵) میسر ہوسکے تو جحِرِ اسود پر دونوں ہتھیلیاں اور اُن کے بیچ میں مونھ رکھ کر یوں بوسد دو کہ آواز نہ پیدا ہو، تین باراییا ہی کرویہ نفسیب ہو تو کمالِ سعادت ہے۔ یقیناً تمھار مے مجبوب ومولے محمد رسول الله صلی الله تعالی علیہ ہلم نے اسے بوسہ دیا اور دُوئے اقد س اس پر رکھا۔ زہ خوش نصیبی کہ تمہارا مونھ وہاں تک پہنچے اور بجوم کے سبب نہ ہوسکے تو نہ اُوروں کو ایڈ اوو، نہ آپ د بوگھو بلکہ اس کے عوش ہاتھ سے چھو کر اسے چوم لواور ہاتھ نہ تو ہاتھوں سے اُس کی طرف اشارہ کر کے اُتھوں کی طرف اشارہ کر کے آئھوں پڑ رہی ہیں یہی کیا تم ہے اور ججرکو بوسہ دینے یا ہاتھ یا کہ گھو کر چوم لینے یا اشارہ کر کے ہاتھوں کو بوسہ دینے کو استلام کے وقت یہ دورا چھو کر چوم لینے یا اشارہ کر کے ہاتھوں کو بوسہ دینے کو استلام کے وقت یہ دورا پڑھے:

اَللَّهُمَّ اغْفِرُ لِیُ ذُنُوبِیُ وَطَهِّرُ لِیُ قَلْبِیُ وَاشُرَحُ لِیُ صَدُدِیُ ویَسِّرُلِیُ اَمُدِیُ وَعَافِنی فِیْمَنُ عَافَیْتَ . (2)

حدیث میں ہے،''روزِ قیامت سے پھراُ ٹھایا جائے گا،اس کی آٹکھیں ہوں گی جن سے دیکھے گا،زبان ہوگی جس سے

کلام کرے گا،جس نے قت کے ساتھ اُسکا بوسہ دیا اوراستلام کیا اُس کے لیے گواہی دے گا۔''

(٦) اَللَّهُمَّ اِيْمَانًا ۚ بِكَ وَتَصُدِ يُقًا ۚ بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً ۚ بِعَهْدِكَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى

🕕 اے اللہ(عزوجل)! میں تیرےعزت والے گھر کا طواف کرنا چاہتا ہوں اس کو تو میرے لیے آسان کراوراس کو مجھ ہے قبول کر ۔۲۱

2 البی! تو میرے گناہ بخش دے اور میرے دل کو پاک کراور میرے سینہ کو کھول دے اور میرے کام کوآسان کراور مجھے عافیت دے ان مجمع میں جب کر میں میں میں میں اور میرے دل کو پاک کراور میرے سینہ کو کھول دے اور میرے کام کوآسان کراور مجھے عافیت دے ان

لوگوں میں جن کو تونے عافیت دی۔۱۲

اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَشُهَدُ اَنُ لَآ اِللهَ اللهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَاشُهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُهُ وَرَسُولُهُ امْنُتُ بِاللهِ وَكَفَرُتُ بِالْجِبُتِ وَالطَّاغُونِ . (1)

کہتے ہوئے درواز ہ کعبہ کی طرف بڑھو، جب ججر مبارک کے سامنے سے گز رجاؤ سیدھے ہولو۔ خانۂ کعبہ کواپنے بائیں ہاتھ پرلے کریوں چلو کہ کسی کوایذ اندوو۔

(۷) پہلے تین پھیروں میں مردرال کرتا چلے بینی جلد جلد چھوٹے قدم رکھتا، شانے ہلاتا جیسے توی و بہا درلوگ چلتے ہیں، نہ گو دتا نہ دوڑتا، جہال زیادہ ہجوم ہوجائے اور رئل میں اپنی یا دوسر ہے کی ایذا ہوتو اتنی دیر رئل ترک کرے مگر رئل کی فاطر رُ کے نہیں بلکہ طواف میں مشغول رہے پھر جب موقع مل جائے، تو جتنی دیر تک کے لیے ملے رَئل کے ساتھ طواف کر ہے۔ فاطر رُ کے نہیں بلکہ طواف میں جس قدر خانۂ کعبہ سے نزدیک ہو بہتر ہے مگر ندا تنا کہ پشتہ دیوار پرجسم لگے یا کپڑا اور نزدیکی میں کشر ہو ہجوم کے سبب رمل نہ ہو سکے تو دُوری بہتر ہے۔

(٩) جب ملتزم كسامنية يروعاراهي:

اَللَّهُمَّ هَذَا الْبَيْتُ بَيْتُكَ وَالْحَرَمُ حَرَمُكَ وَالْاَمْنُ اَمْنُكَ وهَذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ النَّارِ فَاَجِرُنِيُ مِنَ النَّارِ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا مِنَ النَّاهُ مَّ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا مِنَ النَّهُ وَحُدَهُ لَا اللَّهُ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا مُلْكُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ مَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ لَا اللَّهُ اللَّ

اور جب رُكن عراقی كے سامنے آئے تو بيدها يرهے:

اَللَّهُمَّ اِنِّى اَعُوُدُ بِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشِّرُكِ وَالشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوءِ الْاَخُلاقِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْاَهُلِ وَالْوَلَدِ . (3)

2 اے اللہ (عزوج)! بیگر تیرا گھر ہے اور حرم تیراحرم ہے اور امن تیری ہی امن ہے اور جہنم سے تیری پناہ ما نکنے والے کی بیجگہ ہے تو مجھ کو جہنم سے پناہ دے۔اے اللہ (عزوجل)! جوتونے مجھ کو دیا مجھے اس پر قانع کردے اور میرے لیے اس میں برکت دے اور ہر عائب پر خیر کے ساتھ تو خلیفہ ہوجا۔اللہ (عزوجل) کے سواکوئی معبوذہیں، جواکیلا ہے اُس کا کوئی شریک نہیں اور اس کے لیے ملک ہے، اُس کے لیے حمد ہے اور وہ ہرشے پر قادر ہے۔

الله (عزوجل)! میں تیری پناه ما نکتا ہوں شک اور شرک اور اختلاف ونفاق سے اور مال واہل واولا دمیں واپس ہوکر بُری بات دیکھنے ہے۔ ۱۲

اورجب ميزاب رحمت كسامخ آئ تويد عايره ها:

اَللَّهُ مَّ اَظِلَّنِيُ تَحُتَ ظِلِّ عَرُشِکَ يَوُمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّکَ وَلَا بَاقِيَ اِلَّا وَجُهُکَ وَاسُقِنِيُ مِنُ حَوُضِ نَبِيِّکَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيُهِ وَسَلَّم شَرُبَةً هَنِيئَةً لَّا اَظُمَأُ بَعُدَهَا اَبَدًا (1)

اور جب رُكنِ شامی كے سامنے آئے تو بيده عاريہ هے:

اَللَّهُ مَّ اجْعَلُهُ حَجًّا مَّبُرُورًا وَّسَغْيًا مَّشُكُورًا وَّذَنْبًا مَّغْفُورًا وَّتِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ يَا عَالِمَ مَا فِي الصُّدُورِ اَخُر جُنِيُ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ. (2)

(۱۰) جبرُ کنِ بمانی کے پاس آؤ تواہے دونوں ہاتھ یا دہنے سے تبرگاً چھوؤ، نہ صرف بائیں سے اور چا ہوتو اُسے بوسہ بھی دواور نہ ہو سکے تو بہال ککڑی سے چھونا یا اشارہ کرکے ہاتھ چومنانہیں اور بید عاربے ھو:

اَللّٰهُمَّ اِنِّيُ اَسُأَلُكَ الْعَفُوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّيُنِ وَالدُّنْيَا وَالْأَخِوَةِ. اوررُكنِ شامى ياعراقى كوچھونايا بوسدوينا پچھ بيں۔

(۱۱) جب اس سے بڑھوتو بیمُستجاب ہے جہاں ستر ہزار فرشتے دعا پر آمین کہیں گے وہی دعائے جامع پڑھو، یا

رَبِينَا النّافِي اللهُ نَيَاحَسَنَةً وَفِي الْهُ خِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَاعَنَ ابَالنّاسِ. يا بِن اورسب احباب وسلمين اوراس حقير ذليل كي نيت سے صرف درووشريف برِ هے كه بيكا في و وافي ہے۔ دعائيں يا د نه ہوں تو وہ اختيار كرے كه محمد رسول الله صلى الله تعالى عليه بلم كے سيے وعدہ سے تمام دعاؤں سے بہتر وافضل ہے بعنى يہال اور تمام مواقع ميں اپنے ليے دعا كے بدلے حضور اقدس على الله تعالى عليه بلم بر درود بھیجے۔ رسول الله على الله عل

- (۱۲) طواف میں دعایا درووشریف پڑھنے کے لیےرکونہیں بلکہ چلتے میں پڑھو۔
- (۱۳) دُعاودرود چلاچلا کرنه پڑھوجیسے مطوف پڑھایا کرتے ہیں بلکہ آہتہ پڑھواس قدر کہا پنے کان تک آواز آئے۔
- 🕕الٰہی! تو مجھ کواپیۓ عرش کے ساہید میں رکھ، جس دن تیرےساہیہ کے سوا کوئی سایٹہیں اور تیری ذات کے سوا کوئی باتی نہیں اوراپیخ نبی محمد صلی اللہ تعالی علیہ دسکم کے عوش سے مجھے خوش گواریا فی ہلا کہ اس کے بعد بھی پیاس نہ لگے۔۱۲
- الله (عزوجل)! تواس کوچ مبر ورکراورسعی مشکور کراور گناه کو بخش دے اوراُس کووه تجارت کردے جو ہلاک نہ ہو، اے سینول کی باتیں
 جاننے والے جھے کو تاریکیوں نے نور کی طرف نکال ۱۲
 - 3 "جامع الترمذي"، ابواب صفة القيامة، ٢٣ ـ باب، الحديث: ٢٥ ٢٤، ج٤، ص٧٠٠.

(۱۴) اب جو جاروں طرف گھوم کر حجراسود کے باس پہنجا، یہ ایک پھیبرا ہوااوراس وقت بھی حجراسود کو بوسہ دے باوہ ی

طریقے برتے بلکہ ہر پھیرے کے ختم پریہ کرے۔ یو ہیں سات پھیرے کرے مگر باقی پھیروں میں نیت کرنانہیں کہ نیت تو شروع میں ہوچکی اور رال صرف اگلے تین پھیروں میں ہے، باقی حارمیں آ ہت بغیر شانہ ہلائے معمولی حال چلے۔

(۱۵) جب ساتوں پھیرے بورے ہوجائیں آخر میں پھر حجراسود کو بوسہ دے یا وہی طریقے ہاتھ یا لکڑی کے برتے اس طواف کوطواف قُد وم کہتے ہیں یعنی حاضری دربار کا مجرا۔ یہ باہر والوں کے لیے مسنون ہے یعنی ان کے لیے جومیقات کے باہر سے آئے ہیں، مکہ والوں یامیقات کے اندر کے رہنے والوں کے لیے بیطواف نہیں ہاں اگر مکہ والا میقات سے باہر گیا تو اسے بھی طواف قد وم مسنون ہے۔

طواف کے مسائل

مست کا کہ طواف میں نیت فرض ہے، بغیر نیت طواف نہیں مگر بیشر طنہیں کہ سی معین طواف کی نیت کرے بلکہ ہر طواف مطلق نیت ِطواف سے ادا ہوجا تا ہے بلکہ جس طواف کوکسی وقت میں معین کر دیا گیا ہے، اگر اس وقت کسی دوسر بے طواف کی نیت سے کیا توبید دوسرانہ ہوگا بلکہ وہ ہوگا جومعین ہے۔مثلاً عمرہ کا احرام باندھ کر باہر سے آیا اور طواف کیا توبیعمرہ کا طواف ہے اگر چہہ نیت میں پینہ ہو۔ یو ہیں جج کا احرام باندھ کر باہر والا آیا اور طواف کیا تو طواف قد وم ہے یاقر ان کا احرام باندھ کر آیا اور وطواف کیے تو پہلاعمرہ کا ہے، دوسرا طواف قدوم یا دسویں تاریخ کوطواف کیا تو طواف زیارت ہے، اگر چہان سب میں نیت کسی اور کی مهو_⁽¹⁾ (منسک)

مستانی کی جیر یقه طواف کا جو مذکور ہواا گرکسی نے اس کے خلاف طواف کیا مثلاً بائیں طرف سے شروع کیا کہ کعبہ معظم طواف کرنے میں سیدھے ہاتھ کور ہایا کعبہ معظمہ کومونھ یا پیٹھ کر کے آٹا آٹا طواف کیایا حجر اسود سے شروع نہ کیا توجب تک مکہ معظم میں ہے اس طواف کا اعادہ کرے اور اگر اعادہ نہ کیا اور وہاں سے چلا آیا تو ؤم واجب ہے۔ یو ہیں حطیم کے اندر سے طواف کرنا نا جائز ہے لہٰذا اس کا بھی اعادہ کرے۔ جاہیے تو یہ کہ پورے ہی طواف کا اعادہ کرے اورا گرصرف خطیم کا سات بارطواف کرلیا کہ رُکن عراقی ہے رُکن شامی تک حطیم کے باہر باہر گیا اور واپس آیا، یو ہیں سات بار کرلیا تو بھی کافی ہے اور اس صورت میں افضل ہیہے کہ حطیم کے باہر باہر واپس آئے اوراندر سے واپس ہواجب بھی جائز ہے۔ (²⁾ (درمختار ، ردامختار)

- 1 "المسلك المتقسط في المنسك المتوسط"، (انواع الاطوفة و احكامها)، ص ١٤٥.
- 🧣 👂 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في دخول مكة، ج٣، ص٩٧٥.

🦓 مستان 👚 طواف سات پھیروں برختم ہو گیا،ابا گرآ ٹھواں پھیرا جان بوجھ کر قصداً شروع کر دیا تویہ ایک جدید

طواف شروع ہوا،اہے بھی اب سات پھیرے کر کے ختم کرے۔ یو ہیں اگر محض وہم ووسوسہ کی بنا پر آٹھواں پھیرا شروع کیا کہ

شایدابھی چیر ہی ہوئے ہوں جب بھی اسے سات پھیرے کرکے ختم کرے۔ ہاں اگر اس آٹھویں کوساتواں گمان کیا بعد میں معلوم ہوا کہ سات ہو چکے ہیں تواسی پرختم کردے سات پورے کرنے کی ضرورت نہیں۔(1) (درمختار،ردالحتار)

سَسَعَالُهُ ﴾ طواف کے پھیروں میں شک واقع ہوا کہ کتنے ہوئے تو اگرطواف فرض یا واجب ہے تو اب سے سات

پھیرے کرےاورا گرکسی ایک عادل شخص نے بتادیا کہاتنے پھیرے ہوئے تو اُس کے قول پڑمل کرلینا بہتر ہےاور دوعادل نے

بتایا توان کے کیے برضرورعمل کرےاورا گرطواف فرض یاواجب نہیں ہے تو غالب گمان بڑمل کرے۔(2) (ردالحتار) مَسْعًا ﴾ طواف كيانه بوالحرام شريف كاندر بوگا اگرمسجد كے باہر سے طواف كيانه بوا۔ (3) (درمخار)

سَسَانُ الله جوالیا بیارہے کہ خود طواف نہیں کرسکتا اور سور ہاہے اُس کے ہمراہیوں نے طواف کرایا، اگر سونے سے پہلے حکم دیا تھا توضیح ہے ور نہیں۔⁽⁴⁾ (عالمگیری)

سَسَانُ کی ﴾ مریض نے اپنے ساتھیوں ہے کہا، مز دور لا کر مجھے طواف کرا دو پھر سو گیا، اگر فوراً مز دور لا کر طواف کرا دیا تو ہو گیا اور اگر دوسرے کام میں لگ گئے ، دہر میں مز دور لائے اور سوتے میں طواف کرایا تو نہ ہوا مگر مز دوری بہر حال لا زم ے۔⁽⁵⁾(عالمگیری)

کےطواف ہوں ۔(6)(عالمگیری)

مَسِيًّا ﴾ ﴿ وَاللَّهِ اللَّهِ عَلَا مِن عَمَا زِجنازه مِا نما زِفرض ما نيا وضوكر نے كے ليے چلا گيا تو واپس آ كرأسي بہلے طواف ير بِنا کرے یعنی جتنے پھیرے رہ گئے ہوں انھیں کرلے طواف پورا ہوجائے گا،سرے سے شروع کرنے کی ضرورت نہیں اورسرے

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص ٥٨١.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص١٨٢.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٢.
- 4.... "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، فصل في المتفرقات، ج١، ص٢٣٦.
 - 5 المرجع السابق.
 - 6المرجع السابق.

ييش ش: مطيس المدينة العلمية (وعوت اسلام) 🥇

🥌 سے کیا جب بھی حرج نہیں اوراس صورت میں اس پہلے کو پورا کرنا ضرورنہیں اور پنا کی صورت میں جہاں سے جھوڑ اتھا، وہیں سے شروع کرے ججراسود سے شروع کرنے کی ضرورت نہیں۔ بیسباس وقت ہے جب کہ پہلے جار پھیرے سے کم کیے تھاورا گر جار پھیرے یازیادہ کیے تھے تو بنا ہی کرے۔⁽¹⁾ (در مختار ، ر دالحتار)

سَسَانُ الرَّاكِ اللهِ طواف كرر ما تھا كہ جماعت قائم ہوئى اور جانتاہے كہ پھيرا بورا كرے گا توركعت جاتى رہے گی، يا جناز ہ آ گیا ہے انتظار نہ ہوگا تو وہیں سے چھوڑ کرنماز میں شریک ہوجائے اور بلاضرورت چھوڑ کر چلا جانا مکروہ ہے مگر طواف باطل نہ ہوگا لعنی آکر پوراکرلے۔⁽²⁾ (روالختار)

سَسَاكُ الله استحكم ہے كہ وضوكر كے بعد وقت نماز جاتا رہا تو اب استحكم ہے كہ وضوكر كے طواف کرے کیونکہ وقت ِنماز خارج ہونے سے معذور کا وضوجاتار ہتا ہے اور بغیر وضوطواف حرام اب وضوکرنے کے بعد جو باقی ہے پورا کرےاور حیار پھیروں سے پہلے وفت ختم ہو گیا جب بھی وضو کر کے باقی کو پورا کرےاوراس صورت میں افضل یہ ہے کہ سرے $(3)_{-2}$

سَسَالُ ١٦ ﴾ رَمَل صرف تين پهلے پھيرول ميں سنت ہے ساتوں ميں كرنا مكروه للمذاا كر پہلے ميں نہ كيا تو صرف دوسرے اور تیسرے میں کرےاور پہلے تین میں نہ کیا تو ہاتی چار میں نہ کرے ،اگر بھیڑ کی وجہ سے رَمَل کا موقع نہ ملے تو رَمَل کی خاطر نہ رکے، بلا رَمَل طواف کرلے اور جہاں جہاں موقع ہاتھ آئے اُتنی دور رمل کرلے اور اگر ابھی شروع نہیں کیا ہے اور جانتا ہے کہ بھیڑی وجہ سے رَمَل نہ کر سکے گا اور بیجھی معلوم ہے کہ گھبر نے ہے موقع مل جائے گا توانتظار کرے۔⁽⁴⁾ (درمختار ، ردالحتار) ، سَسَانُ الله الرطواف میں سنت ہے جس کے بعد سعی ہو، لہذا اگر طواف قدوم کے بعد کی سعی طواف زیارت

تک مؤخر کرے تو طوا نب قدوم میں رَمَل نہیں۔ (5) (عالمگیری)

طواف کے بعد کی نماز میں اگر اِضطباع کیا تو مکروہ ہےاور اِضطباع صرف اُسی طواف میں ہے جس کے بعد سعی ہواورا گرطواف

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٢.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٢.
- 3 "المسلك المتقسط"، (انواع الاطوفة و احكامها، فصل في مسائل شتي)، ص١٦٧.
- 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٣.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.

🐉 کے بعد سعی نہ ہوتو اِضطباع بھی نہیں۔⁽¹⁾ (منسک)

میں نے بعض مطوف کو دیکھا کہ خباج کو وقت احرام ہے ہدایت کرتے ہیں کہ اِضطباع کیے رہیں، یہاں تک کہ نماز

احرام میں اِضطباع کیے ہوئے تھے حالانکہ نماز میں مونڈ ھا کھلار ہنا مکروہ ہے۔

سکا اسکا اسکا است میں خصوصیت کے ساتھ الی باتوں سے پر ہیز رکھے جنھیں شرعِ مطہر پیند نہیں کرتی۔ امر داور عورتوں کی طرف بُری نگاہ نہ کرے، کسی میں اگر چھے عیب ہویا وہ خراب حالت میں ہوتو نظرِ حقارت سے اُسے نہ دیکھے بلکہ

نماز طواف

اُ ہے بھی نظر حقارت سے نہ ویکھے، جواپنی نادانی کے سبب ارکان ٹھیک ادائہیں کرتا بلکہ ایسے کونہایت نرمی کے ساتھ سمجھا دے۔

(۱۲) طواف کے بعد مقام ابراھیم میں آگرآیۂ کریمہ ﴿ وَانْتَخِنُ وَامِنَ مَّقَامِ اِبْرَاهِمَ مُصَلَّی اَ ﴾ (2) پڑھ کردو رکعت طواف پڑھ اور یہ نماز واجب ہے پہلی میں قُل آپ دوسری میں قُل مُحَوَاللّٰهُ پڑھے بشرطیکہ وقت کراہت مثلاً طلوع صبح سے بلندی آفتاب تک یا دو پہر یا نماز عصر کے بعد غروب تک نہ ہو، ورنہ وقت کراہت نکل جانے پر پڑھے۔ حدیث میں ہے: "جومقام ابرا ہیم کے پیچھے دور کعتیں پڑھے، اس کے اگلے پچھلے گناہ بخش دیے جائیں گے اور قیامت کے دن امن والوں میں محشور ہوگا۔" (3) یور کعتیں پڑھ کر دعا ما نگے۔ یہاں حدیث میں ایک دعا ارشاد ہوئی، جس کے فائدوں کی عظمت اس کا لکھنا ہی جا ہتی ہے۔

اَللَّهُمَّ اِنَّکَ تَعُلَمُ سِرِّیُ وَعَلَانِیَتیُ فَاقْبَلُ مَعُذِرَتِیُ وَتَعُلَمُ حَاجَتِیُ فَاَعُطِنِی سُؤْلِیُ وَتَعُلَمُ مَا فِی نَفُسِیُ فَاعُورُلِیُ ذُنُوبِیُ اَللَّهُمَّ اِنِّیُ اَسُأَلُکَ اِیُمَانَا یُّبَاشِرُ قَلْبِیُ وَیَقِیْنَا صَادِقاً حَتّٰی اَعُلَمَ اَنَّهُ لَا یُصِیبُنِیُ اِلَّا مَا کَتَبُتَ فَاعُورُلِیُ ذُنُوبِی اَللَّهُمَّ اِنِّی اَسُمُتَ لِیُ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ . (4)

- 1 المسلك المتقسط"، (فصل في صفة الشروع في الطواف)، ص ١٢٩.
 - 2 ۱۰ البقره: ۱۲ . ترجمه: اور مقام ابرا ہیم سے نماز کی جگه بناؤ۔
- الشفاء"، الباب الرابع في حكم الصلاة عليه، فصل فيما يلزم من دخل مسجد النبي صلى الله عليه وسلم، الجزء٢، ص٩٣.
- ……اےاللہ(عزوجل)! تو میرے پوشیدہ اور ظاہر کو جانتا ہے، تو میری معذرت کو قبول کر اور تو میری حاجت کو جانتا ہے، میر اسوال مجھ کو عطا کر اور جو پکھ میرے نفس میں ہے تو اسے جانتا ہے تو میرے گنا ہول کو بخش دے۔اےاللہ (عزوجل)! میں تجھ سے اُس ایمان کا سوال کرتا ہوں جو میرے قلب میں سرایت کر جائے اور یقین صادق مانگتا ہوں تا کہ میں جان اوں کہ مجھے وہی پہنچے گا جو تو نے میرے لیے لکھا ہے اور جو پکھ تو نے میرے قلب میں سرایت کر جائے اور یقین صادق مانگتا ہوں تا کہ میں جان اوں کہ مجھے وہی پہنچے گا جو تو نے میرے لیے لکھا ہے اور جو پکھ تو نے میری قسمت میں کیا ہے اُس پر راضی رہوں ،اےسب مہر ہانوں سے زیادہ مہر ہان!۔۱۲

حدیث میں ہے،اللہ عزوج فرما تا ہے: ''جوید عاکرے گامیں اس کی خطا بخش دوں گا جُم دورکروں گا مختا جی اُس سے نکال لوں گا ، ہرتا جرسے بڑھ کراس کی تجارت رکھوں گا ، و نیا ناچار و مجبوراً س کے پاس آئے گی اگرچہ وہ اُسے نہ چاہے۔'' (1) اس مقام پر بعض اور دعا کیں نہ کور ہیں مثلاً اَللّٰهُ مَّ اِنَّ هٰذَا بَلَدُکَ الْحَرَامُ وَ مَسْجِدُکَ الْحَرَامُ وَ بَیْتُکَ الْحَرَامُ وَ اَیْتُکَ الْحَرَامُ وَ اَیْتُکَ الْحَرَامُ وَ اَیْتُکَ الْحَرَامُ وَ اَیْتُکَ الْعَرَامُ وَ اَیْتُکَ اللّٰہُ مَالًا سَیّئَةٍ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِکَ مِنَ النَّارِ اَللَّهُمَّ عَافِنَا وَانْفُ عَنَّا وَاغْفُرُ لَنَا إِنَّکَ اَنْتَ الْعَفُورُ الرَّحِیْمُ . (2)

<u> مسئان کا آگ</u> اگر بھیڑ کی وجہ سے مقام ِ ابراہیم میں نماز نہ پڑھ سکے تو مبحد شریف میں کسی اور جگہ پڑھ لے اور مبحد الحرام کے علاوہ کہیں اور پڑھی جب بھی ہوجائے گی۔⁽³⁾ (عالمگیری)

مسئان کا ہے۔ مقام ابراہیم کے بعداس نماز کے لیے سب سے افضل کعبہ معظمہ کے اندر پڑھنا ہے پھر حطیم میں میزابِ رحمت کے بیچے اس کے بعد طیم میں کسی جگہ پھر حرم ملّہ کے اندر رحمت کے بیچے اس کے بعد طیم میں کسی اور جگہ پھر کعبہ معظمہ سے قریب تر جگہ میں پھر مجد الحرام میں کسی جگہ پھر حرم ملّہ کے اندر جہاں بھی ہو۔ (4) (لباب)

مسئان 10 و سنت یہ ہے کہ وقت کراہت نہ ہوتو طواف کے بعد فوراً نماز پڑھے، نی میں فاصلہ نہ ہواورا گر نہ بڑھی تو عمر بحر میں جب پڑھے گا ،ادا ہی ہے قضا نہیں مگر بُرا کیا کہ سنت فوت ہوئی۔(5) (منسک)

مسئان 10 کے فرض نمازان رکعتوں کے قائم مقام نہیں ہوسکتی۔(6) (عالمگیری)

🥻 ملتزم سے لپٹنا 🦫

(١٤) نماز ودعا سے فارغ ہوکر ملتزم کے پاس جائے اور قریب چجراُس سے لیٹے اور اپناسینہ اور پیٹ اور تبھی دہنا

- 1 "المسلك المتقسط"، ص١٣٨. "تاريخ دمشق"لابن عساكر، ج٧، ص٤٣١. "الفتاوي الرضوية"، ج١٠ ٥٠٠.
- 2اے الله (عزوجل)! بیرتیراعزت والاشهر ہے اور تیری عزّت والی معجد ہے اور تیراعزّت والا گھر ہے اور میں تیرا بندہ ہوں اور تیرے بندہ اور تیری باندی کا بیٹا ہوں بہت سے گنا ہوں اور بڑی خطاؤں اور بُر ےاعمال کے ساتھ تیرے حضور حاضر ہوا ہوں اور جہنم سے تیری پناہ ما نگنے والے کی پیجگہ ہے۔اے الله (عزوجل)! تو ہمیں عافیت دے اور ہم ہے معاف کر اور ہم کو بخش دے ، بیٹنگ تو بڑا بخشے والامہر بان ہے۔ ۱۲
 - الفتاوى الهندية "، كتاب المناسك، الباب الخامس، في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.
 - 4 "لباب المناسك" للسندى، ص ١٥٦.
 - 5 "المسلك المتقسط"، (فصل في ركعتي الطواف)، ص٥٥١.
 - 🐒 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.

خیارہ اور کبھی بایاں اور کبھی رخ سارااس پرر کھے اور دونوں ہاتھ سر سے او نچے کر کے دیوار پر پھیلائے یا دا ہنا ہاتھ درواز ہ کعبہ اور بایاں ججرا سود کی طرف پھیلائے ، یہاں کی دعابیہے:

يًا وَاجِدُ يَا مَاجِدُ لَا تُزِلُ عَنِّي نِعُمَةً أَنْعَمُتَهَا عَلَىَّ . (1)

حدیث میں فرمایا: ''جب میں چاہتا ہوں جبریل کو دیکھتا ہوں کہ مُلتَزَّ م سے لیٹے ہوئے یہ دعا کر رہے ہیں۔'' (2) نہایت خضوع وخشوع وعاجزی وائکسار کے ساتھ دعا کرے اور درو دشریف بھی پڑھے اور اس مقام کی ایک دعایہ بھی ہے:

اللهي وَقَفْتُ بِبَابِكَ وَالْتَزَمْتُ بِاَعْتَابِكَ اَرْجُو رَحُمَتَكَ وَالْحُشَى عِقَابَكَ اَللَّهُمَّ حَرِّمُ شَعْرِى اللهِي وَقَفْتُ بِبَابِكَ وَالْتَزَمْتُ بِاعْتَابِكَ اَرْجُو رَحُمَتَكَ وَاحُشَى عِقَابَكَ اَللَّهُمَّ حَرِّمُ شَعْرِي وَجَهِى عَنِ اللَّهُمَّ وَجَهِى عَنِ مَسْأَلَةٍ غَيْرِكَ اللَّهُمَّ وَجَهِى عَنُ مَسْأَلَةٍ غَيْرِكَ اللَّهُمَّ يَا رَبَّ الْبَيْتِ الْعَيْنِي الْخَيْقِ اعْتِقُ رِقَابَنَا وَرِقَابَ ابْآئِنَا وَأُمَّهَاتِنَا مِنَ النَّارِ

يَا كَرِيهُمْ يَا غَفَّارُ يَا عَزِيْزُ يَا جَبَّارُ رَبَّنَا تَقَبَّلُ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ وَتُبُ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ وَتُبُ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ وَالْحَفِنَا كُلَّ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ وَالْحَفِنَا كُلَّ التَّوْابُ الرَّحِيمُ وَالْحَفِنَا كُلَّ اللَّهُمَّ الْحَمْدُ اللَّهُمَّ الْحَمْدُ اللَّهُمَّ الْحَمْدُ وَقَدِكَ عَلَيْكَ اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلَيْكَ وَافُولِكَ عَلَيْكَ اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلَي اللهُ وَصَحِيم وَالْحِيمِ وَالْحَمْدُ وَافُولِكَ وَافُولَكَ وَافُولِكَ عَلَيْكَ اللهُ وَصَحِيمِ عَلَى اللهِ وَصَحِيمِ وَالْكِيمُ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمَا اللهُ وَصَحِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمُومِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمُومِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمُومِ وَالْمِيمِ وَالْمُومِ وَالْمِيمُ وَالْمُومِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمِيمِ وَالْمُهُ وَالْمَالِكَ وَالْمُعُمُ وَالْمُعُمُ وَالْمُعُمُ وَالْمُ وَالْمُعُمُ وَالْمُعُمُ وَالْمُعُمُ وَالْمُومُ وَالْمُومِ وَالْمُعُمُ وَالْمُعُومُ وَالْمُومُ وَالْمُومُ وَالْمُومُ وَلَالَامِ وَالْمُعُمُ وَالْمُومُ وَ

- 1ا عقدرت والے! اے بزرگ! تونے مجھے جونعت دی، اس کو مجھ سے زائل نہ کر۔ ۱۲
 - 2 "الفتاوى الرضوية"، ج٠١، ص٧٤٢.
- 3الهی! میں تیرے دروازہ پر کھڑا ہوں اور تیرے آستانہ سے چیٹا ہوں تیری رحمت کا امید دار اور تیرے عذاب سے ڈرنے والا ، اے اللہ (عزوجل)! جس طرح تونے میرے چیرہ کوا پنے غیرے لیے بحدہ کرنے سے محفوظ رکھا اس طرح اس سے محفوظ رکھ کہ تیرے غیر سے سوال کروں ، اے اللہ (عزوجل)! اے اس آزاد گھرے مالک! تو ہماری گردنوں کواور ہمارے باپ، دادااور ہماری ماؤل کی گردنوں کو جہنم ہے آزاد کردے۔

اے کریم! اے بخشنے والے! اے غالب! اے جبار! اے رب! تو ہم سے قبول کر، بیشک تو سننے والا ، جانے والا ہے اور ہماری تو بہول کر بیشک تو سننے والا ، جانے والا ہے اور ہماری تو بہول کر بیشک تو تو بہول کر نے والا مہر بان ہے۔ اے اللہ (عزومل)! اے اس آزاد گھر کے مالک! ہماری گردنوں کو جہنم سے آزاد کر اور شیطان مر وُود سے ہم کو پناہ دے اور ہر بر اُنی سے ہماری کفایت کر اور جو بچھ تو نے دیا اُس پر قانع کر اور جو دیا اس میں برکت و ہ اور اپنے عزّت والے وفد میں ہم کو کردے ، اللہی! تیرے ہی لیے جمد ہے تیری نعتوں پر اور افضل وُرود انبیا کے سردار پر اور تیرے تمام رسولوں اور برگزیدہ لوگوں پر اور اُن کی آل و اصحاب اور تیرے اولیاء پر ۱۲

🕏 مسکاڑی 🔫 🐣 ملتزم کے پاس نماز طواف کے بعد آنا اس طواف میں ہے جس کے بعد سعی ہےاور جس کے بعد سعی نہ ہو اس میں نماز سے پہلے مُلئز م سے لیٹے پھرمقام ابراہیم کے پاس جاکر دورکعت نماز پڑھے۔(1) (منسک)

ڑ کم زُم کی حاضری ُ

(۱۸) پھرزم زم برآؤاور ہوسکے تو خود ایک ڈول کھینچو، ورنہ بھرنے والوں سے لے لواور کعبہ کوموزھ کر کے تین سانسوں میں پیٹ بھرکر جتنا پیاجائے کھڑے ہوکر پیو، ہربار بسٹ اللہ سے شروع کرواور اُلْحَمْدُ لِلَّهِ بِرِختم اور ہربار کعبہ معظمہ کی طرف نگاہ اُٹھا کر دیکھ لو، باتی بدن پر ڈال لویا مونھ اور سراور بدن پراس ہے سے کرلواوریپیتے وقت دعا کرو کہ قبول ہے۔ رسول الله صلى الله تعالى عليه وللم فرمات عبين: ' وزم زم جس مراوسے پياجائے اُسی کے ليے ہے۔' (2) اس وقت کی دعاميہ ہے: اَللَّهُمَّ اِنِّي اَسْأَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزُقًا وَّاسِعًا وَّعَمَلاً مُّتَقَبَّلاً وَّشِفَآءً مِّنُ كُلِّ دَآءٍ . (3)

یا وہی دعائے جامع پڑھواور حاضری مکہ معظمہ تک تو بار ہاپینا نصیب ہوگا بھی قیامت کی پیاس سے نیچنے کو پیو بھی عذاب قبر سے محفوظی کو بمبھی محبت ِ رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وَسلم بڑھنے کو بمبھی وسعت رز ق بمبھی شفائے امراض بمبھی حصول علم وغیر ہا خاص خاص مُر ادوں کے لیے بیو۔

(۱۹) وہاں جب ہیو ہیٹ بھر کر پیو۔ حدیث میں ہے:''ہم میں اور منافقوں میں پیفرق ہے کہ وہ زمزم کو کھ بھر

نہیں بیتے۔' (4)

(۲۰) جاوِز مزم کے اندرنظر بھی کروکہ بھکم حدیث دافع ِ نفاق ہے۔ (5)

صَفا و مروہ کی سَعی

(۲۱) اب اگرکوئی عذر نکان وغیرہ کا نہ ہو تو ابھی ، ورنہ آرام لے کرصفامروہ میں سعی کے لیے پھر ججرا سود کے پاس آؤ اوراسى طرح تكبير وغيره كهدكر چومواورنه بوسك تواس كى طرف مؤهرك اللله أتُحبَو وَلَا إلله والله والدَحمهُ لله اور

- 1 "المسلك المتقسط"، (فصل في صفة الشروع في الطواف)، ص١٣٨.
- 2 "سنن ابن ماجه"، كتاب الناسك، باب الشرب من زم زم، الحديث: ٣٠٦٦، ج٣، ص ٤٩٠.
- 🚯 اےاللہ(عزوجل)! میں تجھ ہے علم نافع اور کشاد ہ رزق اور عمل مقبول اور ہریباری سے شفا کا سوال کرتا ہوں۔١٢
 - **4**..... "سنن ابن ماجه"، كتاب المناسك ،باب الشرب من زمزم ، الحديث: ٣٠٦١، ج٣، ص٤٨٩.
 - 🦃 🗗"الفتاوي الرضوية"، ج. ١ ، ص ٧٤٢.

🦓 درود پڑھتے ہوئے فوراً **باب صفا**ہے جانب صفار وانہ ہو، درواز ہُ مسجد سے بایاں یاؤ*ں پہلے* نکالواور د ہنا پہلے جوتے میں ڈالواور

بیادب ہرمسجد سے آتے ہوئے ہمیشہ کمحوظ رکھواور وہی دعایڑھو، جومسجد سے نکلتے وقت پڑھنے کے لیے مذکور ہو چکی ہے۔

مَبِيعًا ﴾ [1] ﴾ بغيرعذراس وفت سعى نه كرنا مكروه ہے كەخلاف سنت ہے۔

سَسَعًا ﴾ جبطواف کے بعد سعی کرنی ہوتو واپس آ کر حجراسود کا استلام کر کے سعی کوجائے اور سعی نہ کرنی ہوتو استلام کی ضرورت نہیں ۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

مَسِعًا لَهُ ٢٣٧﴾ سعی کے لیے بابِصفاہے جانامستحب ہےاور یہی آسان بھی ہےاورا گرکسی دوسرے درواز ہ سے جائے گاجب بھی سعی ا دا ہوجائے گی۔

(۲۲) ذکرودرود میں مشغول صفا کی سیر هیوں پر اتنا پڑھو کہ کعبہ معظمہ نظر آئے اور بیہ بات یہاں پہلی ہی سیر هی پر چڑھنے سے حاصل ہے یعنی اگر مکان اور دیواریں درمیان میں نہ ہوتیں تو کعبہ معظمہ یہاں نے نظر آتا،اس سے اوپر چڑھنے کی عاجت نہیں بلکہ ند ہب الل سنت و جماعت کے خلاف اور بدند ہوں اور جا ہلوں کافعل ہے کہ بالکل اویر کی سیڑھی تک چڑھ جاتے ہیں اور سیرهی مرچڑھنے سے پہلے یہ بروهو:

ٱبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ ﴿ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرُوةَ مِنْ شَعَآ بِرِ اللَّهِ * فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ ٱوِ اعْتَمَرَ فَكَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَّطَوَّفَ بِهِمَا لَوَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا لَا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ﴿ (2)

پھر کعبہ معظمہ کی طرف مونھ کر کے دونوں ہاتھ مونڈھوں تک دعا کی طرح پھیلے ہوئے اُٹھاؤاوراتنی دیر تک ٹھہر وجتنی دیر میں مفصل کی کوئی سورت یا سورۂ بقرہ کی بجیس آیتوں کی تلاوت کی جائے اور شیجے ڈہلیل و تکبیر و درود پڑھواورا پنے لیےاورا پنے دوستوں اور دیگرمسلمانوں کے لیے دعا کرو کہ یہاں دعا قبول ہوتی ہے، یہاں بھی دعائے جامع پڑھواوریہ پڑھو:

ٱللُّـهُ ٱكْبَـرُ ٱللَّهُ ٱكْبَرُ ٱللَّهُ ٱكْبَرُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ ٱكْبَرُ ٱللَّهُ ٱكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحَمَٰدُ ٱلْحَمَٰدُ ٱللَّهِ عَلَى مَا هَـدانَـا ٱلْـحَمُدُ لِلَّهِ عَلَى مَا ٱوُلَانَا ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ عَلَى مَا ٱلْهَمَنَا ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدانَا لِهِلْاَ وَمَا كُنَّا لِنَهُتَدِيَ لَوُ لَا اَنُ هَدانَا اللَّهُ لَآ اِللَّهَ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيُكَ لَـهُ لَـهُ الْمُلُكُ وَلَـهُ الْحَمُدُ يُحْيي وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوتُ . بِيَـدِهِ الْـخَيْـرُ وَهُـوَ عَـلٰي كُـلّ شَيْـيً قَدِيُرٌ لَآ اِلهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ صَدَقَ وَعُدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَاعَزَّ جُنُدَهُ وَهَزَمَ

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس، في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.
- 2 میں اس سے شروع کرتا ہوں جس کواللہ (عزوجل) نے پہلے ذکر کیا۔'' بےشک صفاومروہ اللہ (عزوجل) کی نشانیوں سے ہیں جس نے قج یا

عمرہ کیااس پران کےطواف میں گناہ نہیں اور جو تحض نیک کام کرے تو پیشک اللہ (عزوجں) بدلہ دینے والا، جاننے والا ہے۔'' ۱۲

﴾ الْآحُزَابَ وَحُدَهُ لَا اِلهُ اِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعُبُدُ اِلَّا اِيَّا هُ مُخْلِصِيْنَ لَـهُ الدِّيْنَ وَلَوُ كَرِهَ الْكَافِرُونَ.

فَسُبُحْنَ اللّهِ حِيُنَ تُمُسُونَ وَحِيْنَ تُصُبِحُونَ وَلَهُ الْحَمُدُ فِي السَّمُواتِ وَالْاَرُضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُطُهِرُونَ طَيْخُوجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْلَارُضَ بَعُدَ مَوْتِهَا وَكَذَٰلِكَ تُخُرَجُونَ اللَّهِ مُونَا مُسُلِمٌ سُبُحْنَ اللَّهِ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ وَلَا اللَّهُ مَا اللَّهِ وَاللَّهُ الْعَلِيِّ الْعَالِيِّ الْعَظِيم . اللهِ وَاللهُ الْعَلِيِّ الْعَظِيم .

اَللْهُ مَّ اَلْهُمَّ اَحْيِنِى عَلَى سُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَقَّنِى عَلَى مِلَّتِهِ وَاَعِذُنِى مِنُ مُّضِلَّاتِ اللَّهُمَّ اَحْعِلْنَا مِمَّنُ يُّجِبُّكَ وَيُجِبُّ رَسُولُكَ واَنُبِيْآ ثَكَ وَمَلَئِكَتَكَ وَعِبَادَكَ الصَّلِحِيْنَ مُصُلَّتِ اللَّهُمَّ اَحْيِنِى عَلَى سُنَّةِ رَسُولِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَقَّنِى مُسُلِمًا وَالْحِقُنِى بِالصَّالِحِينَ وَاجْعَلْنِى مِنُ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ وَاعْفِرُلِى خَطِيْقَتِى يَوْمَ الدِيْنِ وَسَلَّمَ وَتَوَقَّنِى مُسُلِمًا وَالْحِقُنِى بِالصَّالِحِينَ وَاجْعَلْنِى مِن وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ وَاعْفِرُلِى خَطِيْقَتِى يَوْمَ الدِيْنِ

اَللَّهُ مَّ اِنَّا نَسُئَلُکَ اِیْمَانًا کَامِلاً وَقَلُبًا خَاشِعًا وَنَسْئَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَیَقِیْنًا صَادِقًا وَدِیْنًا قَیْمًا وَنَسْئَلُکَ اللَّهُ مَّ اِلْعَفُو وَالْعَافِیَةِ وَنَسْئَلُکَ الشُّکُرَ وَنَسْئَلُکَ الشُّکُرَ الْعَفُو وَالْعَافِیَةِ وَنَسْئَلُکَ الشُّکُرَ عَلَى الْعَافِیَةِ وَنَسْئَلُکَ الشُّکُر عَلَى الْعَافِیَةِ وَنَسْئَلُکَ الْهُو صَحْبِهِ عَلَى الْعَافِیَةِ وَنَسْئَلُکَ الْفَالِي وَصَحِبِهِ عَلَى الْعَافِیةِ وَنَسْئَلُکَ الْفَالِي وَصَحْبِهِ عَلَى الْعَافِیةِ وَنَسْئَلُکَ الْفَالِي وَصَحْبِهِ عَلَى اللَّهُ مَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِکُ عَلَى سَیّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى اللهِ وَصحِبه عَدَدَ خَلُقِکَ وَرِضَا نَفُسِکَ وَزِنَةَ عَرُشِکَ وَمِدَادَ کَلِمَاتِکَ کُلَّمَا ذَکَرَکَ الذَّاکِرُونَ وَغَفَلَ عَنُ عَرُكُرکَ الْفَافِلُونَ . (1)

• الله (عزوجل) کے لیے کہ اس نے ہم کو ہدایت کی ،حمد ہے الله (عزوجل) کے لیے کہ اس نے ہم کو دیا،حمد ہے الله (عزوجل) کے لیے کہ اس نے ہم کو الله (عزوجل) کے لیے جس نے ہم کو اس کی ہدایت کی اورا گرالله (عزوجل) ہدایت نہ کرتا تو ہم ہدایت نہ پاتے۔ الله (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں ، جو اکیلا ہے اس کا کوئی شریک نہیں ، اس کے لیے مُلک ہے اوراس کے لیے حمد ہے، وہی زندہ کرتا اور مارتا ہے اوروہ خود زندہ ہے مرتانہیں ، اُسی کے ہاتھ میں خیر ہے اوروہ ہرشے پر قادر ہے۔ الله (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں ہواکوئی معبود نہیں ہم اسی کی سیاک کی اورا ہے نشکر کوغالب کیا اور کا فروں کی جماعتوں کو تنہا اس نے شکست دی۔ الله (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں ہم اسی کی عبود نہیں ہم اسی کی عبود تبیں ، اس کے لیے دین کو خالص کرتے ہوئے اگر چیکا فرگر امانیں۔

الله(عزبهل) کی پاکی ہے شام وقتی اورائی کے لیے حمد ہے آسانوں اور زمین میں اور تیسر سے بہر کو اور ظہر کے وقت، وہ زندہ کومر دہ سے نکالتا ہے اور مردہ کو زندہ سے نکالتا ہے اور زمین کو اس کے مرنے کے بعد زندہ کرتا ہے اور اس طرح تم نکالے جاؤگے، اللی! تو نے جس طرح جھے اسلام کی طرف ہدایت کی، تجھے سوال کرتا ہوں کہ اسے مجھ سے مجد انہ کرنا یہاں تک کہ مجھے اسلام پرموت دے، الله (عزوجل) کے لیے پاکی ہے اور الله (عزوجل) کے لیے پاکی ہے اور الله (عزوجل) کی معبورتی میں اور الله (عزوجل) بہت بڑا ہے، اور گناہ سے پھر نااور نیکی کی طاقت نہیں مگر الله (عزوجل) کی مدد سے جو برتر و برزگ ہے۔ اللی! تو مجھ کو ان الله اور محمد کے ان کی ملت پروفات دے اور فتند کی گرامیوں سے بچا، اللی! تو مجھ کو ان لوگوں =

یان کے انہوں

دعا میں ہتھیلیاں آسمان کی طرف ہوں ، نہاس طرح جیسا بعض جاہل ہتھیلیاں کعبہ معظمہ کی طرف کرتے ہیں اوراکشر مطوف ہاتھ کا نوں تک اُٹھاتے ہیں پھر چھوڑ دیتے ہیں ، یو ہیں تین بار کرتے ہیں یہ بھی غلط طریقہ ہے بلکہ ایک بار دعا کے لیے ہاتھ اُٹھائے اور جب تک دعامائے اُٹھائے رہے، جب ختم ہوجائے ہاتھ چھوڑ دے پھر سعی کی نیت کرے، اس کی نیت یوں ہے:

اَللّٰهُ ہمَّ إِنِّنَى أُدِیْدُ السَّعْنَى بَیْنَ الصَّفَا وَالْمَرُوةِ فَیَسِّر وُ لِیْ وَ تَقَبَّلُهُ مِنِّی ُ .

(۲۳) پھرصفاہے اُتر کرمروہ کو چلے ذکر و درود برابر جاری رکھے، جب پہلامیل آئے (اور بیصفاہے تھوڑے ہی فاصلہ پر ہے کہ بائیں ہاتھ کو سبزرنگ کامیل مبحد شریف کی دیوارہے تصل ہے) یہاں سے مرددوڑ ناشروع کریں (مگر نہ حدسے زائد، نہ کسی کوایذادیتے) یہاں تک کہ دوسر سبزمیل سے نکل جائیں۔ یہاں کی دعابیہے:

رَبِّ اغْفِرُ وَارُحَمُ وَتَجَاوَزُ عَمَّا تَعُلَمُ ﴿ وَتَعُلَمُ مَا لَا نَعُلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعَزُ الْاَکُومُ ﴿ اَللّٰهُمَّ اجُعَلُهُ حَجَّا مَّبُرُورًا وَسَعُيًا مَّشُكُورًا وَذَنْبًامَّ عُفُورًا اَللّٰهُمَّ اغْفِرُلَى وَلِوَالِدَى وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَا مُجِيْبَ اللَّهُمَّ الْعَلِيمُ وَتُبُ عَلَيْنَا إِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿ رَبَّنَا اتِنَا فِي اللَّهُ عَلَيْنَا وَنَكَ الْنَتَ التَّوَّابُ الرَّحِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ . (1)

بخش دے۔ البی اجھے سے ایمان کامل اور قلبِ خاشع کا ہم سوال کرتے ہیں اور ہم جھ سے علم نافع اور یقین صادق اور دینِ منتقیم کا سوال کرتے ہیں اور ہم بلا سے عفووعافیت کا سوال کرتے ہیں اور پوری عافیت اور عافیت کی بھنگی اور عافیت پرشکر کا سوال کرتے ہیں اور آ دمیوں سے بے نیازی کا سوال کرتے ہیں۔ البی ! تو درود وسلام وبرکت نازل کر ہمارے سردار محمصلی اللہ تعالی علیہ وسلم اور ان کی آل واصحاب پر بقدر شار تیری مخلوق اور تیری رضا اور ہموزن تیرے عرش کے اور بقدر در ازی تیرے کلمات کے جب تک ذکر کرنے والے تیراذ کر کرتے رہیں اور جب تک عافل تیرے ذکر سے عافل رہیں۔ ۱۲

1اے پروردگار! بخش اور رحم کراور درگز رکراً س سے جھے تو جانتا ہے اور تو اسے جانتا ہے جھے ہم نہیں جانتے ، پیشک تو عزت وکرم والا ہے۔ اے اللہ (عزوجل)! تو اسے حج مبر ورکر اور سعی مفکور کر اور گناہ بخش ، اے اللہ (عزوجل)! مجھے کو اور مبر سے والدین اور جمیع مونینن ومومنات کو بخش دے، اے دعاوں کے قبول کرنے والے! اے رب! تو ہم کودنیا میں بھلائی دے اور ہم کو عذا ہے جارہ ہم کو عذا ہے جہ ہم ہے بیا۔ ۱۲ 🐉 کیا تھاتنبیج ونکبیر وحمد و ثناو در و دو دُعایبهاں بھی کر وییایک پھیرا ہوا۔

(۲۵) پھر یہاں سے صفا کوذکر و در اور دعائیں پڑھتے ہوئے جاؤ، جب سبزمیل کے پاس پہنچوا سی طرح دوڑواور دونوں میلوں سے گزرکر آ ہت ہولو پھر آؤ پھر جاؤیہاں تک کہ ساتواں پھیرامروہ پرختم ہواور ہر پھیرے میں اُسی طرح کرواِس کا ماسعی ہے۔ دونوں میلوں کے درمیان اگر دوڑکر نہ چلایا صفاسے مروہ تک دوڑکر گیا تو براکیا کہ سنت ترک ہوئی، مگر وَ میاصد قد واجب نہیں اور سعی میں اِضطباع نہیں۔ اگر بجوم کی وجہ سے میلین کے درمیان دوڑنے سے عاجز ہے تو کچھ ٹھر جائے کہ بھیڑکم ہو جائے اور دوڑنے اور دوڑنے کا موقع مل جائے اور اگر کھی عذر کی وجہ سے جوم کم نہ ہوگا تو دوڑنے والوں کی طرح چلے اور اگر کسی عذر کی وجہ سے جائے اور دوڑنے والوں کی طرح چلے اور اگر کسی عذر کی وجہ سے جائے اور دوڑنے والوں کی طرح چلے اور اگر کسی عذر کی وجہ سے جائے اور دوڑنے والوں کی طرح چلے اور اگر کسی عذر کی وجہ سے جائے اور دوڑنے والوں کی طرح جلے اور اگر کسی عذر کی وجہ سے جائے اور دوڑنے والوں کی طرح جلے اور اگر کسی عذر کی وجہ سے دور سے دور سے دور سے جائے اور دوڑنے والوں کی طرح جائے اور اگر کسی عذر کی وجہ سے دور سے

۔ جانور پرسوار ہوکرسعی کرتا ہے تواس درمیان میں جانورکوتیز چلائے مگراس کا خیال رہے کہ سی کوایذ انہ ہو کہ بیررام ہے۔ سیریا کی ۲۴ ﷺ۔ اگر مروہ سے معی شروع کی تو پہلا پھیرا کہ مروہ سے صفا کو ہوا شار نہ کیا جائے گا،اب کہ صفا سے مروہ کو

جائے گابیہ پہلا پھیراہوا۔⁽¹⁾(درمختار،عالمگیری)

سَسَنَانُ ٢٥﴾ جو چخص احرام سے پہلے بیہوش ہوگیا ہے اور اُس کے ساتھیوں نے اس کی طرف سے احرام باندھا ہے تو اُس کی طرف سے اُس کے ساتھی نابۂ سعی کر سکتے ہیں۔(2) (منسک)

سعی کے لیے شرط ہے کہ پورے طواف یا طواف کے اکثر حصہ کے بعد ہو، الہذاا گرطواف سے پہلے یا طواف کے تین پھیرے کے بعد سعی کی تو نہ ہوئی اور سعی کے قبل احرام ہونا بھی شرط ہے، خواہ رقح کا احرام ہو یا عمرہ کا ،احرام سے قبل سعی نہیں ہوسکتی اور رقح کی سعی اگر و تو ف کے قبل کرے تو وقت سعی میں بھی احرام ہونا شرط ہے اور وقوف عرفہ کے بعد ہو تو سنت سے کہ احرام کھول چکا ہوا ورغمرہ کی سعی میں احرام واجب ہے یعنی اگر طواف کے بعد سرمونڈ الیا پھر سعی کی تو سعی ہوگئی مگر چونکہ واجب بڑک ہوالہٰذا وَم واجب ہے۔ (لباب)

مستان (۲۷) سعی کے لیے طہارت شرط نہیں، حیض والی عورت اور جُنب بھی سعی کرسکتا ہے۔ (4) (عالمگیری) مسئان (۲۸) ہے۔ سعی میں بیدل چلنا واجب ہے جب کہ عذر بنہ ہو، لہذا اگر سواری یا ڈولی وغیرہ برسعی کی یا ماؤں سے نہ چلا

بلکہ گھسٹھا ہوا گیا تو حالت عذر میں معاف ہے اور بغیر عذر ایسا کیا تو دَم واجب ہے۔⁽⁵⁾ (لباب)

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٧.
- 2 "المسلك المتقسط"، (باب سعى بين صفا و المروة، فصل في شرائط صحه السعي)، ص١٧٤.
 - 3 "لباب المناسك"، ص١٧٤.
 - ٢٢٧٠٠٠ "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٧.
 - 🤿 🗗 "لباب المناسك"، (باب سعى بين صفا و المروة، فصل في واجباته)، ص١٧٨.

ایک ضروری نصیحت

شروع کرتے وقت نیت کرلے۔

مسکانی استان کی این میروه وقت نه بهوتوسعی کے بعد دور کعت نماز مسجد شریف میں جا کر پڑھنا بہتر ہے۔⁽²⁾ (درمختار)

ا ما م احمد وابن ما جبر وابن حبان ، مطلب بن ا بی و داعه سے راوی ، کہتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وکم کو دیکھا کہ جب سعی سے فارغ ہوئے تو حجر کے سامنے تشریف لا کر حاشیہ مطاف میں دور کعت نماز بیڑھی۔ (3)

سعی کے ساتوں پھیرے پے در پے کرے، اگر متفرق طور پر کیے تو اعادہ کرے اور اب سے سات پھیرے کرے، اگر متفرق طور پر کیے تو اعادہ کرے اور اب سے سات پھیرے کرے میں جماعت قائم ہوئی یا جنازہ آیا توسعی جھوڑ کر نماز میں مشغول ہو، بعد نماز جہاں سے چھوڑ کی تھی وہیں سے پوری کرلے۔(4) (عالمگیری)

- 1 "المسلك المتقسط"، (باب سعى بين صفا و المروة، فصل في سننه)، ص١٧٩.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٨٩٥.
 - 3 "المسند" للإمام احمد، الحديث: ٣٧٣١، ج٠١، ٢٥٤.
- 🧣 🐠 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج ١، ص٢٢٧.

🗳 📶 💨 🚽 سعی کی حالت میں نضول وبریار باتیں سخت نازیبا ہیں کہ بیرتو ویسے بھی نہ جا ہیے نہ کہاس وقت کہ عبادت

میں مشغول ہو، واضح ہو کہ عمرہ صرف انہیں افعال طواف وسعی کا نام ہے۔ قران وتمتع والے کے لیے یہی عمرہ ہو گیا اور إفراد والے ا کے لیے بہطواف طواف قدوم یعنی حاضری دربار کا مجرا۔

مستان سر المحمد على الما مله مين جانے سے پہلے عرفات ميں پہنچاتو طواف قد وم ساقط ہوگيا مگر بُرا كيا كرسنت فوت

ہوئی اور دَم وغیرہ واجٹ نہیں ۔⁽¹⁾ (جو ہرہ،ر دالحتار)

(۲۲) قارن یعن جس نے قران کیا ہے اس کے بعد طواف قد وم کی نیت سے ایک طواف وسعی اور بحالائے۔

(۲۷) قارِن اورمُفر دیعنی جس نے صرف حج کا احرام باندھا تھا، لبیک کہتے ہوئے مکہ میں ٹھہریں۔اُن کی لبیک

دسویں تاریخ زمی جمرہ کے وقت ختم ہوگی اوراسی وقت احرام نے کلیں گے جس کا ذکر ان شاءاللہ تعالیٰ آتا ہے مگر متنع لینی جس نے تمتع کیا ہے وہ اورمعتُم کیجنی براعمرہ کرنے والاشروع طواف کعیہ معظمہ سے سنگ اسودشریف کا پہلا بوسہ لیتے ہی لیبک چھوڑ دیں ۔ اورطواف وسعی مٰدکور کے بعد**حلق** کریں یعنی سارا سرمونڈا دیں یا تقصیر یعنی بال کتر وائیں اوراحرام ہے باہرآ ^سئیں۔

سر مونڈانا یا بال کتروانا

عورتوں کو بال مونڈا ناحرام ہے، وہ صرف ایک پورے برابر بال کتر والیں اور مردوں کواختیار ہے کہ حلق کریں یانقصیر اور بہتر حلق ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے ججۃ الوداع میں حلق کرایا (2) اور سرمونڈ انے والوں کے لیے دعائے رحت تین بارفر مائی اور کتر وانے والوں کے لیے ایک بار ⁽³⁾ اور اگرمتمت^ع منلی کی قربانی کے لیے جانور ساتھ لے گیا ہے تو عمرہ کے بعد احرام کھولنا اُسے جائز نہیں، بلکہ قارِن کی طرح احرام میں رہے اور لبیک کہا کر بے یہاں تک کہ دسویں کی رَمی کے ساتھ لبیک جھوڑے پھر قربانی کے بعد حلق یا تقصیر کر کے احرام سے باہر ہو۔ پھر متنت جا ہے تو آٹھویں ذی الحجہ تک بے احرام رہے، مگر افضل یہ ہے کہ جلد حج کا احرام باندھ لے ،اگریہ خیال نہ ہو کہ دن زیادہ ہیں احرام کی قیدیں نتجھیں گی۔

(۲۸) متعبید: طواف قد وم میں اِضطباع ورَمل اوراس کے بعد صفا، مروہ میں سعی ضرورنہیں مگراب نہ کرے گا تو طواف زیارت میں کہ حج کاطواف فرض ہے،جس کا ذکران شاء اللہ آتا ہے بیسب کام کرنے ہول گے اوراس وقت ہجوم بہت ہوتا ہے، عجب نہیں کہ طواف میں رمکل اور مسلحی میں دوڑ نا نہ ہو سکے اور اُس وفت ہو چکا تو اِس طواف میں ان چیزوں کی حاجت نہ

^{● &}quot;الجوهرة النيرة"، الجزء الاؤل، كتاب الحج، ص ٢٠٩. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٦٥.

²....."صحيح البخارى"، كتاب المغازى، باب حجة الوداع، الحديث: ٤٤١٠ ٤٤، ج٣، ص١٤٢.

^{🥱 🔞&}quot;صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب الحلق والتقصير عند الاحلال، الحديث: ١٧٢٨، ج١، ص٧٤ه.

(۲۹) مُفرِ دوقاً بِن توجِح کے رَمَل وسعی سے طواف قد وم میں فارغ ہو لیے مُمُتمّع نے جوطواف وسعی کیے وہ عمرہ کے سے ، جج کے رَمَل وسعی اس سے ادا نہ ہوئے اور اُس پر طواف قد وم ہے نہیں کہ قارِن کی طرح اس میں یہ امور کر کے فراغت پالے لہٰذا اگر وہ بھی پہلے سے فارغ ہولینا چاہے ، تو جب حج کا احرام باند ھے اس کے بعدا یک نفل طواف میں رمل وسعی کر لے اب اے بھی طواف زیارت میں ان امور کی حاجت نہ ہوگی۔

ایّام اقامت میں کیا کریں

(۳۰) اب بیسب حجاج (قارِن متمتع ، مُفرِد کوئی ہو) کہ منی کے جانے کے لیے مکہ معظمہ میں آٹھویں تاریخ کا انتظار کررہے ہیں ، ایام اقامت میں جس قدر ہو سکے نراطواف بغیر اضطباع ورمل وسعی کرتے رہیں کہ باہر والوں کے لیے بیسب سے بہترعباوت ہے اور ہرسات پھیروں پرمقام ابراہیم علیہ انسلام میں دورکعت نماز پڑھیں۔

(۳۱) زیادہ احتیاط ہیہ ہے کہ عور تول کو طواف کے لیے شب کے دس گیارہ بجے جب جوم کم ہولے جا کیں۔ یو ہیں صفا ومروہ کے درمیان سعی کے لیے بھی۔

(۳۲) عورتین نماز فرودگاہ (۱) ہی میں بڑھیں۔ نمازوں کے لیے جودونوں معجدِکریم میں حاضر ہوتی ہیں جہالت ہے کہ مقصود ثواب ہے اور خود حضورا نور سلی اللہ تعالی علیہ وہ مایا کہ: ''عورت کومیری مسجد میں نماز بڑھنے سے زیادہ ثواب گھر میں پڑھنا ہے۔'' (2) ہاں عورتیں مکہ معظمہ میں روزانہ ایک باررات میں طواف کر لیا کریں اور مدینہ طیبہ میں صح وشام صلاۃ وسلام کے لیے حاضر ہوتی رہیں۔

(۳۳) اب یامنیٰ سے واپسی کے بعد جب بھی رات ودن میں جتنی بار کعبہ معظمہ پرنظر پڑے آلا الله وَ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَکُبَوُ تین بارکہیں اور نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ ہلم پر درُ ودجھیجیں اور دعا کریں کہ وفت قبول ہے۔

طواف میں یہ باتیں حرام هیں

(۳۴) طواف اگرچه فل مواس میں بیربا تیں حرام ہیں:

🛈 بےوضوطواف کرنا۔

1....يعنى قيام گاهـ

- 😙 كوئى عضو جوستر ميں داخل ہے اس كا چہارم كھلا ہونا مثلاً ران يا آزاد عورت كا كان يا كلائى۔
 - 🕆 بے مجبوری سواری پریاکسی کی گود میں یا کندھوں پر طواف کرنا۔
 - 🕲 بلاعذر بیٹھ کرسر کنایا گھٹنوں چلنا۔
 - کعبہ کود ہنے ہاتھ پر لے کرالٹا طواف کرنا۔
 - 🛈 طواف میں حطیم کے اندر ہوکر گزرنا۔
 - √ سات پھیروں سے کم کرنا۔ ⁽¹⁾

طواف میں یہ ۱۵ باتیں مکروہ هیں

(۳۵) به باتین طواف مین مکروه بین:

- 🛈 فضول بات کرنا۔
 - ا بیجیا۔
 - ® خریدنا۔
- حرونعت ومنقبت كيسوا كوئي شعر براهنا۔
- ذکریادعایا تلاوت یا کوئی کلام بلند آواز ہے کرنا۔
 - ا نایاک کیڑے میں طواف کرنا۔
- 🕏 رَمَل، یا 🕭 اضطباع، یا 🏵 بوسته سنگ اسود جہاں جہاں ان کا حکم ہے ترک کرنا۔
- 🕥 طواف کے پھیروں میں زیادہ فصل دینالعنی کچھ پھیرے کر لیے پھر دیرتک تھ ہر گئے یا اور کسی کام میں لگ گئے باقی
- پھیرے بعد کو کیے مگر وضوجا تارہے تو کرآئے یا جماعت قائم ہوئی اوراُس نے ابھی نماز نہ پڑھی تو شریک ہوجائے بلکہ جنازہ کی
- نماز میں بھی طواف چھوڑ کرمل سکتا ہے باقی جہاں ہے چھوڑا تھا آ کر پورا کرلے۔ یو ہیں پیثاب پاخانہ کی ضرورت ہوتو چلا جائے وضوکر کے ماقی بورا کرے۔
- ا کیک طواف کے بعد جب تک اس کی رکعتیں نہ پڑھ لے دوسرا طواف شروع کردینا مگر جب کہ کراہت نماز کا وقت ہو جیسے منج صادق سے بلندی آفتاب تک یا نمازعصر پڑھنے کے بعد سے غروب آفتاب تک کہ اس میں متعدد طواف بے فصل
 - 🐒 🕕 "الفتاوي الرضوية"، ج. ١، ص ٤٤٧، وغيره.

تنماز جائز ہیں۔وقت کراہت نکل جائے تو ہرطواف کے لیے دور کعت ادا کرے اورا گربھول کرایک طواف کے بعد بغیرنماز پڑھے

نہ ہے۔ دوسراطواف شروع کردیا تواگرابھی ایک پھیراپورانہ کیا ہوتو چھوڑ کرنماز پڑھےاور پورا پھیرا کرلیاہے تواس طواف کو پورا کر کے

نماز پڑھے۔

شخطبہ امام کے وقت طواف کرنا۔

ا جماعت فرض کے وقت کرنا، ہاں اگرخود پہلی جماعت میں پڑھ چکا ہے تو باقی جماعتوں کے وقت طواف کرنے

میں حرج نہیں اور نماز بوں کے سامنے گز ربھی سکتا ہے کہ طواف بھی نماز ہی کی مثل ہے۔

🕲 طواف میں پچھ کھانا۔

(1) پیشاب یاخانه یاری کے نقاضے میں طواف کرنا۔ (1)

یه باتیں طواف و سَعی دونوں میں جائز هیں

(٣٦) يه باتين طواف وسعى دونون مين مباح مين:

🛈 سلام کرنا۔

🕜 جواب دینا۔

ا حاجت کے لیے کلام کرنا۔

③ فتوىٰ يوچھنا۔

⊙ فتو کی دینا۔

🗈 يانى پيا۔

🛇 حمد ونعت ومنقبت کے اشعار آ ہستہ پڑھنا اور سعی میں کھانا بھی کھا سکتا ہے۔ (2)

سَعی میں یہ باتیں مکروہ هیں

(۲۷) سعی میں یہ باتیں مکروہ ہیں:

1 "الفتاوي الرضوية"، ج١٠ ص٤٤٧، وغيره.

🥱 👂 "الفتاوي الرضوية"، ج. ١، ص ٧٤٥، وغيره.

- 🕥 بے حاجت اس کے پھیروں میں زیادہ فاصلہ دینا مگر جماعت قائم ہوتو چلا جائے۔ یو ہیں شرکت جنازہ یا قضائے
 - حاجت یا تجدید وضوکو جانااگر چه سعی میں وضوضر ورنہیں۔
 - 🛈 🕆 خريدوفروخت ـ
 - 3 فضول كلام_
 - 💿 🖯 صفایا مروه پرنه چڑھنا۔
 - ﴿ مرد كامُسلِّع مِين بلاعُدُر نه دورٌ نا_
 - العواف كے بعد بہت تا خير كر كے سعى كرنا۔
 - سترعورت نه ہونا۔
 - 🕥 پریثان نظری لیعنی ادهراُ دهرفضول دیکھناسعی میں بھی مکروہ ہے اور طواف میں اور زیادہ مکروہ۔(1)

طواف و سَعی کے مسائل میں مردو عورت کے فرق

(٣٨) طواف وسعى كےسب مسائل ميں عورتين بھى شريك بيں مگر ﴿ إضطباع، ﴿ رَمَل، ﴿ مَسِعَ مِين دورْنا،

یہ تینوں باتیں عورتوں کے لیے نہیں۔ ﴿ مزاحمت کے ساتھ بوسئر سنگ اسودیا ﴿ رُكُنِ بِمانى كوچھونایا ﴿ كعبہ سے قریب ہونایا

﴿ زمزم کے اندرنظر کرنایا ﴿ خود پانی بھرنے کی کوشش کرنا، یہ باتیں اگر یوں ہوسکیں کہنامحرم سے بدن نہ چھوئے تو خیر، ورنہ

الگ تھلگ رہناان کے لیے سب سے بہتر ہے۔(2)

گرمنی کی روانگی اور عرفه کا وقوف 🅰

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ ثُمَّ ا فِيضُوْامِنْ حَيْثُ اَ فَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُ وااللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُوْرًا رَّ حِيْمٌ ﴿ ﴾

پھرتم بھی وہاں سے لوٹو جہاں سے اورلوگ واپس ہوئے (لینی عرفات سے) اوراللّٰہ (عزوجل) سے مغفرت مانگو، بیشک

الله (عزوجل) بخشنے والا ، رحم فر مانے والا ہے۔

- 1 "الفتاوي الرضوية"، ج١٠ ص٥٤٧، وغيره.
- 2 "الفتاوي الرضوية"، ج ١٠ م ص ٧٤٥، وغيره.
 - 🐒 😘پ۲، البقره: ۱۹۹.

🚅 منل کی روانگی اور عرفه کاوقوف

1116) 📢 بهرارشونيعت راهم (6) 🚅

💨 🚽 پیٹ 🕽 🔑 صحیح بخاری وضیح مسلم میں اُم المونین صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، کہ قریش اور جولوگ اُن کے

طریقے پر تھے مُز دلفہ میں وقوف کرتے اور تمام عرب عرفات میں وقوف کرتے جب اسلام آیا ، اللہ عز دجل نے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم

كَوْكُمُ فَرِ ما ياكه: ''عرفات ميں حاكرو قوف كريں پھروباں سے واپس ہوں _'' (1)

خلیث الوداع شریف میں جابر بن عبداللدرض الله تعالی عنها سے ججة الوداع شریف کی حدیث مروی، اسی میں ہے کہ بوم التر وید (آٹھویں ذی الحبہ) کولوگ منلی کوروانہ ہوئے اور حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ بہلم نے منلی میں ظہر وعصر ومغرب وعشاو

فجر کی نمازیں پڑھیں پھرتھوڑا تو قف کیا یہاں تک کہ آ فتاب طلوع ہوا۔

اور حکم فر مایا کہ نمر ہ⁽²⁾ میں ایک قبہنصب کیا جائے ،اس کے بعد حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ دِسلم) پیہاں سے روانیہ ہوئے اور قریش کا پیگمان تھا کہ مز دلفہ میں وقوف فر مائیں گے جبیبا کہ جاہلیت میں قریش کیا کرتے تھے مگررسول اللہ صلی اہلہ تعالی علیہ وہلم مز دلفہ ہےآ گے چلے گئے یہاں تک کہ عرفہ میں بہنچے یہاں نمرہ میں قبانصب ہو چکا تھا،اس میں تشریف فرما ہوئے یہاں تک کہ جب آ فآب ڈھل گیا سواری تیار کی گئی پھربطن وادی میں تشریف لائے اور خطبہ بڑھا پھر بلال رضی املا تعالیٰ عنہ نے او ان وا قامت کہی حضور (صلی اللہ تعالی علیہ دسلم) نے نماز ظہر بڑھی بھرا قامت ہوئی اورعصر کی نماز بڑھی اور دونوں نماز وں کے درمیان کچھ نہ بڑھا بھر موقف میں تشریف لائے اور وقوف کیا پہاں تک کہ آفتا غروب ہوگیا۔(3)

خلیث سی کے مسلم میں جابر رضی اللہ تعالی عند سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا کہ:''میں نے بہاں

وقوف کیااور پوراعرفات جائے وقوف ہےاور میں نے اس جگہ وقوف کیااور پورامُز دلفہ وقوف کی جگہ ہے۔'' (4)

خلين 🕜 🐣 - مسلم و نسائي وابن ماجه ورزين امُ المونيين صديقة رضى الله تعالىء نها سے راوي ، رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم نے فرمایا: ''عرفہ سے زیادہ کسی دن میں اللہ تعالی اینے بندوں کوجہنم سے آزاد نہیں کرتا پھران کے ساتھ ملائکہ بر مُباہات فرما تاہے۔'' (5)

تر مذي ميں بروايت عمر و بن شعيب عن ابيه عن جده مروى ، كه رسول الله صلى الله تعالى عليه وملم نے فر ما با : عرفه كي خُلِيْثُ (۵ الله

- "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب في الوقوف ... إلخ، الحديث: ١٢١٩، ص٦٣٨.
 - 2عرفات میں ایک مقام ہے۔ ۱۲
- 3 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب حجة النبي صلى الله عليه و سلم، الحديث: ١٤٧_(١٢١٨)، ص٦٣٤.
 - 4 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب ماجاء ان عرفة كلها موقف، الحديث: ١٤٩_(١٢١٨)، ص٦٣٨.
 - 🚭 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فضل يوم عرفة، الحديث: ١٣٤٨، ص٧٠٣.

يههَادِشْرنِيعَتْ بْعِشْتُم (6) 🗨 🚺 1117

و سب سے بہتر دعااور وہ جو میں نے اور مجھ سے قبل انبیانے کی ہے: لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَوِیْکَ لَـهُ لَـهُ الْمُلُکُ

وَلَهُ الْحَمُدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ . (1)

خلینٹ 👣 🚽 امام ما لک مُرسلاً طلحہ بن عبیداللہ سے راوی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فر مایا:''عرفہ سے زیادہ

کسی دن میں شیطان کوزیادہ صغیرو ذلیل وحقیر اور غیظ میں بھرا ہوانہیں دیکھا گیا اور اس کی وجہ یہ ہے کہ اس دن میں رحمت کا نزول اور اللّٰہ (عزوجل) کا بندول کے بڑے بڑے بڑے گناہ معاف فر مانا شیطان دیکھتا ہے۔'' ⁽²⁾

خلیف کی اللہ علی اللہ تعالی علیہ و پہنی عباس بن مرداس رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کدرسول اللہ سلی اللہ تعالی علیہ و باس بن مرداس رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کدرسول اللہ تعالی علیہ و باس بخش دیا سواحقوق العباد کے کہ مظلوم کے لیے ظالم سے مواخذہ کروں گا۔ ' حضور (صلی اللہ تعالی علیہ و بلم) نے عرض کی ، اے رب! اگر تو جیا ہے تو مظلوم کو جنت عطا کر دے اور ظالم کی مغفرت فرماد ہے۔ اُس دن یہ دعام تبول نہ ہوئی پھر مُن دلفہ میں صبح کے وقت حضور (صلی اللہ تعالی علیہ و بلم) نے اسی دعا کا اعادہ کیا اُس وقت یہ دعام تبول ہوئی ، اس بررسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ و بلم نے تبہم فرمایا۔

صدیق وفاروق رض الله تعالی عنها نے عرض کی ، ہمارے مال باپ حضور (صلی الله تعالی علیه بسلم) پر قربان اس وقت تبسم فرمانے کا کیا سبب ہے؟ ارشاد فرمایا کہ:'' وشمنِ خدا ابلیس کو جب بیہ معلوم ہوا کہ اللہ عزوجل نے میری دعا قبول کی اور میری اُمت کی بخشش فرمائی تواسینے سریرخاک اُڑانے لگا اور واویلا کرنے لگا، اُس کی بیر گھیرا ہٹ دیکھ کر مجھے ہنسی آئی۔'' (3)

عرفہ کے دن اللہ جارک وتعالیٰ آسمانِ دنیا کی طرف خاص تحبّی فر ما تا ہے اور زمین والوں کے ساتھ آسمان والوں پرمباہات کرتا، ان سے فرما تا ہے: ''میرے بندوں کو دیکھو کہ براگندہ سرگرد آلودہ دھوپ کھاتے ہوئے وُور وُور سے میری رحمت کے

- 1 "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، باب في دعاء يوم عرفة، الحديث: ٩٦ ٥٩، ج٥، ص٣٣٨.
 - 2 "الموطأ" للإمام مالك، كتاب الحج، باب جامع الحج، الحديث: ٩٨٢، ج١، ص٣٨٦.
 - € "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الدعا بعرفة، الحديث: ٣٠١٣، ج٣، ص٤٦٦.

أميدوارحاضر ہوئے تو عرفہ سے زيادہ جہنم سے آزاد ہونے والے سی دن ميں ديجھے نہ گئے۔'' (1) اور بيہ قي کی روايت ميں بيه اللہ عزوط ملائکہ سے فرما تا ہے:''ميں تم کو گواہ کرتا ہوں کہ ميں نے اُنھيں بخش ديا۔ فرشتے کہتے ہيں،ان ميں فلاں وفلال حرام کام کرنے والے ہيں،اللہ عزوج لفرما تا ہے: ميں نے سب کو بخش ديا۔'' (2)

خلین و کی امام احمد وطبرانی عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہا ہے راوی ، کہ ایک شخص نے عرفہ کے دن عورتوں کی طرف نظر کی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فرمایا: '' آج وہ دن ہے کہ جوشخص کان اور آئکھ اور زبان کو قابو میں رکھے ، اُس کی مغفرت ہوجائے گی۔'' (3)

^{1 &}quot;مسند أبي يعلى"، الحديث: ٢٠٨٦، ج٢، ص٩٩٦.

^{2 &}quot;الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الوقوف بعرفة ... إلخ، الحديث: ١، ج٢، ص١٢٨.

^{€ &}quot;شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الوقوف بعرفات إلخ، الحديث: ٤٠٧١، ج٣، ص٤٦١.

^{🚙 🗗 &}quot;شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الوقوف بعرفات ... إلخ، الحديث: ٤٠٧٤، ج٣، ص٤٦٣.

🚅 منل کی روانگی اور عرفه کاوقو ف

بهرارشرئيعَتْ رُحْشَهُم (6) ﴿

عوض کی گئی، یاامیرالمونین! ایام تشریق میں روز ہے کیوں حرام ہیں؟ فرمایا کہ وہ لوگ اللہ (عزوجل) کے زوّار ومہمان میں اور مہمان کو بغیرا جازت میز بان روزہ رکھنا جائز نہیں۔عرض کی گئی، یا میرالمونین! غلاف کعبہ سے لپٹنا کس لیے ہے؟ فرمایا اس کی مثال میہ ہے کہ کسی نے دوسر کا گناہ کیا ہے وہ اس کے کپڑوں سے لپٹنا اور عاجزی کرتا ہے کہ بیا سے بخش دے۔ (1) جب وقوف کے ثواب سے آگاہ ہوئے تواب گناہوں سے پاک صاف ہونے کا وقت قریب آیا، اس کے لیے تیار ہوجاؤاور مرایات برعمل کرو۔

(۱) **سماتویں تاریخ**: مسجد حرام میں بعد ظہرا مام خطبہ پڑھے گا اُسے سُنو ،اس خطبہ میں منی جانے اور عرفات میں نماز اور وقوف اور وہاں سے واپس ہونے کے مسائل بیان کیے جائیں گے۔

(۲) یومالتَّر ویه میں که آصحوی تاریخ کانام ہے جس نے احرام نہ باندھا ہو باندھ لے اورایک فل طواف میں رمل وسعی کرلے جسیا کہ او پرگز رااوراحرام کے متعلق جوآ داب پیشتر بیان کیے گئے ، مثلاً عنسل کرنا ، خوشبولگانا وہ یہاں بھی کھوظار کے اور نہادھوکر مسجد الحرام شریف میں آئے اور طواف کرے ، اس کے بعد طواف کی نماز بدستورا داکرے ، پھر دور کعت سنت احرام کی نیت سے پڑھے ، اس کے بعد حج کی نیت کرے اور لبیک کے۔

(۳) جب آفتاب نکل آئے منی کو چلو۔ اگر آفتاب نکلنے کے پہلے ہی چلا گیا جب بھی جائز ہے مگر بعد میں بہتر ہے اور زوال کے بعد بھی جاسکتا ہے مگر ظہر کی نماز منی میں پڑھے اور ہوسکے تو پیادہ جاؤ کہ جب تک مکہ معظمہ بلیٹ کر آؤگے ہرقدم پر سات کرور نیکیاں کھی جائیں گی، بینکیاں تخیینًا اٹھٹر کھرب چالیس ارب آتی ہیں اور اللہ کا فضل اس نبی کے صدقہ میں اس امت کرور نیکیاں کھی جائیں اللہ تعالی علیہ والحمد بلدرب العلمین۔

- (۷) راستے بھرلیک ودعاودرودوثناکی کثرت کرو۔
 - (۵) جب منلی نظرائئے بیدد عایر معود:
- اَللَّهُمَّ هَاذِي مِني فَامْنُنُ عَلَيَّ بِمَا مَننُتَ بِهِ عَلَى اَوْلِيَآ ثِكَ . (2)
- (۱) یہاں رات کو گھر و۔ آج ظہر سے نویں کی صبح تک پانچ نمازیں یہیں مسجد خیف میں پڑھو، آج کل بعض مطوفوں نے بیز کالی ہے کہ آٹھویں کو منی میں نہیں گھرتے سید ھے عرفات پہنچتے ہیں، ان کی نہ مانے اور اس سنت عظیمہ کو ہرگزنہ چھوڑے۔
 - ◘ "شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الوقوف بعرفات ... إلخ، الحديث: ١٨٤، ٢٠ ج٣، ص٢٦٨.

و"الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الوقوف بعرفة ...إلخ، الحديث: ٦١، ج٢، ص١٣٣.

الى مەنى ب مجھ پرتو دەاحسان كرجوائي دارياپرتونے كيا-١٢

🥞 🕏 قافلہ کےاصرار سےان کوبھی مجبور ہونا پڑے گا۔شب عرفہ منی میں ذکر وعبادت سے جاگ کرمنبح کرو۔سونے کے بہت دن پڑے 🗝 ہیں اور نہ ہوتو کم از کم عشاوہ جماعت اولی ہے پڑھو کہشب بیداری کا ثواب ملے گااور باوضوسوؤ کہ رُوح عرش تک بلند ہوگی۔ عبدالله بن مسعود رضى الله تعالىء نه سے بیہ فی وطبر انی وغیر ہمانے روایت کی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا که:'' جو شخص عرفیہ کی رات میں بیدعائیں ہزار مرتبہ پڑھے تو جو پچھاللہ تعالیٰ ہے مانکے گایائے گاجب کہ گناہ یا قطع رحم کا سوال نہ کرے۔''

سُبُحَانَ الَّذِيُ فِي السَّمَآءِ عَرُشُهُ سُبُحٰنَ الَّذِيُ فِي الْآرُضِ مَوْطِئُهُ سُبُحْنَ الَّذِي فِي الْبَحْرِ سَبِيلُهُ سُبُحٰنَ الَّذِيۡ فِي النَّارِ سُلُطَانُهُ سُبُحٰنَ الَّذِيۡ فِي الْجَنَّةِ رَحْمَتُهُ سُبُحٰنَ الَّذِيۡ فِي الْقَبُرِ قَضَاؤُهُ سُبُحٰنَ الَّذِيۡ فِي الْهَـوَاءِ رُوْحُـهُ سُبُحٰنَ الَّذِيُ رَفَعَ السَّمَآءَ سُبُحٰنَ الَّذِيُ وَضَعَ الْاَرُضَ سُبُحٰنَ الَّذِيُ لَا مَلُجَأً وَلاَ مَنُجَأً مِنْهُ إِلَّا

(۸) مستحب وقت نماز پڑھ کر لبیک و ذکر و در و دشریف میں مشغول رہویہاں تک کہ آفتاب کو پیٹر پر کہ مسجد خیف شریف کے سامنے ہے جیکے۔ابعرفات کوچلودل کوخیال غیر سے یاک کرنے میں کوشش کرو کہ آج وہ دن ہے کہ کچھ کا حج قبول کریں گےاور کچھکوان کےصدقہ میں بخش دیں گے۔محروم وہ جوآج محروم رہا، وسوسے آئیں تو اُن سےلڑائی نہ ہاندھو کہ یوں بھی دشمن کا مطلب حاصل ہےوہ تو یہی جا ہتا ہے کہتم اور خیال میں لگ جاؤ ہڑائی با ندھی جب بھی تو اور خیال میں پڑے ملکہ ، وسوسول کی طرف دھیان ہی نہ کرو، یہ مجھ لو کہ کوئی اور وجود ہے جوایسے خیالات لار ہاہے مجھے اپنے رب سے کام ہے، یوں ان شاءالله تعالی وه مردُ ودنا کام واپس جائے گا۔

مست ایک ایک ات میں پہنچا تو جج ہوجائے گا مگر بُر ایک اورنویں کوفجر پڑھ کرمنیٰ ہوتا ہواء فات میں پہنچا تو جج ہوجائے گا مگر بُرا کیا کہ سنت کوٹرک کیا۔ یو ہیں اگر رات کومنی میں رہا مگرضبح صادق ہونے سے پہلے یا نمازِ فجر سے پہلے یا آفتاب نکلنے سے پہلے عرفات کوچلا گیا توبُر اکیااوراگرآ کھویں کو جُحُدَاون ہے جب بھی زوال سے پہلے منی کوجاسکتا ہے کہاس پر جُمُعَة فرض نہیں اور جُمُعَه کا خیال ہو تو منیٰ میں بھی جُونتہ ہوسکتا ہے، جب کہ امیر ملّہ وہاں ہویااس کے عکم سے قائم کیا جائے۔

المسلك المتقسط "، (فصل في الرواح من منى الى عرفات)، ص ١٩٠.

ترجمہ: پاک ہے وہ جس کاعرش بلندی میں ہے، پاک ہے وہ جس کی حکومت زمین میں ہے، پاک ہے وہ کہ دریا میں اس کا راستہ ہے، یاک ہےوہ کہآ گ میں اُسی کی سلطنت ہے، یاک ہےوہ کہ جنت میں اُس کی رحمت ہے، یاک ہےوہ کے قبر میں اُس کا حکم ہے، یاک ہےوہ کہ ہوا میں جورومیں ہیںاُسی کی مِلک ہیں، یاک ہےوہ جس نے آسان کو بلند کیا، یاک ہےوہ جس نے زمین کو پست کیا، یاک ہےوہ کہ اُس کے عذاب سے بناہ ونجات کی کوئی جگہنیں،مگراُسی کی طرف ۱۲

(۹) رائے بھر ذکرو درو دمیں بسر کرو، بےضرورت کچھ بات نہ کرو، لبیک کی بے ثار بار بار کثرت کرتے چلواورمنی نے نکل کریہ دعا پڑھو:

اَللَّهُ مَّ اِلَّيْکَ تَوجَّهُتُ وَعَلَیْکَ تَو کَلُتُ وَلِوَجُهِکَ الْکُویُمِ اَرَدُتُ فَاجُعَلُ ذَنْیِی مَغُفُورًا وَّحَجِی مَبُرُورًا وَّارُحَمُنِی وَلَا تُحَیِّبُنِی وَبَارِکُ لِی فِی سَفَرِی وَاقْضِ بِعَرَفَاتٍ حَاجَتِی اِنَّکَ عَلَی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیُرٌ مَبُرُورًا وَّارُحَمُنِی وَلَا تُحَیِّبُنِی وَبَارِکُ لِی فِی سَفَرِی وَاقْضِ بِعَرَفَاتٍ حَاجَتِی اِنَّکَ عَلَی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیُرٌ اللَّهُمَّ اِبَیْکَ عَدُوتُ وَعَلَیْکَ اَللَّهُمَّ اِیَکَ عَدُوتُ وَعَلَیْکَ اَللَّهُمَّ اِیَکَ عَدُوتُ وَعَلَیْکَ اللَّهُمَّ اِیْکَ عَدُوتُ وَعَلَیْکَ اللَّهُمَّ اِیْکَ عَدُوتُ وَعَلَیْکَ اللَّهُمَّ اِیْکَ عَدُوتُ وَعَلَیْکَ اللَّهُ مَلُ مُو خَیْرٌ مِیْنَ وَافْضَلُ ، اَللَّهُمَّ اِیْکَ اَسَالُکَ الْعَفُو وَالْعَافِیَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّآئِمَةَ فِی الدُّنیَا وَالْاحِرَةِ وَصَلَّی اللَّهُ عَلَی خَیْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَالِهِ وَصَحْبِهِ الْعَفُو وَالْعَافِیَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّآئِمَةَ فِی الدُّنیَا وَالْاحِرَةِ وَصَلَّی اللَّهُ عَلَی خَیْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَالِهِ وَصَحْبِهِ الْمُعَیْنَ . (1)

- (١٠) جب نگاه جبلِ رحمت پر پڑے ان امور میں اور زیادہ کوشش کروکہ ان شاءاللہ تعالیٰ وقت ِقبول ہے۔
 - (۱۱) عرفات میں اُس پہاڑ کے پاس یاجہاں جگد ملے شارعِ عام سے چ کر اُترو۔
- (۱۲) آج کے جوم میں کہ لاکھوں آ دمی ، ہزاروں ڈیرے خیمے ہوتے ہیں۔اپنے ڈیرے سے جا کرواپسی میں اُس کا ملناوشوار ہوتا ہے،اس لیے پیچان کا نشان اس پر قائم کردو کہ دُور سے نظر آئے۔
- (۱۳) مستورات ساتھ ہوں تو اُن کے بُر قع پر بھی کوئی کپڑا خاص علامت جپکتے رنگ کا لگا دو کہ دُور ہے دیکھ کرتمیز کرسکواور دل مشوش نہ رہے۔
- (۱۴) دو بہر تک زیادہ وقت اللہ (عزوجل) کے حضور زاری اور خالص نیت سے حسب طاقت صدقہ وخیرات و ذکر و لبیک ودرود ودوا واستغفار وکلمہ توحید میں مشغول رہے۔ حدیث میں ہے، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ کیلم فرماتے ہیں:''سب میں بہتر وہ چیز جوآج کے دن میں نے اور مجھ سے پہلے انبیانے کہی ہیہے:

لَا اللهَ اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيُكَ لَهُ لَهُ الْمُلُكُ وَلَهُ الْحَمْدُ طَيْحَيِي وَ يُمِينُتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُونُتُ ط

● …… اے اللہ (عزوجل)! میں تیری طرف متوجہ ہوااور تجھ پر میں نے تو کل کیا اور تیرے وجہ کریم کا ارادہ کیا، میرے گناہ بخش اور میرے کج کومبر در کراور مجھ پر رحم کراور مجھ ٹوٹے میں نہ ڈال اور میرے لیے میرے سفر میں برکت دے اور عرفات میں میری حاجت پوری کر، بے شک تو ہر شے پر قا در ہے۔
اے اللہ (عزوجل)! میرا چانا اپنی نوشنودی سے قریب کر اورا پنی نا خوش سے دُور کر۔ الٰبی! میں تیری طرف چلا اور تجھ پر اعتماد کیا اور تیری ذات کا ارادہ کیا تو مجھ کے کہا اور تیری فرات کا ارادہ کیا تو مجھ کے کہا کہ بھر وافضل ہیں۔ الٰبی! میں تجھ سے محفود عافیت کا سوال کرتا ہوں اور اس عافیت کا جود نیا والزرت میں ہمیشہ رہنے والی ہے اور اللہ (عزوجل) درود تیسے بہترین مخلوق مجھ کے کہا لیہ قالی علیہ وہلم اورائ کی آل واصحاب سب پر۔ ۱۲

منى كى روانگى اورعرفە كاوقوف

🖏 بِيَدِهِ الْخَيْرُ ۖ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ . (1)

اور چاہے تواس کے ساتھ میکھی کہے:

لَا نَعُبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ وَلَا نَعُرِفُ رَبَّا سِوَاهُ ﴿ اَللَّهُمَّ اجْعَلُ فِى قَلْبِى نُوْرًا وَّفِى سَمُعِى نُوْرًا وَفِى بَصَرِى لَوُرًا اللَّهُمَّ اشُرَحُ لِى صَدُرِى وَيَسِّرُلِى اَمُرِى وَاَعُودُ بِكَ مِنُ وَسَاوِسِ الصَّدُرِ وَتَشْتِيْتِ الْاَمُرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اللَّهُمَّ اشُرَحُ لِى صَدُرِى وَيَسِّرُ لِى اَمُرِى وَاَعُودُ بِكَ مِنُ وَسَاوِسِ الصَّدُرِ وَتَشْتِيْتِ الْاَمُرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُ مَا تَهَبُّ بِهِ الرِّيُحُ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِى النَّهَارِ وَشَرِّ مَا تَهَبُّ بِهِ الرِّيُحُ وَشَرِّ بَوَائِقِ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ هُ لَذَا مَقَامُ المُسْتَجِيْرِ الْعَآئِذِ مِنَ النَّارِ اَجِرُنِى مِنَ النَّارِ بِعَفُوكَ وَادُخِلُنِى الْجَنَّةَ بِرَحُمَتِكَ اللَّهُمَّ اللَّهُمَّ الْهُمَّ الْمُسْتَجِيرُ الْعَآئِذِ مِنَ النَّارِ اَجِرُنِى مِنَ النَّارِ بِعَفُوكَ وَادُخِلُنِى الْجَنَّة بِرَحُمَتِكَ اللَّهُمَّ الْدُا مَقَامُ الْمُسْتَجِيْرِ الْعَآئِذِ مِنَ النَّارِ اَجِرُنِى مِنَ النَّارِ بِعَفُوكَ وَادُخِلُنِى الْجَنَّة بِرَحُمَتِكَ اللَّهُ مَا اللَّهُمَّ الْدُولِ وَالْعَلَيْهِ مَا لَاللَّهُمَّ اللَّهُمَّ الْوَالِمُ اللَّهُمَّ الْوَلَاعَلَيْهِ مَن النَّارِ مِعَنُوكَ وَانَا عَلَيْهِ . (2)

(۱۵) دو پہر سے پہلے کھانے پینے وغیرہ ضروریات سے فارغ ہولے کہ دل کسی طرف لگانہ رہے۔ آج کے دن جیسے حاجی کوروزہ مناسب نہیں کہ دُعامیں ضعف ہوگا۔ یو ہیں پیٹ بھر کھانا سخت زہراور خفلت و کسل کا باعث ہے، تین روٹی کی بھوک والا ایک ہی کھائے۔ نبی سلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے تو ہمیشہ کے لیے یہی تھم دیا ہے اور خود دنیا سے تشریف لے گئے اور جو کی روٹی بھی والا ایک ہی کھائے۔ نبی سلی اللہ اللہ (عزومل) کے تھم سے تمام جہال اختیار میں تھا اور ہے۔ انوار و برکات لینا چاہو تو نہ صرف آج بلکہ حربین شریفین میں جب تک حاضر رہو تہائی پیٹ سے زیادہ ہر گزنہ کھاؤ۔ مانو گے تو اس کا فائدہ اور نہ مانو گے تو اس کا نقصان آئھوں دکھولوگے۔ ہفتہ بھراس پڑمل کر تو دیھوا گی حالت سے فرق نہ پاؤجھی کہنا جی بچے تو کھانے پینے کے بہت سے دن ہیں یہاں تو نوروذ وق کے لیے جگہ خالی رکھو۔

اندروں از طعام خالی دار تادرو نورِ معرفت بینی ع '' بھرابرتن دوبارہ کیا بھرےگا۔''

^{1&}quot; لباب المناسك" للسندي، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه)، ص ١٩١.

^{2} اس کے سواہم کسی کی عبادت نہیں کرتے اور اُس کے سواکسی کور بنہیں جانتے ، اے اللہ (عزوجل)! تو میرے ول میں نور کر اور میرے کان اور نگاہ میں نور کر ، اے اللہ (عزوجل)! میر ہے سینہ کو کھول دے اور میرے امر کوآ سان کر اور تیری پناہ ما نگنا ہوں سینہ کے وسوسوں اور کام کی پراگندگی اور عذا ب قبر ہے، اے اللہ (عزوجل)! میں تیری پناہ ما نگنا ہوں اُس کے شرسے جورات میں داخل ہوتی ہے اور دن میں داخل ہوتی ہے اور اُس کے شرسے جس کے ساتھ ہوا چلتی ہے اور شرسے آفات ِ زمانہ کے ۔ اے اللہ (عزوجل)! بیام ن کے طالب اور جہنم سے پناہ ما نگنے والے کے کھڑے ہونے کی جگہ ہے، اپنے عفو کے ساتھ مجھ کو جہنم سے بچا اور اپنی رحمت سے جنت میں داخل کر ، اے سب مہر بانوں سے زیادہ مہر بان۔ اے اللہ (عزوجل)! جب تو نے اسلام کی طرف مجھ مہرایت کی تو اس کو مجھ سے عبد انہ کرنا یہاں تک کہ مجھے سے اسلام پر وفات دینا۔ ۱۲

(١٦) جب دوپېرقريب آئے نهاؤ كەسنت مۇكده ہے اور نه ہوسكے توصرف وضو

عرفات میں ظھر و عصر کی نماز

(۱۷) دو پپر ڈھلتے ہی بلکہ اس سے پہلے کہ امام کے قریب جگہ ملے مسجد غمرہ جاؤ۔ شنتیں پڑھ کر خطبہ سُن کر امام کے ساتھ ظہر پڑھواس کے بعد بے تو قف عصر کی تکبیر ہوگی معاً جماعت سے عصر پڑھو، نے میں سلام وکلام تو کیا معنی ہنتیں بھی نہ پڑھو اور بعد عصر بھی نفل نہیں ، پیظم وعصر ملاکر پڑھنا جھی جائز ہے کہ نمازیا تو سلطان پڑھائے یا وہ جو جج میں اُس کا نائب ہوکر آتا ہے جس نے ظہر اکیلے یا اپنی خاص جماعت سے پڑھی اُسے وقت سے پہلے عصر پڑھنا جائز نہیں اور جس حکمت کے لیے شرع نے بہال ظہر کے ساتھ عصر ملانے کا حکم فرمایا ہے یعنی غروب آفناب تک دُعا کے لیے وقت خالی ملناوہ جاتی رہے گی۔

سَسَعَانُ اللّٰ الله مثلاً الله مثلاً على من الله على الله مثلاً الله من الله

سکانی کی طاکر پڑھنے میں یہ بھی شرط ہے کہ دونوں نمازوں میں بااحرام ہو،اگرظہر پڑھنے کے بعداحرام باندھاتو عصر ملا کرنہیں پڑھ سکتا۔ نیز پیشرط ہے کہ وہ احرام حج کا ہواگر ظہر میں عمرہ کا تھا عصر میں حج کا ہوا جب بھی نہیں ملاسکتا۔ (2) (درمختار، عالمگیری)

عرفه کا وقوف

(۱۸) خیال کرو جب شرع کو یہ وقت دُعا کے لیے فارغ کرنے کا اس قدر اہتمام ہے کہ عصر کوظہر کے ساتھ ملا کر پڑھئے کا تھا کہ اس وقت اور کام میں مشغولی کس قدر بیہودہ ہے۔ بعض احمقوں کو دیکھا ہے کہ امام تو نماز میں ہے یا نماز پڑھ کر موقف کو گیا اور وہ کھانے، پینے ، گھے ، چائے اُڑانے میں ہیں۔ خبر دار! ایسانہ کرو۔ امام کے ساتھ نماز پڑھتے ہی فوراً موقف (لیتن وہ جگہ کہ نماز کے بعد سے غروب آفاب تک وہاں کھڑے ہوکر ذکر ودعا کا تھم ہے اُس جگہ کو)روانہ ہوجاؤاور ممکن ہو تو

^{1 (}دالمحتار" كتاب الحج، مطلب في شروط الجمع، ج٣، ص٩٥.

^{2 &}quot;الدرالمختار" ، كتاب الحج ، ج٣، ص٥٩٥.

و"الفتاوي الهندية"كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٨.

11 ᆕ منی کی روانگی اور عرفه کاوتون

اُونٹ پر کہ سُنت بھی ہے اور اجموم میں دینے کیلئے سے محافظت بھی۔

(19) بعض مطوف اس مجمع میں جانے سے منع کرتے اور طرح ڈراتے ہیں اُن کی نہ سُو کہ وہ خاص نز ول رحمتِ عام کی جگہ ہے۔ ہاں عور تیں اور کمز ور مرد بہیں سے کھڑے ہوئے دعا میں شامل ہوں کیطن عرفہ (1) کے سوایہ سارا میدان موقف ہے اور یہلوگ بھی بہی تصور کریں کہ ہم اُس مجمع میں حاضر ہیں، اپنی ڈیڑھا ینٹ کی الگ نہ ہم جھیں۔ اُس مجمع میں یقیناً بکثر ت اولیا بلکہ إلیاس وخصر علیه السام دو نبی بھی موجود ہیں، یہ تصور کریں کہ انور و برکات جو مجمع میں اُن پراتر رہے ہیں اُن کا صدقہ ہم بھکاریوں

بلکہ الیا ک و مطربیہاالسلام دو ہی جی موجود ہیں ، پیکھورٹریں کہ الوروبر کات جو بن میں ان پراٹر رہے ہیں ان کا صر کو بھی پہنچتا ہے۔ یوں الگ ہو کر بھی شامل رہیں گے اور جس سے ہو سکے تو وہاں کی حاضری چھوڑنے کی چیز نہیں۔

(۲۰) افضل میہ ہے کہ امام سے نزدیک جبلِ رحمت کے قریب جہال سیاہ پھر کا فرش ہے، رُوبقبلہ امام کے بیچھے کھڑا ہو جب کہ ان فضائل کے حصول میں دقت یا کسی کواذیت نہ ہوور نہ جہال اور جس طرح ہوسکے وقوف کرے امام کی وہنی جانب اور بائیں رُوبرُ و سے افضل ہے۔ یہ وقوف ہی جج کی جان اور اُس کا بڑار کن ہے، وقوف کے لیے کھڑار ہنا افضل ہے شرط یا واجب نہیں، بیٹھار ہاجب بھی وقوف ہوگیا وقوف میں نیت اور رُوبقبلہ ہونا افضل ہے۔

وقوف کی سنتیں 🏿

وقوف میں بیامورسنت میں:

- ۞ غسل۔
- 🕜 دونون خطبول کی حاضری۔
- 🕆 دونون نمازیں ملاکریڑھنا۔
 - پےروزہ ہونا۔
 - 🗿 باوضوہونا۔
- 🕤 نمازوں کے بعد فوراً وقوف کرنا۔
- (۲۱) بعض جاہل یہ کرتے ہیں کہ پہاڑ پر چڑھ جاتے اور وہاں کھڑے ہوکر رومال ہلاتے رہتے ہیں اس سے بچواور اُن کی طرف بھی ہُر اخیال نہ کرو، بیودت اَوروں کے عیب دیکھنے کانہیں ،اپنے عیبوں پرشرمساری اور گریہ و زاری کا ہے۔
 - 🕻 🗗 بطن عرنه عرفات میں حرم کے نالول میں ہے ایک نالہ ہے مبجد نمر ہ کے پچتم کی طرف یعنی کعبہ محظمہ کی طرف وہاں وقوف نا جا کز ہے۔ ۱۲

وقوف کے آداب

(۲۲) اب وہ کہ یہاں ہیں اور وہ کہ ڈیروں میں ہیں سب ہمتن صدقی دل سے اپنے کریم مہربان رب کی طرف متوجہ ہوجائیں اور میدانِ قیامت میں حساب اعمال کے لیے اس کے حضور حاضری کا تصور کریں۔ نہایت کُشوع وخضوع کے ساتھ لرزتے کا نیپتے ڈرتے امید کرتے آئکھیں بند کیے گردن جھکائے، دست دعا آسان کی طرف سرسے او نچا پھیلائے تکبیر و تہلیل و تیجہ و لبیک وحمہ و ذکر و دعا و تو بہ واستغفار میں ڈوب جائے ، کوشش کرے کہ ایک قطرہ آنسووں کا شیکے کہ دلیل اجابت و سعادت ہے، ورندرونے کا سامونھ بنائے کہ اچھوں کی صورت بھی اچھی ۔ اُ ثنائے دعا و ذکر میں لبیک کی بار بارتکر ارکرے۔

آج کے دن دُعا کیں بہت منقول ہیں اور دعائے جامع کہ اوپرگزری کافی ہے چند باراً سے کہہ لواورسب سے بہتر یہ کہ سارا وقت درودو ذکر و تلاوت قرآن میں گزاردو کہ بوعدہ حدیث دُعاوالوں سے زیادہ پاؤگے۔ نبی سلی اللہ تعالیٰ علیہ دُلم کا دامن پکڑو،
غوثِ اعظم مِنی اللہ تعالیٰ عدیہ توسل کرو، اپنے گناہ اور اس کی قہاری یا دکر کے بید کی طرح لرز واور یقین جانو کہ اس کی مارسے اس کے ویٹ پناہ ہے۔ اُس سے بھاگ کر کہیں نہیں جاسکتے اس کے قرکے سوا کہیں ٹھکانا نہیں للہذا اُن شفیعوں کا دامن پکڑے، اُس کے عذاب سے اُسی کی پناہ مانگواور اس حالت میں رہو کہ بھی اُس کے فضب کی یا دسے جی کا نیاجا تا ہے اور بھی اُس کی رحمت عام کی امید سے مر مجھایا دل نہال ہوجا تا ہے۔

یو بیں تضرّع وزاری میں رہو یہاں تک کہ آفتاب ڈوب جائے اور رات کا ایک لطیف جُوآ جائے، اس سے پہلے گو چ منع ہے۔ بعض جلد باز دن ہی سے چل دیتے ہیں، اُن کا ساتھ نہ دو غروب تک تھہر نے کی ضرورت نہ ہوتی تو عصر کوظہر سے ملا کرکیوں پڑھنے کا تھم ہوتا اور کیا معلوم کہ رحمت ِ الٰہی کس وفت توجہ فرمائے، اگر تمھارے چل دینے کے بعد اُتری تو معاذ اللہ کیسا خیارہ ہے اور اگر غروب سے پہلے صدودِ عرفات سے نکل گئے جب تو پورا جُرم ہے۔ بعض مطوف یہاں یوں ڈراتے ہیں کہرات میں خطرہ ہے بیدوایک کے لیے تھیک ہے اور جب سارا قافلہ تھہرے گا تو ان شاء اللہ تعالیٰ کچھاندیشہ نہیں۔ اس مقام پر پڑھنے کے لیے بعض دعا کیں کھی جاتی ہیں: اَللَّهُ اَکْبَدُ وَ لِلَٰهِ الْحَمُدُ. تین بار پھر کلمہ توحید، اس کے بعد

اَللَّهُمَّ اهُدِنِى بِالْهُداى وَنَقِنِى وَاعْصِمْنِى بِالتَّقُواى وَاغْفِرُ لِى فِى الْاَخِرَةِ وَالْاُولَى لَى . (1) تين بار اَللَّهُمَّ اجُعَلُهُ حَجًّا مَّبُرُورًا وَّذَنَبًا مَّغُفُورًا اَللَّهُمَّ لَکَ الْحَمُدُ کَالَّذِی نَقُولُ وَخَیْرًا مِّمَّا نَقُولُ اَللَّهُمَّ لَکَ الْحَمُدُ کَالَّذِی نَقُولُ وَخَیْرًا مِّمَّا نَقُولُ اَللَّهُمَّ لَکَ صَلاتِی وَنُسُکِی وَمَحْیَای وَمَمَاتِی وَالَیْکَ مَالِی وَلَکَ رَبِّ تُرَاثِی اَللَّهُمَّ اِنِّی اَعُودُ فَ بِکَ مِنْ عَذَابِ لَکَ صَلاتِی وَنُسُکِی وَمَحْیَای وَمَمَاتِی وَالَیْکَ مَالِی کَراور یا کراور یہ بیزگاری کے ساتھ گناہ ہے محفوظ رکھاور دنیا وآخرت میں میری

🐾 مغفرت فرما-۱۲

ُ الْقَبُرِ وَ وَسُوسَةِ الصَّدُرِ وَشِتَاتِ الْاَمُرِ اللَّهُمَّ اِنَّىُ اَسُأَلُکَ مِنُ خَيْرِ مَا تَجِیُ ثَبِهِ الرِّيُحُ وَنَعُوذُ بِکَ مِنُ شَرِّ مَا تَجِیُ ثَبِهِ الرِّيُحُ اَللَّهُمَّ اِنِّیُ اَسُأَلُکَ دِرُقًا تَجِیُ ثَبِهِ الرِّیُحُ اَللَّهُمَّ اِنِّیُ اَسُأَلُکَ دِرُقًا طَیّبًا مُّبَارَگا. طَیّبًا مُّبَارَگا.

اَللَّهُمَّ اِنَّکَ اَمَرُتَ بِالدُّعَآءِ وقَضَيْتَ عَلَى نَفْسِکَ بِالْإِجَابِةِ وَإِنَّکَ لَا تُخُلِفُ الْمِيُعَادَ وَلَا تَنُکُثُ عَهُدَکَ اَللَّهُمَّ مَا اَحْبَبُتَ مِنُ خَيْرٍ فَحَبِّبُهُ اِلْيُنَا وَ يَسِّرُهُ لَنَا وَمَا كَرِهُتَ مِنُ شَرِّ فَكَرِّهُهُ اِلْيُنَا وَجَنِّبُنَاهُ وَلَا تَنُزِعُ مِنَّالُهُمَّ مَا اللَّهُمَّ اِللَّهُمَّ اِنَّکَ تَرَای مَكَانِی وَتَسُمَعُ كَلامِی وَتَغَلَمُ سِرِّی وَعَلانِيَتِی وَلَا يَخُفی مِنَّا الْاسْلَامَ بَعُدَ اِذُهَ لَيُتَنَا اللَّهُمَّ اِنَّکَ تَرَای مَكَانِی وَتَسُمَعُ كَلامِی وَتَغَلَمُ سِرِّی وَعَلانِيَتِی وَلَا يَخُفی عَلَيْکَ شَیءٍ مِن اَمُرِی اَنَا الْبَآئِسُ الْفَقِيرُ الْمُسْتَغِیْتُ الْمُسْتَجِیرُ الْوَجِلُ الْمُشْفِقُ الْمُقِرُّ الْمُغْتَرِفُ بِلَائِلُ وَ اَدُعُوکَ دُعَآءَ الْمُعْتَرِفُ لِلْمُنْ اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلُنِی وَابُتَهِلُ اللَّهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی اللَّهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی بِلَاعَائِلُ وَ اَدُعُوکَ دُعَآءَ اللَّهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی بِلَاعَائِکَ مَسْأَلَةَ الْمُسْكِيْنِ وَابُتَهِلُ اللَّهُ وَابَعِلَ لَکَ جَسَدُهُ وَ رَغِمَ انْفُهُ اللَّهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی بِلَاعَائِکَ مَنْ خَضَعَتُ لَکَ رَقَبَعُ لَكُ مُنْ اللَّهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی بِلَا اللَّهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی بِلَاعَائِکَ وَتَعَالَعُلُولُ وَ وَيْعِلَ لَكَ جَسَدُهُ وَ رَغِمَ انْفُهُ اللَّهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی بِلَاعَائِکَ وَلَيْ اللَّهُ مَا لَا لَهُمَّ لَا تَجُعَلُنِی بِلَاعُولُ وَ خَیْرَ الْمُعْطِیْنَ . (1)

اورتيم في كى روايت جابر رضى الله تعالى عنه سے اوپر فد كور موچكى اس ميس جود عاكيں بيں أَصِيس بَسى پُر صيس يعنى لَآ اِللهَ اِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَوِيُكَ لَـهُ لَـهُ الْمُلْكُ وَلَـهُ الْحَمُدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيءٍ قَدِيُرٌ . سَوْابار

• الله (عزوجل)! اس کوج مبر ورکراور گناہ بخش دے، البی! تیرے لیے حمد ہے جیسی ہم کہتے ہیں اوراس سے بہتر جس کوہم کہیں، اے الله (عزوجل)! میری نماز وعبادت اور میر اجینا اور مرنا تیرے بیے ہے اور تیری طرف میری واپسی ہے اور اے پروردگار! تو ہی میر اوارث ہے،
اے الله (عزوجل)! میں تیری پناہ مانگتا ہوں عذابِ قبر اور سینہ کے وسو سے اور کام کی پراگندگی ہے، البی! میں سوال کرتا ہوں اُس چیز کی خیر کا جس کو ہوالاتی ہے اور آئی کے دونیا ہوایت کی طرف ہم کور ہنمائی کر اور تقتو کی سے ہم کومزین کر اور آخرت وونیا میں ہم کو بخش دے، البی! میں رزق یا کیزہ ومبارک کا تجھ سے سوال کرتا ہوں۔

الهی! تو نے دعا کرنے کا تھم دیا اور قبول کرنے کا ذمہ تو نے خود لیا اور بے شک تو وعدہ کے خلاف نہیں کرتا اور اپنے عبد کوئیں تو ڑتا،
الهی! جواجھی باتیں تھے محبوب ہیں انھیں ہماری محبوب کر دے اور ہمارے لیے میسر کراور جو بُری باتیں تھے ناپیند ہیں آنھیں ہماری ناپیند کر اور ہم کو الله الله ان سے بچا اور اسلام کی طرف تو نے ہم کو ہدایت فرمائی تو اُس کو ہم سے جدانہ کر ، الهی! تو میر مے مکان کو دیکھتا ہے اور میر اکلام سنتا ہے اور میر بے لوشیدہ وظاہر کو جانتا ہے میر میر کام میں سے کوئی شے تھے پرخفی نہیں ، میں نامرا ومحتاج فریا دکرنے والا ، پناہ چاہنے والا ،خوفناک ڈرنے والا اپنے گناہ کامٹر ومعترف ہوں ، مسکین کی طرح تھے سے سوال کرتا ہوں اور گنہ تھا دیل کی طرح تھے سے عاجزی کرتا ہوں اور ڈرنے والے مُضطِر کی طرح تھے سے دعا کرتا ہوں ، اُس کی مثل وعاجس کی گردن تیرے لیے جھک گئی اور آئکھیں جاری اور بدن لاغراور ناک خاک میں ملی ہے ، اے پروردگار! تو اپنی دعاسے مجھے بد بخت نہ کراور مجھ پر بہت مہر بان اور مہر بان ہو جا، اے بہتر سوال کیے گئے اور اے بہتر دیے والے! ہے!

عُ قُلُ هُوَ اللَّهُ . سوبار

اَللَّهُ مَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى سَيِّدِناَ اِبُرَاهِيُمَ وَعَلَى الِ سَيِّدِنا اِبُرَاهِيُمَ اِنَّكَ حَمِيُدٌ مَّجِيُدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمُ . سوبار

ابن ابی شیبہ وغیرہ امیر المونین مولی علی کرم اللہ تعالی وجہہے راوی ، که رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فر مایا: که ' میری اور انبیا کی ؤعاعرفہ کے دن بیرہے:

لَآ اِللهَ اِلَّا اللَّهُ وَحُدَهُ لَا شَرِيُكَ لَهُ لَهُ الْمُلُكُ وَلَهُ الْحَمُدُ يُحْيِيُ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللَّهُمَّ اجْعَلُ فِي سَمْعِي نُوراً وَفِي بَصَرِي نُوراً وَفِي قَلْبِي نُورًا .

اَللَّهُ مَّ اشُرَحُ لِى صَدُرِى وَ يَسِّرُلِى اَمُرِى وَاَعُودُ بِكَ مِنُ وَّسَاوِسِ الصَّدُرِ وَ تَشُتِيُتِ الْاَمُرِ وَعَدُابِ الْقَبُرِ اللَّهُمَّ اِنِّى اَعُودُ بِكَ مِنُ شَرِّ مَا يَلِجُ فِى اللَّيْلِ وَ شَرِّ مَا يَلِجُ فِى اللَّيْلِ وَ شَرِّ مَا يَلِجُ فِى اللَّيْلِ وَ شَرِّ مَا يَلِجُ فِى اللَّهُ وَ اللَّهُ اللَّهُ فَى اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ وَ اللَّهُ اللَّهُ وَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللللِّهُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ الللْمُ الللللْمُ الللْمُ اللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ اللللِمُ الللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ اللللْمُ الللْمُ اللللْمُ اللللللللْمُ الللْمُ اللللْمُ الللْمُ الللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ اللللللْمُ اللللللْمُ اللللللْمُ الللللْمُ الللللللللْمُ الللللللللْمُ الللللللْمُ الللللللْمُ الللللْمُ الللللْمُ الللللللللْمُ اللللللللللللْمُ الللللللللْمُ الللللللللللللْمُ اللللللللللللْمُ الللللللللللْمُ الللللللللللللْمُ الللللللللْمُ اللللللللللللللللللللللِمُ اللللللللللللللللِمُ الللللللللللللللْمُ الللللللللللللللللللللللللللل

اس مقام پر پڑھنے کی بہت دعا ئیں کتابوں میں مذکور ہیں مگراتنی ہی میں کفایت ہےاور درودشریف و تلاوتِ قر آن مجیدسب دُعاوُں سے زیادہمفید۔

(۲۳) ایک ادب واجب الحفظ اس روز کابیہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے سیج وعدوں پر بھروسا کر کے یقین کرے کہ آج میں گنا ہوں سے ایسا پاک ہوگیا جیسا جس دن مال کے پیٹ سے پیدا ہوا تھا، اب کوشش کروں کہ آئندہ گناہ نہ ہوں اور جوداغ اللہ تعالیٰ نے محض اپنی رحمت سے میری بیشانی سے دھویا ہے پھر نہ لگے۔

وقوف کے مکروہات

(۲۴) يهال پيربا تين مکروه بين:

🕥 غروب آفتاب سے پہلے وقوف چھوڑ کرروانگی جب کہ غروب تک حدودِعرفات سے باہر نہ ہوجائے ورنہ حرام ہے۔

• المسلك المتقسط"، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه)، ص ٢٠١.

"المصنف" لابن ابي شيبة، كتاب الحج، ما يقال عشية عرفة ...إلخ، ج٤، ص٧٧٥..

- 🕥 نمازعصر وظهر ملانے کے بعد موقف کوجانے میں دیر۔
 - 🗇 أس وقت سے غروب تك كھانے يينے، يا
 - الوجه بخدا كے سوائسي كام میں مشغول ہونا۔
 - کوئی د نیوی بات کرنا۔
- 🕤 غروب پریقین ہوجانے کے بعدروانگی میں در کرنا۔
 - √ مغرب یا عشاعرفات میں پڑھنا۔
 (1)

منبيه: موقف ميں چھترى لگانے ياكسى طرح سابي چاہئے ہے تن المقدور بچوہاں جومجبورہ معذورہے۔

ضروری نصیحت

معظّمہ کے سامنے، نہ کہ طواف بیت الحرام میں۔ یہ تھاری ہمیشہ حرام ہے نہ کہ احرام میں، نہ کہ موقف یا مسجد الحرام میں، نہ کہ کعبہ معظّمہ کے سامنے، نہ کہ طواف بیت الحرام میں۔ یہ تھا رے بہت امتحان کا موقع ہے عورتوں کو تھم دیا گیا ہے کہ یہاں موزھ نہ چھپاؤاور تصمیں تھم دیا گیا ہے کہ ان کی طرف نگاہ نہ کرو، یقین جانو کہ یہ بڑے غیرت والے بادشاہ کی باندیاں بیں اوراس وقت تم اوروہ خاص در بار میں حاضر ہو۔ بلاتشیہ شیر کا بچہ اس کی بغل میں ہواس وقت کون اس کی طرف نگاہ اُٹھا سکتا ہے تو اللہ (عزوجل) واحد قبار کی کنیزیں کہ اُس کے خاص در بار میں حاضر بیں اُن پر بدنگاہی کس قدر سخت ہوگی کو یہاں اُٹرا علی اُٹرا جا تا اور بال ہاں ہوشیار! ایمان بچائے ہوئے قلب ونگاہ سنجالے ہوئے حرم وہ جگہ ہے جہاں گناہ کے ارادہ پر پکڑا جا تا اور ایک گناہ لاکھ گناہ کے برابر مظہر تا ہے، الٰہی خیر کی تو فیق دے۔ آمین۔

وقوف کے مسائل

مسئ الآل الله وقوف كاوقت نويں ذى الحجہ كة فتاب دُ صلنے سے دسويں كى طلوع فجرتك ہے۔اس وقت كے علاوہ كسى اور وقت وقوف كيا تو جج نہ ملا مگر ايك صورت ميں وہ يہ كہذى الحجه كا ہلال دكھا كى نہ ديا، ذيقعدہ كے تيں دن پورے كركے ذى الحجه كا مهينة شروع كيا اور اس حساب سے دسويں ہوگی اور وقوف مهينة شروع كيا اور اس حساب سے دسويں ہوگی اور وقوف

- 🕕 "الفتاوي الرضوية"، ج٠١، ص٩٤٧، وغيره.
 - 🐒 💇 🗗پ ۱۶ النحل: ۲۰.

وسویں تاریخ کوہوا مگر ضرورةٔ بیرجائز مانا جائے گا اورا گردھو کا ہوا کہ آٹھویں کونویں تمجھ کروقوف کیا پھرمعلوم ہوا تو بیروقوف سیجے نہ موا۔(1)(عالمگیری وغیر ہ)

سب لوگوں یا اکثر کے ساتھ امام و قوف کرسکتا ہے، تو و قوف لازم ہے و قوف نہ کریں تو جج فوت ہوجائے گا اور اگرا تناوقت باتی سب لوگوں یا اکثر کے ساتھ امام و قوف کرسکتا ہے، تو و قوف لازم ہے و قوف نہ کریں تو جج فوت ہوجائے گا اور اگرا تناوقت باتی نہ ہوکہ اکثر لوگوں کے ساتھ امام و قوف کرے اگر چہ خود امام اور جو تھوڑ بے لوگ جلدی کر کے جائیں تو صبح سے پیشتر وہاں پہنچ جائیں گر جولوگ پیدل ہیں اور جن کے ساتھ بال بچے ہیں اور جن کے پاس اسباب زیادہ ہے ان کو و قوف نہ ملے گا، تو اس شہادت کے موافق عمل نہ کرے بلکہ دوسرے دن بعد زوال تمام تجاج کے ساتھ و قوف کرے۔ (و) (منسک)

سَسَنَا اللهُ عَنْ اللهُ عَنْ الْحَدِي عَنْ الْحَدِي عَنْ الْحَدِي عَنْ الْحَدِي عَنْ اللهُ الل

سکانی کہ اُس کے کیڑے اور کے اور کے سے بھی وقوف ہوجا تا ہے خواہ اُسے معلوم ہوکہ بیعرفات ہے یا معلوم نہ ہو، با وضوہ ہو یا بیدار ہو، ہوش میں ہو یا جنون و بے ہوشی میں بہاں تک کہ عرفات سے ہوکر جوگز رگیا اُسے ج مل گیا یعنی اب اُس کا ج فاسد نہ ہوگا جب کہ بیسب احرام سے ہوں ۔ بے ہوشی میں احرام کی صورت یہ ہوکر جوگز رگیا اُسے ج مل گیا یعنی اب اُس کا ج فاسد نہ ہوگا جب کہ بیسب احرام سے ہوں۔ بے ہوش ہوگیا اور اُس کے ساتھیوں میں ہے کہ پہلے ہوش میں تھا اور ای وقت احرام باندھ لیا تھا اور اگر احرام باندھ نے سے پہلے بے ہوش ہوگیا اور اُس کے ساتھیوں میں سے کسی نے یا کسی اور نے اُس کی طرف سے بھی احرام باندھ ویا اگر چہ اس احرام باندھ نے والے نے خود اپنی طرف سے بھی احرام باندھ اور نے اُس کی طرف سے بھی احرام باندھ کے احرام باندھ کا بیہ مطلب باندھا ہو کہ اُس کے کبڑے اُتار کر تہبند باندھ دے بلکہ بیکہ اُس کی طرف سے نیت کرے اور لبیک کہے۔ (عالمگیری ، جو ہرہ) مہیں کہ اُس کے کبڑے اُتار کر تہبند باندھ دے بلکہ بیکہ اُس کی طرف سے نیت کرے اور لبیک کہے۔ (عالمگیری ، جو ہرہ) سی کا حرام عرف کے فوت ہوگیا لیون کے اُسے وقوف نہ ملا تو اب جے کے باقی افعال ساقط ہوگئے اور اُس کا احرام عمرہ کی اُسے وقوف نہ ملا تو اب جے کے باقی افعال ساقط ہوگئے اور اُس کا احرام عمرہ کی

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٩، وغيره.
- 2 "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه، فصل في اشتباه يوم عرفة)، ص٢١٦.
 - 3 "لباب المناسك"، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه، فصل في اشتباه يوم عرفة)، ص١٢٠.
 - 4. "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٩.
 - والجوهرة النيرة كتاب الحج، الجزء الأول، ص٧٠٩.

عرف نتقل ہو گیالہٰذاعمرہ کر کے احرام کھول ڈ الے اور آئندہ سال قضا کرے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری، درمختار)

مَسِعًا ﴾ آ پاہے۔ آ فتاب ڈو بنے سے پہلے از دحام کے خوف سے حدو دِعرفات سے باہر ہو گیا اُس پر دَم واجب ہے، پھراگر آ فتاب ڈو بنے سے پہلے واپس آیا اور مھمرار ہا یہاں تک کہ آفتاب غروب ہوگیا تو دَم معاف ہوگیا اور اگر ڈو بنے کے بعدواپس آیا تو ساقط نہ ہوااورا گرسواری پرتھااور جانوراُ ہے لے کر بھاگ گیا جب بھی دَم واجب ہے۔ یو ہیں اگراُس کا اونٹ بھاگ گیا یہ اُس کے پیچھے چل دیا۔ ⁽²⁾ (منسک)

مَسِعًا ﴾ کُمِ م نے نمازعشانہیں پڑھی ہےاوروفت صرف اتنابا تی ہے کہ چاررکعت پڑھے مگر پڑھتا ہے تو وقوف عرفہ جاتارہے گا تو نماز جیموڑے اور عرفات کوجائے۔(3) (جوہرہ) اور بہترید کہ چلتے میں پڑھ لے بعد کواعادہ کرے۔(4) (منسک)

مُزدلفه کی روانگی اور اُس کا وقوف

التُّدعز وجل فرما تاہے:

﴿ فَإِذَآ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفْتِ فَاذْ كُرُوااللَّهَ عِنْ مَا الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ " وَاذْ كُرُونًا كَمَاهَل مُمْ وَ إِنْ كُنْتُمْ مِّنْ

قَبُلِهِ كَمِنَ الشِّمَا لِّينَ ۞ (5)

جبعرفات سےتم واپس ہوتومشر حرام (مزدلفہ) کے نزدیک، الله (عزدیل) کا ذکر کرواوراس کو یاد کرو جیسے اُس نے شمھیں بتایااور ببینک اس سے پہلےتم گمراہوں سے تھے۔ ۔

خلینٹ 🕽 🥕 صحیحمسلم تثریف میں جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ ججۃ الوواع میں نبی صلی اللہ تعالی علیہ و ملم عرفات سے

مزدلفہ میں تشریف لائے یہاں مغرب وعشا کی نماز پڑھی پھر لیٹے یہاں تک کہ فجرطلوع ہوئی، جب منح ہوگئی اُس وقت اذان و ا قامت کے ساتھ نماز فجر پڑھی، پھر قصواء برسوار ہو کرمشعر حرام میں آئے اور قبلہ کی جانب موٹھ کر کے دعا ونکبیر وہلیل و توحید میں مشغول رہےاور وقوف کیا یہاں تک کہخوب اُجالا ہو گیااورطلوع آ فتاب سے قبل یہاں سےروانہ ہوئے۔⁽⁶⁾

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٩.
- 2 "لباب المناسك"، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه، فصل في الدفع قبل الغروب)، ص ٢١٠.
 - 3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، الجزء الأول، ص ٢٠٩.

 - 🗗 ۲، البقره: ۱۹۸.
- 🧣 🔞 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب حجة النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٢١٨، ص٦٣٤.

🗳 🕹 🚉 🔫 💎 بیمق محمد بن قیس بن مخر مه سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم نے خطبہ پڑھا اور فر مایا کہ: ''اہل جاہلیت عرفات سے اس وقت روانہ ہوتے تھے جب آ فتاب موزھ کے سامنے ہوتا غروب سے پہلے اور مز دلفہ سے بعد

طلوع آفتاب روانہ ہوتے جب آفتاب چرے کے سامنے ہوتا اور ہم عرفات سے نہ جائیں گے جب تک آفتاب ڈوب نہ جائے اور مز دلفہ سے طلوع کے بل روانہ ہوں گے ہمارا طریقہ بُٹ پرستوں اور مشرکوں کے طریقہ کے خلاف ہے۔'' (1)

(۱) جب غروب آفتاب كاليقين ہوجائے فوراً مُز دلفه كوچلواورامام كےساتھ جانا افضل ہے مگروہ درير كرت تو أس كا ا نتظار نه کرو_

(۲) راستے بھرذ کروڈ رودوڈ عاولیک وزاری و بکامیں مصروف رہو۔اس وقت کی بعض دعائیں یہ ہیں:

ٱللَّهُمَّ الِّيُكَ اَفَضُتُ وَ فِي رَحْمَتِكَ رَغِبُتُ وَمِنُ سَخُطِكَ رَهِبُتُ وَمِنُ عَذَابِكَ اَشُفَقُتُ فَاقْبَلُ نُسُكِي وَاعُظِمُ اَجُرِي وَ تَقَبَّلُ تَوُبَتِي وَارْحَمُ تَضُرُّعِي وَاسْتَجِبُ دُعَائِي وَاعُطِنِي سُؤْلِي اَللَّهُمَّ لَا تَجْعَلُ هَاذَا الْحِرَ عَهْدِنَا مِنُ هَلَا الْمُوْقِفِ الشَّرِيُفِ الْعَظِيْمِ وَا رُزُقْنَا الْعَوْدَ اِلَيْهِ مَرَّاتٍ كَثِيْرَةً بِلُطُفِكَ الْعَمِيْمِ. (2)

(٣) راسته میں جہاں گنجائش یا وَاورا پِی یا دوسرے کی ایذا کا اختال نہ ہواتن دیراتنی دور تیز چلو پیدل ہوخواہ

(4) جب مزد لفه نظراً ع بشرط قدرت پیدل ہولینا بہتر ہے اور نہا کر داخل ہونا افضل، مزد لفہ میں داخل ہوتے وفت به دعایر هو:

اَللَّهُمَّ هَاذَا جَمُعٌ اَسُأَلُكَ اَنُ تَوزُقَنِي جَوَامِعَ الْحَيْرِ كُلِّهِ اَللَّهُمَّ رَبَّ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّكُنِ وَالْمَقَامِ وَرَبَّ الْبَلَدِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الْمسْجِدِ الْحَرَامِ اَسْأَلُكَ بنُوْرٍ وَجُهكَ الْكَرِيْمِ اَنُ تَغْفِرَلِي ذُنُوبِي وَتَرُحَمَنِيُ وَتَجُمَعَ عَلَى الْهُداى اَمُرِي وَتَجْعَلَ التَّقُواى زَادِيُ وَذُخُرِيُ وَالْأَخِرَةَ مَالِيي وَهَبُ لِيُ رِضَاكَ عَيِّيُ فِي الدُّنْيَا وَلَا حِرَةِ يَامَنُ بِيَدِهِ الْحَيْرُ كُلُّهُ أَعُطِنِي الْحَيْرَ كُلَّهُ وَاصُوفَ عَنِي الشَّرّ كُلَّهُ اللَّهُمَّ

❶ "معرفة السنن والآثار"، كتاب المناسك، باب الاختيار في الدفع من المزدلفة، الحديث: ٥٠٤٥، ج٤، ص١١٧.

^{2}اےاللہ(عزوجل)! میں تیری طرف واپس ہوااور تیری رحمت میں رغبت کی اور تیری ناخوشی ہے ڈرااور تیرے عذاب سے خوف کیا تو میری عبادت قبول کراورمیراا جرعظیم کراورمیری توبه قبول کراورمیری عاجزی پررتم کراور مجھے میراسوال عطا کر۔اےاللہ (عزوجل)!اس شریف بزرگ جگه میں میری بیجا ضری آخری حاضری نہ کراور تواپنی مہر بانی ہے یہاں بہت مرتبہ آنانصیب کر۔۱۲

جماعت كرلواورنه ہوسكے تو تنہا پڑھو۔

كَ حَرِّمُ لَحُمِيٌ وَعَظُمِي وَشَحْمِي وَشَعْرِي وَسَائِرَ جَوَارِحِي عَلَى النَّارِيَا اَرُحَمَ الرِّحِمِيُنَ ط(1)

مُزدَلِفَه میں مغرب و عشا کی نماز

- (۵) وہاں پینچ کرحتی الامکان جبل قزح کے پاس راستہ سے پیچ کراتر وور نہ جہاں جگہ ملے۔
- (۱) عالبًا وہاں پہنچتے ہینچتے شفق ڈوب جائے گی مغرب کا وقت نکل جائے گا۔ اونٹ کھولنے، اسباب اتار نے سے پہلے امام کے ساتھ مغرب وعشا پڑھو اور اگر وقت مغرب کا باقی بھی رہے جب بھی ابھی مغرب ہرگز نہ پڑھو، نہ عرفات میں پڑھو نہ دراہ میں کہ اس دن یہاں نماز مغرب وقت مغرب میں پڑھنا گناہ ہے اور اگر پڑھا و گے عشا کے وقت پھر پڑھنی ہوگی۔ غرض یہاں پہنچ کر مغرب وقت عشامیں بہنیت ِ ادا، نہ بہنیت ِ قضاحتی الامکان امام کے ساتھ پڑھو۔ مغرب کا سلام پھیرتے ہی معاً عشا کی جماعت ہوگی عشا کے فرض پڑھا واس کے بعد مغرب وعشا کی جماعت نہل سے توانی کی جماعت نہل سے توانی

مسئلہ کی اور اگرع فات ہی میں رات کورہ گیایا مزولفہ کے سواد وسرے راستہ سے واپس ہوا تو اسے مغرب کی نماز اپنے وقت میں پڑھنی ضروری ہے۔ ((ردالحتار)

سَسَعَالُهُ اللَّهِ الرَّمز دلفہ کے آنے والے نے مغرب کی نماز راستہ میں پڑھی یا مز دلفہ بھنچ کرعشا کا وقت آنے سے پہلے پڑھ لی ، تواسے عظم بیہ ہے کہ اعاد ہ کرے مگر نہ کیا اور فجر طلوع ہوگئ تو وہ نماز اب صحیح ہوگئے۔(3) (درمختار)

<u> مسئالہ اللہ الرمز دلفہ میں مغرب سے پہلے عشا پڑھی تو مغرب پڑھ کرعشا کا اعادہ کرے اورا گرطلوع فجر تک اعادہ نہ کیا</u> تواب صحیح ہوگئ خواہ دہ شخص صاحبِ ترتیب ہویانہ ہو۔ ⁽⁴⁾ (درمختار ،طحطاوی)

اسسسالی الله (عزوجل)! بیجع (مزولفه) ہے میں چھ ہے تمام خیر کے مجموعہ کا سوال کرتا ہوں ،اے الله (عزوجل)! مَشْخرِ حرام کے رہا اور رکن ومقام کے رہا اور عزت والے شہرا اور عزت والی مسجد کے رہا! میں چھ سے بوسیلہ تیرے وجہ کریم کے نور کے سوال کرتا ہوں کہ تو میرے گناہ بخش دے اور مجھ پررحم کر اور ہم ایر میرے کام کو جمع کردے اور تقوی کی کومیر اقوشہ اور ذخیرہ کر اور آخرت میر امرجع کر اور دنیا اور آخرت میں تو مجھ سے راضی رہ ۔ اے وہ ذات جس کے ہاتھ میں تمام بھلائی ہے! مجھ کو ہو تیم کی خیر عطا کر اور ہو تیم کی بُر ائی سے بچا، اے الله (عزوجل)! میرے گوشت اور ہڑی اور بال اور تمام اعضا کو جہنم پر حرام کردے ، اے سب مہر بانوں سے زیادہ مہر بان! ۔ ۱۲۔

- 2 "ردالمحتار" ، كتاب الحج، مطلب في الرفع من عرفات، ج٣، ص ٦٠١.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص ٢٠١.
- 🤿 🚯 المرجع السابق، ص٦٠٦. "حاشية الطحطاوي على الدرالمختار"، كتاب الحج، ج١، ص٤٠٥.

میریانی میں دونوں نمازیں پڑھ لے مز دید ہوگئی کہ طلوع فجر کا اندیشہ ہے تو اب راستہ ہی میں دونوں نمازیں پڑھ لے مز دیفہ پہنچنے

کاانتظارنہ کرے۔ ⁽¹⁾ (درمختار)

سینان ۵ اور دو اور میں طهر وعصر کے لیے ایک اذان اور دوا قامتیں ہیں اور مز دلفہ میں مغرب وعشا کے لیے ایک اذان

اورایک اقامت ₋(2) (درمختار)

مسئانی این جو دونوں نمازوں کے درمیان میں سنت ونوافل نه پڑھے۔مغرب کی سنتیں بھی بعد عشا پڑھے اگر درمیان رسات میں کر در میں ہور ہو اور میں ایک میں ایک

میں سنتیں پڑھیں یا کوئی اور کام کیا توایک اقامت اور کہی جائے یعنی عشا کے لیے۔ (3) (ردالمختار)

مسئلہ کے بعد ہاتی رات نے کر ولبیک ورُرود ورُعاو زاری میں گزارو کہ یہ بہت افضل جگہاور بہت افضل رات کے بعد ہاتی رات نے کر ولبیک ورُرود ورُعاو زاری میں گزارو کہ یہ بہت افضل جگہاور بہت افضل رات

ہے۔ بعض علما نے اس رات کوشبِ قدر سے بھی افضل کہا۔ زندگی ہے تو سونے کواور بہت را تیں ملیں گی اور یہاں بیرات خدا جانے دوبارہ کے ملے اور نہ ہوسکے تو باطہارت سور ہو کہ فضول با توں سے سونا بہتر اوراتنے پہلے اُٹھ بیٹھو کہ شج جہنے سے پہلے ضروریات وطہارت سے فارغ ہولو، آج نماز صبح بہت اندھیرے سے پڑھی جائے گی، کوشش کرو کہ جماعت امام بلکہ پہلی تکبیر فوت نہ ہو کہ عشاوشج جماعت سے پڑھنے والا بھی پوری شب بیداری کا ثواب یا تا ہے۔

(۸) اب دربارِ اعظم کی دوسری حاضری کا وقت آیا، ہاں ہاں کرم کے دروازے کھولے گئے ہیں، کل عرفات میں حقوق اللہ معاف ہوئے تھے یہاں حقوق العباد معاف فرمانے کا وعدہ ہے۔

🦹 مزدلفه کا وقوف

مشعرالحرام میں یعنی خاص بہاڑی پراور نہ ملے تواس کے دامن میں اور یہ بھی نہ ہوسکے تو وادی محسر ⁽⁵⁾ کے سواجہاں گنجائش یا وُ **و تو ف** کرواور تمام باتیں کہ و تو ف عرفات میں ندکور ہوئیں ملحوظ رکھو یعنی لبیک کی کثرت کرواور ذکر و درود و وُ عامیں

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٢٠٢.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار" ، كتاب الحج، مطلب في الرفع من عرفات، ج٣، ص ٦٠٠.
 - 3 "ردالمحتار" ، كتاب الحج، مطلب في الرفع من عرفات، ج٣، ص ٢٠٠٠.
- ٢٣١. "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص ٢٣١.
 - 🥏 🗗 کهاس میں وقوف جا ئزنہیں ۔۱۲

مشغول رہو یہاں کے لیے بعض دُعا ئیں یہ ہیں:

اَللَّهُ مَّ اغُفِرُلِي خَطِيئَتِي وَجَهُلِي وَاِسُرَافِي فِي اَمُرِي وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهِ مِنِّي اَللَّهُمَّ اغْفِرُلِي جِدِّي وَهَـزُلِـيُ وَخَطَأَىُ وَعَـمُدِىُ وَكُلُّ ذَالِكَ عِنْدِىُ اَللَّهُمَّ اِنِّي اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الفَقُر وَالْكُفُر وَالْعَجُز وَالْكَسَل وَاَعُودُ فِيكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزُن وَاعُودُ بِكَ مِنَ الْجُبُنِ وَالْبُخُلِ وَضَلُع الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ وَاسْأَلُكَ اَنُ تَقُضِي عَنِيِّيَ الْمَغُرِمَ وَأَنُ تَعْفُو عَنِيُّ مَظَالِمَ الْعِبَادِ وَأَنْ تُرْضِيَ عَنِيَّ الْخُصُومُ وَالْغُرَمَاءَ وَأَصُحَابَ الْحُقُوقِ ٱللُّهُمَّ اعْطِ نَفُسِي تَقُوٰهَا وَزَكِّهَا ٱنُتَ خَيْرُ مَنْ زَكُّهَا ٱنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلُهَا ٱللُّهُمَّ إِنِّي ٱعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَمِنُ غَلَبَةِ الْعَدُوِّ وَمِنُ ۚ بَوَارِ لَّآئِمٍ وَمِنُ فِستُسنَةِ الْمَسِيْحِ اللَّجَّالِ اَللَّهُمَّ الجُعَلَنِي مِنَ الَّذِينَ إِذَا اَحُسَنُوا اسْتَبُشَرُوا وَإِذَا اَسَاوُّا اسْتَغُفَرُوا.

اَللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِنُ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ الْوَفْدِ الْمُتَقَبَّلِيْنَ اللَّهُمَّ اِنِّي اَسْأَلُكَ فِي هَلْذَا الْجَهُعِ أَنُ تَجْمَعَ لِيُ جَوَامِعَ الْخَيْرِكُلِّهِ وَآنُ تُصُلِحَ لِيُ شَانِيُ كُلَّهُ وَآنُ تَصُرِفَ عَنِّي السُّوءَ كُلَّهُ فَإِنَّهُ لَا يَفْعَلُ ذَالِكَ غَيْرُكَ وَلَا يَجُودُ بِهِ إِلَّا ٱنْتَ ٱللَّهُمَّ إِنِّي ٱعُوٰذُ بِكَ مِنْ شَرّ مَنْ يَّمْشِي عَلَى بَطْنِهِ وَمِنْ شَرّ مَنْ يَّمْشِي عَلَى رِجُلَيْنِ وَمِنُ شَرِّمَنُ يَّمْشِيُ عَلَى أَرْبَعِ ٱللَّهُمَّ اجْعَلْنِيُ أَخْشَكَ كَأَنَّنِيُ أَركَ أَبَدًا حَتَّى ٱلْقَكَ وَٱسْعِدْنِيُ بتَـقُواکَ وَلَا تَشُـقِنِيُ بِـمَـعُصِيَّتِکَ وَخِرُلِيُ مِنُ قَضَآئِکَ وَبَارِکُ لِيُ فِيُ قَدُرِکَ حَتَّى لَا أُحِبَّ تَعُجيُلَ مَا اَخُّرُتَ وَلَا تَاُخِيْرَ مَا عَجَّلُتَ وَاجُعَلُ غِنَاىَ فِي نَفُسِي وَمَتِّعْنِي بِسَمْعِي وَبَصَرِي وَاجْعَلُهُمَا الُوَارِثَ مِنِّي وَانْصُرُنِيُ عَلَى مَنُ ظَلَمَنِيُ وَاَرِنِيُ فِيْهِ ثَـاُرِيُ وَاقِرَّ بِذَٰلِكَ عَيْنِيُ . ⁽¹⁾

📭 اےاللہ(عزوجل)! میری خطااور جہل اور زیاد تی اور جس کو تو مجھ سے زیادہ جانتا ہے سب کو بخش دے،اےاللہ (عزوجل)! میرے تمام گناہ معاف کردے کوشش ہے جس کو میں نے کیا یا بلاکوشش اور خطاہے کیا یا قصد ہے اور بیسب میں نے کیے،اےاللہ (عزوجل)! تیری بناہ مانگتا ہوں محتاجی اور کفر اور عاجزی وستی ہے اور تیری بناءغم وٹڑن ہے اور تیری بناہ برز دلی و کجل اور دَین کی گرانی اورمردوں کےغلبہ ہے اورسوال کرتا ، ہوں کہ مجھ سے تاوان ادا کر دےاورحقوق العباد مجھ ہے معاف کراورخصوم وغر مااور حق داروں کوراضی کر دے،اےاللہ(عز وجل)! میر نے فس کو تقوے دےاوراس کو پاک کر تو بہتر پاک کرنے والا ہے تواس کا ولی ومولی ہے،اےاللہ(عز دِجل)! تیری بناہ غلبے دَین اورغلبۂ دعمن ہےاوراس ہلا کت سے جوملامت میں ڈالنے والی ہےاورسیج دخال کے فتنہ ہے۔

ا سے اللہ (عزوجل)! مجھے ان لوگوں میں کر جو نیکی کر کے خوش ہوتے ہیں اور ٹرائی کر کے استغفار کرتے ہیں۔ا سے اللہ (عزوجل)! ہم کو اینے نیک بندوں میں کرجن کی پیشانیاں اور ہاتھ یاؤں حیکتے ہیں جومقبول وفیر ہیں،اےاللہ(عزوجل)!اس مزدیفیہ میں میرے لیے ہرخیر کوجمع کر دے اور میری ہر حالت کو درست کر دے اور ہر بُرائی کو مجھ سے پھیر دے کہ تیرے سواکوئی نہیں کر سکتا اور تیرے سواکوئی نہیں دے سکتا،= گُن المستان کی این وقوف مزد لفه کاوقت طلوع فنجر ہے اُوجالا ہونے تک ہے۔اس درمیان میں وقوف نہ کیا تو فوت ہو گیااور اگراس وفت میں یہاں سے ہوکر گزرگیا تو وقوف ہو گیااور وقوفِعرفات میں جو باتیں تھیں وہ یہاں بھی ہیں۔(1)(عالمگیری)

<u> سَسَعَالُهُ 9 ﴾</u> طلوع فجر سے پہلے جو یبال سے چلا گیا اُس پر دَم واجب ہے مگر جب بیار ہو یاعورت یا کمزور کداز دحام میں ضرر کا اندیشہ ہے اس وجہ سے پہلے چلا گیا تو اُس پر کچھنیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

<u>مَسَعَانُ کَانَ ہِ بِی</u> نماز ہے قبل مگر طلوع فبحر کے بعد یہاں سے چلا گیایا طلوع آفتاب کے بعد گیا تو رُ اکیا مگراس پردم وغیرہ واجب نہیں۔(3) (عالمگیری)

منیٰ کے اعمال اور حج کے بقیہ افعال

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ فَإِذَا تَضَيْتُمُ مَّنَاسِكُكُمُ فَاذُكُرُواالله كَنِكُم كُمُ الْمَاآعَكُمُ اَوْاَ شَكَّ ذِكُمَّا لَ فَبِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ مَ النَّا فِي النَّا فَيِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ مَ النَّا فَيَا النَّا فَيَا النَّا فَيَا عَمَالَةُ فِي الْاخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۞ وَمِنْ هُمُ مَّنْ يَقُولُ مَ النَّا الْإِنَا فِاللَّهُ فَيَا عَمَالِ النَّالِ وَاللَّهُ فَي الْحِسَابِ ۞ وَاذْكُرُوا الله فَي وَقَا عَمَالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ النَّالِ اللَّهُ مَا اللهُ اللهُ

=ا سے اللہ (عزوج با)! تیری پناہ اس کے شرسے جو پیٹ پر چلتا ہے اور دو پاؤں اور جاڑ پاؤں پر چلنے والے کے شرسے ،ا سے اللہ (عزوج با)! تو مجھ کو ایسا کردے کہ بمیشہ تجھ سے ڈرتار ہوں گویا تجھ کو دیکھا ہوں بہاں تک کہ تجھ سے ملوں اور تقوے کے ساتھ مجھ کو بہرہ مند کر اور گناہ کر کے بد بخت نہ بنوں اور اپنی قضا میر سے لیے بہتر کر اور جو تو نے مقدر کیا ہے اُس میں برکت دے، یہاں تک کہ جو تو نے مؤخر کیا ہے اس کی جلدی کو پہند نہ کروں اور جو تو نے مقدر کیا ہے اُس میں برکت دے، یہاں تک کہ جو تو نے مؤخر کیا ہے اس کی جلدی کو پہند نہ کروں اور جو تو نے جلد کردیا، اس کی تا خیر کو دوست نہ رکھوں اور میری تو نگری میر نے نفس میں کر اور کان ، آ نکھ سے مجھ کو متع کر اور اُن کو میر اوار شکر کر اور جو بھی چھ کے مند کر اور اس میں میر ابدلہ دکھا دے اور اس سے میری آ نکھ ٹھنڈی کر ہے ا

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٠.
 - 2 المرجع السابق، ص ٢٣١.
 - 3 …… المرجع السابق.
 - 🤏 🕒 س.پ۲، البقرة: ۲۰۰-۲۰۳.

عِهَارِشْرِيْعَتْ خِصْمُ (6)

پھر جب جج کے کام پورے کر چکو تو اللہ (عزوجل) کا ذکر کروجیسے اپنے باپ دادا کا ذکر کرتے تھے بلکہ اس سے زیادہ اور بعض آ دمی یوں کہتے ہیں کہ بعض آ دمی یوں کہتے ہیں کہ اے رب ہمارے! ہمیں دنیا میں دنیا میں دنیا میں ہملائی دے اور ہم کو دوزخ کے عذاب سے بچا۔ بیلوگ وہ ہیں کہ اے رب ہمارے! ہمیں دنیا میں بھلائی دے اور ہم کو دوزخ کے عذاب سے بچا۔ بیلوگ وہ ہیں کہ ان کی کمائی سے ان کا حصہ ہے اور اللہ (عزوجل) جلد حساب کرنے والا ہے اور اللہ (عزوجل) کی یاد کروگئے ہوئے دنوں میں توجو جلدی کر کے دودن میں چلا جائے اُس پر پچھ گناہ نہیں اور جورہ جائے تو اُس پر پچھ گناہ نہیں پر ہیز گار کے لیے اور اللہ (عزوجل) سے ڈرواور جان لوکہ تم کوائی کی طرف اُٹھنا ہے۔

خوریث الدّت میں پنجے اور یہاں جابر رض الدّت الله عند سے مروی ، کدرسول اللّه صلی الله تعالی علیه و مرد لفه سے روانہ ہوئے یہاں تک کی طن مجرہ میں پنجے اور یہاں جانور کو تیز کر دیا پھر وہاں سے نیج والے راستہ سے چلے جو جَمْر ہ مُجبر مے کوگیا ہے جب اس جمرہ کے پاس پنجے تو اُس پر سات کنگریاں ماریں ، ہر کنگری پر تبہیر کہتے اور بطن وادی سے زمی کی پھر منحر میں آگر تریا گھ اونٹ اس جمرہ کے پاس پنجے تو اُس پر سات کنگریاں ماریں ، ہر کنگری پر تبہیر کہتے اور بطن وادی سے زمی کی پھر منحر میں آگر تریا گھ اونٹ ایپ دست مبارک سے خوفر مائے پھر علی رضی الله تعالی عند کودیدیا بقیہ کو انھوں نے ترکیا اور حضور (صلی الله تعالی علیہ و بانی میں انہ میں شریک کرلیا۔ پھر حکم فر مایا: که 'مراونٹ میں سے ایک ایک ٹکڑ اہا نڈی میں ڈال کر پکایا جائے۔' وونوں صاحبوں نے اس گوشت میں سے کھایا اور شور با بیا۔ پھر رسول الله صلی الله تعالی علیہ و بام سوار ہو کر بیت الله کی طرف روانہ ہوئے اور ظہر کی نماز مکتہ میں بڑھی۔ (1)

خلیف کی تر ندی شریف میں انھیں سے مروی، که رسول الله سلی الله تعالیٰ علیه وسلم مزدَ لفه سے سکون کے ساتھ روانه جوئے اور لوگول کو تکم فر مایا کہ: اطمینان کے ساتھ چلیں اور وادی محسر میں سواری کو تیز کر دیا اور لوگول سے فر مایا کہ: جھوٹی جھوٹی کنکریوں سے زمی کریں اور بہ فر مایا کہ: شایداس سال کے بعداب میں شمصیں نددیکھوں گا۔ (2)

خلین سے مردی، کہ رسول اللہ سلی اللہ علیہ وہ کہ کہ رسول اللہ سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہ کم نے بوم النح (دسویں تاریخ) میں چاشت کے وقت رَمی کی اوراس کے بعد کے دنوں میں آفات ڈھلنے کے بعد۔ (3)

خلیث کے پاس پنچ تو کعبه عظمه کو عبرالله بن مسعود رضی الله تعالی عند جَمُوهٔ مُجبوی کے پاس پنچ تو کعبه عظمه کو

- السيح مسلم"، كتاب الحج، باب حجة النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٢١٨، ص٦٣٤.
- 2 "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في الافاضة من عرفات، الحديث: ٨٨٧، ج٢، ص٢٥٣.
- 3 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب بيان وقت استحباب الرمي، الحديث: ٣١٤_(٢٩٩)، ص٦٧٦.

💐 بائیں جانب کیااورمنیٰ کودہنی طرف اورسات کنگریاں ماریں ، ہر کنگری پر تکبیر کہی پھر فرمایا کہ:''اسی طرح انھوں نے رَمی کی جن پر

سورهٔ بقره نازل ہوئی۔'' (1)

خلین ہے ۔ امام مالک نافع ہے راوی، کہ عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہا دونوں پہلے جمروں کے پاس دیر تک گھمرتے سی تنہ

تكبير وتبيح وحدودعا كرتے اور جمر و عقبہ كے پاس نہ كھمرتے۔(2)

خلین کی اللہ سلی اللہ تعالی علم رضی اللہ تعالی عنها سے راوی ، کہ ایک شخص نے رسول اللہ سلی اللہ تعالی علیہ وہلم سے سوال کیا کہ رقی جمار میں کیا تواب ہے؟ ارشاوفر مایا:'' تواپنے رب کے نزدیک اس کا ثواب اُس وقت پائے گا کہ تجھے اس کی زیادہ حاجت ہوگی '' (3)

خلین کی رسول الله طلیہ الله علیہ الله تعالی علیہ مناسک میں آئے، جمر و عقبہ کے پاس شیطان سامنے آیا، اُسے سات کنگریاں ماریں یہاں تک کہ ابراہیم خلیل الله علیہ السواۃ واللام مَناسک میں آئے، جمر و عقبہ کے پاس شیطان سامنے آیا، اُسے سات کنگریاں ماریں یہاں تک کہ زمین میں دھنس گیا، پھر تیسر ہے جمر و کے زمین میں دھنس گیا، پھر تیسر ہے جمر و کے پاس آیا پھر اسے سات کنگریاں ماریں یہاں تک کہ زمین میں دھنس گیا، پھر تیسر ہے جمر و کے پاس آیا تو اُسے سات کنگریاں ماریں یہاں تک کہ زمین میں دھنس گیا۔ 'ابن عباس رضی اللہ تعالی عہم انتاع کرتے ہو۔ (4)

خلین کرنا تیرے لیے قیامت بزارانھیں سے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے فرمایا:'' جمروں کی رَمی کرنا تیرے لیے قیامت کے دن نور ہوگا۔'' (5)

خلینت و گی طبرانی و حاکم ابوسعید خدری رضی الله تعالی عنه سے راوی ، کہتے ہیں ہم نے عرض کی ، یارسول الله! (سلی الله تعالی علیه بلی ہم نے عرض کی ، یارسول الله! (سلی الله الله علیه بلی) مید جمروں پر جوکنگریاں ہرسال ماری جاتی ہیں ، ہمارا گمان ہے کہ کم ہوجاتی ہیں ۔ فرمایا کہ:''جوقبول ہوتی ہیں اُٹھالی جاتی ہیں ، ایسانہ ہوتا تو پہاڑوں کی مثل تم دیکھتے۔'' (6)

- "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب رمى الجمار بسبع حصيات، الحديث: ١٧٥٠،١٧٤٨، ج١، ص٩٩،٥٧٨.
 - 2 "الموطأ" للإمام مالك، كتاب الحج، باب رمى الحمار، الحديث: ٩٤٧ ج ١، ص٣٧٢.
 - 3 "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ١٤١٤٧، ج٣، ص١٥٠.
 - 4 "المستدرك" للحاكم، كتاب المناسك، باب رمي الجمار و مقدار الحصى، الحديث: ٢٥٧٦، ج٢، ص١٢٢.
 - الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في رمي الحمار ... إلخ، الحديث: ٣، ج٢، ص١٣٤.

کے ایک ۱۰ تا ۱۲ کے مسلم میں اُم الحصین رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ، که رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیه وَہم نے حجمۃ الوداع

میں سرمونڈانے والوں کے لیے تین بار دُعا کی اور کتر وانے والوں کے لیے ایک بار۔ ⁽¹⁾ اس کے مثل ابو ہریرہ و ما لک بن ربیعہ

رضى الله تعالى عنهما مسيم مروى _

ابن عمرض الله تعالى عنها سے مروى ، كەرسول الله صلى الله تعالى عليه دېلم نے فرما یا كه: '' بال مونڈ انے میں ہر بال

کے بدلے ایک نیکی ہے اور ایک گناہ مٹایا جاتا ہے۔" (2)

خریئ الله تعالی علیه و مین صامت رضی الله تعالی عنه سے مروی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے فر مایا: ''سرمونڈ انے میں

جوبال زمین پر کرے گا، وہ تیرے لیے قیامت کے دن نور ہوگا۔'' (3)

(۱) جب طلوع آفآب میں دورکعت پڑھنے کا وقت باقی رہ جائے ،امام کے ساتھ منی کو چلواور یہاں سے سات چھوٹی حجود ٹی کنگریاں خبرار کی پاک جگہ سے اُٹھا کرتین بار دھولو، کسی پھر کوتو ڑکر کنگریاں نہ بناؤاور رہ بھی ہوسکتا ہے کہ تینوں دن جمروں پر مارنے کے لیے یہیں سے کنگریاں لے لویاسب کسی اور جگہ سے لوگرنہ نجس جگہ کی ہوں، نہ سجد کی ، نہ جمرہ کے پاس کی۔

(٢) راسته میں پھر بدستور فِرکررو، وُعاو دُرودو کثرت لبیک میں مشغول رہواور بیدعا پڑھو:

اَللَّهُمَّ الِيُكَ اَفَضُتُ وَمِنُ عَذَابِكَ اَشُفَقُتُ وَاِلَيْكَ رَجَعُتُ وَمِنْكَ رَهِبْتُ فَاقْبَلُ نُسُكِي وعَظِّمُ المُّرِيِّ وَالْمُحِيُّ وَعَظِّمُ المُّرِيِّ وَالْمُحَمُّ تَضَوُّعِيُ وَاقْبَلُ تَوْ بَتِي وَاسْتَجِبُ دُعَآئِيْ . (4)

سے کسی کو ایذا ہواوراس عرصه میں پیدعا پڑھنے جاؤ:

- ❶ "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب تفضيل الحلق على التقصير ... إلخ، الحديث: ١٣٠٣، ص٦٧٧.
 - 2 "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في حلق الرأس بمني، الحديث: ٣، ج٢، ص١٣٥.
 - ③ "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في حلق الرأس بمني، الحديث: ٣، ج٢، ص١٣٥.
- …… اےاللہ(عزدجل)! میں تیری طرف واپس ہوا اور تیرے عذاب سے ڈرا اور تیری طرف رجوع کی اور تچھ سے خوف کیا تو میری عبادت قبول کراور میر ااجرزیادہ کراور میری عاجزی پر رحم کراور میری توبہ قبول کراور میری وُعامتخاب کر۔۱۲

ميثن كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلامي) 🚅

1139

اَللَّهُمَّ لَا تَقُتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهُلِكُنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبُلَ ذَالِكَ. (1) (﴿ اللَّهُمَّ لَا تَقُتُلُنَا بِغَضَبِكَ وَاللَّهُ مُ اللَّهُ اللَّ

جمرة العقبه كى رَمى

(۵) جب منی پہنچوسب کاموں سے پہلے جمرة العقبہ (2) کوجاؤ جوادھرسے بچھلا جمرہ ہے اور مکہ معظّمہ سے پہلا، نالے کے وسط میں سواری پر جمرہ سے کم از کم پانچ ہاتھ ہٹے ہوئے یوں کھڑے ہو کہ منی دہنے ہاتھ پراور کعبہ بائیں ہاتھ کواور جمرہ کی طرف مونھ ہوسات کنکریاں جداجدا چٹکی میں لے کرسیدھاہاتھ خوب اُٹھا کر کہ بغل کی رنگت ظاہر ہو ہرایک پر

بِسُمِ اللهِ اَللهِ اَللهُ اَكُبَرُ رَغُمَّا لِلشَّيُطُن رِضًا لِّلوَّحُمْنِ اَللَّهُمَّ اجْعَلُهُ حَجًّا مَّبُرُوْرًا وَسَغَيًا مَّشُكُوْرًا وَفَى بِينِي اللهِ اللهُمَّ اجْعَلُهُ حَجًّا مَّبُرُورًا وَسَغَيًا مَّشُكُورًا وَ فَذَنَبًا مَّغُفُورًا . (3) كَهُرَ مارو (4) بهتريه به كَهُ تَكُريال جَمِره تَكَ يَبَيْ اورنه تين باتھ كے فاصله تک گريں اس سے زياوه فاصله برگری تووه كَنُری شارين نه آئے گی ، يہلی كنگری سے لبيك موقوف كردو، الله اكبر كے بدلے سُبْحَانَ اللّهِ يا لا إللهَ إلّا اللهُ الله كهاجب بھى حرج نہيں ۔

(٦) جبسات بوری ہوجائیں وہاں نہ گھہرو، فوراُ ذِکرودُ عاکرتے ملیٹ آؤ۔

رَمِی کے مسائل 🦹

<u> سَسَالُهُ الْ ﴾</u> سات ہے کم جائز نہیں ، اگر صرف تین ماریں یا بالکل نہیں تو دَم لازم ہوگا اور اگر چار ماریں تو باقی ہر کنگری کے بدلے صدقہ دے۔ ⁽⁵⁾ (ردالمحتار)

- 📭 اےاللہ(عزوجل)!اپنے نمضب ہے ہمیں قتل نہ کراورا پنے عذاب ہے ہمیں ہلاک نہ کراوراس ہے پہلے ہم کوعافیت دے۔۱۲
-منیٰ اور مکہ کے پچ میں تین جگہ ستون بنے ہیں ان کو جمرہ کہتے ہیں پہلا جومنی سے قریب ہے جمرۂ اولیٰ کہلا تا ہے اور پچ کا جمرۂ وسطی اوراخیر کا کہ مکہ منظّمہ سے قریب ہے جمرۃ العقبہ ۔۱۲
- الله (عزوجل) کے نام ہے، الله (عزوجل) بہت بڑا ہے، شیطان کے ذلیل کرنے کے لیے، الله (عزوجل) کی رضا کے لیے، الله

(عز وجل)!اسکو حج مبر ورکراورسعی مشکورکراور گناه بخش دے۔۱۲

- الله الله الله الله المركم كرمارو ١٦ منه
- 🤿 🚮 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبي، ج٣، ص٦٠٨.

سب نگریاں ایک ساتھ پھینکیں تو یہ ساتوں ایک کے قائم مقام ہوئیں۔⁽²⁾ (ردالحتار)

سَعَالُهُ ﴾ کنگریاں زمین کی جنس ہے ہوں اورایسی چیز کی جس ہے ٹیم جائز ہے کنگر، پیقر، مٹی یہاں تک کہا گرخاک

سینکی جب بھی رَمی ہوگئی مگرایک تنکری چینکنے کے قائم مقام ہوئی۔موتی ،عنبر ،مشک وغیر ہاسے رَمی جائز نہیں۔ یو ہیں جواہراور سب نہ ان میں بھی می نہیں وسکتری ۔ اتر نجواں میں کی ارزوں مینگئی سے بھی رَمی از برنہیں ۔ (3) درمزاں المعناں کے

سونے جاندی ہے بھی رَمی نہیں ہوسکتی کہ بیاتو نچھا ور ہوئی مارنانہ ہوا ہینگئی ہے بھی رَمی جائز نہیں۔(3) (درمختار، ردالحتار) سکتان کی ہیں جمرہ کے پاس ہے کئریاں اُٹھا نا مکروہ ہے کہ وہاں وہی کنکریاں رہتی ہیں جومقبول نہیں ہوتیں اور مردود

موجاتی میں اور جومقبول ہوجاتی میں اُٹھالی جاتی ہیں ۔ ⁽⁴⁾ (ردالحتار)

سَسَنَانُ اللّٰ اللّٰهِ الرّمعلوم ہو کہ کنگریاں نجس ہیں تو اُن سے زمی کرنا مکروہ ہے اور معلوم نہ ہو تو نہیں مگر دھولینا مستحب ہے۔ (5) (روالحتار)

سَسَنَانُ کُ اس رَمی کا وقت آج کی فجر سے گیار ھویں کی فجر تک ہے مگر مسنون یہ ہے کہ طلوع آفتاب سے زوال تک ہواور زوال سے غروب تک مُباح اور غروب سے فجر تک مکروہ۔ یو ہیں دسویں کی فجر سے طلوع آفتاب تک مکروہ اور اگر کسی عُذر کے سبب ہومثلاً چروا ہول نے رات میں رَمی کی تو کراہت نہیں۔ (6) (در مختار، ردالحجتار)

حج کی قربانی 🏻

(۷) اب رَمی سے فارغ ہوکر قربانی میں مشغول ہو، بیقربانی وہ نہیں جو بقر عید میں ہواکرتی ہے کہ وہ تو مسافر پراصلاً نہیں اور مقیم مالدار پر واجب ہے اگر چہ جج میں ہو بلکہ بیرج کا شکرانہ ہے۔ قارِن اور متمتع پر واجب اگر چہ فقیر ہواور مُفْرِ د کے لیے مستحب اگر چنی ہو۔ جانور کی عمر واعضا میں وہی شرطیں ہیں جوعید کی قربانی میں۔

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الحمرة العقبي، ج٣، ص٦٠٨.
 - 2 المرجع السابق، ص٦٠٧.
- €..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبي، ج٣، ص٦٠٨.
 - ٢٠٩٠ عتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الحمرة العقبي، ج٣، ص٩٠٩.
 - 5 المرجع السابق، ص ٦١٠.
- 🤿 🔞 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبي، ج٣، ص ٦١٠.

ﷺ مسئلی ایک محتاج محض جس کی ملک میں نہ قربانی کے لائق کوئی جانور ہو، نہاس کے پاس اتنا نقدیا اسباب کہ اسے ﷺ کر لے سکے، وہ اگر قران یا تمتع کی نیت کرے گا تو اس بر قربانی کے بدلے دس روزے واجب ہوں گے تین تو حج کے مہینوں میں لینی کیم شوال سے نویں ذی الحجة تک احرام باندھنے کے بعد،اس نے میں جب چاہے رکھ لے۔ ایک ساتھ خواہ جُداجُد ااور بہتریہ ہے کہ ۷۔۸۔۹ کور کھےاور باقی سات تیرھویں ذی الحجہ کے بعد جب حیا ہےر کھےاور بہتریہ کر گھر بہنچ کر ہوں۔

- (۸) ذبح کرنا آتا ہوتو خود ذبح کرے کہ سنت ہے، ورنہ ذبح کے وقت حاضر رہے۔
 - (۹) رُوبقبله جانورکولٹا کراورخود بھی قبلہ کوموزھ کر کے بیر پڑھو:

إِنِّي وَجَّهُتُ وَجُهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمٰوتِ وَالْاَرُضَ حَنِيْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشُر كِيُنَ ۚ إِنَّ صَلَا تِي وَنُسُكِى وَمَحْيَاى وَمَمَاتِى لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ لَا شَرِيْكَ لَــهُ وَبِذَالِكَ أُمِرُتُ وَانَامِنَ المُسلمينَ (1)

اس کے بعد بسٹ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَکْبَوُط کہتے ہوئے نہایت تیز چھری سے بہت جلد ذیج کردو کہ چاروں رکیس کٹ جائیں،زیادہ ہاتھ نہ بڑھاؤ کہ بےسب کی تکلیف ہے۔

- (۱۰) بہتریہ ہے کہ ذبح کے وقت جانور کے دونوں ہاتھ، ایک یاؤں باندھ لوذ کے کرے کھول دو۔
- (۱۱) اونٹ ہوتواہے کھڑا کر کے سینہ میں گلے کی انتہا پر تکبیر کہہ کرنیز ہ مارو کہ سنت یو ہیں ہے اسے نح کہتے ہیں اوراس کا ذبح کرنامکروہ مگرحلال ذبح ہے بھی ہوجائے گا اگرذبح کرے تو گلے پرایک ہی جگہ اُسے بھی ذبح کرے۔ جاہلوں میں جومشہور ہے کہ اونٹ تین جگہ ذبح ہوتا ہے غلط وخلاف سنت ہے اور مُفت کی اذبیت و مکر وہ ہے۔
 - (۱۲) جانور جوذ بح کیا جائے جب تک سر دنہ ہولے اس کی کھال نکھینجو، نداعضا کا ٹو کہ ایذ اہے۔
 - (۱۳) یقربانی کر کےایئے اور تمام مسلمانوں کے حج وقربانی قبول ہونے کی دعاما گلو۔

1 انظر: "سنن أبي داود"، كتاب الضحايا، باب ما يستحب من الضحايا، الحديث: ٢٧٩٥، ج٣، ص٢٢٦.

تر جمہ:''میں نے اپنی ذات کواس کی طرف متوجہ کیا،جس نے آسانوں اور زمین کو پیدا کیا، میں ماطل سے حق کی طرف مائل ہوں اور میں مشرکوں ہے ہیں۔''

'' بیشک میری نماز وقربانی اور میراجینااور میرامرناالله (عزوجل) کے لیے ہے، جوتمام جہان کارب ہے، اس کا کوئی شریک نہیں اور جھے اُسی کا حکم ہوااور میں مسلمانوں میں ہوں۔'' ۱۲

حلق و تقصير

(۱۴) قربانی کے بعد قبلہ مونھ بیٹھ کر مرد کلق کریں یعنی تمام سرمونڈائیں کہ افضل ہے یا بال کتر وائیں کہ دخصت ہے۔ عورتوں کو بال مونڈ انا حرام ہے۔ ایک پورہ برابر بال کتر وادیں۔ مُفِرِدا گرقر بانی کرے تو اُسکے لیے مستحب سے ہے کہ قربانی کے بعد حلق کرنا واجب ہے یعنی کے بعد حلق کرنا واجب ہے یعنی اور تمتع وقران والے پرقربانی کے بعد حلق کرنا واجب ہے یعنی اگر قربانی سے بہلے سرمونڈ ائے گا تو دَم واجب ہوگا۔

سَسَعَانُ اللّٰ کَتْرُوا مُیں تو سر میں جتنے بال ہیں ان میں کے چہارم بالوں میں سے کتر وانا ضروری ہے،الہذا ایک پورہ سے زیادہ کتر وائیں کہ بال چھوٹے بڑے ہوتے ہیں ممکن ہے کہ چہارم بالوں میں سب ایک ایک پورانہ ترشیں۔

سَسَعَانُهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ وَالّٰهِ كَا وَقْتَ المَامِ تَحْرِ ہے یعنی ۱۰،۱۱۲۱۱ورافضل پہلا دن یعنی دسویں ذی الحجہ۔ (1) (عالمگیری)

مستان سے جب احرام سے باہر ہونے کا وقت آگیا تو اب مُحرم اپنایا دوسرے کا سرمونڈ سکتا ہے، اگر چہ بید دوسرا بھی مُحرم ہو۔ (2) (منسک)

مسئان میں گرسر میں پیموریاں نہ ہوں اُسے اُسترہ پھروانا واجب ہے اور اگر بال ہیں مگرسر میں پیموریاں ہیں جن کی وجہ سے مونڈ انہیں سکتا اور بال اسنے بڑے بھی نہیں کہ کتر وائے تو اس عُذر کے سبب اُس سے مونڈ انا اور کتر وانا ساقط ہو گیا۔ اُسے بھی مونڈ انے والوں ، کتر وانے والوں کی طرح سب چیزیں حلال ہو گئیں مگر بہتریہ ہے کہ ایا مِح کے ختم ہونے تک بدستور رہے۔ (3) (عالمگیری)

مَسَعَانُ هُ ﴾ اگروہاں سے کسی گاؤں وغیرہ میں ایسی جگہ چلا گیا کہ نہ حجام ماتا ہے، نہ اُسترہ یا تینچی پاس ہے کہ مونڈالے یا کتروائے تو یہ کوئی عُذرنہیں مونڈانا یا کتروانا ضروری ہے۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

اور یہ بھی ضرور ہے کہ حرم سے باہر مونڈ انایا کتر وانا نہ ہو بلکہ حرم کے اندر ہو کہ اس کے لیے بیر جگہ مخصوص ہے، حرم سے

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس، في كيفية اداء الحج، ج١، ص ٢٣١.
 - الباب المناسك"، (باب مناسك منى، فصل في الحلق و التقصير)، ص ٢٣٠.
 - 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ص ٢٣١.
 - 🦃 🚯المرجع السابق .

باہر کرے گا تو ذَم لازم آئے گا۔ ⁽¹⁾ (منسک)

<u> مسئالہ کی ۔</u> اس موقع پر سرمونڈانے کے بعد مونچھیں ترشوانا،موئے زیرِناف دُورکرنامستحب ہے اور داڑھی کے بال نہ لے اور لیے تو دَم وغیرہ واجب نہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانَهُ کُنَّ اگرند مونڈائے نہ کتر وائے تو کوئی چیز جواحرام میں حرام تھی حلال نہ ہوئی اگر چہ طواف بھی کر چکا ہو۔⁽³⁾ (عالمگیری)

<u> مسئانہ کی ۔</u> اگر بارھویں تک حلق وقصر نہ کیا تو دَم لازم آئے گا کہاس کے لیے بیدونت مقرر ہے۔ ⁽⁴⁾ (روالمحتار)

(۱۵) حلق بو ياتقصيرد بنى طرف (⁵⁾ يشروع كرواوراس وقت اَلسَّلُهُ اَكْبَرُ اللَّهُ اَكْبَرُ طَلَّ اللَّهُ الْحَمُدُ كَهِمَ جاوَاور فارغ بونے كے بعد بھى كہواور حلق ياتقصير كے وقت بيدُ عايرُ هو:

ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ عَلَى مَا هَدَانَا وَانَعُمَ عَلَيْنَا وقَضَى عَنَّا نُسُكَنَا اَللَّهُمَّ هَلَاهِ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ فَاجُعَلُ لِّي بِكُلِّ شَعُرَةٍ نُورًا يَّوْمَ الْقِيمَةِ وَامْحُ عَنِى بِهَا سَيِّئَةً وَّالُوفَعُ لِى بِهَا دَرَجَةً فِى الْجَنَّةِ الْعَالِيَةِ اَللَّهُمَّ بَارِكُ لِى فِي نَفُسِى شَعُرَةٍ نُورًا يَّوْمَ الْقِيمَةِ وَامْحُ عَنِى بِهَا سَيِّئَةً وَّالُوفَعُ لِى بِهَا دَرَجَةً فِى الْجَنَّةِ الْعَالِيَةِ اللَّهُمَّ بَارِكُ لِى فِي نَفُسِى وَتَقَبَّلُ مِنِينَ طَالِهُمَ الْعَلَيْةِ اللَّهُمَّ اعْفِرُلِى وَ لِلْمُحَلِّقِينَ وَالْمُقَصِّرِينَ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ. المِينَ طَي اللَّهُمَّ اعْفِرُلِى وَ لِلْمُحَلِّقِينَ وَالْمُقَصِّرِينَ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ. المِينَ طَي اللهُمَّ الْعَلَيْةِ الْعَلَيْةِ الْعَلَيْةِ الْعَلَيْةِ الْعَلَى مَا هَدَانَا وَالْعَالِيَةِ اللّهُ اللهُ اللّهُ اللّ

مَسَعَانُ وَاللَّهِ الرَّمُونُدُ النَّهِ يَا كُتُرُ وانْ كَسُواكسى اورطرح سے بال دوركريں مثلاً چونا ہرتال وغيره سے جب بھی جائز

- 1 "لباب المناسك"، (باب مناسك مني، فصل في الحلق و التقصير)، ص ٢٣٠.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداه الحج، ص٢٣٢.
 - 3المرجع السابق.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف الزيارة، ج٣، ص٦١٦.
- 5 یعنی مونڈ انے والے کی دہنی جانب یہی حدیث سے ثابت اورامام اعظم نے بھی ایسا ہی کیالہذا بعض کتابوں میں جو تجام کی دہنی جانب سے شروع کرنے کو بتایا صحیح نہیں۔ ۱۲ منہ
- ⊙جد ہے اللہ (عزوجل) کے لیے اس پر کہ اس نے ہمیں ہدایت کی اور انعام کیا اور ہماری عبادت پوری کرا دی، اے اللہ (عزوجل)! به میری چوٹی تیرے ہاتھ میں ہے میرے لیے ہر بال کے بدلے میں قیامت کے دن نور کراور اس کی وجہ سے میرا گناہ مٹادے اور جنت میں ورجہ بلند کر، اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ عیرے لیے میر نے نفس میں برکت کراور مجھ سے قبول کر، اے اللہ (عزوجل)! مجھ کو اور سرمنڈ انے والوں اور بال کتر وانے والوں کو بخش دے، اللہ اللہ عیرے نفس میں برکت کراور مجھ سے قبول کر، اے اللہ (عزوجل)! مجھ کو اور سرمنڈ انے والوں اور بال کتر وانے والوں کو بخش دے، اللہ عیری مغفر سے والے! آمین ہے۔

ر المراقب الم

(١٦) بال فن كردي اور بميشه بدن سے جو چيز بال، ناخن، كھال جُدا ہوں فن كرديا كريں۔

(١٤) يهال حلق يانقفيرے يہلے ناخن نه كتر واؤ، نه خط بنواؤ، ورنه دَم لازم آئے گا۔

(١٨) ابعورت سے صحبت كرنے ، بشهوت أسے ہاتھ لگانے ، بوسد لينے ، شرم گاه د يكھنے كے سواجو كچھاحرام نے حرام

كيا تقاسب حلال موگيا_

طوافِ فرض

(۱۹) افضل یہ ہے کہ آج وسویں ہی تاریخ فرض طواف کے لیے جے طواف زیارت وطواف افاضہ کہتے ہیں، مکتہ

معظمه میں جاؤبدستور مذکور بیدل باوضووسترعورت طواف کرومگراس طواف میں اِضطباع نہیں۔

مَسْعَانُ اللّٰ عِيْرِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ عَلَى اللّ ان کے طواف ہوگائی نہیں اور نہ قج ہوگا اور پورے سات کرنا واجب تو اگر چار پھیروں کے بعد جماع کیا تو قج ہوگیا مگردَم واجب ہوگا کہ واجب ترک ہوا۔ (2) (عالمگیری وغیرہ)

سَنَاكُ اللَّهِ السطواف كَصحيح ہونے كے ليے بيشرط ہے كہ پيشتر احرام بندها ہواور و قوف كرچكا ہواور خودكرےاورا كر

کسی اور نے اُسے کندھے پراُٹھا کرطواف کیا تو اُس کا طواف نہ ہوا مگر جب کہ یہ مجبور ہوخود نہ کرسکتا ہومثلاً بیہوش ہے۔ (3) (جو ہر ہ،ردالحتار)

سَسَعَانُ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْهِ بِرِلا دَكر مِا كَسى اور چيز بِراُهُا كرطواف كرايا اوراس ميں اپنے طواف كى بھى نيت كر لى تو دونوں كے طواف ہو گئے اگرچيدونوں كے دونتم كے طواف ہول۔

مسكالاً السطواف كاوفت دسويل كي طلوع فجرسے ہے،اس سے بنہيں ہوسكتا۔ (جوہرہ)

<u>مَسَعَالُهُ ﷺ ۔ اس میں بلکہ مطلق ہر طواف میں نیت شرط ہے،ا گرنیت نہ ہوطواف نہ ہوا مثلاً دشمن یا درندے سے بھاگ</u>

- الدرالمختار"، كتاب الحج، مطلب في رمي جمرة العقبة، ج٣، ص١٦٢.
- ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٢، وغيره.
 - 3 "رد المحتار"، كتاب الحج، مطلب: في طواف الزيارة، ج ٣ ، ص ٢١٤.
 - 💨 4 "الجوهرة النيرة" كتاب الحج، ص ٢٠٥.

گل کر پھیرے کیے طواف نہ ہوا بخلاف وقو ف عرفہ کہ وہ بغیر نیت بھی ہو جا تا ہے مگریہ نیت شرط نہیں کہ بہطواف زیارت داک دیسی ک

ے۔ ⁽¹⁾ (بوہرہ)

میں کیے تھے توان پانچوں صورتوں میں رمل وسعی دونوں اس طوافیے فرض میں کریں۔

(۲۰) قارن ومُفر دطواف قد وم میں اور متعظع بعداحرام حج کسی طواف نفل میں حج کے رَمُل وَسَعی دونوں یا صرف سُعی کے ہوں تو اس طواف میں رَمُل وسعی کچھ نہ کیا ہویا ﴿ صرف رَمُل کیا ہویا ﴿ جس طواف میں کیے بھونہ کیا ہویا ﴿ صرف رَمُل کیا ہویا ﴿ جس طواف میں کیے تھے وہ عمرہ کا تھا جیسے قارِن وُمتعظع کا پہلاطواف یا ﴿ وہطواف بے طہارت کیا تھایا ﴿ شوال سے پیشتر کے طواف میں کیے تھے وہ عمرہ کا تھا جیسے قارِن ومتعظع کا پہلاطواف یا ﴿ وہطواف بے طہارت کیا تھایا ﴿ شوال سے پیشتر کے طواف

" (۲۱) گمز دراور عور تیں اگر بھیڑ کے سبب دسویں کو نہ جا ئیں تواس کے بعد گیار ھویں کوافضل ہےاوراس دن یہ بڑا نفع ہے کہ مطاف خالی ماتا ہے گنتی کے بیس تیس آ دمی ہوتے ہیں عور توں کو بھی باطمینان تمام ہر پھیرے میں سنگ ِ اسود کا بوسہ ماتا ہے۔

(۲۲) جوگیار ہویں کو نہ جائے بارھویں کو کرلے اس کے بعد بلاعذر تاخیر گناہ ہے، جرمانہ میں ایک قربانی کرنی ہوگ۔ ہاں مثلاً عورت کو چیض یا نفاس آگیا تو ان کے ختم کے بعد طواف کرے مگر چیض یا نفاس سے اگر ایسے وقت پاک ہوئی کہ نہا دھوکر بارھویں تاریخ میں آفتاب ڈو بنے سے پہلے چار پھیرے کر سکتی ہے تو کرنا واجب ہے، نہ کرے گی گنہگار ہوگی۔ یو بیں اگر اتنا وقت اُسے ملاتھا کہ طواف کر لیتی اور نہ کیا اب چیض یا نفاس آگیا تو گنہگار ہوئی۔(درالحتار)

(۳۳) بہر حال بعد طواف دور کعت بدستور بڑھیں ،اس طواف کے بعد عور تیں بھی حلال ہوجا کیں گی اور حج پورا ہو گیا کہاس کا دوسرار کن پیطواف تھا۔

مَسَعَلَهُ کُ ﴾ اگر بیطواف نه کیا توعورتیں حلال نه ہول گی اگر چه برسیں گزرجائیں۔(4) (عالمگیری) مَسَعَلُهُ کُ ﴾ بے وضویا جنابت میں طواف کیا تو احرام سے باہر ہوگیا، یہاں تک کہاس کے بعد جماع کرنے سے جج

فاسد نہ ہو گا اور اگر اُلٹا طواف کیا لیعنی کعبہ کی بائیں جانب سے تو عور تیں حلال ہو گئیں گرجب تک مکہ میں ہے اس طواف کا اعادہ

^{1 &}quot;الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص٢٠٥.

^{2 &}quot;ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف الزيارة، ج٣، ص٦١٧.

^{3 &}quot;رد المحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف الزيارة، ج٣، ص٦١٦.

^{4 &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٢.

کرے اورا گرنجس کیڑا پہن کرطواف کیا تو مکروہ ہوااور بقدر مانع نماز ستر گھلا رہاتو ہوجائے گا مگر وَم لازم ہے۔ (1) (عالمگیری جو ہرہ)

(۲۴) دسویں، گیار ھویں، بار ھویں کی راتیں منی ہی میں بسر کرنا سنت ہے، نہ مز وَلفہ میں نہ مکہ میں نہ راہ میں، لہذا جو شخص دس با گیارہ کوطواف کے لیے گیا واپس آ کررات منی ہی میں گز ارے۔

سَسَنَانُ وَ ﴾ اگراپنے آپ منیٰ میں رہااوراسباب وغیرہ مکہ کو بینچ دیایا مکہ ہی میں چھوڑ کرعرفات کو گیا تواگرضا نع ہونے کا اندیشہ نہیں ہے، تو کراہت ہے ور نہیں۔(2) (درمخار)

ہاقی دنوں کی رَمی

(۲۵) گیار ہویں تاریخ بعد نماز ظہرام کا خطبہ سُن کر پھر رَمی کو چلو، ان ایام میں رَمی بُمر کا اولی ہے شروع کرو جو مسجد خیف ہے قریب ہے، اس کی رَمی کورا و مکہ کی طرف ہے آ کر چڑھائی پر چڑھو کہ بہ جگہ نسبت جمرة العقبہ کے بلند ہے، یہاں رُوبھ بلہ سات کنگریاں بطور فدکور مار کر بُمرہ سے پھھ آ گے بڑھ جاؤا اور قبلہ رود عامیں یوں ہاتھ اُٹھاؤ کہ ہتھیلیاں قبلہ کور ہیں ۔ حضور قلب سے حمد ودر و دو دو دا واستغفار میں کم سے کم ہیں آ بیتیں پڑھنے کی قدر مشغول رہو، ورنہ یون یارہ یا سورہ بقرہ کی مقدارتک ۔

(۲۲) پھر بُمر کو سطی پر جاکراییائی کرو(۲۷) پھر بُمر قالعقبہ پر گریہاں رَمی کرے نہ ٹھہر ومعاً بلیٹ آ ف، بلٹتے میں دعا کرو۔

(۲۸) بعینہ اسی طرح بار معویں تاریخ بعد زوال تینوں جمرے کی رَمی کرو، بعض لوگ دو پہر سے پہلے آ ج رَمی کرے کہ معظمہ کو چل دیے ہیں ۔ یہ ہمارے اصل مذہب کے خلاف اور ایک ضعیف روایت ہے تم اس بڑمل نہ کرو۔

(۲۹) بارھویں کی رَمی کر کے غروب آفتاب سے پہلے پہلے اختیار ہے کہ مکہ معظمہ کوروانہ ہوجاؤ مگر بعد غروب چلاجانا معیوب۔اب ایک دن اور تھم بنا اور تیرھویں کو بدستور دوپہر ڈھلے رَمی کر کے مکہ جانا ہوگا اور یہی افضل ہے، مگر عام لوگ بارھویں کو چلے جاتے ہیں تو ایک رات دن یہاں اور قیام میں قلیل جماعت کودفت ہے اور اگر تیرھویں کی صبح ہوگئی تو اب بغیر رَمی کیے جانا جائز نہیں، جائے گا تو دَم واجب ہوگا۔ دسویں کی رَمی کا وقت اوپر نہ کور ہوا۔

گیار ہویں بار ھویں کا وفت آفتاب ڈھلنے (3) سے مبیح تک ہے مگر رات میں لیعنی آفتاب ڈو بنے کے بعد مکر وہ ہے اور تیر ھویں کی رَمی کا وقت مبیح سے آفتاب ڈو بنے تک ہے مگر مبیح سے آفتاب ڈھلنے تک مکر وہ وقت ہے، اس کے بعد غروب آفتاب

❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس، ج١، ص٢٣٢. و"الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص٢٠٦.

^{2 &}quot;الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٦٢١.

^{🦃 🔞}یعنی ظهر کا وقت شروع ہونے۔

📽 تک مسنون ۔لہٰزاا گریبلی تین تاریخوں •۱۲،۱۱،۱ کی رَمی دن میں نہ کی ہوتو رات میں کر لے پھرا گر بغیر عُذر ہے تو کراہت ہے،

ورند کچھیں اورا گررات میں بھی نہ کی تو قضا ہوگئ،اب دوسرے دن اس کی قضا دے اوراس کے ذمہ کفارہ واجب اوراس قضا کا بھی وقت تیرھویں کے آفتاب ڈو بنے تک ہے، اگر تیرھویں کو آفتاب ڈوب گیا اور زمی ندکی تو اب زمی نہیں ہو سکتی اور دَم واجب _(روالحتار)

مَسْتَالُهُ الْ ﴾ اگر بالكل رَى نه كى جب بھى ايك ہى دَم واجب ہوگا۔ (2) (منسك)

مست ۴ ۴ کنگریاں چاروں دن کے واسطے لی تھیں بعنی ستر اور بارھویں کی رَمی کر کے مکہ جانا چاہتا ہے تو اگراور کو ضرورت ہواً ہے دیدے، ورنہ کسی پاک جگہ ڈال دے۔ جمروں پر بچی ہوئی کنگریاں پھینکنا مکر وہ ہے اور فن کرنے کی بھی حاجت نہیں۔⁽³⁾(منیک)

مستان سے جروں پر پیدل ہی جائز ہے اور سوار ہو کر بھی مگر افضل یہ ہے کہ پہلے اور دوسرے جمروں پر پیدل رَمی کرے اور تیسرے کی سواری پر۔⁽⁴⁾ (درمختار وغیرہ)

سَسَعَانُهُ ﴾ اگر کنگری کسی شخص کی بیپٹھ یا کسی اور چیز پر پڑی اور ہلکی رہ گئی تو اُس کے بدلے کی دوسری مارے اور اگر گر یڑی اور وہاں گری جہاں اُس کی جگہ ہے یعنی جمرہ سے تین ہاتھ کے فاصلہ کے اندر تو جائز ہوگئی۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

سَتَانُ ۵ ﴾ اگر کنگری کسی شخص پر پڑی اوراُس پر سے جمرہ کو گلی تو اگر معلوم ہو کہ اُس کے دفع کرنے سے جمرہ پر پینچی تو اس کے بدلے کی دوسری کنگری مارے اور معلوم نہ ہو جب بھی احتیاط یہی ہے کہ دوسری مارے۔ یو ہیں اگر شک ہو کہ کنگری اپنی عگه پر پنچی مانہیں تواعادہ کرلے۔⁽⁶⁾ (منسک)

سَسَالُ کی جہرہ کی رَمیب کے خلاف رَمی کی تو بہتر یہ ہے کہ اعادہ کرلے اور اگر پہلے جمرہ کی رَمی نہ کی اور دوسرے تیسرے کی کی تو پہلے پر مارکر پھر دوسرے اور تیسرے پر مار لینا بہتر ہے اورا گرتین تین کنکریاں ماری ہیں تو پہلے پر چاراور مارے اور دوسرے ا

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرات الثلاث، ج٣، ص٩ ٦١.
- ۲٤٤٠٠٠ "لباب المناسك"، (باب رمى الحمار و أحكامه ، فصل رمى اليوم الرابع)، ص٤٤٢.
- 3 "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب رمي الحمار و أحكامه ، فصل رمي اليوم الرابع)، ص ٢٤٤.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص ٦٢٠، وغيره.
 - 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج ١، ص ٢٣٤.
 - المناسك"، (باب رمي الجمار و أحكامه ، فصل في الرمي و شرائطه و واجباته)، ص٥٢٤.

مستان کے جو شخص مریض ہوکہ جمرہ تک سواری پر بھی نہ جاسکتا ہو، وہ دوسر ہے کو تھم کردے کہ اس کی طرف سے رَمی کرے اوراُس کو جا ہیے کہ پہلے اپنی طرف سے سات کنگریاں مارنے کے بعد مریض کی طرف سے رَمی کرے بدنی جب کہ خود رَمی نہ کر چکا ہواورا گریوں کیا کہ ایک کنگری اپنی طرف سے ماری پھرایک مریض کی طرف سے، یو ہیں سات بارکیا تو مکروہ ہے اور مریض کے بغیر تھم رَمی کردی تو جائز نہ ہوئی اورا گرم یض میں اتنی طاقت نہیں کہ رَمی کر ہے تو ہم ہم رہی کردی تو جائز نہ ہوئی اورا گرم یض میں اتنی طاقت نہیں کہ رَمی کر دیں اور بہتر یہ کہ ان کے ہاتھ پر کنگری رکھ کر رَمی کر ایس ہے۔ اس کے ساتھ والے رَمی کردیں اور بہتر یہ کہ ان کے ہاتھ پر کنگری رکھ کر رَمی کرائیں۔ (شک)

مسئان کو این اور یہ یا زنہیں کہ کون سے جمرہ پر کی گئی ہیں اور یہ یا زنہیں کہ کون سے جمرہ پر کی کی جی اور یہ یا زنہیں کہ کون سے جمرہ پر کمی کی تو پہلے پر یہ چار کنگریاں مارے اور دونوں پچھلوں پر سات سات اورا گرتین پی ہیں تو ہرا یک پر ایک ایک اورا گرایک یا دوہوں جب بھی ہر جمرہ پر ایک ایک ۔ (فتح القدیر)

- (۳۰) رَمی سے پہلے حکق جائز نہیں۔
- (۳۱) گیارهویں بارهویں کی زمی دو بہرسے پہلے اصلاً صحیح نہیں۔

رَمی میں بارہ چیزیں مکروہ هیں

- (۳۲) رَمَى مِين بيه چيزين مكروه بين:
- 🛈 دسویں کی زمی غروب آفتاب کے بعد کرنا۔
 - 🕥 تیرهویں کی زمی دو پہر سے پہلے کرنا۔
 - 🕆 رَمِي مِين برُّ الْبِقِر مارنا۔
- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٤.
 - الباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب رمي الحمار و أحكامه)، ص ٢٤٧.
 - 🦃 🔞 "فتح القدير"، كتاب الحج، باب الاحرام ، ج٢، ص ٣٩١.

- ﴿ بِرُبِ يَقِرُ كُوتُو رُكُرُ نَكُرِ مِالِ بِنانا _
 - ⊙ مسجد کی کنگریاں مارنا۔
- 😙 جمرہ کے نیچے جو کنگریاں پڑی ہیں اُٹھا کر مارنا کہ بیمردود کنگریاں ہیں، جوقبول ہوتی ہیں اُٹھالی جاتی ہیں کہ قیامت

کے دن نیکیوں کے بلیے میں رکھی جائیں گی ،ورنہ جمروں کے گردیہاڑ ہوجاتے۔

- ایاک تنکریاں مارنا۔
- ﴿ سات سے زیادہ مارنا۔
- آی کے لیے جو جہت مذکور ہوئی اس کے خلاف کرنا۔ (1)
- ① جمرہ سے پانچ ہاتھ ہے کم فاصلہ پر کھڑ اہونازیادہ کامضایقہ نہیں۔
 - 🛈 جمرول میں خلاف ترتیب کرنا۔
 - 🕲 مارنے کے بدلے کنگری جمرہ کے پاس ڈال دینا۔

مکه معظمه کو روانگی

(۳۳) اخیردن یعنی بارهویں خواہ تیرهویں کو جب منی سے رُخصت ہوکر مکہ معظمہ چلووادی محصب (2) میں کہ جَسنةُ المصعلیٰ کے قریب ہے، سواری سے اُتر لویا ہے اُتر ہے کچھ دیر کھم کر دعا کر واور افضل سیہ کہ عشا تک نمازیں پہیں پڑھو، ایک نیند لے کر مکہ معظمہ میں داخل ہو۔

عمریے

(۳۴) اب تیرهویں کے بعد جب تک مکہ میں گھر واپنے اور اپنے بیر، اُستاد، ماں، باپ ،خصوصاً حضور پُرنُو رسیّدعالم

- تُتَخِطر يقت، امير المِسنّت، بانى دعوت إسلامى حضرت علامه مولا نا ابو بلال محمد الهاس عطّار قاورى رضوى ضيائى وَ امَتْ بَرَ عَساتُهُمُ الْعَالِيّهِ " " " رفيق الحرمين" مين تحريفر مات بين: "لهذا برُ عشيطان كو مارت وقت كعبه شريف أُلِثْ ما تحدى طرف اورمِنى سيد هم ما تحدى طرف بونا چا بيئه و وفون بحرون من من علام من الله عليه به مناجلة بيئه و الله وفون بحرون كو مارت وقت آب كالمنه قبله كي جانب بونا جائية ..."
- جنة المعلى كەمكەمعظمە كا قبرستان ہےاس كے پاس ایک پہاڑ ہے اور دوسرا پہاڑ اس پہاڑ كے سامنے مكە كوجاتے ہوئے دہنے ہاتھ پر ناله
 - 🤿 کے پیٹ سے جدا ہےان دونوں پہاڑ وں کے نیچ کا نالہ وادی محصب ہے جنۃ المعلی محصب میں داخل نہیں ۱۲۔اعلیٰ حضرت قدس سر ۂ

صلى الله تعالى عليه وسلم اوراً أن كاصحاب وابلبيت وحضورغوث اعظم رضى الله تعالى عنهم كى طرف سے جنتنے بوسكيس محمر مے كرتے رہو يمعيم کو کہ مکم معظّمہ سے ثال لیعنی مدینہ طیبہ کی طرف تین میل فاصلہ پر ہے، جاؤوہاں سے عمرہ کا احرام جس طرح اوپر بیان ہوا باندھ کر آ وَ اورطواف وسعى حسب دستوركر كے حلق ياتفعيم كرلوعمره جو گيا۔ جوحلق كر چكا اور مثلاً أسى دن دوسراعمره لايا، وه سر پر أستره پھروالے کافی ہے۔ یو ہیں وہ جس کےسر برقدر تی بال نہ ہوں۔

(٣٥) كمه معظمه مين كم سے كم ايك ختم قرآن مجيد سے محروم ندر ہے۔

مقاماتِ متبرکہ کی زیارت ُ

(٣٦) جَنةُ المعلىٰ حاضر موكراً م المونين خديجة الكبرى وديكر مدفونين كي زيارت كر__

(٣٤) مكان ولادت اقدس حضور انور صلى الله تعالى عليه وملم ومكان حضرت خديجة الكبرى رضي الله تعالى عنها ومكان ولادت

حضرت على رضى الله تعالى عنه وجبل نثوروغار حرا ومسجدالجن ومسجد جبل افي قبيس وغير مإمكانات متبر كه كي بھي زيارت سےمشرف ہو۔

(۳۸) حضرت عبدالمطلب كى زيارت كرين اور ابوطالب كى قبرير نه جائيں _ يومين جدره مين جولوگوں نے حضرت

اُمُنا ﴿ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَنِهَا كَا مِزَارَكُنَّ سِو ہاتھ كا بناركھا ہے وہاں بھی نہ جا ئىں كہ بے اصل ہے۔

(۳۹) علما کی خدمت سے برکت حاصل کرو۔

کعبہ معظمہ کی داخلی

(۴٠) کعبم معظمہ کی وافعلی کمال سعادت ہے اگر جائز طور پرنصیب ہو محرم میں عام دافعلی ہوتی ہے گر سخت کشکش رہتی ہے۔ کمز ورمرد کا تو کام ہی نہیں، نہ عورتوں کوایسے ہجوم میں جرائت کی اجازت، زبردست مردا گرآ پ ایذ اسے نے بھی گیا تو اُوروں کود ھکے دیکرابذاد ہے گااور یہ جائز نہیں ، نہاس طرح کی جاضری میں کچھذوق ملےاور خاص داخلی ہے لین دین میسرنہیں ، اوراس پر لینا بھی حرام اور دینا بھی حرام ہے ام کے ذریعیہ ایک مستحب ملابھی تو وہ بھی حرام ہو گیا،ان مفاسد ہے نجات نہ ملے تو حطیم کی حاضری ننیمت جانے ،او برگز را کہوہ بھی کعبہ ہی کی زمین ہے۔

اور اگر شاید بن بڑے بول کہ خدام کعبہ ہے صاف تھہر جائے کہ داخلی کے عوض کچھ نہ دیں گے، اس کے بعدیا قبل چاہے ہزاروں روپے دیدے تو کمال ادب ظاہر و باطن کی رعایت سے آئکھیں نیچی کیے گردن جُھ کائے، گناہوں پرشر ماتے، جلال رب العزة سے لرزتے کا نیپتے بسم اللہ کہہ کر پہلے سیدھایا وَل بڑھا کر داخل ہواور سامنے کی ویوار تک اتنابڑھے کہ تین ہاتھ کا

حرمین شریفین کے تبرکات

(۳۱) بچی ہوئی بتی وغیرہ جو یہاں یا مدینہ طیبہ میں خدام دیتے ہیں، ہرگز ندلے بلکہ اپنے پاس سے بتی وہاں روثن کرکے باقی اُٹھالے۔

مَسْعَلَیْ اللّٰ علاف کعبہ معظمہ جوسال بھر بعد بدلا جاتا ہے اور جواُ وتارا گیا فقرار پڑنقسیم کر دیا جاتا ہے ،اس کوان فقرا سے خرید سکتے ہیں اور جوغلاف چڑھا ہوا ہے اس میں سے لینا جائز نہیں بلکہ اگر کوئی ٹکڑا جدا ہوکر گر پڑے تواہے بھی نہلے اور لے تو کسی فقیر کو دیدے۔

سَسَعَانُ کَ کَ عَدِمعنظُمه مِیں خوشبولگی ہوا ہے بھی لینا جائز نہیں اور لی تو واپس کردے اور خواہش ہو تو اپنے پاس سے خوشبو لے حاکرمُس کرلائے۔

طواف رُخصت

(۳۲) جب ارادہ رخصت کا ہو **طواف و داع** بے رَمُل وسعی و إضطباع بجالائے کہ باہر والوں پر واجب ہے۔ ہاں وقت رُخصت عورت حیض یا نفاس سے ہو تو اس پرنہیں، جس نے صرف عمرہ کیا ہے اس پریہ طواف واجب نہیں پھر بعد طواف بدستور دورکعت مقام ابراہیم میں پڑھے۔

مسکان کی نیت نہ کی تو وہی طواف رخصت کرلیا مگر کسی وجہ سے ظہر گیا ،اگرا قامت کی نیت نہ کی تو وہی طواف کا فی ہے مگر مستحب بیہ ہے کہ پھر طواف کرے کہ پچپھلا کا م طواف رہے۔ (2) (عالمگیری وغیرہ)

- 🚹 پ ٤ ، آل عمران: ٩٧ .
- 🧝 🛂 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج ١، ص ٢٣٤،وغيره.

ﷺ مسئلاً کی اللہ میں اللہ اور میقات کے اندررہنے والے پر طواف رخصت واجب نہیں۔⁽¹⁾ (عالمگیری)

سستان المحارث باہروالے نے مکدمیں یا مکہ کے آس پاس میقات کے اندرکسی جگدر ہے کا ارادہ کیا یعنی یہ کہ اب سمیں رہے

گا تواگر ہارھویں تاریخ تک بیزیت کرلی تواب اس پر بیطواف واجب نہیں اوراس کے بعد نیت کی تو واجب ہو گیااور پہلی صورت مدی گیریں دریں کی تامید میں مدین نہیں تاہید جسم میں مدین گاری کی گئی ہوئی ہے۔

میں اگرا پنے ارادہ کو توڑدیااوروہاں سے رخصت ہوا تواس وقت بھی واجب نہ ہوگا۔ (2) (عالمگیری) میں اگر اپنے ارادہ کو توڑدیا اور وہاں سے رخصت ہوا تواس وقت بھی واجب ورُخصت نیت میں ہونے کی حاجت نہیں، یہاں

تک که اگر به نیت نفل کیا داجب ادا هو گیا - ⁽³⁾ (ردامختار)

مسئ ان میں جین والی مکم معظمہ سے جانے کے بل پاک ہوگئ تواس پر بیطواف واجب ہے اور اگر جانے کے بعد پاک ہوئی تو اس پر بیطواف واجب ہوگیا جب کہ میقات سے باہر نہ ہوئی تھی اور اگر جانے سے نہاج چفن ختم ہوگیا مگر نفسل کیا تھا، نہ نماز کا ایک وقت گزراتھا تو اُس پر بھی واپس آنا واجب نہیں۔(4) (عالمگیری)

<u> مسئانہ کی ہے</u> طواف ِرُخصت کے تین پھیرے چھوڑ گیا تو ہر پھیرے کے بدلے صدقہ دے۔ ⁽⁶⁾ (عالمگیری)

(۳۳) طواف رخصت کے بعدز مزم یرآ کرائی طرح یانی ہے ، بدن پرڈا لے۔

(۲۴۷) پھر درواز ہُ کعبہ کے سامنے کھڑا ہوکر آستانۂ پاک کو بوسہ دے اور قبول جج وزیارت اور بار بار حاضری کی دعا

ما تکے اور وہی دُعائے جامع پڑھے یابیر پڑھے:

اَلسَّآئِلُ بِبَابِكَ يَسُأَلُكَ مِنُ فَضُلِكَ وَمَعُرُوفِكَ وَيَرُجُو رَحُمَتَكَ . (7)

- €.... "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٤.
 - 2 المرجع السابق.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف الصدر، ج٣، ص٦٢٢.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٥.
- 5 المرجع السابق. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف الصدر، ج٣، ص٦٢٢.
- الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٦.
 - 😙 تیرے درواز ه پرسائل تیر نے فضل واحسان کا سوال کرتا ہےاور تیری رحمت کا امید وارہے۔ ۱۲

(۵۵) پهرمُلتزم پرآ کرغلاف کعبرتهام کرأی طرح چهٹو، نه کرودُرودودُ عاکی کثریت کرو۔اس وقت بیدُ عاپڑھو:

ٱلْحَمُدُ لِلَّهِ الَّذِيُ هَدَانَا لِهِلَا وَمَا كُنَّا لِنَهُتَدِىَ لَو لَا اَنُ هَدَانَا اللَّهُ اَللَّهُمَّ فَكَمَا هَدَيُتَنَا لِهِلَا فَتَقَبَّلُهُ مِنَّا وَلَا تَنْ هَدَانَا اللَّهُ اَللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى الْعُوْدَ إِلَيْهِ حَتَّى تَرُضَى بِرَحُمَتِكَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِينَ وَالْدَهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّالِهِ وَصَحْبِهِ اَجُمَعِينَ طُ. (1) الرَّاحِمِينَ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّالِهِ وَصَحْبِهِ اَجْمَعِينَ طَ. (1)

(٣٦) پير حجرياك وبوسه دواور جوآ نسور كھتے ہوگراؤاوريه پڑھو:

يَا يَمِيُنَ اللّهِ فِى اَرُضِهِ اِنِّى اُشُهِدُكَ وَكَفَى بِاللّهِ شَهِيُدًا اَنِّى اَشُهَدُ اَنُ لَا اِللهَ وَاللهُ وَاَشُهَدُ اَنَّ مَ اللهِ وَاللهِ اللهِ وَاللهِ اللهِ وَاللهِ اللهِ وَاللهِ اللهِ وَاللهِ اللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَاللهِ وَصَحْبِهِ اَجُمَعِینَ ط. (2)

(24) پھراُ لٹے پاؤں کعبہ کی طرف مونھ کر کے یاسید سے چلنے میں پھر پھر کر کعبہ کوحسرت سے دیکھتے، اُس کی جُدائی پرروتے یارونے کا مونھ بناتے متجدِ کریم کے دروازہ سے بایاں پاؤں پہلے بڑھا کرنکلواور دعائے مذکور پڑھواور اسکے لیے بہتر باب الحذورہ ہے۔

- (۴۸) حیض ونفاس والی عورت درواز و مسجد پر کھڑی ہوکر بہ ذگاہ حسرت دیکھےاور دعا کرتی پلٹے۔
- (٢٩) پهربقدرقدرت فقرائ مكمعظم يرتضدق كركم توجه سركار اعظم مدين طيبهو و بالله التوفيق
- الله (عزوجل) کے لیے جس نے جمیں ہدایت کی ،الله (عزوجل) ہم کو ہدایت نہ کرتا تو ہم ہدایت نہ پاتے ،اللی! جس طرح ہمیں تو نے اس کی ہدایت کی ہدایت کی ہدایت نہ پاتے ،اللی! جس طرح ہمیں تو نے اس کی ہدایت کی ہے تو قبول فرما اور بیت الحرام میں بیہ ہماری آخری حاضری نہ کراوراس کی طرف پھرلوٹنا ہمیں نصیب کرنا تا کہ تو اپنی رحمت کے سبب راضی ہوجا۔

اےسب مہر بانوں سے زیادہ مہر بان اور حمد ہے اللہ (عزوجل) کے لیے جورب ہے تمام جہان کا اور اللہ (عزوجل) درود بھیجے ہمارے سر دار محمد (صلی اللہ تعالیٰ علیہ دملم) اور ان کی آل واصحاب سب پر ۱۲

● اےزمین میں اللہ(عزوجل) کے بمین! میں تجھے گواہ کرتا ہوں اور اللہ(عزوجل) کی گواہی کافی ہے کہ میں اس کی گواہی دیتا ہوں کہ اللہ (عزوجل) کے سواکوئی معبود نہیں اور مجمد (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) اللہ (عزوجل) کے رسول ہیں۔

اور میں تیرے پاس اس شہادت کوامانت رکھتا ہوں کہ تو اللہ (عزوجل) کے نزدیک قیامت کے دن جس دن بڑی گھبراہٹ ہوگی تو میرے لیے اس کی شہادت دے گا، اے اللہ (عزوجل)! میں تجھ کواور تیرے ملائکہ کواس پر گواہ کرتا ہوں، اللہ (عزوجل) درود بھیجے ہمارے سردار مجمد (صلی اللہ تعالیٰ علیوسلم)اوران کی آل واصحاب سب پر ۱۲

قران كابيان

قِران کا بیان

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ وَأَتِبُّوا لُحَجَّ وَالْعُبُرَةَ لِللهِ ١٠ ﴾ (1)

اوراللہ(عزوجل)کے لیے حج وعمرہ کو پورا کرو۔

ابوداود ونسائی وابن ماجبُ می بن معبر تغلبی ہے راوی ، کہتے ہیں میں نے فج وعمرہ کا ایک ساتھ احرام

باندها، امیر المومنین عمر فاروق رض الله تعالی عنه نے فر مایا: تونے اپنے نبی محمصلی الله تعالی علیه وسلم کی پیروی کی۔ (2)

سُنا، حج وعمرہ دونوں کولبیک میں ذکر فرماتے ہیں۔⁽³⁾

ا مام احمد نے ابوطلحہ انصاری رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم نے حج وعمر ہ کو

خ<u>ل یک ۳ گ</u>هه جمع فر مایا _{- (4)}

ځل ټک 📗 🎏

ا کا م انگرے ابو محدانصاری رسی التد تعالی عنہ مسے روایت کی ، کہ رسول اللہ ہی التد تعالی علیہ و م نے من و مر ہ و

مسئانی ایک قران کے یہ معنی ہیں کہ قج وعمرہ دونوں کا احرام ایک ساتھ باندھے یا پہلے عمرہ کا احرام باندھا تھا اورا بھی طواف کے چار پھیرے نہ کیے تھے کہ فج کو شامل کرلیا یا پہلے فج کا احرام باندھا تھا اُس کے ساتھ مگر ہ بھی شامل کرلیا ،خواہ طواف قد وم سے پہلے عمرہ شامل کریا یا بعد میں ۔طواف قد وم سے پہلے عمرہ شامل کیا یا بعد میں ۔طواف قد وم سے پہلے اساء ت ہے کہ خلاف سنت ہے مگر دَم واجب نہیں اور طواف قد وم کے بعد شامل کیا تو واجب ہے کہ عمرہ توڑ دے اور دَم دے اور عمرہ کی قضا کرے اور عمرہ نہ توڑ اجب بھی دَم دینا واجب ہے ۔ دم وینا واجب ہے کہ عمرہ توڑ دے اور دَم دے اور عمرہ کی قضا کرے اور عمرہ نہ توڑ اجب بھی دَم دینا واجب ہے۔ (5) (در مختارہ ردالحتار)

مس<u>گانگی کی ج</u>ران کے لیے شرط میہ ہے کہ عمرہ کے طواف کا اکثر حصہ وقو نے عرفہ سے پہلے ہو، لہذا جس نے طواف کے حیار

پھیروں سے پہلے وقوف کیا اُس کاقران باطل ہوگیا۔ ⁽⁶⁾ (فتح القدری)

- 🚺 پ۲، البقره: ۱۹۳.
- "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب في الاقران، الحديث: ١٧٩٨، ج٢، ص٢٢٧.
- 3 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب في الافراد و القران، الحديث: ١٢٣٢، ص١٤٧.
- 4 "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي طلحة، الحديث: ٦٦٣٤٦، ج٥، ص٥٠٨.
 - الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٣.
 - 🤏 🌀 "فتح القدير"

[©] مسئلاً سب سے افضل قران ہے پھر تقع پھر افراد۔ ⁽¹⁾ (ردالحتار وغیرہ) قران کے احرام کا طریقہ احرام کے

_____ بیان میں مذکور ہوا۔

مَسِعَانُ مَنْ عَلَيْ اللّٰهِ اللّ

مسئا کہ کہ جران میں واجب ہے کہ پہلے سات پھیرے طواف کرے اور ان میں پہلے تین پھیروں میں رَمَل سنت ہے پھرسعی کرے، اب قران کا ایک بُویعن عمرہ پورا ہو گیا مگر ابھی حلق نہیں کرسکتا اور کیا بھی تو احرام سے باہر نہ ہوگا اور اس کے جرمانہ میں دو دَم لازم ہیں۔ عمرہ پورا کرنے کے بعد طواف قد وم کرے اور چاہے تو ابھی سعی بھی کرلے، ورنہ طواف افاضہ کے بعد سعی کرے داورونوں طوافوں میں اضطباع بعد سعی کرے داورونوں طوافوں میں اضطباع بھیروں میں بھی رَمَل کرے اور دونوں طوافوں میں اضطباع بھی کرے۔ (درمخاروغیرہ)

مسئل کی ہے۔ (5) (جوہرہ) عمرہ سے فارغ میں اگر طواف میں اگر طواف جے۔ (5) (جوہرہ) عمرہ سے فارغ موکر بدستور مُحرِم رہے اور تمام افعال بجالائے، دسویں کوحلق کے بعد پھر طواف افاضہ کے بعد جیسے حج کرنے والے کے لیے چیزیں حلال ہوتی ہیں اُس کے لیے بھی حلال ہوں گی۔

سَنَانُ اللهُ عَرَانَ مِي رَمِي كَ بعد قرباني واجب ہے اور يقرباني کسي جرمانه ميں نہيں بلكه اس كاشكريہ ہے كه الله عزوجل نے الله عن وعبادتوں كي توفيق بخشي - قارن كے ليے افضل يہ ہے كه الله عنوبل كا جانور لے جائے - (6) (عالمگيرى،

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص ٦٣١، وغيره.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص ٦٣٤.
- 3 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٥ ،وغيره.
- ◘ المرجع السابق.و"لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب القران، فصل في اداء القران)، ص٢٦٢.
 - 5 "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب القران، ، ص ٢١٠.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع في القران والتمتع، ج١٠ ص٢٣٨.
 - و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٦، وغيرهما.

天

🍪 درمختاروغیره)

سَسَعَانُ وَ ﴾ اس قربانی کے لیے بیضرور ہے کہ حرم میں ہو، بیرون حرم نہیں ہو سکتی اور سنت بید کمنیٰ میں ہواوراس کا وقت دسویں ذی الحجہ کی فخر طلوع ہونے سے بارھویں کے غروب آفتاب تک ہے مگر بیضرور ہے کہ زمی کے بعد ہو، رَمی سے پہلے کر سے گا تو دَم لازم آئے گا اورا گربارھویں تک نہ کی توسا قط نہ ہوگی بلکہ جب تک زندہ ہے قربانی اس کے ذمہ ہے۔ (۱) (منسک)

سَسَعَانُ وَاسَ کَ وَصِیّت کر جانا واجب ہے اور الروصیت نہ کی تھی کہ انتقال ہو گیا تواس کی وصیّت کر جانا واجب ہے اور اگر وصیت نہ کی مگر وار ثول نے خود کر دی جب بھی صحیح ہے۔ (2) (منسک)

سیکانی ال بیستانی ال بیستانی ال بیستانی ال بیستانی ال بیستانی بیستانی ال بیستانی ال بیستانی ال بیستانی ال بیستانی بیس

مسئ ان الربیلے کے تین روز ہے نویں تک نہیں رکھے تو اب روز ہے کافی نہیں بلکہ ؤ م واجب ہوگا، ؤ م دے کراحرام سے باہر ہوجائے اور اگر ؤم واجب کراحرام سے باہر ہوجائے اور اگر ؤم واجب بیں۔(4) (درمختار)

- ❶ "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب القران، فصل في هدى القارن و المتمتع)، ص٢٦٣.
- 2 "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب القران، فصل في هدى القارن و المتمتع)، ص٢٦٣.
 - 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع في قران و المتمتع، ج١، ص٣٣٩.
 - و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٦.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٨.

یا بعد میں۔ یو ہیں اگر قربانی کے دنوں میں سر نہ مونڈ ایا تو اگر چپھلق سے پہلے جانور پر قادر ہووہ روزے کافی ہیں۔ (1) (درمختار،ردالمحتار)

مسئ المسئ المسئر المسئل المسئر المسئل المسئر المسئل الم

تُمتّع كابيان ﴾

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ فَمَنْ تَنَكَّمُ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَبِّ فَمَا اسْتَيْسَرَمِنَ الْهَدُيَ فَمَنْ لَّمْ يَجِدُ فَصِيامُ ثَلْثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَبِّوسَبُعَةِ لِذَا مَجَعُتُمُ لِلْمُ عَشَمَةٌ كَامِلَةٌ لَا لِمَنْ لَمْ يَكُنْ اَهْ لُهُ حَاضِرِى الْسَجِدِ الْحَرَامِ لَوَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاعْلَمُوا اللَّهُ وَاعْلَمُوا اللّهُ وَاعْلَمُوا اللّهُ وَاعْلَمُوا اللّهُ وَاعْلَمُوا اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَلّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَاللّهُ وَالْ

جس نے عمرہ سے جج کی طرف تمتع کیا ،اس پر قربانی ہے جیسی میسر آئے پھر جسے قربانی کی قدرت نہ ہوتو تین روزے جج کے دنوں میں رکھے اور سائے واپسی کے بعد ،ید دس پورے ہیں ۔ بیاُس کے لیے ہے جو مکہ کار ہنے والانہ ہواور اللہ (عزوجل) سے ڈر داور جانِ لوکہ اللہ (عزوجل) کا عذاب سخت ہے۔

محقع اُسے کہتے ہیں کہ جج کے مہینے میں عمرہ کرے پھراسی سال حج کا احرام باندھے یا پوراعمرہ نہ کیا،صرف جار پھیرے کیے پھر حج کا احرام باندھا۔

مسئان السلط میں ہوسکتا ہے۔ تمتع کے لیے بیش طنہیں کہ میقات سے احرام باند ھے اس سے پہلے بھی ہوسکتا ہے بلکہ اگر میقات کے بعد احرام باندھا جب بھی تمتع ہے، اگر چہ بلااحرام میقات سے گزرنا گناہ اور دَم لازم یا پھر میقات کو واپس جائے۔ یو ہیں تمتع کے لیے بیشر طنہیں کہ عمرہ کا احرام جج کے مہینے میں باندھا جائے بلکہ شوال سے پیشتر بھی احرام باندھ سکتے ہیں، البتہ بیضروری ہے کہ

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٨.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٩.
 - 🐾 🔞 ۲، البقره: ۱۹۲.

1 کتع کابیان

عمرہ کے تمام افعال یا اکثر طواف جج کے مہینے میں ہو، مثلاً تین پھیرے طواف کے رمضان میں کیے پھر شوال میں باقی چار پھیرے کر لیے پھراسی سال جج کرلیا تو یہ بھی تمتع ہے اور اگر رمضان میں چار پھیرے کر لیے تھے اور شوال میں تین باقی تو یہ تہتے نہیں اور یہ بھی شرطنہیں کہ جس سال احرام باندھا اسی سال تمتع کرلے مثلاً اس رمضان میں احرام باندھا اور احرام برقائم رہا، دوسرے سال عمرہ پھر جج کیا تو تمتع ہوگیا۔ (1) (عالمگیری، روالمحتار)

ً تَمتّع کے شرائط 🥻

تمتع کی دس شرطیں ہیں:

- () مج کے مہینے میں پوراطواف کرنایا اکثر حصد یعنی چار پھیرے۔
 - 🕈 عمره كااحرام حج كے احرام سے مقدم ہونا۔
 - الله على المرام سے پہلے عمرہ كالوراطواف يا كر حصد كرليا ہو۔
 - ② عمره فاسدنه کیا ہو۔
 - 💿 مج فاسدنه کیا ہو۔
- ﴿ الماصحح نه کیا ہو۔ الماصحح کے بید عنی ہیں کہ عمرہ کے بعد احرام کھول کراپنے وطن کو واپس جائے اور وطن ہے مراد وہ جگہہ جہاں وہ رہتا ہے پیدائش کا مقام اگر چہدو سری جگہ ہو، البندا اگر عمرہ کرنے کے بعد وطن گیا پھر واپس آکر جج کیا تو تمتع نہ ہوا اور اگر عمرہ کرنے سے پیشتر گیایا عمرہ کر کے بغیر طلق کیے یعنی احرام ہی میں وطن گیا پھر واپس آکر اس سال جج کیا تو تمتع ہے۔ یو ہیں اگر عمرہ کر کے احرام کول دیا پھر جج کا احرام باندھ کر وطن گیا تو یہ بھی المام سے نہیں، البندا اگر واپس آکر جج کرے گا تو تمتع ہوگا۔
 - 🛇 حجج وعمره دونوں ایک ہی سال میں ہوں۔
- 🛆 مکه عظمه میں ہمیشہ کے لیے گھم نے کاارادہ نہ ہو، لہذاا گرعمرہ کے بعد پکاارادہ کرلیا کہ پہبیں رہے گا تو تمتع نہیں اور
 - دوایک مہینے کا ہوتو ہے۔
- کم معظمہ میں حج کامہینہ آجائے تو بے احرام کے نہ ہو، نہ ایسا ہو کہ احرام ہے مگر جار پھیرے طواف کے اس مہینے
 - 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص ٦٤٠.
 - و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع في القران والتمتمع، ج١٠، ص ٢٤٠.

سے پہلے کر چکاہے، ہاں اگر میقات سے باہر واپس جائے پھر عمرہ کا احرام باندھ کرآئے تو تہتع ہوسکتا ہے۔
﴿ میقات سے باہر کار بنے والا ہو۔ مکہ کار بنے والا تمتع نہیں کرسکتا۔ (۱) (ردالحتار)

مسئا کی اجرہ میں تمام کی دوصورتیں ہیں ایک یہ کہ اپنے ساتھ قربانی کا جانور لایا، دوسری یہ کہ نہ لائے۔جو جانور نہ لایا وہ میں تاریخ ہوگیا اور طواف شروع میں تاریخ ہوگیا اور طواف شروع میں تاریخ ہوگیا اور طواف شروع کرتے ہی لینی سنگ اً سودکو بوسہ دیتے وقت لبیک ختم کر دے اب مکہ میں بغیرا حرام رہے ۔ آٹھویں ذی المجہ کو مسجد الحرام شریف سے جج کا احرام باند سے اور جج کے تمام افعال بجالائے مگراس کے لیے طواف قد وم نہیں اور طواف زیارت میں یا جج کا احرام باند سے اور جج کے تمام افعال بجالائے مگراس کے بعد سعی کرے اور اگر جج کا احرام باند سے کے بعد طواف قد وم کر لیا باند سے نے بعد کی بعد طواف قد وم کر لیا ہے داگر چہ اس کے لیے بیطواف مسنون نہ تھا) اور اس کے بعد سعی کر لی ہے تو اب طواف زیارت میں رَمَل نہیں ،خواہ طواف قد وم میں رَمَل کیا ہو یا نہیں اور طواف زیارت کے بعد اب سعی بھی نہیں ،عمرہ سے فارغ ہو کر حلق بھی ضروری نہیں ۔ اُسے یہ بھی اختیار ہے کہ ہر نہ مونڈ اسے بدستورم کم مرہے۔

یو ہیں مکہ معظّمہ ہی میں رہنا اُسے ضرور نہیں ، چاہے وہاں رہے یا طن کے سوا کہیں اور مگر جہاں رہے وہاں والے جہاں

سے احرام باندھتے ہیں ہی جی وہیں سے احرام باندھے ، اگر مکہ مکر مہ میں ہے تو یہباں والوں کی طرح احرام باندھے ۔ یہ اس صورت

سے باہر اور میقات کے اندر ہے تو جل میں احرام باندھے اور میقات سے بھی باہر ہوگیا تو میقات سے باندھے ۔ یہ اس صورت
میں ہے ، جب کہ کسی اور غرض سے حرم یا میقات سے باہر جانا ہواور اگر احرام باندھنے کے لیے حرم سے باہر گیا تو اُس پر دَم
واجب ہے مگر جب کہ وقوف سے پہلے مکہ میں آگیا تو ساقط ہوگیا اور مکہ معظّمہ میں رہا تو حرم میں احرام باندھے اور بہتر بہتر یہ کہ محظمہ میں ہواور اس سے بہتر یہ کہ مجرحرم میں ہواور سب سے بہتر یہ کہ طیم شریف میں ہو ۔ یو ہیں آٹھویں کو احرام باندھنا مخرور نہیں ، نویں کو بھی ہوسکتا ہے اور آٹھویں سے پہلے بھی بلکہ یہ افضل ہے ۔ تمتع کرنے والے پر واجب ہے کہ دسویں تاریخ کو شکر انہ میں قربانی کرے ، اس کے بعد سر مونڈ ائے ۔ اگر قربانی کی استطاعت نہ ہوتو اُسی طرح روزے رکھے جو قران والے کے شکر انہ میں قربانی کرے ، اس کے بعد سر مونڈ ائے ۔ اگر قربانی کی استطاعت نہ ہوتو اُسی طرح روزے رکھے جو قران والے کے بیں ۔ (2) (جو ہر ہ ، عالمگیری) ، درمختار)

^{1 &}quot;ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمنع، ج٣، ص ٦٤٣،٦٤٠.

^{2 &}quot;الحوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب التمتع، ص٢١٦_ ٢١٣.

و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع في القران و التمتع، ج١، ص٢٣٨_٢٣٩.

متع کابیان

عِيهِادِشِرنِيعَتْ رُصَةً مم (6)

اگر پیچے ہے ہا کئے ہے نہیں چاتا تو آگے ہے کھنچ اوراً مباندھ کرلے چلے اور کھنچ کرلے جانے ہے ہا نکناافضل ہے۔ ہاں

اگر پیچے ہے ہا کئے ہے نہیں چاتا تو آگے سے کھنچ اوراً س کے گلے میں ہارڈال دے کہ لوگ سمجھیں سے حم میں قربانی کوجا تا ہے،

اور ہارڈ النامجھول ڈالنے ہے بہتر ہے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ اس جانور کے کو ہان میں دہنی یابا ئیں جانب خفیف ساشگاف کردے

کہ گوشت تک نہ پہنچ، اب مکہ معظمہ میں بہنچ کر عمرہ کرے اور عمرہ سے فارغ ہو کر بھی مُحرم رہے جب تک قربانی نہ کرلے۔ اُسے

سرمونڈ انا جائز نہیں جب تک قربانی نہ کرلے ورنہ دَم لازم آئے گا پھروہ تمام افعال کرے جواس کے لیے بتائے گئے کہ جانور نہ

ر الما تھااور دسویں تاریخ کور می کر کے سرمونڈ ائے اب دونوں احرام ہے ایک ساتھ فارغ ہو گیا۔ ⁽¹⁾ (درمختار)

<u>مسئانی کی جوجانورلایااور جونه لایادونوں میں فرق یہ ہے کہا گرجانور نه لایااور عمرہ کے بعداحرام کھول ڈالااب قج کا</u> احرام باندھااورکوئی جنایت واقع ہوئی تو جرمانہ ثل مُفرد کے ہےاوروہ احرام باقی تھا تو جرمانہ قارِن کی مثل ہےاور جانور لایا ہے تو بہرحال قارِن کی مثل ہے۔⁽²⁾ (ردالحتار)

سَسَالُهُ ٥ ﴿ مِيقَاتِ كَاندروالول كَ لِي قِرَان وَمَعَ نهيں، اگركريں تو وَم ويں۔(3) (در فتار)

مَسْتَلَهُ لَ ﴾ جوجانورلایا ہے اُسے روزہ رکھنا کافی نہ ہوگا اگر چہنا دار ہو۔ (4) (درمختار)

سَسَعَانُ کُ ﴾ جانورنبیں لے گیااور عمرہ کر کے گھر چلاآیا توبی الماصحیح ہے اس کاتمتع جاتار ہا، اب جی کرے گاتو مُفرد ہے اور جانور لے گیا ہے اور عمرہ کر کے گھر واپس آیا پھر مُرِم رہااور جی کو گیا توبیہ الماصحیح نہیں، لہذا اس کاتمتع باقی ہے۔ یو ہیں اگر گھر نہ آیا عمرہ کر کے کہیں اور چلاگیا تو تمتع نہ گیا۔ (⁵⁾ (درمختار وغیرہ)

سَمَعُ اللهِ اللهُ اللهِ المُلْمُ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المُلْمُلِي المُلهِ اللهِ المُلْمُلِمُ اللهِ اللهِ المُلْمُلِلْمُلِلْمُلِلْمُلِلْم

مسکان استان کی ایک میخ کے لیے بیضرور نہیں کہ حج وعمرہ دونوں ایک ہی کی طرف سے ہوں بلکہ بیہ ہوسکتا ہے کہ ایک اپنی طرف

- الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٥٦٥.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص ٦٤٥.
- 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٦.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٨.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٨، وغيره.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص ٢٥٠.

161

سے ہواور دوسراکسی اور کی جانب سے یا ایک شخص نے اُسے آج کا حکم دیا اور دوسرے نے عمرہ کا اور دونوں نے تعقع کی اجازت دیدی تو کرسکتا ہے مگر قربانی خوداس کے ذمہ ہے اورا گرنا دارہے توروزے رکھے۔(1) (منسک)

مسئان الله جمره کی قضا کی اوراُسی سال جج کی مہینے میں عمرہ کیا گراُسے فاسد کردیا پھر گھر واپس گیا پھر آ کرعمرہ کی قضا کی اوراُسی سال جج کیا تو یہ تمتع ہو گیا اورا کر مکہ ہی میں رہ گیا یا مکہ سے چلا گیا مگر میقات کے اندرر ہایا میقات ہے بھی باہر ہو گیا مگر گھر نہ گیا اور آ کرعمرہ کی قضا کی اوراسی سال جج بھی کیا توان سب صورتوں میں تمتع نہ ہوا۔ (2) (جو ہرہ)

ا جُرم اور اُن کے کفاریے کا بیان

اللُّدعزوجل فرما تاہے:

﴿ يَا يُهَا الَّذِينَ امَنُوالا تَقْتُكُوا الصَّيْدَ وَ اَنْتُمُ حُورٌ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمُ مُتَعَبِّدًا فَجَزَآعُ مِّثُلُمُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَخْلُمُ بِهِ ذَوَاعَدُ لِ مِنَ النَّعَمُ هَدُيًّا اللَّهِ الْكَعْبَةِ اَوْكَفَّا اللَّهُ طَعَامُ مَسْكِيْنَ اَوْعَدُ لُ ذَلِكَ صِيَامًا لِيَنُ اَوْقَ وَ مَنْ اللَّهُ عَبِي اللَّهُ اللَّهُ عَلَيْكُمُ مَنْ اللَّهُ الْ

اے ایمان والو! احرام کی حالت میں شکار نہ کرواور جوتم میں سے قصداً جانور گوتل کرے گا توبدلہ دے مثل اُس جانور کے جوتل ہوا، تم میں کے جوتل ہوا، تم میں کے دو عادل جو علم کریں وہ بدلا قربانی ہوگی۔ جو کعبہ کو جائے یا کفارہ مسکین کا کھانا یا اس کے برابر روز ہے تاکہ اپنے کیے کا وبال چکھے۔ اللہ (عزبہل) نے اسے معاف فرما دیا، جو پیشتر ہو چکا اور جو پھر کرے گا تواللہ (عزبہل) اس سے بدلا لے گا اور اللہ (عزبہل) غالب بدلا لینے والا ہے۔ دریا کا شکار اور اس کا کھانا تمھارے لیے حلال کیا گیا، تمھارے اور مسافروں کے بریخ کے لیے اور خشکی کا شکار تم پر حرام ہے، جب تک تم مُحرم ہواور اللہ (عزبہل) سے ڈروجس کی طرف تم اُٹھائے جاؤگے۔ اور فرما تاہے:

﴿ فَمَنُ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا أَوْبِهَ إَذِي مِّنْ مَّ أُسِهِ فَفِدُيةٌ مِّنْ صِيَاهِ أَوْصَدَ قَقِ آوُنْسُكِ * ﴿ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا آوُبِهَ إَذَّى مِنْ مَا أُسِهِ فَفِدُيةٌ مِّنْ صِيَاهِ مَا وَصَدَ قَقِ آوُنْسُكِ * ﴾ (4)

❶ "المسلك المتقسط"، (باب التمتع، فصل ولايشترط الصحة التمتع إحرام العمرة من الميقات)، ص٢٨٦.

^{2 &}quot;الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب التمتع، ص١٦٦.

^{🍣 😘} ۷، المائده: ۹۰-۹۰. 🔻 ۲، البقره: ۱۹۲.

تصحیحین وغیر ہما میں کعب بن عجر ہ رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، کہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اُن کے پاس تشریف لائے اور بیٹر م تصاور ہانڈی کے پنچے آگ جلار ہے تصاور بُو کیس ان کے چہرے برگر رہی تھیں ، ارشا وفر مایا: کیا یہ کیٹر تے تعصیں تکلیف دے

تنعبيه: مُحرم اگر بالقصد بلاعُدْرجرم كرے تو كفاره بھى واجب ہے اور گنبگار بھى ہوا، لہٰذااس صورت ميں تو بہ واجب

کم مض کفارہ سے پاک نہ ہوگا جب تک تو بہ نہ کرے اور اگر نا دانستہ یا عذر سے ہے تو کفارہ کافی ہے۔ جرم میں کفارہ بہر حال لازم ہے، یا د سے ہو یا بھول چوک سے، اس کا جرم ہونا جانتا ہو یا معلوم نہ ہو، خوشی سے ہو یا مجبوراً، سوتے میں ہویا بیداری میں،

نشہ یا بے ہوشی میں یا ہوش میں ،اُس نے اپنے آپ کیا ہو یا دوسرے نے اُس کے حکم سے کیا۔

تعبید: اس بیان میں جہاں دَم کہیں گے اس سے مراد ایک بکری یا بھیڑ ہوگی اور بدنہ اونٹ یا گائے بیسب جانور انھیں شرائط کے ہوں جوقر بانی میں ہیں اور صدقہ سے مراد انگریزی روپے سے ایک سو پچھِتر روپے آٹھ آنہ بھر گیہوں کہ نتواروپے کے سیرسے یونے دوسیراٹھنی بھراویر ہوئے یااس کے دُونے جَو یا تھجوریاان کی قیمت۔

سکاٹ ایک جہاں دَم کا حکم ہے وہ جرم اگر بیاری یا سخت گرمی یا شدید مردی یا زخم یا پھوڑ ہے یا بُو وُں کی سخت ایذا کے باعث ہوگا تو اُسے بُر مِ غیرا ختیاری کہتے ہیں۔اس میں اختیار ہوگا کہ دَم کے بدلے چیمسکینوں کوایک ایک صدقہ دے دے یا دونوں وقت بیٹ بھر کھلائے یا تین روزے رکھ لے،اگر چیصد قے ایک مسکین کو دید بے یا تین یا سات مساکین پرتقسیم کردیے تو کفارہ اوانہ ہوگا بلکہ شرط بہ ہے کہ چیمسکینوں کو دے اور افضل بہ ہے کہ جرم کے مساکین ہوں اورا گراس میں صدقہ کا حکم ہے اور بست جب وری کیا تو اختیار ہوگا کہ صدقہ کے بدلے ایک روزہ رکھ لے۔کفارہ اس لیے ہے کہ بھول چوک سے یا سوتے میں یا مجبوری سے جرم ہوں تو کفارہ سے پاک ہوجا کیں، نہ اس لیے کہ جان ہو جھ کر بلا عذر بُرم کرواور کہو کہ کفارہ دیدیں گے، دینا تو جب بھی آئے گاگر قصداً حکم الٰہی کی مخالفت سخت ترہے۔

مسئلاً کی جہاں ایک دَم یاصد قدیدِ، قارِن پردوہیں۔(2) (عامہ کتب)

سَسَالَةُ اللهِ كَارِهِ كَيْ قَرِبِانِي يا قارِن وَمُتَعَ كَشكرانه كي غير حرم مين نهيں ہوسكتی۔غير حرم ميں كي توادانه ہوئي، ہاں جُرم

^{● &}quot;صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب جواز حلق الرأس ... إلخ، الحديث: ٨٣ ـ (١٢٠١)، ص٦١٨.

^{2 &}quot;الهداية"، كتاب الحج، باب الجنايات، فصل في جزاء الصيد، ج١، ص١٧١.

عیرا ختیاری میں اگراس کا گوشت جی^{م س}کینوں برتصدق کیااور ہر مسکین کوایک صدقہ کی قیمت کا پہنچا توادا ہو گیا۔⁽¹⁾ (عالمگیری) 🕯

سَسَعًا ﴾ ﴿ اللَّهُ اللَّهُ كَا مِن اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَني كوكھلائے،مساكين كودےاور كفارہ كى صرف محتاجوں كاحق ہے۔

مسئلہ کی ﷺ اگر کفارے کے روزے رکھے تواس میں شرط یہ ہے کہ رات سے یعنی منبح صادق سے پہلے نیت کر لے اور یہ بھی نیت کہ فُلاں کفارہ کا روز ہ ہے،مطلق روز ہ کی نیت یانفل یا کوئی اور نیت کی تو کفارہ ادا نہ ہوا اور بے دریے ہونا یا حرم میں یااحرام میں رکھناضرورنہیں۔⁽²⁾ (منسک)اباحکام <u>سن</u>یے:

(١) خوشبو اور تيل لگانا

سَسَانُ اللَّهِ ﴿ حَشِبُوا كُرِبِهِتِ مِن لِكَا فَي جِيرٍ وَكِيرَ لُوكَ بَهِتِ بَنا مَينِ الَّر حِيمَضُو حِيسِيمِ ، مونھ،ران، پنڈلی کو پوراسان دیااگر چہنوشبوتھوڑی ہے توان دونوں صورتوں میں دَم ہے اورا گرتھوڑی سی خوشبوعضو کے تھوڑے سے حصہ میں لگائی تو صدقہ ہے۔⁽³⁾(عالمگیری)

مَسَنَاكُ كَ ﴾ كپڑے یا بچھونے پرخوشبومكى توخودخوشبوكى مقدار دیکھى جائے گی، زیادہ ہے تو دَم اور كم ہے تو صدقه به ((عالمگیری)

سَنَا اللهُ اللهِ عَلَى اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اگرچهرُم کوخوشبوسونگھنا مکروہ ہے۔⁽⁵⁾ (ردالمحتار)

مستان و احرام سے پہلے بدن پرخوشبولگائی تھی ،احرام کے بعد پھیل کراوراعضا کو گی تو کفارہ نہیں۔(6) (روالحتار) مَسِنَا اللهُ اللهِ عَمْرِم نے دوسرے کے بدن پرخوشبولگائی مگراس طرح کداس کے ہاتھ وغیرہ کسی عضومیں خوشبونہ کی یااس کو سلا ہوا کپڑا بہنایا تو کچھ کفارہ نہیں مگر جب کہ مُرم کوخوشبولگائی پاسِلا ہوا کپڑا بہنایا تو گنہگار ہوااور جس کولگائی پا بہنایااس پر کفارہ

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١٠ ص ٢٤٤.
- 2 "المسلك المتقسط"،(باب في جزاء الجنايات و كفاراتها، فصل في احكام الصيام في باب الاحرام)، ص ١ ٤ ٣ ٤ .
 - الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص ٢٤٠ ـ ٢٤١.
 - ◘ "الفتاوي الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١٠ ص ٢٤١.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٥.
 - 🦛 🍪 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٣.

واجب ہے۔(1)(ردالختار)

سَسَانُ اللَّ اللَّهِ تَقُورُ ي سى خوشبوبدن كے متفرق حصول میں لگائی اگر جمع كرنے سے پورے بڑے عضو كى مقدار كو بہنچ جائے

تودَم ہےورنہ صدقہ اور زیادہ خوشبو متفرق جگدلگائی تو بہر حال دَم ہے۔(2) (روالحتار)

واجب اورکئی جلسوں میں لگائی تو ہر بار کے لیے الگ الگ کفارہ ہے،خواہ پہلی بار کا کفارہ دے کر دوسری بار لگائی یا ابھی کسی کا

کفاره نه دیا هو_⁽³⁾ (درمختار، ردامختار)

دے اور کم ہوتو صدقہ اور پھے نہیں تو کی جھنیں مثلاً سنگ اِسودشریف پرخوشبولی جاتی ہے اگر بحالت ِ احرام بوسہ لیتے میں بہت ی لگی تودَم دے اور تھوڑی می توصد قد ۔(4) (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ ﴿ ﴿ وَشِبودارسُ مدایک یا دوبارلگایا توصدقه دے،اس ہے زیادہ میں دَم اورجس سُر مدمیں خوشبونہ ہواُس

کے استعال میں حرج نہیں ، جب کہ بضر ورت ہواور بلاضرورت مکروہ ہ⁽⁵⁾ (منسک ، عالمگیری)

مست 🔏 ۱۵ 💨 - اگرخالص خوشبوجیسے مشک، زعفران، لونگ،الا یخی، دارچینی اتنی کھائی کہ موزھ کے اکثر حصہ میں لگ گئی تو

دَم ہے ورنہ صدقہ۔ (6) (ردالحتار)

مَسِيَّانُ اللَّهِ ﴿ كَا لَهُ مِن يَكِيِّهِ وقت خوشبويرٌ ي ما فنا هوگئي تو تجهنبين، ورندا گرخوشبو كے اجزازيادہ موں تو وہ خالص خوشبو کے علم میں ہے اور کھانازیادہ ہوتو کفارہ کی خونبیل مگرخوشبوآتی ہوتو مکروہ ہے۔(7) (عالمگیری، درمختار، ردالحتار)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٥٣، وغيره.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٤٥٦.
- 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٢٥٤.
- الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١٠ ص ٢٤١.
- 5 المرجع السابق . و"لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في الكحل المطيب)، ص ٤ ٦٣.
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٥.
 - "الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١٠ ص ٢٤١.
 - و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٦.

(ردامختاروغیره)

یں۔ <u>سب کا کا اس کا خیال رکھیں کہ احرام میں خوشبودار تمبا کو نہ کھا کیں کہ پتیوں میں تو ویسے ہی کچی</u>

خوشبوملائی جاتی ہے اور قوام میں بھی اکثر پکانے کے بعد مُشک وغیرہ ملاتے ہیں۔

مسئلہ وہ جمیرہ تمبا کونہ بینا بہتر ہے، کہاس میں خوشبوہوتی ہے مگر پیا تو کفارہ نہیں۔

مسئان 10 سر پرمنهدی کا پتلا خضاب کیا که بال نه چھے تو ایک دَم اور گاڑھی تھو پی که بال چھپ گئے اور چار پہر گزرے تو مرد پر دودَم اور چار پہر سے کم میں ایک دَم اور ایک صدقه اور عورت پر بہر حال ایک دم، چوتھائی سر چھنے کا بھی بہی تھم ہے اور چوتھائی سے کم میں صدقہ ہے اور سر پر وسمہ پتلا پتلا لگایا تو کچھ نہیں اور گاڑھا ہو تو مردکو کفارہ دینا ہوگا۔ (3) (جو ہرہ، عالمگیری)

مسئ ان ۱۳ کی اور میں منہدی لگائی جب بھی دَم واجب ہے، پوری بھیلی یا تلوے میں لگائی تو دَم دے، مرد ہویا عورت اور جاتھ یا وَل کے عورت اور جاتھ یا وَل ایک ہی دَم ہے، ورنہ ہرجلسہ پرایک دَم اور ہاتھ یا وَل کے کسی حصہ میں لگائی توصد قد ۔ (4) (جو ہرہ، روالحتار وغیر ہما)

- 🚹 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٢٥٤، وغيره.
- الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص ٢٤١.

و "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في تطييب الثوب... إلخ)، ص ٣٢١.

3 "الحوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الحنايات، ص٢١٧.

و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص ٢٤١.

4 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٢٥٤، وغيرهما.

© مسئلاً (عالمگیری) معلمی سے سریا داڑھی دھوئی تو دَم ہے۔ (1) (عالمگیری)

مسئالی ۲۴ کی استان کرد کان پرخوشبوسونگھنے کے لیے بیٹھا تو کراہت ہے در نہ حرج نہیں۔(²⁾ (عالمگیری)

مسئان کی اور یا تہبند کے کنارہ میں مشک بخبر، زعفران باندھااگر زیادہ ہے اور جار پہرگز رے تو دَم ہے اور کم ہے

توصدقه۔⁽³⁾(ردالمختار)

مَسَعًا الله الله الله الله الله على القصد يا بلا قصد هونا، ما دكركے يا بھولے سے ہونا، مجبوراً يا خوشى سے ہونا، مرد

وعورت دونوں کے لیےسب کا کیسال حکم ہے۔(4) (عالمگیری)

سَسَعَانَ ٢٥﴾ خوشبولگانا جب بُرم قرار پایا توبدن یا کپڑے سے دُور کرنا واجب ہے اور کفارہ دینے کے بعد زائل نہ کیا تو پھر دَم وغیرہ واجب ہوگا۔ (5) (عالمگیری)

سَسَعَانَ ٢٨﴾ خوشبولگانے سے بہر حال كفارہ واجب ہے، اگرچہ فوراً زائل كردى ہواورا گركوئى غير مُحرم ملے تواس سے دھلوائے اورا گرصرف يانى بہانے سے دُھل جائے تو يو ہيں كرے۔(6) (منسك)

روغن چمیلی وغیرہ خوشبودارتیل لگانے کاوہی تھم ہے جوخوشبواستعال کرنے میں تھا۔ (⁷⁾ (عالمگیری)

سَمَالُهُ الله اورزیتون کاتیل خوشبو کے علم میں ہا گرچہان میں خوشبونہ ہو، البتدان کے کھانے اور ناک میں

چڑھانے اور زخم پرلگانے اور کان میں ٹیکانے سے صدقہ واجب نہیں۔(8) (ردامختار)

مس<u>گانی اس ہے ۔</u> مشک،عنبر، زعفران وغیرہ جوخود ہی خوشبو ہیں،ان کےاستعال سے مطلقاً کفارہ لازم ہے اگر چہدواءً

-"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص ٢٤١.
- ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤٢.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٥٦.
- الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١٠ ص ٢٤١.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص ٢٤٢-٢٤٢.
- 6 "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (كتاب الحج، باب الجنايات، فصل لا يشترط بقاء الطيب)، ص٩ ٦٩.
 - ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص ٢٤.
 - 8 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٥٥.

🍣 استعال کیا ہو، بیاس صورت میں ہے جب کہان کوخالص استعال کریں اورا گر دوسری چیز جوخوشبو دار نہ ہو،اس کے ساتھ ملا کر

استعال کیا توغالب کاعتبار ہے اور دوسری چیز میں ملا کر پکالیا ہوتو کیچھنہیں۔(1) (درمختار)

سَسَالُ الله ﴿ وَمِهِ الله عَلاجَ الله وواسه كياجس مين خوشبوب پھر دوسرا زخم ہوا، اس كاعلاج بہلے كے ساتھ كيا توجب تک پہلااحیھانہ ہواس دوسرے کی وجہ ہے کفارہ نہیں اور پہلے کے اچھے ہونے کے بعد بھی دوسرے میں وہ خوشبودار دوالگائی تو دو

کفارے واجب ہیں۔⁽²⁾(عالمگیری)

ڈالا ۔ ⁽³⁾ (منیک، عالمگیری)

مَسَعَانُ اللهِ عَلَى اللهِ عَفِرانِ كارنگا ہوا كپڑا جار پہر پہنا تو دَم دےاوراس ہے كم تو صدقه ، اگر چەفوراً أتار

(۲) سلے کپڑیے پھننا

مستان کے استعالی کے اور پہراہ کا میں ایکٹر اجار پہراہ کا مل پہنا تو دَم واجب ہے اوراس سے کم توصد قدا گرچہ تھوڑی دیر پہنا اور لگا تارکئی دن تک پہنے رہاجب بھی ایک ہی ۃ م واجب ہے، جب کہ بیرلگا تار پہنناایک طرح کا ہولیتیٰ غذرہے یا بلاعذراورا گرمثلاً ا یک دن بلاعذر تھا، دوسرے دن بعذریا بالعکس تو دو کفارے واجب ہوں گے۔⁽⁵⁾ (عالمگیری وغیرہ)

سَسَعَانُ کی ایک اگرون میں پہنارات میں گرمی کے سبب اُ تارڈالا پارات میں سردی کی وجہ سے پہناون میں اُ تارڈالا ، باز آنے کی نیت سے نہ اُتارا تو ایک کفارہ ہے اور تو ہر کی نیت ہے اُتارا تو ہر بار میں نیا کفارہ واجب ہوگا۔ یو ہیں کس ایک دن کُرتا پہنا تھااوراُ تارڈالا پھر یاجامہ پہنا اُسے بھی اُ تار کرٹو بی پہنی تو بیسب ایک ہی پہننا ہے اورا گرایک دن ایک پہنا دوسرے دن دوسرا تو دو کفارے واجب ہیں۔ (⁶⁾ (عالمگیری، درمختار)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٦.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص ٢٤١.
- ③ "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في تطيب الثوب اذا كان الطيب في ثوبه شبراً في شبر)، ص ٣٢٠.
- **ہ**..... حیار پہر سے مرادا یک دن یا ایک رات کی مقدار ہے ،مثلاً طلوع آ فتاب سے غروب آ فتاب یا غروب آ فتاب بیا دو پہر
 - سے آوهی رات یا آوهی رات سے دو پهرتک _ (حاشیه " انور البشارة". "الفتاوی الرضویة "، ج ۱۰، ص ۷۵۷).
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢، وغيره.
 - 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.
 - و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحنايات، ج٣، ص٥٥٦.

رہی اور بیاری ہے سبب پہنا تو جب تک وہ بیاری رہے گی ایک ہی جرم ہے اور بیاری یقیناً جاتی رہی اور نہ اُ تارا تو ا ید دوسرا جرم اختیاری ہے اور اگروہ بیاری یقیناً جاتی رہی مگر دوسری بیاری معاً شروع ہوگئی اور اُس میں بھی پہننے کی ضرورت ہے جب بھی پیدوسرا جرم غیراختیاری ہے۔ (1) (درمختار،ردالحتار)

مستانی کی جہاتھ بخارآ تاہے اورجس دن بخارآ یا کیڑے پہن لیے، دوسرے دن اُ تارڈالے تیسرے دن پھر

یہنے، توجب تک ریب بخارآئے ایک ہی جرم ہے۔ (2) (منسک)

مَسِيّاتُ ۵ ﷺ اگرسلا کیڑا یہنا اوراس کا کفارہ ادا کردیا مگراُ تارانہیں، دوسرے دن بھی پہنے ہی رہا تو اب دوسرا کفارہ واجب ہے۔ یو بیں اگراحرام باندھتے وقت سلا ہوا کیڑانہ اُتارا تویی جُرم ہے۔(3)(عالمگیری، درمختار)

مستان کی خرورت ہوئی توایک ہی جُرم غیراختیاری ہے اور بلاغذرسب کیڑے بہنے تو ایک جُرم اختیاری ہے یعنی چار پہریہنے تو دونوں صورتوں میں دَم ہے اوراس سے کم میں صدقہ اورا گرضرورت ایک کیڑے کی تھی اُس نے دو پہنے تو اگر اسی موضع ضرورت پر دوسرا بھی پہنا تو ایک کفارہ ہے اور گنہ گار ہوا۔ مثلًا ا کیٹ کرتے کی ضرورت تھی ، دو پہن لیے یا ٹوپی کی ضرورت تھی عمامہ بھی باندھ لیا اور اگر دوسرا کپڑااس جگہ کے سوادوسری جگہ یہنا مثلاً ضرورت صرف عمامہ کی ہے اُس نے گرتا بھی پہن لیا تو دوجرم ہیں، عمامہ کا غیراختیاری اور کرتے کا اختیاری ۔خلاصہ یہ کہ موضع ضرورت میں زیادتی کی توایک بُرم ہےاورموضع ضرورت کےعلاوہ اورجگہ بھی پہنا تو دو۔ (4) (عالمگیری وغیرہ)

مسئلہ کی 🐣 بغیر ضرورت سب کپڑے ایک ساتھ پہن لیے تو ایک جرم ہے، دوجرم اس وقت ہیں کہ ایک بضر ورت ہو دوسرایے ضرورت به ⁽⁵⁾ (منسک)

مَسِعًا ﴾ ﴿ ﴿ وَثَمْنَ كَي وجِهِ سِے كِبِرْ بِي بِيغٍ ، تبخصيار باندھے اوروہ بھا گااس نے اُتارڈالےوہ پھرآ گیا،اس نے پھر پہنے تو پیرا یک ہی جُرم ہے۔ یو ہیں دن میں دشمن ہے لڑنا پڑتا ہے بیدن میں ہتھیار باندھ لیتا ہے رات میں اُتار ڈالتا ہے تو یہ ہرروز کا

- 1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٨.
- 2 "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط في المنسك المتوسط"، (باب الجنايات)، ص٣٠٣.
- € "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢. و "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٥٨.
- ◘..... "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٧٤٢_٢٤٣، وغيره.
 - 5 "لباب المناسك" ، (باب الجنايات)، ص ٣٠٢ ـ ٣٠٣.

پیش باندهناایک بی برم ہے جب تک عُدر باتی ہے۔(1)(عالمگیری)

مستان و کی جہ مُرم نے دوسرے مُرم کوسِلا ہوایا خوشبودار کیڑا پہنایا تواس پہنانے والے پر پچھنہیں۔⁽²⁾ (عالمگیری)

چھیانے میں وَم ہے اور کم میں صدقہ اور چہارم سے کم کو چار پہرتک چھیایا تو صدقہ ہے اور چار پہر سے کم میں کفارہ نہیں مگر گناہ

ہے۔⁽³⁾(عالمگیری وغیرہ)

سَتَانُ اللَّهِ مُحِرم نے سریر کیڑے کی گھری رکھی تو کفارہ ہے اور غلہ کی گھری یا تنحتہ یا لگن وغیرہ کوئی برتن رکھ لیا تونہیں اور اگرسر برمٹی تھوپ کی تو کفارہ ہے۔(4) (عالمگیری،منیک)

سلا ہوا کیڑا ایمنے میں پیشر طنہیں کہ قصداً پہنے بلکہ بھول کر ہو یا نادانی میں بہر حال وہی حکم ہے۔ یو ہیں سراور موزه چھپانے میں، یہاں تک کورم نے سوتے میں سریاموزه چھپالیا تو کفارہ واجب ہے۔(5) (عالمگیری)

مستانہ سی کہ کان اور گدی کے چھیانے میں حرج نہیں ۔ یو ہیں ناک برخالی ہاتھ رکھنے میں اورا گر ہاتھ میں کپڑا ہے اور كير يسميت ناك برباته ركها تو كفاره نبيل مكر مكروه وكناه بي-(6) (در مقار، روالحتار)

یا جامه کوتهبند کی طرح لپیٹا یا وُں پائنچے میں نہ ڈالے تو کیچینیں۔ یو ہیںانگر کھا پھیلا کر دونوں شانوں پرر کھالیا،آستیوں میں ہاتھ نہ ڈ الے تو کفارہ نہیں مگر مکروہ ہے اور مونڈھوں پر سلے کیڑے ڈال لیے تو سیجھنیں۔(7) (درمختار، ردامحتار، عالمگیری)

مستان ۱۵ ایس جوتے نہ ہوں تو موز کے وہاں سے کاٹ کر پہنے جہاں عربی جوتے کا تسمہ ہوتا ہے اور بغیر کاٹے ہوئے

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٣.
- "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١٠ ص٢٤٢.
- € "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢، وغيره.
 - 4 المرجع السابق . و"لباب المناسك" و " المسلك المتقسط"، (باب الجنايات)، ص٣٠٨.
 - 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.
 - 6 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٩٥٦.
 - **1**-.... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٦.
 - و "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.

🗲 جرم اوران کے کفارے کا بیان 🖔

ဳ پہن لیا تو پورے چار پہر پہننے میں دَم ہے اور اس سے کم میں صدقہ اور جوتے موجود ہوں تو موزے کا ہے کر پہننا جائز نہیں کہ مال كوضائع كرناہے پھر بھى اگرابيا كيا تو كفارة نہيں۔(1) (منسك)

یہاں سے بیجی معلوم ہوا کہ احرام میں انگریزی جوتے پہننا جائز نہیں کہ وہ اُس جوڑکو چھیاتے ہیں، پہنے گا تو کفارہ لازم آئےگا۔

(٣) بال دُور کرنا

مستان کے ایس یا داڑھی کے چہارم بال یازیادہ کسی طرح دُور کیے تو دَم ہے اور کم میں صدقہ اورا گر چندلا ہے یا داڑھی میں کم بال ہیں، تواگر چوتھائی کی مقدار ہیں تو گل میں دَم ورنہ صدقہ۔ چند جگہ ہے تھوڑ ہے تھوڑ ہے بال لیے تو سب کامجموعہ اگر چہارم کو پنچتا ہے تو دَم ہے ورنه صدقه _(2) (عالمگیری، ردالحتار)

مستان کی ایس ایری گردن یا پوری ایک بغل میں دَم ہے اور کم میں صدقہ اگر چہ نصف یا زیادہ ہو۔ یہی حکم زیر ناف کا ہے۔ دونوں بغلیں پوری مونڈائے، جب بھی ایک ہی دَم ہے۔⁽³⁾ (درمختار، رداکحتار)

مست ان سیار سی اسر چند جلسول میں مونڈ ایا، توایک ہی وَ م واجب ہے مگر جب کہ یہلے کچھ حصہ مونڈ اکراس کا کفارہ ادا کردیا پھر دوسر ہے جلسہ میں مونڈ ایا تواب نیا کفارہ دینا ہوگا۔ یو ہیں دونوں بغلیں دوجلسوں میں مونڈ ائیں توایک ہی کفارہ ہے۔ (درمختار،ردالحتار)

مرمونڈ ایا اور دَم دیدیا پھراسی جلسہ میں داڑھی مونڈ انی تواب دوسرا دَم دے۔ (⁵⁾ (عالمگیری) سیکا کہ کی 🐣 سراور داڑھی اور بغلیں اور سارے بدن کے بال ایک ہی جلسہ میں مونڈائے تو ایک ہی کفارہ ہے اوراگر ایک ایک عضو کے ایک ایک جلسه میں تواتنے ہی کفارے _(6)(عالمگیری)

- "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في لبس الخفين)، ص٩ -٣٠ . ٣١.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٩.
 - 3 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٩ م.
 - 4"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٥٦ ـ ٦٦١.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج ١، ص ٢٤٣.
 - 🧟 🌀 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج ١، ص ٢٤٣.

ہے۔۔۔ گُرِی اللہ کا اور داڑھی اور گردن اور بغل اور زیرِ ناف کے سوابا تی اعضا کے مونڈانے میں صرف صدقہ ہے۔ ⁽¹⁾ کر بر

مستان کی اگرچہ پوری مونڈائ یا کتروائے صدقہ ہے۔(2) (ردامختار)

مَسِعَانَ ﴾ ووٹی پکانے میں کچھ بال جل گئے تو صدقہ ہے، وضوکرنے یا تھجانے یا کنگھا کرنے میں بال گرے،اس پر

بھی پوراصدقہ ہےاوربعض نے کہادوتین بال تک ہر بال کے لیےائیک ٹھی ناج یاا کیے ٹکڑاروٹی یاا کیے چھو ہارا۔⁽³⁾ (عالمگیری، ردالمختار)

مسئان ال علی عیر محرِم نے محرِم کا سرمونڈا اُس کے حکم سے یا بلاحکم تو مُحرِم پر کفارہ ہے اورمونڈ نے والے پرصدقہ اوروہ مُحرِم اس مونڈ نے والے سے اپنے کفارہ کا تاوان نہیں لے سکتا اور اگر مُحرِم نے غیر کی مونچیس لیس یا ناخن تر اشے تو مساکین کو پچھ صدقہ کھلا دے۔ (6) (عالمگیری)

مسئلہ اللہ مونڈ نا، کتر نا، موچنے سے لینایائسی چیز سے بال اُوڑ انا، سب کا ایک تکم ہے۔ (7) (روالمحتار وغیرہ) مسئلہ اللہ عورت پورے یا چہارم سرکے بال ایک پورے برابر کترے تو دّم دے اور کم میں صدفہ۔(8) (منسک)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٢٠٠.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ص٦٦٩.
- 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٣.
 - و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحنايات، ص ٦٧٠.
 - 4 "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في سقوط الشعر)، ص٣٢٨.
- آس.... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٣.
- الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١٠ ص٢٤٣.
 - 7 "ردالمحتار" ، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٦، وغيره.
- الباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في حكم التقصير)، ص٣٢٧.

المُستَعَلَيْهُ ١٦﴾ بال مونڈا کر تجھنے لیے تو دَم ہے ور نہ صدقہ۔ (۱) (در مختار)

مَسِعَالُهُ 10 ﴾ آنکھ میں بال فکل آئے تو اُن کے اوکھاڑنے میں صدقہ نہیں۔(2) (منسک)

🐉 ناخن کترنا

ایک ہاتھ ایک ہاتھ ایک ہاتھ ایک پاؤں کے پانچوں ناخن کترے یا بیبوں ایک ساتھ تو ایک دَم ہے اور اگر کسی ہاتھ یا پاؤں کے پورے پانچ نہ کترے تو ہر ناخن پر ایک صدقہ ، یہاں تک کہ اگر چاروں ہاتھ پاؤں کے چار چار کترے تو سولہ صدقے دے گریہ کہ صدقوں کی قیمت ایک دَم کے برابر ہوجائے تو پھی کم کرلے یا دَم دے اور اگر ایک ہاتھ یا پاؤں کے پانچوں ایک وسرے جاسہ میں کترے تو دو دَم لازم ہیں اور چاروں ہاتھ پاؤں کے چار جاسوں میں تو چاردہ میں اور دوسرے کے پانچوں دوسرے جاسہ میں کترے تو دو دَم لازم ہیں اور چاروں ہاتھ پاؤں کے چار جاسوں میں تو چاردہ میں تو چاردہ کی ایک کا کہ کا دوسرے جاسہ میں کترے تو دو دَم لازم ہیں اور چاردی کے پانچوں دوسرے جاسہ میں کترے تو دو دَم لازم ہیں اور چاروں ہاتھ پاؤں کے چار جاسوں میں تو چاردہ کی دوسرے جاسہ میں کترے تو دو دَم لازم ہیں اور چاردی ہونے کے بار کیں کترے کو دو دَم لازم ہیں اور چاردی کی جاسوں میں تو چاردی کی دوسرے جاسہ کیں تو چاردی کی دوسرے جاسوں میں تو چاردی کی دوسرے کا دوسرے کی دوسرے جاسہ کی دوسرے کا دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے جاسہ میں کترے کو دو دو دو کہ کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کر کے دوسرے کی دوسرے کر کے دوسرے کی دوسرے کر دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کی دوسرے کر دوسرے کی دوسرے کی

مستان کوئی ناخن ٹوٹ گیا کہ بڑھنے کے قابل ندر ہا،اس کا بقیداً سے کاٹ لیا تو پھی ہیں۔(4) (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ ایک ہی جلسہ میں ایک ہاتھ کے پانچوں ناخن تراشے اور چہارم سرمونڈ ایا اور کسی عضو پرخوشبولگائی تو ہرایک

پرایک ایک دَم یعنی تین دَم واجب ہیں۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

مستان کی گئی نے دوسرے کے ناخن تراشے تو وہی تھم ہے جود وسرے کے بال مونڈ نے کا ہے۔ (6) (منسک)

مسکان کے جاتواور ناخن گیرہے تراشنااور دانت ہے کھٹکناسب کا ایک حکم ہے۔

(٥) بوس و کنار وغیره

مَسِيَّالُمُ اللَّهِ مِباشرت فاحشہ اورشہوت کے ساتھ بوس و کنار اور بدن مُس کرنے میں دَم ہے، اگر چہ انزال نہ ہواور

- 1 "الدرالمختار" ، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٩٥٦.
- 2 "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في سقوط الشعر)، ص٣٢٨.
- € "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٤.
 - 4 المرجع السابق.
 - 5 المرجع السابق.
 - ٣٣٢.... "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في قلم الاظفار)، ص٣٣٢.

" بلاشہوت میں کیج نہیں۔ بیا فعال عورت کے ساتھ ہوں یا امرد کے ساتھ دونوں کا ایک حکم ہے۔ ⁽¹⁾ (درمختار، ردالمحتار)

<u> مسئالہ کا ہے ۔</u> مرد کے ان افعال سے عورت کولذت آئے تو وہ بھی دَم دے۔ ⁽²⁾ (جو ہرہ)

ے۔(3)(عالمگیری،ردالحتار)

مَسِيَّا لَيْ اللَّهِ عِلْقِ (4) سے انزال ہوجائے تو دَم ہے در نہ مکر وہ اوراحتلام سے کچھ نہیں۔ (5) (عالمگیری)

(۲) جماع

مسئلی اسکی قضا کر لے عورت بھی احرام کج میں تقی تو اس پھی یہی لازم ہے اور اگر اس بلا میں پھر پڑجانے کا خوف ہو تو میں اس کی قضا کر لے عورت بھی احرام حج میں تھی تو اس پڑھی یہی لازم ہے اور اگر اس بلا میں پھر پڑجانے کا خوف ہو تو مناسب ہے کہ قضا کے احرام سے ختم تک دونوں ایسے جدار ہیں کہ ایک دوسرے کوندد کیھے۔(6) (عالمگیری)

مستان کا جوز قوف کے بعد جماع سے جج تو نہ جائے گا مگر حلق وطواف سے پہلے کیا توبد نہ دے اور حلق کے بعد تو دَم اور

بہتراب بھی بدنہ ہےاور دونوں کے بعد کیا تو کچھنیں۔طواف سے مُرادا کثر ہے یعنی چار پھیرے۔⁽⁷⁾ (عالمگیری)

<u>سَنَالُهُ اللَّهِ</u> قصداً جماع ہو یا بھولے سے یاسوتے میں یااکراہ کے ساتھ سب کا ایک حکم ہے۔ (8) (عالمگیری)

مَسَعَلَهُ ﴾ وقوف سے پہلے عورت سے ایسے بچہ نے وطی کی جس کا مثل جماع کرتا ہے یا مجنون نے تو حج فاسد ہوجائے

گا۔ یو ہیں مرد نے مشتہاۃ لڑکی یا مجنونہ سے وطی کی حج فاسد ہوگیا مگر بچہ اور مجنون پر نہ دَم واجب ہے، نہ قضا۔ (9)

- "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحنايات، ج٣، ص٦٦٧.
 - 2 "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج، ص، ٢٢٠.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٤٤٢.
 - 4 يعنى مشت زني _
- الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٤٤٢.
- 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٤٤٠.
 - 7 المرجع السابق ص ٢٤٥.
- 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٤٤٦.
 - 🤿 🧐 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٢.

(ورمختار،ردالحتار) (

مسئان کی ۔ وقوف عرفہ سے پہلے چند بار جماع کیاا گرایک ہی مجلس میں ہے توایک وَم واجب ہے اور دومخلف مجلسوں میں تو دووَم اورا گردوسری باراحرام توڑنے کے قصد سے جماع کیا تو بہر حال ایک ہی وَم واجب ہے، چاہے ایک ہی مجلس میں

ہویا متعدد میں _⁽¹⁾(عالمگیری)

مسئل کی اگرایک جلس میں ہے تو ایک بدنہ اور وہری بار احرام توڑنے کے ارادہ سے جماع کیا تو اس بار کچھ نہیں۔ (2) میں ہے تو ایک بدنہ اور ایک دَم اور اگر دوسری بار احرام توڑنے کے ارادہ سے جماع کیا تو اس بار کچھ نہیں۔ (2) (عالمگیری، دوالمحتار)

سَعَالُهُ كَا الزال ہو یانہیں مگر انزال ہوا تو وَم فاسدنہ ہوگا، انزال ہو یانہیں مگر انزال ہوا تو وَم لازم۔(3) (ردالمختار)

سَمَعَالَهُ ﴾ عورت نے جانور سے وطی کرائی یا کسی آ دمی یا جانور کا کٹا ہوا آلہ اندرر کھ لیا جج فاسد ہو گیا۔ (4) (در مختار) ردالحتار)

مَسَعَلَیْ وَ ﴾ عمرہ میں جار پھیرے ہے قبل جماع کیا عمرہ جا تار ہا، دَم دےاور عمرہ کی قضا اور جار پھیروں کے بعد کیا تو دَم دے عمرہ صحیح ہے۔ ⁽⁵⁾ (درمختار)

مَسْتَانُ وَاللّٰهِ عَمْره کرنے والے نے چند بار متعدد مجلس میں جماع کیا تو ہر باردَ م واجب اور طواف وسعی کے بعد حلق سے پہلے کیا جب بھی دَ م واجب ہے اور حلق کے بعد تو کیجھ ہیں۔ (⁶⁾ (عالمگیری)

مَسْنَاكُ اللَّهِ ﴿ قِرَانِ وَالْمُهِ مِنْ عَمْرُهُ كُولُونَ سِي بِهِلَّى جَمَاعٌ كِيا تَوْجِجُ وَعَمْرِهُ دُونُونَ فَاسْدَمَّرُ دُونُونَ كَيْمَامُ افعالُ بَعِلْمُ عَمْرُهُ كُونُونَ عَمْرُهُ كُلُونُونَ عَلَى اللَّهُ عَمْرُهُ كُلُونُونَ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَمْرُهُ عَلَيْهُ اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَيْ عَلَيْهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَعَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ وَعَلَيْهُ كُلُونُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَعَلَيْهُ وَعَلَيْهُ وَعَلَيْهُ عَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ وَلَا عَلَيْكُونُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَعَلَى اللَّهُ عَلَيْهُ وَعَلَى اللَّهُ عَلَيْكُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ وَعَلَيْكُ اللَّهُ عَلَيْهُ وَعَلِي عَلَيْكُ وَلِي اللَّاكُ وَمِنْ عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُ وَلَا عَلَاكُ عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُ وَلِي اللَّهُ عَلَيْكُونُ وَمِنْ عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ وَمِنْ عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُمُ وَمِنْ عَلَى عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُ عَلَيْكُ وَلِمُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ وَلِي عَلَيْكُ عِلْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُونُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عِلْكُ عَلَيْكُ عَلَّا عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْ

- 1 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٥٢٠.
 - المرجع السابق.و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٥.
 - 3 "الدرالمختار" ، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٢٧٢.
 - 4 "الدر المختار" و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٣.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٦.
- 6 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٥٥٦.

اورایک دَم دےاوران کےعلاوہ قران کی قربانی۔⁽¹⁾ (منسک)

مَسِعًا ﴾ آپ جماع سے احرام نہیں جاتا وہ بدستور مُرم ہے اور جوچیزیں مُرم کے لیے ناجائز ہیں وہ اب بھی ناجائز ہیں اور وهی سب احکام بین_⁽²⁾ (روالحتار)

فاسدكرديا،اس تركيب سے سال آئنده كي قضائين الله سكتا_(3) (روالحتار)

(۷) طواف میں غلطیاں

مستان السبال طواف فرض كل يا كثر يعني حيار پھيرے جنابت يا حيض ونفاس ميں كيا تو بدند ہے اور بے وضوكيا تو وَم اور بہای صورت میں طہارت کے ساتھ اعادہ واجب،اگر مکہ سے چلا گیا ہو تو واپس آ کراعادہ کرےاگر چہ میقات سے بھی آ گے بڑھ گیا ہوگر بارھویں تاریخ تک اگر کامل طور پراعادہ کرلیا تو جرمانہ ساقط اور ب**ارھویں کے بعد کیا تو دم لازم، بدنہ ساقط** الہذا اگر طواف ِفرض بارھویں کے بعد کیا ہے تو دم ⁽⁴⁾ ساقط نہ ہوگا کہ بارھویں تو گزرگئی اورا گرطواف ِفرض بے وضو کیا تھا تواعادہ مستحب پھراعادہ سے دّم ساقط ہو گیا اگر چہ بارھویں کے بعد کیا ہو۔⁽⁵⁾ (جوہرہ، عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ ٢ ﴾ حیار پھیرے سے کم بےطہارت کیا تو ہر پھیرے کے بدلے ایک صدقہ اور جنابت میں کیا تو دَم پھراگر بارھویں تک اعادہ کرلیا تو ذم ساقط اور بارھویں کے بعد اعادہ کیا تو ہر پھیرے کے بدلے ایک صدقہ ۔(6) (عالمگیری)

- 1 "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات)، ص٣٣٨.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٣.
 - 3 المرجع السابق.
- ♣ بہارشریعت کے نتخوں میں اس جگہ "دم" کے بجائے" بَدُنہ" کھا ہے، جو کتابت کی خلطی ہے کیونکہ "طواف فرض بارھویں کے بعد کمیا تو۔ بدنہ ما قط موجائے گا' ،اییا ہی فاوی عالمگیری میں ہے،اس وجہ ہے ہم نے لفظ' وم' کردیا ہے۔لہذا جن کے پاس بہارشریعت کے دیگر نسخے ہیںان کو چاہیے کہ لفظ''بدنہ'' کوقلم زوکر کےاس جگہ پر لفظ'' دم'' ککھ لیں۔
 - 5 "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج، ص ٢٢١.
 - و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١٠ص٥٠٠.
 - 🥱 🔞 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٦.

کست کی سات کی سے طواف فرض کل یا اکثر بلاغذر چل کرنہ کیا بلکہ سواری پر یا گود میں یا گھسٹ کریا ہے ستر کیا مثلاً عورت کی جہارم کلائی یا جہارم سر کے بال کھلے تھے یا اُلٹا طواف کیا یا حطیم کے اندر سے طواف میں گز را یا بارھویں کے بعد کیا تو ان سب صورتوں میں دَم دےاورصحح طور پراعادہ کرلیا تو دَم ساقط اور بغیراعادہ کیے چلا آیا تو بکری یا اُس کی قیمت بھیج دے کہرم میں ذبح

کردی جائے ، واپس آنے کی ضرورت نہیں ۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری ،ردالمختار)

مَسَعًا ﴾ ﴿ جنابت میں طواف کر کے گھر چلا گیا تو پھر سے نیااحرام باندھ کرواپس آئے اورواپس نہ آیا بلکہ بدنہ بھیجے دیا تو بھی کافی ہے مگر افضل واپس آنا ہے اور بے وضو کیا تھا تو واپس آنا بھی جائز ہے اور بہتریہ کہ وہیں سے بکری یا قیمت بھیجے د___(عالمگیری)

مَسِيَّاكُمْ ﴾ طواف ِفرض جار پھيرے كركے چلا گيا يعني تين يا دوياايك پھيرا باقى ہے تو دَم واجب،اگرخود نه آيا بھيج ديا تو کافی ہے۔⁽³⁾(عالمگیری)

مَسِيَّاكُو اللَّهِ ﴿ فَرْضَ كِيهِ الْوَلُولُ اورطواف كُلُّ مِا اكثر جنابت ميں كيا تو دَم دےاور بے وضوكيا تو صدقه اور تين پچيرے ا یااس سے کم جنابت میں کیے تو ہر پھیرے کے بدلے ایک صدقہ پھرا گر مکہ معظمہ میں ہے توسب صورتوں میں اعادہ کرلے، کفارہ ساقط ہوجائے گا۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

مَسَعَلُهُ كُن اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ مَرْكُ كِيا تُودَم لازم اور جاري هيرول سے كم چھوڑا تو ہر پھيرے كے بدلے ميں ایک صدقه اورطوان فید وم ترک کیا تو کفاره نہیں مگر بُرا کیا اورطواف عمره کا ایک پھیرا بھی ترک کرے گا تو دَم لازم ہوگا اور بالکل نه کیایا اکثرترک کیا تو کفار خہیں بلکه اُس کا اوا کرنالازم ہے۔ (5) (منسک)

مَسِيًّا ﴾ ﴾ قارن نےطواف قد وم وطواف عمرہ دونوں بے وضو کیے تو دسویں سے پہلے طواف عمرہ کااعادہ کرےاور اگراعادہ نہ کیا یہاں تک کہ دسویں تاریخ کی فجر طلوع ہوگئی تو دَم واجب اور طواف فرض میں رَمُل وسعی کرلے۔ (6) (منسک)

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٧٤٧.
 - و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٢.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص ٥٤ ٢٠٦٤.
 - 3 المرجع السابق. 4المرجع السابق.
- "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في الجناية في طواف الصدر)، ص ٣٥٣_٣٥٠.
 - 🚙 6 المرجع السابق، ص٣٥٣.

ﷺ مسئل و ﷺ عنجس کیڑوں میں طواف مکروہ ہے کفار نہیں۔⁽¹⁾ (عالمگیری وغیرہ)

مَسِيًّا إِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَى عَلَى كَمَا تَعَا اور بارهو بن تك اس كا اعاده بهي نه كيا، اب تيرهو بن كوطواف رُخصت

باطہارت کیا تو پہطواف رخصت طواف فرض کے قائم مقام ہو جائے گا اورطواف رُخصت کے چھوڑنے اورطواف فرض میں دہر کرنے کی وجہ سے اس پر دودَ م لازم اورا گربارھویں کوطواف رخصت کیا ہے توبیطواف فرض کے قائم مقام ہوگا اور چونکہ طواف رخصت نه کیا، لهٰذاایک دَم لازم اورا گرطواف ِرُخصت دوباره کرلیا توبید َ مجھی ساقط ہو گیااورا گرطواف ِفرض بے دضو کیا تھااور بیہ

باوضوتوا یک دَم اورا گرطوا ف ِفرض بے وضو کیا تھاا ورطوا ف ِرُخصت جنابت میں تو دو دَم _ ⁽²⁾ (عالمگیری) ،

مَسِيَّاكُ اللَّهِ ﴿ طُوافِ فِرضَ كِيتِن بَهِيرِ عِي اورطواف ِرُخصت يورا كيا تواس ميں كے حاربهيرےاس ميں محسوب ہو جا کیں گے اور دووَ ملازم، ایک طواف ِفرض میں در کرنے ، دوسرا طواف ِرُخصت کے جاریچھیرے چھوڑنے کا۔اورا کر ہرایک کے تین تین پھیرے کیے تو کل فرض میں شار ہوں گےاور دود ّ مواجب ⁽³⁾ (عالمگیری)اس مسّلہ میں فروع کثیرہ ہیں بخو ف ِ تطومل ذکرنہ کیے۔

(۸) سعی میں غلطیاں

<u>مسگان کی ایک</u> سعی کے چار پھیرے یازیادہ ملاعذر چھوڑ دیے یا سواری پر کیے تو دَم دےاور حج ہو گیا اور چارسے کم میں ہر پھیرے کے بدلےصد قہ اوراعادہ کرلیا تو ؤم وصد قہ ساقط اورعذر کےسب ابیا ہوا تو معاف ہے۔ یہی ہر واجب کاھلم ہے کہ عذر سیج سے ترک کرسکتا ہے۔(4) (عالمگیری،ردالحتار)

> مستان سی جنابت میں یا بے وضوطواف کر کے سعی کی توسعی کے اعادہ کی حاجت نہیں۔(6) (درمختار)

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٦، وغيره.
 - 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٦.
 - المرجع السابق.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٧٤٧. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٥٦٦.
 - الدرالمختار" كتاب الحج، باب في السعى بين الصفا والمروة، ج٣، ص٨٧٥.
 - 💣 🌀 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦١.

<u> مسئالہ کی اور اور میں امرام یا زمانہ جج شرطنہیں، نہ کی ہوتو جب جا ہے کر لےادا ہوجائے گی۔ (1) (جو ہرہ)</u>

(٩) وقوف عرفه میں غلطی

سَسَعَانُ اللّٰ جَوْخُصُ غروب آفاب سے پہلے عرفات سے چلا گیا دَم دے پھرا گرغروب سے پہلے واپس آیا توساقط ہو گیا اورغروب کے بعد واپس ہوا تونہیں اور عرفات سے چلا آنا خواہ باختیار ہویا بلا اختیار ہومثلاً اونٹ پرسوارتھاوہ اسے لے بھا گا دونوں صورت میں دَم ہے۔(2) (عالمگیری، جوہرہ)

﴿﴿١٠) وقوف مُزدَلِفه

(۱۱) رَمِی کی غلطیاں

مسئ الآوس کی دن بھی آمی نہیں کی یا ایک دن کی بالکل یا اکثر ترک کر دی مثلاً دسویں کو تین کنگریاں تک ماریں یا گیارہویں وغیرہ کودس کنگریاں تک یا ایک دن کی بالکل یا اکثر آمی دوسرے دن کی تو ان سب صورتوں میں آم ہا درا گرکسی دن کی نصف ہے کم چھوڑ دیں بادوسرے دن کی نصف ہے کم چھوڑ دیں بادوسرے دن کی نصف ہے کم چھوڑ دیں بادوسرے دن کی تو ہر کنگری پرایک صدقہ دے اور اگر صدتوں کی قیمت آم کے برابر ہوجائے تو پچھم کردے۔(عالمگیری، درمختار، روالحجتار)

- € "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج، ص٢٢٢.
- 2 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الحنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٧.

و"الجوهرة النيرة"، ، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج، ص٢٢٢.

- 3 "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج، ص٢٢٣.
- 4.... "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٧.

و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦.

(۱۲) قربانی اور حَلُقُ مِیں غلطی

مستان اس سے پہلے کیایا قارن وہم سے باہر کیایابارھویں کے بعد کیایا رہی سے پہلے کیایا قارن وہمتے نے قربانی سے سیلے کیایاان دونوں نے رمی سے سیلے قربانی کی توان سب صورتوں میں دَم ہے۔ (1) (در مختار وغیرہ)

مستانی کی جمرہ کاحلق بھی حرم ہی میں ہونا ضرورہے،اس کاحلق بھی حرم سے باہر ہوا تو دَم ہے مگراس میں وقت کی شرط نهیں **_**(درمختار)

مسئ الكرم سے باہر طاق كرنے والے نے بارھويں كے بعد حرم سے باہر سرمونڈ ایا تو دودَم ہیں، ایک حرم سے باہر طاق كرنے كا دوسرابارھویں کے بعد ہونے کا۔⁽³⁾ (ردانحتار)

(۱۳) شکار کرنا

مَسِنَاكُولَ ﴾ خشكى كاوحشى جانور شكار كرنايااس كي طرف شكار كرنے كواشاره كرنايا اوركسي طرح بتانا، بيسب كام حرام ہيں اورسب میں کفارہ واجب اگر چہاُس کے کھانے میں مُضطر ہو یعنی بھوک سے مراجا تا ہواور کفارہ اس کی قیمت ہے یعنی دوعادل وہاں کے حسابوں جو قیمت بتادیں وہ دینی ہوگی اورا گروہاں اُس کی کوئی قیمت نہ ہوتو وہاں سے قریب جگہ میں جو قیمت ہووہ ہے اورا گرایک ہی عادل نے بتادیا جب بھی کافی ہے۔(4) (درمخاروغیرہ)

مَسْعًا ﴾ یانی کے جانور کو شکار کرنا جائز ہے، یانی کے جانور سے مرادوہ جانور ہے جو یانی میں پیدا ہوا ہوا گرچہ شکی میں بھی بھی جھی رہتا ہواور خشکی کا جانوروہ ہے جس کی پیدائش خشکی کی ہوا گرچہ یانی میں رہتا ہو۔ ⁽⁵⁾ (منسک)

سن کی سے شکار کی قیمت میں اختیار ہے کہ اس ہے بھیڑ بکری وغیر واگرخرید سکتا ہے تو خرید کرحرم میں ذیح کر کے فقرا کو تقسیم کردے یا اُس کاغلہ خرید کرمساکین پرصدقہ کردے، اتنااتنا کہ ہر سکین کوصدقہ فطر کی قدر پہنچے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ اس قیت کے غلّہ میں جتنے صدقے ہو سکتے ہوں ہرصدقہ کے بدلے ایک روزہ رکھے اور اگر پچھ غلہ کئے جائے جو پورا صدقہ نہیں تو

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦، وغيره.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦.
- 4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٢٧٦، وغيره.
- 🤿 😘 "لباب المناسك"، (باب الحنايات، فصل في ترك الواجبات بعذر)، ص٣٦٠.

اختیار ہے وہ کسی سکین کو دیدے یااس کی عوض ایک روز ہ رکھے اور اگر پوری قیمت ایک صدقہ کے لائق بھی نہیں تو بھی اختیار ہے

کہانے کاغلیخرید کرایک مسکین کودیدے یااس کے بدلے ایک روز ہ رکھے۔ (¹⁾ (درمختار ، عالمگیری وغیر ہما)

مَسَعَلَهُ ﴾ کفارہ کا جانور حرم کے باہر ذبح کیا تو کفارہ ادانہ ہوااور اگراس میں سے خود بھی کھالیا تو اشنے کا تاوان

دے اور اگراس کفارہ کے گوشت کو ایک مسکین پر نقدق کیا جب بھی جائز ہے۔ یو بین تاوان کی قیت بھی ایک مسکین کودے سکتا ہے اور اگر جانور کو باہر ذیج کیا اور اُس کا گوشت ہر مسکین کو ایک ایک صدقہ کی قیمت کا دیا اور وہ سب گوشت اتنی قیمت کا ہے جتنی

قیمت کاغلیخریداجاتا توادا ہوگیا۔⁽²⁾(عالمگیری،ردالمحتار) مسئل<u>هٔ ۵ ﷺ</u> کفاره کاجانور چوری گیایازنده جانور ہی تصدق کردیا تو نا کافی ہےاورا گرذئ کردیااور گوشت چوری گیا تو

مسئان السال المسئان السلط قیمت کا غلد تصدق کرنے کی صورت میں ہر مسکین کو صدقہ کی مقدار دینا ضروری ہے کم وہیش دے گا توادانہ موگا۔ کم کم دیا تو کل نفل صدقہ ہے اور زیادہ دیا تو ایک صدقہ سے جتنا زیادہ دیانفل ہے۔ بیاس صورت میں ہے کہ ایک ہی دن میں دیا ہواور اگر کئی دن میں دیا اور ہرروز پورا صدقہ تو یوں ایک مسکین کو کئی صدقہ دے سکتا ہے اور یہ بھی ہوسکتا ہے کہ ہر مسکین کو ایک ایک صدقہ کی قیمت دیدے۔ (4) (در مختار ، ردامختار)

سَسَعَالُهُ کَ ﴾ مُحرِم نے جنگل کے جانورکو ذن کیا تو حلال نہ ہوا بلکہ مُر دارہے ذن کرنے کے بعداُسے کھا بھی لیا تواگر کفارہ دینے کے بعد کھایا تواب پھر کھانے کا کفارہ دے اورا گرنہیں دیا تھا توایک ہی کفارہ کافی ہے۔ ⁽⁵⁾ (جوہرہ)

سَسَعَانُ کُ کِیااور قیمت میں شکار کی تجویز ہوئی اُسکاجانور خرید کر ذئے کیااور قیمت میں سے نے رہا تو بقیہ کا غلہ خرید کر تصدق کرے یا ہرصدقہ کے بدلے ایک روزہ رکھے یا پچھروزے رکھے پچھ صدقہ دے سب جائز ہے۔ یو ہیں اگروہ قیمت دو جانوروں کے خرید نے کے لاکن ہے تو چاہے دو جانور ذئے کرے یا ایک ذئے اورایک کے بدلے کا صدقہ دے یاروزے رکھے ہر

1 "الدرالمختار" ، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٨١.

و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٨، وغيرهما.

- 2 "الفتاوي الهندية"،المرجع السابق ص٤٨ ٢ و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص١٦٨.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٨١.
 - 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٨٦-٦٨٣.
 - 5 "الحوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الحنايات في الحج، ص٢٢٨.

اداهوگيا_((دالحتار)

طرح اختیار ہے۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری)

مس<u>عان و ب</u> احرام والے نے حرم کا جانور شکار کیا تواس کا بھی یہی علم ہے، حرم کی وجہ سے دوہرا کفارہ واجب نہ ہوگا اور اگر بغیراحرام کے حرم میں شکار کیا تواس کا بھی وہی کفارہ ہے جومُحرِم کے لیے ہے مگراس میں روزہ کافی نہیں۔⁽²⁾(عالمگیری)

اگر بغیراحرام کے حرم میں شکار کیا تواس کا بھی وہی کفارہ ہے جوئر م کے لیے ہے مگراس میں روزہ کافی نہیں۔(2) (عالمگیری) مسئل ایک جنگل کے جانور سے مرادوہ ہے جوخشکی میں پیدا ہوتا ہے اگر چہیانی میں رہتا ہو۔لہذا مرغانی اور وحشی بط

مستعمد ہے ۔ اس سے جا تور سے سرادوہ ہے ہو گئی میں پیدائش یانی میں ہوتی ہے اگر چہ کبھی بھی خشکی میں رہتا ہو۔ گھریلو کے شکار کرنے کا بھی یہی حکم ہےاور پانی کا جانوروہ ہے جس کی پیدائش یانی میں ہوتی ہے اگر چہ بھی بھی خشکی میں رہتا ہو۔ گھریلو

جانور جیسے گائے ، بھینس ، بکری اگر جنگل میں رہنے کے سبب انسان سے وحشت کریں تو وحثی نہیں اور وحثی جانور کسی نے پال لیا تو اب بھی جنگل ہی کا جانور شار کیا جائے گا ، اگر پلاؤ ہرن شکار کیا تو اس کا بھی وہی حکم ہے۔ جنگل کا جانور اگر کسی کی ملک میں ہو جائے مثلاً بکڑلا یایا بکڑنے والے سے مول لیا تو اس کے شکار کرنے کا بھی وہی حکم ہے۔ (3) (عالمگیری ، جو ہرہ ، روالمختار)

جائے مملا پیزلایایا پیزئے والے سے موں نیا توال نے شکار کرنے گائی وہی م ہے۔ سے رعا سیری ، بوہرہ، رواحیار)

مسئانی انکے حرام اور حلال جانور دونوں کے شکار کا ایک حکم ہے مگر حرام جانور کے تل کرنے میں کفارہ ایک بکری سے
مزید سے مقام کرتے ہیں گئارہ ایک بیری ہے۔ بیری ہوئی ہے۔ بیری ہوئی ہے۔ بیری ہوئی ہے۔ بیری ہے۔ بی

زیادہ نہیں ہے اگر چہاس جانور کی قیت ایک بکری سے بہت زائد کی ہومثلاً ہاتھی گوتل کیا تو صرف ایک بکری کفارہ میں واجب ہے۔(4)(درمختار، ردالمحتار)

مَسِعًا لَهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الله

سَسَعُلُوْ اللّٰ ﷺ کفارہ لازم آنے کے لیے قصداً قتل کرنا شرط نہیں بُھول چوک سے قتل ہوا جب بھی کفارہ ہے۔ (⁶⁾ (درمختاروغیرہ)

سکان اس کی وجہ سے جو کچھائس کے بال یا پرنو بے یا کوئی عضوکاٹ ڈالا تواس کی وجہ سے جو کچھائس

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٨.
 - 2 المرجع السابق.
- 3 المرجع السابق ص٧٤٧. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٦.
 - 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحنايات، ج٣، ص ٦٨١.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٨١.
 - (عیره. ۱۲۷۸) الدرالمختار"، کتاب الحج، باب الجنایات، ج۳، ص۲۷۸، وغیره.

جانور میں کمی ہوئی وہ کفارہ ہے اور اگرزخم کی وجہ سے مرگیا توپوری قیمت واجب _{- (1)} (عامہ کتب)

مستان ۱۵ است از م کھا کر بھاگ گیااور معلوم ہے کہ مرگیایا معلوم نہیں کہ مرگیایا زندہ ہے تو قیمت واجب ہے اورا گرمعلوم ہے کہ مرگیا مگراس زخم کے سبب سے نہیں بلکہ کسی اور سبب سے تو زخم کی جزا دے اور بالکل اچھا ہوگیا، جب بھی کفارہ ساقط نہ ہوگا۔(2)(ردالحتار)

مسئلۂ 🔰 🔫 جانورکوزخی کیا پھراُ ہے تل کرڈالا توزخم قتل دونوں کا کفارہ دے۔(3) (عالمگیری)

مس<u>تان کا ہے۔</u> جانور جال میں بھنسا ہوا تھا یا کسی درندہ نے اسے پکڑا تھا اُس نے چھوڑا نا چاہا، تو اگر مربھی جائے جب بھی کچھنیں ۔⁽⁴⁾ (درمختار)

مَسِعَانُ ٢٠﴾ جنگل کے جانور کا نڈاٹھو نایا دودھ دوہااور کفارہ ادا کردیا تواب اس کا کھانا حرام نہیں اور بیچنا بھی جائز مگر مکروہ ہے اور جانور کا کفارہ دیا اور کھایا تو پھر کفارہ دے اور دوسرے محرم نے کھالیا تو اس پر کفارہ نہیں اگرچہ کھانا حرام تھا کہ وہ

- ❶ "تنوير الابصار" و "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحنايات، ج٣، ص٦٨٣.
 - 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٣.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٨.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحنايات، ج٣، ص٦٨٤.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٤، وغيره.
 - 6 "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في الجرح)، ص٣٦٢.

و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٨.

) مُر دارہے۔(1) (جوہرہ،ردالحمار)

سَعَانُ الله جنگل کے جانور کا انڈا اُٹھالا یا اور مرغی کے نیچےر کھ دیا اگر گندہ ہو گیا تو اس کی قیت دے اور اس سے بچہ

نکلااور برٹا ہوکراُڑ گیا تو کچھنہیں اوراگرانڈ بے پرسے جانورکواڑا دیااورانڈا گندہ ہوگیا تو کفارہ واجب۔⁽²⁾ (منسک)

مسئ الکی اور اگر نہ مرنی کو مارااس کے پیٹ میں بچے تھا، وہ مراہوا گرا تو اس بچے کی قیمت کفارہ دےاور ہرنی بعد کومرائی تو اس کی قیمت بھی اور اگر نہ مری تو اس کی وجہ ہے جتنا اس میں نقصان آیا وہ کفارہ میں دے اور اگر بچے نہیں گرا مگر ہرنی مرگئی تو

حالت ِمِل میں جواس کی قیمت تھی وہ دے۔ ⁽³⁾ (جو ہرہ)

سَسَوَا کَا، پِسُو، پُحِمر کُلّی، پَھِر یا، پَھو، سانپ، چوبا، گھونس، چھچ ندر، کنگھنا کتا، پِسُو، مُحِمر کُلّی، پَحُوا، کیگرا، پِنگا، کاشنے والی چیونگی، کمھی، چھپکلی، بُر اور تمام حشرات الارض جو، اومڑی، گیدڑ جب کہ بید درندے مملہ کریں یا جو درندے ایسے ہوں جن کی عادت اکثر ابتداء مملہ کرنیں ۔ یو ہیں پانی کے تمام جانوروں عادت اکثر ابتداء مملہ کرنے کی ہوتی ہے جیسے شیر، چیتا، تیندوا، اِن سب کے مار نے میں کچھ بیس ۔ یو ہیں پانی کے تمام جانوروں کے قبل میں کفارہ نہیں ۔ یو ہیں کا کہ کہ کا روغیر ہا)

مسئالہ ۲۳ ہرن اور بکری ہے بچہ پیدا ہوا تو اس کے آل میں پچھ ہیں ، ہرنی اور بکرے سے ہے تو کفارہ واجب۔ (⁵⁾ (درمختار، ردالحتار)

مسئ الله الله الله الله الماريا تو مُرم أسه كهاسكتا ہے اگر چہاُس نے اس كے ليے كيا ہو، جب كه اُس مُرم نے نه اُسے بتايا، نه تكم كيا، نه كسى طرح اس كام ميں اعانت كى ہواور يہ شرط بھى ہے كہ حرم سے باہراً سے ذرح كيا ہو۔ (6) (درمختار) مسئ الله الله الله الله الله عنارہ كرنے والے يركفارہ اس وقت لازم ہے كه ﴿ جسے بتايا وہ اس كى بات جموتى نه

- 1 "الحوهرة النيرة " ، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج ص٢٢٦ .
 - و "ردالمحتار"، كتاب الجنايات، ج٣، ص٦٨٨.
- 2 "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في حكم البيض)، ص٣٦٦.
- 3 "الجوهرة النيرة " ، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج ص٢٢٦ .
- 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٨٩ ـ ١٩١.
 - و "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٢.
 - 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٩٢.
 - 😘 🈘 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٩٢.

ﷺ جانے اور ﴿ بِاسِ كے بتائے وہ جانتا بھى نہ ہواور ﴿ اُس كے بتانے پر فوراً اُس نے مار بھى ڈالا ہواور ﴿ وہ جانور وہاں سے

بھاگ نہ گیا اور ③ یہ بتانے والا جانور کے مارے جانے تک احرام میں ہو۔اگران پانچوں شرطوں میں ایک نہ پائی جائے تو

کفارہ نہیں رہا گناہ وہ بہرحال ہے۔ (1) (درمختار، جو ہرہ)

مَسِنَاكُ ٢٧﴾ ايک مُرم نے کسی کوشکار کا پتادیا مگراس نے نہاُ ہے سچا جانا نہ جھوٹا پھر دوسرے نے خبر دی،اباس نے

جبتو کی اور جانور کو مارا تو دونوں بتانے والوں پر کفارہ ہے اورا گری<u>ہا ک</u>ے وجھوٹاسمجھا تو صرف دوسرے پر ہے۔⁽²⁾ (ردالمحتار)

مَستَالُهُ ٢٨﴾ ﴿ مُحْرِم نے شکار کاتھم دیا تو کفارہ بہر حال لازم اگرچہ جانورخود مارنے والے کےعلم میں ہے۔ 🔞 (روالختار)

دیا،اب تیسرے نے شکار کیا تو پہلے پر کفارہ نہیں اور دوسرے اور تیسرے پر لازم اورا گریہلے نے دوسرے سے کہا کہ توفُلاں کو شکار کا حکم دیاوراس نے حکم دیا تو تنیول پرجر ماندلازم ۔ (4) (منسک)

مَسِعًا الله الله عَيْرُ عَرِم نِ مُحْرِم كُوشِكار بتايا ياحكم كيا تو كَنْهَار مِوا توبه كريه اس غير مُحْرِم يركفار فهيس - (5) (منسك)

مَسَعَلَيْ اللهِ عَمْرِم نے جمعے بتایا وہ مُحرِم ہویانہ ہو بہر حال بتانے والے پر کفارہ لازم ۔ ⁽⁶⁾ (روالحتار)

مَسِيَّالُ اللهِ الفاره ہے۔ کئی شخصول نے مل کرشکار کیا توسب پر بورابورا کفارہ ہے۔ (7) (عالمگیری)

مسئ الاستان التي بهي نشكي كاجانور ہے، أسے مارے تو كفاره دے اورا يك تھجور كافى ہے۔ (8) (جو ہره)

1 "الجوهرة النيرة" ، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج ص ٢٢٤.

و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٧.

- 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٧.
 - 3 المرجع السابق.
- 4....."لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في الدلالة والاشارة و نحو ذلك)، ص ٩٦٩.
- الباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في الدلالة والاشارة ونحو ذلك)، ص٩٦٩...
 - 6 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٢٧٧.
 - 🕽 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج ١، ص ٢٤٩.
 - 🐒 😘 "الحوهرة النيرة" ، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج ص٢٢٧ .

🚅 جرم اوران کے کفارے کا بیان

عِبِهِ ارِشْ نِيعَتْ خِصْبُتُم (6)

کی اسٹ کی سیستان میں سے جنگل کا جانورخریدایا بیچا تو بھی باطل ہے پھر بائع ومشتری دونوں مُحرِم ہیں اور جانور ہلاک ہوا تو دونوں پر کفارہ ہے۔ یہ میکم اس وقت ہے کہ احرام کی حالت میں پکڑااوراحرام ہی میں بیچااورا گر پکڑنے کے وقت مُحرِم نہ تھااور بیچنے

کے وقت ہے تو بھے فاسد ہے اورا گر پکڑنے کے وقت تُمرِم تقااور بیچنے کے وقت نہیں ہے تو بھے جائز۔⁽¹⁾ (جو ہرہ)

سَسَنَاكُ الله عَنْ مُحْرِم نے غیر مُحْرِم کے ہاتھ جنگل کا جانور بیچا اور مشتری نے ابھی قبضہ نہ کیا تھا کہ دونوں میں سے ایک

نے احرام باندھ لیا تواب وہ بیچ باطل ہوگئی۔⁽²⁾ (جو ہرہ)

سکانی اسکانی اسکانی سے احرام با ندھااوراس کے ہاتھ میں جنگل کا جانور ہے تو تھم ہے کہ چھوڑ دےاور نہ چھوڑ ایبال تک کہ مر گیا تو ضان دے مگر چھوڑ نے سے اس کی ملک سے نہیں نکاتا جب کہ احرام سے پہلے بکڑا تھا اور یہ بھی شرط ہے کہ ہیرونِ حم بکڑا موفلہذا اگراسے کسی نے بکڑلیا تو مالک اس سے لے سکتا ہے۔ جب کہ احرام سے نکل چکا ہواورا گرکسی اور نے اس کے ہاتھ سے چھڑا دیا تو یہ تاوان دے اورا گر جانوراس کے گھر ہے تو بچھ مضایقہ نہیں یا پاس ہی ہے مگر پنجرے میں ہے تو جب تک حرم سے باہر ہے چھوڑ نا ضروری نہیں ۔ لہٰذا اگر مرگیا تو کفارہ لازم نہیں۔ (3) (جو ہرہ ، عالمگیری)

سَمَعُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَمْرِم نے جنگل کا جانور بکڑا تو اُس پرلازم ہے کہ جنگل میں یاالیی جگہ چھوڑ دے جہاں وہ پناہ لے سکے، اگرشہر میں لاکر چھوڑا جہاں اس کے بکڑنے کا اندیشہ ہے تو جر مانہ سے بُری نہ ہوگا۔⁽⁵⁾ (منسک)

مستان و سی نے الیی جگہ شکار دیکھا کہ مارنے کے لیے تیر کمان ، نیابی ، ہندوق وغیر ہاکی ضرورت ہے اور مُرم نے بیر چیزیں اسے دیں تو اس پر پورا کفارہ لازم اور شکار ذبح کرناہے اُس کے پاس ذبح کرنے کی چیز نہیں ،مُرم نے چُھری دی تو

- 1 "الحوهرة النيرة" ، كتاب الحج، باب الحنايات في الحج ص٢٢٩.
 - 2 المرجع السابق.
- €..... المرجع السابق.و "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٠٥١،١٥.
 - 4 المرجع السابق.
- 😵 🗗 "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في أخذ الصيد و ارساله)، ص٣٦٨.

ﷺ کفارہ ہےاوراگراس کے پاس ذنح کرنے کی چیز ہےاور کُرِم نے چھری دی تو کفارہ نہیں مگر کراہت ہے۔(1)(عالمگیری)

1186

مَستَانُ 💎 🎏 مُحرم نے جانور پراپنا کتا یا بازسکھایا ہوا جیھوڑا ،اُس نے شکارکو مارڈ الا تو کفارہ واجب ہےاورا گراحرام کی وجہ تعمیل حکم شرع کے لیے باز چھوڑ دیا، اُس نے جانور کو مارڈ الایا شکھانے کے لیے جال پھیلایا،اس میں جانور پھنس کرمر گیا یا کوآں کھودا تھا اُس میں گر کر مرا توان صورتوں میں کفار *نہیں۔*(2) (عالمگیری)

ٰ (۱۶) حرم کے جانور کو ایذا دینا

مَسْتَاكُ اللَّهِ حرم کے جانور کو شکار کرنا یا اُسے کسی طرح ایذا دیناسب کوحرام ہے۔ مُحرِم اور غیرمُحرم دونوں اس حکم میں کیساں ہیں۔غیرمُرم نے حرم کے جنگل کا جانور ذہح کیا تو اس کی قیمت واجب ہے اور اس قیمت کے بدلے روزہ نہیں رکھ سکتا اورمُرم ہے توروزہ بھی رکھ سکتاہے۔(3) (درمختار)

مَستَ اللهُ اللهِ ﴿ مُحِرِم نِهِ الرَّرَم كا جانور مارا توايك ہى كفارہ واجب ہوگا دونہيں اوراگروہ جانورکسي كامملوك تھا تو ما لك كو اس کی قیمت بھی دے۔ پھراگر سکھایا ہوا ہومثلاً طوطی تو مالک کووہ قیمت دے جوسیکھے ہوئے کی ہے اور کفارہ میں بے سکھائے ہوئے کی قمت ہ⁽⁴⁾ (منیک)

پھرا گروہ شکاری جانور باز،شکرا، بہری وغیر ہاہےاوراس نے اس حکم شرع کی تعیل کے لیےاُ سے چھوڑا، اُس نے شکار کیا تو اُس کے ذمہ تاوان نہیں اور شکار پر چھوڑ اتو تاوان ہے۔ (5) (در مختار وغیرہ)

مستان کی ایشخض دوسر کاوشتی جانورغصب کر کے حرم میں لایا تؤواجب ہے کہ چھوڑ دیاور مالک کو قیت دے اور نہ چھوڑا بلکہ مالک کوواپس دیا تو تاوان دے۔غصب کے بعداحرام باندھاجب بھی یہی حکم ہے۔ (6) (ردالمحتار وغیرہ)

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٠٥٠.
 - 2 المرجع السابق ص ١ ٥٠.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٩٣.
- 4 "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في صيد الحرم)، ص٧٤.
 - 5 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٩٣، وغيره.
 - 🕏 🈘 "ردالمحتار" ، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٩٤.

سَتَانُهُ ﴾ ووغیرمُحرم نے حرم کے جانورکوایک ضرب میں مارڈالا تو دونوں آ دھی آ دھی قیت دیں۔ یو ہیں اگر بہت ے لوگوں نے مارا تو سب پر وہ قیمت تقسیم ہو جائے گی اورا گراُن میں کوئی محرم بھی ہے تو علاوہ اُس کے جواُس کے حصہ میں بڑا یوری قیمت بھی کفارہ میں دےاورایک نے پہلے ضرب لگائی پھر دوسرے نے تو ہرایک کی ضرب سے اس کی قیمت میں جو کمی ہوئی

1187

وہ دے۔ پھر باقی قیمت دونوں پرتقسیم ہوجائے گی اس بقیہ کا نصف نصف دونوں دیں۔ (1) (عالمگیری ،منسک)

ہے کہ دوسر ہے سے تاوان وصول کر لے۔⁽²⁾ (عالمگیری)

مَستَ الله الله الله على الله على مكان مين مُطهر عن السمكان مين كبوتر رہتے تھے۔سب نے ايك سے كہا، درواز ہ بند کر دے،اس نے دروازہ بند کردیا اورسب منیٰ کو چلے گئے، واپس آئے تو کبوتریباس سے مرے ہوئے ملے تو سب پورا پورا کفاره دیں۔⁽³⁾(عالمگیری)

مَسِيًّا ﴾ جانور کا کچھ حصہ حرم میں ہواور کچھ باہر تو اگر کھڑا ہواوراس کےسب یا وُل حرم میں ہول یا ایک ہی یا وُل تو وہ حرم کا جانور ہے، اُس کو مارنا حرام ہے اگر چہ سرحرم سے باہر ہے اور اگر صرف سرحرم میں ہے اور پاؤل سب کے سب باہر تو قتل پر جرمانہ لازمنہیں اورا گرلیٹا سویا ہے اور کوئی حصہ بھی حرم میں ہے تو اسے مارنا حرام ۔ ⁽⁴⁾ (ردا کھتار)

مَسِيَّالُمُ ﴾ 🚽 جانورحرم سے باہرتھا،اس نے تیرچپوڑاوہ جانور بھا گااور تیراُسےاس وقت لگا کہ حرم میں بہنچ گیا تھا تو جرمانہ لازم اوراگر تیر لگنے کے بعد بھا گ کرحرم میں گیااور وہیں مرگیا تونہیں مگراس کا کھانا حلال نہیں۔⁽⁵⁾ (ردالحتار)

مسکان اس سے تیر چھوڑا تو جرمانہ واجب (6) (عالمگیری)

- 1"الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٩. و"لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات)، ص٦٤.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٠٥٠.
 - المرجع السابق.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٧.
 - 5 المرجع السابق، ص٦٨٨.
- 🦃 💪 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص ٢٥١.

بھی کیسٹائر 🔰 🐣 جانوراور شکاری دونوں حرم سے باہر ہیں مگر تیرحرم سے ہوتا ہوا گزرا تو تسمیں بھی بعض علما تاوان واجب

کرتے ہیں۔ درمختار میں یہی لکھا مگر بح الرائق ولباب میں تصریح ہے کہاس میں تاوان نہیں اورعلامہ شامی نے فر مایا کلام علما سے

یمی ثابت۔ کتایاباز وغیرہ چھوڑ ااور حرم ہے ہوتا ہوا گزرا،اس کا بھی یمی حکم ہے۔ (1)

جائے۔⁽²⁾(عالمگیری)

مَسِيًّا ﴾ گھوڑے وغیرہ کسی جانور پرسوار جار ہاتھا یا اسے ہانکتا یا تھینچتا لیے جار ہاتھا،اُس کے ہاتھ یاؤں سے کوئی جانوردب کرمر گیایااس نے کسی جانور کووانت سے کا ٹااور مر گیا تو تاوان دے۔⁽³⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُ ١٨﴾ ﴾ بھیڑیے پر کتا چھوڑا،اُس نے جا کرشکار پکڑا یا بھیڑیا پکڑنے کے لیے جال تانا،اُس میں شکار پھنس گیا تو دونوں صورتوں میں تاوان تیجہ نہیں ۔ ⁽⁴⁾ (عالمگیری)

مستانہ 🐧 💨 جانور کو بھا یا وہ کو ئیں میں گریڑا یا بھسل کر گرا اور مر گیا یا کسی چیز کی ٹھوکر گلی وہ مر گیا تو تاوان دے۔ (⁵⁾ (عالمگیری)

سَسَعَانُ اللهِ ﴿ حَرِمَ كَا جِانُورِ بَكِرُ لا يا اوراسے بيرون حرم چھوڑ ديا، اب کسی نے مارڈ الا تو بکڑنے والے پر کفارہ لازم ہے اورا گرکسی نے نہ بھی مارا تو جب تک امن کے ساتھ حرم کی زمین میں پہنچ جانامعلوم نہ ہو، کفارہ سے بُری نہ ہوگا۔ (6) (منسک)

سَتَ اللَّهُ کا ﷺ جانور حرم ہے باہر تھااوراس کا بہت جھوٹا بچہ حرم کے اندر، غیرمحرم نے اُس جانور کو مارا تواس کا کفارہ نہیں ،

گریچه بھوک ہے مرجائے گا تو بچیکا کفارہ دینا ہوگا۔⁽⁷⁾ (منسک)

مسئلہ 🗥 🦫 ہرنی کوحرم سے نکالا وہ بچے جنی پھروہ مرگئی اور بچے بھی توسب کا تاوان دےاورا گرتاوان دینے کے بعد

❶ انظر: "الدر المختار" و"رد المحتار"، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٧. و "البحر الرائق"، كتاب الحج، باب الجنايات،

فصل ان قتل محرم صيداً، ج٣، ص٦٩. و "لباب المناسك" ، (باب الجنايات، فصل في صيد الحرم)، ص٣٧٦.

2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص ٢٥١.

.۲٥٢ المرجع السابق، ص٢٥٢.

4 المرجع السابق. 5 المرجع السابق.

6 "لباب المناسك" ، (باب الجنايات، فصل في أخذ الصيد و ارساله)، ص٦٦٨.

🦃 🥦 "لباب المناسك" ، (باب الجنايات، فصل في صيد الحرم)، ص٣٧٧.

عنى توبيول كا تاوان لا زمنېيں _ (1) (درمختار وغير ه)

مارناحرام ہے۔⁽²⁾(درمختار وغیرہ)

(۱۵) حرم کے پیڑوغیرہ کاٹنا

سَسَانُ اللَّهِ حرم کے درخت حارفتم ہیں: ﴿ کسی نے اُسے بویا ہے اور وہ ایبا درخت ہے جھے لوگ بویا کرتے ہیں۔ ا بویا ہے مگراس فتم کانہیں جے لوگ بویا کرتے ہیں۔ ا کسی نے اسے بویانہیں مگراس فتم سے ہے جے لوگ بویا کرتے

ہں۔ ﴿ بو مانہیں، نداس تشم سے ہے جسے لوگ بوتے ہیں۔

یہلی تین قسموں کے کا ٹینے وغیرہ میں کچھ نہیں یعنی اس پر جر مانینہیں۔ رہا یہ کہ وہ اگر کسی کی ملک ہے تو ما لک تاوان لے گا، چوتھی قتم میں جر مانہ دینا پڑے گا اور کسی کی ملک ہے تو ما لک تاوان بھی لے گا اور جر مانہ اُسی وقت ہے کہ تر ہواور ٹوٹا یا اً کھڑا ہوا نہ ہو۔ جرمانہ بیہ ہے کہاُس کی قیمت کاغلہ لے کرمساکین پرتصدق کرے، ہرمسکین کوایک صدقہ اوراگر قیمت کاغلہ پورے صدقہ ہے کم ہے تو ایک ہی مسکین کو دے اور اس کے لیے حرم کے مساکین ہونا ضرور نہیں اور ریجھی ہوسکتا ہے کہ قیت ہی تصدق کردے اور پیجھی ہوسکتا ہے کہ اس قیمت کا جانورخرید کرحرم میں ذبح کردے روز ہ رکھنا کافی نہیں۔(3) (عالمگیری، درمختاروغیرها)

ہوجائے گی مگراُس کی قیت ت*قیدق کردے۔*(⁴⁾(عالمگیری)

مستان سين جودرخت و كركيا أسه أكها رُسكتا ہے اوراس نفع بھي أشاسكتا ہے۔ (5) (عالمكيري)

مَسِيًّا لَكُونَ ﴾ ورخت أكھاڑا اور تاوان بھى ادا كر ديا چھراہے و ہيں لگا ديا اور وہ جم گيا چھراسى كو أكھاڑا تو اب تاوان

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧٠٤، وغيره.
 - 2 المرجع السابق ص٦٨٦.
- 3 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٢_٢٥٣.
 - 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٣.
 - 🐾 🗗 ---- المرجع السابق.

نہیں۔⁽¹⁾(عالمگیری)

سَسَالُهُ ﴾ ورخت کے بیتے توڑے اگراس سے درخت کونقصان نہ پہنچا تو پچھنہیں۔ یو ہیں جو درخت پھلتا ہے اُسے

بھی کا شنے میں تاوان نہیں جب کہ ما لک سے اجازت لے لی ہواُ سے قیمت دیدے۔⁽²⁾ (درمختار)

مستان کی ایک چیز شخصوں نے مل کر درخت کا ٹا توایک ہی تاوان ہے جوسب برتقسیم ہوجائے گا،خواہ سب مُحرِم ہول یاغیر مُرِم يابعضُ مُرِم بعض غيرمُرِم _⁽³⁾(عالمگيري)

مسئان کے پہلویا کسی درخت کی مسواک بنانا جائز نہیں۔(⁴⁾ (عالمگیری)

سَسَاكُ ٨ ﴾ جس ورخت كى جراحم سے باہر ہے اور شاخيں حرم ميں وہ حرم كا درخت نہيں اور اگر نے كا بعض حصه حرم میں ہےاوربعض باہر تو وہ حرم کا ہے۔ ⁽⁵⁾ (درمختار وغیرہ)

مَسِعًا ﴾ اپنے یا جانور کے چلنے میں یا خیمہ نصب کرنے میں کچھ درخت جاتے رہے تو کچھنہیں۔ (6) (درمختار، ر دالحتار)

مَسْعَانُ 🕩 🦫 ضرورت کی وجہ سے فتو کی اس پر ہے کہ وہاں کی گھاس جانوروں کو چرانا جائز ہے۔ باقی کا ثنا، اُ کھاڑ نا،اس كاوى عكم ہے جودرخت كا ہے۔ سواإذ خراور سوكھي كھاس كے كمان سے برطرح انتقاع جائز ہے۔ كھنبسى كو لائے، اً کھاڑنے میں کچیمضایقہ نہیں۔⁽⁷⁾ (درمختار،ردالمحتار)

((۱۲) جوں مارنا

مسئلهٔ این بول تین ہوں توایک مٹی ماری یا بھینک دی توایک میں روٹی کا ٹکڑااور دویا تین ہوں توایک مٹھی

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٣.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص ٦٨٥.
- 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٣.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٤.
 - الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٦، وغيره.
 - 6 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٦.
 - 🐒 🥱 المرجع السابق، ص٦٨٨.

ناخ اوراس سے زیادہ میں صدقہ ۔ ⁽¹⁾ (ورمختار)

مسئلة (2) بين جو مين مرنے کو سريا کپڑا وھويايا وھوپ مين ڈالا، جب بھی يہی کفارے ہيں جو مارنے ميں تھے۔ ⁽²⁾

(درمختار)

مسئانی سے دوسرے نے اُس کے کہنے یا شارہ کرنے سے اُس کی جوں ماری، جب بھی اُس پر کفارہ ہے اگر چہدوسرا احرام میں منہ ہو۔(3) (درمختار)

<u> مسکان کی اس پر پچھنیں اگر چہوں یا دوسرے کے بدن یا کپڑوں کی مارنے میں اس پر پچھنیں اگر چہوہ دوسرا بھی</u> احرام میں ہو۔⁽⁴⁾ (بحر)

مستان کی ایس کیٹر ابھیگ گیا تھا سکھانے کے لیے دھوپ میں رکھا،اس سے جو ئیں مرگئیں مگریہ تقصود نہ تھا تو کچھ حرج نہیں ۔⁽⁵⁾ (منسک متوسط)

مستان ک جرم کی خاک یا کنگری لانے میں حرج نہیں۔⁽⁶⁾ (عالمگیری)

(۱۷) بغیر احرام میقات سے گزرنا

سَسَنَا الله الله منقات کے باہر ہے جو شخص آیا اور بغیر احرام مکہ معظمہ کو گیا تو اگر چہنہ جج کا ارادہ ہو، نہ عمرہ کا مگر جج یا عمرہ واجب ہو گیا پھر اگر میقات کو واپس جا کر احرام باندھ کر آیا تو دَم واجب ہو اتھا اس کا احرام باندھ کر آیا تو دَم ساقط اور مکہ معظمہ میں داخل ہونے ہے جو اُس پر جج یا عمرہ واجب ہواتھا اس کا احرام باندھا اور اواکیا تو بری الذّمہ ہو گیا۔ یو ہیں اگر ججة الاسلام یافعل یا منت کا عمرہ یا جج جو اُس پر تھا، اُس کا احرام باندھا اور اُسی سال ادا کیا جب بھی بری الذّمہ ہو گیا اور اگر اس سال ادا نہ کیا تو اس ہے بری الذّمہ نہ ہوا، جو مکہ میں جانے ہے واجب ہواتھا۔ (۲) (عالمگیری، درمخار، ردا کھتار)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٩.
 - 2 المرجع السابق. 3 المرجع السابق.
- 4 "البحر الرائق"، كتاب الحج، باب الجنايات، فصل ان قتل محرم صيداً، ج٣، ص٦٦.
- 5..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات ،فصل في قتل القمل)، ص ٣٧٨.
- ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٣.
- و"الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، مطلب لايجب الضمان بكسر آلات اللهو، ج٣، ص ٧١١.

المستعلات المستعلات المعالم على المستقلم كوسكيا، يجيلي بارميقات كوواپس آكر فج ياعمره كااحرام بانده كراداكيا تو صرف ال

بارجو حج یاعمره واجب ہوا تھا،اس سے بری الذّمہ ہوا، پہلوں سے نہیں۔(1)(عالمگیری)

<u> مسئلہ کی ع</u>رہ کاارادہ ہےاور بغیراحرام میقات ہے آگے بڑھا تواگریداندیشہ ہے کہ میقات کو داپس جائے گا تو

مج فوت ہوجائے گا تو واپس نہ ہو، وہیں سے احرام باندھ لے اور دَم دے اور اگریداندیشہ نہ ہوتو واپس آئے۔ پھرا گرمیقات کو مناب میں تاریخی کا تو واپس نہ ہو، وہیں سے احرام باندھ لے اور دَم دے اور اگریداندیشہ نہ رہے ہوتو واپس آئے۔ پھرا

بغیراحرام آیا تو دَم ساقط به بین اگراحرام بانده کرآیااور لبیک کهه چکاہے تو دَم ساقطاور نہیں کہا تو نہیں۔(2) عالمگیری) سنگانی کے میقات سے بغیراحرام گیا پھرعمرہ کااحرام باندھااور عمرہ کو فاسد کردیا، پھرمیقات سے احرام باندھ کرعمرہ کی

قضا کی تومیقات ہے ہے احرام گزرنے کا دَم ساقط ہوگیا۔(3) (درمختار)

مستن مستن مستق نے حرم کے باہر سے ج کا احرام باندھا، اُسے عکم ہے کہ جب تک وقو ف عرفہ نہ کیا اور ج فوت ہونے کا اندیشہ نہ ہوتو حرم کو واپس آئے اگر واپس نہ آیا تو دَم واجب ہے اور اگر واپس ہوا اور لبیک کہہ چکا ہے تو دَم ساقط ہے نہیں تو نہیں اور باہر جا کر احرام نہیں باندھا تھا اور واپس آیا اور یہاں سے احرام باندھا تو پھے نہیں۔ مکہ میں جس نے اقامت کرلی ہے اس کا بھی یہی تکم ہے اور اگر مکہ والا کسی کام سے حرم کے باہر گیا تھا اور وہیں سے ج کا احرام باندھ کر وقوف کرلیا تو پھے نہیں اور اگر عمرہ کا احرام حرم میں باندھا تو دَم لازم آیا۔ (4) (عالمگیری، روالمحتار)

سَسَعُ اللهِ عَلَى اللهِ عَنِيراحرام ميقات سے گزرا پھر بالغ ہوگيا اور وہيں سے احرام باندھ ليا تو دَم لازم نہيں اور غلام اگر بغيراحرام گزرا پھر اس کے آتا احرام کی اجازت دے دی اور اُس نے احرام باندھ ليا تو دَم لازم ہے جب آزاد ہوا دا کرے۔ (5) (عالمگيری)

مَسَعَانَهُ كَ ﴾ میقات سے بغیراحرام گزرا پھرعمرہ كااحرام باندھااس كے بعد فج كا ياقران كيا تودَم لازم ہے اوراگر پہلے

- 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٤،٢٥٢.
 - 2 المرجع السابق ص٥٣ م.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧١٣.
 - ◘ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١٠ ص٢٥٤.
 - و"ردالمحتار"،
 - 🥱 ق..... "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٣.

ر عالمگیری) علی ایر میل عمره کا تو دودَ م (⁽¹⁾ (عالمگیری)

ٰ (۱۸) احرام ہوتے ہوئے دوسرا احرام باندھنا

سَسَالُهُ اللَّهِ جَوْحُصْ ميقات كے اندرر ہتا ہے اُس نے فج كے مہينوں ميں عمرہ كاطواف ايك بھيرا بھى كرليا، اُس كے بعد

چ کااحرام باندھا تواسے توڑ دےاور دَم واجب ہے۔اس سال عمرہ کرلے،سال آئندہ جج اورا گرعمرہ توڑ کر جج کیا تو عمرہ ساقط

ہوگیااور دَم دے اور دونوں کر لیے تو ہو گئے مگر گنہ کار ہوااور دَم واجب۔ (2) (درمختار)

سَسَعَالُهُ اللّهِ عَلَى الرّمَام باندها پھر عرفہ کے دن یارات میں دوسرے فج کا احرام باندھا تو اسے توڑ دے اور دَم دے اور قَم دے اور قَم دار فی میں رہے اور دوسرے کو اور قَم دائر دسویں کو دوسرے فح کا احرام باندھا اور حلق کر چکا ہے تو بدستوراحرام میں رہے اور دوسرے کو سال آئندہ میں یورا کرے اور دَم واجب نہیں اور حلق نہیں کیا ہے تو دّم واجب (ردالحتار)

مسئل المستان عمره كي تمام افعال كرچكا تفاصرف حلق باقى تفاكه دوسر عمره كااحرام باندها تو دَم واجب بهاور كنه كار موا_(4) (درمثار)

سَسَعَانُ وَ عَلَمَ اللَّهُ عَلَى الْمُركِ رَبِنَ وَاللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى الرَّامِ بِاندها اورطواف قد وم سے پیشتر عمره کا احرام بانده لیا تو قارن موگیا مگر اساءت ہوئی اورشکرانہ کی قربانی کرے اور عمره کے اکثر طواف لینی چار پھیرے سے پہلے وقوف کرلیا تو عمره باطل موگیا۔ (5) (درمخار، درامخار)

عمره تو ژ د ہاور قضا کرے اور دَم دے اورا گرنہیں تو ڑ ااور دونوں کر لیے تو دَم دے۔ ⁽⁶⁾ (درمختار)

- ❶ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١٠ ص٢٥٣.
 - 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧١٣.
- ③ "" (دالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، مطلب لا يحب الضمان بكسر آلات اللّهو، ج٣، ص٥٧٠.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص١٦٠.
- 5 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، مطلب لايجب الضمان... إلخ، ج٣، ص٧١٧.
 - 6 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧١٧.
 - 究 ----المرجع السابق ص٧١٨.

هُ مُصركابيان ﴾

اللَّدعز وجل فرما تاہے:

﴿ فَإِنْ أُخْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَمِنَ الْهَدُى ۚ وَلَا تَحْلِقُوْ اللَّهُ وَسَكُمْ حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدُى مَحِلَّهُ ۖ ﴾ (1)

اگر چے وعمرہ سےتم روک دیے جاؤ تو جوقر بانی میسّر آئے کرواورا پنے سرند مُنڈ اُؤ، جب تک قربانی اپنی جگہ (حرم) میں

نہ بینی جائے۔

اورفر ما تاہے:

﴿ إِنَّ الَّذِيثِ كَفَرُوْا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنُهُ لِلنَّاسِ سَوَآءً الْعَاكِفُ

فِيْدِوَالْبَادِ وَمَنْ يُرِدُفِيْهِ بِالْحَامِ بِظُلْمِثْنِقَهُ مِنْ عَنَابِ اَلِيْمٍ أَهُ ﴾ (2)

بیثک وہ جنھوں نے کفر کیااوررو کتے ہیں اللہ (عزوجل) کی راہ سے اور مسجد حرام سے، جس کوہم نے سب لوگوں کے لیے مقرر کیا، اس میں وہاں کے رہنے والے اور باہر والے برابر حق رکھتے ہیں اور جواس میں ناحق زیادتی کا ارادہ کرے، ہم اُسے در دناک عذاب چکھا کیں گے۔

احاديث

خلین اللہ علی اللہ علی عبد اللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنبیا سے مروی ، کہ ہم رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے .

ساتھ چلے، کفارِ قریش کعبہ تک جانے سے مانع ہوئے، نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے قربانیاں کیس اور سرمونڈ ایا اور صحابہ نے بال
کتر وائے۔ (3) نیز بخاری میں مسور بن مخر مدرض اللہ تعالیٰ عندسے مروی ، کدرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حلق سے پہلے قربانی کی
اور صحابہ کو بھی اسی کا حکم فر مایا۔ (4)

ابوداود و تز مذی و نسائی و ابن ماجه و دارمی حجاج بن عمر وانصاری رضی الله تعالی عنه سے راوی ، که رسول الله



- 1 پ٢، البقرة: ١٩٦.
- 2 پ١٧، الحج: ٢٥.
- € "صحيح البخاري"، كتاب المغازي، باب غزوة الحديبية، الحديث: ١٨٥ ٤، ج٣، ص٧٥.
- 🧣 🐠 "صحيح البخاري"، أبواب المحصر و جزاء الصيد، باب النحر قبل الحلق في الحصر، الحديث: ١٨١١، ج١، ص٩٧٥.

بهرارشرنيعَتْ رْعَشْهُم (6) 🗨 1195

🥌 صلی الله تعالی علیه وسلم نے فرمایا:''جس کی ہڈی ٹوٹ جائے یالنگڑا ہو جائے تو احرام کھول سکتا ہے اور سال آئندہ اُس کو حج کرنا 😸

موگا۔'' (1) اور ابوداود کی ایک روایت میں ہے، یا بیار بوجائے۔(2)

مَسْتَاكُ الْ ﴾ جس نے فج یاعمرہ کااحرام باندھا مگر کسی وجہ سے پورانہ کرسکا، اُسے مُحَصُر کہتے ہیں۔ جن وجوہ سے فج یاعمرہ

نہ کر سکے وہ یہ ہیں: ۞ دثمن _ ۞ درندہ _ ۞ مرض کہ سفر کرنے اور سوار ہونے میں اس کے زیادہ ہونے کا گمان غالب ہے۔

﴿ باتھ یاوَں ٹوٹ جانا۔ ﴿ قید۔ ﴿ عورت کے محرم یا شوہرجس کے ساتھ جارہی تھی اُس کا انتقال ہو جانا۔ ﴿ عدّت۔

۵ مصارف پاسواری کا ہلاک ہوجانا۔ ⊕شوہر حج نفل میں عورت کواورمولی لونڈی غلام کونٹے کردے۔

(عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ صورت مذکوره میں فی الحال تو پیدل چل سکتا ہے مگر آئندہ مجبور ہوجائے گا، اُسے احرام کھول دینا جائز ___(ردالحتار)

مست 😭 💝 عورت کا شوہر یامحرم مرگیا اور وہاں سے مکہ معظمہ مسافت سِنریعنی تین دن کی راہ سے کم ہے تو مُحصر نہیں اور تین دن یازیادہ کی راہ ہے تواگر وہاں تھہرنے کی جگہ ہے تو مُصر ہے در نہیں۔⁽⁵⁾ (عالمگیری،ردالحتار)

مَسْعًا الله الله عنورت نے بغیر شوہر یا محرم کے احرام باندھا تو وہ بھی مُحصر ہے کہ اُسے بغیران کے سفر حرام ہے۔ (⁶⁾ (عالمگيري)

مَسَنَاكُ لَا ﴾ عورت نے جی نفل کا احرام بغیرا جازت شوہر باندھا تو شوہر منع کرسکتا ہے، لہذاا گرمنع کردے تو مُحصر ہے

- 1 "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب الاحصار، الحديث: ١٨٦٢، ج٢، ص ٢٥١.
- 2 "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب الاحصار، الحديث: ١٨٦٣، ج٢، ص٢٥٢.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٥٥٥.
 - 4 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٥.
 - 5 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٥.

و "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٥٥٠.

(حصار، ج١، ص٥٥٥...

ٔ اگر چہاں کے ساتھ محرم بھی ہواور جج فرض کومنع نہیں کرسکتا، البتہ اگر وقت سے بہت پہلے احرام باندھا تو شوہر کھلوا سکتا ہے۔(روالحتار)

مسئ 🗲 🔑 مولیٰ نے غلام کواجازت دیدی پھر بھی منع کرنے کا اختیار ہے اگر چہ بغیر ضرورت منع کرنا مکروہ ہے اور

لونڈی کومولی نے اجازت دیدی تو اُس کے شوہر کورو کئے کاحق حاصل نہیں ہے۔⁽²⁾ (ردالحتار) مستان کی 🔻 عورت نے احرام باندھااس کے بعد شوہر نے طلاق دیدی، تو محصر ہ ہے اگر چہم م بھی ہمراہ موجود

 $(15^{2})_{1}, (15^{2})_{1}$

سَنَاكُ وَ ﴾ مُصر كويه اجازت ہے كہ حرم كو قربانى بھيج دے، جب قربانى ہوجائے گی اس كا احرام كھل جائے گايا قيمت بھيج

دے کہ وہاں جانورخرید کر ذبح کر دیا جائے بغیراس کے احرام نہیں کھل سکتا ، جب تک مکم عظم پہنچ کر طواف وسعی وحلق نہ کرلے، روز ہ رکھنے یاصدقہ دینے سے کام نہ ملے گا اگر چیقربانی کی استطاعت نہ ہو۔ احرام باندھتے وقت اگر شرط لگائی ہے کہ کسی وجہ سے وہاں تک نہ پہنچ سکوں تو احرام کھول دوں گا، جب بھی یہی تھم ہے اس شرط کا کچھ اثر نہیں۔ (4) (عالمگیری، درمختار، روالمحتار)

سیستان و از اور امرہے کہ جس کے ہاتھ قربانی بھیجاس سے مٹہرالے کہ فُلاں دن فُلاں وفت قربانی ذرج ہواوروہ وفت گزرنے کے بعداحرام سے باہر ہوگا پھراگراسی وفت قربانی ہوئی جوٹھبراتھا یااس سے پیشتر فبہااوراگر بعد میں ہوئی اوراُسے اب معلوم ہوا تو ذبح ہے پہلے چونکہ احرام ہے باہر ہوالہٰذا دَم دے۔ محصر کواحرام ہے باہراؔ نے کے لیے حلق شرطنہیں مگر بہتر

ہے۔⁽⁵⁾(عالمگیری وغیرہ)

مستان ال المفرد ہویعیٰ صرف ج یاصرف عمرہ کااحرام باندھاہے توایک قربانی بھیجے اور دو کھیجیں تو پہلی ہی کے ذي سے احرام كل كيا اور قارن ہوتو دو بيج ايك سے كام ند چلے گا۔(6) (در مخار وغيره)

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.
- 3 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.
- 4 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.

و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٥٥٠.

- 5 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٥٥٠.
 - (حسار، ج٤، ص٦، وغيره.

مسئلہ اس قربانی کے لیے حرم شرط ہے بیرونِ حرم نہیں ہو علی، دسویں، گیار هویں، بار هویں تاریخوں کی شرط نہیں،

پہلے اور بعد کو بھی ہو سکتی ہے۔ ⁽¹⁾ (درمختار)

بردی تو ایک ایک ہی ملی اور ذیج کردی تو میں کا ایک ہی ملی اور ذیج کردی تو ہاں ان داموں کی ایک ہی ملی اور ذیج کردی تو ہونا کافی ہے۔ (2) ردالحتار)

<u> مسکان اسکان کی ج</u>ورہ کی ہے دو قربانیاں بھیجیں اور یہ عین نہ کیا کہ یہ جج کی ہے اور بیعمرہ کی تو بھی کچھ مضایقہ نہیں مگر بہتریہ

ہے کہ معین کردے کہ بیر حج کی ہے اور بیاعمرہ کی۔(3) (عالمگیری)

مستان ها تا ہے۔ قارن نے عمرہ کا طواف کیا اور و تو ن عرفہ سے پیشتر مُحصر ہوا تو ایک قربانی بھیجے اور ج کے بدلے ایک جج اورا یک عمرہ کرے دوسرا عمرہ اس پزئیس۔⁽⁴⁾ (عالمگیری)

مَسْتَاكُونَ اللَّهِ الرَّاحِرَامِ مِیں جَی یاعمرہ کسی کی نیت نہیں تھی تو ایک جانور بھیجنا کافی ہے اور ایک عمرہ کرنا ہوگا اور اگر نیت تھی گرید یا دنہیں کہ کا ہے کی نیت تھی تو ایک جانور بھیج و ہے اور ایک جج اور ایک عمرہ کرے اور اگر دوج کا احرام باندھا تو دو دَم دے کراحرام کھولے اور دوعرے کا احرام باندھا اور اوا کرنے کے لیے مکہ معظمہ کو چلا مگر نہ جاسکا تو ایک دَم دے اور چلا نہ تھا کہ مُحصر ہوگیا تو دو دَم دے اور اس کو دوعرے کرنے ہول گے۔ (5) (عالمگیری)

عورت نے جِ نفل کا احرام محلنے کے لیے قربانی کا ذرج ہوجانا ضرور نہیں بلکہ ہراییا کام جواحرام میں منع تھااس کے کرنے سے احرام محلوا دیا ، تو اس کا احرام محلنے کے لیے قربانی کا ذرج ہوجانا ضرور نہیں بلکہ ہراییا کام جواحرام میں منع تھااس کے کرنے سے احرام سے باہر ہوگئی مگر اس پر بھی قربانی یا اس کی قیمت بھیجنا ضرور ہے اور اگر جج کا احرام تھا تو ایک جج اور ایک عمرہ قضا کرنا ہوگا اور اگر شوہر یا محرم کے مرجانے سے محصرہ ہوئی یا جج فرض کا احرام تھا اور بغیر محرم جارہی تھی شوہر نے منع کر دیا تو اس میں بغیر قربانی ذرج ہوئے احرام سے ماہنہیں ہوسکتی۔ (6) (منسک)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٧.
- 2 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٧.
- 3 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥.
 - 4 المرجع السابق.
 - **5** المرجع السابق، ص٥٥٦_٢٥٦.
 - 6 "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الاحصار)، ص٢٢٤٢.

🗳 📶 🐪 – مُصر نے قربانی نہیں بھیجی ویسے ہی گھر کو چلا آیا اور احرام باندھے ہوئے رہ گیا توییجی جائز ہے۔ ⁽¹⁾ 🕯

(درمختار)

مَسِيًّا ﴾ وه مانع جس کی وجہ ہے رُکنا ہوا تھا جا تار ہا اور وقت اتنا ہے کہ فج اور قربانی دونوں یا لے گا، تو جانا فرض ہے اب اگر گیا اور ج پالیا فہما، ورنه عمره كركے احرام سے باہر ہو جائے اور قربانی كا جانور جو بھيجا تھا مل گيا توجو حياہے کرے۔(درمختاروغیرہ)

منگ 💎 مانع جاتا ر ہا اور اس سال حج کیا تو قضا کی نیت نہ کرے اور اب مُفرِ دیرِعمرہ بھی واجب نہیں۔ (3) (عالمگیری)

مَسِيًّا ﴾ الله ﴿ وقوفِع فه كے بعدا حصار نہيں ہوسكتا اورا گر مكہ ہى ميں ہے مگر طواف اور وقو ف عرفہ دونوں پر قادر نہ ہو تو محصر ہےاور دونوں میں سے ایک پر قادر ہے تونہیں۔ (⁴⁾ (عالمگیری وغیرہ)

سَسَالُ ٢٦﴾ مُصر قربانی بھیج کر جب احرام ہے باہر ہوگیااب اس کی قضا کرنا جاہتا ہے تواگر صرف حج کا احرام تھا تو ا یک حج اورایک عمرہ کرےاور قران تھا توایک حج دوعمرےاور بیاختیار ہے کہ قضامیں قران کرے، پھرایک عمرہ یا تینوں الگ الك كرے اورا گراحرام عمره كاتھا تو صرف ايك عمره كرنا موگا۔ (5) (عالمگيري وغيره)

مج نوت ہونے کا بیان

خلیت 🕕 🚽 ابوداود و تر مذی و نسائی وابن ماجه و دارمی عبدالرحن بن پیمر دیلی رضی الله تعالی عند ہے راوی ، کہتے ہیں میں نے رسول الله صلى الله تعالى عليه ولم مانے سُنا: كه وقع عرف ہے، جس نے مُز وَلِف كى رات ميں طلوع فجر مے قبل وقوف عرف باليا أس نے ج پالیا۔' (6)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٧.
- 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٨، وغيره.
- ③ "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١٠ ص٢٥٦.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٥٦، وغيره.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٥٥، وغيره.
- 🧣 🙃 "سنن النسائي"، كتاب مناسك الحج، باب فرض الوقوف بعرفة، الحديث: ٣٠١٩، ص٢٢٨٢.

دار قطنی نے ابن ممر وابن عباس رضی الله تعالی عنهم سے روایت کی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے

مستلگ الگانسته

فرمایا:''جس کاوقوفِعِ فدرات تک میں فوت ہوگیا، اُس کا حج فوت ہوگیا تواب اسے چاہیے کہ عمرہ کر کے احرام کھول ڈالےاور سال آئندہ حج کرے۔'' ⁽¹⁾

مسائل فقهيه

مسئانی ایک جس کا حج فوت ہو گیا لینی وقون عرفہ اسے نہ ملا تو طواف وسعی کر کے سرمونڈ اکر یا بال کتر وا کراحرام سے

باہر ہوجائے اور سال آئندہ حج کرے اوراُس پر دَم واجب نہیں۔⁽²⁾ (جوہرہ)

مَسْنَاكُ کَ اللَّهِ قارن كا فج فوت ہو گیا تو عمرہ کے لیے سعی وطواف کرے پھرایک اور طواف وسعی کر کے حلق کرے اور دَم

قِران جاتار ہااور پچھلاطواف جسے کر کے احرام سے باہر ہوگا اُسے شروع کرتے ہی لبیک موقوف کردے اور سال آئندہ قج کی قضا کرے ،عمرہ کی قضانہیں کیونکہ عمرہ کر چکا۔⁽³⁾ (منسک، عالمگیری)

سَسَعَالُهُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَالاقرباني كاجانورلا ياتهااورتمتع باطل ہوگیا توجانورکوجوجاہے کرے۔(4) (عالمگیری)

سَسَعَانُ کُر کہا ہے۔ عمرہ فوت نہیں ہوسکتا کہ اس کا وقت عمر بھر ہے اور جس کا حج فوت ہو گیااس پر طواف صدر نہیں۔ (5) (عالمگیری وغیرہ)

مَسَعَلَا اوراسی احرام ہے۔ جس کا حج فوت ہوااس نے طواف وسعی کر کے احرام نہ کھولا اوراسی احرام سے سال آئندہ حج کیا توبیہ حج صحیح نہ ہوا۔ ⁽⁶⁾ (منیک)

چ حج بدل کا بیان

مرسول الله صلى الله عباس من الله تعالى عنها سے راوى ، كه رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم نے فر مايا: '' جوابيخ والمدين كى

- 1 "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٩٦، ٢٤، ج٢، ص٥٠٣.
 - 2 "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الفوات ،ص٢٣٢.
- 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث عشر في فوات الحج، ج١، ٢٥٦.

و"لباب المناسك"، (باب الفوات)، ص ٠ ٤٣٠.

- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث عشر في فوات الحج، ج١، ٢٥٦.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث عشر في فوات الحج، ج١، ٢٥٦.
 - 🐒 😘 "لباب المناسك"، (باب الفوات)، ص ٤٣١.

🥏 طرف ہے جج کرے یاان کی طرف ہے تاوان ادا کرے، روزِ قیامت ابرار کے ساتھا ٹھایا جائے گا۔'' (1)

خلیئٹ 🖰 💝 نیز جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے فر مایا: '' جوابینے ماں باپ کی طرف سے

چ کرے تو اُن کا حج پورا کر دیا جائے گا اوراُس کے لیے دس حج کا ثواب ہے۔' ⁽²⁾

ځ 🚅 👚 💝 😁 نیز زیدین ارقم رضی املاتعالی عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی امله تعالیٰ علیه وہلم نے فر مایا: ''جب کوئی اینے ا

والدین کی طرف سے حج کرے گا تو مقبول ہوگا اور اُن کی رُومیں خوش ہوں گی اور پیاللہ (عزوجل) کے نزدیک نیکوکارلکھا

حانگا<u>۔'' (3)</u>

خلینٹ 🧨 🚽 ابوحفص کبیرانس رضی اللہ تعالی عنہ ہے را وی ، کہ اُنھوں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہے سوال کیا ، کہ ہم اینے مُر دول کی طرف سے صدقہ کرتے اور اُن کی طرف سے حج کرتے اور ان کے لیے دُعا کرتے ہیں، آیا یہ اُن کو پہنچا ہے؟ فرمایا: 'نهاں بیشک ان کو پہنچتا ہے اور بے شک وہ اس سے خوش ہوتے ہیں جیسے تمھارے پاس طبق میں کوئی چیز بدید کی جائے تو تم خوش ہوتے ہو۔'' (4)

خلین ۵ 🔑 🕒 صحیحین میں ابن عباس رضی الله تعالی عنها ہے مروی ، کہ ایک عورت نے عرض کی ، یارسول الله! (صلی الله تعالیٰ علیہ ہم میرے باپ برجج فرض ہےاوروہ بہت بوڑھے ہیں کہ سواری پر بیٹے نہیں سکتے کیا میں اُن کی طرف سے حج کروں؟ فرمایا:

خلینٹ 🕥 🔫 ابوداود وتر مذی ونسائی ابی رزین عقیلی رضی الله تعالی عنه سے راوی ، پیه نبی صلی الله تعالی علیه وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے اور عرض کی ، یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) میرے باپ بہت بوڑھے ہیں حج وعمر و نہیں کر سکتے اور ہودج برجھی نہیں بیٹھ سکتے ۔ فر مایا: 'اپنے باپ کی طرف سے حج وعمرہ کرو۔'' (6)

- 1 "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٥، ج٢، ص٣٢٨.
- 2 "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٧، ج٢، ص ٣٢٩.
- 3 "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٤، ج٢، ص٣٢٨.
 - 4 "المسلك المتقسط" للقارى، (باب الحج عن الغير) ، ص٤٣٣.

"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن أخذ في عبادته شيئًا من الدنيا، ج٤، ص١٥.

- 5 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الحج عن العاجز لزمانة ... إلخ، ١٣٣٥،١٣٣٤، ص١٩٧،٦٩٦.
 - 🐒 🍪 "جامع الترمذي"، أبواب الحج، ٨٧ باب، الحديث: ٩٣١، ج٢، ص٢٧٢.

نا۔ ⊙مالی۔ ⊕مرکب۔

مبادت تین قشم ہے: ﴿ لَا مِنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَل

عبادت بدنی میں نیابت نہیں ہوئے یعنی ایک کی طرف سے دوسراا دانہیں کرسکتا۔جیسے نماز ،روز ہ۔

مالی میں نیابت بہرحال جاری ہوسکتی ہے جیسے زکا ہ وصدقہ۔

مرکب میں اگر عاجز ہوتو دوسرااس کی طرف ہے کرسکتا ہے ور نہیں جیسے جے۔

ر ہا تواب پہنچانا کہ جو پھھ عبادت کی اُس کا تواب فلاں کو پہنچے، اس میں کسی عبادت کی تخصیص نہیں ہر عبادت کا تواب دوہ کو دوسر ہے کہ پہنچاسکتا ہے۔ نماز، روزہ، زکاۃ، صدقہ، حج ، تلاوت قرآن، ذکر، زیارت قبور، فرض وفعل سب کا تواب زندہ یا مردہ کو پہنچاسکتا ہے اور بینہ جھا چاہیے کہ فرض کا پہنچا دیا تواپ پاس کیارہ گیا کہ تواب پہنچانے سے اپنچ ایس سے پھھ نہ گیا، لہذا فرض کا تواب پہنچانے سے پھر وہ فرض عود نہ کرے گا کہ بیتوادا کرچکا، اس کے ذمہ سے ساقط ہوچکا ور نہ تواب کس شے کا پہنچا تا ہے۔ (در مختار، روالمحتار، عالمگیری)

اس سے بخوبی معلوم ہو گیا کہ فاتحہ مرقبہ جائز ہے کہ وہ ایصالِ ثواب ہے اور ایصالِ ثواب جائز بلکہ محمود، البتہ کسی معاوضہ پر ایصال ثواب کرنا مثلاً بعض لوگ کچھ لے کر قرآن مجید کا ثواب پہنچاتے ہیں بینا جائز ہے کہ پہلے جو پڑھ چکا ہے اس کا معاوضہ لیا، تو یہ نجے ہوئی اور بچ قطعاً باطل وحرام اورا گراب جو پڑھے گا اس کا ثواب پہنچائے گا تو یہ اجارہ ہوا اور طاعت پر اجارہ باطل ہوا ان تین چیزوں کے جن کا بیان آئے گا۔ (ردالمختار)

و حج بدل کے شرائط

مسئل المجابد كي ليے چند شرطين بين:

﴿ جو حج بدل کراتا ہواس پر حج فرض ہو یعنی اگر فرض نہ تھااور حج بدل کرایا تو حج فرض ادا نہ ہوا، لہذاا گر بعد میں حج اس پر فرض ہوا تو پیر حج اس کے لیے کافی نہ ہوگا بلکہ اگر عاجز ہوتو پھر حج کرائے اور قادر ہوتو خود کرے۔

جس کی طرف ہے جج کیا جائے وہ عاجز ہولیعنی وہ خود جج نہ کرسکتا ہوا گراس قابل ہو کہ خود کرسکتا ہے، تو اس کی طرف نے ہیں ہوسکتا اگر چہ بعد میں عاجز ہوگیا، لہٰذااس وقت اگر عاجز نہ تھا پھر عاجز ہوگیا تو اب دوبارہ جج کرائے۔

€ "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في اهداء ثواب الاعمال للغير، ج٤، ص١٢.١٠.

و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير ج١، ٢٥٧.

🧣 👂 "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في اهداء تُواب الاعمال، ج٤، ص١٣.

چبرل کابیان ج

😙 وقت ِ ج ہے موت تک عذر برابر باقی رہے اگر درمیان میں اس قابل ہو گیا کہ خود نج کرے تو پہلے جو فج کیا جاچکا

ہےوہ نا کافی ہے۔ ہاں اگروہ کوئی ایباعذرتھا،جس کے جانے کی امید ہی نتھی اورا تفا قاً جاتار ہا تووہ پہلا حج جواس کی طرف سے کیا گیا کافی ہے مثلاً وہ نابینا ہے اور حج کرانے کے بعدا نکھیارا ہو گیا تواب دوبارہ حج کرانے کی ضرورت ندرہی۔

② جس کی طرف سے کیا جائے اس نے تھم دیا ہو بغیراس کے تھم کے نہیں ہوسکتا۔ ہاں وارث نے مورث کی طرف ہے کیا تواس میں حکم کی ضرورت نہیں۔

 مصارف اُس کے مال ہے ہوں جس کی طرف سے حج کیا جائے ، لہذا اگر مامور نے اپنامال صرف کیا حج بدل نہ ہوا لینی جب کہ تمریحاً ایسا کیا ہوا دراگر کل یا کثر اپنامال صرف کیا اور جو کچھاس نے دیاہے اتناہے کہ خرچ اس میں سے وصول کر لے گا تو ہو گیااورا تنانبیں کہ جو کچھاپناخرچ کیا ہےوصول کرلے تواگر زیادہ حصہ اس کا ہے جس نے حکم دیا ہے تو ہو گیاور ننہیں۔

سَسَعَالُهُ ٢ ﴾ اپنااوراُس کا مال ایک میں ملادیا اور جتنا اُس نے دیا تھا اُتنایا اس میں سے زیادہ حصہ کی برابرخرچ کیا توجج بدل ہو گیا اور اس ملانے کی وجہ ہے اُس پر تاوان لازم نہ آئے گا بلکہ اپنے ساتھیوں کے مال کے ساتھ بھی ملاسکتا ہے۔ (1) (عالمگیری،ردالحتار)

مسئل سے ہوا است کی تھی کہ میرے مال سے حج کرا دیا جائے اور وارث نے اپنے مال سے تبرّعاً کرایا تو حج بدل نہ ہوا اورا گراینے مال سے حج کیابوں کہ جوخرچ ہوگا تر کہ میں سے لے لےگا تو ہو گیااور لینے کاارادہ نہ ہوتونہیں اوراجنبی نے حج بدل ا پنے مال سے کرادیا تو نہ ہوااگر چہوا پس لینے کا ارادہ ہواگر چہوہ خوداسی کو حج بدل کرنے کے لیے کہہ گیا ہواوراگریوں وصیت کی كدميرى طرف سے فج بدل كراديا جائے اور بينه كہا كەميرے مال سے اور وارث نے اپنے مال سے فج كراديا اگرچه لينے كااراده بھی نہ ہو، ہو گیا۔⁽²⁾ (ردالختار)

مسئلہ کے اپنامال بھی کچھٹر چ کرنے کے لیے مال دیااوروہ کافی تھا مگراُس نے اپنامال بھی کچھٹر چ کیا ہے توجو خرچ ہوا وصول کرلے اور اگر نا کافی تھا مگر اکثر میت کے مال سے صرف ہوا تو میت کی طرف سے ہوگیا، ورنہ نہیں۔ (3) (عالمگیری)

🕤 جس کو حکم دیاوہی کرے، دوسرے سے اُس نے حج کرایا تو نہ ہوا۔

● "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٧٥٦. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير ،مطلب في الاستئجار على الحج، ج٤، ص٢٣. ٢٠٠٠. "ردالمحتار"، كتاب الحج، ج٤، ص٢٨.

🐒 😘 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٧٥٧.

کابیان کی این کابیان

کو اور دور کے اور دور میں کا میں کا میں کا میں کا میں کا میں کا استخص کی کرے اور دو مرگیایا اُس نے انکار کر دیا، اب دوسرے سے فی کرالیا گیا تو جائز ہے۔ (1) (ردالحمار)

📎 سواری پر جج کو جائے پیدل جج کیا تو نہ ہوا، الہذا سواری میں جو کچھ صرف ہوا دینا پڑے گا۔ ہاں اگر خرچ میں کمی

یژی تو بیدل بھی ہوجائے گا۔سواری سے مرادیہ ہے کہ اکثر راستہ سواری پرقطع کیا ہو۔

- 🔕 اس کے وطن سے حج کوجائے۔
- میقات سے فج کا احرام باندھے اگراس نے اس کا حکم کیا ہو۔

الله أس كى نيت سے في كرے اور افضل يہ ہے كه زبان سے بھى أَبَيْكَ عَنْ فُلان (2) كہد لے اور اگراس كانام

بھول گیا ہے تو بینیت کرلے کہ جس نے مجھے بھیجا ہے اس کی طرف سے کرتا ہوں اوران کے علاوہ اور بھی شرائط ہیں جوضمناً مذکور نگ شط بری سیر سے جی خصر میں جی نفل جس سے کا شاہد میں اور ان کے علاوہ اور بھی شرائط ہیں جوضمناً مذکور

ہوگئی۔ پیشرطیں جو مذکور ہو ئیں حج فرض میں ہیں، حج نفل ہو توان میں ہے کوئی شرطنہیں۔⁽³⁾ (ردالمحتار)

<u> استان کی بہ احرام باند سے وقت بینیت ند تھی کہ کس کی طرف سے فج کرتا ہوں تو جب تک فج کے افعال شروع ند کیے</u> اختیار ہے کہ نیت کرلے۔⁽⁴⁾ (روالمحتار)

مسئلہ ک اللہ جس کو بھیجاس سے یوں نہ کے کہ میں نے تھے اپنی طرف سے فج کرنے کے لیے اجیر بنایا یا نوکر رکھا کہ

عبادت پراجارہ کیسا، بلکہ یوں کہے کہ میں نے اپنی طرف سے تخفیے جج کے لیے تھم دیااورا گراجارہ کالفظ کہاجب بھی جج ہوجائے گا مگراُجرت کچھنہ ملے گی صرف مصارف ملیں گے۔⁽⁵⁾ (ردالحتار)

مسئان کی است جب پائی جائیں توجس کی طرف سے کیا گیااس کا فرض ادا ہوااور بیرج کرنے والا بھی تواب یائے گا مگراس جج سے اس کا حجة الاسلام ادانہ ہوگا۔(6)(درمختار،روالمحتار)

مسئلة وي بہتريہ ہے كہ جج بدل كے ليا الله تحص بهيجا جائے جوخود ججة الاسلام (جج فرض) اداكر چكا ہواورا كرا يسے كو

- "ردالمحتار" ، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، مطلب في الفرق بين العبادة والقربة والطاعة، ج؟، ص١٩.
 - قلال کی جگہ جس کے نام پر فج کرنا چاہتا ہے اُس کا نام لے مثلاً لبید عَنْ عَبْدِ الله ۔
 - ٣٠٠٠٠٠ "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب شروط الحج عن الغير عشرون، ج٤، ص٠٢.
- ◘ "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، مطلب في الفرق بين العبادة والقربة والطاعة، ج٤، ص١٨.
 - 5..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير ،مطلب في الاستئجار على الحج، ج٤، ص٢٢.
- 🥱 🔞 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، مطلب في الاستئجار على الحج، ج٤، ص٢٤.

ﷺ بھیجا جس نے خورنہیں کیا ہے، جب بھی حج بدل ہوجائے گا۔ ⁽¹⁾ (عالمگیری) اورا گرخوداس پر حج فرض ہواورا دانہ کیا ہوتواسے

بھیجنا مکروہ تحریمی ہے۔⁽²⁾ (منسک)

مسئلہ وہ اور اس کے ایسے تحق کو بھیجیں جوج کے طریقے اور اُس کے افعال سے آگاہ ہواور بہتریہ ہے کہ آزاد مرد

ہواورا گرآ زادعورت یاغلام یاباندی یامراہتی یعنی قریب البلوغ بچہ سے فج کرایا جب بھی اداہوجائے گا۔⁽³⁾ (درمختاروغیرہ)

مَسِيَّانُ اللَّهِ مِجنون يا كافر (مثلاً وہابی زمانہ وغیرہ) کو بھیجا توادانہ ہوا کہ بیاس کے اہل ہی نہیں۔ (4) (درمختار)

دونوں میں کسی کی طرف سے نہ ہوا بلکہ اس جج کرنے والے کا ہوا اور دونوں کو تاوان دے اور اب اگر جا ہے کہ دونوں میں سے دونوں میں کسی کی طرف سے نہ ہوا بلکہ اس جج کرنے والے کا ہوا اور دونوں کو تاوان دے اور اب اگر جا ہے کہ دونوں میں سے ایک کے لیے کردے تو یہ بھی نہیں کرسکتا اور اگر ایک کی طرف سے لبیک کہا مگر یہ معیّن نہ کیا کہ س کی طرف سے تو اگر یو ہیں مبہم رکھا جب بھی کسی کا نہ ہوا اور اگر بعد میں یعنی افعال جج اداکر نے سے پہلے معیّن کردیا تو جس کے لیے کیا اُس کا ہوگیا اور اگر احرام باندھتے وقت کچھنہ کہا کہ س کی طرف سے ہے نہ معیّن نہ بہم جب بھی یہی دونوں صورتیں ہیں۔ (5) (عالمگیری)

مسئ المسئ ا

مَسِعَالَةُ اللهِ عَلَى اللهِ عَلَى اللهِ اللهِ عَلَى اللهِ المِلْمُلِي اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٥٧.
 - 2 "المسلك المتقسط" للقارى، (باب الحج عن الغير)، ص٥٦.
 - ③ "الدرالمختار" ، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٥٦، وغيره.
 - 4 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٢٦.
 - الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٧٥٧.
 - 6 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٧٥٧.
- و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس دون الاستحسان هنا، ج٤، ص٣١.
 - 🧣 🗗 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب شروط الحج عن الغير عشرون، ج٤، ص٢١.

🗨 مِهَارِشْرِيْعَتْ نُرْصَةُ شُمْ (6) 🇨 💶 (1205)

🦓 📶 🐪 🔻 صرف حج یاصرفعمرہ کوکہاتھا اُس نے دونوں کا احرام باندھا،خواہ دونوں اُسی کی طرف سے کیے یا ایک

اس کی طرف ہے، دوسرااینی پاکسی اور کی طرف ہے بہر حال اس کا حج ادانہ ہوا تا وان دینا آئے گا۔ (1) (عالمگیری)

سَسَعَانُ اللَّهِ ﴿ كَ لِيهُ كَهَا تَعَالُسُ نِهِ عَمِرِهِ كَالرَامِ بِاندَهَا، يَجْرِمَدُ مُعَظَّمَهِ سَهِ حج كاجب بَعِي اُس كَى مُخالفت مِونَى للبذا تاوان دے۔(2)(عالمگیری،ردالحتار)

سَسَانُهُ كَا ﴾ ﴿ حَ لِيكِهَا ثِهَا أُس نِهِ فَحَ كُر نِهِ كَ بعد عمره كيا ياعمره كيا لياعمره كي كياء تو اِس میں مخالفت نہ ہوئی اُس کا فج یاعمرہ ادا ہو گیا۔ گراینے فج یاعمرہ کے لیے جوخر چ کیا خوداس کے ذمہ ہے، بھیجنے والے پڑہیں اورا گراُولٹا کیا لیتن جواُس نے کہا اسے بعد میں کیا تو مخالفت ہوگئ ،اس کا حج یا عمرہ ادا نہ ہوا تاوان دے۔(3) (عالمگیری، ردامجتار)

مَسِعًا ﴾ ایک شخص نے اس سے حج کوکہا دوسرے نے عمرہ کومگران دونوں نے جمع کرنے کا حکم نہ دیا تھا، اس نے دونوں کوجمع کردیا تو دونوں کا مال واپس دےاوراگر یہ کہد یاتھا کہ جمع کرلینا تو جائز ہوگیا۔⁽⁴⁾(عالمگیری)

سَسَانُ اللهِ اللهِ الفَلْ مدے کہ جے فج بدل کے لیے بھیجاجائے، وہ فج کرکے واپس آئے اور جانے آنے کے مصارف سیجنے والے بر بیں اور اگرو ہیں رہ گیا جب بھی جائز ہے۔ (⁵⁾ (عالمگیری)

مَسِيعًا لَهُ ٢٠﴾ ﴿ حج كے بعد قافلہ كے انتظار ميں حتنے دن گھېر نامڙے، إن دنوں كے مصارف بھيخے والے كے ذمہ ہن اور اس سے زائد گھر ناہوتو خوداس کے ذمہ گر جب وہاں سے چلا تو واپسی کےمصارف بھیجنے والے پر ہیں اورا گر مکہ معظمہ میں بالکل رینے کا ارادہ کرلیا تواب واپسی کے اخراجات بھی جیجنے والے پرنہیں۔(6)(عالمگیری)

سَسَالُ الله ﴿ حَسِيرُ وَبِهِ عِيهِ اوه اپنے کسی کام میں مشغول ہو گیا اور حج فوت ہو گیا تو تاوان لازم ہے، پھرا گرسال آئندہ اس نے اپنے مال سے فج کردیا تو کافی ہوگیا اور اگر وقوف عرفہ سے پہلے جماع کیا جب بھی یہی حکم ہے اور اُسے اپنے مال سے سال آئندہ فج وعمرہ کرنا ہوگا اورا گروتوف کے بعد جماع کیا تو فج ہوگیا اوراُس پراینے مال سے دَم دینالازم اورا گرغیرا ختیاری آفت

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٥٨.
- 2 المرجع السابق. و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، مطلب العمل على القياس... إلخ، ج٤، ص٣٦.
 - 3 المرجع السابق.
 - ▲ "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٨٥٠.
 - 😘 🗗 المرجع السابق. 💮 المرجع السابق.

1 ᆕ څېدل کابيان

بهارشرنيعَتْ خِصْهُم (6)

میں مبتلا ہو گیا تو جو کچھ پہلے خرچ ہو چکاہے،اُس کا تاوان نہیں مگروایسی میں اب اپنامال خرچ کرے۔ ⁽¹⁾ (در مختار ، عالمگیری)

مسئلہ ۳۳ ﴾ نزدیک راستہ چھوڑ کر دُور کی راہ سے گیا ، کہ خرج زیادہ ہواا گراس راہ سے حاجی جایا کرتے ہیں تواس کا

اُسےاختیارہے۔⁽²⁾(عالمگیری)

مرض یاد من کی وجہ سے جج نہ کرسکا یا اور کسی طرح پر مُصر ہوا تواس کی وجہ سے جودَ م لازم آیا، وہ اُس کے ذمہ ہے۔ ذمہ ہے جس کی طرف سے گیا اور باقی ہرقتم کے دَم اِس کے ذمہ ہیں۔ مثلاً سلا ہوا کپڑا پہنایا خوشبولگائی یا بغیراحرام میقات سے

ومہ ہے. کن کا طرف سے لیا اور باق ہر م کے دم اِس کے دمہ ہیں۔مثلا شلا ہوا پیرا پہہایا خوسبولاق یا جمیرا کرام میقات آگے بڑھا یاشکار کیا یا جھینے والے کی اجازت سے قران و تہتع کیا۔⁽³⁾ (درمختار)

سَسَعَانَ ٢٥٠﴾ جس پر حج فرض ہو یا قضایا منّت کا حج اُس کے ذمہ ہواور موت کا وفت قریب آگیا تو واجب ہے کہ وصیت کر جائے۔ (4) (منسک)

سَسَوَ الله عاع مَنها كَارِيهِ فَرْضَ ہے اور خداداكيا خدوصيت كى توبالا جماع مَنهارہے، اگر وارث أس كى طرف سے فجِ بدل كرانا چاہے تو كراسكتا ہے۔ ان شاء الله تعالى اميد ہے كدادا ہوجائے اور اگر وصيت كر مَيا تو تہائى مال سے كرايا جائے اگر چداً س نے وصيت ميں تہائى كى قيد ندلگائى۔ شلاً يہ كہمراكہ ميرى طرف سے فج بدل كرايا جائے۔ (5) (عالمكيرى وغيرہ)

> 1 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨. و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٣٦.

- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨.
 - 3 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٣٦-٣٧.
 - 4 "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط" ، (باب الحج عن الغير)، ص٤٣٤.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨.
- آسس "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٩٥٦.

و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس... إلخ، ج٤، ص٣٧.

ج بدل کابیان

يهرارش زيعت رُحشه هم (6) 🇨 🗨 1207

🔌 مَسِيَّاكُةُ ٢٧﴾ 🔻 كوني تخص جج كوچلااورراسته مين يا مكەمعظمەمين وقوف عرفەسے يہلےاُ س كانتقال ہوگيا تواگراُ سي سال اُس پر حج فرض ہوا تھا تو وصیت واجب نہیں اورا گروقوف کے بعدا نقال ہوا تو حج ہوگیا، پھرا گرطواف فرض باقی ہےا دروصیت کر گیا کہ اُس کا حج بورا کر دیاجائے تو اُس کی طرف سے بدنہ کی قربانی کردی جائے۔(1) (ردالحتار)

سَسَعَانُ ۲۸﴾ راستہ میں انتقال ہوا اور حج بدل کی وصیت کر گیا تو اگر کوئی رقم یا جگہ عین کر دی ہے تو اس کے کہنے کے موافق کیا جائے،اگر چہاس کے مال کی تہائی اتنی تھی کہ اُس کے وطن سے بھیجا جاسکتا اوراس نے غیر وطن سے بھیجنے کی وصیت کی یاوہ رقم اتنی تبائی کہاس میں وطن ہے نہیں جایا جاسکتا تو گئن_مگار ہوا اور معین نہ کی تو وطن ہے بھیجا جائے۔⁽²⁾ (ورمختار،ردالمحتار) [•] مَسِينًا ﴾ وصي نے یعنی جس کو کہہ گیا کہ تو میری طرف ہے حج کرادینا،غیر جگہ ہے بھیجااور تہائی اتنی تھی کہ وطن ہے بھیجا جاسکتا ہے تو پیر حج میّت کی طرف ہے نہ ہوا بلکہ وصی کی طرف ہے ہوا، للہٰ امیّت کی طرف سے سیخض دوبارہ اپنے مال سے جج کرائے مگر جب کہ وہ جگہ جہاں سے بھیجا ہے وطن سے قریب ہو کہ وہاں جاکررات کے آنے سے پہلے واپس آسکنا ہوتو ہو جائے گا۔⁽³⁾(عالمگیری،ردالحتار)

مسکان سی مال اس قابل نہیں کہ وطن ہے بھیجا جائے تو جہاں ہے ہو سکے بھیجیں، پھرا گر ج کے بعد کچھ نے رہاجس معلوم ہوا کہ اوراد ہرسے بھیجا جاسکتا تھا تووسی پراس کا تاوان ہے، لہذا دوبارہ حج بدل وہاں سے کرائے جہاں سے ہوسکتا تھا مگر جب که بهت تھوڑی مقدار بچی مثلاً نوشه وغیرہ ۔⁽⁴⁾ (عالمگیری)

مَسِيًّا ﴾ اگراس کے لیے وطن نہ ہوتو جہاں انتقال ہوا وہاں ہے جج کو بھیجا جائے اورا گرمتعدد وطن ہوں تو ان میں جوجگه مکه معظمہ سے زیادہ قریب ہوو ہاں سے۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ اگريہ کہہ گيا کہ تہائی مال ہے ايک حج کرادينا توايک حج کراديں اور چند حج کی وصیت کی اورايک ہے زیادہ نہیں ہوسکتا توایک حج کرادیں اس کے بعد جو بچے وارث لے لیں اوراگریہ وصیت کی کہ میرے مال کی تہائی ہے حج کرایا

- € "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب في حج الصرورة، ج٤، ص٢٧.
- 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب في حج الصرورة، ج٤، ص٢٧.
 - 3 "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص ٢٥٩.

و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس دون الاستحسان هنا، ج٤، ص٢٧.

- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٥٥٠.
 - 🦃 🗗 المرجع السابق.

بھیجا جاسکتا تو جہاں ہے ہو سکے اور کئی حج کی صورت میں اختیار ہے کہ سب ایک ہی سال میں ہوں یا کئی سال میں اور بہتر اول ہے۔ یو ہیں اگر یوں وصیت کی کہ میرے مال کی تہائی ہے ہرسال ایک حج کرایا جائے تواس میں بھی اختیار ہے کہ سب ایک ساتھ ہوں یا ہرسال ایک اور اگریوں کہا کہ میرے مال میں ہزاررویے سے فج کرایا جائے تواس میں جینے فج ہو عیس کرادیے جائیں _⁽¹⁾ (عالمگیری،ردالحتار)

مَستَانُ 👚 🦫 اگروسی ہے بیکہا کہ سی کو مال دے کرمیری طرف سے جج کرادینا تو وصی خوداُس کی طرف سے حج بدل نہیں کرسکتا اور اگریہ کہا کہ میری طرف سے حج بدل کرادیا جائے توصی خود بھی کرسکتا ہے اور اگروسی وارث بھی ہے یاوسی نے وارث کو مال دے دیا کہ وہ وارث حج بدل کرے تو اب باقی ور ثدا گر بالغ ہوں اور ان کی اجازت سے ہوتو ہوسکتا ہے ور نیہ نہیں_⁽²⁾(عالمگیری)

مسئلہ سے کی وصیت کی تھی اُس کے انتقال کے بعد فج کے مصارف نکا لنے کے بعد ور ثذنے مال تقسیم کرلیا، پھر وہ مال جوج کے لیے نکالاتھاضائع ہوگیا تواب جو باقی ہے اُس کی تہائی سے جج کاخرچ نکالیں پھراگرتلف ہوجائے توبقیہ کی تہائی سے وعلیٰ بنراالقیاس بہاں تک کہ مال ختم ہو جائے اور وہ مال وصی کے پاس سے ضائع ہوا ہویااس کے پاس سے جس کو حج کے لیے بھیجنا جا ہتے ہیں دونوں کا ایک حکم ہے۔ ⁽³⁾ (منسک)

کی تہائی ہے دوبارہ وطن سے حج کرنے کے لیے کسی کو جھیجا جائے اورا گراتنے میں وطن نے نہیں جھیجا جاسکتا تو جہاں سے ہو سکے اورا گر دوسرا مخف بھی مرگیا یا پھر مال چوری ہوگیا تو اب جو کچھ مال ہے،اس کی تہائی ہے بھیجا جائے اور یکے بعد دیگرے یو ہیں ، کرتے رہیں، یہاں تک کہ مال کی تہائی اس قابل نہر ہی کہاس ہے حج ہو سکے تو وصیت باطل ہوگئی اورا گروقوف عرفیہ کے بعدم ا تووصیت پوری ہوگئی۔⁽⁴⁾ (درمختاروغیرہ)

و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس دون الاستحسان هنا، ج٤، ص٢٧.

^{€ &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٥٩.

^{2 &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٥٩.

^{3 &}quot;لباب المناسك" و "المسلك المتقسط" ، (باب الحج عن الغير)، ص ٤٥٥ ـ ٥٥٠.

^{🧣 🚯 &}quot;الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٣٧، وغيره.

ﷺ مسئلہ اس جسے بھیجا تھاوہ وقوف کر کے بغیرطواف کیے واپس آیا تو میّت کا فج ہو گیا مگراہے عورت کے پاس جانا حلال نہیں، أسے حكم ہے كما يخرج سے واپس جائے اور جوافعال باقی ہیں اداكر ، (1) (عالمگيري وغيره)

مسیقانہ سے انکے سے کسی کواس سال حج بدل کے لیے مقرر کیااورخرچ بھی دے دیا مگروہ اس سال نہ گیا،سال آئندہ

جا کرادا کیا تو ہوگیا اُس رتاوان نہیں۔⁽²⁾(عالمگیری)

مَسِعًا ﴾ ﴿ جِسے بھیجاوہ مکہ معظّمہ میں جا کر بیار ہو گیااور سارا مال خرج ہو گیا توصی کے ذمّہ واپسی کے لیےخرج بھیجنا

لازمنہیں۔⁽³⁾(عالمگیری)

مسئل المرتبين كدوسركونيج كے ليےمقرر كياوہ بيار ہوگيا تو أسے بيا ختيار نہيں كدوسركونيج دے، ہاں اگر بھيخے والے نے اُسے اجازت ویدی ہوتو دوسرے کو بھیج سکتا ہے۔ لہذا بھیجتے وقت جا ہے کہ یہ اجازت ویدی جائے۔ (4) (عالمگیری، درمختار)

ہے۔ ⁽⁵⁾(عالمگیری)

<u> مسئلہ ۲۰۱۳ ہے۔</u> احرام کے بعدراستہ میں مال چوری گیا، اُس نے اپنے پاس سے خرچ کر کے مج کیا اور واپس آیا تو بغیر تکم قاضی بھیجنے والے سے وصول نہیں کرسکتا۔ (6) (عالمگیری)

<u> میں تا کی اور کو بھیجے دیں گرجب کہ حصر</u> اور وہ شخص میری طرف سے حج کرےاور وہ شخص مرگیا تو کسی اور کو بھیج دیں مگرجب کہ حصر کردیا ہوکہ وہی کرے دوسرانہیں تو مجبوری ہے۔⁽⁷⁾(عالمگیری)

سَسَعًا ﴾ ایک شخص نے اپی طرف ہے فج بدل کے لیے خرج دے کر جیجا، بعداس کے اس کا انقال ہو گیا اور فج کی وصیت نہ کی تو وارث اُس تخص سے مال واپس لے سکتے ہیں اگر چداحرام باندھ چکا ہو۔⁽⁸⁾ (درمختار)

- "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٠٢٦.
 - 2 المرجع السابق. 3 المرجع السابق.
 - 4 المرجع السابق. و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٢٦.
- 5 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص ٢٦.
 - 6 المرجع السابق. 5 المرجع السابق.
 - 🐒 🔞 "الدرالمختار" ، كتاب الحج، باب الحج عن الغير ، ج ٤ ، ص . ٤ .

ﷺ مصارفِ فج سے مرادوہ چیز ہیں جن کی سفر فج میں ضرورت پڑتی ہے۔ مثلاً کھانا یانی، راستہ میں پہننے کے

کیڑے،احرام کے کیڑے،سواری کا کرایہ،مکان کا کرایہ،شکیزہ،کھانے پینے کے برتن،جلانے اورسرمیں ڈالنے کا تیل، کیڑے

دھونے کے لیے صابون، پہرادیے والے کی اُجرت، جامت کی بنوائی غرض جن چیزوں کی ضرورت پڑتی ہے اُن کے اخراجات متوسط کہ نہ فضول خرچی ہو، نہ بہت کمی اوراً س کو بیاختیار نہیں کہ اس مال میں سے خیرات کرے یا کھا نافقیروں کو دیدے یا کھاتے

وقت دوسرول کوبھی کھلائے ہاں اگر بھیجنے والے نے ان اُمور کی اجازت دیدی ہوتو کرسکتا ہے۔ (1) (لباب)

مسئل کی ہے۔ جس کو بھیجا ہے اگر وہ اپنا کام اپنے آپ کیا کرتا تھا اور اب خادم سے کام لیا تو اس کاخرچ خود اس کے ذمہےاورا گرخوذہیں کرتا تھا تو جھنے والے کے ذمہہ⁽²⁾(عالمگیری)

سن اگرچہ وہ کتی ہی تھوڑی می چیز ہو، یہاں تک کہ تو شدمیں سے جو کچھ بچاوہ اور کیڑے اور برتن غرض تمام سامان واپس کردے بلکہ اگر شرط کر لی ہو کہ جو بچے گاواپس نہ کروں گا جب بھی کہ بیشرط باطل ہے مگر د وصورتوں میں ،اول بیا کہ جیسے والا اسے وکیل کردے کہ جو بچے اُسے اپنے کو تو ہمبہ کردینا اور قبضہ کر لینا، دو م میرکہ اگر قریب بمرگ ہوتو اُسے وصیت کردے کہ جو بچے اُس کی میں نے مجھے وصیت کی اور اگریوں وصیت کی کہ وصی ہے کہہ دیا کہ جو بیجے وہ اُس کے لیے ہے جو بھیجا جائے یا تو جسے جاہے دیدے تو یہ وصیت باطل ہے وارث کاحق ہو جائے گااورواپس کرناپڑےگا۔⁽³⁾(درمختار،روالحتار)

مستان 🗥 🐉 یوصیت کی کهایک ہزارفُلاں کو دیا جائے اور ایک ہزارمسکینوں کواورایک ہزار سے حج کرایا جائے اور تر کہ کی تہائی کل دو ہزار ہے تو دو ہزار میں برابر برابر کے تین جھے کیے جا ئیں ۔ایک حصہ تو اُسے دیں جس کے لیے کہااور حج و مساكين كے دونوں حصے ملاكر حتنے ہے جج ہوسكے جج كرايا جائے اور جو بيچ مسكينوں كوديا جائے۔(4) (عالمگيري وغيره)

اُسے پہلے کریں۔اُس سے جو بچے دوسرے میں صرف کریں ،فرض اور منّت کی وصیت کی تو فرض مقدم ہےاورنفل و نذر میں نذر

^{1 &}quot;لباب المناسك"، (باب الحج عن الغير، فصل في النفقة)، ص٥٦ ٥٤ ـ ٥٧.٤.

^{2 &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص ٢٦.

^{€ &}quot;الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس... إلخ، ج٤، ص٣٨.

^{🧣 🐠 &}quot;الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٦٠، وغيره.

مقدم ہے اورسب فرض یانفل یا واجب ہیں تو مقدم وہ ہے جسے اُس نے پہلے کہا۔ (1) (روالحتار)

هٔدی کابیان

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ وَمَن يُعَظِّمُ شَعَآبٍ رَاللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقُوى الْقُلُوبِ ﴿ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ إِلَّى الْجَلِّمُ سَمَّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ

الْعَتِيْقِ صَّ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَامَنْسَكَّالِّيَنُ كُرُوااسْمَ اللَّهِ عَلَىمَا مَ ذَقَهُمُ مِّنُ بَهِيمَةِ الْاَنْعَامِ ﴿ ﴾ (2)

اور جواللہ (عزد جس) کی نشانیوں کی تعظیم کرے تو بیداوں کی پر ہیز گاری سے ہے،تمھارے لیے چو پایوں میں ایک مقرر م میعاد تک فائدے ہیں پھران کا پہنچنا ہے اِس آزاد گھر تک۔اور ہراُمت کے لیے ہم نے ایک قربانی مقرر کی کہ اللہ (عزوجل) کا نام ذکر کریں،اُن بے زبان چو پایوں پر جواُس نے انھیں دیے۔

اورفرما تاہے:

﴿ وَالْبُلُنَ جَعَلَنُهَا لَكُمْ مِّن شَعَايِرِ اللهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۚ فَاذَكُرُوااسُمَ اللهِ عَلَيْهَا صَوَآفَ ۚ فَإِذَا وَجَبَتُ جُنُوبُهَا فَكُمُ وَالسُمَ اللهِ عَلَيْهَا صَوَآفَ عَلَيْهَا صَوَا لَهُ عَالَكُمْ فَيهَا فَكُمُ اللهُ اللهُ عَلَيْهَا وَاللهُ عَلَيْهَا لَكُمْ وَلَا لِمُعَالَكُمْ لَهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهَا لَكُمْ وَلَا فِي اللهُ عَلَيْهَا لَكُمْ وَلَا لِللهُ عَلَيْهَا وَلَا فِي اللهُ عَلَيْهَا لَهُ التَّقُولِي مِنْكُمُ اللهُ اللهُ عَلَيْهَا اللهُ عَلَيْهَا هَاللهُ اللهُ عَلَيْهَا وَلَا فِي مَنْكُمُ وَلِي مِنْكُمُ اللهُ اللهُ عَلَيْهَا وَلَا فِي اللهُ عَلَيْهَا وَلَا لِمُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ اللهُ

اور قربانی کے اونٹ، گائے ہم نے تمھارے لیے اللہ (عزوجل) کی نشانیوں سے کیے، تمھارے لیے ان میں بھلائی ہے ہوتو اُن پراللہ (عزوجل) کا نام لو، ایک پاؤل بندھے، تین پاؤل سے کھڑے پھر جباُن کی کروٹیس گرجا کیس تو اُن میں سے خود کھا وَ اور قناعت کرنے والے اور بھیک ما ملکنے والے کو کھلاؤ۔ یو ہیں ہم نے ان کو تمھارے قابو میں کردیا کہتم احسان مانو، اللہ (عزوجل) کو ہر گزنداُن کے گوشت پہنچتے ہیں، نہ اُن کے خون، ہال اُس تک تمھاری پر ہیزگاری پہنچتی ہے۔ یو ہیں اُن کو تمھارے قابو میں کردیا کہتم اللہ (عزوجل) کی بڑائی بولو، اُس پر کہ اُس نے تمھیں ہدایت فرمائی اور خوشخری پہنچا دونیکی کرنے والوں کو۔

^{1 &}quot;رد المحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص ٤١.

^{2} پ١١، الحج: ٣٢ ـ ٣٤.

^{🐒 😘}پ١١٠ الحج: ٣٦ ـ ٣٧.

بدى كابيان

احاديث

خلینے 🔰 🐣 صحیحین میں ام المونین صدیقہ رض اللہ تعالیٰ عنہا سے مروی ، کہتی ہیں: میں نے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم کی قربانیوں کے ہارا بنے ہاتھ سے بنائے پھرحضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے اُن کے گلوں میں ڈالےاوراُن کے کوہان چیرےاور حرم

خلینٹ 🕇 💝 مسلم شریف میں جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، که رسول الله صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے وسویں فری الحجہ کو عائشہرض اللہ تعالی عنہا کی طرف سے ایک گائے ذبح فر مائی۔اور دوسری روایت میں ہے۔کہاز واج مُطہر ات کی طرف سے حج میں گائے ذریح کی۔⁽²⁾

خلینٹ سے مسلم شریف میں جاہر رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہتے ہیں میں نے نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کوفر ماتے سُنا: کن جب تو مجور ہوجائے تو ہدی پرمعروف کے ساتھ سوار ہو، جب تک دوسری سواری نہ ملے '' (3)

🕹 پیٹ 🧨 💝 مسلم میں ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہا سے مروی ، که رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ دہلم نے سولہ اونٹ ایک شخص کے ساتھ حرم کو بھیجے ۔انھوں نے عرض کی ،ان میں سے اگر کوئی تھک جائے تو کیا کروں؟ فرمایا:''اُسے نحرکر دینااورخون سے اُس

کے یاوُں رنگ دینااور پہلو پراُسکا حیمایالگادینااوراس میں سےتم اورتمھارےساتھیوں میں سےکوئی نہ کھائے۔'' (4)

خلایث 🚳 🐣 تصحیحیین میں علی رضی الله تعالیءنہ سے مروی ، کہتے ہیں مجھے رسول الله صلی الله تعالی علیہ وہلم نے اپنی قریانی کے جانوروں پر مامورفر مایااور مجھے حکم فرمایا: که ''گوشت اور کھالیں اور بھول تضدق کردوں اور قصاب کواس میں سے پچھ نہ دوں۔ فرمایا کہ ہم اُسے اپنے پاس سے دیں گے۔'' (5)

خلینٹ 🔰 🐣 ابوداودعبداللہ بن قرط رض اللہ تعالی عنہ ہے راوی ، کہ یانچے یا چھاونٹ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کی خدمت میں قربانی کے لیے پیش کیے گئے، وہ سب حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وئم) سے قریب ہونے لگے کہ کس سے شروع فرما کیں (یعنی ہر

- "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب استحباب بحث الهدى إلى الحرم ...إلخ، الحديث: ٣٦٢_(١٣٢١)، ص٦٨٦.
- 2 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب جواز الاشتراك في الهدى ... إلخ، الحديث: ٥٦٦ـ (١٣١٩)، ٥٥٧ (١٣١٩)، ص١٨٥٠٦٨.
 - 3 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب جواز ركوب البدنة ... إلخ، الحديث: ١٣٢٤، ص٦٨٨.
 - 4 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب مايفعل بالهدى إذا عطب في الطريق، الحديث: ١٣٢٥، ص٦٨٨.
 - 🕏 😘 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الصدقة بلحوم الهدى ... إلخ، الحديث: ١٣١٧، ص٦٨٣.

ایک کی بیخواہش تھی کہ پہلے مجھے ذک فرما ئیں یااس لیے کہ پہلے جسے چاہیں ذک فرما ئیں) پھر جباُن کی کروٹیس زمین سے لگ گئیں تو فرمایا:''جوچاہے ٹکڑالے لے۔'' (1)

مسئ ای استان کی اس جانور کو کہتے ہیں جوقر بانی کے لیے حرم کو لے جایا جائے۔ یہ تین قشم کے جانور ہیں: ﴿ بَری، اس مِیں بھیڑا اور وُ نبہ بھی داخل ہے۔ ﴿ گائے ، بھینس بھی اسی میں شار ہے۔ ﴿ اونٹ ہِری کا اونی درجہ بکری ہے تواگر کسی نے حرم کوقر بانی بھیجنے کی منّت مانی اور معتین نہ کی تو بکری کافی ہے۔ (2) (درمختار وغیرہ)

مَسَنَا لَهُ اللَّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَي عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَيْهِ عَلْمَ عَلَيْهِ عَلَيْ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ ع

مسئل سے ایک سال کا مگر بھیٹر وُنبہ چی مہینے کا اگر سال بھروالی کی مثل ہوتو ہوسکتا ہے اور اونٹ گائے میں یہاں بھی سات آ دمی کی شرکت ہوسکتا ہے۔ اور اونٹ گائے میں یہاں بھی سات آ دمی کی شرکت ہوسکتا ہے۔ (درمختاروغیرہ)

سَمَعَ النَّهُ ﴾ اونٹ، گائے کے گلے میں ہار ڈال دینا مسنون ہے اور بکری کے گلے میں ہار ڈالنا سنت نہیں مگر صرف شکرانہ یعنی متع وقران اور فنل اور منت کی قربانی میں سنت ہے،احصار اور جرمانہ کے دَم میں نہ ڈالیں۔(5) (عالمگیری)

سَمَّا الْهُوْلَ ہواور حرم کو ہی گئی گیا ہواور اگر حرم کو ہی گئی گیا ہواور اگر حرم کو ہی گئی گیا ہواور اگر حرم کونہ پہنچا تو خوذ ہیں کھا سکتا، فقرا کا حق ہے اوران تین کے علاوہ نہیں کھا سکتا اور جسے خود کھا سکتا ہے، مالداروں کو بھی کھلا سکتا ہے، نہیں تو نہیں اور جس کو کھانہیں سکتا اس کی کھال وغیرہ سے بھی نفع نہیں لے سکتا ہے (6) (درمختار)

سَسَنَا اَنْ اَلَّهُ اللَّهِ مَعْ وقران کی قربانی ایا مِنح سے پہلے نہیں ہوسکتی اوران کے بعد کی (⁷⁾ تو ہوجائے گی مگر دَم لازم ہے کہ تاخیر جائز نہیں اوران دوکے علاوہ کے لیے کوئی دن معیّن نہیں اور بہتر دسویں ہے۔حرم میں ہوناسب میں ضروری ہے،منی کی

- 1 "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، ١٨ _ باب ، الحديث: ١٧٦٥، ج٢، ص ٢١١.
 - 2 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص ٤١، وغيره.
 - 3 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٢.
 - الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٢، وغيره.
- 5..... "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدي، ج١، ص٢٦١.
 - 6 "الدرالمختار" ، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤ ، ص٥٥ .
- 🦰 بہار شریعت کے نسخوں میں عبارت اس طرح ہے: تمتع وقران کی قربانی دسویں سے پہلے نہیں ہوسکتی اور دسویں کے بعد کی.... یہاں لفظ پھی ''دسویں'' کتابت کی غلطی ہے جو کہ کتب فقہ کوسا منے رکھتے ہوئے درست کر دی گئی ہے۔علمیہ

جبکه منّت میں حرم کی شرط نه لگائی۔⁽¹⁾ (درمختار ، ردالمختار ، عالمگیری)

سَتَانُ کی ہے۔ ہدی کا گوشت حرم کےمسا کین کودینا بہتر ہے،اس کی ٹیل اور چھول کوخیرات کردیں اور قصاب کواس کے

گوشت میں سے کچھ نید یں ۔ ہاں اگراُ سے بطور تقید تی دیں تو حرج نہیں ۔ ⁽²⁾ (درمختار وغیرہ) سنتان کی گیا ہوا در خری ہے جانور پر بلاضر ورت سوار نہیں ہوسکتا نہاس پر سامان لا دسکتا ہےا گریے نفل ہوا در ضرورت کے وقت

سوار ہوا پاسامان لا دااوراس کی وجہ ہے اُس میں کچھ نقصان آیا تواتنا محتاجوں پرتضد ؓ ترے۔⁽³⁾(عالمگیری)

سَسَانُ ٩﴾ اگروہ دودھ والا جانور ہے تو دودھ نہ دو ہے اورتھن بر ٹھنڈا یانی چیڑک دیا کرے کہ دودھ موقوف ہوجائے ا اورا گرذیج میں وقفہ ہواور نہ دو ہے ہے ضرر ہوگا تو دوہ کر دورھ خیرات کر دے اورا گرخود کھالیایاغنی کو دیدیایا ضائع کر دیا تو اتناہی دودھ یااس کی قیمت مساکین برتصدق کرے۔(4) (عالمگیری،رداکختار)

سَسَانُ الله الروه بحير جني تو بحيه كوتصدق كرد بها أسي بهي أس كے ساتھ وذبح كرد بيا اورا كر بحيركو ن الايا ملاك كرديا تو قیمت کوتصدق کرےاوراس قیمت سے قربانی کا جانورخریدلیا تو بہتر ہے۔⁽⁵⁾ (عالمگیری)

مست ان اس کے جانور کو تو دوسرے کے جانور کو ذبح کر دیا اور دوسرے نے اُس کے جانور کو تو دونوں کی قربانیاں پروگئن_{ا - (6)} (منسک)

سَتَانُ ١٦﴾ اگر جانور حرم کولے جار ہاتھا راستہ میں مرنے لگا تو اُسے وہیں ذرج کر ڈالے اور خون سے اُس کا ہار رنگ دےاورکو ہان برجھایالگادے تا کہ اُسے مالدارلوگ نہ کھا ئیں ،فقراہی کھا ئیں پھراگروہ نفل تھا تو اُس کے بدلے کا دوسرا جانور لے جانا ضرور نہیں اور اگر واجب تھا تو اس کے بدلے کا دوسرالے جانا واجب ہے اور اگر اس میں کوئی ایساعیب آگیا کے قربانی

1 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٧.

و"الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدي، ج١، ص ٢٦١.

- 2 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٧٤، وغيره.
- 3 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدي، ج١، ص ٢٦١.
 - 4 المرجع السابق. و "ردالمحتار" كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٠.
- الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدى، ج١، ص ٢٦١.
 - 😘 🌀 "لباب المناسك"، (باب الهدايا)، ص٤٧٤.

ﷺ کے قابل نہ رہا تواہیے جو چاہے کرےاوراُس کے بدلے دوسرالے جائے جب کہ واجب ہو۔⁽¹⁾ (درمختار وغیرہ)

سَسَالُ الله جانور حرم کو پہنچ گیا اور وہاں مرنے لگا تواسے ذبح کر کے مساکین پرتضدق کرے اور خود نہ کھائے اگر چہ

نفل ہواوراگراس میں تھوڑا سا نقصان پیدا ہوا ہے کہ ابھی قربانی کے قابل ہے تو قربانی کرے اورخود بھی کھا سکتا ہے۔ 😩 (عالمگیری)

دونوں کی قربانی کردےاوراگر پہلے کی قربانی کی اور دوسرے کو چھٹے ڈالا تو یہ بھی ہوسکتا ہےاورا گر بچھلے کوذیح کیااور پہلے کو چھٹے ڈالا تو اگروہ اُس کی قیت میں برابرتھا یازیادہ تو کافی ہےاور کم ہے تو جتنی کمی ہوئی صدقہ کردے۔(3) (عالمگیری)

حج کی مَنْت کا بیان

حج کی منت مانی تو حج کرناواجب ہوگیا، کفارہ دینے ہے بری الذمّہ نہ ہوگا۔خواہ یوں کہا کہ اللہ(عز بیل) کے لیے مجھہ یر حج ہے باکسی کام کے ہونے بر حج کومشر وط کیااور وہ ہوگیا۔ ⁽⁴⁾(عالمگیری)

مَسِيّانُ اللَّهِ احرام باندھنے یا کعبہ معظمہ یا مکہ مکرمہ جانے کی منّت مانی تو حج یا عمرہ اُس پر واجب ہےاور ایک کومعین کرلینائس کے ذمہے۔⁽⁵⁾(عالمگیری)

مَسِيًّا كَانَ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ عَلَى مِنْت مانى تو واجب ہے كہ گھر سے طواف ِفرض تك پيدل ہى رہے اور پوراسفر يا اكثر سواری پر کیا تو دّم دےاورا گرا کثر پیدل رہااور پچھسواری پر تواشی حساب سے بکری کی قیمت کا جتنا حصہاس کے مقابل آئے خیرات کرے۔ پیدل عمرہ کی منّت مانی تو سرمونڈانے تک پیدل رہے۔⁽⁶⁾ (درمختار،ردالحتار)

مَسِيَّالُهُ اللَّهِ اللَّهِ سَالَ مِينَ حِتْنَ فِح كَي منَّت ما في سب واجب ہو گئے۔(7) (عالمگیری)

- 1 "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص ٤٩، وغيره.
- 2 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدي، ج١، ص ٢٦١.
 - 3 المرجع السابق.
- 4 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٢.
 - **5** المرجع السابق.
 - 6 "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٥٥.
- 🧣 🕡 "الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٣.

🕏 مسکانی سے لوٹڈی غلام مُرِم کوخریدنا جائز ہے اور مشتری کو اختیار ہے کہ احرام توڑوا دے اگر چہ انھوں نے اپنے پہلے

مولی کی اجازت ہے احرام باندھے ہوں اور احرام توڑنے کے لیے فقط بیکہددینا کافی نہیں کہ احرام توڑدیا بلکہ کوئی ایسا کام کرنا ضروری ہے جواحرام میں منع تھا مثلاً بال یا ناخن ترشوا نا یا خوشبولگا نا۔ اِس کی ضرورت نہیں کہ حج کے افعال بجالا کراحرام توڑ ہے اور قربانی بھیجنا بھی ضروری نہیں مگر آزادی کے بعد قربانی اور حج وعمرہ واجب ہے اگر حج کا احرام تھا اور عمرہ اگر عمرہ کا احرام تقا_⁽¹⁾ (درمختار ردامجتار)

سَسَانُ ۵ ﴾ افضل پیہے کہاس خریدی ہوئی لونڈی کااحرام جماع کےعلاوہ کسی اور چیز سے کھلواد ہے اور جماع سے بھی احرام کھل جائے گا مگر جب کہائے بیمعلوم نہ ہو کہ احرام سے ہے اور جماع کرلیا تو حج فاسد ہوجائے گا۔(2) (درمختار،ردالحتار) سَسَانُ 🔰 🦫 اگرمولیٰ نے احرام کھلوا دیا پھراس نے باندھا پھر کھلوا دیا،اگر چند باراسی طرح ہوا پھراسی سال احرام باندھ کر حج کرلیا تو کافی ہو گیااورا گرسال آئندہ میں حج کیا تو ہر باراحرام کھولنے کا ایک ایک عمرہ کرے۔(3) (عالمگیری)

مستان کے 🔑 احرام کی حالت میں نکاح ہوسکتا ہے کسی احرام والی عورت سے نکاح کیا توا گرنفل کا احرام ہے تھلوا سکتا ہے اور فرض کا ہے تو دوصور تیں ہیں۔اگر عورت کامحرم ساتھ میں ہے تونہیں کھلواسکتا اور محرم ساتھ میں نہ ہوتو فرض کا احرام بھی کھلوا سكتا ہے اورا گراس كامُحرمہ ونامعلوم نہ ہواور جماع كرليا توجج فاسد ہو گيا۔ (4) (عالمگيري)

سَيِّنَاكُ ﴾ مسافرخانه بنانا، حج نفل ہےافضل ہےاور جج نفل صدقہ ہےافضل یعنی جب کہاس کی زیادہ حاجت نہ ہو ورنہ حاجت کے وقت صدقہ حج سے افضل ہے۔

علامہ شامی نے نہایت نفیس حکایت اس بیان میں نقل فرمائی کہ ایک صاحب ہزار اشرفیاں کیکر حج کوجارہے تھے، ایک سیّدانی تشریف لائیں اورا بین ضرورت ظاہر فرمائی۔انھوں نے سب اشرفیاں نذر کردیں اورواپس آئے،جب وہاں کےلوگ جج ہے واپس ہوئے تو ہر حاجی ان سے کہنے لگا ، اللہ (عز وجل)تمہارا حج قبول فر مائے ۔ انھیں تعجب ہوا کہ کیا معاملہ ہے ، میں تو حج کو گیا نہیں، بیلوگ ایسا کیوں کہتے ہیں؟ خواب میں زیارتِ اقدس ہے مشرف ہوئے،ارشادفر مایا: کیا مجھے لوگوں کی بات سے تعجب ہوا؟ عرض کی، ہاں یارسول اللہ! (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) فر ما یا کہ: '' تو نے جومیری اہلبیت کی خدمت کی ،اس کی عوض میں اللہ عزوجل

^{1 &}quot;الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٥٥.

^{2 &}quot;الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٥٣.

الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٤.

^{🦃 🚯} المرجع السابق.

کے نے تیری صورت کا ایک فرشتہ پیدا فر مایا، جس نے تیری طرف سے حج کیااور قیامت تک حج کرتارہے گا۔'' (1)

مست ﴿ وَمَانَ اللَّهُ عَمَامٌ كُنَا مُولِ كَا كَفَارِهِ ہِے لِعَنْ فَرَائَضَ كَي تَا خِيرِ كَا جُو كُناهِ اس كے ذمه ہے وہ ان شاءاللہ تعالی محوموجائے گا،

واپس آ کرادا کرنے میں پھر دیر کی تو پھریہ نیا گناہ ہوا۔ (2) (درمختار)

مَسِعًا ﴾ وقوف عرفہ جعہ کے دن ہوتواس میں بہت ثواب ہے کہ بید دوعیدوں کا اجتماع ہے اوراس کولوگ جج اکبر

کہتے ہیں۔

اللُّهُمَّ ارْزُقْنَا زِيَارَةَ حَرَمِكَ وَحَرَم حَبِيبُكَ بجَاهِم عِنْدَكَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَى الله وَاَصْحَابِهِ وَابْنِهِ وَحِزُبِهِ ٱجْمَعِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِينَ طُ

فضائل مدينه طيبه

خلیث الله صلی الله تعالی علیہ مسلم وتر مذی میں ابو ہر رہے وضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، رسول الله صلی الله تعالی علیہ وسلم نے فرما مایا که ''مدینے کی تکلیف وشدّت برمیری اُمت میں سے جوکوئی صبر کرے، قیامت کے دن میں اس کاشفیع ہوں گا۔'' (3)

مدینه طیبه کی اقامت

خلینٹ ۳ و ۳ 🔑 نیزمسلم میں سعدرضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ، کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) نے فرمایا: ''مدینہ لوگول کے لیے بہتر ہےاگر جانتے ، مدینہ کو جو شخص بطور اعراض جھوڑ ہے گا ،اللہ تعالیٰ اس کے بدلے میں اُسے لائے گا جواس ہے بہتر ہوگا اورمدينه كى تكليف ومشقت پر جو ثابت قدم رہے گاروز قيامت ميں اس كاشفيع ياشهيد ہول گا-' (4)

اورایک روایت میں ہے،'' جو شخص اہل مدینہ کے ساتھ برائی کا ارادہ کرے گا،الله (عزوجل) اُسے آگ میں اس طرح کیصلائے گا جیسے سیسہ یااس طرح جیسے نمک یا نی میں کھل جاتا ہے۔'' ⁽⁵⁾ اسی کی مثل بزار نے عمر رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی۔ خلینٹ 🕜 🐣 صحیحین میں سفیان بن ابی زہیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، کہتے ہیں ، میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کو

- 1 "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، مطلب في تفصيل الحج على الصدقة، ج٤، ص٤٥.
 - 2 "الدرالمختار" ، كتاب الحج، باب الهدى، مطلب في تكفير الحج الكبائر، ج٤، ص٥٥.
- 3 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الترغيب في سكني المدينة ... إلخ، الحديث: ١٣٧٨، ص٢١٦.
 - 4 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب في فضل المدينة ... إلخ، الحديث: ١٣٦٣، ص ٩٠٧.
- 🧣 🗗 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب في فضل المدينة ...إلخ، الحديث: ٤٦٠ ـ (١٣٦٣)، ص ٧١٠.

فضائل مدينهطيب

فرماتے سُنا: کہ'' بیمن فتح ہوگا، اس وقت کچھلوگ دوڑتے ہوئے آئیں گے اور اپنے گھر والوں کو اور ان کو جو اُن کی اطاعت میں ہیں لے جائیں گے حالانکہ مدینہ اُن کے لیے بہتر ہے اگر جانتے۔ اور شام فتح ہوگا کچھلوگ دوڑتے آئیں گے اپنے گھر والوں اور فرمانیر داروں کو لیے جائیں گے حالانکہ مدینہ ان کے لیے بہتر ہے اگر جانتے۔ اور عراق فتح ہوگا کچھلوگ جلدی کرتے آئیں گے اور اپنے گھر والوں اور فرمانبر داروں کو لیے جائیں گے حالانکہ مدینہ ان کے لیے بہتر ہے اگر جانتے۔'' (1)

خلین کی بھر اور میں اللہ تعالی عدی میں ابی اُسید ساعدی رضی اللہ تعالی عند سے راوی ، کہتے ہیں ہم رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہم کے ہمراہ حمزہ رضی اللہ تعالی عند کی قبر پر حاضر سے (ان کے گفن کے لیے صرف ایک کملی تھی) جب لوگ اسے تھینج کر اُن کا موقع چھیا تے قدم کھل جاتے اور قدم پر ڈالتے تو چبرہ کھل جاتا ۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فرمایا: 'اس کملی سے موقع چھیا دواور پاؤں پر بید گھاس ڈال دو'' پھر حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے سراقد س اٹھایا ، صحابہ کورونا پایا۔ ارشاد فرمایا: ''لوگوں پر ایک زمانہ آئے گا کہ سرسبز ملک کی طرف چلے جائیں گے ، وہال کھانا اور لباس اور سواری اُھیں ملے گی پھروہاں سے اپنے گھر والوں کو کھو تھیں گے کہ ہمارے پاس چلے آؤ کہ تم حجاز کی خشک زمین پر پڑے ہو حالانکہ مدینہ اُن کے لیے بہتر ہے اگر جانتے'' (2)

خلین کا تا ۸ گی در مذی وابن ماجه وابن حبان و بیهی ابن عمر رض الله تعالی عنها سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه و بلم نے فرمایا: '' جس سے ہو سکے که مدینه میں مرے تو مدینه ہی میں مرے که جو شخص مدینه میں مرے گا ، میں اُس کی شفاعت فرماؤں گا۔'' (3) اوراس کی مثل صمیمیة اور سبیعه اسلمیه رض الله تعالی عنها سے مروی۔

مدینہ طیبہ کے برکات

خلیف و کی جب شروع کھل دیکھتے، اُسے مردی اللہ تعالی عنہ سے مردی ، کہ لوگ جب شروع شروع کھل دیکھتے، اُسے رسول الله علی اللہ تعالی علیہ تاری خدمت میں حاضر لاتے ، حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) اسے لے کریہ کہتے: الہی! تو ہمارے لیے ہماری کھجوروں میں برکت دے اور ہمارے لیے ہمارے مدینہ میں برکت کر اور ہمارے صاع ومُد میں برکت کر، یااللہ! (عزوجل) بے شک ابراہیم تیرے بندے اور تیرے خلیل اور تیرے نبی ہیں اور بے شک میں تیرا بندہ اور تیرانجی ہوں۔ انھوں نے مکہ کے لیے

^{■ &}quot;صحيح البخاري"، كتاب فضائل المدينة، باب من رغب عن المدينة، الحديث: ١٨٧٥، ج١، ص١٦٨.

^{2 &}quot;المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٥٨٧، ج٩١، ص٥٢٠.

^{🐒 😘 &}quot;جامع الترمذي"، أبواب المناقب، باب ماجاء في فضل المدينة، الحديث: ٣٩٤٣، ج٥، ص٤٨٣.

🐉 تجھ سے دُعا کی اور میں مدینہ کے لیے تجھ سے دُعا کرتا ہوں ،اُسی کی مثل جس کی دعا مکہ کے لیے انھوں نے کی اورا تنی ہی اور (یعنی

مدینه کی برکتیں مکہ سے دو چند ہوں)۔ پھر جوچھوٹا بچے سامنے ہوتا اُسے بلا کروہ تھجور عطافر مادیتے۔ (1)

خلین وا تا الله صحیح مسلم میں اُم المومنین صدیقه رضی الله تعالی عنها سے مروی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم نے

فرمایا: ' یااللہ! (عزد جل) تو مدینہ کو ہمارا محبوب بنادے جیسے ہم کو مکم محبوب ہے بلکہ اس سے زیادہ اوراُس کی آب وہوا کو ہمارے لیے

درست فر مادےاوراُس کےصاع ومُد میں برکت عطافر مااور بیہاں کے بخارکونتقل کرکے ج<u>ے ج</u>ف ہیں بھیج دے۔'' ⁽²⁾

(بیدعا اُس وفت کی تھی، جب ہجرت کر کے مدینہ میں تشریف لائے اور یہاں کی آب و ہواصحابہ کرام کو ناموافق ہوئی کہ پیشتر یہاں وبائی بیاریاں بکثرت ہوتیں) بیمضمون کہ حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) نے مدینہ طیبہ کے واسطے دعا کی کہ مکہ سے دوچند یہاں برکتیں ہوں۔(3) مولی علی وابوسعید وانس رضی اللہ تعالی عنہم سے مروی۔

اھلِ مدینہ کے ساتھ بُرائی کرنے کے نتائج

خلینٹ 🔐 🐣 صحیح بخاری ومسلم میں سعدرضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم فر ماتے ہیں:'' جوشخص

ابل مدینہ کے ساتھ فریب کرے گا، ایسانھل جائے گا جیسے نمک یانی میں گھاتا ہے۔ ' (4)

ابن حبان اپنی صبح میں جابر رضی اللہ تعالی عنہ ہے راوی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وہلم نے فر مایا: ''جواہل ِ

مدینه کوڈرائے گاءاللہ (عزوجل) اُسے خوف میں ڈالے گا۔'' ⁽⁵⁾

خ<u>ل یک ۱۲ و ۱۷ کی ایک</u> طرانی عُبا دہ بن صامت رض الله تعالیٰ عنہ سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه و کم مایا: یا الله (عزوجل)! جوابل مدینه پرظلم کرے اور آخیس ڈرائے تو اُسے خوف میں مبتلا کراوراس پر الله (عزوجل) اور فرشتول اور تمام آدمیوں کی لعن و در اور اس کی دون میں داروں کی ایک کا مثل نیاز کی دون اور تمام آدمیوں کی دون میں داروں کی دون کا مثل نیاز کی دون کی دون کی دون کی دون کی دون کا مثل نیاز کی دون کی دون کی دون کی دون کا مثل نیاز کی دون کی دون کی دون کا مثل کا دون کی دون کی دون کی دون کا مثل کا دون کی دون کی دون کی دون کی دون کا مثل کی دون کو کی دون کی دون

لعنت اوراس کا نہ فرض قبول کیا جائے ، نہ فل '' ⁽⁶⁾ اس کی مثل نسائی وطبر انی نے سائب بن خلا درضی اللہ عنہ سے روایت کی ۔ <u> کیل پٹ (1</u>) ۔ طبر انی کہیر میں عبد اللہ بن عمر ورضی اللہ تعالی عنہا سے راوی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فر ما یا : ' جو

• ١٣٧٣. "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فضل المدينة ... إلخ، الحديث: ١٣٧٣، ص٧١٣.

2 "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الترغيب في سكني المدينة ... إلخ، الحديث: ١٣٧٦، ص٥١٧.

• المدينة ... إلخ، الحديث: ١٣٧٤، ص١٣٧٤.

• "صحيح البخاري"، كتاب فضائل المدينة، باب اثم من كاد اهل المدينة، الحديث: ١٨٧٧، ج١، ص١٦٨.

5 "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الحج، باب فضل المدينة، الحديث: ٣٧٣٠، ج٦، ص٢٠.

🐒 🍪 "المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ٣٥٨٩، ج٢، ص٣٧٩.

🥞 اہل مدینه کوایذا دے گا،اللہ (عزوجل) اُسے ایذا دے گا اوراس پراللہ (عزوجل)اور فرشتوں اور تمام آ دمیوں کی لعنت اوراس کا نہ

فرض قبول کیاجائے، نہ لا۔ ' (1)

خلیف 19 💨 صحیحین میں ابو ہر ریرہ رضی اللہ تعالیٰ عندسے مروی ، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فر مایا: '' مجھے ایک ایسی

لبتی کی طرف (ہجرت) کا حکم ہوا جو تمام بستیوں کو کھا جائے گی (سب پر غالب آئے گی) لوگ اسے بیژب ⁽²⁾ کہتے ہیں اور وہ

مدینہ ہے، اوگوں کواس طرح پاک وصاف کرے گی جیسے بھٹی او ہے کے بیل کو۔ ' (3)

خلین و مایا: ' مدینه کے راستوں پر فرشتے (پېرا) دیتے ہیں)اس میں نه د حال آئے ، نه طاعون ۔' (4)

خلين الله على الله و مدينه كسول الله تعالى عند من الله تعالى عند من الله تعالى عليه والله عند الله عند كسوا

کوئی شہرالیانہیں کہ وہاں دجال نہ آئے، مدینہ کا کوئی راستہ الیانہیں جس پر ملائکہ پرابا ندھ کر پہرا نہ دیتے ہوں، دجال (قریب مدینہ) شورز مین میں آ کر اُترے گا، اس وقت مدینہ میں تین زلز لے ہوں گے جن سے ہر کا فرومنافق یہاں سے نکل کر دجال کے پاس چلاجائے گا۔'' (5)

حاضرى سركار اعظم مدينه طيبه حضور حبيب اكرم ساللتالاللاءام

الله عزوجل فرما تاہے:

﴿ وَلَوْاَ نَّهُ مُ إِذْظَّلَمُ وَاانْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوااللَّهَ وَاسْتَغْفَرَلَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُ وااللهَ تَوَّابًا

رُهُ ﴿ اللَّهُ ﴿ (6) وَيُعِبُّ السَّهُ ﴿ (6)

- 1 "مجمع الزوائد"، كتاب الحج، باب فيمن احاف اهل المدينة ... إلخ، الحديث: ٥٨٢٦، ج٣، ص٥٥٩.
- - ركهام، بلك يحيم معلم شريف مين من كوالله تعالى في مدينة كانام طابدركهام ١٢منه حفظه ربد. 3..... "صحيح البخاري"، كتاب فضائل المدينة، باب فضل المدينة ... إلى الحديث: ١٨٧١، ج١، ص٦١٧.
 - ◘ "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب صيانة المدينة من دخول الطاعون ...إلخ، الحديث: ١٣٧٩، ص٧١٦.
 - 5 "صحيح مسلم"، كتاب الفتن ... إلخ، باب قصة الحساسة، الحديث: ٢٩٤٣، ص٧٥٥١.
 - 😘 😘 س. په، النساء: ۲۶.

🗨 بههارشرزیعتٔ رخصشم (6) 🇨 🗨

اگرلوگ اپنی جانوں برظلم کریں اورتمھار ہے حضور حاضر ہوکراللہ (عزوجل) سے مغفرت طلب کریں اور رسول بھی اُن

کے لیے استغفار کریں تواللہ (عزوجل) کو توبہ قبول کرنے والا ، رحم کرنے والا یا نمیں گے۔

خلانت الله 🚽 - دارفطنی و بیهقی وغیر بهاعبدالله بنعم رضیالله نتالی عنها سے راوی ، که رسول الله صلی الله نتالی علیه وسلم نے فر ما ما : ''جو

میری قبر کی زیارت کرے،اس کے لیے میری شفاعت واجب '' (1)

خلیئٹ ۲ 💝 🗕 طبرانی نجیبر میں اُٹھیں ہے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فر مایا:'' جومیری زیارے کو آئے سوا

میری زیارت کے اور کسی حاجت کے لیے نہ آیا تو مجھ پر حق ہے کہ قیامت کے دن اُس کا شفیع بنوں۔' (2)

خلیئٹ 👚 🥕 واقطنی وطبرانی اُنھیں سے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: '' جس نے حج کیا اور بعد

میری وفات کے میری قبر کی زیارت کی توالیا ہے جیسے میری حیات میں زیارت سے مشرف ہوا۔ (3)

خلایث 🛪 🎏 سیمجق نے حاطب رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فر ماما: ''جس نے میری وفات کے بعد میری زیارت کی تو گویا اُس نے میری زندگی میں زیارت کی اور جوحرمین میں مرے گا، قیامت کے دن امن والول مين أعظم كا-' (4)

خلیث هم میری الله تعالی عندسے راوی ، که رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم کو میں نے فرماتے سُنا: ''جو شخص میری زیارت کرے گا، قیامت کے دن میں اُس کاشفیع یا شہید ہوں گا اور جوحر مین میں مرے گا، اللہ تعالیٰ اُسے قیامت کے دن امن والوں میں اُٹھائے گا۔'' (5)

خلینے 🔻 🔫 ابن عدی کامل میں اُغییں ہے راوی، کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فر مایا: ''جس نے حج کیا اور میری زبارت نه کی ،اُس نے مجھ پر جفا کی۔' (6)

(۱) زیارتِ اقدس قریب بواجب ہے۔ بہت لوگ دوست بن کر طرح طرح ڈراتے ہیں راہ میں خطر ہے، وہاں

- 1 "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٦٦٩، ج٢، ص٥١ ٣٥.
 - 2 "المعجم الكبير" للطبراني، باب العين، الحديث: ٩٤ ١٣١، ج١١، ص ٢٢٥.
- 3 "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٦٦٧، ج١، ص٥١٥.
- 4 "شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الحج و العمرة، الحديث: ١٥١، ج٣، ص٤٨٨.
- **⑤**..... "السنن الكبرى" للبيهقي، كتاب الحج، باب زيارة قبر النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٠٢٧٣، ج٥، ص٤٠٣.
 - 🥱 🔞 "الكامل في ضعفاء الرجال"، الحديث: ٥ ٩ ٩، ج٨، ص ٢٤٨، عن ابن عمر رضي الله عنهما .

پیاری ہے، یہ ہے، وہ ہے۔خبر دار!کسی کی نہ سُنو اور ہر گزمحرومی کا داغ لے کرنہ پلٹو۔ جان ایک دن ضرور جانی ہے،اس سے کیا بہتر کہاُن کی راہ میں جائے اور تجربہ ہے کہ جواُن کا دامن تھام لیتا ہے،اُسے اپنے سایہ میں بارام لے جاتے ہیں،کیل کا کھٹکا

ہم کو تواینے سامیمیں آرام ہی سے لائے سطیے بہانے والوں کو یہ راہ ڈر کی ہے۔ والحمد لله (۲) حاضری میں خالص زیارت اقدس کی نیت کرو، یہاں تک کہ امام ابن البہام فرمائے ہیں: اِس بارمسجد شریف کی نیت بھی شریک نہ کرے۔ (1)

(٣) حج اگر فرض ہے تو حج کر کے مدینہ طیبہ حاضر ہو۔ ہاں اگر مدینہ طیبہ راستہ میں ہوتو بغیر زیارت حج کو جانا سخت محرومی وقساوت قلبی ہےاوراس حاضری کوقبول حج وسعادت دینی ودنیوی کے لیے ذریعہ ووسیلہ قرار دےاور حج نفل ہوتو اختیار ہے کہ پہلے جے سے پاک صاف ہوکرمحبوب کے دربار میں حاضر ہویا سرکار میں پہلے حاضری دے کرجے کی مقبولیت ونورانیت کے ليه وسيله كرے غرض جو يہلے اختيار كرے اسے اختيار بي مكرنيت خير دركار ہے كه: إنسَّمَا الْاَعْمَالُ بالنِّيَّاتِ وَلِكُلَّ امْرِيُّ مَّانَویٰ . (2) اعمال کامدار نیت پر ہے اور ہرایک کے لیے وہ ہے، جواُس نے نیت کی۔

(۴) راستے بھردرودو ذِ کرنٹریف میں ڈوب جاؤاورجس قدر مدینہ طبیبہ قریب آتا جائے ،شوق وذوق زیادہ ہوتا جائے۔ (۵) جب حرم مدینه آئے بہتریہ کہ پیادہ ہولو، روتے، سر جھکائے، آئکھیں نیچی کیے، درود شریف کی اور کثرت کرو اور ہو سکے تو ننگے یا وُں چلو بلکہ ہے

> پائر نه بینی که کجامی نهی جائر سرست اینکه تو پامی نهی ارے سر کا موقع ہے او جانے والے حرم کی زمین اور قدم رکھ کے چلنا

> > جب قبانور برنگاه براے، درودسلام کی خوب کثرت کرو۔

(۲) جب ش**برا قدس** تک پہنچو، جلال و جمال محبوب صلی اللہ تعالی علیہ دہلم کے تصور میں غرق ہو حاوَا ور درواز وُ شہر میں داخل ہوتے وقت پہلے دہنا قدم رکھواور پڑھو:

^{1 &}quot;فتح القدير"، كتاب الحج، مسائل منثورة، ج٣، ص٩٤.

^{🤪 💇 &}quot;صحيح البخارى"، [كتاب بده الوحى] الحديث: ١٠ج١، ص٥.

بِسُمِ اللَّهِ مَاشَآءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ رَبِّ اَدُخِلُنِى مُدُخَلَ صِدُقٍ وَّاخُو جُنِى مُخُرَجَ صِدُقٍ ' اللَّهُمَّ افْتَحُ لِى اَبُوابَ رَحُمَتِکَ وَازُزُقْنِى مِنْ زِيَارَةِ رَسُولِکَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا رَزَقُتَ اَوُلِيَآ ثَکَ وَاهُلَ طَاعَتِکَ وَانُقِذُنِى مِنَ النَّارِ وَانْحِوْرُلِى وَارْحَمْنِى يَا خَيْرَ مَسْئُولِ . (1)

(2) حاضری مسجد سے پہلے تمام ضروریات سے جن کالگاؤ دل بٹنے کا باعث ہو، نہایت جلد فارغ ہوان کے سوا کسی بیکار بات میں مشغول نہ ہومعاً وضوومسواک کرواورغسل بہتر، سفید پاکیزہ کپڑے پہنواور نئے بہتر، سُر مہاورخوشبولگاؤ اورمشک افضل ۔۔

(۸) اب فوراً آستان اقدس کی طرف نهایت خشوع وخضوع سے متوجہ ہو، رونا نہ آئے تو رونے کا موزھ بناؤاور دل کو بردررونے پرلاؤاور اپنی سنگ دلی سے رسول الله صلی الله تعالی علیہ وسلم کی طرف التجا کرو۔

(۹) جب درِمسجد برحاضر ہو، صلوۃ وسلام عرض کر کے تھوڑ اٹھہر وجیسے سرکارسے حاضری کی اجازت مانگتے ہو، بِسُسِمِ الله کہدکرسیدها پاؤل پہلے رکھ کر ہمدتن ادب ہوکر داخل ہو۔

(۱۰) اس وقت جوادب وتعظیم فرض ہے ہر مسلمان کا دل جانتا ہے آنکھ، کان، زبان، ہاتھ، پاؤں، دل سب خیال غیر سے یاک کروم**سجدا قدس** کے نقش ونگار نہ دیکھو۔

(۱۱) اگرکوئی ایباسا منے آئے جس سے سلام کلام ضرور ہو تو جہاں تک بنے کتر اجاؤ، ورنہ ضرورت سے زیادہ نہ بڑھو پھر بھی دل سرکار ہی کی طرف ہو۔

(۱۲) ہر گز ہر گزمسجداقدس میں کوئی حرف چِلا کرنہ <u>نک</u>ے۔

(۱۳) یقین جانو که حضورا قدس سلی الله تعالی علیه و بلم سی حقیقی دنیاوی جسمانی حیات سے ویسے ہی زندہ ہیں جیسے وفات شریف سے پہلے تھے، اُن کی اور تمام انبیاعلیم الفلاۃ والسلام کی موت صرف وعد ہُ خدا کی تصدیق کوایک آن کے لیے تھی، اُن کا انتقال صرف نظر عوام سے چُھپ جانا ہے۔ امام محمد ابن حاج کی مخل اور امام احمد قسطلانی مواہب لدنیہ میں اور انکہ دین رحمۃ الله تعالی علیم اجمعین

۔۔۔۔۔اللہ (عزومل) کے نام سے میں شروع کرتا ہوں جواللہ (عزوجل) نے چاہا، نیکی کی طاقت نہیں مگر اللہ (عزومل) سے،اے رب! سچائی کے ساتھ جھے کو داخل کراور سچائی کے ساتھ باہر لے جا۔ الٰہی! تو اپنی رحمت کے دروازے میرے لیے کھول دے اور اپنی رسول سلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم کی نارت سے جھے وہ نصیب کر جواپنے اولیاءاور فرما نبردار بندوں کے لیے تو نے نصیب کیا اور مجھے جہنم سے نجات دے اور مجھ کو بخش دے اور مجھ کے ہے۔ ۱۲

ميثن كش: مجلس المدينة العلمية (ووت اسلامي) 🚅

🐉 فرماتے ہیں:

لَا فَرُقَ بَيُنَ مَوْتِهِ وَحَيَا تِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِى مُشَاهِدَتِهِ لِاُمَّتِه وَمَعُرِفَتِهِ بِاَحُوالِهِمُ وَنِيَاتِهِمُ وَعَزَائِمِهِمُ وَخَوَاطِرِهِمُ وَذَٰلِكَ عِنْدَهُ جَلِيٌّ لَا خِفَاءَ بِهِ . (1)

ترجمہ:حضوراقد س صلی اللہ تعالی علیہ وہلم کی حیات ووفات میں اس بات میں کچھفر ق نہیں کہ وہ اپنی اُمت کو دیکھ رہے ہیں اوران کی حالتوں،اُن کی نیتوں،اُن کے ارادوں،اُن کے دلوں کے خیالوں کو پہچانتے ہیں اور بیسب حضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) پر ایساروشن ہے جس میں اصلاً یوشید گی نہیں۔

ترجمہ: بے شک رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم تیری حاضری اور تیرے کھڑے ہونے اور تیرے سلام بلکہ تیرے تمام افعال واحوال وکوچ ومقام ہے آگاہ ہیں۔

(۱۴) اب اگر جماعت قائم ہوشریک ہوجاؤ کہ اس میں تحیۃ المسجد بھی ادا ہوجائے گی ، ورندا گرغلبہ شوق مہلت دے اور وقت کرا ہت نہ تو دور کعت تحیۃ المسجد وشکر انہ حاضری دربارِ اقد س صرف قُلُ بیّا اور قُلُ هُوَ اللّه سے بہت ہلکی مگر رعایت سنت کے ساتھ رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ ہلم کے نماز پڑھنے کی جگہ جہاں اب وسطِ مسجد کریم میں محراب بنی ہے اور وہاں نہ ملے تو جہاں تک ہوسکے اُس کے نزد یک ادا کرو پھر سجد مُ شکر میں گرواور دعا کرو کہ اللی ! اپنے حبیب صلی اللہ تعالی علیہ ہما کا ادب اور اُن کا اور این قبول نصیب کر ، آمین ۔

(10) اب کمال اوب میں ڈوبہوئے گردن جھکائے، آنکھیں پنجی کیے، لرزتے، کا نیتے، گناہوں کی ندامت سے پیسند پسیند ہوتے حضور پُرنورصلی اللہ تعالی علیہ ویلم کے عفوو کرم کی امیدر کھتے، حضور والا کی پائیں بعنی مشرق کی طرف سے مواجہہ عالیہ میں حاضر ہوکہ حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ ہلم مزار انور میں رُوبقبلہ جلوہ فرما ہیں، اس سمت سے حاضر ہوگے تو حضور (صلی اللہ تعالی علیہ ہلم) کی نگاؤ بیکس پناہ تمھاری طرف ہوگی اور رہے بات تمھارے لیے دونوں جہاں میں کا فی ہے، والجمد للد۔

(١٦) اب كمال ادب وہيب وخوف وأميد كے ساتھ زير قنديل أس جا ندى كى كيل كے سامنے جو جرة مطهره كى جنوبى

^{1&}quot; االمدخل "لابن الحاج، فصل في زيارة القبور، ج١، ص١٨٧.

^{🧣 👂 &}quot;لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم)، ص٥٠٨.

🦥 دیوار میں چېرهٔ انور کے مقابل گلی ہے، کم از کم چار ہاتھ کے فاصلہ سے قبلہ کو پیٹیراور مزارِ انورکوموزھ کر کے نماز کی طرح ہاتھ

باندھے کھڑے ہو۔

لباب وشرح لباب واختيار شرح مختار وفتاوي عالمگيري وغير بإمعتمد كتابون مين اس ادب كي تصريح فرمائي كه: يَسقِفُ كَمَا يَقِفُ فِسي الصَّلُوةِ. (1) حضور (سلى الله تعالى عليه ولم) كسامن اليا كفر اهو، جبيها نماز مين كفر اهوتا بي بيعبارت عالمگیری واختیار کی ہے۔

اورلباب مين فرمايا: وَاضِعًا يَمْينَهُ عَلَى شِمَالِهِ. (2) وست بسة وبهنا ما ته بائين پرركه كركه ابور

(١٤) خبردارا جالی شریف کو بوسدد سے یا ہاتھ لگانے سے بچوکہ خلاف ادب ہے، بلکہ جار ہاتھ فاصلہ سے زیادہ قریب نہ جاؤ۔ بیان کی رحمت کیا کم ہے کہتم کوایئے حضور بُلایا، اپنے مواجہہُ اقدس میں جگہ بخشی، ان کی نگاہ کریم اگر چہ ہرجگہ تمھاری طرف تھی،ابخصوصیت اوراس در جهٔ قرب کے ساتھ ہے، وللہ الحمد۔

(١٨) ٱلْحَمُدُلِلْه اب ول كى طرح تمها را موزه بهي اس ياك جالى كى طرف موليا، جوالله عز وجل محجوب عظيم الثان صلی الله تعالی علیه وسلم کی آرام گاہ ہے، نہایت ادب و وقار کے ساتھ بآوازِ حزیں وصوتِ درد آگین و دلِ شرمناک وجگر جاک جاک، معتدل آواز ہے، نہ بلندو یخت (کداُن کے حضور آواز بلند کرنے ہے عمل اکارت ہوجاتے ہیں)، نہایت نرم وپست (کسنت کے خلاف ہے اگر چہوہ تمھارے دلوں کے خطروں تک ہے آگاہ ہیں جبیبا کہ ابھی تصریحات ائمہ ہے گزرا) ، **مجراوشلیم** بجالا ؤ اورعرض کرو:

اَلسَّلامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحُمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ ۖ السَّلامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ ۚ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيُعَ الْمُذُنِينَ ۚ السَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلَى الِّكَ وَاصْحَابِكَ وَاُمَّتِكَ اَجْمَعِينَ ۖ اللَّهِ ۗ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّ (١٩) جہاں تک ممکن ہواورزبان باری دے اور ملال وکسل نہ ہوصلاۃ وسلام کی کثرت کرو،حضور (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وہلم) سے اپنے اور اپنے مال باپ، بیر، استاد، اولا د، عزیز ول، دوستول اور سب مسلمانوں کے لیے شفاعت مانگو، بار بارعرض کرو:

ا نبی! آپ برسلام اوراللد (عزوجل) کی رحت اور برکتیں،ا الله (عزوجل) کے رسول! آپ برسلام اورالله (عزوجل) کی تمام مخلوق سے چ بہتر! آپ پرسلام۔اے گئبگاروں کی شفاعت کرنے والے! آپ پرسلام۔آپ پراورآپ کی آل واصحاب پراورآپ کی تمام اُمت پرسلام۔۱۲

❶....."الفتاوي الهندية"، كتاب المناسك، خاتمه في زيارة قبر النبي صلى الله تعالى عليه و سلم، ج١، ص٢٦٥.

^{2 &}quot;لباب المناسك" للسندي، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله عليه و سلم)، ص٥٠٨.

^{3}المرجع السابق.

اَسُأَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَارَسُولَ اللَّهِ. (1)

(۲۰) پھراگرکسی نے عرض سلام کی وصیت کی بجالا ؤ۔شرعاً اس کا تھم ہے اور یہ فقیر ذلیل ان مسلمانوں کو جواس رسالہ کو دیکھیں ، وصیت کرتا ہے کہ جب انھیں حاضری بارگاہ نصیب ہو، فقیر کی زندگی میں یا بعد کم از کم تین بارمواجہ کہ افتدس میں ضروریہ الفاظ عرض کر کے اس نالائق ننگ خلائق پراحسان فر مائیں۔اللہ (عزبیل) اُن کو دونوں جہان میں جزائے خیر بجنشے آمین۔

اَلصَّلاَةُ والسَّلامُ عَلَيُكَ يَا رَسُولَ اللهِ وَعَلَى الِكَ وَذَوِيْكَ فِى كُلِّ انٍ وَّلَحُظَةٍ عَدَدَ كُلِّ ذَرَّةٍ ذَرَّةٍ اللهُ الْفَ الْفَ مَرَّةٍ مِنْ عُبَيْدِكَ امْجَدُ عَلِى يَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ فَاشُفَعُ لَـهُ وَلِلْمُسُلِمِيْنَ . (2)

(۲۱) کچراپنے دہنے ہاتھ یعنی مشرق کی طرف ہاتھ کجر ہٹ کر ح**صرت صدیق اکب**ر منی اللہ تعالی عنہ کے چبر ہ نورانی کے سامنے کھڑے ہوکر عرض کرو:

اَلسَّلامُ عَلَيْکَ يَا خَلِيْفَةَ رَسُولِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْکَ يَا وَزِيْرَ رَسُولِ اللَّهِ اَلسَّلامُ عَلَيْکَ يَا صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ فِي الْغَارِ وَرَحُمَةُ اللَّهِ وَ بَرَكَاتُهُ . (3)

(۲۲) چیرا تنابی اور بٹ کر حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے رُوبر و کھڑے ہوکر عرض کرو:

اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا اَمِيُ وَالْمُؤْمِنِيُنَ اَلسَّلامُ عَلَيُكَ يَا مُتَمِّمَ الْارْبَعِيْنَ السَّلامُ عَلَيُكَ يَا عِزَّ الْإِسُلامِ وَالْمُسُلِمِيْنَ وَرَحُمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ . (4)

(۲۳) پھر بالشت بھرمغرب کی طرف بلٹواورصد ایق وفاروق رضی اللہ تعالی عنہا کے درمیان کھڑے ہوکرعوض کرو:

اَلسَّلاَمُ عَلَيْكُمَا يَا خَلِيْفَتَى رَسُولِ اللَّهِ اَلسَّلامُ طَعَلَيْكُمَا يَا وَزِيْرَى رَسُولِ اللَّهِ طَ اَلسَّلامُ عَلَيْكُمَا يَا

🚹 يارسول الله! (صلى الله تعالى عليه وسلم) مين حضور (صلى الله تعالى عليه وسلم) سے شفاعت ما نگتا ہوں _١٢

2 یارسول الله! (صلی الله تعالی علیه وسلم)حضور اورحضور کی آل اور سب علاقه والوں پر ہر آن اور ہر کخظه میں ہر ہر ذرہ کی گنتی پردس دس لا کھ درود سلام حضور کے حقیر غلام امجدعلی کی طرف سے، وہ حضور سے شفاعت مانگتا ہے،حضوراس کی اور تمام مسلمانوں کی شفاعت فرما کیں _۱۱

الباب المناسك" للسندى، (باب زيارة سيد المرسلين، صلى الله تعالى عليه و سلم)، ص ١٠٥.

اے خلیفہ رسول اللہ! آپ پر سلام، اے رسول اللہ کے وزیر! آپ پر سلام، اے غارِ تور میں رسول اللہ کے رفیق! آپ پر سلام اور اللہ (عزوجل) کی رجمت اور بر کنتیں ۔ ۱۲

4 "لباب المناسك" للسندى، (باب زيارة سيد المرسلين، صلى الله تعالى عليه و سلم)، ص ١١ ٥، وغيره.

اے امیرالموثین! آپ پرسلام،اے چالیس کاعدد پورا کرنے والے! آپ پرسلام،اےاسلام اور سلمین کی عزت! آپ پرسلام اوراللہ (عزوجل) کی رجمت اور برکتیں۔ ۱۲ وَ خَدِيْعَى رَسُول اللهِ وَرَحُمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُةً ﴿ اَسُأَلُكُمَا الشَّفَاعَةَ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ طَ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْكُمَا وَبَارَكَ وَسَلَّمٍ . (1)

(۲۴) ییسب حاضریال محل اجابت ہیں، وُعامیں کوشش کرو۔ وُعائے جامع کرواور وُرود پر قناعت بہتر اور حیا ہو تو بیہ

اَللَّهُمَّ اِنِّي أَشُهِدُكَ وَاُشُهِدُ رَسُولَكَ وَاَبَابَكُو وَعُمَرَ وَاُشُهِدُ الْمَلْئِكَةَ النَّازِلِيُنَ عَلَى هَاذِهِ الرَّوُضَةِ الْكَرِيْمَةِ الْعَاكِفِيْنَ عَلَيْهَا اَنِّي اَشُهَدُ اَنْ لَّا اِلْهَ اِلَّا اَنْتَ وَحُدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاشُهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبُدُكَ وَرَسُولُكَ اَللَّهُمَّ اِنِّي مُقِرٌّ بجَنَايَتِي وَمَعُصِيَّتِي فَاغْفِرْلِي وَامْنُنُ عَلَيَّ بالَّذِي مَنَنْتَ عَلَى اَوُلِيَآئِكَ فَانْكُر الْمَنَّانُ الْغَفُورُ الرَّحِيْمُ رَبَّنَا اتِنَا فِي الدُّنُيَا حَسَنَةً وَّفِيُ الْاخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ . (2)

- (۲۵) پھرمنبراطہر کے قریب دُعامانگو۔
- (۲۶) پھر جنت کی کیاری میں (لیعنی جو جگه منبر و حجره منوره کے درمیان ہے، اسے حدیث میں جنت کی کیاری فرمایا) آ کر دورکعت نفل غیر وقتِ مکروه میں پڑھ کر دُعا کرو۔
- (۲۷) یو ہیں مسجد شریف کے ہرستون کے پاس نماز پڑھو، دُعا مائلو کمکل برکات ہیں خصوصاً بعض میں خاص
- (۲۸) جب تک مدینه طیبه کی حاضری نصیب ہو، ایک سانس برکارنه جانے دو، ضروریات کے سواا کثر وقت مسجد شریف میں باطہارت حاضرر ہو،نماز و تلاوت و دُرود میں وقت گزارو، دنیا کی بات کسی مسجد میں نہ چاہیے نہ کہ یہاں۔ (۲۹) ہمیشہ ہر مسجد میں جاتے وقت اعتکاف (3) کی نیت کراو، یہاں تمھاری یادد ہانی ہی کو دروازہ سے بڑھتے ہی
- 📭اے رسول اللہ (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کے پہلو میں آ رام کرنے والے! آپ دونوں پرسلام اوراللہ (عزوجل) کی رحمت اور برنمتیں، آپ دونوں حصرات سے سوال کرتا ہوں کہ رسول الله صلی الله تعالی علیہ وسلم کے حضور جماری سفارش سیجتے ، الله تعالی ان پراور آپ دونوں پر وُرود و برکت
- 🗨ترجمه:ا بالله (عزوجل)! مين تجهيكوا ورتير بير رسول اورا بوبكر وعمر كواورتير في فرشتون كوجواس روضه برنازل اورمعتكف مين،أن سب كوگواه کرتا ہوں کہ میں گواہی ویتا ہوں کہ تیرےسوا کوئی معبود نہیں تو تنہاہے تیرا کوئی شریکے نہیں اور محم سلی اللہ نعالی علیہ دللم تیرے بندہ اور رسول ہیں ،اے ۔ الله (عزوجل)! میں اپنے گناہ ومعصیت کا افر ارکرتا ہول تو میری مغفرت فر مااور مجھ پروہ احسان کر جو تونے اپنے اولیا پر کیا۔ بیشک تواحسان کرنے والا، بخشنے والامہر بان ہے۔ ۱۲
 - 😵 🔞 اعتكاف كے معنى ميں مجدميں بالقصد نيت كر كے شہر نااس ليے كه ذكرالهي كروں گا۔١٣

1228

جَهُونِ اللهِ الْمُؤْرِنِعَتْ عُصْتُهُم (6) كَنْ كَتْبَدِ عِلْمُ اللهِ عُنِيْتُ اللهِ عُتِكَافِ . (1)

(۳۰) مدین طبیبه میں روزہ نصیب ہوخصوصاً گرمی میں تو کیا کہنا کہاس پروعدہُ شفاعت ہے۔

(۳۱) یہاں ہرنیکی ایک کی بچاس ہزار کھی جاتی ہے، لہذا عبادت میں زیادہ کوشش کرو، کھانے پینے کی کمی ضرور کرواور

جهال تک ہو سکے تصدق کروخصوصاً بہال والول پرخصوصاً اس زمانہ میں کدا کثر ضرورت مند ہیں۔

(۳۲) قرآن مجید کا کم ہے کم ایک ختم یہاں اور حطیم کعبہ عظمہ میں کرلو۔

(۳۳) روضهٔ انور پرنظر عبادت ہے جیسے کعبہ معظمہ یا قرآن مجید کا دیکھنا توادب کے ساتھ اسکی کثرت کرواور دُرود

وسلام عرض کرو۔

(۳۴) پنجال نہ یا کم از کم صبح ، شام مواجهہ شریف میں عرض سلام کے لیے حاضر ہو۔

(۲۵) شہر میں خواہ شہرسے باہر جہال کہیں گنبدِ مبارک پر نظر پڑے ، فوراً دست بستہ اُدھر موزھ کر کے صلاق وسلام عرض

کرو، بے اِس کے ہرگز نہ گزرو کہ خلاف اوب ہے۔

(٣٦) ترك جماعت بلاعذر ہرجگہ گناہ ہے اور كئی بار ہوتو سخت حرام و گناہ كبيرہ اور يہاں تو گناہ كے علاوہ كيسى سخت

محرومی ہے، والعیاذ بالله تعالی صیح حدیث میں ہے، رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم فرمائے ہیں: '' جسے میری مسجد میں چالیس نمازیں

فوت نہ ہوں ،اُس کے لیے دوزخ ونفاق سے آزادیاں کھی جا کیں۔'' (2)

(۳۷)حتی الوسع کوشش کروکہ مسجدا وّل یعنی حضو را قدر س صلی اللہ تعالی علیہ ہلم کے زمانہ میں جنتنی تھی اس میں نماز پڑھوا وراس

کی مقدار سو ہاتھ طول وسو ہاتھ عرض ہے اگر چہ بعد میں کچھا ضافہ ہوا ہے،اس میں نماز پڑھنا بھی مسجد نبوی ہی میں پڑھنا ہے۔

(۳۸) قبرکریم کو ہرگز پیپھے نہ کرواور حتی الا مکان نماز میں بھی الیی جگہ نہ کھڑے ہوکہ پیٹھ کرنی پڑے۔

(۳۹) روضهٔ انور کا نه طواف کرو، نه سجده، نه اتنا جھکنا که رکوع کے برابر ہو۔رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وہلم کی تعظیم اُن کی

اطاعت میں ہے۔

اهل بقیع کی زیارت

(۴۴) بقیع کی زیارت سنت ہے، روضۂ اقدس کی زیارت کرکے وہاں جائے خصوصاً جُمُعَہ کے دن۔اس قبرستان میں قریب دڑا ہزارصحا بہ کرام رضی اللہ تعالی عنہم مدفون ہیں اور تابعین و تنع تابعین واولیا وعلا وصلحا وغیر ہم کی گنتی نہیں۔ یہاں جب حاضر ہو

1 میں نے سنت اعتکاف کی نیت کی ۱۲۔

🧣 👂 "المسند" للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك، الحديث: ١٢٥٨٤، ج٤، ص ٣١١.

پہلے تمام مدفونین مسلمین کی زیارت کا قصد کرے اور یہ پڑھے:

اَلسَّلَامُ عَلَيُكُمُ دَارَ قَوْمٍ مُّ وَٰمِ نِيُنَ اَنْتُمُ لَنَا سَلَفٌ وَّ إِنَّا إِنْشَاءَ اللَّهُ تَعَالَى بِكُمُ لَاحِقُونَ اَللَّهُمَّ اغْفِرُ لِاَهُلِ الْبَقِيْعِ بَقِيْعِ الْغَوْقَدِ اَللَّهُمَّ اغْفِرُلَنَا وَلَهُمُ . ⁽¹⁾ اوراگر پھھاور پڑھناچاہے تویہ پڑھے:

رَبَّىنَا اغْفِرُلْنَا وَلِوَالِدَيْنَا وَلِاسْتَاذِيْنَا وَلِإِخُوانِنَاوَلِاَ خَوَاتِنَا وَلاَحُلَادِنَا وَلاَحُفَادِنَا وَلاَصْحَابِنَا وَلاَحْبَابِنَا وَلِمَنُ لَّهُ حَقِّ عَلَيْنَا وَلِمَنُ أَوْ صَانَا وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُوْمِنَاتِ وَالْمُسُلِمِيْنَ وَالْمُسُلِمَاتِ . (2)

اور درو دشریف وسور هٔ فاتحه وآیة الکری و قُلُ هُوَ اللّهُ وغیره جو پچھ ہوسکے پڑھ کر ثواب اُس کا نذر کرے،اس کے بعد بقیع شریف میں جو مزارات معروف ومشہور ہیں اُن کی زیارت کرے۔تمام اہلِ بقیع میں افضل امیر المونین سید ناعثان غنی رضی الله تعالی عند ہیں،اُن کے مزار پر حاضر ہوکر سلام عرض کرے:

اَلسَّلَامُ عَلَيُكَ يَا اَمِيُرَالُـمُوَّمِنِيْنَ السَّلَامُ عَلَيُكَ يَا ثَالِتَ الْخُلَفَآءِ الرَّاشِدِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَالِتُ الْخُلَفَآءِ الرَّاشِدِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُجَهِّزَ جَيْشِ الْعُسُرَةِ بِالنَّقُدِ وَالْعَيْنِ جَزَاكَ اللَّهُ عَنُ رَّسُولِهِ وَعَنُ صَاحِبَ الْهِجُرَتَيْنِ اللَّهُ عَنُكَ وَعَنِ الصَّحَابَةِ اَجُمَعِيْنَ . (3)
سَائِرِ الْمُسُلِمِيْنَ وَرَضِى اللَّهُ عَنْكَ وَعَنِ الصَّحَابَةِ اَجُمَعِيْنَ . (3)

قبر محضرت سیدنا ابراہیم ابن سردار دوعالم رسول الله صلی الله تعالی علیه وہلم اوراسی قبر شریف میں ان حضرات کرام کے بھی مزارات طیبہ ہیں، حضرت رقید (حضورا کرم صلی الله تعالی علیه وہلم کی صاحبزادی) حضرت عثمان بن مظعون (بیر حضورا قدس صلی الله تعالی علیه وہلم کے رضاعی بھائی ہیں) عبدالله بن مسعود علیه بلم کے رضاعی بھائی ہیں) عبدالله بن مسعود (بیردونوں حضرات عشر کا مبشرہ سے ہیں) عبدالله بن مسعود (نہایت جلیل القدر صحابی خُلفائے اربعہ کے بعد سب سے اُفقہ) ختیس بن حذاف سہی واسعد بن زرار ہ رضی الله تعالی عنهم اجمعین ان حضرات کی خدمت میں سلام عرض کرے۔

ایقی مونین کے گھر والوائم ہمارے پیشوا ہواور ہم ان شاءاللہ تم سے ملنے والے ہیں، اےاللہ (عزوجل)! بقیع والول کی مغفرت فرما، اے اللہ (عزوجل)! بقیع والول کی مغفرت فرما، اے اللہ (عزوجل)! بقیع والول کی

^{●}اےاللہ(عزوجل)!ہم کواور ہمارے والدین کواوراُستادوں اور بھائیوں اور بہنوں اور ہماری اولا داور پوتوں اور ساتھیوں اور دوستوں کواور اُس کوجس کا ہم پرحق ہےاورجس نے ہمیں وصیت کی اورتمام مونین ومومنات وسلمین ومسلمات کو بخش دے۔۱۲

^{3 &}quot;المسلك المتقسط"، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه و سلم)، ص ٢٠ ٥، وغيره.

اے امیرالمونین! آپ پرسلام اوراے خلفائے راشدین میں تیسرے خلیفہ! آپ پرسلام، اے دو جمرت کرنے والے! آپ پرسلام، اے غزوۂ تبوک کی نقد وجنس سے طیاری کرنے والے! آپ پرسلام، الله (عزوجل) آپ کواپنے رسول اور تمام مسلمانوں کی طرف سے بدلا دے، آپ سے اور تمام صحابہ سے الله (عزوجل) راضی ہو۔ ۱۲

قبر حضرت سیدنا عباس رضی الله تعالی عنه اسی قبه می*ن حضرت سید*نا امام حسن مجتبی وسرمبارک سیدنا امام حسین وامام زین

العابدين وامام محمد با قر وامام جعفرصا دق دخی الله تعالی نهم کے مزارات طبیبات ہیں ،ان پرسلام عرض کرے۔

قيراز واج مطهرات حضرت أم المونين خديجة الكبري رض الله تعالىء نباكا مزار مكم معظمه ميں اورميمونه رض الله تعالىء نباكا سرف میں ہے۔ بقیہتمام از واج مکرّ مات اسی قبہ میں ہیں۔

قبرُ حضرت عقبل بن ابی طالب اس میں سفیان بن حارث بن عبدالمطلب وعبدالله بن جعفر طیار بھی ہیں اور اس کے قریب ایک قبہ ہے جس میں حضورا قدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ دہلم کی تین اولا دیں ہیں ۔ قریج صفیہ دضی اللہ تعالیٰ عنہ اللہ تعالیٰ علیہ دہلم کی چيو پھي ،قبيرُ امام ما لک رضي الله تعالى عنه قبيرُ نا فع مولي ابن عمر رضي الله تعالى عنها ...

ان حضرات کی زبارت سے فارغ ہو کر مالک بن سنان وابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہا واساعیل بن جعفر صادق وڅمہ بن عبدالله بن حسن بن على رض الله تعالى عنهم وسيّدالشهداا ميرحمز ورض الله تعالى عنه كي زيارت سيمشرف ہو۔

بقیع کی زیارت کس سے شروع ہو، اس میں اختلاف ہے بعض علما فرماتے ہیں کہ امیرالمونین حضرت عثان غنی رضیاللہ تعالیٰ عنہ سے ابتدا کرے کہ یہ سب میں افضل ہیں اور بعض فر ماتنے ہیں کہ حضرت ابراہیم ابن رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ۔ شروع کرےاوربعض فرماتے ہیں کہ قبہ سیّد ناعباس رض اللہ تعالیٰ عنہ سے ابتدا ہوا ور قبہ صفیہ برختم کہ سب سے پہلے وہی ملتا ہے، تو بغیرسلام عرض کیے وہاں ہےآ گے نہ بڑھےاوریپی آ سان بھی ہے۔ (1)

قبا شریف کی زیارت

(۴۱) قبا شریف کی زیارت کرے اورمسجد شریف میں دو رکعت نماز پڑھے۔ تر مذی میں مروی، کہ رسول اللہ صلى الله تعالى عليه وسلم نے فر ماما كيه:

''مسحد قرامیں نماز ،عمرہ کی مانند ہے۔'' (²⁾ اوراحادیث صححہ سے ثابت کہ نبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ہر ہفتہ کو قما تشریف لے حاتے مجھی سوار بھی پیدل -اس مقام کی بزرگی میں اور بھی احادیث ہیں -

1 "المسلك المتقسط"، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه و سلم)، ص ٢١ ٥.

🧣 👂 "جامع الترمذي"، ابواب الصلاة، باب ماجاء في الصلاةفي مسجد قباء، الحديث: ٣٢٤، ج١، ص٣٤٨.

احد کی زیارت

(۴۲) شہدائے اُحد شریف کی زیارت کرے۔حدیث میں ہے، کہ حضور اقدس سلی اللہ تعالی علیہ ہم سال کے شروع

مين قبور شهدا الله الله الله الله الله الله عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَوْتُمُ فَيِعُمَ عُقْبَى الدَّارِ ". (1)

اوركوه أحدكى بھى زيارت كرے كہ صحيح حديث ميں فرمايا: "كوه أحد بميں محبوب ركھتا ہے اور ہم أے محبوب ركھتے ہيں۔" (2)

اورایک روایت میں ہے کہ: ''جبتم حاضر ہوتو اُس کے درخت سے کچھ کھاؤ اگر چہ ببول ہو۔'' (3)

بہتر یہ ہے کہ پنجشنبہ (4) کے دن صبح کے وقت جائے اور سب سے پہلے حضرت سیدالشہدا حمز ہرضی اللہ تعالی عنہ کے مزار پر حاضر ہوکر سلام عرض کرے اور عبداللہ بن جحش ومُصعب بن عمیر رضی اللہ تعالی عنہا پر سلام عرض کرے کہ ایک روایت میں ہے بیدونوں حضرات یہیں مدفون ہیں۔ (5)

سیدالشہداکی پائیں جانب اور صحن مسجد میں جوقبرہے، بیدونوں شہدائے اُحد میں نہیں ہیں۔

(۲۳س) مدینه طیبہ کے وہ کوئیں جوحضور (صلی اللہ تعالی علیہ وہلم) کی طرف منسوب ہیں لیننی کسی سے وضوفر مایا اور کسی کا پانی

پیا اورکسی میں لعاب دہن ڈالا۔ اگر کوئی جاننے بتانے والا ملے تو اُن کی بھی زیارت کرے اور اُن سے وضو کرے اور پانی ہے۔

(۴۴) اگر جیا ہو تو مسجدِ نبوی میں حاضر رہو۔سیدی ابن ابی جمرہ قدس سرۂ جب حاضر حضور ہوئے، آٹھول بہر برابر

حضوری میں کھڑے رہتے ایک دن بقیع وغیرہ زیارات کا خیال آیا پھر فر مایا یہ ہے اللہ (عزوجل) کا دروازہ بھیک ما تکنے والوں کے لیے کھلا ہوا،اسے چھوڑ کرکہاں حاؤں۔۔۔

سرایی جا، سجده ایی جا، بندگی ایی جا، قرار ایی جا

(۴۵) وقت ِرخصت مواجههٔ انور میں حاضر ہواور حضور (صلی اللہ تعالی علیه کم) سے بار باراس نعمت کی عطا کا سوال کرواور

-"المسلك المتقسط في المنسك المتوسط"، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم)، ص٥٢٥.
 - ◘ "صحيح البخاري"، كتاب الجهاد، باب فضل الخدمة في الغزو، الحديث: ٢٨٨٩، ج٢، ص٢٧٨.
 - 3 "المعجم الاوسط" للطبراني، الحديث:٥١٩٠ ج١، ص٥١٥.
 - 4..... جعرات۔
 - 🕏 🗗 "لباب المناسك" و" المسلك المتقسط"، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم)، ص٥٢٥.

فضائل مدينهطيب

هِهَادِشْرِيْحَتْ خِصْهُم (6)

تنمام آ داب که کعبه معظمه سے رخصت میں گز رے ملحوظ رکھوا در سے دل سے دعا کرو کہ الہی!ایمان وسنت پر مدینہ طیب میں مرنا اور 💐

بقیع پاک میں فن ہونانصیب کر۔

اَللَّهُ مَّ ارُزُقُنَا امِيُنَ امِيُنَ امِيُنَ امِيُنَ يَا اَرُحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ الِهِ وَصَحْبِهِ وَابُنِهِ وَجِزُبِهِ اَجُمَعِيْنَ امِيُنَ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ .

اس کتاب کی تصنیف شب بستم ماہ فاخرر کتے الآخر کے الآخر کے الآخر کے الآخر کے اللہ علی حضرت قبلہ قدس مرہ الافتر کو گونتم ہوئی اور تھوڑ نے دنوں بعدامام اہلسنت اعلی حضرت قبلہ قدس مرہ الافتر کو گوئنا بھی دی تھی ۔ فقیر جب حرمین طبیبین روانہ ہوا اس رسالہ کو اپنے ساتھ رکھا تھا اور جمبئی کے ایک ہفتہ قیام میں مبیضہ کیا (۱) مگر اس کی طبع میں موافع پیش آتے گئے ، جن کی وجہ سے بہت تا خیر ہوئی خدا کا شکر ہے کہ اب طبع ہوگیا ۔ مولی تعالی مسلمانوں کو اس سے نفع بہو نچائے اور ان صاحبوں سے نہایت بحز کے ساتھ التجاہے کہ اس فقیر کے لیے ایمان پر ثبات اور حسن خاتمہ کی دعافر ما نمیں ۔

اعلی حضرت قبلہ قدس سرۂ العزیز کا رسالہ ''انورالبشارہ''بورااس میں شامل کر دیا ہے یعنی متفرق طور پر مضامین بلکہ عبارتیں داخل رسالہ ہیں کہ اولاً: تبرک مقصود ہے۔دوم: اُن الفاظ میں جوخوبیاں ہیں فقیر سے ناممکن تھیں لہذا عبارت بھی نہ بدلی۔

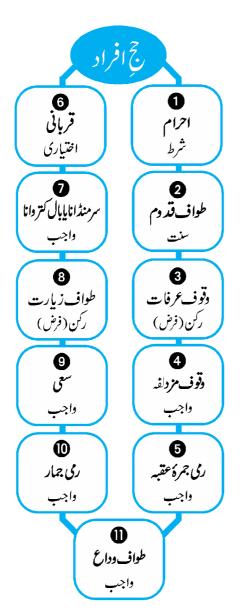
فقيرابوالعلا محمدامجرعلى اعظمى عفى عنه ٢٥ رمضان مبارك المسلاه

💨 🕽 سیعنی چھنے کے لیے تیار کیا۔

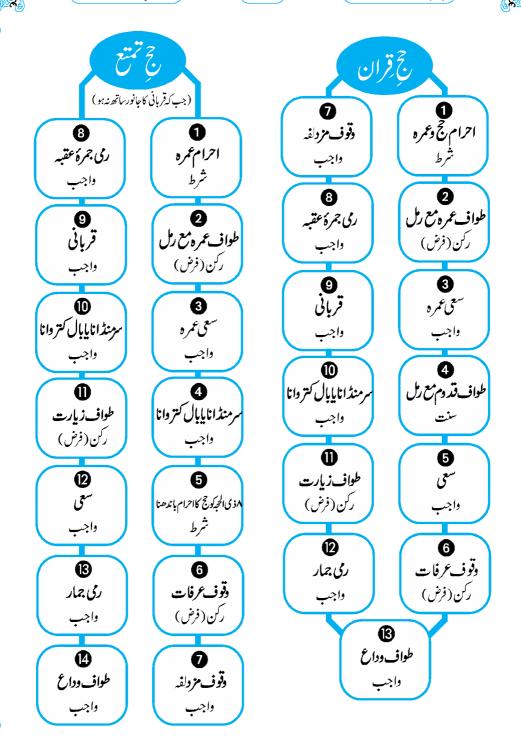


چ حج و عمرہ کے اعمال کا نقشہ ایک نظر میں 🐎

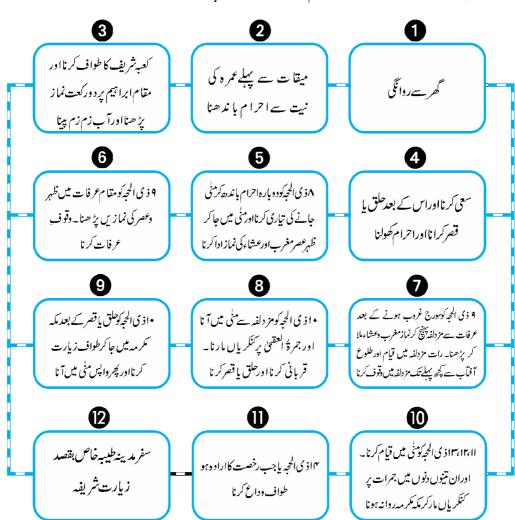
ذیل کے نقشہ سے عمرہ ، حج افراد، قران اور تمتع کے مناسک معلوم کیے جاسکتے ہیں ، یہوضا حت بھی کر دی گئی ہے کہان میں سے شرط، رکن، واجب، سنت اورا ختیاری کون کون سے مناسک ہیں۔



احرام عمره 0 طوا**ف** سرمنڈانایابال کتروانا



' پاکستان اور ہندوستان سے آنے والے عمو ما حج تمتع ہی کیا کرتے ہیں۔ ذیل کے نقشہ میں نہایت اختصار سے اس کا طریقہ (جب کقربانی کا جانورساتھ نہ ہو) گھرسے روانہ ہوکراختیا م حج تک پیش خدمت ہے۔



اعملیٰ حضرت،امام اَحمد رضا خان علیه رحمهٔ الرّحدن تحریفرماتے میں: علما بختلف ہیں کہ پہلے ج کرے یازیارت۔ ''لباب''میں ہے: جی نفل میں مختار ہے اور فرض ہوتو پہلے ج مگر مدینہ طیبہراہ میں آئے تو تقدیمِ زیارت لازم اُتی لیعنی بے زیارت گزرجانا گتاخی اور فقیر کوعلامہ بکی (رحمہ الله تعالی) کامیار شاو بہت بھایا کہ: پہلے ج کرے تاکہ پاک کی زیارت پاک ہوکر ملے۔ (فاوی رضویہ ج ک اس کے ۱۹۸۸)





| مطبوعات | مصنف / مؤلف | نام کتاب | نمبرشار |
|--------------------------|--|-------------|---------|
| مكتبة المدينه بابالمدينه | كلامِ الجي | قرآن مجيد | 1 |
| مكتبة المدينه بابالمدينه | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متو فی ۱۳۸۰ھ | كنز الإيمان | 2 |

كتب التفسير

| دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۴۲۰اه | امام ابوجعفرمحد بن جريرطبري متو في ۱۳۰۰ ه | جامع البيان في تأويل القرآن | 1 |
|-------------------------------------|---|---|----|
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ١٩٦٢ ه | امام ابوڅمه انحسین بن مسعود فراء بغوی متو فی ۵۱۲ ه | معالم التنزيل (تفسير البغوي) | 2 |
| داراحیاءالتر اث العربی، بیروت ۲۴۴اه | امام فخرالدین محمد بن عمر بن حسین رازی متوفی ۲۰۲ ه | مفاتيح الغيب (التفسير الكبير) | 3 |
| دارالفكرالعلميه ، بيروت ١٣٢٠ه | ابوعبدالله محمر بن احمد انصاري قرطبي متوفى ١٤١ ه | الحامع لأحكام القرآن (تفسير القرطبي) | 4 |
| دارالمعرفه، بيروت ۲۱ ۱۳۳۱ ه | امام عبدالله بن احمد بن محموز نسفي متو في ١٠ ٧ ه | مدارك التنزيل وحقائق التأويل | 5 |
| ا کوژه ختک نوشېره | علاءالدین علی بن څمه بغدادی متو فی ۴۱ ۷ ھ | تفسير الخازن | 6 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ١٩١٩ ه | عمادالدين إساعيل بن عمرابن كثير ومشقى متو في ١٩٧٧ه | تفسير القرآن العظيم(تفسير ابن كثير) | 7 |
| دارالفكر، بيروت ١٣٢٠ء | ناصرالدین عبدالله ابوعمر بن مجمه شیرازی بیضاوی متوفی ۹۱ ۷ ۵ | أنوار التنزيل وأسرار التأويل | 8 |
| بابالمدية كراجي | امام جلال الدين مجلى متو في ٨٦٣ه ه وامام جلال الدين سيوطي متو في ٩١١ه هـ | تفسير الجلالين | 9 |
| دارالفكر، بيروت ١٣٠٣ ١٥٥ | امام جلال الدين بن ابي بكرسيوطي متوفى اا9 ھ | الدر المنثور | 10 |
| دارالفكر، بيروت١٣٢٣ه | امام جلال الدين بن ابي بكرسيوطي متوفى ١٩١١ ه | الإتقان في علوم القرآن | 11 |
| دارالكتب العلميه ، بيروت ١٩١٩ ه | مجي الدين مجمد بن مصلح الدين مصطفى قوجوي حافي متو في ٩٥١ ه | حاشية شيخ زاده على البيضاوي | 12 |
| کوئٹہ ۱۳۱۹ء | مولی الروم شخ اساعیل حتی بروی متوفی ۱۱۳۷ھ | تفسير روح البيان | 13 |
| دارالفكر، بيروت | علامه ابوالسعو وثيد بن مصطفى عمادى متو فى ٩٨٢ ه | تفسير أبي السعود | 14 |
| ليثاور | شخ احد بن الج سعيد المعروف بملا حيون جو نيوري متو في ١٣٠٠ الص | التفسيرات الأحمدية في بيان الآيات الشرعية | 15 |
| بابالمدينة كراچى | علامه ششخ سلیمان جمل متوفی ۱۲۰۴ ۱۵ | الفتوحات الإلهية(حاشية الحمل على الحلالين) | 16 |
| بابالمدينه كراجي ١٣٢١ه | احمد بن مجمد صاوی مالکی خلوفی متوفی ۱۲۴۱هه | حاثبية الصاوى على الجلالين | 17 |
| داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۲۴۴۱ه | ابوالفضل شهاب الدين سيدمحمود آلوي متوفى • ١٣٧ه | روح المعاني | 18 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت | علامه نظام الدين حسن بن څر نيشا پورې ،متو في ۲۸ ۷ ه | غرائب القرآن و رغائب الفرقان | 19 |
| ضياءالقرآن پېلى كيشنز١٣٢٣١٠ه | مؤلف علامة قاضى ثناءالله پانى چى متوفى ١٨١٠ ه مترجم: ادار د ضياء المصنفين | تفسیر مظهری (مترجَم) | 20 |

ضياءالقرآن يبلى كيشنز

21 تفسیرنعیمی

كتب الحديث

حكيم الامت مفتى احمه بإرخان تعيمى متوفى اوساره

| دارالمعرفه، بيروت ١٢٢٠ه | امام ما لك بن انس اصبحى متوفى ٩ ٧١ه | الموطا | 1 |
|---|---|----------------------------------|----|
| دارالكتب العلميه ، بيروت | امام مجمد بن ادر لیس شافعی ،متوفی ۲۰۴۰ه | المستد | 2 |
| دارالكتب العلميه ، بيروت ١٣٢١ه | امام ابوبكر عبدالرزاق بن هام بن نافع صنعانی متوفی ۱۱۱ ه | المصنف | 3 |
| دارالفكر، بيروت ١٩٢٧ماره | حافظ عبدالله بن محمه بن ابي شيبه كوفى عبسى متوفى ٢٣٥ھ | المصنف في الأحاديث والآثار | 4 |
| دارالفكر، بيروت ١٩١٨م | امام احمد بن ثمير بن طنبل متو في ۲۴۷ ه | المستد | 5 |
| دارالكتب العربي بيروت | امام عبدالله بن عبدالرحمٰن ،متو في ٢٥٥ ه | سنن الدارمي | 6 |
| پشاور | علامه جمال الدين ابو محمر عبدالله بن يوسف متو في ۲۵۵ ه | نصب الراية | 7 |
| دارالكتب العلميه ، بيروت ١٩٦٩ ١٥ | امام ابوعبدالله محمد بن اساعيل بخاري متو في ۲۵۶ ه | صحيح البخاري | 8 |
| دارالمغنی ،عربشریف۱۳۱۹ه | امام ابوالحسين مسلم بن حجاج قشيري متو في ٢٦١ ه | صحيح مسلم | 9 |
| دارالمعرفه، بيروت ۲۳۴ اه | امام ابوعبدالله محمد بن يزيدا بن ماجه متوفى ٣٤٦ه | سنن ابن ماجه | 10 |
| داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۲۱ ۱۳۲۱ ه | امام ابوداؤد سليمان بن اشعث سجستانی متوفی ٢٧٥ ه | سنن أبي داود | 11 |
| وبلق الهند | امام ابوداؤدسلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ ه | مراسيل أبي داود | 12 |
| مدينة الاولياء، ملتان | امام على بن عمر دار قطنى ،متو فى ٢٨٥ ه | سنن الدار قطني | 13 |
| دارالمعرفه، بيروت ١٩١٧ه | امام ابوتیسی محمد بن عیسای ترندی متوفی ۱۷۹ھ | سنن الترمذي | 14 |
| دارصا در ، بیروت | امام ابوئيسي محمد بن نيسي بن سور ه تر مذي متو في ٢٧٩ ه | نوادر الأصول | 15 |
| eluly: פונואט די מין אין | امام ابوبكراحمه بن عمر ومتو فى ٢٨٧ھ | السنة | 16 |
| مكتنبة العلوم والحكم ،المدينة المنورة ١٩٢٧ه | امام ابوبكراحد عمرو بن عبدالخالق بزارمتو في ۲۹۲ ه | لبحر الزخار المعروف بمسند البزار | 17 |
| دارالكنب العلميه ، بيروت ١٩٢٦ ه | امام ابوعبدالرحمل احمد بن شعيب نسائي متوفى ٣٠٣ ﻫ | سنن النسائي | 18 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت | امام ابوعبدالرحلن احمد بن شعيب نسائى متوفى ٣٠٠٣ھ | عمل اليوم والليلة | 19 |
| دارالكتب العلميه ، بيروت ١٩١٨ ه | شخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن ثنی موصلی متو فی ۲۰۰۷ ه | مسند أبي يعلى | 20 |
| المكتب الاسلامي، بيروت | امام محمد بن اسحاق بن خزیمه ،متو فی ۳۱۱ ه | صحيح ابن حزيمة | 21 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت | امام احمد بن محمد طحاوی ،متونی ۳۲۱ دھ | شرح معاني الآثار | 22 |
| بيروت | بیشم بن کلیب شاشی متو فی ۳۳۵ ه | المسند الشاشي | 23 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ١٩٢٤ه | علامهاميرعلاءالدين على بن بلبان فارى بمتوفى ٣٩ ٧ ه | الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان | 24 |
| داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۴۳۲۱ ده | امام ابوالقاسم سليمان بن احمه طبراني ،متوفى • ٣٦٠ ه | المعجم الكبير | 25 |

| داراحياءالتراث العربي، بيروت ٢٢٢ه | امام ابوالقاسم سليمان بن احمر طبر اني متو في ٣٧٠ ه | المعجم الأوسط | 26 |
|-----------------------------------|---|------------------------|----|
| دارالكتبالعلميه ، بيروت | امام ابوالقاسم سليمان بن احمه طبر اني متو في ٣٦٠ ه | المعجم الصغير | 27 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت | امام ابواحمه عبدالله بن عدى جرجاني ،متوفى ٣٦٥هـ | الكامل في ضعفاء الرجال | 28 |
| دارالمعرفه، بیروت ۱۳۱۸اه | امام ابوعبدالله محمد بن عبدالله حاكم نيشا پوري متوفي ۵۰۰۵ ھ | المستدركعلي الصحيحين | 29 |
| دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۱۳۱۹ه | حافظ ابوقيم احمد بن عبرالله اصفهاني شافعي متوفى ١٢٣٠ه | حلية الأولياء | 30 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ۱۳۲۱ ه | امام ابوبکرا حمد بن حسین بن علی بیه بی متو فی ۴۵۸ ھ | شعب الإيمان | 31 |
| مؤسسة الكتبالثقافيه، بيردت | امام ابوبکر احمد بن الحسین بن علی بیه بی متو فی ۴۵۸ ه | البعث والنشور | 32 |
| وارالكتب العلميه ، بيروت ١٩٢٢ه | امام ابوبکراحمہ بن حسین بن علی بیہ بی متو فی ۴۵۸ ھ | السنن الكبري | 33 |
| بيروت | امام ابو بكراحمه بن الحسين بن على بيه يقي متو في 60٨ ه | إثبات عذاب القبر | 34 |
| دارالمعرفه، بيروت | امام ابوبکراحمہ بن حسین بیہقی متو فی ۴۵۸ ھ | السنن الصغري | 35 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت | امام ابوبكراحمه بن حسين بيهقي متو في ۴۵۸ ه | معرفة السنن والآثار | 36 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت | حافظالوبكرعلى بن احمد خطيب بغدادي ،متو في ٣٧٣م ه | تاريخ بغداد | 37 |
| دارالكتبالعلمية ، بيروت | حافظ ابوشجاع شيرويه بن شھر دار بن شيرويه ديلمي،متو في ٥٠٩ھ | الفردوس بمأ ثور الخطاب | 38 |
| وارالكتبالعلميه ، بيروت ١٩٢٢ ه | امام ابوڅه خسين بن مسعود بغوی متو فی ۵۱۲ ه | شرح السنة | 39 |
| دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۴۱۸اه | امام ز کی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری متوفی ۲۵۶ ه | الترغيب والترهيب | 40 |
| بابالمدينة كراچى | امام محی الدین ابوز کریایجیٰ بن شرف نو دی متوفی ۲۷۷ ه | شرح النووي على المسلم | 41 |
| دارالكتب العلميه بيروت امهماه | علامه ولی الدین تبریزی،متوفی ۴۴۷ کے ھ | مشكاة المصابيح | 42 |
| بابالمدينة كراچى ٤-١٩٠٩ھ | حا فظ عبدالله بن عبدالرحمٰن دار می متو فی ۷۹۷ه | سنن الدارمي | 43 |
| وارالفكر، بيروت ١٣٢٠ء | حافظ نورالدين على بن ابي بكريتتي متو في ٨٠٠ <u>٨ ھ</u> | مجمع الزوائد | 44 |
| دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۱۴۲۰ه | امام حافظ احمد بن على بن حجر عسقلا في متو في ۸۵۲ ھ | فتح الباري | 45 |
| دارالحديث،ملتان ۱۴۱۸ھ | امام بدرالدين ابوځه محمود بن احمد عيني متو في ۸۵۵ ه | عمدة القارى | 46 |
| دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۴۵۲۶اه | امام جلال الدين بن ابي بكرسيوطي متو في اا ٩ هـ | الجامع الصغير | 47 |
| دارالفكر، بيروت ٢٢١ اه | شهاب الدين احمد بن محمر قسطلاني متوفى ٩٢٣ ه | إرشاد الساري | 48 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ١٣١٩ ه | علامة على متى بن حسام الدين ہندى بر مإن پورى متوفى ۵ ۵ ۹ ه | كنز العمال | 49 |
| دارالحديث بمصر | علامه عبدالرؤف مناوی متوفی ۴۰۰۱ه | التيسير | 50 |
| دارالفکر، بیروت ۱۳۱۳ ه | علامه ملاعلی بن سلطان قاری،متوفی ۱۰۴ه | مرقاة المفاتيح | 51 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت٢٢٢اھ | علامه څيرعبدالرءُوف منادي متو في ۱۹۰۱ھ | فيض القدير | 52 |
| کوئیڈ۳۳۳اھ | شيخ محقق عبدالحق محدث د ہلوی ،متو فی ۵۲۰اھ | أشعة اللمعات | 53 |
| | ^ | ~ | ~ |

| دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۴۲۲ ه | يشخ اساعيل بن محر محبلو ني متوفى ١١٦٢ه | كشف الخفاء | 54 |
|-------------------------------|---|-----------------------------|----|
| بابالمدينة كراچي | علامه وصى احمد محدِّث سورتى متوفى ١٣٣٨ه | حاشية سنن النسائي | 55 |
| ضياءالقرآن پبلى كيشنز | حكيم الامت مفتى احمه بإرخان نعيمي متوفى ١٣٩١ھ | مرآة المناجيح | 56 |
| بركاتی پباشرز كھارا در كراچی | علامه مفتى محمه شريف الحق امجدى متوفى ١٣٢٠ه | نزهةالقارى شرح صحيح البخارى | 57 |

كتب العقائد

| بابالمدينة كراچى | امام اعظم ابوحنیفه نعمان بن ثابت متو فی ۱۵۰ھ | الفقه الأكبر | 1 |
|--|---|------------------------------------|----|
| | ابوشكورسالمي حنفي معاصر سيدعلى ججوبري عليبماالرحمه | تمهيد أبي شكور | 2 |
| بابالمدينة كراچى | مجم الدين عمر بن مجمر نشى متو فى ۵۳۷ ھ | العقائد النسفية | 3 |
| دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۱۳۱۹ه | قاضى عضدالدين عبدالرحمٰن الحجي متو في ٤ ٨ ٧ ھ | شرح المواقف | 4 |
| نور بيرضوبية ببلي كيشنز ، لا بهور ١٣٢٥ ه | امام تقى الدين على بن عبدا لكافى سبكى متوفى ٥٦ ٧ هـ | شفاء السقام | 5 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ٣٢٢ اھ | علامه مسعود بن عمر سعدالدين آفتا زاني متو في ٩٣ ٧ ه | شرح المقاصد | 6 |
| بابالمدينة كراچي | علامه مسعودين عمر سعدالدين تفتازاني متوفى ٩٣ ٧ ه | شرح العقائد النسفية | 7 |
| مطبعة السعادة بمصر | كمال الدين محمد بن عبدالواحد المعروف بابن جام متو في ٩٠٦ ه | المسايرة | 8 |
| مطبعة السعادة بمصر | كمال الدين محمد بن محمد المعروف بإبن الي شريف متوفى ٩٠٦ ه | المسامرة شرح المسايرة | 9 |
| كانى روۋ ، كوئىلە | عصام الدين ابرا بيم بن محمد متو في ٩٣٣ ه | حاشية عصام الدين على شرح العقائد | 10 |
| دارالكتب العلميه ، بيروت ١٩١٩ ه | عبدالوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی متو فی ۹۷۳ ھ | اليواقيت والحواهر | 11 |
| مدينة الاولياء،ملتان | حافظاحمہ بن حجر تک ہبتی متو فی ۴۷۴ ھ | الصواعق المحرقة | 12 |
| بابالمدينة كراچى | شيخ على بن سلطان المعروف بملاعلى قارى متو في ١٠١٣ه | منح الروض الأزهر | 13 |
| بابالمدينة كراچى | شيخ على بن سلطان المعروف بملاعلى قارى متو في ١٠١٣ه | شرح الفقه الأكبر | 14 |
| باب المدينه كراچي ١٣٢١ه | حضرت شيخ عبدالحق محدث وہلوی متو فی ۵۲ ۱۰ه | تكميل الإيمان | 15 |
| كوئنه | علامه ولى الدين متو في ١١١٩ ھ | حاشية ولى الدين على حاشية مولانا | 16 |
| <i></i> | שני הגבייט וער ייטי פיטי ווופ | عصام الدين على شرح العقائد | |
| بابالمدينة كراچى | شاه عبدالعزيز بن شاه ولى الله محدث وبلوى متو في ١٣٣٩ه | تحفه اثنا عشريه | 17 |
| مدينة الاولىياء ملتان | علامه څرعبدالعز بزفر بإرى متوفى ١٢٣٩ھ | النبراس | 18 |
| الممتازيبلي كيشنزلا مورا٢٢ماه | مصنف: امام حكمت وكلام علامه محمر فضل حق خير آبادي متوفى ١٢٧٨ه | شفاعتِ مصطفى ترجمه تحقيق الفتوى في | 19 |
| | مترجم :علامه څرعبرانحکیم شرف قادری متوفی ۱۴۲۸ ه | ابطال الطغوى | |
| برکاتی پیلشرز، کراچی ۱۴۲۰ه | علامة فضل الرسول بدايونى متوفى ١٢٨٩هه | المعتقد المنتقد | 20 |
| | | | |

| برکاتی پبلشرز، کراچی ۱۳۲۰ھ | اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٨٠ھ | المعتمد المستند | 2 |
|---------------------------------|--|---|---|
| | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ھ | مطلع القمرين في إبانة سبقة العمرين | 2 |
| رضافاؤنڈیشن،لاہور | اعلى حصرت امام احدرضاخان متوفى ١٣٨٠ه | تجلى اليقين | 2 |
| رضافاؤ تڈیشن، لاہور | اعلل حصرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٩٠ھ | الأمن والعلى لناعتي المصطفى بدافع | 2 |
| | | البلاء | |
| برکاتی پبلشرز، کراچی ۴۲۰اه | اعلى حضرت امام احمد رضا خان متو فى ١٣٣٠ ھ | أنوار المنان في توحيد القرآن | 2 |
| رضافاؤ نڈیشن، لاہور | اعلى حضرت امام احمد رضا خان متوفى مهم اه | خالص الاعتقاد | 2 |
| رضافا ؤنڈیشن، لاہور | اعلی حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ ه | إنباء الحي | 2 |
| رضافا ؤنڈیشن،لاہور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متو فی ۱۳۴۰ ھ | إزاحة العيب بسيف الغيب | 2 |
| رضافاؤ نڈیشن، لاہور | اعلى حضرت امام إحمد رضاخان متوفى ١٣٢٠ه | ثلج الصدر لإيمان القدر | 2 |
| رضافا ؤنڈیشن، لاہور | اعلی حضرت امام احمد رضاخان متو فی ۱۳۴۰ه | منبه المنية بوصول الحبيب إلى العرش والرؤية | 3 |
| رضافا ؤنڈیشن، لاہور | اعلی حفزت امام احمد رضاخان متو فی ۱۳۴۰ ه | الزلال الأنقى | 3 |
| رضافا ؤنڈیشن،لا ہور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متو فی ۱۳۴۰ھ | صلاة الصفاء | 3 |
| مؤسسة رضا بمدينه، لا بهور۲۲۲ اه | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متو فی ۱۳۴۰ھ | الدولة المكية | 3 |
| رضافاؤنثريش، لا مور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متو فی ۱۳۴۰ھ | سبحان السبوح | 3 |
| رضافاؤ نڈیشن، لاہور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ھ | حياة الموات | 3 |
| رضافا ؤنڈیش، لاہور | اعلى حفزت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٢٠ه | اعتقاد الأحباب | 3 |
| رضافاؤ نڈیشن، لاہور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متو فی ۱۳۴۰ھ | إسماع الأربعين | 3 |
| رضافاؤ نژيشن، لا مور | اعلى حفزت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٨٠ه | منية اللبيب | 3 |
| رضافا ؤنڈیشن،لا ہور | اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٢٠ه | قهرالديان على مرتدبقاديان | 3 |
| رضافا ؤنڈیش، لاہور | اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٩٠ھ | الجراز الدياني على المرتد القادياني | 4 |
| رضافا ؤنڈیشن،لاہور | اعلى حفزت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٨٠ه | السوء والعقاب على المسيح الكذاب | 4 |
| رضافا ؤنژيش، لا مور | اعلى حفزت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٨٠ه | الكوكبة الشهابية | 4 |
| رضافا وَيَدْ يَشْنِ، لا مِور | اعلى حفزت امام احمد رضاحان متوفى ١٣٨٠ه | سل السيوف الهندية | 4 |
| رضافا ؤنڈیشن،لاہور | اعلی حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ ه | إنباء المصطفى بحال سر وأخفى | 4 |
| رضافا ؤنڈیشن،لا ہور | اعلى حصزت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٩٠ه | المبين حتم النبيين | 4 |
| رضافا ؤنڈیش، لاہور | اعلی حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۴۳۴۰ ه | جزاء الله عدوه بإبائه حتم النبوة | 4 |

| مكتبة المدينة، كرا چي | اعلی حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ھ | تمهيد ايمان | 47 |
|-----------------------|---|--------------|----|
| مكتبة المدينة، كراچي | اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى مهساه | حسام الحرمين | 48 |
| ضياءالقرآن يبلى كيشنز | تحكيم الامت مفتى احمه بإرخان نعيمى متوفى ١٣٩١ ھ | جاء الحق | 49 |

كتب الفقه

| دارالكتبالعلميه بيروت | علاءالدين تمرقندي متوفى ۵۳۹ ھ | تحفة الفقهاء | 1 |
|------------------------------------|--|----------------------------------|----|
| كوئنة | علامه طاهر بن عبدالرشيد بخارى بمتوفى ۴۲ ه 🧟 | حلاصة الفتاوي | 2 |
| واراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۳۴۱ه | ملك العلماءامام علاءالدين الوبكرين مسعود كاساني متوفى ٥٨٧ه | بدائع الصنا ئع في ترتيب الشرائع | 3 |
| رشاور | قاضی حسن بن منصور بن مجموداوز جندی متوفی ۵۹۳ ھ | الفتاوي الخانية | 4 |
| بابالمدينة، كراچى | بر ہان الدین علی بن ابی بکر مرغینا نی متو فی ۵۹۳ھ | التجنيس و المزيد | 5 |
| داراحياءالتراث العربي، بيروت | بربان الدين على بن ابي بكر مَر غينا ني متو في ٩٣ ه. ه | الهداية | 6 |
| كويمير | كمال الدين محمر بن عبدالوا صدالمعروف بابن بهام متوفى ٨٦١ه | فتح القدير | 7 |
| ضياءالقرآن، لا ہور | علامه سديدالدين څرين څر کاشغري،متو في ۵ • ۷ ھ | منية المصلي | 8 |
| دارالكتبالعلمية بيروت،١٥١٥ه | علامه محمد بن محمد ،المشهورا بن الحاج ،متو في ٣٤ ٧ ه | المدخل | 9 |
| بابالمدينة كراچي | علامه صدرالشر بعي عبيدالله بن مسعود بمتوفى ٢٨ ٧ ٨ ٨ | شرح الوقاية | 10 |
| باب المدينة كرا جي ١٣١٦ه | علامه عالم بن علاء انصاري دبلوي متوفى ٨٦ ڪرھ | القتاوي التاقار خانية | 11 |
| بابالمدينة كراچي | علامه الوبكر بن على حداد بمتو في ٠٠٠ ه | الجوهرة النيرة | 12 |
| کوئٹے ۲۳۰ میں احد | حافظ الدين مجمد بن مجمد بن المعروف بابن بزارمتو في ۸۲۷ھ | الجامع الوجيز (الفتاوي البزازيه) | 13 |
| دارالفرقان، بيروت | علامه سراح الدين عمر بن على خفى متو فى ٨٢٩ ه | فتاوى قارئ الهداية | 14 |
| مدينة الاولياءملتان | امام بدرالدین ابوگهرمحمود بن احمد عینی متو فی ۸۵۵ ه | البناية في شرح الهداية | 15 |
| مخطوطه | علامه این امیر الحاج ،متوفی ۹۷۸ه | الحلية | 16 |
| بابالمدينة كراچي | علامة قاضى شهير ملّا خسر وحنفي متو في ٨٨٥ ه | درر الحكام شرح غرر الاحكام | 17 |
| دارالفكر، بيروت ٢٠٠١ه | امام جلال الدين عبدالرحن سيوطى متوفى ٩١١ ه | الحاوي للفتاوي | 18 |
| باب المدينة كرا جي ١٣١٦ه | امام سراج الدين بلقينى | فتاوي امام سراج الدين بلقيني | 19 |
| سهيل اکيڈي، لا ہور | علامه محمد ابراتيم بن حلبي منتو في ٩٥٧ ه | غنية المتملي | 20 |
| ، کوئیهٔ ۲۳۱ه | علامه زين الدين بن نجيم ،متوفى • ٩٧ ه | البحر الرائق | 21 |
| بابالمدينة كراچي | علامه زين الدين بن نجيم متو في • ٩٧ ه | فتاوى زينية | 22 |
| مصطفیٰ البابی بمصر | عبدالوماب بن احمد بن على احمد شعراني متونى ٩٤٣ ه | الميزان الكبراي | 23 |

| داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۴۱۹ه | شخ الاسلام احمد بن مجمد بن على بن جربيتى متو في ٧ ١٩ ه | الفتاوي الحديثية | 24 |
|------------------------------------|--|-------------------------------------|----|
| دارالمعرفة ، بيروت، ۲۰۲۰اره | علامة مس الدين څرين عبدالله بن احد تمر تاشي ،متو في ۴۰۰اھ | تنوير الأبصار | 25 |
| كوئثة | علامه سراح الدين عمر بن ابرا جيم ،متو في ٥٠٠ اه | النهر الفائق | 26 |
| باب المدينة كراچي، ۱۳۲۵ ه | شخ رحمة الله سندى،متوفى ١٠١٠ه | لباب المناسك | 27 |
| بابالمدينه کراچي،۱۳۲۵ھ | ملاعلی بن سلطان قاری متو فی ۱۴۰ه | المسلك المتقسط في المنسك المتوسط | 28 |
| دارالكتبالعلمية ، بيروت | علامهاحمه بن ثميشلبي ،متو في ٢١٠ اه | حاشية الشلبيه | 29 |
| مدينة الاولىياء،مكتان | علامه حسن بن عمار بن على شرنبلا لى متو في ٦٩ • اھ | نورالإيضاح و مراقي الفلاح | 30 |
| مكتبه بركات المدينة كراجي | علامه حسن بن ممارين على شرنبلا لي ٢٩ • اھ | نورالايضاح مع حاشية ضوء المصباح | 31 |
| دارالكتبالعلميه بيروت،۱۳۱۹ه | عبدالرحمٰن بن محمد بن سليمان كليبو لي متو في ٨ ٧-١٠ه | مجمع الأنهر | 32 |
| دارالمعرفه، بيروت ۱۳۲۰ه | محمه بن على المعروف بعلاءالدين حسكفي متو في ١٠٨٨ه | الدر المختار | 33 |
| بابالمدينه، كراچي | علامهاحمر بن محمد بن اساعيل طحطا وي متو في ۱۲۴۱ ه | حاشية الطحطاوي على مراقي الفلاح | 34 |
| كوكثة | علامهاحمه بن څمه بن اساعیل طحطا وی متو فی ۱۳۶۱ ه | حاشية الطحطاوي على الدر المختار | 35 |
| دارالمعرفه، بيروت ٢٠٠٠اھ | محمدامین این عابدین شامی متوفی ۱۳۵۲ ه | رد المحتار | 36 |
| وارالفكر بيروت ١٩٠١ ١٥ | علامه بهام مولا ناشخ نظام متوفى الاااره وجماعة من علماءالهند | الفتاوي الهندية | 37 |
| رضافا ؤنڈیش، لاہور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متو فی ۱۳۴۰ه | الفتاوي الرضوية | 38 |
| مكتبة المدينة ، كرا چي | اعلی حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ه | جد الممتار | 39 |
| رضافاؤنڈیشن،لاہور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ھ | إعلام الأعلام | 40 |
| مكتبة المدينة، كرا چي | اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٨٠ه | احكام شريعت | 41 |
| مكتبة المدينة، كرا چي | علامه مولا ناڅمررکن الدین متو فی ۱۳۳۵ھ | ر کن دین | 42 |
| مکتبه رضویه ، کراچی | مفتی محمد امجه علی اعظمی متو فی ۱۳۶۷ دھ | بهارشريعت | 43 |
| مکتبه رضویه، کراچی ۱۳۱۹ه | علامه مفتى محمدام بدعلى اعظمى متوفى ١٣٦٧ه | فتاوى امحديه | 44 |
| فريد بك اسثال لا بهور | مولا نامفتی محفلیل خان بر کاتی متوفی ۱۴۰۵ھ | همارا اسلام | 45 |
| بزم وقارالدین کراچی ۲۰۰۱م | مولا نامفتی محمد و قارالدین متو فی ۱۳۱۳ ه | وقار الفتاوي | 46 |
| شبير برادرز لا مور۵۰۰۰م | مولا نامفتی جلال الدین امجدی متو فی ۴۲۲ اھ | فتاوي فقيه ملت | 47 |
| شبير براورز لا موراامها ه | مولا نامفتی جلال الدین امجدی متوفی ۱۳۲۲ ه | فتاوي فيض الرسول | 48 |
| مكتبة المدينه بإب المدينه كراجي | علامه مولا نامحم الياس عطارقا دري رضوي | نماز کے احکام | 49 |
| مكتبة المدينه بابالمدينه كراجي | علامه مولا نامحمه البياس عطارقا دري رضوي | رفيق الحرمين | 50 |

رومَراجع

كتب أصول الفقه

| بابالمدينة كراچى | عبيدالله بن مسعود بن تاح الشريعير | التوضيح والتلويح | 1 |
|-------------------------------|---|--------------------|---|
| مدينة الاولىياءملتان | مولوى الوثدعبدالحق الحقانى بن محمدامير | النامي شرح الحسامي | 2 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ١٩١٩ه | الشيخ زين الدين بن ابراهيم الشهير بابن تحيم متوفى • ٩٧ هه | الأشباه والنظائر | 3 |
| مدينة الاولىياء ملتان | علامهاحمدا بن الي سعيد خفى المعروف بملاجيون متوفى ١١٣٠ه | نور الأنوار | 4 |
| بابالمدينة كراچي | علامه عبدالعلى محمد بن نظام الدين كهضوى متوفى ١٢٢٥ه | فواتح الرحموت | 5 |

كتب التصوف

| دارالكتبالعلميه ، بيروت | امام عبدالله بن مبارك مروزي متوفى ۸۱۱ه | كتاب الزهد | 1 |
|---------------------------------|--|--|----|
| دارالكتب العلميه ، بيروت ١٩١٨ ه | امام ابوالقاسم عبدالكريم بن ہوازن قشیری متو فی ۴۶۵ ه | الرساله القشيرية | 2 |
| دارصا در، بیروت ۲۰۰۰ء | امام ابوحامد محمد بن محمر غز الى متو فى ٥٠٥ ھ | إحياء علوم الدين | 3 |
| دارالكتبالعلميه بيروت، ۲۲۶ اره | الوحفص عمر بن مجمه سهرور دی شافعی متو فی ۲۳۲ ھ | عوارف المعارف | 4 |
| دارالفكر بيروت ١٩٢٧ماه | شيخ ابوعبدالله محمد محى الدين ابن عربي متو في ٦٣٨ ھ | الفتوحات المكية | 5 |
| دارالكتبالعلميه ، بيروت ١٩٢٢ه | ابوالحسن نورالدين على بن يوسف شطنو في متو في ١٣ ڪھ | بهجة الأسرار | 6 |
| دارالفكر، بيروت ١٣١٨ ١ | عبدالوہاب بن احمد بن علی احمد شعرانی متو فی ۹۷۳ ھ | الطبقات الكبري | 7 |
| مكتبه قادر بدلا مور۲ ۴۸۰ ه | میرعبدالواحد مبلگرا می متوفی ۱۰۱ه | سبع سنابل | 8 |
| مكتبة القدول كوئشه | مجد دالف ثانی شیخ احمد سر ہندی متو فی ۱۰۳۴ اھ | مكتوبات إمام رباني | 9 |
| پشاور | عارف باللهسيدى عبدالغنى نابلسي حفى متوفى ١١٣١ه | الحديقة الندية | 10 |
| بيروت | ابوسعيد محمه بن مصطفیٰ نقشبندی حنی متو فی ۱۷ کـ۱۱ ۱۵ | البريقة المحمودية على الطريقة المحمدية | 11 |
| مركز ابلسنت بركات دضا بند٢٢٢ اه | امام يوسف بن اساعيل نبهاني متوني • ١٣٥ه | جامع كرامات الأولياء | 12 |
| | | | |

كتب السيرة

| دارالكتبالعلميه ، بيروت ١٩٢٣ماه | امام ابو بكرا حمد بن الحسين بن على بيهي متو في ۴۵۸ ھ | دلائل النبوة | 1 |
|----------------------------------|--|---------------------------|---|
| مركز ابلسنت بركات رضا بند١٣٢٣ اه | القاضى ابوالفضل عياض مالكي متو في ۴۴۴ ه ه | الشفا بتعريف حقوق المصطفى | 2 |
| حزب القادريية لا مور | امام شرف الدين څمه بن سعيد بوصيري متو في ۲۹۵ ه | أم القرى في مدح خير الورى | 3 |
| ىر بالقادرىية لا بور ا | | (قصیاده همزیه) | |
| وارالفكر، بيروت ١٨١٨ ١١ه | عمادالدين اساعيل بن عمرابن كثير دمشقى متوفى 424ھ | البداية والنهاية | 4 |
| دارالكتب العلميه ، بيروت ١٩١٧ه | امام حافظا حمد بن على بن حجر عسقلاني متوفى ٨٥٢ ه | أسد الغابة | 5 |

| 6 | الخصائص الكبري | امام جلال الدين بن ابي بكرسيوطي متو في ٩١١ ه | دارالكتبالعلميه ، بيروت |
|----|-------------------------|--|-------------------------------------|
| 7 | المواهب اللدنية | شهاب الدين احمد بن محمر قسطلانی متونی ۹۲۳ ه | دارالكتبالعلميه بهيروت ٢١٦١ه |
| 8 | معارج النبوة | المعين الحاج محمد الفرائى المعروف بملاً مسكين متوفى ٩٥٨ هـ | |
| 9 | أفضل القرى شرح أم القرى | شيخ الاسلام احمد بن محمد بن على بن جحر ميتى متوفى ١٧٨ ه | |
| 10 | الجوهر المنظم | شخ الاسلام احمد بن څمه بن علی بن جرمیتمی متو فی ۴۷۹ ه | مكتنبه قادرييه لاجور |
| 11 | شرح الشفا | ملاعلی قاری ہروی حنفی متو فی ۱۴ اھ | دارالكتبالعلميه ، بيروت المهماه |
| 12 | مدارج النبوة | شيخ عبدالحق محدث وہلوی متو فی ۱۰۵۳ھ | نوربيرضوبيرلا بمور ١٩٩٧ء |
| 13 | نسيم الرياض | شہاب الدین احمد بن محمد بن عمر خفاجی متو فی ۲۹ ۱ اھ | دارالکتبالعلمیه ، بیروت ۴۲۱ اه |
| 14 | فيوض الحرمين | شاه و لى الله محدث وبلوى متو فى ٢ ١١١ه | محر سعيدا يند سنز ، كرا چي |
| 15 | حجة الله على العالمين | امام یوسف بن اساعیل نبهانی متونی ۱۳۵۰ه | مرکز اہل سنت برکات رضاء ہند |
| 16 | جواهر البحار | امام يوسف بن اساعيل نبها ني متو في ٣٥٠ ١١ه | مركز ابل سنت بركات رضا بهند ۱۴۲۳ اه |
| | | | |

كتب الأعلام

| دارالكنب العلميه ١٩٢٣ه | امام جمال الدين ابي الفرج ابن جوزي متو في ۵۹۷ ه | صفة الصفوة | 1 |
|----------------------------------|---|-------------------------------|---|
| مؤسسة الرسالة ١٩١٧ماه | عمر رضا کاله متوفی ۱۴۰۸ه | معجم المؤلفين | 2 |
| خير پوريا ڪتان | شخ عبدالحق محدث د ہلوی متو فی ۵۳۰۱ھ | أحبار الأحيار | 3 |
| بابالمدينة كراجي | شاه ولى الله محدث د بلوى متو فى ٧ كـ١١ه | إزالة الحفاء عن حلافة الخلفاء | 4 |
| ادارة القرآن، كرا جي ١٣١٩ ه | مولا ناعبدالحي ككھنوى متوفى م ماس | الفوائد اليهية | 5 |
| دارالكنبالعلميه ، بيروت ١٩١٣ه | اساعيل كمال بإشامةو في ١٣٣٩هه | هدية العارفين | 6 |
| دارالعلم للملايين ، ببروت ۲۰۰۵ ء | خيرالدين زركلي متوفى ١٣٩٦ه | الأعلام | 7 |
| دارالفكر، بيروت ١٩٨٧ھ | مش الدين محمد بن احمد ذهبي متو في ۲۸۸ ۵ ۵۵ | سير أعلام النبلاء | 8 |

كتب اللغات

| دارالمنارللطباعة والنشر | سيدشريف على بن محمد بن على الجرجاني ٨١٧ه | التعريفات للجرجاني | 1 |
|--------------------------------------|---|--------------------|---|
| داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۲۸ه | مُجِد الدين مُحربن يعقوب فيروزآ بادىمتو في ١٨٥ھ | القاموس المحيط | 2 |
| ادارة القرآن والعلوم الاسلاميه كراجي | مجدرؤس،حامه صادق | معجم لغة الفقهاء | 3 |
| فيروزسنز ٢٠٠٥م | الحاج فيروزالدين | فيروز اللغات | 4 |
| ترقی اُرد ولغت بورڈ کراچی ۲۰۰۷ء | اداره رتی اُردو پورڈ | أردو لغت | 5 |

| سنگ میل پبلی کیشنز،لا ہور۲۰۰۲ء | اتددہلوی | فرهنگ آصفیه | 6 |
|--------------------------------|----------|-------------|---|
| | | | |

كتب الشيعة

| تهران | مرزامحدتقی سپرلسان الملک متو فی ۲۹۵ ھ | ناسخ التواريخ | 1 |
|-----------------------------|--|-------------------------------------|----|
| دارالكتب الاسلامية، تهران | ابوجعفرمحمه بن يعقو بكليني رازي متو في ۳۲۸ ھ | أصول كافي | 2 |
| دارالكتب الاسلامية ، تهران | محمد بن يعقو بكليني متو في ٣٢٨ ١ | الروضة من الكافي (فروع كافي) | 3 |
| نجف اشرف طبع قديم ٢٨٦١ ه | ابومنصوراحمه بن على طبرسي متو في ۵۴۸ ه | احتجاج طبرسي | 4 |
| نجف(عراق) | څرين على بن شهرآ شوب متو في ۵۸۸ ھ | مناقب آلُ أبي طالب | 5 |
| بيروت ١٣٧٥ ه | ابوالحارعبدالحميد متوفى ٢٥٦ ه | شرح نهج البداية ابن أبي حديد | 6 |
| طبع قدیم،تهران۱۳۹۸ه | باقرمجلسي متوفى ١١١٠ه | جلاءالعيون | 7 |
| كتب فروشے اسلاميه، تهران | باقرمجلسي متوفى ١١١٠ه | حق اليقين | 8 |
| كتب فروشے اسلاميه، تهران | باقرمجلسي متوفى • الاھ | حيات القلوب | 9 |
| مؤسسالعلمي، كربلا | محمہ بن عمر شی (القرن الرابع) | رجال الكشي | 10 |
| وبلى | مظهر حسین سهارن پوری | تهذيب المتين في تأريخ أمير المؤمنين | 11 |
| ایران | مرزاحسين بن محمر تقى طبرى | نفس الرحمان في فضائل سلمان | 12 |
| تهران | نعت الله جزائري | أنوار نعمانيه | 13 |
| تهران | مرزاڅرر فيع مشهدي | حمله حيدري | 14 |
| قم (ایران) | جمال الدين احمد بن حسن | عمدة المطالب | 15 |
| | مرزاعیای | طراز المذهب مظفري | 16 |
| تهران | عباسقى | منتهى الإكمال | 17 |
| تبريز ، تبران | نورالله شوستري | مجالس المؤمنين | 18 |
| تهران | ا يوملى فضل بن حسن طبرسي | تفسير مجمع البيان | 19 |
| تبران اسههام | محمه ہاشم بن محمیلی خراسانی | نتخب التواريخ | 20 |
| تتهران | محمه بن مرتضى المعروف فيض كاشاني | التفسير الصافي | 21 |
| مؤسسة الاعلمي، بيروت ١٣٢١ ه | حسن قبار نجی | مسند امام على | 22 |

كتب القادياني

| إذاله أوهام مرزاغلام احدقاد ياني متوفى ا ١٩٠٠ء رياض الهند، امرتسر | 1 |
|---|---|
|---|---|

| مطبع ضياءالاسلام، قاديان | مرزاغلام احمرقادياني متونى ١٩٠١ء | أنجام آتهم | 2 |
|------------------------------|------------------------------------|--------------------|----|
| مطبع ضياءالاسلام، قاديان | مرزاغلام احمدقاد ما نيالتونى ١٩٠١ء | دافع البلاء | 3 |
| رياض الهند، امرتسر | مرزاغلام احمد قادياني متوفى ١٩٠١ء | توضيح المرام | 4 |
| مطبع ضياءالاسلام، قاديان | مرزاغلام احمدقادياني متوفى ١٩٠١ء | أربعين | 5 |
| مطبع ضياءالاسلام، قاديان | مرزاغلام احمد قادياني متوفى ١٩٠١ء | معيار أهل الاصطفاء | 6 |
| مطبع ضياءالاسلام، قاديان | مرزاغلام احمدقادياني متوفى ١٩٠١ء | كشتئ نوح | 7 |
| مطبع ضياءالاسلام، قاديان | مرزاغلام احمدقادياني متوفى ١٩٠١ء | اعجاز احمدى | 8 |
| مطبع ضياءالاسلام، قاديان | مرزاغلام احمد قادياني متوفى ١٩٠١ء | ضميمه انجام آتهم | 9 |
| سفير ہند بريس، امرتسر، پنجاب | مرزاغلام احمه قادياني متوفى ١٩٠١ء | براهين احمديه | 10 |
| زيرطنج ،U.S.A | (مجموعهٔ کتب درسائل قادیانی) | روحاني خزائن | 11 |

كتب الوهابية

| مطبوعة معوديي | محمد بن عبدالو باب نجدى متوفى ٢٠٠١ ھ | حاشية شرح الصدور | 1 |
|-------------------------------------|---|---------------------------------|----|
| فاروقی کتب خانه ،ملتان | اساعيل د ہلوی متو فی ۱۲۴۶ ھ | رساله يك روزه | 2 |
| قد یی کتب خانه کراچی | اساعيل دېلوی متو فی ۱۲۴۴۱ھ | إيضاح الحق | 3 |
| میر څمه کتب خانه کراچی | اساعيل دېلوي متوفی ۱۲۴۴۱ھ | تقوية الإيمان | 4 |
| مكتبه سلفيه، لا هور | مرتب اساعیل دہلوی متو فی ۱۲۴۲ ھ | صراط مستقيم | 5 |
| دارالاشاعت، کراچی | محمرقاسم نانوتوى متوفى ١٢٩٧ھ | تحذير الناس | 6 |
| محمة على كارخانه اسلامي كتب ا ٢٠٠٠ء | رشیداحمه گنگوهی متوفی ۱۳۲۳ھ | فتاوي رشيديه | 7 |
| دارالاشاعت كرا يى1987ء | خلیل احمدانپیشو ی سهارن پوری متوفی ۱۳۴۷ه | براهين قاطعه | 8 |
| قد یی کتب خانه کراچی | اشرفعلی تھانوی متو فی ۱۳۹۲ھ | حفظ الإيمان | 9 |
| مكتبة الكوثر، رياض ١٣١٣ه | عبدالرطن بن مجمر بن قاسم عاص متو فی ۱۳۹۲ھ | الدرر السنية في الأجوبة النجدية | 10 |

الكتب المتفرقة

| | قاضی ناصرالدین عبدالله بن الی عمرو بیضاوی متوفی ۹۱ ۷ ه | طوالع الأنوار | 1 |
|-----------------------------------|--|------------------------------|---|
| دارالكتب العلميه بيروت ١٣١٥ه | کمال الدین محمد بن موی دمیری متوفی ۸۰۸ھ | حياة الحيوان الكبراي | 2 |
| ضياءالقرآن يبلى كيشنز | امام جلال الدين بن ابي بكرسيوطي متو في ٩١١ ه | تاريخ الخلفاء | 3 |
| مؤسسة الكتبالثقافيه، بيروت ٣٢٥ اه | ابوالفضل جلال الدين عبدالرحن سيوطى متو في ٩١١ ه | البدورالسافرة في أمور الآخرة | 4 |

| | امام جلال الدين بن اني بكرسيوطي متو في 911 ھ | الحبائك في أحبار الملائك | 5 |
|--------------------------------|---|-----------------------------|----|
| دارالكتب العلميه بيروت ١٩١٢ه | څمه بن پوسف صالحی شامی متو فی ۹۴۲ ه | سبل الهدى والرشاد | 6 |
| مكتبة المدينة، بإب المدينة | رئيس المتتكلميين مولا نانقى على خان بن على رضامتو في ١٢٩٧ ه | أحسن الوعاء | 7 |
| مشاق بک کارنر، لا ہور | اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان متوفی ۱۳۴۰ه | الملفوظ(ملفوظات اعلى حضرت) | 8 |
| رضافا ؤنژلیثن،لا ہور | اعلى حضرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٩٠ه | مقال عرفا باعزاز شرع وعلماء | 9 |
| مكتبة المدينة بإبالمدينة ١٩٦٥ه | اعلل حضرت امام احمد رضاخان متوفى ١٣٦٠ه | حدائق بخشش | 10 |
| مكتبة المدينه، باب المدينه | اعلل حضرت امام احمد رضاخان متونى و١٣٨٠ه | ذيل المدعا لأحسن الوعاء | 11 |
| مكتنبه نوربيحسينيه، لا هور | محمطى فتشبندي عليه رحمة الله القوى | تحفه جعفريه | 12 |
| | محمطى فتشبندى عليه رحمة الثدالقوى | عقائد جعفريه | 13 |
| ضياءالقرآن پېلې كىشنىز لا ہور | حا فظامحمه خان نوری ابدالوی | تسهيل النحو | 14 |
| مکتبه قاسمیدرضو بیکراچی | قارىغلام رسول | علم التجويد | 15 |
| ضياءالقرآن پبليكيشنز ٢٠٠١ء | علامه مجمدا شرف سيالوي | تحفه حسينيه | 16 |



طبرانی نے عدی بن حاتم مِن الله تعالى عنه سے روایت کی ، کہ الله عندوجل کے محبوب ، وانا ئے عُمُو ب، مُعَزَّ وَعَنِ الْعُوْ بِ سِنَى الله تعالى عليه واله يستم نے فرمایا:

کچھوگوں کو جنت کا حکم ہوگا، جب جنت کے قریب بینچ جائیں گے اور اس کی خوشبوسو گھیں گے اور کل اور جو کچھ جنت میں اللہ تعالیٰ نے جنتیوں کے لیےسامان تیار کر رکھا ہے، دیکھیں گے۔

پکارا جائے گا کہ آخیس واپس کرو، جنت میں ان کے لیے کوئی حصینہیں۔ یہلوگ حسرت کے ساتھ واپس ہوں گے، کہ ایسی حسرت کسی کوئیس ہوئی اور یہلوگ کہیں گے کہ اے رب!اگر تونے نہمیں پہلے ہی جہنم میں داخل کردیا ہوتا، نہمیں تونے تواب اور جو کچھ اپنے اولیا کے لیے جنت میں مہا کیا ہے نہ دکھایا ہوتا تو یہ ہم پر آسان ہوتا۔

ارشاوفرمائے گا:'' بمارامقصد ہی پیتھااے بدبختو! جبتم تنہا ہوتے تھے تو بڑے بڑے گنا ہوں سے میرامقابلہ کرتے تھے اور جب لوگوں سے ملتے تھے تو خشوع کے ساتھ سلتے جو کچھ ول میں میری تعظیم کرتے اس کے خلاف لوگوں پر خلا ہر کرتے ، لوگوں سے تم ڈرے اور مجھ سے نیڈ رے ، لوگوں کے لیے گناہ چھوڑ سے میرے لیے نہیں چھوڑ سے ، لہذاتم کو آج عذاب چھھاؤں گا اور فواب سے محروم کروں گا۔''

("المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ١٩٩، ج١٥، ص٨٥، و "مجمع الزوائد"، كتاب الزهد، باب ماجاء في الرياء،

الحديث: ١٧٦٤٩، ج. ١، ص٣٧٧.)

